

2023

UPTET/CTET

EASY STUDY NOTES

Hindi Language & Pedagogy

**यूथ
कॉम्पिटिशन
टाइम्स**

UPTET/CTET

MPTET UKTET CGTET JTET BIHAR TET REET

PSTET HTET HPTET ASSAMTET DSSSB UP SUPER TET

(For Class I to V & VI to VII)

ईजी स्टडी नोट्स

मैजिकल सीरीज

5

VOLUME

**हिन्दी भाषा
एवं शिक्षण**

अध्यायवार

अभ्यास प्रश्न

एवं व्याख्या सहित हल

**NCERT/SCERT
पर आधारित**

UP TET & CTET

शिक्षक पात्रता परीक्षा

हिन्दी भाषा

एवं

शिक्षण

इजी स्टडी नोट्स

कक्षा I से V एवं VI से VIII के शिक्षकों हेतु

प्रधान संपादक

ए. के. महाजन

संपादन एवं संकलन

अधिवक्ता अभिषेक सिंह

लेखन सहयोग

संजय कुमार मिश्र

आंतरिक सज्जा

बालकृष्ण, चरन सिंह

संपादकीय कार्यालय

यूथ कॉम्पिटिशन टाइम्स

12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002 (उ. प्र.)

मो. : 9415650134

Email : yctap12@gmail.com

website : www.yctbooks.com

प्रकाशन घोषणा

सम्पादक एवं प्रकाशक आनन्द कुमार महाजन ने रूप प्रिंटिंग प्रेस, प्रयागराज से मुद्रित करवाकर, यूथ कॉम्पिटिशन टाइम्स 12, चर्च लेन, प्रयागराज-2 के लिए प्रकाशित किया।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने में सम्पादक एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है फिर भी किसी त्रुटि के लिए आपका सुझाव एवं सहयोग सादर अपेक्षित है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज होगा।

मूल्य : 395/-

विषय-सूची

■ UP TET/CTET संस्कृत : नवीन पाठ्यक्रम	3
--	---

हिन्दी भाषा

■ हिन्दी वर्णमाला.....	4-9
■ वाक्य रचना.....	10-20
■ विराम चिह्न.....	21-25
■ विलोम, समानार्थी, पर्यायवाची, एकार्थक-अनेकार्थक, तुकान्त-अतुकान्त.....	26-61
■ संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया एवं विशेषण तथा भेद	62-73
■ लिंग, वचन, कारक, काल, वाच्य.....	74-82
■ उपसर्ग-प्रत्यय.....	83-90
■ लोकोक्ति एवं मुहावरे	91-110
■ संधि-समास	111-124
■ अलंकार एवं उसके भेद.....	125-130
■ रचना-रचनाकार तथा विधाएँ.....	131-143
■ अपठित.....	144-182

हिन्दी शिक्षण

■ अधिगम और अर्जन	183-189
■ भाषा अध्यापन के सिद्धान्त	190-202
■ भाषा का कार्य	203-206
■ विचारों का संप्रेषण (मौखिक और लिखित)	207-216
■ भाषा अधिगम में व्याकरण की भूमिका.....	217-221
■ भाषा कौशल.....	222-234
■ भाषा बोधगम्यता एवं मूल्यांकन (बोलना, सुनना, पढ़ना, लिखना).....	235-245
■ अध्यापन अधिगम सामग्रियाँ.....	246-251
■ उपचारात्मक अध्यापन.....	252-256

UP TET एवं केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा (CTET)

हिन्दी : पाठ्यक्रम की संरचना

(पेपर I और पेपर II)

पेपर I (कक्षा I से V के लिए) प्राथमिक स्तर		पेपर II (कक्षा VI से VIII के लिए) उच्च प्राथमिक स्तर	
भाषा I	30 प्रश्न	भाषा I	30 प्रश्न
(क) भाषा बोधगम्यता	15 प्रश्न	(क) भाषा बोधगम्यता	15 प्रश्न
अपठित अनुच्छेदों को पढ़ना – दो अनुच्छेद एक गद्य अथवा नाटक और एक कविता जिसमें बोधगम्यता, निष्कर्ष, व्याकरण और मौखिक योग्यता से सम्बन्धित प्रश्न होंगे (गद्य अनुच्छेद साहित्यिक, वैज्ञानिक, वर्णनात्मक अथवा तर्कमूलक हो सकता है)		अनदेखे अनुच्छेदों को पढ़ना – दो अनुच्छेद एक गद्य अथवा नाटक और एक कविता जिसमें बोधगम्यता, निष्कर्ष, व्याकरण और मौखिक योग्यता से संबंधित प्रश्न होंगे (गद्य अनुच्छेद साहित्यिक, वैज्ञानिक, वर्णनात्मक अथवा तर्कमूलक हो सकता है)	
(ख) भाषा विकास का अध्यापन	15 प्रश्न	(ख) भाषा विकास का अध्यापन	5 प्रश्न
• अधिगम और अर्जन • भाषा अध्यापन के सिद्धान्त • सुनने और बोलने की भूमिका : भाषा का कार्य तथा बालक इसे किस प्रकार एक उपकरण के रूप में प्रयोग करते हैं। • मौखिक और लिखित रूप से विचारों के सम्प्रेषण के लिए किसी भाषा के अधिगम में व्याकरण की भूमिका पर निर्णायक संदर्श • एक भिन्न कक्षा में भाषा पढ़ाने की चुनौतियाँ; भाषा की कठिनाइयाँ, त्रुटियाँ और विकार • भाषा कौशल • भाषा बोधगम्यता और प्रवीणता का मूल्यांकन करना : बोलना, सुनना, पढ़ना और लिखना • अध्यापन – अधिगम सामग्रियाँ : पाठ्यपुस्तक, मल्टी मीडिया सामग्री, कक्षा का बहुभाषायी संसाधन • उपचारात्मक अध्यापन		• अधिगम अर्जन • भाषा अध्यापन के सिद्धान्त • सुनने और बोलने की भूमिका; भाषा का कार्य तथा बालक इसे किस प्रकार एक उपकरण के रूप में प्रयोग करते हैं, • मौखिक और लिखित रूप में विचारों के सम्प्रेषण के लिए किसी भाषा के अधिगम में व्याकरण की भूमिका पर विवेचित संदर्श • एक भिन्न कक्षा में भाषा पढ़ाने की चुनौतियाँ; भाषा की कठिनाइयाँ, त्रुटियाँ और विकार • भाषा कौशल • भाषा बोधगम्यता और प्रवीणता का मूल्यांकन करना : बोलना, सुनना, पढ़ना और लिखना • अध्यापन – अधिगम सामग्री : पाठ्यपुस्तक, मल्टीमीडिया सामग्री, कक्षा का बहुभाषायी संसाधन • उपचारात्मक अध्यापन	
III. भाषा-II	30 प्रश्न	III. भाषा-II	30 प्रश्न
(क) बोधगम्यता	15 प्रश्न	(क) बोधगम्यता	15 प्रश्न
दो अनदेखे गद्य अनुच्छेद (तर्कमूलक अथवा साहित्यिक अथवा वर्णनात्मक अथवा वैज्ञानिक) जिनमें बोधगम्यता, निष्कर्ष, व्याकरण और मौखिक योग्यता से संबंधित प्रश्न होंगे		दो अनदेखे गद्य अनुच्छेद (तर्कमूलक अथवा साहित्यिक अथवा वर्णनात्मक अथवा वैज्ञानिक) जिनमें बोधगम्यता, निष्कर्ष, व्याकरण और मौखिक योग्यता से संबंधित प्रश्न होंगे	
(ख) भाषा विकास का अध्यापन	15 प्रश्न	(ख) भाषा विकास का अध्यापन	15 प्रश्न
• अधिगम और अर्जन • भाषा अध्यापन के सिद्धान्त • सुनने और बोलने की भूमिका; भाषा का कार्य तथा बालक इसे किस प्रकार एक उपकरण के रूप में प्रयोग करते हैं। • मौखिक और लिखित रूप में विचारों के सम्प्रेषण के लिए किसी भाषा के अधिगम में व्याकरण की भूमिका पर निर्णायक संदर्श • एक भिन्न कक्षा में भाषा पढ़ाने की चुनौतियाँ; भाषा की कठिनाइयाँ, त्रुटियाँ और विकार • भाषा कौशल • भाषा बोधगम्यता और प्रवीणता का मूल्यांकन करना : बोलना, सुनना, पढ़ना और लिखना • अध्यापन – अधिगम सामग्री : पाठ्यपुस्तक, मल्टीमीडिया सामग्री, कक्षा का बहुभाषायी संसाधन • उपचारात्मक अध्यापन		• अधिगम और अर्जन • भाषा अध्यापन के सिद्धान्त • सुनने और बोलने की भूमिका; भाषा का कार्य तथा बालक इसे किस प्रकार एक उपकरण के रूप में प्रयोग करते हैं। • मौखिक और लिखित रूप में विचारों के सम्प्रेषण के लिए किसी भाषा के अधिगम में व्याकरण की भूमिका पर निर्णायक संदर्श • एक भिन्न कक्षा में भाषा पढ़ाने की चुनौतियाँ; भाषा की कठिनाइयाँ, त्रुटियाँ और विकार • भाषा कौशल • भाषा बोधगम्यता और प्रवीणता का मूल्यांकन करना : बोलना, सुनना, पढ़ना और लिखना • अध्यापन – अधिगम सामग्री : पाठ्यपुस्तक, मल्टीमीडिया सामग्री, कक्षा का बहुभाषायी संसाधन • उपचारात्मक अध्यापन	

वर्ण-

वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई है। वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते हैं, जिसको विभाजित नहीं किया जा सकता। वर्णों को अक्षर (जिसका क्षरण न हो) भी कहते हैं।

ध्वनि-

ध्वनि शब्दों की आधार शिला है, जिसके बिना शब्द की कल्पना नहीं की जा सकती। अ, आ, इ, ई, उ, ऊ आदि जब मनुष्य की वागिन्द्रिय द्वारा व्यक्त होते हैं तब ये ध्वनियाँ कहलाती हैं। इसके लिखित रूप को 'वर्ण' कहते हैं।

⇒ ध्वनि को बोला और सुना जाता है जबकि वर्ण पढ़ा, लिखा और देखा जाता है।

⇒ भाषा की सार्थक इकाई वाक्य होती है। वाक्य से छोटी इकाई उपवाक्य, उपवाक्य से छोटी इकाई पद (शब्द), पद से छोटी इकाई अक्षर तथा अक्षर से छोटी इकाई वर्ण होती है। जैसे- पानी शब्द में 2 अक्षर (पा और नी) और 4 वर्ण (प + आ + न् + ई) हैं।

वर्णमाला-

वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं।

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	
क	ख	ग	घ	ङ		
च	छ	ज	झ	ञ		
ट	ठ	ड	ढ	ण		
त	थ	द	ध	न		
प	फ	ब	भ	म		
य	र	ल	व			
श	ष	स	ह			
क्ष	त्र	ज्ञ	श्र			

हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होने वाले वर्णों की संख्या 52 है वर्णों का क्रमबद्ध समूह वर्णमाला कहलाता है। हिन्दी की लिपि देवनागरी लिपि है।

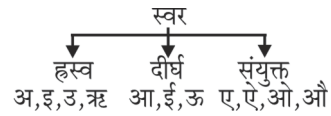
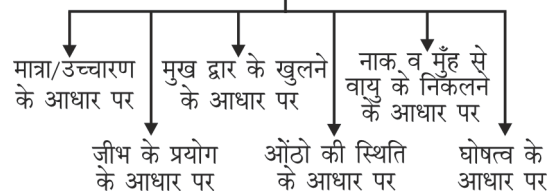
⇒ वर्णों की गणना दो आधार पर की जाती है-
देवनागरी लिपि में कुल 52 वर्ण हैं। इनका विवरण इस प्रकार है-

स्वर	-	11
स्पर्श व्यंजन	-	25
अन्तःस्थ	-	04
ऊष्म व्यंजन	-	04
संयुक्त व्यंजन	-	04
द्विगुण व्यंजन	-	02
अयोगवाह	-	02
कुल	=	52

वर्ण

स्वर वर्ण व्यंजन वर्ण

स्वर वर्ण- वे वर्ण जिनका उच्चारण बिना अवरोध के हो स्वर कहलाते हैं। इनके (स्वर के) उच्चारण में किसी दूसरे वर्णों की सहायता नहीं ली जाती। हिन्दी में स्वर वर्णों की संख्या ग्यारह है, जो इस प्रकार है-

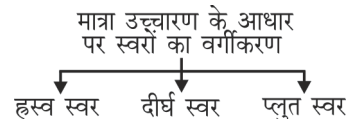
**स्वर वर्णों के वर्गीकरण का आधार**

मात्रा- व्यंजनों के अनेक प्रकार के उच्चारणों को स्पष्ट करने के जब उनके साथ स्वर का योग होता है, तब स्वर का वास्तविक रूप जिस रूप में बदलता है, उसे मात्रा कहते हैं। मात्रा की संख्या 10 है। जैसे-

स्वर- आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

मात्रा- ा ि ि ि ि ि ि ि ि ि

⇒ मात्रा उच्चारण के आधार पर स्वर को तीन भागों में विभाजित किया गया है-



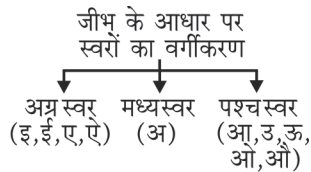
ह्रस्व स्वर या मूल स्वर- ऐसे स्वर जिनकी उत्पत्ति दूसरे स्वरों से नहीं होती, वे स्वर मूल या ह्रस्व या एकमात्रिक कहलाते हैं। इनके उच्चारण में कम समय लगता है।

जैसे- अ, इ, उ, ऋ

दीर्घ स्वर- समान ह्रस्व या मूल स्वर मिलकर दीर्घ स्वर बनते हैं; जैसे- आ (अ+अ), ई (इ+इ), ऊ (उ+उ), ए (अ+इ) ऐ (अ+उ), औ (अ+ओ) इनके उच्चारण में दो मात्राओं का समय लगता है।

प्लुत- जिस स्वर के उच्चारण में तिगुना समय लगे, उसे प्लुत स्वर कहते हैं। इसके लिए तीन (३) का अंक लगाया जाता है; जैसे - ओ३मा।

⇒ जीभ के प्रयोग के आधार पर स्वर वर्णों को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है।

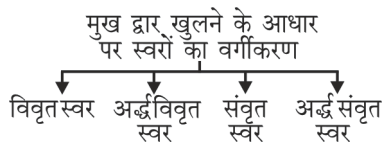


अग्रस्वर- जिन स्वरों के उच्चारण जीभ के अग्र भाग से होते हैं, अग्र स्वर कहलाते हैं; **जैसे-** इ, ई, ए, ऐ।

मध्यस्वर- जिन स्वरों के उच्चारण जीभ के मध्य भाग से होते हैं, मध्य स्वर कहलाता है; **जैसे-** अ।

पश्चस्वर - जिन स्वरों के उच्चारण जीभ के पश्च भाग से होता है, पश्च स्वर कहलाते हैं; **जैसे-** आ, उ, ऊ, ओ, औ।

⇒ मुख द्वार के खुलने के आधार पर स्वर वर्ण को तीन भागों में विभाजित किया गया है-



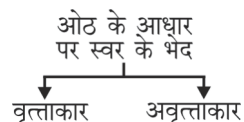
1. **विवृत स्वर-** जिन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार पूरा खुलता है विवृत स्वर कहलाते हैं; **जैसे-** आ।

2. **अर्द्ध विवृत स्वर-** जिन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार आधा खुलता है, अर्द्ध विवृत स्वर कहलाते हैं; **जैसे-** अ, ऐ, औ।

3. **संवृत स्वर-** जिन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार लगभग बंद रहता है, संवृत स्वर कहलाते हैं; **जैसे-** इ, ई, उ, ऊ।

4. **अर्द्ध संवृत स्वर-** जिन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार आधा बंद रहता है, अर्द्ध संवृत स्वर कहलाते हैं; **जैसे-** ए, ओ।

⇒ ओठ की स्थिति के आधार पर स्वर वर्ण को दो भागों में बाँटा गया है।



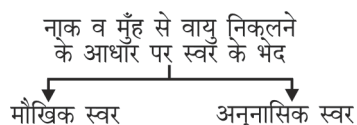
1. **वृत्ताकार-** जिन स्वरों के उच्चारण में ओष्ठ वृत्ताकार में हो जाते हैं, वे स्वर वृत्ताकार कहलाते हैं।

जैसे- उ, ऊ, ओ, औ, ऑ।

2. **अवृत्ताकार-** जिन स्वरों के उच्चारण में ओठ वृत्ताकार न होकर फैले से रहते हैं वे स्वर अवृत्ताकार कहलाते हैं।

जैसे- अ, आ, इ, ई, ए, ऐ।

⇒ नाक व मुँह से वायु के निकलने के आधार पर स्वर वर्ण को दो भागों में विभाजित किया गया है-



1. **मौखिक स्वर (निरनुनासिक स्वर)-** जिन स्वरों के उच्चारण में वायु केवल मुँह से निकलती है वे स्वर मौखिक स्वर या निरनुनासिक स्वर कहलाते हैं; **जैसे-** अ, आ, इ।

2. **अनुनासिक स्वर-** जिन स्वरों के उच्चारण में वायु मुँह के साथ नाक से भी बाहर आती है, वे स्वर अनुनासिक कहलाते हैं; **जैसे-** अँ, आँ, आदि।

⇒ अनुनासिक स्वर निरनुनासिक स्वरों के स्थान पर आकर शब्दों का अर्थ परिवर्तन कर देते हैं;

जैसे- सास - आ साँस- आँ

व्यंजन वर्ण

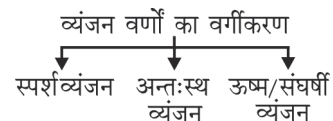
वे वर्ण जिनका उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है, व्यंजन वर्ण कहलाते हैं। प्रत्येक व्यंजन के उच्चारण में 'अ' की ध्वनि छिपी रहती है। 'अ' के बिना व्यंजन का उच्चारण सम्भव नहीं है; **जैसे-** क्+अ=क, ख्+अ=ख।

⇒ हिन्दी में व्यंजनों की संख्या 33 है।

व्यंजन वर्ण			
प्रकार	वर्ग	व्यंजन वर्ण	संख्या
स्पर्श व्यंजन	क वर्ग	क, ख, ग, घ, ङ	25
	च वर्ग	च, छ, ज, झ, ञ	
	ट वर्ग	ट, ठ, ड, ढ, ण	
	त वर्ग	त, थ, द, ध, न	
	प वर्ग	प, फ, ब, भ, म	
अन्तःस्थ	य, र, ल, व		4
ऊष्म	श, ष, स, ह		4
कुल व्यंजन	33		

विशेष- द्विगुण के अन्य नाम गौण व्यंजन, उत्क्षिप्त व्यंजन, नामित व्यंजन आदि हैं। ङ, ढ द्विगुण व्यंजन हैं। क्ष (क्+ष), त्र (त्+र), ज्ञ (ज्+ञ) तथा श्र (श्+र) संयुक्त व्यंजन (4) हैं।

⇒ व्यंजनों के तीन प्रकार हैं-



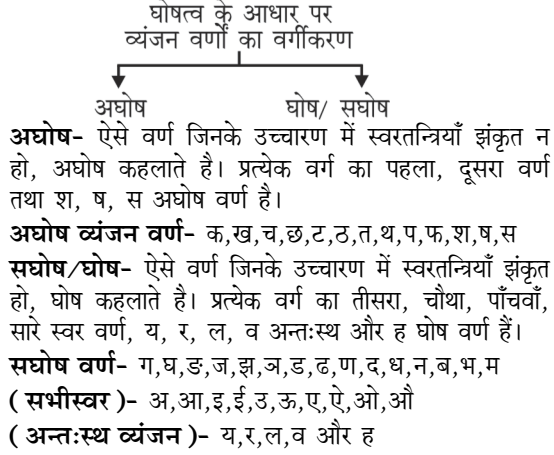
1. **स्पर्श व्यंजन-** ऐसे वर्ण जो उच्चारण करते समय कण्ठ, तालु, मूर्द्धा, दन्त और ओष्ठ स्थानों से स्पर्श होते हैं, स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं। स्पर्श व्यंजन को वर्गीय व्यंजन भी कहा जाता है।

स्पर्श व्यंजन		
वर्ग	व्यंजन वर्ण	वर्णों की संख्या
क वर्ग	क ख ग घ ङ	5
च वर्ग	च छ ज झ ञ	5
ट वर्ग	ट ठ ड ढ ण	5
त वर्ग	त थ द ध न	5
प वर्ग	प फ ब भ म	5
कुल	25	

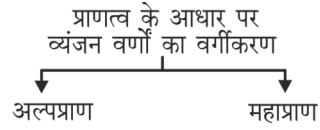
2. **अन्तःस्थ व्यंजन वर्ण-** ऐसे वर्ण जो जीभ, तालु, दाँत, ओष्ठ के परस्पर स्पर्श से उच्चारण किये जाय, अन्तःस्थ व्यंजन कहलाते हैं। अन्तःस्थ व्यंजन य, र, ल, व चार होते हैं। **नोट-** य, व को अर्द्धस्वर कहते हैं।

3. **ऊष्म व्यंजन-** ऐसे वर्ण जो किसी स्थान पर घर्षण करते हुए उच्चारित हों, ऊष्म व्यंजन कहलाते हैं। ऊष्म व्यंजन को संघर्षी व्यंजन भी कहते हैं। ऊष्म व्यंजन श, ष, स, ह चार होते हैं।

⇒ घोषत्व के आधार पर व्यंजनों को दो वर्गों में बाँटा गया है-



⇒ प्राणत्व के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण-



वर्णमाला											
उच्चारण स्थान	अघोष			घोष							
	स्पर्श		ऊष्म	ऊष्म	स्पर्श					स्वर	
	अल्पप्राण	महाप्राण	महाप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण (अनुनासिक)	अंतःस्थ (अल्पप्राण)	ह्रस्व	दीर्घ	संयुक्त
कंठ	क	ख		ह	ग	घ	ङ		अ	आ	
तालु	च	छ	श		ज	झ	ञ	य	इ	ई	ए, ऐ
मूर्धा	ट	ठ	ष		ड	ढ	ण	र	ऋ		
दंत	त	थ	स		द	ध	न	ल			
ओष्ठ	प	फ			ब	भ	म	व	उ	उ	ओ, औ

वर्णों का उच्चारण स्थान	
वर्ण	उच्चारण स्थान
अं, ङ, ज, ण, न, म	नासिका (नाक)
न, स, र, ल	वर्त्य या दन्त मूल
त वर्ग, स	दन्त (दाँत)
व	दन्तोष्ठ्य (दाँत + ओष्ठ)
उ, ऊ, प वर्ग	ओष्ठ्य (ओँठ)
ओ, औ, ऑ	कंठोष्ठ्य (कंठ + ओष्ठ)

ऋ, ट वर्ग, ष, र	मूर्धा (मुँह के भीतर के ऊपरी छत का अगला भाग)
इ, ई, च वर्ग, य, श	तालव्य (तालु द्वार- मुँह के भीतर की ऊपरी छत का अगला भाग)
ए, ऐ	कंठतालव्य (कंठ + तालु)
अ, आ, अः क वर्ग, ह विसर्ग	कंठ्य (कंठ + निचली जीभ)

विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. 'श' ध्वनि का उच्चारण स्थान क्या है?
 (a) दंत (b) मूर्द्धा
 (c) तालु (d) दंतालु
UP TET - Ist Paper (I-V) Oct. 2017
उत्तर : (c)
2. ट वर्ग में किस प्रकार के व्यंजन हैं?
 (a) कंठ्य (b) तालव्य
 (c) मूर्धन्य (d) दन्त्य
UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016
उत्तर : (c)
3. 'अर्ध-स्वर' है—
 (a) य, व (b) इ, उ
 (c) ऋ, ए (d) ॠ, ष
UP TET - Ist Paper (I-V) Dec. 2016
उत्तर : (a)
4. अयोगवाह कहा जाता है -
 (a) विसर्ग को (b) महाप्राण को
 (c) संयुक्त व्यंजन को (d) अल्पप्राण को
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016
उत्तर : (a)
5. अयोगवाह कहा जाता है
 (a) महाप्राण को (b) अनुस्वार एवं विसर्ग को
 (c) संयुक्त व्यंजन को (d) अल्पप्राण को
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Oct. 2017
उत्तर : (b)
6. 'ड' का उच्चारण स्थान होता है
 (a) नासिक्य (b) कंठौष्ठ्य
 (c) मूर्धन्य (d) कंठतालव्य
UP TET - Ist Paper (I-V) Oct. 2017
उत्तर : (a)
7. 'घ' का उच्चारण स्थान कौन-सा है?
 (a) मूर्द्धा (b) कण्ठ
 (c) तालु (d) दन्त
UP TET - Ist Paper (I-V) June 2013
उत्तर : (b)
8. 'क्ष' वर्ण किसके योग से बना है?
 (a) क् + ष (b) क् + च
 (c) क् + छ (d) क् + श
UP TET - Ist Paper (I-V) June 2013
उत्तर : (a)
9. निम्नलिखित में से 'दन्त्य' वर्ण है—
 (a) ट् (b) च्
 (c) त् (d) उ
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) June 2013
उत्तर : (c)

10. हिन्दी शब्दकोश में पहले आने वाला शब्द है -
 (a) वक्त (b) वरक
 (c) वक्र (d) वर्ग
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) June 2013
उत्तर : (a)
11. हिन्दी शब्दकोष में अं किस वर्ण से पहले आता है?
 (a) औ (b) अ
 (c) अः (d) आ
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) June 2013
उत्तर : (b)
12. कौन-सा व्यंजन 'त' वर्ग का नहीं है?
 (a) न (b) म
 (c) द (d) ध
Chhattisgarh TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011
उत्तर : (b)
13. भिन्न-भिन्न स्वरों के मेल से जो स्वर उत्पन्न होता है उसे—
 (a) संयुक्त स्वर (b) दीर्घ स्वर
 (c) सन्धि स्वर (d) मूल स्वर
Chhattisgarh TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011
उत्तर : (a)
14. कौन वर्ण घोष नहीं है?
 (a) ए (b) छ
 (c) अ (d) ड
Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011
उत्तर : (b)
15. किस शब्द में 'ऋ' स्वर नहीं है?
 (a) कृपा (b) कृष्ण
 (c) दृष्टि (d) रिवाज
Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011
उत्तर : (d)
16. किन ध्वनियों के 'अनुस्वार' कहा जाता है?
 (a) स्वर के बाद आने वाली नासिक्य ध्वनियाँ
 (b) स्वतन्त्र रूप से उच्चारित ध्वनियाँ
 (c) स्वर के साथ आने वाली ध्वनियाँ
 (d) व्यंजन के बाद में आने वाली ध्वनियाँ
Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011
उत्तर : (a)
17. 'थ' किस वर्ग का व्यंजन है?
 (a) ओष्ठ्य (b) तालव्य
 (c) दन्त्य (d) ऊष्म
Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) April 2016
उत्तर : (c)

18. हिन्दी भाषा में वे ध्वनियाँ कौन-सी हैं जो स्वतन्त्र रूप से बोली या लिखी जाती हैं?
 (a) स्वर (b) व्यंजन
 (c) वर्ण (d) अक्षर

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Jan. 2011

उत्तर : (a)

19. 'तृ' की ध्वनियाँ हैं -

- (a) तृ + ऋ (b) त + र
 (c) तृ + ऋ + अ (d) तृ + अ

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (a)

20. निम्न में से सघोष वर्ण है -

- (a) अ (b) क
 (c) ख (d) च

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (a)

21. शब्दकोष में निम्न में से सर्वप्रथम आने वाला शब्द है-

- (a) प्याऊ (b) प्रकम्प
 (c) प्लवन (d) प्रकीर्ण

Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (a)

22. 'ज्ञ' को वर्णमाला में माना जाता है-

- (a) संयुक्त व्यंजन (b) स्वर सन्धि
 (c) अनुस्वार (d) व्यंजन

Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (a)

23. निम्न में से कौन-सा वर्ण स्पर्श संघर्ष है?

- (a) झ (b) श
 (c) ट (d) ह

Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (a)

24. निम्नलिखित में से कौन-सा प्रकम्पित वर्ण है?

- (a) र (b) ल
 (c) य (d) व

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2015

उत्तर : (a)

25. मुखावयवों के निकट आने से संघर्ष के पश्चात् प्रकट होने वाली ध्वनि कौन-सी है?

- (a) स्पर्श (b) अंतस्थ
 (c) वत्स्य (d) ऊष्म

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2015

उत्तर : (d)

26. 'ख' है-

- (a) अघोष व्यंजन (b) अल्पप्राण व्यंजन
 (c) घोष व्यंजन (d) विवृत

Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (a)

27. ऊष्म महाप्राण वर्ण है -

- (a) ख् (b) च्
 (c) ट् (d) ष्

Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (d)

28. निम्न में से महाप्राण वर्ण है-

- (a) आ (b) क
 (c) थ (d) च

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (c)

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. शब्द की सबसे छोटी इकाई क्या कहलाती है?

- (a) स्वर (b) वर्ण
 (c) व्यंजन (d) अयोगवाह

2. हिन्दी भाषा की कुल वर्ण लिपियाँ हैं-

- (a) 44 (b) 33
 (c) 52 (d) 48

3. हिन्दी में ध्वनियाँ कितने प्रकार की होती हैं?

- (a) 2 (b) 4
 (c) 6 (d) 8

4. हिंदी वर्णमाला में स्वरों की संख्या है। रिक्त स्थान की पूर्ति करें-

- (a) 11 (b) 10
 (c) 9 (d) 13

5. निम्नलिखित में से कौन-सा मूल दीर्घ स्वर नहीं है?

- (a) आ (b) ई
 (c) ऊ (d) ओ

6. मात्रा के आधार पर स्वर कितने प्रकार के होते हैं?

- (a) 2 (b) 3
 (c) 4 (d) 5

7. जित्वा के आधार पर स्वर कितने प्रकार के होते हैं?

- (a) 2 (b) 3
 (c) 4 (d) 6

8. अर्द्ध विवृत स्वर है :

- (a) ऊ (b) ऐ
 (c) आ (d) ए

9. जिनकी ध्वनि केवल मुख से निकलती है, वे हैं :

- (a) वृत्ताकार स्वर (b) संवृत स्वर
 (c) अनुनासिक स्वर (d) निरनुनासिक स्वर

10. ओठों की आकृति के आधार पर निम्नलिखित में से कौन अवृत्तमुखी स्वर है?

- (a) इ (b) ऊ
 (c) ओ (d) उ

11. निम्न में ओष्ठ्य वर्ण कौन सा है?
(a) अ (b) आ
(c) इ (d) उ
12. किस शब्द में 'ऋ' स्वर नहीं है?
(a) कृपा (b) कृष्ण
(c) दृष्टि (d) आज
13. निम्नलिखित में से कौन से शब्द में अनुनासिकता नहीं है?
(a) संभावित (b) संभावना
(c) संभव (d) चारपाई
14. हिन्दी वर्णमाला में व्यंजनों की संख्या है-
(a) 32 (b) 34
(c) 33 (d) 36
15. निम्न में से दंत्य ध्वनि है-
(a) ख (b) च
(c) ल (d) फ
16. अन्तःस्थ और ऊष्म वर्ण कितने हैं :
(a) 6 (b) 8
(c) 9 (d) 7
17. दो व्यंजन जब एक साथ मिलते हैं तो क्या कहलाते हैं?
(a) संयुक्त व्यंजन (b) अल्पप्राण
(c) अन्तःस्थ (d) महाप्राण
18. हिन्दी वर्णमाला में कुल कितने अयोगवाह हैं?
(a) 2 (b) 5
(c) 3 (d) 4
19. निम्न में से कौन-सा व्यंजन संघर्षी है?
(a) ह (b) म
(c) झ (d) ठ
20. काकल्य वर्ण कौन-सा है?
(a) य (b) स
(c) ह (d) ण
21. 'र' का विवरण है :
(a) वत्स्य, लुठित, सघोष, अल्पप्राण व्यंजन
(b) वत्स्य, पार्श्विक, सघोष, महाप्राण व्यंजन
(c) वत्स्य, संघर्षी, अघोष, अल्पप्राण व्यंजन
(d) वत्स्य, स्पर्श, सघोष, महाप्राण व्यंजन
22. निम्न में से कौन-सा व्यंजन पार्श्विक है?
(a) श (b) ल
(c) झ (d) य
23. निम्न में अर्द्धस्वर कहलाता है-
(a) य (b) प
(c) र (d) ल
24. स्पर्श व्यंजन, कंद्य ध्वनि, अघोष और महाप्राण ध्वनि है:
(a) क (b) ग
(c) ख (d) घ
25. अनुस्वार के संबंध में कौन-सा कथन उपयुक्त नहीं है?
(a) इसका उच्चारण आगे आने वाले व्यंजन से प्रभावित होता है
(b) अनुस्वार नासिक्य व्यंजन होता है
(c) इसे - के रूप में दर्शाया जाता है
(d) इसे - के रूप में लिखा जाता है
26. लिखित भाषा में मूल ध्वनियों के लिए जो चिह्न मान लिए गए हैं तथा जिस रूप में ये लिखे जाते हैं उसे कहते हैं।
(a) स्वर (b) लिपि
(c) ध्वनि कहते हैं (d) व्यंजन कहते हैं।
27. जब एक ही ध्वनि का द्वित्व हो जाए, तब वह क्या कहलाता है?
(a) संयुक्त ध्वनियाँ
(b) युग्मक ध्वनियाँ
(c) संपृक्त ध्वनियाँ
(d) पारस्परिक ध्वनियाँ
28. जिन शब्दों के अंत में 'अ' आता है, उन्हें क्या कहते हैं?
(a) अनुस्वार (b) अयोगवाह
(c) अंतःस्थ (d) अकारांत
29. हिन्दी शब्द कोष में सबसे पहले कौन शब्द आयेगा-
(a) ऋग्वेद
(b) ऋक्ष
(c) ऋणु
(d) ऋण
30. शब्दकोश में कौन-सा शब्द सबसे पहले आएगा?
(a) आँख (b) आग
(c) आकर (d) आँच

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (b) | 2. (c) | 3. (a) | 4. (a) | 5. (d) | 6. (b) | 7. (b) | 8. (b) | 9. (d) | 10. (a) |
| 11. (d) | 12. (d) | 13. (d) | 14. (c) | 15. (c) | 16. (b) | 17. (a) | 18. (a) | 19. (a) | 20. (c) |
| 21. (a) | 22. (b) | 23. (a) | 24. (c) | 25. (c) | 26. (b) | 27. (b) | 28. (d) | 29. (b) | 30. (a) |

वाक्य

मनुष्य के विचारों को पूर्णता से प्रकट करने वाले पद समूह को वाक्य कहते हैं। वाक्य सार्थक शब्दों का व्यवस्थित रूप है। वाक्य वह सार्थक शब्द समूह है जिसके द्वारा लेखक तथा वक्ता लिखकर एवं बोलकर अपने भाव या विचार पाठक या श्रोता पर प्रकट करता है।

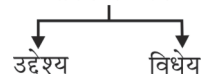
वाक्य की विशेषता-

- ⇒ वाक्य में स्पष्टता होनी चाहिए।
- ⇒ पाठक या श्रोता के सोये भावों या विचारों को जागृति करने में समर्थ हों।
- ⇒ वाक्य में शब्दों व पदों की तारतम्यता होनी चाहिए।
- ⇒ व्यर्थ के पदों व शब्दों का प्रयोग नहीं होना चाहिए।

वाक्य के तत्त्व-

तत्त्व	विशेषता	उदाहरण
योग्यता	पदों के अर्थबोध का सामर्थ्य	सीता <u>चम्मच</u> से रोटी बनाती है। वाक्य में प्रयुक्त 'चम्मच' शब्द अर्थाभिव्यक्ति में अयोग्य है। इसके स्थान पर 'चिमटा' का प्रयोग होना चाहिए।
आकांक्षा	वाक्य के अर्थ को लेकर किसी प्रकार की जिज्ञासा न होना।	<u>साइकिल चला रहे हैं</u> । वाक्य में कर्ता अनुपस्थित है। उसे जानने की स्वाभाविक आकांक्षा है। यदि कर्ता के स्थान पर 'बच्चे' या अन्य कर्ता प्रयुक्त हो तो वाक्य पूर्ण होगा।
क्रम	वाक्य में प्रयुक्त पदों की उचित क्रम व्यवस्था हो। कर्ता + कर्म + क्रिया	<u>लेख मोहन लिखता है</u> पदों का उचित क्रम इस प्रकार होगा। मोहन लेख लिखता है। (शुद्ध)
आसक्ति या संनिधि	वाक्य के पदों में उचित दूरी हो।	मैं पुस्तक पढ़ता हूँ। (पदों की अतिनिक्कटता) मैं...पुस्तक... पढ़ता हूँ। (पदों की अति दूरी) मैं पुस्तक पढ़ता हूँ (पदों की उचित दूरी)

सार्थकता	वाक्य में प्रयुक्त शब्दों की सार्थकता	पानी <u>वानी</u> पीओगे। वाक्य में प्रयुक्त 'वानी' शब्द निरर्थक है। इसका प्रयोग उचित नहीं है।
अन्वय	वाक्य में लिंग, वचन, काल, कारक का क्रिया के साथ उचित मेल हो।	लड़के बाजार जाता है। (अशुद्ध) लड़के बाजार जाते हैं। (शुद्ध)

वाक्य के अंग

उद्देश्य- वाक्य में जिसके विषय में कुछ बताया जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं। प्रायः वाक्य का 'कर्ता' ही वाक्य का उद्देश्य होता है। **जैसे-** राघव पढ़ता है। यहाँ राघव शब्द उद्देश्य है।

उद्देश्य के विभिन्न रूप-

वाक्यों में उद्देश्य संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रियार्थक संज्ञा, वाक्यांश आदि के रूपों में आते हैं: **जैसे-**

संज्ञा	<u>मोहन</u> किताब पढ़ता है।
सर्वनाम	<u>तुम</u> गाते हो।
विशेषण	मूर्ख व्यक्ति परेशान होता है।
क्रियार्थक संज्ञा	दौड़ना एक अच्छा व्यायाम है।
वाक्यांश	पराधीन रहना आलसियों का काम है।

उद्देश्य का विस्तार-

उद्देश्य की विशेषता बताने वाले शब्द या शब्द समूह को उद्देश्य का विस्तार कहते हैं। **जैसे-** लंबे लंबे बालों वाली लड़की अभी-अभी एक बच्चे के साथ दौड़ते हुए उधर गई।

उपर्युक्त वाक्य में 'लंबे लंबे बालों वाली एक लड़की' उद्देश्य का विस्तार है। इस वाक्य में 'लंबे लंबे बालों वाली एक' लड़की का विशेषण है।

⇒ उद्देश्य के विस्तार शब्द विशेषण, सम्बंधकारक, सार्वनामिक विशेषण, वाक्यांश आदि होते हैं।

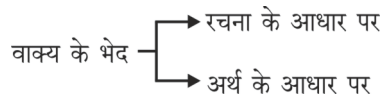
विशेषण	<u>महान लोग</u> पूजनीय होते हैं।
संबंध कारक	<u>राम के पिता</u> बाजार जाते हैं।
सार्वनामिक विशेषण	<u>वह लड़का</u> रोता है।
वाक्यांश	अपने कार्य में <u>लीन बालक</u> बहुत अच्छे होते हैं।

विधेय- वाक्य में उद्देश्य (कर्ता) के विषय में जो कुछ कहा जाता है वह विधेय कहलाता है; **जैसे-** राघव पढ़ता है। 'पढ़ता है' विधेय है।

विधेय का विस्तार-विधेय का विस्तार कारक, क्रियाविशेषण, वाक्यांश, पूर्वकालिक क्रिया, क्रियाद्योतक कर्म के द्वारा किया जा सकता है; **जैसे-**

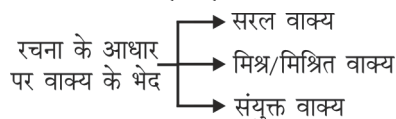
कारक	वह साइकिल से गया।
क्रिया विशेषण	मैं धीरे-धीरे पढ़ता हूँ।
वाक्यांश	मोहन आठ बजे के बाद ही घर जाता है।
पूर्वकालिक क्रिया	वह रोकर चला गया।
क्रिया द्योतक	गाड़ी पों-पों करती हुई निकल गयी।
कर्म	मैं मोहन से पुस्तक लेता हूँ।

वाक्य के भेद-



रचना के आधार पर वाक्य के भेद-

वाक्य के तीन भेद होते हैं-



1. **सरल वाक्य-** जिस वाक्य में एक मुख्य क्रिया होती है और एक कर्ता होता है, उसे सरल या साधारण वाक्य कहते हैं। इसमें एक उद्देश्य और एक विधेय रहते हैं। **जैसे-** राघव गाता है।

इस वाक्य में एक **उद्देश्य** (राघव) और क्रिया, **विधेय** (गाता है) है। अतः यह सरल वाक्य है।

2. **मिश्र/मिश्रित वाक्य-** जिस वाक्य में एक साधारण वाक्य (प्रधान उपवाक्य) के अतिरिक्त उसके अधीन कोई अंग वाक्य (उप वाक्य) हो तो मिश्रित वाक्य कहलाता है; **जैसे-** मैं जानता हूँ कि तुम्हारे नम्बर अच्छे आयेंगे।

इस वाक्य में 'मैं जानता हूँ' प्रधान वाक्य है और 'तुम्हारे नम्बर अच्छे आयेंगे,' आश्रित उपवाक्य है।

नोट-

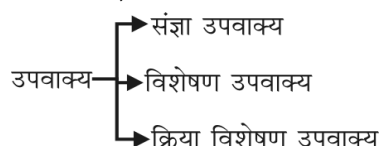
मिश्र वाक्य में उपवाक्य- कि, जिससे, जो- ज्यों-त्यों क्योंकि, चूँकि, यदि, यद्यपि, जहाँ, जब, ताकि इसलिए, अतएव, सो, तथापि, चाहे, अतः आदि जैसे अव्ययों से जुड़ते हैं।

उपवाक्य- ऐसा पद समूह जिसका अपना अर्थ हो, जो एक वाक्य का भाग हो और जिसमें उद्देश्य और विधेय हों उपवाक्य कहलाता है।

जैसे- राघव ने कहा कि वह गायेगा।

प्रधान वाक्य उपवाक्य

उपवाक्य के भेद- उपवाक्य के तीन भेद हैं-



1. **संज्ञा उपवाक्य-** जो आश्रित उपवाक्य संज्ञा की तरह व्यवहृत हों, उसे संज्ञा उपवाक्य कहते हैं। 'संज्ञा उपवाक्य कि' पहचान यह है कि इस उपवाक्य के पूर्व 'कि' होता है, जैसे-

1. मोहन ने कहा कि मैं जाऊँगा।

2. मैं नहीं जानता कि सीता कहाँ है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'मैं जाऊँगा' और 'सीता कहाँ है।' संज्ञा उपवाक्य है।

2. **विशेषण उपवाक्य-** जो आश्रित उपवाक्य विशेषण की तरह व्यवहृत हो उसे 'विशेषण उपवाक्य' कहते हैं। 'विशेषण उपवाक्य' के पूर्व 'जो', 'जैसा', 'जितना' इत्यादि शब्दों का प्रयोग होता है। **यथा-** मैंने केवल वह पुस्तक पढ़ा, जो पतली थी।

जैसे- वह आदमी जो कल आया था आज भी आया है। यहाँ जो 'जो कल आया था' विशेषण उपवाक्य है।

3. **क्रिया विशेषण उपवाक्य-**

जो उपवाक्य क्रियाविशेषण की तरह व्यवहृत हो उसे क्रियाविशेषण उपवाक्य कहते हैं, जैसे -

1. जब पानी बरसता है, तब मेंढक बोलते हैं।

2. ज्यों ही मैं गया त्यों ही ट्रेन चली गयी।

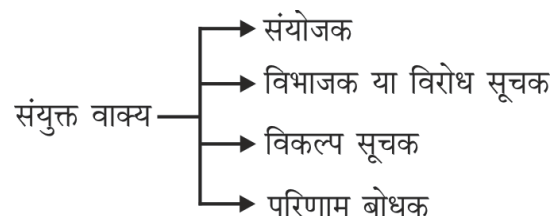
उपर्युक्त वाक्य में 'जब पानी बरसता है', ज्यों ही मैं गया' क्रिया विशेषण उपवाक्य है। क्रिया विशेषण उपवाक्य के पूर्व जब, जहाँ, जिधर, ज्यों, यद्यपि इत्यादि शब्दों का प्रयोग होता है। इसके द्वारा समय, स्थान, कारण, फल, उद्देश्य, फल, अवस्था, समानता मात्रा इत्यादि का बोध होता है।

संयुक्त वाक्य- जिस वाक्य में साधारण अथवा मिश्र वाक्यों का मेल संयोजक अव्ययों द्वारा होता है, उसे 'संयुक्त वाक्य' कहते हैं। 'संयुक्त वाक्य' उस वाक्य समूह को कहते हैं जिसमें दो या दो से अधिक सरल वाक्य अथवा मिश्र वाक्य अव्ययों द्वारा संयुक्त हो जैसे- मैं बाजार गया और मोहन आया। इस वाक्य में दो सरल वाक्य को जोड़ने वाला, संयोजक 'और' है।

नोट- संयुक्त वाक्यों में प्रत्येक वाक्य अपनी स्वतंत्र सत्ता बनाये रखता है, वह एक-दूसरे पर आश्रित नहीं होता केवल संयोजक अव्यय उन स्वतंत्र वाक्यों को जोड़ते हैं।

अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद- अर्थ के अनुसार वाक्य के आठ भेद हैं।

संयुक्त वाक्य के प्रकार- संयुक्त वाक्य चार प्रकार के होते हैं



संयोजक- जब एक साधारण वाक्य दूसरे साधारण या मिश्रित वाक्य से संयोजक अव्यय के द्वारा जुड़ा हो। **जैसे-**

1. मोहन पढ़ा और सीता लिखी।
2. रमेश गया और राधा आयी।
3. सोनू गया और मोनू ने डांस किया।

विभाजक- जब साधारण या मिश्र वाक्यों का परस्पर विरोध का संबंध रहता है।

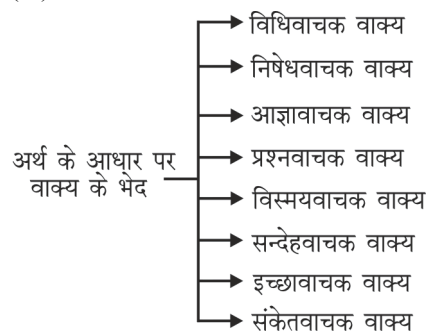
जैसे- (i) विनोद परिश्रम तो बहुत किया पर पास नहीं हुआ।
(ii) राघव बहुत तेज कार्यालय तो गया पर पहुँच नहीं पाया।

विकल्पसूचक- जब दो बातों में से किसी एक बात को स्वीकार करना होता है; जैसे-

- (i) या तो स्कूल जाओ या काम करो।
- (ii) या तो खेलों या पढ़ाई करो।
- (iii) या तो गावों या नृत्य करो।

परिणाम बोधक- जब एक साधारण वाक्य दूसरे साधारण या मिश्र वाक्य का परिणाम बताता हो, **जैसे-**

- (i) रास्ते में बहुत तेज धूप है इसलिए मैं नहीं आ सकता।
- (ii) वृक्षारोपण नहीं हो रहा है इसलिए पर्यावरण दूषित हो रहा है।
- (iii) अत्यधिक उमस के कारण आज बारिश हो सकती है।



1. **विधिवाचक वाक्य-** ऐसे वाक्य जिससे किसी काम के होने या किसी के अस्तित्व का बोध हो, वह वाक्य विधिवाचक वाक्य कहलाता है। **जैसे-**

- (i) भारत मेरा देश है।
- (ii) रमेश गाना गाता है।
- (iii) राधा स्कूल जाती है।
- (iv) सोहन क्रिकेट खेलता है।
- (v) गौरव रामायण पढ़ता है।

⇒ विधिवाचक वाक्य को विधानवाचक वाक्य भी कहते हैं।

2. **निषेधवाचक वाक्य-** ऐसे वाक्य जिसमें किसी कार्य के निषेध का बोध होता है, निषेधवाचक वाक्य कहलाते हैं। **जैसे-**

- (i) मैं बाजार नहीं जाऊँगा
- (ii) राघव सही काम नहीं करता है।
- (iii) कंश सच्चाई के रास्ते पर नहीं चलता था।
- (iv) मोहन क्रिकेट नहीं खेलेगा।

(v) सुमित्रा स्कूल नहीं आयेगी।

3. **आज्ञावाचक वाक्य-** ऐसे वाक्य जिससे किसी आज्ञा का बोध हो, आज्ञावाचक वाक्य कहलाते हैं; **जैसे-**

- (i) वहाँ जाकर बैठिये।
- (ii) तुम बाजार जाओ।
- (iii) कृपया शान्ति बनाये रखें
- (iv) तुम मेरे साथ चलो।
- (v) तुम गाओ।

4. **प्रश्नवाचक वाक्य-** ऐसे वाक्य जिससे किसी प्रकार के प्रश्न पूछे जाने का बोध हो, प्रश्नवाचक वाक्य कहलाते हैं; **जैसे-**

- (i) तुम कहाँ जा रहे हो?
- (ii) क्या तुम पढ़ोगे?
- (iii) तुम किस कक्षा में पढ़ती हो?
- (iv) तुम क्या खाओगे?
- (v) सलीम कब आयेगा?

5. **विस्मयवाचक वाक्य-** ऐसे वाक्य जिससे किसी आश्चर्य दुःख या सुख का बोध हो, विस्मयवाचक वाक्य कहलाते हैं; **जैसे-**

- (i) अरे! तुम आ गये।
- (ii) शाबाश! तुम जीत गये।
- (iii) ओह! मैं फेल हो गया।
- (iv) बल्ले! हम पास हो गये।
- (v) अरे! मोहन गिर गया।

6. **सन्देहवाचक वाक्य-** ऐसे वाक्य जिससे किसी बात का सन्देह प्रकट हो, सन्देहवाचक वाक्य कहलाते हैं; **जैसे-**

- (i) वह चला गया होगा।
- (ii) मैंने सुना होगा।
- (iii) शायद वह आ जाये।
- (iv) संभवतः वह सुधर गया।
- (v) वह पढ़ लिया होगा।

7. **इच्छावाचक वाक्य-** ऐसे वाक्य जिससे किसी प्रकार की इच्छा या शुभकामना का बोध हो, इच्छावाचक वाक्य कहलाता है; **जैसे-**

- (i) तुम सफल हो।
- (ii) भगवान तुम्हें लंबी उम्र दें।
- (iii) तुम हमेशा खुश रहो।
- (iv) सदा सुहागन रहो।
- (v) तुम अपने कार्य में सफल रहो।

8. **संकेतवाचक वाक्य-** जहाँ एक वाक्य दूसरे की सम्भावना पर निर्भर हो, संकेतवाचक वाक्य कहलाता है; **जैसे-**

- (i) यदि तुम परिश्रम करोगे तो सफल हो जाओगे।
- (ii) अगर तुम ध्यान देते तो ऐस न होता।
- (iii) अगर तुम जल्दी उठोगे तो स्वस्थ रहोगे।
- (iv) पानी न बरसता तो धान सूख जाता।
- (v) यदि तुम आओगे तो मैं भी आऊँगा।

वाक्य अशुद्धि के सामान्य नियम

कर्ता और क्रिया का मेल

- यदि वाक्य में एक ही लिंग, वचन और पुरुष के अनेक विभक्ति रहित कर्ता हों और अन्तिम कर्ता के पहले 'और' संयोजक आया हो, तो इन कर्ताओं की क्रिया अन्तिम कर्ता लिंग के बहुवचन में होगी।
जैसे- (i) सीता और मीना जाती है।
(ii) रमेश, राघव और आनंद पढ़ते हैं।
- यदि वाक्य में कर्ता विभक्ति रहित है तो उसकी क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होंगे। **जैसे-**
(i) सीता पुस्तक पढ़ती है।
(ii) रमेश गीत गाता है।
- यदि वाक्य में दो भिन्न लिंगों के कर्ता हों और दोनों द्वन्द्व समास के अनुसार प्रयुक्त हों, तो उनकी क्रिया बहुवचन में होगी, **जैसे-**
(i) माता-पिता सो गये।
(ii) नर-नारी गये।
(iii) राजा-रानी आ गये।
(iv) स्त्री-पुरुष बैठे हैं।
- यदि वाक्य में दो भिन्न-भिन्न विभक्ति रहित एक वचन कर्ता हों और दोनों के बीच 'और' संयोजक आये तो उनकी क्रिया पुलिङ्ग और बहुवचन में होगी; **जैसे-**
(i) राधा और कृष्ण रास रचाते हैं।
(ii) बाघ और बकरी एक घाट पानी पीते हैं।
(iii) मोहन और राधिका बाजार जाते हैं।
- यदि वाक्य में दोनों लिंगों और वचनों के अनेक कर्ता हों, तो क्रिया बहुवचन में होगी और उनका लिंग अन्तिम कर्ता के अनुसार होगा; **जैसे-**
(i) एक लड़का, दो महिला और चार पुरुष आते हैं।
(ii) एक गाय, दो बैल और बहुत से बकरी चरती हैं।
(iii) एक शेर, दो भैंस और तीन हिरण जाते हैं।
- यदि वाक्य में अनेक कर्ताओं के बीच विभाजक समुच्चय बोधक अव्यय या, अथवा, वा रहे तो क्रिया अन्तिम कर्ता के लिंग और वचन के अनुसार होगी; **जैसे-**
(i) मनीष का तीन बैल अथवा राघव की तीन गाय बिकेगी।
(ii) हरि का एक चटाई या पाँच दरियाँ बिकेगी।
- यदि उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष एक वाक्य में कर्ता बनकर आयें तो क्रिया उत्तमपुरुष के अनुसार होगी; **जैसे-**
(i) तुम और मैं जाऊँगा।
(ii) तुम हम और वह जायेंगे।
(iii) मोहन, तुम और हम साथ-साथ स्कूल चलेंगे।

नोट- कामता प्रसाद गुरु का मत है कि वाक्य में पहले मध्यमपुरुष उसके बाद अन्य पुरुष और अन्त में उत्तम पुरुष का प्रयोग होता है। जैसे- तुम, वह और मैं खेलूँगा।

कर्म और क्रिया का मेल

- यदि वाक्य में कर्ता 'ने' विभक्ति से युक्त हो और कर्म की 'को' विभक्ति न हो, तो उसकी क्रिया कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होगी। **जैसे-**
(i) मोहन ने पुस्तक पढ़ी।
(ii) उसने लड़ाई जीती।
(iii) मोहन ने बात की।
(iv) तुमने क्षमा माँगी।
- यदि कर्ता और कर्म दोनों विभक्ति चिह्नों से युक्त हों तो क्रिया सदा एकवचन पुलिङ्ग और अन्यपुरुष में होगी; **जैसे-**
(i) मैंने कृष्ण को पुकारा।
(ii) लड़कों ने खेल को ध्यान से देखा।
(iii) तुमने पुस्तक को पढ़ा।
(iv) सीता ने राम को देखा।
- यदि एक ही लिंग, वचन के अनेक प्राणिवाचक विभक्ति रहित कर्म एक साथ आएँ, तो क्रिया उसी लिंग में बहुवचन में होगी; **जैसे-**
(i) राघव ने घोड़ा और ऊँट खरीदे।
(ii) उसने भैंस और गाय खरीदे।
- यदि एक ही लिंग-वचन के अनेक प्राणिवाचक-अप्राणिवाचक विभक्ति रहित कर्म एक साथ एकवचन में आये तो क्रिया भी एकवचन में होगी; **जैसे-**
(i) मैंने एक भैंस और एक गाय खरीदी।
(ii) राघव ने एक पेन और एक पुस्तक खरीदी।
(iii) रमेश ने एक गाड़ी और एक साइकिल खरीदी।
- यदि वाक्य में भिन्न-भिन्न लिंग के अनेक प्रत्यय कर्म आये और वे 'और' से जुड़े हों, तो क्रिया अन्तिम कर्म के लिंग और वचन में होगी; **जैसे-**
(i) मैंने सेब और अमरूद खाया।
(ii) तुमने सब्जी और रोटी खायी।

संज्ञा और सर्वनाम का मेल

- वाक्य में लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार सर्वनाम उस संज्ञा का अनुसरण करता है, जिसके बदले उसका प्रयोग होता है; **जैसे-**
(i) लड़कियाँ भी ये ही हैं।
(ii) लड़के वे ही हैं।
- यदि वाक्य में अनेक संज्ञाओं के स्थान पर एक ही सर्वनाम आये, तो वह बहुवचन में होगा; **जैसे-**
1. रमेश और सुधाकर दिल्ली गये हैं तीन दिन बाद वे लौटेंगे।

वाक्य अशुद्धि

वाक्य शुद्धि भाषा में अति आवश्यक है। वाक्य में अनुपयुक्त शब्दों से सही क्रम न होने से, लिंग, वचन, कारक, सर्वनाम एवं क्रिया का प्रयोग उचित स्थान पर न होने से वाक्य अशुद्ध हो जाता है जो भाषा की रमणीयता को नष्ट करता है।

लिंग सम्बन्धी अशुद्धि

⇒ शरीर के अंगों के नाम पुलिंग होते हैं, जैसे- मुँह, दाँत, ओठ, पाँव, हाथ, मस्तक, बाल, नाखून इत्यादि।

उपवाद- कोहनी, कलाई, नाक, आँख, जीभ, बाँह, नस स्त्रीलिंग होते हैं।

⇒ द्रव पदार्थों के नाम पुलिंग होते हैं; जैसे- पानी, घी, तेल, इत्र, सिरका, रायता, शर्बत, अर्क इत्यादि।

अपवाद- चाय, स्याही, शराब (स्त्रीलिंग)

⇒ नदियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे- गंगा, यमुना, महानदी, गोदावरी, सतलज, रावी, झेलम इत्यादि।

अपवाद- सिन्धु, ब्रह्मपुत्र पुल्लिंग हैं।

अशुद्ध	शुद्ध
रीता <u>खाता</u> है।	रीता <u>खाती</u> है।
मोहन पुस्तक <u>पढ़ती</u> है।	मोहन पुस्तक <u>पढ़ता</u> है।
एक गाय, दो घोड़े और बकरी मैदान में चर <u>रहे</u> हैं।	एक गाय, दो घोड़े और एक बकरी मैदान में चर <u>रही</u> है।
तुमने उसे <u>देखी</u> ।	तुमने उसे <u>देखा</u> ।
हमने लड़ाई <u>जीता</u> ।	हमने लड़ाई <u>जीती</u> ।
तुमने क्षमा <u>माँगा</u> ।	तुमने क्षमा <u>माँगी</u> ।
शिक्षा प्रणाली <u>बदलना</u> चाहिए।	शिक्षा प्रणाली <u>बदलनी</u> चाहिए।
मोहन के दाँत <u>चमकती</u> है।	मोहन के दाँत <u>चमकते</u> हैं।
पानी <u>बहती</u> है।	पानी <u>बहता</u> है।

वर्तनीगत अशुद्धि

⇒ विभक्ति चिह्न सर्वनामों के अलावा शेष सभी शब्दों से अलग लिखे जाते हैं; जैसे- मोहन ने, सीता ने, राधा ने इत्यादि।

⇒ जहाँ 'श' एवं 'स' एक साथ प्रयुक्त होते हैं वहाँ 'श' पहले आयेगा एवं 'स' उसके बाद जैसे- शासन, प्रशंसा, शासक, नृशंस। इसी प्रकार 'श' एवं 'ष' एक साथ आने पर 'श' एवं 'ष' बाद में प्रयोग होगा। जैसे- शोषक, विशेष, शेष, वेशभूषा, विशेषण।

⇒ सम् उपसर्ग के बाद य, र, ल, व, श, स, ह आदि ध्वनि आये तो 'म' को हमेशा अनुस्वर (·) के रूप में लिखते हैं; जैसे- संयम, संवाद, संलग्न, संसर्ग, संहार, संरचना, संरक्षण आदि। इन्हें सम्यम, समवाद, समलग्न, समसर्ग, समहार, समरचना, समरक्षण लिखना अशुद्ध है।

अशुद्ध	शुद्ध
राघव <u>सीदा</u> जा रहा है।	राघव <u>सीधा</u> जा रहा है।
सीता <u>पाठसाला</u> में पढ़ती है।	सीता <u>पाठशाला</u> में पढ़ती है।
<u>रामायन</u> की रचना महर्षि वाल्मीकि ने की।	<u>रामायण</u> की रचना महर्षि वाल्मीकि ने की।
दशरथ ने कैकेई को दो <u>बचन</u> दिये।	दशरथ ने कैकेई को दो <u>वचन</u> दिये।
बड़ो का <u>आर्शीवाद</u> लेना चाहिए।	बड़ों का <u>आशीर्वाद</u> लेना चाहिए।
तुमने <u>अती</u> कर दी।	तुमने <u>अति</u> कर दी।
मोहन <u>दूकान</u> खोला है।	मोहन <u>दुकान</u> खोला है।
बड़े पूजनीय होते हैं।	बड़े पूजनीय होते हैं।
साकेत के <u>रचियता</u> मैथिलिशरण गुप्त हैं।	साकेत के <u>रचयिता</u> मैथिली शरण गुप्त हैं।
<u>मात-पिता</u> की सेवा करनी चाहिए।	<u>माता-पिता</u> की सेवा करनी चाहिए।

वचन सम्बन्धी अशुद्धि

⇒ प्राण, लोग, दर्शन, आँसू, दाम, अक्षत इत्यादि शब्दों का प्रयोग हिन्दी में बहुवचन में होता है।

⇒ द्रव्यवाचक संज्ञाओं का प्रयोग एकवचन में होता है; जैसे- सोना, पानी, तेल आदि।

⇒ प्रत्येक, हरएक का प्रयोग एकवचन में होता है।

⇒ आदरसूचक शब्दों का प्रयोग सदैव बहुवचन में होता है।

अशुद्ध	शुद्ध
प्रत्येक <u>व्यक्तियों</u> को पढ़ाओं।	प्रत्येक व्यक्ति को पढ़ाओ।
दशरथ के प्राण <u>चला गया</u> ।	दशरथ के प्राण <u>चले गये</u> ।
हरएक <u>चादरे</u> बिछा दो।	हरएक <u>चादर</u> बिछा दो।
आज मैंने हनुमान जी का दर्शन <u>किया</u> ।	आज मैंने हनुमान जी <u>के</u> दर्शन किये।
मीना-रीता और स्वर्निमा गा रही <u>है</u> ।	मीना, रीता और स्वर्निमा गा रही <u>हैं</u> ।
यह मोहन <u>का</u> हस्ताक्षर है।	ये मोहन <u>के</u> हस्ताक्षर हैं।
रामचरितमानस की अनेक <u>विशेषता</u> हैं।	रामचरितमानस की अनेक <u>विशेषताएँ</u> हैं।
राघव <u>के</u> बहुत <u>से</u> धन चोरी हो <u>गये</u> ।	राघव <u>का</u> बहुत- <u>सा</u> धन चोरी हो <u>गया</u> ।
<u>फूल</u> की माला गूँथो।	<u>फूलों</u> की माला गूँथो।
दो <u>सड़किल</u> खरीद लाओ।	दो <u>साड़किलें</u> खरीद लाओ।

सर्वनाम संबन्धी अशुद्धि

- ⇒ जब सर्वनामिक शब्दों के साथ विभक्ति चिह्न हो तो उसे सर्वनाम में मिलाकर लिखा जाता है; जैसे- हमने, उसने, मुझसे, आपको, उसको, किसने आदि।
- ⇒ बहुवचन संज्ञा के साथ सर्वनाम भी बहुवचन का होता है।
- ⇒ सम्माननीय व आदरणीय शब्दों के स्थान पर बहुवचन सर्वनामिक शब्दों का प्रयोग होता है।

अशुद्ध	शुद्ध
मेरे को बात नहीं करनी है।	मुझे बात नहीं करनी है।
तुम तुम्हारे रास्ते जाओ।	तुम अपने रास्ते जाओ।
तुम अपन को नहीं जानते।	तुम मुझे नहीं जानते।
वह लोग बहुत अच्छे हैं।	वे लोग बहुत अच्छे हैं।
मैंने आम खाना है।	मुझे आम खाना है।
दूध में कौन गिर गया है?	दूध में क्या गिर गया है
क्या आया है?	कौन आया है?
आप आपका काम करें।	आप अपना काम करें।
तेरे को अब पढ़ना चाहिए	तुमको अब पढ़ना चाहिए
यह किताबें बहुत मँहगी है	ये किताबें बहुत मँहगी है।

विशेषण सम्बन्धी अशुद्धि

- ⇒ विशेषण को वाक्य में साधारणतः विशेष्य के पहले रखना चाहिए। जैसे- अच्छे लड़के बड़ों का सम्मान करते हैं।
- ⇒ यदि विशेषण विधेय के रूप में आये तो वह विशेष्य के बाद रखा जाता है। जैसे- मोहन बहुत सुन्दर है।
- ⇒ कुछ विशेषण हर समय एक समान ही प्रयोग होते हैं, उनमें लिंग वचन का प्रभाव नहीं पड़ता। जैसे- सुन्दर, सरल, सुशील आदि।
- ⇒ वाक्य में कर्ता (संज्ञा) के अनुसार ही विशेषण का प्रयोग करना चाहिए। जैसे- (i) मोहन काला है। (ii) राधिका काली है।

अशुद्ध	शुद्ध
रीता काला है।	रीता काली है
मानव का समाज से घोर सम्बन्ध है।	मानव का समाज से घनिष्ठ सम्बन्ध है।
वह बड़ी तेज दौड़ता है।	वह बहुत तेज दौड़ता है।
हमारी सौभाग्यवती कन्या का विवाह है।	हमारी आयुष्मती कन्या का विवाह है।
उसको सुधारना बहुत गहरी समस्या है।	उसको सुधारना बहुत गंभीर समस्या है।
इस नीरस जंगल में।	इस वीरान जंगल में।
ये महिलाएँ गुणवान हैं।	ये महिलाएँ गुणवती हैं।
ये बच्चे अच्छा है।	ये बच्चे अच्छे हैं।
वह पेड़ महीन है।	वह पेड़ पतला है।
हमारे देश की दयनीय दुर्दश है।	हमारे देश की दयनीय हालत है।
यह सबसे सुन्दरतम नायिका है।	यह सुन्दरतम नायिका है।

क्रिया संबंधी अशुद्धि

- ⇒ वाक्य में क्रिया का प्रयोग कर्ता के लिंग एवं वचन के अनुसार किया जाता है अन्यथा वाक्य अशुद्ध समझा जाता है।

अशुद्ध	शुद्ध
राम और सीता वन को गई।	राम आर सीता वन को गए।
सीता मुम्बई से वापस आयी है।	सीता मुम्बई से वापस आई है।
मैंने दान दिया।	मैंने दान किया।
राघव पगड़ी ओढ़कर बाजार चला गया।	राघव पगड़ी बाँधकर बाजार चला गया
तुम्हारा यह कहना मेरे लिए बड़ी बात होगा।	तुम्हारा यह कहना मेरे लिए बड़ी बात होगी।
वहाँ घना अँधेरा धिरा था।	वहाँ घना अँधेरा छाया है
एक बकरी, दो गायें और तीन बैल एक चरता है।	एक बकरी, दो गायें और तीन बैल चरते हैं।
वह राम को लजाता है।	वह राम को लजवाता है।
राघव ने माला गुँथ ली।	राघव ने माला गुँथ ली।
वे जा रहा है।	वे जो रहे हैं।

परसर्ग/विभक्ति चिह्न संबंधी अशुद्धि

- ⇒ विभक्ति शब्दों का काम शब्दों का संबंध दिखाना है इसलिए इनका अर्थ नहीं होता; जैसे- ने, की, को, से आदि।
- ⇒ हिन्दी की विभक्तियाँ विशेष रूप से सर्वनामों के साथ प्रयुक्त होने पर प्रायः विकार उत्पन्न कर उनसे मिल जाती है; जैसे- मेरा, हमारा, उसे उन्हे।
- ⇒ विभक्तियाँ प्रायः संज्ञाओं या सर्वनामों के साथ आती हैं; जैसे- सुनीता की दूकान से यह चीज लायी है।

अशुद्ध	शुद्ध
हमने यह काम करना है।	हमे यह काम करना है।
सब से नमस्ते।	सब को नमस्ते।
जनता के असंतोष फैल गया।	जनता में असंतोष फैल गया।
नौकर का कमीज।	नौकर की कमीज।
मैंने नहीं जाना।	मुझे नहीं जाना।
मैंने रहीम को पूछा।	मैंने रहीम से पूछा।
मोहन घर नहीं है।	मोहन घर पर नहीं है।
बारह बजने को पन्द्रह मिनट हैं।	बारह बजने में पन्द्रह मिनट है।
मैंने राम को रुपये लिये।	मैंने राम से रुपये लिये।
उसने मेरे को दस रुपये दिये।	उसने मुझे दस रुपये दिया।

पुनरुक्ति संबंधी पद अशुद्धि

जहाँ किसी शब्द से किसी अर्थ की प्रतीति हो जाने पर उसी अर्थ वाले शब्द का दुबारा प्रयोग किया गया हो वहाँ पुनरुक्ति दोष होता है।

अशुद्ध	शुद्ध
मोहन <u>प्रातःकाल</u> के <u>समय</u> धूमने जाता है।	मोहन <u>प्रातःकाल</u> धूमने जाता है।
कुत्ते सायंकाल के <u>समय</u> भौकते हैं।	कुत्ते सायंकाल भौकते हैं।
<u>नौजवान</u> <u>युवकों</u> पर भारत का भविष्य है।	<u>नौजवानों</u> पर भारत का भविष्य है।
पृथ्वी का <u>अधिक से अधिक</u> भाग जलीय है।	पृथ्वी का <u>अधिकांश</u> भाग जलीय है।
<u>मध्यकालीन युग</u> में स्थापत्य कला का बहुत विकास हुआ।	<u>मध्यकाल</u> में स्थापत्य कला का बहुत विकास हुआ।
वे <u>परस्पर एक दूसरे से</u> वार्तालाप करते हैं।	वे <u>परस्पर</u> वार्तालाप करते हैं।
राजा ने चोर को <u>मृत्युदण्ड की सजा</u> दिया।	राजा ने चोर को <u>मृत्युदण्ड</u> दिया।
भक्तियुग का <u>काल</u> स्वर्णयुग माना जाता है।	भक्ति काल <u>स्वर्णयुग</u> माना जाता है।
गाँव में <u>केवल मात्र</u> एक बरगद है।	गाँव में मात्र एक बरगद है।
<u>कृपया</u> हमारे घर पधारने की कृपा करें।	हमारे घर-पधारने की कृपा करें।

अधिकपदत्व संबंधी अशुद्धि

- ⇒ वाक्य में अनावश्यक पदों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
 ⇒ अनावश्यक पदों से भाषा के सौन्दर्य का हास होता है।

अशुद्ध	शुद्ध
रहीम कक्षा में <u>सबसे</u> सुन्दरतम है।	रहीम कक्षा में सुन्दरतम है।
आज <u>ठण्डी</u> बर्फ मँगवानी चाहिए।	आज बर्फ मँगवानी चाहिए।
कुत्ता <u>एक स्वामिभक्त</u> जानवर है।	कुत्ता स्वामिभक्त जानवर है।
वह <u>जल से</u> पौधों को सींच रहा है।	वह पौधों को सींच रहा है।
यह <u>पुष्प का</u> पराग बहुत सुन्दर है।	यह पराग बहुत सुन्दर है।
मनुष्य संसार का <u>सबसे</u> उत्कृष्टतम प्राणी है।	मनुष्य संसार का उत्कृष्टतम प्राणी है।
आज <u>बादल से</u> तेज बारिश हो रही है।	आज तेज बारिश हो रही है।
सुरेश, <u>पिता, राघवेन्द्र</u> का पुत्र है।	सुरेश, राघवेन्द्र का पुत्र है।
वह <u>पैर से</u> पैदल चलता है।	वह पैदल चलता है।

असंगत पद

⇒ वाक्य में प्रयुक्त शब्द संगत अर्थ प्रदान करने वाले होने चाहिए। 'हार' एवं 'माला' समानार्थी शब्द हैं इसका प्रयोग द्रष्टव्य है-

युद्ध में उसे माला मिली। (अशुद्ध)

युद्ध में उसे हार मिली। (शुद्ध)

अशुद्ध	शुद्ध
इस समय रमेश की <u>आयु</u> कितनी है?	इस समय रमेश की <u>उम्र</u> कितनी है?
पार्थ गाने की <u>कसरत</u> कर रहा है।	पार्थ गाने का <u>रियाज</u> कर रहा है।
छात्रों ने मालवीय जी को अभिनन्दन पत्र <u>प्रदान</u> किया।	छात्रों ने मालवीय जी को अभिनन्दन पत्र <u>अर्पित</u> किया।
मुझे <u>शोक</u> है कि मैं आन सका।	मुझे <u>खेद</u> है कि मैं आ न सका।
दो मित्रों के झगड़े का <u>हेतु</u> क्या हो सकता है?	दो मित्रों के झगड़े का <u>कारण</u> क्या हो सकता है?
रहीम स्कूल से <u>भागता</u> हुआ आया।	रहीम स्कूल से <u>दौड़ता</u> हुआ आया।
भरत राम की 14 वर्षों तक प्रतीक्षा <u>देखी</u> ।	भरत राम की 14 वर्षों तक प्रतीक्षा <u>की</u> ।
आज प्रयागराज में काफी <u>सरगर्मी</u> दृष्टिगोचर हो रही है।	आज प्रयागराज में काफी <u>गर्मी</u> दिखायी देती है।
लोग <u>चहक</u> रहे हैं।	लोग <u>गा</u> रहे हैं।
तलवार एक धारदार <u>अस्त्र</u> है।	तलवार एक धारदार <u>शस्त्र</u> है।

विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. वाक्य शुद्ध है-

- (a) मोहन और गीता गा रही हैं
 (b) गीता और मोहन गा रहा है
 (c) मोहन और गीता गा रहे हैं
 (d) मोहन और गीता गा रही हैं

उत्तर : (c)

2. पिता ने समझाया कि सदा सत्य बोलना चाहिए। यह वाक्य उदाहरण है-

- (a) सरल वाक्य का (b) इच्छावाचक वाक्य का
 (c) मिश्र वाक्य का (d) आज्ञावाचक वाक्य का

उत्तर : (c)

3. शुद्ध वाक्य है-

- (a) राम ने एक थैला और दो पुस्तकें खरीदी
 (b) राम ने एक थैला और दो पुस्तकें खरीदी
 (c) राम ने एक थैला और दो पुस्तकें खरीद लिया
 (d) राम ने एक थैला और दो पुस्तक खरीदे

UP TET - IIInd Paper (VI-VIII) Dec. 2016

उत्तर : (b)

4. निम्नलिखित वाक्यों में से शुद्ध रूप चुनिए।
 (a) हमारी सौभाग्यवती कन्या का विवाह होने जा रहा है
 (b) हमारी आयुष्मती कन्या का विवाह होने जा रहा है
 (c) हमारी सौभाग्यवती कन्या का विवाह होने जा रही है
 (d) हमारी आयुष्मती कन्या की विवाह होने जा रहा है
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2011
 उत्तर : (b)
5. निम्नलिखित वाक्यों में से शुद्ध रूप चुनिए।
 (a) हमारे यहाँ तरुण नवयुवकों की शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध है
 (b) हमारे यहाँ तरुण नवयुवकों की शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध है
 (c) हमारे यहाँ नवयुवकों की शिक्षा की अच्छा प्रबन्ध है
 (d) हमारे यहाँ नवयुवकों की शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध है
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2011
 उत्तर : (d)
6. कौन-सा वाक्य शुद्ध है?
 (a) खेतों में लम्बे-लम्बे घास उग आए
 (b) परशुराम के क्रोधाग्नि ने क्षत्रियों को जला दिया
 (c) गलियों को चौड़ा करना आवश्यक है
 (d) वृक्षों पर कोयल कूक रही है
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Oct. 2017
 उत्तर : (c)
7. निम्नलिखित में कौन-सा वाक्य शुद्ध है?
 (a) उसने मुझे पास आने के लिए कहा
 (b) उसने मुझसे पास आने को कहा
 (c) उसने मुझे पास आने को कहा
 (d) उसने मेरे को पास आने के लिए कहा
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014
 उत्तर : (c)
8. निम्न में कौन-सा सही है?
 (a) वह टका-सा उत्तर देता है
 (b) वह टका-सा प्रश्न करता है
 (c) वह टका-सा जवाब देता है
 (d) उपरोक्त सभी
Bihar TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011
 उत्तर : (c)
9. नीचे लिखे वाक्यों में से कौन-सा वाक्य शुद्ध है?
 (a) इन दस वर्षों में देश ने काफी प्रगति की
 (b) इन दस वर्ष में देश ने काफी प्रगति की
 (c) इधर दस वर्ष में देश ने काफी प्रगति की
 (d) इन दस वर्षों में देश ने काफी प्रगति करना है
Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011
 उत्तर : (a)
10. 'राजा-नगर में आए' अर्थ के अनुसार यह वाक्य निम्नलिखित में से किस प्रकार के अन्तर्गत है?
 (a) सन्देश सूचक वाक्य (b) विधानार्थक वाक्य
 (c) संकेतार्थक वाक्य (d) इच्छाबोधक वाक्य
Chhattisgarh TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011
 उत्तर : (b)

11. "मैं खाना खा चुका, तब वह आया" यह वाक्य है—
 (a) सरल वाक्य (b) संयुक्त वाक्य
 (c) मिश्र वाक्य (d) संक्षिप्त वाक्य
Chhattisgarh TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011
 उत्तर : (c)
12. 'सरल' या 'साधारण' वाक्य किसे कहते हैं?
 (a) जो छोटा हो
 (b) जिसका अर्थ सरलता से समझ में आ जाए
 (c) जिसमें एक कर्ता और अनेक क्रियाएँ हो
 (d) जिसमें एक उद्देश्य, एक विधेय और एक ही क्रिया हो
Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) July 2011
 उत्तर : (d)
13. निम्न में से मिश्रित वाक्य है—
 (a) वर्षा हो रही है
 (b) मैं पढ़ता हूँ और वह खेलता है
 (c) सुधीर पढ़ता है
 (d) मैंने सुना है कि नीना पास हो गई है
Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) July 2011
 उत्तर : (d)
14. सही कथन है —
 (a) कर्ता का स्थान प्रायः वाक्य के प्रारम्भ में होता है
 (b) कर्ता का स्थान प्रायः वाक्य के अंत में होता है
 (c) कर्ता का स्थान प्रायः वाक्य के मध्य में होता है
 (d) कर्ता का वाक्य में कोई स्थान नहीं होता है
Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) 2012
 उत्तर : (a)
15. सरल वाक्य है—
 (a) श्रमिक श्रम करता है किन्तु उसके फल से वंचित रहता है।
 (b) राम और सीता जाते हैं।
 (c) चाहे सुबह हो जाए, मुझे यह काम पूरा करना है।
 (d) जो करे सो भरे।
Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) 2012
 उत्तर : (b)
16. 'पैसा कमाना एक बात है, उसे ठीक से खर्च करना दूसरी बात है' यह वाक्य है —
 (a) मिश्र वाक्य (b) संयुक्त वाक्य
 (c) सरल वाक्य (d) युगल वाक्य
Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) 2012
 उत्तर : (b)
17. आज ---- संकट के बादल छाए हैं।
 (a) देश पर (b) देश को
 (c) देश के (d) देश से
Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) 2012
 उत्तर : (a)
18. 'वहाँ मोहन के.....कोई नहीं था' वाक्य में रिक्त स्थान पर प्रयुक्त होगा—
 (a) या (b) और
 (c) अलावा (d) अथवा
Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011
 उत्तर : (c)

19. 'उद्देश्य' और 'विधेय' किसके अंग है?

- (a) वाक्य (b) रचना
(c) शब्द (d) अर्थ

Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011

उत्तर : (a)

20. 'तेन्दुलकर ने एक ओवर में पाँच छक्के लगाए'-इस वाक्य में उद्देश्य है -

- (a) छक्के (b) तेन्दुलकर
(c) ओवर (d) पाँच

Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011

उत्तर : (b)

21. निविदा सूचना का उद्देश्य होता है -

- (a) सामान की आपूर्ति करवाना
(b) सामान की नीलामी
(c) निर्माण कार्य करवाना
(d) उपरोक्त सभी

Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011

उत्तर : (d)

22. संरचना के आधार पर किए गए वाक्य के वर्गीकरण में इनमें से कौन-सा प्रकार नहीं है?

- (a) सरल वाक्य (b) मिश्र वाक्य
(c) आज्ञार्थक वाक्य (d) संयुक्त वाक्य

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (c)

23. 'ईश्वर तुम्हें सफलता प्रदान करे।' यह वाक्य है-

- (a) संकेतवाचक (b) विधानवाचक
(c) इच्छावाचक (d) विस्मयवाचक

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (c)

24. 'मेरा छोटा भाई प्रशान्त धार्मिक पुस्तकें अधिक पढ़ता है।' इस वाक्य में विधेय का विस्तार है-

- (a) छोटा भाई
(b) धार्मिक पुस्तकें अधिक
(c) मेरा भाई प्रशान्त
(d) पढ़ता है

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (b)

25. नीचे लिखे वाक्यों में से कौन-सा वाक्य सही है?

- (a) उसकी आयु तीस वर्ष है इस समय
(b) इस समय उसकी अवस्था तीस वर्ष है
(c) तीस वर्ष की अवस्था है इस समय उसकी
(d) इस समय तीस वर्ष की अवस्था है उसकी

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Jan. 2011

उत्तर : (b)

26. रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए उपर्युक्त विकल्प का चयन कीजिए-

महात्मा गाँधी अहिंसा के साक्षात् थे।

- (a) विग्रह (b) अनुग्रह
(c) परिग्रह (d) अपरिग्रह

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Jan. 2011

उत्तर : (c)

27. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य है -

- (a) तुलसी की कविता में माधुर्यता है
(b) तुलसी की कविता माधुर्यगुण प्रधान है
(c) तुलसी की कविता में मधुरतापन है
(d) तुलसी की कविता मधुराई से पूर्ण है

Uttarakhand TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2013

उत्तर : (b)

28. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य सर्वाधिक सही है?

- (a) यद्यपि तुम अजनबी हो, परन्तु मैं तुम्हें अपना मानता हूँ
(b) यद्यपि तुम अजनबी हो, मैं तुम्हें ही अपना मानता हूँ
(c) यद्यपि तुम अजनबी हो, किन्तु मैं तुमको ही अपना मानता हूँ
(d) यद्यपि तुम अजनबी हो, तथापि मैं तुम्हें अपना मानता हूँ

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2013

उत्तर : (d)

29. निम्न में शुद्ध रूप से लिखा वाक्य है-

- (a) किसी आदमी को भेज दो
(b) हम तो अवश्य ही जाएँगे।
(c) तब शायद यह काम अवश्य हो जाएगा।
(d) कृपया आने का अनुग्रह करें।

Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (a)

30. वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध शब्द है-

- (a) इक्षा (b) आक्हान
(c) श्रृंगार (d) प्रत्यूष

Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (d)

31. नीचे दिए शब्दों में से किसकी वर्तनी शुद्ध है?

- (a) जाग्रति (b) पूज्यानीया
(c) अन्तर्ध्यान (d) अभ्यारण्य

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2015

उत्तर : (d)

32. "शबरी प्रतिदिन राम की प्रतीक्षा करती थी।" वाक्य का सही भेद है।

- (a) संदेहार्थक (b) विधानार्थक
(c) प्रश्नार्थक (d) आज्ञार्थक

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2015

उत्तर : (b)

33. एक उद्देश्य एवं एक विधेय से मिलकर बनने वाला वाक्य क्या कहलाता है?

- (a) संयुक्त वाक्य (b) साधारण वाक्य
(c) मिश्र वाक्य (d) आज्ञार्थक

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2015

उत्तर : (b)

34. 'मोहन बाजार जा रहा है' इस वाक्य में उद्देश्य है-

- (a) मोहन (b) खरीददारी
(c) घूमना (d) बाजार

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) July 2011

उत्तर : (a)

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. वाक्यों का वर्गीकरण मुख्यतः कितने प्रकार से होता है?
(a) 2 (b) 3
(c) 6 (d) 8
2. मिश्र वाक्य है?
(a) उसने अपना घर लुटा दिया
(b) सूरज उगने पर कुहासा फट गया
(c) उसके पास जो कुछ था, वह खो गया
(d) उसका सब कुछ खो गया
3. बच्चे खेल रहे हैं।
अर्थ के आधार पर वाक्य का प्रकार बताइए:
(a) प्रश्नवाचक (b) विधानवाक्य
(c) निषेधात्मक वाक्य (d) आज्ञावाचक वाक्य
4. 'बादल धिर आए और बारिश होने लगी।' रचना की दृष्टि से वाक्य है—
(a) सरल (b) आज्ञावाचक
(c) निषेधवाचक (d) संयुक्त
5. 'सदा सच बोलना चाहिए' यह किस प्रकार का वाक्य-भेद है?
(a) संदेह वाचक (b) इच्छावाचक
(c) आज्ञावाचक (d) संकेतवाचक
6. निम्नलिखित वाक्य को मिश्र वाक्य में परिवर्तित कीजिये।
"राम आया और श्याम चल दिया।"
(a) दिए हुए वाक्य में परिवर्तन संभव नहीं है
(b) जैसे ही राम आया, श्याम चल दिया
(c) राम के आने पर श्याम चला गया
(d) श्याम चल दिया, राम आ गया
7. 'अपने हाथ से स्वयं काम करो' वाक्य का शुद्ध रूप क्या होगा?
(a) अपना काम स्वयं करो।
(b) अपने से अपना काम करो।
(c) स्वयं से कम करो।
(d) हाथ से अपना काम करो।
8. 'मुझे आज खाने का मन नहीं होती है।' उपर्युक्त वाक्य में अशुद्ध अंश स्पष्ट कीजिए।
(a) मुझे
(b) आज
(c) खाने का
(d) मन नहीं होती है।
9. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य शुद्ध है?
(a) निरपराधी को दंड देना उचित नहीं है
(b) न्यायालय ने उसको निर्दोष ठहराया
(c) न्यायालय ने उसको निर्दोष बनाया
(d) न्यायालय ने उसको अपराधी लगाया
10. निम्नलिखित वाक्यों में से शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए।
(a) उसने वहाँ पहुँचकर शोर मचाया।
(b) उसका घर मेरे को मालुम नहीं।
(c) मैंने यह कब बोला।
(d) मेरे से मत उलझो, घर जाओ।
11. "नेताजी ने आजाद हिन्दी फौजी का नियंत्रण किया।" वाक्य की त्रुटियाँ सुधारें।
(a) नेताजी ने आजाद हिन्द फौज का नेतृत्व किया
(b) नेताजी ने आजाद हिन्द फौज का निर्भय किया।
(c) नेताजी ने आजाद हिन्द फौज का नियंत्रण किया।
(d) नेताजी ने आजाद हिन्द फौजी का नियंत्रण किया।
12. "बगीचे की सुंदरता अनूठा है।" सही वाक्य का चयन करें।
(a) बगीचे की सुंदरता अनूठा है।
(b) बगीचे का सुंदरता अनूठी है।
(c) बगीचे की सुंदरता अनूठी है।
(d) बगीची की सुंदरता अनूठा है।
13. दिए गए विकल्पों में से शुद्ध वाक्य पहचानिए।
(a) मजदूरों को अनेक काम है।
(b) मजदूरों को अनेकों काम हैं।
(c) मजदूरों को अनेकों काम है।
(d) मजदूरों को अनेक काम हैं।
14. निम्नलिखित वाक्यों में से शुद्ध वाक्य पहचानिए।
(a) श्री राम और रावण के बीच घोर युद्ध हुआ।
(b) यह लड़की ने कोई काम ठीक से नहीं किया
(c) रविवार को हम चर्च को जाते हैं
(d) दुर्जन लोगों को सुधारना कठिन है
15. निम्न वाक्य के किस भाग में त्रुटि है? हम कब तक सहते रहेंगे और अपमान का घुट पीते रहेंगे।
(a) सहते रहेंगे और (b) हम कब तक
(c) अपमान का घुट (d) पीते रहेंगे
16. वाक्य के जिस भाग में गलती हो, उसके अनुरूप विकल्प (a), (b), (c) या (d) चुनें।
(a) महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव के समय पर
(b) आचार्य महोदय ने वार्षिक प्रगति
(c) का विवरण प्रस्तुत किया।
(d) कोई गलती नहीं
17. 'पति-पत्नी के झगड़े का हेतु क्या हो सकता है' वाक्य का शुद्ध रूप लिखिए।
(a) पति-पत्नी के झगड़े का क्या हेतु हो सकता है?
(b) पति-पत्नी के झगड़े का हेतु क्या है?
(c) पति-पत्नी के झगड़े का कारण क्या हो सकता है?
(d) पति और पत्नी के झगड़े का हेतु क्या हो सकता है

18. एक वाक्य शुद्ध है
 (a) खेत जोतने के पारम्परिक उपादान हल का स्थान अब ट्रैक्टर ने ले लिया है
 (b) निरपराधी के विरुद्ध दंडात्मक कार्यवाही का किया जाना दुर्भाग्यपूर्ण है
 (c) श्रीमती रेड्डी जिस स्तर की नृत्यांगना है उनके पति उस स्तर के नृत्यांगन नहीं हैं
 (d) शिक्षा प्रणाली जनोपयोगी होनी चाहिए
19. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य है :
 (a) यह रूमाल अच्छी है।
 (b) उसकी दही खट्टी है।
 (c) कई हाथियां जा रही हैं।
 (d) उसका मकान बहुत अच्छा है।
20. मुझे/रेलगाड़ी में यात्रा करना/अच्छी लगती है/कोई त्रुटि नहीं।
 (a) मुझे
 (b) रेलगाड़ी में यात्रा करना
 (c) अच्छी लगती है (d) कोई त्रुटि नहीं
21. शुद्ध वाक्य पहचानिये :
 (a) मेरी 5 बहनें और एक भाई हैं।
 (b) मेरी पाँच बहनें और एक भाई हैं।
 (c) मेरा एक भाई और पाँच बहनें हैं।
 (d) मेरी एक भाई और पाँच बहनें हैं।
22. क्रम सुव्यवस्थित कर वाक्य का निर्माण करें।
 1. प्रतियोगिता में भेजे गये फोटो
 (य) अवश्य भेजें ताकि फोटो अस्वीकृत
 (र) के साथ उचित आकार का, पर्याप्त डाक
 (ल) होने पर उसे वापस भेजा जा सके, वरना अस्वीकृत
 (व) टिकट लगा और अपने पते वाला लिफाफा
 6. फोटो वापस नहीं भेजा जाएगा।
 (a) य ल व र (b) व र य ल
 (c) व ल र य (d) र व य ल
23. उद्देश्य में कर्ता के साथ और क्या रहता है?
 (a) कर्ता-विस्तार (b) कर्ता-पूरक
 (c) कर्ता-विधेय (d) विधेय-पूरक
24. एक ही विधेय हो जिसमें :
 (a) मिश्र वाक्य (b) कर्मपूरक वाक्य
 (c) सरल वाक्य (d) संयुक्त वाक्य
25. जिस वाक्य में इसलिए, और, क्योंकि, लेकिन, परन्तु आदि समुच्चयबोधक शब्द जुड़ते हैं।
 (a) संयुक्त वाक्य (b) मिश्र वाक्य
 (c) सरल वाक्य (d) विधान वाक्य
26. कौन-सा वाक्य संयुक्त वाक्य का उदाहरण है?
 (a) न कोई आया, न कोई गया।
 (b) वह जैसे आया वैसे ही गया।
 (c) वह आया और गया।
 (d) वह आया तभी तो गया।
27. यद्यपि मोहन धनी है तथापि बहुत दुःखी है :
 (a) साधारण वाक्य (b) संयुक्त वाक्य
 (c) मिश्र वाक्य (d) उपरोक्त में से कोई नहीं
28. “ईश्वर तुम्हें दीघार्यु दे”। अर्थ के आधार पर वाक्य का भेद बताएँ।
 (a) प्रश्नवाचक वाक्य (b) विस्मयवाचक वाक्य
 (c) इच्छावाचक वाक्य (d) निषेधवाचक वाक्य
29. निम्नलिखित वाक्यों में कौन सा वाक्य संयुक्त वाक्य नहीं है?
 (a) वह आया और पानी पीकर चला गया।
 (b) करो या मरो।
 (c) वह आकर पानी पीकर चला गया।
 (d) उसने परिश्रम किया, परन्तु सफल न हो सका।
30. “आपने बुलाया होता तो हम अवश्य आते।” अर्थ के आधार पर वाक्य भेद है—
 (a) संदेहवाचक वाक्य
 (b) इच्छावाचक वाक्य
 (c) संकेतवाचक वाक्य
 (d) आज्ञावाचक वाक्य

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (a) | 2. (c) | 3. (b) | 4. (d) | 5. (b) | 6. (b) | 7. (a) | 8. (d) | 9. (a) | 10. (a) |
| 11. (a) | 12. (c) | 13. (d) | 14. (c) | 15. (c) | 16. (a) | 17. (c) | 18. (d) | 19. (a) | 20. (c) |
| 21. (c) | 22. (d) | 23. (a) | 24. (c) | 25. (a) | 26. (c) | 27. (c) | 28. (c) | 29. (c) | 30. (c) |

शब्दों और वाक्यों का परस्पर सम्बन्ध बताने तथा किसी विषय को भिन्न-भिन्न भागों में बाँटने और पढ़ने में ठहरने के लिए, लेखों में जिन चिह्नों का उपयोग किया जाता है, उन्हें विराम चिह्न कहते हैं।

विरामचिह्नों का विवेचन अंग्रेजी भाषा के अधिकांश व्याकरणों का विषय है और हिन्दी में यह वहाँ से ले लिया गया है। हमारी भाषा में इस प्रणाली का प्रचार अब इतना बढ़ गया है कि इसको ग्रहण करने में कोई सोच-विचार हो ही नहीं सकता, पर यह प्रश्न अवश्य उत्पन्न हो सकता है कि विरामचिह्न शुद्ध व्याकरण का विषय है या भाषा रचना का? यथार्थ में यह विषय भाषारचना का है, क्योंकि लेखक व वक्ता अपने विचार स्पष्टता से प्रकट करने के लिए जिस प्रकार अभ्यास और अध्ययन के द्वारा शब्दों के अनेकार्थ, विचारों का सम्बन्ध, विषयविभाग, आशय की स्पष्टता, लाघव और विस्तार, आदि बातें जान लेता है (जो व्याकरण के नियमों से नहीं जानी जा सकती), उसी प्रकार लेखक को इन विरामचिह्नों का उपयोग केवल भाषा के व्यवहार ही से ज्ञात हो जाता है। व्याकरण से इन विरामचिह्नों का केवल उतना ही सम्बन्ध है कि इनके नियम बहुधा वाक्यपृथक्करण पर स्थापित किए गए हैं, परन्तु अधिकांश में इनका प्रयोग वाक्य के अर्थ पर ही अवलम्बित है। विरामचिह्नों के उपयोग से भाषा व्यवहार से सम्बन्ध रखने वाला कोई सिद्धान्त भी उत्पन्न नहीं होता, इसलिए इन्हें व्याकरण का अंग मानने में बाधा होती है। यथार्थ में व्याकरण से इन चिह्नों का केवल गौण संबंध है, परन्तु इनकी उपयोगिता के कारण व्याकरण में इन्हें स्थान दिया जाता है। तो भी इस बात का स्मरण रखना चाहिए कि कई चिह्नों के उपयोग में बड़ा मतभेद है, और जिस नियमशीलता से अंग्रेजी में इन चिह्नों का उपयोग होता है, वह हिन्दी में आवश्यक नहीं समझी जाती।

मुख्य विरामचिह्न ये हैं-

चिह्नों के नाम	चिह्न
(1) अल्प विराम	,
(2) अर्ध विराम	;
(3) पूर्ण विराम	।
(4) प्रश्न चिह्न	?
(5) आश्चर्यचिह्न	!
(6) निर्देशक (डैश)	-
(7) कोष्ठक	()
(8) अवतरण चिह्न	“ ”

(1) अल्पविराम

इस चिह्न का उपयोग बहुधा नीचे लिखे स्थानों में किया जाता है-

(i) जब एक ही शब्द के दो दो शब्दों के बीच में समुच्चयबोधक न हो; **जैसे-** वहाँ पीले, हरे खेत दिखाई देते थे। वे नदी, नाले पार करते चले।

(ii) यदि समुच्चयबोधक से जुड़े हुए दो शब्दों पर विशेष अवधारणा देना हो; **जैसे-** यह पुस्तक उपयोगी, अतएव उपादय है।

(iii) जब एक ही शब्दभेद के तीन या अधिक शब्द आवें और उसके बीच विकल्प में समुच्चयबोधक रहे, जब अन्तिम शब्द को

छोड़ शेष शब्दों के पश्चात्; **जैसे-** चातकचंचु, सीप का सम्पुट, मेरा घट भी भरता है।

(iv) जब कई शब्द भेद जोड़े से आते हैं, तब प्रत्येक जोड़े के पश्चात्; **जैसे-** ब्रह्मा ने दुख और सुख, पाप और पुण्य, दिन और रात, ये सब बनाए हैं।

(v) यदि उद्देश्य बहुत लम्बा हो, तो उसके पश्चात्; **जैसे-** चारों तरफ चलने वाले सवारों के घोड़ों की बढ़ती हुई आवाज, दूर-दूर तक फैल रही थी।

(vi) कई एक क्रिया-विशेषण वाक्यांशों के साथ; **जैसे-** बड़े महात्माओं ने, समय-समय पर, यह उपदेश दिया है। एक हब्शी लड़का मजबूत रस्सी का एक सिरा अपनी कमर में लपेट, दूसरे सिरे को लकड़ी के बड़े टुकड़े में बाँध, नदी में कूद पड़ा।

(vii) सम्बोधन कारक की संज्ञा और सम्बोधन शब्दों के पश्चात्; **जैसे-** घनश्याम, फिर भी तू सबकी इच्छा पूरी करता है। लो, मैं यह चला।

(viii) छन्दों में बहुधा यति के पश्चात्; **जैसे-** भणित मोर सब गुण रहित, विश्व विदित गुण एक।

(ix) संज्ञा वाक्य को छोड़ मिश्र वाक्य के शेष बड़े उपवाक्यों के बीच में; **जैसे-** हम उन्हें सुख देंगे, क्योंकि उन्होंने हमारे लिए दुःख सहा है। आप एक ऐसे मनुष्य की खोज कराइए, जिसने कभी दुःख का नाम न सुना हो।

(x) जब संज्ञा वाक्य मुख्य वाक्य से किसी समुच्चयबोधक के द्वारा नहीं जोड़ा जाता; **जैसे-** लड़के ने कहा, मैं अभी आता हूँ। परमेश्वर एक है, यह धर्म की मूल बात है।

(xi) जब संयुक्त वाक्य के प्रधान उपवाक्यों में घना सम्बन्ध रहता है तब उसके बीच में; **जैसे-** पहले मैंने बगीच देखा, फिर मैं टीले पर चढ़ गया और वहाँ से उतरकर सीधा इधर चला आया।

(xii) जब छोटे समानाधिकरण प्रधान वाक्यों के बीच में समुच्चयबोधक नहीं रहता, तब उनके बीच में; **जैसे-** पानी बरसा, हवा चली, ओले गिरे। सूरज निकला, हुआ सबेरा, पक्षी शोर मचाते हैं।

(2) अर्ध विराम

अर्धविराम नीचे लिखी अवस्था में प्रयुक्त होता है-

(i) जब संयुक्त वाक्यों के प्रधान वाक्यों में परस्पर विशेष सम्बन्ध नहीं रहता, तब वे अर्धविराम के द्वारा अलग किए जाते हैं; **जैसे-** नन्दगाँव का पहाड़ कटवाकर उन्होंने विरक्त साधुओं को क्षुब्ध किया था पर लोगों की प्रार्थना पर सरकार ने इस घटना को सीमाबद्ध कर दिया।

(ii) उन पूरे वाक्यों के बीच में जो विकल्प से अन्तिम समुच्चयबोधक के द्वारा जोड़े जाते हैं, **जैसे-** सूर्य अस्त हुआ; आकाश लाल हुआ; बराह पोखरों के उठकर घूमने लगे; मोर अपने रहने के झाड़ों पर जा बैठे; हरिण हरियाली पर सोने लगे; मोर गाते गाते घोंसलों की ओर उड़े; और जंगल में धीरे-धीरे अँधेरा फैलने लगा।

(iii) जब मुख्य वाक्य से कारणवाचक क्रिया-विशेषण का निकट सम्बन्ध नहीं रहता; **जैसे-** हवा के दबाव से साबुन का एक

बुलबुला भी नहीं दब सकता; क्योंकि बाहरी हवा का दबाव भीतरी हवा के दबाव से कट जाता है।

(iv) किसी नियम के पश्चात् आनेवाले उदाहरणसूचक 'जैसे' शब्द के पूर्व।

(v) उन कई आश्रित वाक्यों के बीच में, जो एक ही मुख्य वाक्य पर अवलम्बित रहते हैं; जैसे- जब तक हमारे देश के पढ़े-लिखे लोग यह न जानने लगेंगे कि देश में क्या-क्या हो रहा है, शासन में क्या-क्या त्रुटियाँ हैं, और किन किन बातों की आवश्यकता है; और आवश्यक सुधार किए जाने के लिए आन्दोलन न करने लगेंगे; तब तक देश की दशा सुधरना बहुत कठिन होगा।

(3) पूर्ण विराम

इसका उपयोग नीचे लिखे स्थानों में होता है-

(i) प्रत्येक पूर्ण वाक्य के अन्त में; जैसे- इस नदी से हिन्दुस्तान के दो सम विभाग होते हैं।

(ii) बहुधा शीर्षक और ऐसे शब्द के पश्चात् जो किसी वस्तु के उल्लेख मात्र के लिए आता है; जैसे- राम-वन-गमन। पराधीन सपनेहूँ सुख नहीं।- तुलसी।

(iii) कभी-कभी अर्थ की पूर्णता के कारण और, परन्तु, अथवा, इसलिए आदि समुच्चयबोधक के पूर्व वाक्य के अन्त में; जैसे- ऐसा एक भी मनुष्य नहीं जो संसार में कुछ न कुछ लाभकारी कार्य न कर सकता हो। और ऐसा भी कोई मनुष्य नहीं जिसके लिए संसार में एक न एक उचित स्थान हो।

(4) प्रश्नचिह्न

प्रश्न का बोध होने पर प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग होता है; जैसे-(i) क्या तुम कल दिल्ली जाओगे?

(ii) कल प्रधान मंत्री प्रयागराज मे आ रहे हैं न ?

विस्मादिबोधक प्रश्न के साथ प्रश्नवाचक चिह्न प्रयुक्त नहीं होता है; जैसे- (i) वाह! कितना सुहाना मौसम है। (ii) वाह! क्या बात है।

(5) आश्चर्य चिह्न

यह चिह्न विस्मयादिबोधक अव्ययों और मनोविकारसूचक शब्दों, वाक्यांशों तथा वाक्यों के अन्त में लगाया जाता है। जैसे-वाह! उसने तो तुम्हें अच्छा धोखा दिया! राम राम! उस लड़के ने दीन पक्षी को मार डाला!

(i) तीव्र मनोविकारसूचक संबोधन पदों के अन्त में भी आश्चर्य चिह्न आता है; जैसे-निश्चय दया दृष्टि से माधव! मेरी ओर निहारोगे।

(ii) मनोविकार सूचित करने में यदि प्रश्नवाचक शब्द आवे, तो भी आश्चर्य चिह्न लगाया जाता है; जैसे-क्यों री ! क्या तू आँखों से अन्धी है!

(iii) बढ़ता हुआ मनोविकार सूचित करने के लिए दो अथवा तीन आश्चर्य चिह्नों का प्रयोग किया जाता है; जैसे-शोक !! महाशोक !!!

नोट- वाक्य के अन्त में प्रश्न वा आश्चर्य का चिह्न आने पर पूर्ण विराम लगाया जाता है।

(6) निर्देशक (डैश)

इस चिह्न का प्रयोग नीचे लिखे स्थानों में होता है-

(i) समानाधिकरण शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों के बीच में; जैसे- दुनिया में नयापन- नूतनत्व- ऐसी चीज नहीं जो गली-गली मारी फिरती हो। जहाँ इन बातों से उसका सम्बन्ध न रहे- वह केवल मनोविनोद की सामग्री समझी जाये- वहीं समझना चाहिए कि उसका उद्देश्य नष्ट हो गया- उसका ढंग बिगड़ गया।

(ii) किसी वाक्य में भाव का अचानक परिवर्तन होने पर; जैसे- सब को सान्त्वना देना, बिखरी हुई सेना को इकट्ठा करना, और- और क्या?

(iii) किसी विषय के साथ तत्सम्बन्धी अन्य बातों की सूचना देने में; जैसे- इसी बीच में सबेरा हो गया कि हाय! इस वीरान में अब कैसे प्राण बचेंगे- न जाने, कौन मौत मरूँगा। इंग्लैण्ड के राजनीतिज्ञों के दो दल हैं- एक उदार, दूसरा अनुदार।

(iv) लेख के नीचे लेखक या पुस्तक के नाम के पूर्व; जैसे- कितने आँगुन जग करै; नय वय चढ़ती बार। - बिहारी

(v) कई एक परस्पर सम्बन्धी शब्दों को साथ-साथ लिखकर वाक्य का संक्षेप करने में; जैसे- प्रथम अध्याय- प्रारम्भी वार्ता। मन सेर छटाँक।

(vi) बातचीत में रुकावट सूचित करने के लिए; जैसे- मैं- अब चल- नहीं- सकता।

(vii) ऐसे शब्द या उपवाक्य के पूर्व, जिस पर अवधार की आवश्यकता है; जैसे- फिर क्या था- लगे सब मेरे सिर टपाटप गिरने! पुस्तक का नाम है- श्यामलता।

(viii) ऐसे विवरण के पूर्व जो यथास्थान न लिखा गया हो; जैसे- इस पुस्तकालय में कुछ पुस्तकें- हस्तलिखित-ऐसी भी हैं, जो अन्यत्र नहीं हैं।

(7) कोष्ठक

कोष्ठक नीचे लिखे स्थानों में आता है-

(i) विषयविभाग में क्रमसूचक अक्षरों या अंकों के साथ; जैसे- (क) काल, (ख) स्थान, (ग) रीति, (घ) परिमाण। (1) शब्दालंकार, (2) अर्थालंकार, (3) उभयालंकार।

(ii) समानार्थी शब्द वा वाक्यांश के साथ; जैसे- अफ्रीका के नीग्रो लोग (हब्शी) अधिकतर उन्हीं की संतान हैं। इसी कालेज में एक रईस किसान (बड़े जमींदार) का लड़का पढ़ता था।

(iii) ऐसे वाक्य के साथ जो मूल वाक्य के साथ आकर उससे रचना का कोई सम्बन्ध नहीं रखता; जैसे- रानी मेरी का सौन्दर्य अद्वितीय था (जैसी वह सुरूपा थी, वैसी ही एलिजाबेथ कुरूपा थी।)

(iv) किसी रचना का रूपान्तर करने में बाहर से लगाए गए शब्दों के साथ; जैसे- पराधीन (को) सपनेहूँ सुख नहीं (है)।

(v) नाटकादि संवादमय लेखों में हावभाव सूचित करने के लिए; जैसे-इन्द्र- (आनन्द से) अच्छा देवसेना सज्जित हो गई?

(vi) भूल के संशोधन या सन्देह में; जैसे- चिह्न आकार शब्द (वर्ण?) निर्भ्रान्त रूप है।

(8) अवतरणचिह्न

इन चिह्नों का प्रयोग नीचे लिखे स्थानों में किया जाता है-

(i) किसी के महत्वपूर्ण वचन उद्धृत करने अथवा कहावतों में; जैसे- इसी प्रेम से प्रेरित होकर ऋषियों के मुख से यह परम पवित्र वाक्य निकला था- "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"। उस बालक के सुलक्षण देखकर सब लोग यही कहते थे कि "होनहार बिरवान के होत चीकने पात"।

(ii) व्याकरण, तर्क, अलंकार आदि साहित्य विषयों के उदाहरणों में; जैसे- 'मौर्यवंशी राजाओं के समय में भी भारतवासियों को अपने देश का ज्ञान था।' यह साधारण वाक्य है। उपमा का उदाहरण-

"प्रभुहि देखि सब नृप हिय हारे।

जिमि राकेश उदय भये तारे।।"

(iii) कभी-कभी संज्ञा वाक्य के साथ, जो मुख्य वाक्य के पूर्व आता है; **जैसे-** 'रबर काहे का बनता है', यह बात बहुतेरों को मालूम नहीं।

(iv) जब किसी अक्षर, शब्द या वाक्य का प्रयोग अक्षर या शब्द के अर्थ में होता है; **जैसे-** हिन्दी में 'ल' का उपयोग नहीं होता। 'शिक्षा' बहुत व्यापक शब्द है। चारों ओर से 'मारो' 'मारो' की आवाज सुनाई देती थी।

(v) अप्रचलित विदेशी शब्दों में, विशेष प्रचलित अथवा आक्षेपयोग्य शब्दों में और ऐसे शब्दों में जिनका धात्वर्थ बताना हों; **जैसे-** इन्होंने बी.ए. की परीक्षा बड़ी नामवरी के साथ 'पास' की। आप कलकत्ता विश्वविद्यालय के 'फेलो' थे। कहते अरबवाले अभी तक 'हिन्दसा' ही अंक को। उनके 'सर' में चोट लगी है।

(vi) पुस्तक, समाचारपत्र, लेख, मूर्ति और पदवी के नाम में तथा लेखक के उपनाम और वस्तु के व्यक्तिवाचक नाम में; **जैसे-** कालाकाँकर से 'सम्राट' नाम का जो साप्ताहिक पत्र निकला था, उसका इन्होंने दो मास सम्पादन किया। इसके पुराने अंकों में 'परसन' नाम के एक लेखक के लेख बहुत ही हास्यपूर्ण होते थे। बम्बई में 'सरदार गृह' नाम का एक बड़ा विश्रान्ति गृह है।

नोट- अक्षर, शब्द, वाक्यांश अथवा वाक्य अप्रधान हो या अवतरणचिह्नों से घिरे हुए वाक्य के भीतर इन चिह्नों का प्रयोजन हो, तो इन्हें अवतरणचिह्नों का उपयोग किया जाता है; **जैसे-** "इस पुस्तक का नाम हिन्दी में 'आर्या समाचार' छपता है!" 'बच्चे माँ को 'माँ' और पानी को 'पा' आदि कहते हैं।"

(2) जब अवतरणचिह्नों का उपयोग ऐसे लेख में किया जाता है, जो कई पैरा में विभक्त हो, तब यह चिह्न प्रत्येक पैरा के आदि में और अनुच्छेद के अन्त में लिखे जाते हैं।

पूर्वोक्त चिह्नों के सिवा नीचे लिखे चिह्न भी भाषा रचना में प्रयुक्त होते हैं-

- | | |
|---------------------|------------|
| (1) वर्गाकार कोष्ठक | [] |
| (2) सर्पाकार कोष्ठक | { } |
| (3) रेखा | ———— |
| (4) अपूर्ण सूचक | ××× |
| (5) हंस पद | ^ |
| (6) टीका सूचक | *, +, †, । |
| (7) लाघव चिह्न | 0 |
| (8) पुनरुक्तिसूचक | ” |
| (9) तुल्यतासूचक | = |
| (10) स्थानपूरक... | |
| (11) समाप्तिसूचक | —0— |

(1) वर्गाकार कोष्ठक

यह चिह्न भूल सुधारने और त्रुटि की पूर्ति करने के लिए व्यवहृत होता है; जैसे-अनुवादित (अनुदित) ग्रंथ, वृ (ब्र) ज मोहन, कुटी (र)।

(i) कभी-कभी इसका प्रयोग दूसरे कोष्ठकों को घेरने में होता है; **जैसे-** अंक 4 (क) देखो। दरखास्तें [नमूना (क)] के मुताबिक हो सकती हैं।

(ii) अन्याय कोष्ठकों के रहते भिन्नता के लिए; **जैसे-** मातृभूमि- (कविता) [लेखक, बाबू मैथिलीशरण गुप्त]।

(2) सर्पाकार कोष्ठक

इसका उपयोग एक वाक्य के ऐसे शब्दों को मिलाने में होता है जो अलग पंक्तियों में लिखे जाते हैं और जिन सबका सम्बन्ध किसी एक साधारण पद से होता है; **जैसे-**

आर्द्रपन	} गीलापन	चन्द्रशेखर मिश्र
आर्द्रभाव		शिक्षक, राजस्कूल दरभंगा
		(बिहार और उड़ीसा)

(3) रेखा

जिन शब्दों पर विशेष अवधारणा देने की आवश्यकता होती है, उनके नीचे बहुधा रेखा कर देते हैं; **जैसे-** जो रुपया लड़ाई के कर्ज में दिया जाएगा, उसमें का हर एक रुपया यानी वह सबका सब **मुल्क हिन्द में खर्च** किया जाएगा। आप कुछ रुपया बचा सकते हैं, चाहे वह ही हो और एक रुपए से भी कुछ-न-कुछ काम चलता है।

(i) भिन्न-भिन्न विषयों के अलग-अलग लिखे हुए लेखों का अनुच्छेदों के अन्त में भी; **जैसे-**

आजकल शिमले में हैजे का प्रकोप है।

आगामी बड़ी व्यवस्था सभा की बैठक कई कारणों से नियत तिथि पर न हो सकेगी, क्योंकि **अनेक सदस्यों** को और सभा समितियों में सम्मिलित होना है।

नोट- लेखों के अन्त में इस चिह्न के उदाहरण समाचार-पत्रों अथवा मासिक पुस्तकों में मिलते हैं।

(4) अपूर्ण सूचक चिह्न

किसी लेख में से जब कोई आवश्यक अंश छोड़ दिया जाता है, तब उसके स्थान में यह लगा देते हैं; **जैसे-**

× × ×
पराधीन सपनेहुँ सुख नाही।

(i) जब वाक्य का कोई अंश जोड़ दिया जाता है, तब यह चिह्न (...) लगाते हैं; जैसे तुम समझते हो कि यह निरा बालक है, पर...

(5) हंसपद

लिखने में जब कोई शब्द भूल से छूट जाता है, तब उसे पंक्ति के ऊपर अथवा हाशिए पर लिख देते हैं और उसके मुख्य स्थान के नीचे ^ यह चिह्न कर देते हैं; **जैसे-**

शक्ति

(i) रामदास की रचना ^ स्वाभाविक है।

यहाँ

(ii) किसी दिन हम भी आपके ^ आवेंगे।

(6) टीकासूचक चिह्न

पृष्ठ के नीचे अथवा हाशिए में कोई सूचना देने के लिए तत्सम्बन्धी शब्द के साथ कोई एक चिह्न, अंक अथवा अक्षर लिख देते हैं; **जैसे-** उस समय मेवाड़ में राना उदयसिंह¹ राज करते थे।

(7) लाघव चिह्न

(i) समय की बचत अथवा पुनरुक्ति के निवारण के लिए किसी संज्ञा को संक्षेप में लिखने के निमित्त इस चिह्न का उपयोग करते हैं; **जैसे-** डा. घ. जि.।

सर.। श्री.। रा. सा.।

(ii) अंग्रेजों के कई एक संक्षिप्त नाम हिन्दी में भी संक्षिप्त मान लिए गए हैं, यद्यपि इस भाषा में उनका पूर्ण रूप प्रचलित नहीं है, **जैसे-** बी.ए. ओ. आई. डी.। सी. पी.। जी. आई. पी. आर।

(8) पुनरुक्तिसूचक चिह्न

किसी शब्द या शब्दों को बार बार प्रत्येक पंक्ति में लिखने की अड़चन मिटाने के लिए सूची आदि में इस चिह्न का उपयोग करते हैं; जैसे-

श्री राम सिंह
" केदार दत्त
" भीमराव।

(9) तुल्यतासूचक चिह्न

शब्दार्थ अथवा गणित की तुल्यता सूचित करने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे- शिक्षित = पढ़ा-लिखा। दो और दो = 4, अ = ब

(10) स्थानपूरक चिह्न

वह चिह्न सूचियों में खाली स्थान भरने के काम आता है; जैसे- लेख (कविता)... बाबू मैथिलीशरण गुप्त....176।

(11) समाप्तिसूचक चिह्न

इस चिह्न का उपयोग बहुधा लेख अथवा पुस्तक के अन्त में करते हैं; जैसे-

विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

- आकाश-पाताल के बीच लगने वाला (-) चिह्न है—
(a) अल्पविराम चिह्न (b) विस्मयादि बोधक
(c) योजक चिह्न (d) उद्धरण चिह्न
UP TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2011
उत्तर : (c)
- निम्नलिखित वाक्य में एक विराम चिह्न का लोप है वह विराम चिह्न कौन सा है।
वाक्य "आप एक ऐसे मनुष्य की खोज कराइए, जिसने कभी दुख का नाम न सुना हो—
(a) अर्द्ध विराम (b) आश्चर्य सूचक चिह्न (विराम)
(c) अल्प विराम (d) पूर्ण विराम
Chhattisgarh TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011
उत्तर : (d)

- 'गौरव-गाथा' इन दोनों शब्दों के बीच में लगा चिह्न कहलाता है?

(a) लाघव चिह्न (b) हंसपद चिह्न
(c) योजक चिह्न (d) अवतरण चिह्न

Chhattisgarh TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

उत्तर : (c)

- किसी के कथन को उद्धृत करते समय किस विराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है?

(a) विस्मयवाचक चिह्न (b) अवतरण या उद्धरण चिह्न
(c) प्रश्नवाचक चिह्न (d) निर्देशक चिह्न

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) July 2011

उत्तर : (b)

- सही विराम चिह्नों वाला वाक्य है—

(a) जो पत्र आज आया है, कहाँ है?
(b) जो पत्र आज आया है, कहाँ है?
(c) जो पत्र आज आया है, कहाँ है।
(d) जो पत्र आज आया है, कहाँ है।

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) July 2011

उत्तर : (a)

- विराम चिह्न (;) का नाम है—

(a) अर्द्ध विराम (b) विराम
(c) अल्प विराम (d) हंस पद

Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011

उत्तर : (a)

- किसी कठिन शब्द को स्पष्ट करने के लिए किस विराम चिह्न का प्रयोग होता है?

(a) विवरण चिह्न (b) निर्देशक
(c) कोष्ठक (d) उप विराम

Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011

उत्तर : (c)

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

- वाक्य को समाप्त करने के लिए जिसका प्रयोग किया जाता है उसे कहते हैं :
(a) अल्पविराम (b) पूर्णविराम
(c) विवरण चिह्न (d) उपविराम
- जहाँ वाक्य की गति अन्तिम रूप ले ले, विचार के तार टूट जाएँ, वहाँ किस चिह्न का प्रयोग किया जाता है?
(a) योजक (b) अल्पविराम
(c) उद्धरण चिह्न (d) पूर्णविराम
- दो समानार्थी शब्दों की पुनरुक्ति के बीच में किस विराम चिह्न का प्रयोग होता है?
(a) अल्पविराम (b) अर्द्धविराम
(c) योजक (d) कोष्ठक
- निम्न में से योजक चिह्न है—
(a) ? (b) ;
(c) - (d) /
- हिन्दी में अल्प-विराम का चिह्न है—
(a) ? (b) !
(c) । (d) ,
- (?) इस विराम चिह्न का नाम है—
(a) पूर्णविराम
(b) प्रश्नवाचक
(c) अल्प विराम
(d) योजक
- (!) कोष्ठक में दिए गए विराम चिह्न का नाम है—
(a) प्रश्नवाचक (b) अल्प विराम
(c) पूर्णविराम (d) विस्मयबोधक
- ओह बहुत कठिन समय आया है।
दिए गए वाक्य में उचित विराम चिह्न लगाइए।
(a) ! (b) -
(c) ? (d) ,

9. निम्नलिखित में से निर्देशक चिन्ह कौन-सा है?
(a) ? (b) ।
(c) ' (d) -
10. '=' विराम चिह्न प्रयुक्त होता है-
(a) विवरण चिह्न (b) तुल्यतासूचक
(c) लाघव चिह्न (d) संयोजक चिह्न
11. '×××' रेखांकित चिह्न कौन-सा है?
(a) लोपसूचक चिह्न (b) स्थानसूचक चिह्न
(c) समाप्ति सूचक चिह्न (d) टीका सूचक चिह्न
12. नेता जी ने कहा था "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा" इस वाक्य में कौन-सा चिह्न लगा है?
(a) पूर्णविराम चिह्न (b) अल्पविराम चिह्न
(c) उद्धरण चिह्न (d) प्रश्नवाचक चिह्न
13. विराम-चिह्नों की दृष्टि से कौन-सा वाक्य शुद्ध है?
(a) सभी एक साथ चिल्ला उठे हम भी चलेंगे।
(b) सभी एक साथ चिल्ला उठे, "हम भी चलेंगे"।
(c) सभी एक साथ चिल्ला उठे, हम भी चलेंगे।
(d) सभी एक साथ चिल्ला उठे," हम भी चलेंगे।
14. किस वाक्य में विराम चिह्न का उचित प्रयोग नहीं है?
(a) मैं मनुष्य में मानवता देखना चाहती हूँ। उसे देवता बनाने की मेरी इच्छा नहीं।
(b) वह दूर से, बहुत दूर से आ रहा है।
(c) सुनो! सुनो! वह गा रही है।
(d) प्रिय महाशय, मैं आपका आभारी हूँ।
15. निम्न में से कौन विराम चिह्न का प्रकार नहीं है?
(a) निर्देशक (b) लाघव
(c) उपदेशक (d) विवरण
16. इनमें से कौन-सा विराम चिह्न ऐसा है जो हिन्दी में अंग्रेजी सभाषा से नहीं लिया गया है?
(a) , (b) ;
(c) ? (d) ।
17. विराम का अर्थ है-
(a) चलना (b) ठहरना या रुकना
(c) बिछुड़ना (d) स्वर
18. श्री कामता प्रसाद गुरु जी के अनुसार विराम चिह्नों को किस भाषा से लिया हुआ माना जाता है।
(a) अरबी (b) अंग्रेजी
(c) फ्रेंच (d) चीनी
19. श्री कामता प्रसाद गुरु जी के अनुसार विराम चिह्नों की संख्या कितनी है।
(a) 20 (b) 18
(c) 6 (d) 17
20. अल्प विराम चिह्न को पहचानिए।
(a) , (b) ;
(c) " " (d) ' '
21. आशीष राहुल राजा शुक्ला और वैभव अपने कार्य में संलग्न हैं। इस वाक्य में उचित विराम चिह्न है।
(a) , (b) ;
(c) । (d) :
22. समानाधिकरण शब्दों के मध्य में किस विराम चिह्न का प्रयोग होता है?
(a) ; (b) ,
(c) : (d) !
23. छंदों में एक चरण की समाप्ति पर किस विराम चिह्न का प्रयोग होता है?
(a) , (b) :
(c) ' ' (d) ;
24. मिश्रित तथा संयुक्त वाक्यों में विरोध का भाव प्रकट करने के लिए विराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है?
(a) अर्द्ध विराम (b) उपविराम
(c) योजक चिह्न (d) कोष्ठक
25. करणवाचक क्रिया विशेषण में किस प्रकार का विराम चिह्न का प्रयोग होता है?
(a) उप विराम (b) विवरण चिह्न
(c) उद्धरण चिह्न (d) अर्द्ध विराम
26. 'कबीर वाणी के डिक्टेटर थे' इस वाक्य में किस विराम चिह्न का प्रयोग हुआ है?
(a) उद्धरण चिह्न (b) पुनरुक्तिसूचक चिह्न
(c) उप विराम (d) पूर्ण विराम
27. संयोजक चिह्न (-) को किस अन्य नाम से जानते हैं?
(a) सामासिक चिह्न (b) कोष्ठक
(c) अवतरण चिह्न (d) टीका सूचक
28. हंस पद किस विराम का एक और नाम है।
(a) लोप विराम (b) अल्प विराम
(c) पूर्ण विराम (d) वृटि विराम
29. सही विराम चिह्नों वाला वाक्य कौन है?
(a) छि: तुमने तो, नाम ही डुबो दिया?
(b) छि: तुमने! तो नाम ही डुबो दिए
(c) छि: ! तुमने तो नाम ही डुबो दिया
(d) छि: तुमने तो नाम ही डुबो दिए
30. जहाँ योजक चिह्न का प्रयोग नहीं करते हैं, पहचानिए।
(a) दो संयुक्त क्रियाएं एक साथ प्रयुक्त हों।
(b) रीतिवाचक और परिणामवाचक क्रिया विशेषण में प्रयुक्त दो अवयवों में।
(c) जब क्रिया की मूल धातु के साथ प्रेरणार्थक क्रियाएं आए।
(d) कर्मधारय समास से बने शब्दों में योजक चिह्न का प्रयोग।

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (b) | 2. (d) | 3. (c) | 4. (c) | 5. (d) | 6. (b) | 7. (d) | 8. (a) | 9. (d) | 10. (b) |
| 11. (a) | 12. (c) | 13. (b) | 14. (d) | 15. (c) | 16. (b) | 17. (b) | 18. (b) | 19. (a) | 20. (a) |
| 21. (a) | 22. (a) | 23. (a) | 24. (a) | 25. (d) | 26. (a) | 27. (a) | 28. (d) | 29. (c) | 30. (d) |

04.

विलोम, समानार्थी, पर्यायवाची, एकार्थक-अनेकार्थक, तुकान्त-अतुकान्त

विलोम शब्द

संसार परस्पर विरोधी वस्तुओं, दशाओं, विचारों, गुणों, अवयवों से भरा पड़ा है। जहाँ प्रत्येक का अस्तित्व उसमें निहित गुणों के कारण है, वहीं उनका महत्व उनके सापेक्ष विरोधी गुणों के कारण। दिन-रात, सुख-दुख, प्रकाश-अंधकार, जीवन-मरण, हानि-लाभ, यश-अपयश, गुण-दोष, उत्थान-पतन, औरत-आदमी इत्यादि ऐसे ही परस्पर विपरीत अर्थ रखने वाले कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। जिन्हें इस सारणी से समझा जा सकता है-

विलोम शब्द के आधार-

आधार	उदाहरण
लिंग	माता-पिता, भाई-बहन, राजा-रानी, दादा-दादी आदि।
परिस्थिति	(राजा-रंक, अमीर-गरीब, आहूत-अनाहूत इत्यादि)।
आकार	छोटा-बड़ा, चौड़ा-लम्बा, मोटा-पतला इत्यादि।
गुण	अच्छा-बुरा, मृदु-कटु, तीक्ष्ण-मन्द इत्यादि।
स्वाभाव	कायर-निडर, दुराचारी-सदाचारी, दुःशील-सुशील, प्रेमी-ईर्ष्यालु इत्यादि।
कार्य	जीत-हार, अर्पण-ग्रहण, आवाहन-विसर्जन इत्यादि।

विलोम से सम्बन्धित ध्यातव्य तथ्य

* मूल शब्द जिस व्याकरणिक कोटि का होता है उसका विलोम शब्द भी सदैव उसी व्याकरणिक कोटि का होता है।

- संज्ञा का विलोम सदैव संज्ञा-** अग्नि-जल, हर्ष-विषाद, सुख-दुःख, क्षमा-दण्ड, चोर-साधु, धर्म-अधर्म, गगन-पृथ्वी, नख-शिख इत्यादि।
- विशेषण का विलोम सदैव विशेषण-** आश्रित-निराश्रित, आग्रही-दुराग्रही, दयालु-क्रूर, अल्पज्ञ-बहुज्ञ, अर्वाचीन-प्राचीन, आर्द्र-शुष्क, इच्छुक-अनिच्छुक, उत्साही-अनुत्साही, ऋजु-वक्र, ओजस्वी-निस्तेज इत्यादि।
- क्रिया का विलोम सदैव क्रिया-** रोना-हँसना, सोना-जगना, खरीदना-बेचना, गिराना-उठाना, जीतना-हारना इत्यादि।

विलोम से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूची द्रष्टव्य है-

अ

शब्द	विलोम
अथ	इति
अनाथ	सनाथ
अज्ञ	विज्ञ
अवनत	उन्नत
अन्त	आदि
अति	अल्प
अल्प	बहु
अन्तरंग	बहिरंग
अन्तर्द्वन्द्व	बहिर्द्वन्द्व
अल्पायु	दीर्घायु

अगम
अनुग्रह
अपेक्षा
अमृत
अतिवृष्टि
अवनि
अनुराग
अनुकूल
अलभ्य
अस्त
अमर
अग्नि
अपमान
अनुलोम
अनुरक्ति
अमावस्या
अन्धकार
अल्पज्ञ
अगला
अन्दरूनी
अपना
अमीर
अच्छा
अत्यधिक
अदृश्य
अधिकृत
अधिगत
अधिगम्य
अधिमूल्यन
अधिष्ठित
अधीन
अधम
अनंत
अनुज
अनुदार
अनुयायी
अपकर्ष
अल्पमत
अर्वाचीन
अर्हता
असंभव
अपराधी
अभिज्ञ
अपेक्षा

सुगम
विग्रह
उपेक्षा
विष
अनावृष्टि
अम्बर
विराग
प्रतिकूल
लभ्य
उदय
मर्त्य
जल
सम्मान
प्रतिलोम
विरक्ति
पूर्णिमा
प्रकाश
बहुज्ञ
पिछला
बाहरी
पराया
गरीब
बुरा
अत्यल्प
दृश्य
अनधिकृत
अनधिगत
अनधिगम्य
अवमूल्यन
अनधिष्ठित
अनधीन/स्वतंत्र
उत्तम
सांत, ससीम
अग्रज
उदार
विरोधी
उत्कर्ष
बहुमत
प्राचीन
अनर्हता
संभव
निरपराध
अनभिज्ञ
उपेक्षा

अन्विति
अन्वय
अन्यायी
अवर
अवकाश
अवाक्
अशक्त
अशन
अश्लील
असली
अस्त्रीकरण
अस्वस्थ
अहंकारी
अल्पप्राण
अभिव्यक्त
अभ्यस्त
अभ्यास
अर्जित
अर्जन
असूया
अवगत
अर्पण
अभिमानि
अभिमुख
अनुरक्त
अभिज्ञता
अभिलषित
अभिप्रेत
अभिनंदनीय
अभिहित
असीम
असुविधा
अनाजी
अध्यवसाय
अनिवार्य
अक्षत
अक्षम
अग्र
अग्रगामी
अच्युत
अति
अतिक्रमण
अंतिम
आंशिक
अँधेरा
अस्तित्व
अवशेष
अवसर
अवस्थित
अविच्छिन्न
अधोगामी
अन्तर्मुखी
अधोगामी

अनन्विति
अनन्वय
न्यायी, न्यायशील
प्रवर
अनवकाश
सवाक्
सशक्त
अनशन
श्लील
नकली
निस्त्रीकरण
स्वस्थ
निरहंकारी
महाप्राण
अनभिव्यक्त
अनभ्यस्त
अनभ्यास
अनर्जित
व्ययन
अनसूया
अनवगत
ग्रहण
निरभिमान
प्रतिमुख
विरक्त
अनभिज्ञता
अनभिलषित
अनभिप्रेत
निन्दनीय
अनभिहित
ससीम
सुविधा
फलाहारी
अनध्यवसाय
निवार्य
विक्षत
सक्षम
पश्च
पश्चगामी
च्युत
न्यून
अनतिक्रमण
अनंतिम,

उजाला
अनस्तित्व
निःशेष
अनवसर
अनवस्थित
विच्छिन्न
ऊर्ध्वगामी
बहिर्मुखी
ऊर्ध्वगामी

आकाश
आकीर्ण
आक्रामक
अक्रांत
आक्रमण
आकर्षक
आकर्षण
अपत्ति
आपसदारी
आगमन
आगत
आग्रह
आचार
आच्छादित
आजादी
आज्ञापालन अवज्ञा
आज्ञाकारी
आडंबरपूर्ण
आतुर
आत्मनिर्भर
आत्मा
आदर
आदि
आद्य
आदृत
आध्यात्मिक
आधुनिक
आना
आमदनी
आभ्यन्तर
आमंत्रित
आमिष
आराध्य
आयात
आय
आरम्भ
आरूढ
आरोह
आराम
आर्द्र
आर्य
आर्ष
आलसी
आवर्षण
आवश्यक
आवर्तक
आलोक
आवेशित
आवृष्टि
आवृत
आशीर्वाद

आ

पाताल
विकीर्ण
अनाक्रमक
अनाक्रांत
प्रतिरक्षा
अनाकर्षक,
विकर्षण
संपत्ति
दुजायगी
प्रस्थान, गमन
अनागत
दुराग्राह, अनाग्रह
अनाचार
अनाच्छादित
गुलामी

अवज्ञाकारी
आडंबरहीन
अनातुर
परजीवी
परमात्मा
अनादर, निरादर
अंत
अंत्य
अनादृत, निरादृत,
सांसारिक, भौतिक
प्राचीन, पुराना
जाना
खर्च
बाह्य
अनामंत्रित
निरामिष
दुराराध्य
निर्यात
व्यय
अंत, समाप्त
अनारूढ
अवरोह
तकलीफ
शुष्क, अनार्द्र
अनार्य
अनार्ष
कर्मठ
अनावर्षण
अनावश्यक
अनावर्तक
अंधकार, तिमिर
अनावेशित
अनावृष्टि
अनावृत
अभिशाप, शाप

आशा
आशावादी
आशीष
आसान
आस्तिकता
आस्था
आस्तिक
आसीन
आहत
आहार्य
आहूत
आदान
आहार
आकार
आपद
आवरण
आकांक्षा
आकुंचन
आवाहन
आलंब
आरोही
आसक्त
आदिष्ट
आतप
आत्मावलंबी
आविर्भाव
आधार
आकम्पित
आगामी
आबाल

इच्छा
इच्छित
इकतरफा
इच्छुक
इज्जत
इष्ट
इधर
इति
इहलोक

ईद
ईश्वर
ईप्सित
ईमानदार
ईश्वरवादी
ईहा
ईश

उत्पत्ति

निराशा, दुराशा
निराशावादी
अभिशाप
मुश्किल
नास्तिकता
अनास्था
नास्तिक
अनासीन
अनाहत
अनाहार्य
अनाहूत
प्रदान
निराहार
निराकार
निरापद
निरावरण
अनाकांक्षा
प्रसारण
विसर्जन
निरालंब
अवरोही
अनासक्त
निषिद्ध
निरातप
परावलंबी
तिरोभाव
निराधार, लम्ब
निष्कंप
विगत
वृद्ध

अनिच्छा
अनिच्छित
दुतरफा
अनिच्छुक
बेइज्जती
अनिष्ट
उधर
अथ, आदि
परलोक

मुहर्रम
जीव
अनीप्सित
बेईमान
अनीश्वरवादी
अनीहा
अनीश

प्रलय/विनाश

उत्कृष्ट
उत्कर्ष
उत्तम
उत्थान
उत्तर
उत्तरायण
उत्थित
उत्कृष्टता
उत्पन्न
उत्साह
उत्साही
उत्सुक
उत्सुकता
उत्तरदायित्व
उत्तरित
उत्तरी
उत्तीर्ण
उत्तेजन
उत्तेजित
उत्तरार्द्ध
उपयोगी
उद्घाटन
उद्धत
उदयाचल
उदय
उदास
उदग्र
उदार
उदात्त
उद्गम
उद्देश्य
उद्यमी
उधार
उद्धृत
उद्भव
उद्भूत
उद्विग्न
उद्वेग
उन्नत
उन्मुख
उन्मूलन
उन्नति
उन्मीलन
उपयोगी
उपचार
उपसर्ग
उपमेय
उपकार
उपस्थित
उपादेय
उपजाऊ
उपार्जित

निकृष्ट
अपकर्ष
अधम/अनुत्तम
पतन
दक्षिण
दक्षिणायन
पतित
निकृष्टता
अनुत्पन्न
निरुत्साह
अनुत्साही
अनुत्सुक
अनुत्सुकता
अनुत्तरदायित्व
अनुत्तरित
दक्षिणी
अनुतीर्ण
प्रशमन
अनुत्तेजित/शांत
पूर्वार्द्ध
अनुपयोगी
समापन
विनीत/सौम्य
अस्ताचल
अस्त
प्रसन्न/प्रफुल्ल
अनुदग्र
अनुदार/कृपण
अनुदात्त
विलय
निरुद्देश्य
निरुद्यमी
नगद
अनुद्धृत
अवसान
अनुद्भूत
निरुद्विग्न
निरुद्वेग
अवनत/अनुन्नत
विमुख
रोपण
अवनति/गिरावट
निमीलन
अनुपयोगी
अनुपचार
प्रत्यय
अनुपमेय
अपकार
अनुपस्थित
अनुपादेय
बंजर/अनुपजाऊ
अनुपार्जित

उपमित	अनुपमित	एड़ी	चोटी
उपयुक्त	अनुपयुक्त	एषणा	अनैषणा
उपयुक्तता	अनुपयुक्तता	एकांगी	सर्वांगीण
उपयोग	अनुपयोग		
उपस्थिति	अनुपस्थिति	ऐक्य	अनैक्य
उपरि	अधः	ऐच्छिक	अनैच्छिक
उपरिलिखित	अधोलिखित	ऐतिहासिक	अनैतिहासिक
उपलब्ध	अनुपलब्ध	ऐश्वर्य	अनैश्वर्य
उपलब्धि	अनुपलब्धि	ऐहिक	पारलौकिक
उपगत	अनुपगत		
उपकारक	अनुपकारक	ओजस्वी	निस्तेज
उक्त	अनुक्त	ओछा	गम्भीर
उग्र	सौम्य	ओतप्रोत	विहीन
उचित	अनुचित	ओह	वाह
उच्च	अनुच्च, निम्न		
उच्चरित	अनुच्चरित	औचित्य	अनौचित्य
उच्छिष्ट	अनुच्छिष्ट	औरस	दत्तक/जारज
उच्छ्वास	निःश्वास	औपचारिक	अनौपचारिक
उज्ज्वल	धूमिल	औरत	आदमी
उठना	बैठना	औषधि	अनौषधि
उठाना	गिराना/ बैठाना	औपचारिकता	अनौपचारिकता
उतार	चढ़ाव	औदार्य	अनौदार्य
उतरना	चढ़ना		
उल्लंघन	अनुल्लघन		
उल्लास	विषाद	कठिन/कुटिल	सरल
उर्वरा	बंजर	कठोर/कर्कश	मृदु/कोमल/मधुर
उष्ण	शीतल	कटु	प्रिय/मधु
		कीर्ति	अपकीर्ति
		करुण	निष्ठुर
ऊँचा	नीचा	कर्मण्य	अकर्मण्य
ऊँच	नीच	कडुवा	मीठा
ऊर्ध्व	क्षैतिज	कथनीय	अकथनीय
ऊपर	नीचे	कथ्य	अकथ्य
ऊष्मा	अनूष्मा	कनिष्ठ	ज्येष्ठ
		कथित	अकथित
		कपटी	निष्कपट/निश्छल
ऋजु	वक्र	कपूत	सपूत
ऋत	अनृत	कम	ज्यादा/अधिक
ऋणाग्रस्त	ऋणमुक्त	कमजोर	तगड़ा
ऋणात्मक	धनात्मक	कमी	बहुतायत
ऋण	धन	कर्ता	अकर्ता
ऋद्धि	विपन्न	कर्म	अकर्म
		कर्मण्य	अकर्मण्य
एक	अनेक	कलंकी	निष्कलंकी
एकत्र	विकीर्ण	कलंकित	निष्कलंक
एकता	अनेकता	कल्पनातीत	कल्पनीय
एकांकी	अनेकांकी	कल्पित	अकल्पित/ यथार्थ
एकाकी	दुकेला	कसूवार	बेकसूर
एकतंत्र	बहुतंत्र	कसा	ढीला
एकनिष्ठ	सर्वनिष्ठ	कहा	अनकहा
एकेश्वरवाद	बहुदेववाद	काज	अकाज
एकपक्षीय	बहुपक्षीय	काट्य	अकाट्य
एकाग्रचित	अन्यमनस्क	काबिल	नाकाबिल
एकार्थक	अनेकार्थक		

कामयाब
कामयाबी
क्रय
कायर
क्रूर
कृत्रिम
कृतज्ञ
कृपण
कामी
काल
कंपित
कंजूस
कुंठित
कुप्रथा
कुफल
कुपरिणाम
कुमारी
कुरूप
कुशल
कुलीन
कुव्यवस्था
कुशलता
कृत
कृतज्ञता
कृपा
कृष्ण
कृष्ट
कोप
कोमलता
कोमल
क्रोध
कोलाहल
कलुष
कुसुम
कुपुत्र
कुपात्र
कुकृत्य
कलयुग
कुलदीप
कदाचार
कुसंगति

ख

खंड
खंडन
खण्डित
खण्डनीय
खाद्य
खरा
खरीद
खिलना
ख्यात
खास

नाकामयाब
नाकामयाबी
विक्रय
निडर/साहसी
अक्रूर/सदय
प्रकृत/अकृत्रिम
कृतघ्न
दाता
अकाम/निष्काम
अकाल
अकंपित
मुक्तहस्त/उदार
अकुंठित/धारदार
सुप्रथा
सुफल
सुपरिणाम
विवाहिता
सुरूप
अकुशल
अकुलीन
सुव्यवस्था
अकुशलता
अकृत
अकृतज्ञता/कृतघ्नता
अकृपा/ कोप
शुक्ल/श्वेत
अकृष्ट
कृपा
कठोरता
कठोर
क्षमा
शान्ति
निष्कलुष
वज्र
सुपुत्र
सुपात्र
सुकृत्य
सतयुग
कुलांगर
सदाचार
सत्संगति

अखण्ड
मंडन
अखंडित/अखंड
मंडनीय
अखाद्य
खोटा
बिक्री
मुद्राज्ञाना
कुख्यात
आम

खलनायक
खूबसूरत
खग
खुश
खीझना
खेचर
खेद
खुशी
खुशकिस्मत
खुशमिजाज

गम्भीर
गमन
गमनीय
गगन
गृही
गण्य
गत
गरल
गहरा
गुण
गुरु
गुप्त
गुनाहगार
गूढ़
गृहस्थ
गेय
गरिमा
गति
ग्रीष्म
गीत
गीर्ण
ग्रामीण
ग्रस्त
गौण
गौरव
ग्राम्य
गोचर
गणतंत्र
गुणाढ्य
ग्राम
ग्राह्य

घटना
घटित
घटती
घात
घरेलू
घृणा
घोषित
घोष
घटिया

ग

घ

नायक
बदसूरत
मृग
नाखुश
रीझना
भूचर
प्रसन्नता/ हर्ष
गम, गमी
बदकिस्मत
बदमिजाज

वाचाल/चपल
आगमन
अगमनीय
धरा/पृथ्वी
त्यागी/अगृही
नगण्य
आगत/प्रत्यागत
सुधा
छिछला
दोष/अवगुण
शिष्य/लघु
प्रकट
बेगुनाह
अगूढ़/प्रकट
संन्यासी
अगेय
लघिमा
विराम/अवरोध
शरद
अगीत
उद्धगीर्ण
शहरी
मुक्त
मुख्य
लाघव
नागर/वन्य
अगोचर
राजतंत्र
गुणहीन
नगर
अग्राह्य/ त्याज्य

बढ़ना
अघटित
बढ़ती
प्रतिघात
बाहरी/वन्य
प्रेम/स्नेह
अघोषित
अघोष
बढ़िया

घर
घनिष्ठ
घाटा
घना
घातक

च

चपल
चंचल
चतुर
चढ़ना
चर
चाह
चल
चिंतनीय
चिंतित
चिरंतन
चिंत्य
चिरस्थायी
चिकित्स्य
चुस्त
चेतन
चैन
चोर
चिरायु/दीर्घायु
च्युत
चेष्ट
चित्र

छ

छली
छिछला
छूत
छेद्य
छादन
छिन्न
छल

ज

जड़
जंगम
जीवित
जन्म
जीत
जल
जय
ज्योति
ज्येष्ठ
जागरण
जीवन
ज्वार
जल्द
जातीय
जटिल
जवानी

बाहर
दूरस्थ
मुनाफा
विरल
रक्षक

अचपल
अचंचल/स्थिर
मूर्ख/मूढ़
उतरना/गिरना
अचर
अनचाह
अचल
अचिंतनीय
अचिंतित
नश्वर
अचिंत्य
अल्पस्थायी
अचिकित्स्य
ढीला/लचर
अचेतन/जड़
बेचैनी
साह
अल्पायु
अच्युत
निष्चेष्ट
विचित्र

निश्छली
गहरा
अछूत
अछेद्य
प्रकाशन
सलंगन
निश्छल/निष्कपट

चेतन
स्थावर
मृत
मृत्यु/मरण
हार
थल/स्थल/निर्जल
पराजय
तम
कनिष्ठ/लघु
निद्रा
मरण
भाटा
देर
विजातीय
सरल
बुढ़ापा

जारज
जितेंद्रिय
जर्जर
जागना
जोड़
जीर्ण
जेय

झूठ
झंकृत
झीना
झोपड़ी
झगड़ा

टीका
टूटना

ठंडा
ठोस
ठीक

डरपोक
डाल

ढाल
ढीठ
ढालू
ढंग
ढाढस

तम
तर्क
तप्त
तर
तरल
तरुण
तट
तनय
तन्वंगी
तर्कसंगत
तामसिक
तारीफ
ताप
तुकान्त
तिक्त
तृष्णा
त्यक्त
तारुण्य
तृप्त
तीव्र
तुच्छ

झ

ट

ठ

ड

ढ

त

औरस
अजितेंद्रिय
दृढ़
सोना
घटाव
अजीर्ण
अजेय

सच
निस्तब्ध
गाढ़ा
महल
शान्ति

भाष्य
जुड़ना

गर्म
तरल/द्रव
गलत

निडर
पती

तलवार
विनम्र
समतल
बेढग/कुढंग
त्रास

आलोक/ज्योति
वितर्क
शीतल
शुष्क
ठोस
वृद्ध
मझधार
तनया
स्थूलांगी
तर्कहीन
सात्विक
बुराई
शीत
अतुकान्त
मधुर
तृप्ति/वितृष्णा
ग्रहीत
वाद्दक्य
अतृप्त
मन्द
महान

तिमिर
तुल्य
त्रुटिपूर्ण
त्याज्य
तटस्थ
तेजस्वी

थ

थोक
थोड़ा
थल
थकावट
थाह

द

दुष्ट/दुर्जन
दुर्बल/निर्बल
दृश्य
दुर्लभ
दुर्गम
दुर्भाग्य
दृष्ट
देय
दीर्घकाय
दिवा
दूषित
दक्षिण
देव/देवता
दास
दंड
दूर
दूरदर्शिता
दृढ़
दोष
द्वेष
द्वैत
दीर्घ
दुःखी
दुराचार
दैविक
दैत्य/दानव
दुष्परिणाम
देखा
देश
देशभक्त
दानी
द्वन्द्व
दाता

ध

धनी
ध्वंस
धर्म
धीरज
धार्मिक

प्रकाश
अतुल्य
त्रुटिहीन
अत्याज्य
सापेक्ष
निस्तेज

फुटकर
बहुत/अधिक
जल
स्फूर्ति
अथाह

सज्जन
सबल
अदृश्य
सुलभ
सुगम
सौभाग्य
अदृष्ट/सज्जन
अदेय
कृशकाय
रात्रि
स्वच्छ
वाम/उत्तर
दानव/असुर
स्वामी
क्षमा
पास/निकट
अदूरदर्शिता
अदृढ़
गुण
सद्भावना
अद्वैत
सूक्ष्म/लघु/ह्रस्व
सुखी
सदाचार
भौतिक
देव
सुपरिणाम
अनदेखा
विदेश
देशद्रोही
कृपण
शान्ति
भिखारी/भिक्षुक

निर्धन
निर्माण
अधर्म
उतावली
अधार्मिक

धर्मी
धीर
धैर्य
धृष्ट
ध्रुव

न्यून
नूतन
नकारात्मक
नगर
नफा
नम्र
नवीन
नवीनता
नामवर
नया
नागरिक
नश्वर
निर्दोष
निर्माण
निर्मल
निरामिष
निर्लज्ज
निर्दय
निन्दा
नैसर्गिक
निरक्षर
निन्द्य
निष्काम
निराकार
निर्गुण
निर्णय
निर्णीत
नियत
निपुण
नियंत्रित
निर्जीव
निरर्थक
निर्दिष्ट
निर्बल
निर्धारित
निर्भीक
निर्वचनीय
निश्चय
निष्ठा
निष्क्रिय
निषिद्ध
नीरस
निर्वाच्य
नीरुग्णता
निर्धनता
नास्तिक

न

अधर्मी
अधीर
अधैर्य
नम्र
अस्थिर

अधिक
पुरातन
सकारात्मक
ग्राम
नुकसान
अनम्र
प्राचीन
प्राचीनता
बदनाम
पुराना
ग्रामीण
शाश्वत/अनश्वर
सदोष
विनाश/ध्वंस
मलिन
सामिष/आमिष
सलज्ज
सदय
स्तुति/प्रशंसा
कृत्रिम/अनैसर्गिक
साक्षर
वन्द्य/अनिन्द्य
सकाम
साकार
सगुण
अनिर्णय
अनिर्णीत
अनियत
अनिपुण
अनियंत्रित
सजीव
सार्थक
अनिर्दिष्ट
सबल
अनिर्धारित
भयभीत/डरपोक
अनिर्वचनीय
अनिश्चय
अनिष्ठा
सक्रिय
विहित
सरस
अनिर्वाच्य
रुग्णता
धनाढ्यता
आस्तिक

नौकर
निरोग
निद्रा
निष्पाप

प

परार्थ
प्रत्यक्ष
प्रधान
परमार्थ
पक्ष
पद्य
परतंत्र
पराजय
पठित
पाक
पतन
पटु
पदस्थ
पराजेय
प्रमुख
प्रशंसा
प्रलय
प्रारम्भिक
पुरस्कार
पूर्ववर्ती
प्रवृत्ति
प्राचीन
प्राकृतिक
पूर्व
पूर्णता
प्रयोग
पुष्ट
पाश्चात्य
परिश्रम
पुरुष
परोक्ष
प्रसारण
प्रतिकूल
प्रदान
प्रकाश
पराधीन
पल्लवन
परास्त
प्रफुल्ल
प्रशंसक
पण्डित
प्रवर
प्रसाद
प्रखर
प्रकृति
प्रवेश
प्रशिक्षित

मालिक/नौकरानी
रोग
जागरण
पाप

स्वार्थ
परोक्ष
गौण
स्वार्थ
विपक्ष
गद्य
स्वतंत्र
विजय/जय
अपठित
नापाक
उत्थान
अपटु
अपदस्थ/पदच्युत
अपराजेय
सामान्य/गौण
निन्दा
सृष्टि
अन्तिम/अंत्य
तिरस्कार/दण्ड
परवर्ती/उत्तरवर्ती
निवृत्ति
नवीन/अर्वाचीन
कृत्रिम/अप्राकृतिक
अपर/पश्चिम
अपूर्णाता
अप्रयोग
अपुष्ट/क्षीण
पूर्वीय/पौरस्त्य
विश्राम
कोमल
प्रत्यक्ष/अपरोक्ष
संकुचन
अनुकूल
आदान
अन्धकार
स्वाधीन
संक्षेपण
विजयी
क्लान
निन्दक
मूर्ख
अवर
विषाद
मंद
पुरुष
निकास
अप्रशिक्षित

पार्थिव
पात्र
प्रभावित
पूरा
पूर्वकालीन
पका
परिवर्तनीय
परिणीत
पकड़ना
परिमार्जित
प्रेमभाव
प्रस्तुत
प्रायः
प्रामाणिक
प्रसार
प्रौढ़
फलाहारी
फायदा
फैलना
फलित
फाटक (पछोड़न)
बंधन
बद्ध
बोध
बहुमत
बहिरंग
बाह्य
बर्बर
बीमार
बृहत
बेमेल
भय
भाव
भाग्य
भव्य
भक्त
भक्ष्य
भद्र
भद्रता
भोगी
भौतिक
भयभीत
भग्न
भिन्न
भोज्य
भ्रांत
भेद्य
भंजनीय
भूषण

अपार्थिव
अपात्र
अप्रभावित
अधूरा
उत्तरकालीन
अधपका/कच्चा
अपरिवर्तनीय
अपरिणीत
छोड़ना
अपरिमार्जित
दुर्भाव
अप्रस्तुत
बहुधा/सदैव
अप्रामाणिक
संकोच
अप्रौढ़
अनाजी
नुकसान
सिकुड़ना
अफलित
हाटक (स्वर्ण)
मुक्ति/मोक्ष
मुक्त
अबोध
अल्पमत
अन्तरंग
आभ्यन्तर
सभ्य
तंदुरुस्त
लघु
संगत
साहस
अभाव/कुभाव
अभाग्य/दुर्भाग्य
साधारण/फूहड़
अभक्त
अभक्ष्य
अभद्र
अभद्रता
योगी
आध्यात्मिक
निडर/निर्भीक
अभग्न
अभिन्न
अभोज्य
निर्भ्रान्त
अभेद्य
अभंजनीय
कुभूषण

फ

ब

भ

भूगोल
भावी
भूतपूर्व
भिक्षुक

महात्मा
मृत
मुनाफा
मलिन
महत्
मनुज
मत्त
मंद
मानवीय
मार्जित
मान्य
मान
मानव
मानवता
मनुष्य
मूर्त
मूक
मिलन
मुख
मृदुल
मुलायम
मुख्य
मोहित
मिश्रित
मिथ्या
मैत्री
मुमकिन
मर्यादित
महान
मंगल
मृत्यु
मुसीबत
मिट
मधुर
मालिक
मतैक्य

यश
यद्यपि
योगी
यादृश
योग्य
यथेष्ट
यशस्वी
याचक
यथार्थ
यति

म

य

खगोल
भूत
अभूतपूर्व
दाता

दुरात्मा
जीवित
नुकसान/घाटा
निर्मल
लघु
दनुज
उमत्त
द्रुत
अमानवीय
अपमार्जित
अमान्य
अपमान
दानव
नृशंसता
पशु
अमूर्त
वाचाल
विरह
प्रतिमुख/पृष्ठ
कठोर
कठोर/कड़ा
गौण
अमोहित
अमिश्रित
सत्य
अमैत्री
नामुमकिन
अमर्यादित
तुच्छ
अमंगल
जीवन
आराम
अमिट
कटु
नौकर
मतभेद

अपयश
तथापि/तदपि
भोगी
तादृश
अयोग्य
स्वल्प
अयशस्वी
अयाचक
काल्पनिक
गृहस्थ

याद
व्यस्त
युयुत्सा
योग्यता
यौवन
योग
युद्ध

रचना
रक्षित
रक्षक
रुचि
रद्द
रसीला
रसिक
रहित
राजा
राग
रागी
रोचक
रौद्र
रूपवान
रिक्त
राजतंत्र
रत
राष्ट्रप्रेम
रथी
रिपु
रोगी
रुक्ष
रूढ़िवद्ध

लिप्त
लुप्त
लजीला
लक्षित
लंबा
लभ्य
लायक
लोभ
लिखित
लचीला
लौकिक
लाभदायक
लब्ध
लोहित

वाचाल
वादी
वरदान
वरिष्ठ
वैभव

र

ल

व

भूल
अव्यस्त
मैत्री
अयोग्यता
वार्धक्य/बुढ़ापा
वियोग
शान्ति

ध्वंस
अरक्षित
भक्षक
अरुचि
बहाल
रसहीन/नीरस
अरसिक
सहित
रंक/प्रजा/रानी
द्वेष/विराग
विरागी
अरोचक
अरौद्र
कुरूप
पूर्ण/भरा
जनतंत्र/लोकतंत्र
विरत
राष्ट्रद्रोह
पैदलसैनिक
मित्र
निरोगी
मृदु
रूढ़िमुक्त

अलिप्त/निर्लिप्त
व्यक्त
बेशर्म/निर्लज्ज
अलक्षित
नाटा/ठिगना
अलभ्य
नालायक
निर्लोभ
मौखिक
कड़ा
अलौकिक
हानिकारक
प्रदत्त
अलोहित

मूक
प्रतिवादी
श्राप/अभिशाप
कनिष्ठ
दारिद्र्य

विशेष	सामान्य/साधारण	शहरी	देहाती
विदेशी	स्वदेशी	शम्य	अशम्य
विधवा	सधवा	शंक	निःशंक
विवाद	निर्विवाद	शीत	उष्ण
विदित	अविदित	शुष्क	अद्रि/नम/सिक्त
विपन्न	संपन्न	श्याम	श्वेत
विशिष्ट	सामान्य	श्यामा	गौरी
वैमनस्य	सौमनस्य	शठता	सज्जनता
विस्तृत	संक्षिप्त/संकुचित	शमित	उत्तेजित
वीर	कायर	शिथिल	दृढ़
विधि	निषेध	शुक्ल	कृष्ण
वृष्टि	अनावृष्टि	शिख	नख
व्यय	आय	शिष्य	गुरु
विग्रह	समास/संधि	शुद्धि	अशुद्धि
विज्ञ	अज्ञ/अविज्ञ	श्वास	प्रश्वास
विषाद	हर्ष	शोषक	पोषक
विरल	अविरल	शुल्क	निःशुल्क
विधुर	सपत्नीक	शाश्वत	क्षणिक
व्याप्त	अव्याप्त	शुचि	अशुचि
व्यापक	अव्यापक	शोभन	अशोभन
वैतनिक	अवैतनिक	शोक	हर्ष/आनन्द
विशाल	लघु	शिक्षित	अशिक्षित
विपद्	सपद्	शासक	शासित
विपत्ति	सम्पत्ति	शब्द	निःशब्द
विनम्र	अविनम्र/उद्दण्ड	शरण	अशरण
विकसित	अविकसित	शस्त्रीकरण	निःशस्त्रीकरण
वास्तविक	अवास्तविक	शीघ्रता	विलंब
विजय	पराजय	शिष्ट	अशिष्ट
विशुद्ध	अविशुद्ध	शूर	भीरू/कायर
विशेषज्ञ	अविशेषज्ञ	शक्ति	क्षीणता
विश्वास	अविश्वास	शिक्षक	शिक्षार्थी/विद्यार्थी
विवेकी	अविवेकी	शानदार	शर्मनाक
वृद्धि	हास	शर्मदार	बेशर्म
वैदिक	अवैदिक	शापित	शापमुक्त
वैज्ञानिक	अवैज्ञानिक	शारीरिक	मानसिक
वैधानिक	अवैधानिक	शक्तिमान	शक्तिहीन
व्यावहारिक	अव्यावहारिक	शुद्धता	अशुद्धता
विस्तीर्ण	अविस्तीर्ण	शोच	अशोच
विचलित	अविचलित	शंकित	अशंकित
विख्यात	कुख्यात	श्लील	अश्लील
वैध	अवैध	शृंखला	विश्रृंखला
वसन्त	पतझर	श्रद्धा	अश्रद्धा
वृद्धि	हास	शीतल	उष्ण
		श्रव्य	दृश्य
		श्रांत	अश्रांत
शकुन	अपशुकन	श्रुत	अश्रुत
शत्रुता	मित्रता	श्रेष्ठ	अधम
शाप	वरदान	श्रोता	वक्ता
शांति	अशांति/क्रान्ति	श्लिष्ट	अश्लिष्ट
शयन	जागरण	श्लाघ्य	अश्लाघ्य
शीर्ष	तल	शिक्षा	अशिक्षा

सक्षम
सजल
सजीव
सक्रिय
सकारण
सकारात्मक
संहत
संस्कृत
संसारी
संयम
संयोग
संशय
संस्कृति
संवृत
संश्लेषण
संशोधित
संवादी
संयमी
संभाषण
संयम
संयत
सख्त
सतर्कता
सक्रियता
संकल्प
संक्षिप्त
संघटन
संक्षेप
सम्पत्ति
संकीर्ण
सर्जन
संतोष
संग
संग्रह
संदेह
संपूर्ण
सामान्य
स्वीकार
सज्जन
स्तुति
साकार
सित
स्थूल
सूक्ष्म
सत्य
सदाचार
सत्याग्रह
स्वर्ग
सृष्टि
सार्थक
सत्यवादी

अक्षम
निर्जल
निर्जीव
अक्रिय/निष्क्रिय
अकारण
नकारात्मक
असंहत
असंस्कृत
असंसारी
असंयम
असंयोग/वियोग
असंशय
विकृति
असंवृत
विश्लेषण
असंशोधित
असंवादी
व्यभिचारी
असंभाषण
असंयम
असंयत
नरम
असतर्कता
निष्क्रियता
विकल्प
विस्तृत
विघटन
विस्तार
विपत्ति
विस्तीर्ण/ उदार
ध्वंस
असंतोष
निस्संग
विग्रह/अपरिग्रह
निःसंदेह
अपूर्ण
विशिष्ट
अस्वीकार
दुर्जन/खल
निन्दा
निराकार
असित
सूक्ष्म
विराट/स्थूल
असत्य/मिथ्या
दुराचार/अनाचार
दुराग्रह
नरक
प्रलय/संहार
निरर्थक
मिथ्याचारी

सर्द
संकलन
सरस
सन्त
सधवा
स्त्री
सबल
सनाथ
सबाध
सभ्य
समर्थक
समर्थन
समष्टि
सद्भाव
सुदपयोग
सत्कर्मी
सत्कार
सत्यवादी
संस्थापन
स्वकीया
संरक्षित
सात्विक
ससीम
स्वर
समास
सुसाध्य
सशक्त
समादृत
स्वदेश
सहयोगी
सदा
सद्व्यवहार
सफल
स्पर्धा
सशस्त्र
समर्थित
सदाशय
सत्संग
समाधान
सल्लज
सवर्ण
सरस
सहमत
सहनीय
सहित
सहिष्णु
स्तब्ध
स्थावर
स्थिर
सखलित
स्थायी
स्थैर्य
स्वतंत्र

गरम
व्यकलन
नीरस
असन्त
विधवा
पुरुष
निर्बल/दुर्बल
अनाथ
निर्बाध
असभ्य
विरोधी
विरोध/खिलाफत
व्यष्टि
दुर्भाव
दुरुपयोग
दुष्कर्मी/कुकर्मी
तिरस्कार
असत्यवादी
विस्थापन
परकीया
असंरक्षित
तामसिक
असीम
व्यंजन
विग्रह/व्यास
दुःसाध्य
अशक्त
निरादृत
निदेश/परदेश
प्रतियोगी/विरोधी
यदाकदा
दुर्व्यवहार
असफल/विफल
सहयोग
निःशस्त्र
असमर्थित
दुराशय
कुसंग
समस्या/अवधान
निर्लज्ज
असवर्ण
नीरस
असहमत
असहनीय
रहित/विहीन
असहिष्णु
अस्तब्ध
जंगम
चंचल/अस्थिर
असखलित
अस्थायी
अस्थैर्य
परतंत्र

स्पृश्य
स्निग्ध
स्वल्पायु
स्वधर्म
स्वार्थी
स्वावलंबी
स्वाधीन
स्वामी
स्वर्गीय
स्वीकृत
स्वच्छ
स्वार्थ
स्वीकार्य
सुडौल
समीप
समूल
समीपवर्ती
सम्मुख
समृद्धि
सम्मत
सम्मान
स्वजाति
सुदूर
सभय
अविकार
सौम्य
सौभाग्य
समष्टि
सुशील
सुगम
स्वप्न
स्तुत्य
सुलभ
सुकृति
सुसंगति
सूर्यास्त
सुधा
स्वागत
संपूत

हर्ष
हास
हमारा
हँसना
ह्रस्व
हमदर्द
हिंसा
हितकर
हताश
हितकारी
होनी
हिंसक

ह

अस्पृश्य
अस्निग्ध
चिरायु
परधर्म/विधर्म
परार्थी
परावलंबी
पराधीन
दास/भृत्य/सेवक
नारकीय
अस्वीकृत
अस्वच्छ
परमार्थ
अस्वीकार्य
बेडौल
दूर
निर्मूल
दूरवर्ती
विमुख/नेपथ्य
विनाश
असम्मत
अवमान/अपमान
विजाति
सन्निकट/अदूर
निर्भय/बर्बर
निर्विकार
उग्र/असौम्य
दुर्भाग्य
व्यष्टि
दुःशील
दुर्गम
जागरण
निन्द्य
दुर्लभ
दुष्कृति/कुकृति
कुसंगति
सूर्योदय
हलाहल/गरल
निरादर/तिरस्कार
कपूत

विषाद
रुदन
तुम्हारा
राना
दीर्घ
बेदर्द
अहिंसा
अहितकर
आशावान
अहितकारी
अनहोनी
अहिंसक

क्ष

क्षति
क्षर
क्षत
क्षमा
क्षमता
क्षणिक
क्षुद्र
क्षय
क्षुण्य
क्षुब्ध
क्षीण

त्र

त्रिकुटी
त्रिकोण

ज्ञ

ज्ञात
ज्ञान
ज्ञानी
ज्ञेय

श्र

श्रीमान
श्रोता
श्रुत
श्राप
श्रद्धा
श्रवण
श्रेष्ठ
श्रव्य
श्री गणेश
श्रम

लाभ
अक्षर
अक्षत
दण्ड
अक्षमता
शाश्वत/चिरंतन
विराट्
अक्षय
अक्षुण्य
शांत
पुष्ट

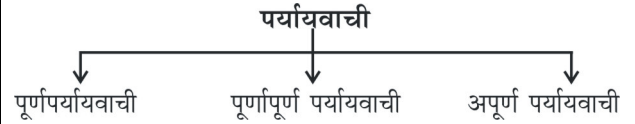
भृकुटी
षट्कोण

अज्ञात
अज्ञान
अज्ञानी/मूर्ख/मूढ़
अज्ञेय

श्रीमती
वक्ता
अश्रुत
आशीर्वाद
घृणा
दर्शन
तुच्छ
अश्रव्य
इतिश्री
विश्राम

पर्यायवाची शब्द

ऐसे शब्द जिनके अर्थ समान हों, पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं। पर्यायवाची शब्द को 'प्रतिशब्द' भी कहते हैं; जैसे- जल, नीर, अंबू, तोय।



1. पूर्ण पर्यायवाची शब्द - वाक्य में एक शब्द के स्थान पर दूसरा शब्द रखा जाय और उसके अर्थ में अन्तर न हो तो ऐसे शब्द पूर्ण पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं; जैसे- अरण्य, विपिन, कानन। नूतन, नया।

2. पूर्णापूर्ण पर्यायवाची शब्द - जब एक प्रसंग का समानार्थी शब्द दूसरे प्रसंग में असमान अर्थ का बोध स्पष्ट करता है तो पूर्णापूर्ण पर्याय शब्द कहलाता है; जैसे- खाना खाना, निगलना।

3. अपूर्ण पर्यायवाची शब्द - जब शब्दों के अर्थ एक हों, लेकिन उचित स्थान पर इनका प्रयोग न होने के कारण अर्थ का अनर्थ हो जाता है तो अपूर्ण पर्यायवाची शब्द कहलाता है। जैसे- कमर टूटना के स्थान पर कटिभंग हो। गाभिन के स्थान पर गर्भिणी शब्द का प्रयोग।

अन्य पर्यायवाची शब्द निम्नवत है-

(अ)

अरण्य	- वन, विपिन, अटवी, जंगल, कानन, बीहड़, गहन, कांतार।
असुर	- दनुज, दानव, दैत्य, राक्षस, यातुधान, निशिचर, निशाचर।
अग्नि	- आग, वह्नि, पावक, अनल, वायुसखा, दहन, धूमकेतु, कृशानु, जातदेव, वैश्वानर, ज्वाला।
अंग	- कलेवर, तन, अवयव, वपु, देह, काया, शरीर।
अचल	- गिरि, शैल, नग, महिधर।
अनुपम	- अपूर्व, अनोखा, अतुल, अद्वितीय, अदभुत, अनुठा।
अमृत	- पीयूष, सुधा, अमिय, जीवनोदक, अमी, सोम।
अश्व	- वाजि, हय, घोटक, घोड़ा, सैन्धव, तुरग, तुरंग।
अभिजात	- श्रेष्ठ, पूज्य, उच्च, कुलीन।
अधर	- ओष्ठ ओठ, रदच्छद, रदपुट।
अंक	- हृदय, गोद, संख्या, नाटक का एकभाग, सर्ग।
अनार	- दाडिम, शुकप्रिय, रामबीज।
अंधा	- नेत्रहीन, सूरदास, अन्ध, चक्षुविहीन, प्रज्ञाचक्षु।
अनाज	- अन्न, गल्ला, धान्य, शस्य।
अध्यापक	- आचार्य, गुरु, शिक्षक, प्रवक्ता, व्याख्याता।
अन्वेषण	- गवेषण, खोज, जाँच, शोध, अनुसंधान।
अपमान	- अनादर, अवमान, बेइज्जती, अवज्ञ, तिरस्कार, उपेक्षा, निरादर।
अपार	- असीम, अनन्त, बेहद, बेशुमार, निस्सीम।
अप्सरा	- देवांगना, सुरबाला, दिव्यांगना, सुरसुन्दरी, देवबाला।
अतिथि	- पाहुन, मेहमान, आगन्तुक, अभ्यागत।
अभिप्राय	- अर्थ, तात्पर्य, आशय, मतलब, मायने।
अधिकार	- स्वत्व, प्रभुत्व, स्वामित्व, हक, आधिपत्य।
अचेत	- बेहोश, मूर्च्छित, बेखबर, संज्ञाहीन, चेतनाहीन।
अच्छा	- चोखा, बढ़िया, उम्दा, आला।
अशुद्ध	- दूषित, अशुचि, गंदा, अपवित्र, मलिन।
अवैध	- नाजायज, गैरकानूनी, अवैधानिक, विधिविरुद्ध।
अवज्ञा	- अनादर, अवमानना, अपमान, हतक, तिरस्कार, परिभव, उपेक्षा, बेइज्जती।
अश्लील	- वेशर्म, अभद्र, गंदा, अधिभ्रष्ट असभ्य।
असभ्य	- अशिष्ट, गँवार, उजड़ु, अभद्र, अविनीत, दुःशील।

(आ)

आँख	- नेत्र, लोचन, नयन, चक्षु, दृग, अम्बक, दृष्टि, विमोचन, चख, दीदा, ईक्षण, प्रेक्षण।
आकाश	- द्यौ, व्योम, गगन, अभ्र, अम्बर, नभ, अन्तरिक्ष, आसमान, अनन्त, शून्य, ईक्षण।
आँगन	- आँगना, अजिर, प्रागण।
आँसू	- अश्रु, नेत्रनीर, नयनजल, नेत्रवारि, नयननीर।
आँचल	- पल्ला, छोर, दामन, कोना, कोर।
आकर्षण	- खिचाव, दिलकशी, विमोहन, सम्मोहन।

आकाशगंगा - स्वर्गनदी, सुरनदी, मन्दाकिनी, नभोनदी, नमगंगा।

आकृति - चेहरा-मोहरा, नैन नक्श, गढन, डील-डौल, आकार, बनावट, ढाँचा।

आख्यान - कहानी, कथा, वृत्तान्त, इतिवृत्त, किस्सा।

आचार - चरित्र, स्वभाव, धूलि, चाल-ढाल, चाल-चलन।

आडम्बर - प्रपंच, ढकोसला, स्वांग, दिखावा, ढोंग।

आड़ - शरण, पर्दा, रोक, आश्रय, ओट।

आतंक - भीषिका, उपद्रव, अतिभय, संत्रास, दहशत।

आदि - प्रथम, पहला, आदिम, आरंभिक।

आधार - मूल, सहारा, अवलंब, जड़, बुनियाद।

आधुनिक - नूतन, नया, वर्तमानकालीन, आर्वाचीन।

आपत्ति - आपदा, मुसीबत, विपदा, आफत, विपत्ति।

आम - आम्र, रसाल, अमृतफल, अंब, फलश्रेष्ठ, च्युत।

आराम - सुख, चैन, करार, विश्राम, विश्रान्ति।

आसली - सुस्त, काहिल, निकम्मा, ठलुआ, निरुद्यमी।

आवश्यक - अपरिहार्य, अनिवार्य, जरूरी, बाध्यकर।

आवेग - स्फूर्ति, तेजी, जोश, चपलता, त्वरा।

आशय - अभिप्राय, तात्पर्य, मतलब, अर्थ, सारांश, भाव।

आश्चर्य - अचरज, अचंभा, कौतुक, कुतूहल, कौतूहल।

आश्रय - अवलंब, भरोसा, सहारा, आधार, प्रश्रय।

आहार - भोजन, खाना, खाद्यवस्तु, भोज्यसामग्री, भक्ष्यपदार्थ।

(इ)

इंद्र - शक्र, सुरपति, देवराज, पुरंदर, शचीपति, अमरपति, देवेश, सुरेश, मधवा, वासव, महेन्द्र, सुराधिप, शतमन्यु, अमरेश, मरुपाल, नाकपति।

इच्छा - आकांक्षा, ईप्सा, अभिलाषा, कामना, चाह, मनोरथ, स्पृहा, ईहा, वांछा।

इठलाना - इतराना, ऐँठना, अकड़ना, शान, दिखाना, शेखीमारना।

इन्कार - निषेध, अस्वीकृति, अनंगीकार, प्रत्याख्यान, अनंगीकरण।

(ई)

ईख - गन्ना, ऊख, रसडंड, रसाल, पैंडी, रसद।

ईमानदारी - निष्कपटता, सदाशयता, निश्छलता, दयानतदारी, निष्कपटता।

ईर्ष्या - डाह, जलन, द्वेष, कुढ़न, मत्सर, रश्क, हसद।

ईश्वर - परमेश्वर, परमात्मा, प्रभु, ईश, जगदीश, दीनानाथ, भगवान्।

(उ)

उकसाना - उत्तेजित करना, उद्बोधित करना, उभारना, उत्साहित करना।

उचित - उपयुक्त, वाजिब, मुनासिब, संगत, समीचीन, ठीक।

उताववला - आतुर, हडबड़िया, अधीर, जल्दबाज, व्यग्र, व्याकुल।

उत्कंठा - लालसा, चाव, उत्सुकता, प्रबलेच्छा, आतुरता।

उत्तम - उत्कृष्ट बढ़िया, प्रवर, प्रकृष्ट, श्रेष्ठ।

उत्पत्ति - उद्गम, उद्भव, जन्म, अविर्भाव, पैदाइश, स्रोत।

उत्सव - पर्व, समारोह, त्योहार, जलसा, मंगलकार्य।

उदास - उन्मन, विषण्ण, अप्रसन्न, खिन्न, चिंताकुल, उदविग्न, अन्यमनस्क।

उदासीन - निःपृह, विरक्त, वीतराग, निर्लिप्त, अनासक्त।

उदार - महामना, महाशय, दरियादिल, उदारचेता।

उदाहरण - मिसाल, दृष्टान्त, नजीर, नमूना, उद्धरण, निदर्शन।

उद्देश्य- ध्येय, लक्ष्य, निमित्त, मकसद, प्रयोजन, हेतु, लक्ष्य।

उद्यम - परिश्रम, पुरुषार्थ, श्रम, मेहनत, अध्यवसाय व्यवसाय, उद्योग, व्यापार, धन्धा।

उपवास- निराहार, व्रत, फाका, अनशन, लंघन।

उपस्थित- मौजूद, प्रस्तुत, हाजिर, विद्यमान, वर्तमान।

उपाय- ढंग, युक्ति, जुगत, जुगाड, तरीका, तरकीब, तदबीर।

उपासना- पूजा, आराधना, सेवा, अर्चना, प्रार्थना, इबादत।

उलटा- प्रतिकूल, उलटा, विरुद्ध, औधा, प्रतिलोम।

उलझन - संभ्रम, अनिश्चय, असमंजस, दुविधा, धर्म संकट, चक्कर।

उल्लास- आनंद, आह्लाद, हर्ष, मौज, प्रमोद।

(ऊ)

ऊसर - सस्यहीन, अनुपजाऊ, अनुर्वर, परती, मरूथल, फलवंध्य, रहित, निष्फल, वंजरभूमि।

ऊंघ- तंडा, झपकी, अलसाई, अर्धनिद्रा।

ऊँचा- उच्च, उत्तुंग, उर्ध्व, ऊपर, बुलंद।

ऊधम- उपद्रव, उत्पात, हुल्लड, हंगामा, धमाचौकड़ी।

ऊष्मा- तपन, गरमी, उष्णता, ताव, ताप, उमस।

(ऋ)

ऋण- आहत, क्षत, जखमी, घायल।

ऋजु- सुगम, सीधा, सरल, सहज।

ऋद्धि- वृद्धि, उत्कर्ष, बढ़ती, बढ़ोत्तरी, सम्पन्नता, समृद्धि।

ऋषि- मनीषी, मुनि, साधु, महात्मा, सन्त, मन्त्रद्रष्टा।

ऋषु- पराक्रमी, वीर, बलवान, शक्तिशाली।

(ए)

एक- अद्वितीय, अनोखा, अनुपम, प्रथम।

एकरूप- एक-सा, समान, एक जैसा, समरूप, अभिन्न, मेल।

एकान्तिक- निश्चित, पक्का, सुनिश्चित, अवश्य।

एकान्त- शून्य, सूना, निर्जन, सुनसान, निभृत, वीरान।

एकाएक - अकस्मात्, अचानक, सहसा, अचिन्तित, यकायक, एकदम।

एहसान- कृपा, उपकार, अनुग्रह, आभार, कृतज्ञता।

(ऐ)

ऐंठ- अकड़, गर्व, घमण्ड, ठसक।

ऐंठन- मरोड़ बल, तनाव, उमेठन, लपेट, घुमाव, अकड़न।

ऐच्छिक - वैकल्पिक, स्वेच्छाकृति, अस्त्रियारी, इच्छा का सविकल्प, पसंद का।

ऐब- दोष, खोट, बुराई, अवगुण, कलंक, त्रुटि।

ऐश्वर्य- सम्पदा, वैभव, सम्पन्नता, समृद्धि, श्री, धनसम्पत्ति, ऋद्धि।

(ओ)

ओकाई- ओक, उलटी, मिचली, कै, उबकाई।

ओंठ- ओष्ठ, अधर, होंठ, दंतच्छद, रदनच्छद।

ओछा- छिछोरा, कमीना, टुच्चा, क्षुद्र, हल्का।

ओज- तेज, बल, क्रान्ति, ताकत, जोर, दम, पराक्रम, वीर्य, शक्ति, ऊर्जा।

ओझल- अदृश्य, गायब, लुप्त, अन्तर्धान, विलुप्त, तिरोहित।

ओद- भीगा हुआ, गीला, नमी, तर।

ओस- तुषार, हिमसीकर, हिमकण, हिमबिन्दु, तुहिनकण।

(औ)

औघर- अनगढ़, अण्डबण्ड, अटपट, असुन्दर।

औदारिक- बहुत खाने वाला, पेटू, पदोर्धी, लालची।

औदात- गौर, श्वेत, शुक्ल, सफेद, धौला।

औदार्य- महत्व, उदारता, श्रेष्ठत्व, सरलता, दातृत्व।

और- एवं, तथा, साथही, अन्य, इतर, भिन्न।

(क)

कंगाल- दरिद्र, निर्धन, अकिञ्चन, गरीब।

कंचन- सोना, कनक, सुवर्ण, स्वर्ण।

कच्चा- अनपका, अपरिपुष्ट अप्रौढ़, कालपूर्व, अपक्व।

कटु - तीखा, कड़वा, तेज, परपरा, तीक्ष्ण, कर्कश, रूखा, रूक्ष, कड़ा, कठोर।

कण्ठ- गला, ग्रीवा, गरदन, गला, शिरोधरा।

कथन- बयान, कथनी, मत, वक्तव्य, मन्तव्य, विचार, उद्बोधन।

कन्या - कुँआरी, कुमारी, अविवाहिता, अनुद्धा, किशोरी, बाला, बालिका।

कपड़ा - दुकूल, वस्त्र, बसन, पट, चीर, अम्बर, परिधान, चैल, पोशाक।

कबूतर- रक्तलोचन, कपोत, परेवा, पारावत, हारीत।

कब्ज - मलबद्धता, मलबन्ध, मलावरोध, बद्धकोष्ठ, कोष्ठ, कोष्ठबद्धता।

कमल - उत्पल, कुवलय, इन्दीवर, पद्म, नलिन, सरोज, अरविन्द, शतपत्र, सरसीरूह, राजीव, कंज, अम्भोज, पंकज, अब्ज, पाथोज, पुण्डरीक, अंबुज, जलजात, जलज, वारिज।

कदर- हस्त, हाथ, बाँह, पाणि, भुज, भुजा।

कर- शुल्क, महसूल, मालगुजारी, टैक्स।

कल्पवृक्ष- सुरतरु, मन्दार, हरिचन्दन, परिजात, देववृक्ष।

कली - कोपल, कलिका, जालक, मुकुल, ताम्रपल्लव, कल्पशाल, नवपल्लव, अँखुवा।

काक- काग, कौआ, पिशुन, करठ, वायस, काण।

कामदेव - मदन, अतनु, मनोभव, पंचशर, स्मर, मार, मनसिज, मन्मथ, मीनकेतु, मकरकेतु, मनोभाव, कन्दर्प, अनंग, रतिपति, मनोज, मयन, मकरध्वज, पुष्पधन्वा।

कारागार- बन्दीगृह, कारावास, जेल, कैदखाना।

किरण- मरीचि, मयूख, कर, अंशु, रश्मि, प्रभा, गो, अर्चि।

कुत्ता- कुक्कर, श्वान, शुनक, कूकुर, सारमेय।

कुत्सित- अधम, नीच, बुरा, निकृष्ट, खराब, गर्हित, घृणित, हेय, लम्पट।

कुबेर - धनद, यक्षराज, धनाधिप, किन्नरेश, राजराज, नृपराज, अधिपति।

कृतज्ञ- अभारी, अनुगृहीज, उपकृत, कृतार्थ, ऋणी, एहसानमन्द।

कृष्ण - मोहन, माधव, वंशीधर, श्याम, नन्दलाल, मुरलीधर, गिरिधर, कन्हैया, बनवारी, नन्दनन्दन, वासुदेव, बनमाली, ऋषिकेश, गोविन्द, मुरारी, दामोदर, ब्रजवल्लभ, गोपीनाथ।

केला- रम्भा, कदली, भानुफल, मोभा।

कोयल - कोकिल, पिक, श्यामा, मदनशलाका, कलघोष, वसन्तदूत, काकपाली।

क्रोध- अमर्ष, कोप, गुस्सा, रोष, आक्रोश, प्रकोप, तैश, क्षेम।

कंजूस- टंच, सूम, कृपण।

(ख)

खग- विहंग, विहग, द्विज, चिड़िया, पंक्षी, शकुनि, पखेरू।

खम्भा- थम्भ, स्तम्भ, स्तूप, खम्भ।

खिड़की- झरोखा, गवाक्ष, जंगला, वातायन, झञ्झर

(ग)

गंगा - जाह्नवी, भागीरथी, सुरसरि, देवसरि, त्रिपथगा, सुरध्वनि, नदीश्वरी, मन्दाकिनी, अलकनन्दा, देवापगा, विष्णुपदी।

गणेश - भवानीनन्दन, महाकाय, विनायक, एकदन्त, गजानन, गणाधिपति, लम्बोदर, गणपति, हेरम्ब, द्वयमातुर, विघ्नविनाशक, गौरीसुत, मोदकप्रिय, मूषकवाहन, गजवदन, गणनायक, शंकरसुवन, मोददाता।

गदहा - गर्दभ, रासभ, वैशाखनन्दन, गदहा, खर, चक्रीवान, बेशर, धूसर।

गरीब- निर्धन, अकिंचन, दीन, दरिद्र, कंगाल।

गरुड़ - पन्नगरि, खगेश, उरगारि, हरिपान, वातनेय, खगपति, सुपर्ण, नागान्तक, वैनतेय।

गाय- गौरी, गऊ, गइया, धेनु, भद्रा, दोग्धी, गो, सुरभी।

गृह - सदन, घर, भवन, मन्दिर, धाम, निकेतन, आगार, आलय, आवास, निलय, ओक, निकेत, आशियाना, आयतन, मकान।

(घ)

घड़ा- घट, कुम्भ, कलश, मटका, गगरा, गगरी।

घिनौना- घृण्य, घृणास्पद, गर्हित, बीभत्स, गन्दा, घृणित, हेय।

घुमक्कड़- सैलानी, रमता, पर्यटक, घुमन्तू, विचरणशील, यायावर।

(च)

चन्दन - मलय, दिव्यगन्ध, हरिगन्ध, दारुसार, मलयज, गंधसार, श्रीखण्ड।

चन्द्रमा - इन्दु, चन्द्र, चाँद, हिमांशु, सुधांशु, सुधाकर, सुधाधर, राकेश, शशि, सारंग, निशाकर, निशापति, रजनीपति, मृगाक, कलानिधि।

चमक - ज्योति, प्रभा, द्युति, दीप्ति, कान्ति, शोभा, छवि, आभा, प्रकाश।

चाँदनी- कौमुदी, चन्द्रिका, ज्योत्स्ना, चन्द्रमरीची, तरंगिणी।

चालाक- ऐयार, धूर्त, मक्कार, छली, उस्ताद।

चोर- दस्य, तस्कर, रजनीचर, मोषक, कुम्भिल, खनक, साहसिक।

चोटी- सानु, शीश, श्रृंग, शिखर, शिरोबिन्दु, तुंग, परकोटि।

(छ)

छलाँग- फाँद, उछाल, चौकड़ी, उछलकूद।

छाती- उर, वक्ष, वक्षस्थल, सीना, पक्षप्रान्त।

छाया- साया, छाँह, परछाई, प्रतिबिम्ब, छाँव।

छुट्टी- अवकाश, अन्तराल, विराम, विश्राम, फुर्सत।

छूट- ढील, सुविधा, कटौती, रियायत, सहूलियत, मुरव्वत।

छोर- किनारा, सिरा, पार, अंत, सीमा।

छोह- स्नेह, ममता, प्रेम, प्यार, मोहब्बत, दुलार।

(ज)

जगत- संसार, विश्व, जग, भव, लोक।

जगह- स्थल, स्थान, ठौर, ठिकाना, मुकाम।

जल - तोय, पानी, वारि, नीर, सलिल, अम्बु, जीवन, आब, मेघपुष्प, पय, उदक, अमृत, धनरस, सारंग, वन, शम्बर, सर्वमुख।

जानकी- वैदेही, सीता, जनकसुता, जनकतनया, जनकात्मजा।

जीभ- जिह्वा, रसना, रसज्ञा, रसिका।

ज्योतिषी - ईक्षणिक, हस्तरखा, विशेषज्ञ, भविष्यवक्ता, ज्योतिर्विज्ञानी।

(झ)

झंझट- व्यर्थ का झगड़ा, टण्टा, प्रपंच, बखेड़ा।

झण्डा- ध्वज, पताका, निशान, केतु।

झरना- प्रपात, निर्झर, उत्स, स्रोत, प्रस्तवण

झोपड़ी- पर्णकुटी, कुटिया, छानी, कुटी, मडवा।

झूठ- मृषा, मिथ्या, अनृत, असत, असत्य।

(ट)

टक्कर- ठोकर, भिडन्त, संघात, समाघात, धक्का।

टीका- व्याख्या, भाष्य, वृत्ति, भाषान्तरण, विवृत्ति।

टीस- दर्द, कष्ट, कसक, हूक, कातरतास, शूल।

टेक- आश्रय, सहारा, भरोसा, अवलम्ब।

टोली- समूह, झुण्ड, दल, जत्था, मण्डली।

टोह- टटोल, तलाश, खोज, ढूँढ, खबर।

(ठ)

ठग- वञ्चक, प्रतारक, अड़ीमार, प्रवञ्चक, जालसाज।

ठिठोली- मजाक, उपहास, फबती, व्यंग्य, व्यंग्योक्ति।

(ड)

डर- भय, खौफ, भीति, त्रास, आतंक।

डरावना- भयानक, भयंकर, खौफनाक, भयावह, दहशतनाक।

डाँवाडोल- दुलमुल, अस्थिर, अट्ट, ढीला, विचलित, असन्तुलित।

डोरी- सुतली, सुतरी, जेवरी, तनी, रस्सी, डोर, धागा, डोरा।

(ढ)

ढंग - शैली, रीति, तरीका, विधि, उपाय, तदबीर, युक्ति, पद्धति, प्रणाली, प्रविधि।

ढाढ़स - इतमीनान, आश्वासन, तसल्ली, दिलासा, धीरज, भरोसा, सान्त्वना।

ढेर- ओघ, अम्बार, जमाव, राशि, पुञ्ज, समूह।

ढोंग- छिपाव, छल, स्वाँग, कपट, पाखण्ड।

(त)

तत्पर- तैयार, उद्यत, मुस्तैद, कटिबद्ध, सन्नद्ध।

तथापि- फिर भी, तो भी, तदपि, तिसपर भी, इसके बावजूद।

तरंग- लहर, उर्मि, हिलोर, वीचि, उल्लोल।

तरुणी- मनोज्ञा, सुन्दरी, नवयुवती, यौवनवटी, प्रमदा, रमणी।

तलवार - कृपाण, असि, खड्ग, चन्द्रहास, करवाल, खड्ग-शमशीर।

तादात्म्य - सारूप्य, एकात्मक, तद्रूपता, अनन्यता, अभिन्नता, एकरूपता, एकान्विता।

तारा- नखत, उडुगण, नक्षत्र, तारक।

तालमेल- संहति, समाञ्जस्य, संगति, सामरस्य, सुस्वरता, समन्वय।

तालाब - सर, तड़ाग, जलाशय, कासार, ताल, सरसी, पुष्कर, हृद, छद, दह, पोखर

तोता- कीर, शुक, सुआ, सुग्गा, रक्ततुण्ड, दाड़िमप्रिय

(थ)

थकान- थकन, थकावट, श्रान्ति, क्लान्ति।

थपेरा- थप्पड़, चपेटा, झापड़, चाँटा, धौल।

थोथा- खाली, पोला, खोखला, रिक्त, ढूँछ।

(द)

दंग- आश्चर्यचकित, हैरान, चकित, हतप्रभ, विस्मित, हक्का-वक्का।
दंगा- झगड़ा, फसाद, ऊधम, उत्पाद, उपद्रव।
दण्ड- हर्जाना, अर्थदण्ड, जुर्माना, सजा।
दक्ष- निष्णात, निपुण, पारंगत, चतुर, होशियार, प्रवीण, कुशल।
दर्द- यन्त्रणा, यातना, तकलीफ, पीड़ा, व्यथा।
दर्प- अहंकार, दम्भ, घमण्ड, गर्व, अभिमान।
दर्पण- आईना, शीशा, मुकुर, आरसी।
दल- जत्था, यूथ, दस्ता, टुकड़ी, समूह, गिरोह, गुट, संघ।
दाँत- दशन, दन्त, रद, रदन, द्विज, मुखधुर।
दाँव- चाल, युक्ति, जुगत, दाँव, पेंच, घात।
दाग- कलंक, धब्बा लाञ्छन, ऐब, दोष।
दानव- राक्षस, दैत्य, निशाचर, शम्बर, असुर।
दीपावली - दीवाली, दीपमाला, दोपोत्सव, दीपमालिका, प्रकाशोत्सव, ज्योतिर्वर्ष।
दुःख - पीड़ा, कष्ट, व्यथा, क्लेश, यातना, वेदना, उद्वेग, खेद, विषाद, सन्ताप, क्षोभ, यन्त्रणा, संकट, शोक, उत्पीडन।
दुर्गा - सिंहवाहिनी, कल्याणी, कामाक्षी, कुमारी, चण्डिका, कालिका, सुभद्रा, महागौरी, नारायणी, भगवती, महामाया, भवानी, चण्डी, शक्ति, दुर्गे।
दुबला- दुर्बल, कृश, निर्बल, कृशकाय, तन्वी, कमजोर।
दुस्तर- विकट, अगम्य, कठिन, औघट।
दुर्लभ- दुष्प्राप्य, अप्राप्त, अलभ्य, नायाब, विरल।
देह- वपु, शरीर, कलेवर, काया, तनु, मूर्ति।
दूध- क्षीर, पय, गोरस, पीयूष, दुग्ध।
दृढ़- तगड़ा, पुष्ट, मजबूत, पक्का।
द्वेष- विरोध, खार, दुश्मनी, शत्रुता, बैर।
देवता - अमर, देव, सुर, विवुध, आदित्य, निर्जर, गीर्वाण, त्रिदशक, अमर्त्य।
द्रव्य- वित्त, धन, अर्थ, सम्पदा, विभूति, दौलत, सम्पत्ति।
द्रोपदी- कृष्ण, पाञ्चाली, द्रुपदसुता, याज्ञसेनी।

(न)

नंगा- निर्वस्त्र, दिगम्बर, नग्न, खुला, अनावृत।
नक्षत्र- खद्योत, तारा, उडु, ऋक्ष, सितारा, तारक।
नदी - निझिरिणी, सरिता, तरंगिणी, पयस्विनी, तरनी, स्रोतस्विनी, लहरी, आपगा, निगंगा, तरिणी, कल्लोलिनी, सरी।
नमक- लवण, लोन, रामरस, नोन, नून।
नया - नवीन, नूतन, नव्य, अभिनव, आधुनिक, नव, अर्वाचीन।
नाम- बड़ाई, ख्याति, कीर्ति, यश, प्रसिद्धि, मशहूरी, शोहरत।
नारी- महिला, औरत, बनिता, रमणी, स्त्री, ललना, वामा।
नित्य - अमर, शाश्वत, अविनाशी, अमर्त्य, अनश्वर, सदा, सनातन, सर्वदा, सदैव, अहर्निश, प्रतिदिन, रोज, हमेशा।
निर्मल- साफ, शुद्ध, स्वच्छ, पवित्र, शुचि।
नियति- प्रारब्ध, भाग्य, विधि, भावी, दैव, होनी।
निष्ठा- श्रद्धा, विश्वास, आस्था, यकीन।
नुकसान- घाटा, क्षति, हानि, ह्रास, घटती, कमी।
नैसर्गिक- स्वाभाविक, प्राकृतिक, वास्तविक।
नौका - तरणी, नाव, डोगी, पतंग, जलयान, तरी, बेड़ा, नववाहन, नैया, जलपात्र।

(प)

पंक- दलदल, चहला, कीच, कर्दम, कीचड, गारा।
पक्षी - खग, विहग, पंछी, द्विज, अण्डज, विहंग, शकुनि, पतंग, परिन्दा, चिड़िया, पखेरू।
पछतावा- प्रायश्चित्त, पश्चाताप, ग्लानि, अनुताप, संताप।
पण्डित - विद्वान, विचरण, सुधी, कोविद, सुविज्ञ, बुध, ज्ञानी, धीर, मनीषी, प्राज्ञ।
पत्ता- पात, पत्र, छदन, दल, पर्ण, पल्लव।
पत्थर- प्रस्तर, संग, पाहन, शिला, पाषाण, अश्म।
पति - ईश, आर्यपुत्र, स्वामी, भर्ता, वल्लभ, भतरि, भरतार, बालम, नाथ, प्राणप्रिय, पालक, पिया।
पत्नी - दारा, भार्या, सहगामिनी, गृहिणी, वधू, प्राणप्रिय, अर्द्धांगिनी, वामांगी, वल्लभ, वामा, धरनी, प्रिय, संगिनी, तिय, कान्ता, कलत्र।
पवन - समीर, वायु, हवा, मारुत, प्रकम्पन, समीरण, वात, प्रभञ्जन, प्राण, बयार, पवमान, नभप्राण, मृगवाहन।
पर्वत - गिरि, भूधर, शैल, नग, भूमिधर, मेरु, महीधर, अचल, पहाड, टुंग, धराधर, भूभूत अद्रि।
पराग- पुष्परज, रंज, कुसुमराज, पुष्पधूलि।
परदा- ओट, आड़, छिपाव, आवरण, यवनिका, नेपथ्य।
परशुराम - जामदग्न्य, भृगुसुत, भार्गव, परशुधर, रेणुकातनय, भृगुनन्दन।
परिणाम- फल, अंजाम, नतीजा, निष्कर्ष, निष्पत्ति।
परिवर्तन- हेर-फेर, क्रान्ति, बदलाव, फेर-बदल, अदल-बदल, तब्दीली।
परिवार- कुनबा, कुटुम्ब, कुल, खानदान, घराना।
परोक्ष- ओझल, अप्रत्यक्ष, गुप्त, अगोचर, तिरोहित।
पल- क्षण, घड़ी, लमहा, घटी, दम, अंश, निमेष।
पवित्र- पुनीत, पावन, साफ, विशुद्ध, पाक, शुचि, शुद्ध, स्वच्छ।
पशु- चौपाया, जानवर, जन्तु, मवेशी, चतुष्पाद।
पागल- बावला, दीवाना, विक्षिप्त, उन्मत्त।
पान - नागरबेल, ताम्बूल, नागबल्ली, पर्णलता, सप्तशिला, नागिनीपत्र।
पार्वती- शिवा, उमा, गौरी, भवानी, गिरजा, गिरिराजकुमारी, सती, अम्बिका, शैलसुता, ईश्वरी, रुद्राणी, आर्या, सर्वमंगला, अपर्णा।
पुत्र - आत्मज, तनय, सुत, लड़का, बेटा, औरस, पूत, लाल, तनुज।
पुत्री- आत्मजा, तनया, लड़की, सुता, बेटा, दुहिता, तनुजा।
प्रकाश- छवि, प्रभा, द्युति, ज्योति, चमक, रोशनी, दीप्ति, उजाला, आलोक।
प्रख्यात- मशहूर, प्रसिद्ध, विख्यात, विश्रुत, नामवर, यशस्वी, नामी, लब्ध, प्रतिष्ठ, प्रतिष्ठित।
प्रणय- स्नेह, अनुरक्ति, प्रीति, प्रेम, अनुराग।
प्रभात- प्रातः, उषा, अरुणोदय, सुबह, सवेरा।
प्रसन्नता- आह्लाद, हर्ष, खुशी, प्रफुल्लता, आनन्द।
पृथ्वी- भूमि, भू, अचला, धरा, धरित्री, धरणी, वसुन्धरा, वसुधा, अवनि, मेदिनी, मही, जगती, क्षोणी, क्षिति, वसुमती, बीजप्रसु, ईला।
प्रेम- प्यार, मोहब्बत, स्नेह, अनुराग, रति, प्रीति, लाड-प्यार।

(फ)

फरजी- नकली, अव्यवस्थित, बनावटी, कृत्रिम, जाली।
फूल- कुसुम, सुमन, प्रसून, पुष्प, लतान्त, मंजरी, पुहुप।

(ब)

बन्दर- वानर, कपि, कपीश, हरि, शाखामृग, मर्कट, कीश।
बलराम - बलभद्र, बलदेव, हलधर, बलवीर, हलायुध, रोहिण्य, श्यामबन्ध, रेवतीरमण।
बहुत- प्रचुर, ज्यादा, प्रभुत, विपुल, इफरात, अधिक, अनेक।
बहेलिया- शिकारी, अहेरी, आखेटक, व्याघ्र, लुब्धक।
बाण - तोमर, तीर, विशिख, शिलीमुख, नाराच, शर, इषु, सायक, आशुग।
बादल - घन, मेघ, नीरद, वारिद, जलधर, वारिधर, पयोद, अम्बद, पयोधर।
बरसात- पावस, बारिश, वृष्टि, वर्षा, मेह, बरखा।
बाल- केश, कच, चिकुर, शिरोरूह, शिरोज, चल, कुन्तल।
बिजली - चपला, विद्युत, चंचला, सौदामिनी, तड़ित, दामिनी, छटा, चम्पा, अशिन, धनवल्ली, बीजुरी, क्षणप्रभा, कांचनवली।
बुद्धि- प्रज्ञा, जेहन, मेधा, समझ, अक्ल, गति।
बुद्ध - जड़, मूर्ख, नासमझ, भोंदू, गोबर, मन्दगति, नादान, उल्लू, बुद्धिहीन, बेअक्ल।
ब्रह्मा - स्वयंभू, पितामह, चतुरानन, बिरंचि, विधना, विधि, स्रष्टा, प्रजापति, कमलासन, हिरण्यगर्भ, हंसवाहन, आत्मभू, लोकेश, कर्तार, नाभिजन्मा, सदानन्द, गिरापति।
बाह्याण- विप्र, द्विज, भूसुर, भूदेव, महीसुर।

(भ)

भारत- जम्बूद्वीप, भारतखण्ड, हिन्दुस्तान, आर्यावर्त।
भूमिका - प्रस्तावना, मुखबन्ध, आमुख, प्राक्कथन, पूर्व, पीठिका, दोशब्द, लेखकीय।
भ्रमर - मधुप, मधुकर, अलि, भृंग, भौरा, षट्पद, मधुराज, मधुमक्षी, द्विरेफ।

(म)

मन्दिर- देवालय, देवस्थान, देहगृह, ईशगृह।
मंगल- कल्याण, हित, भलाई, उपकार, भला, नेकी, परोपकार।
मनोहर - मनोरम, चित्ताकर्षक, लुभावन, मनहर, मंजुल।
मधु- शहद, वसन्तऋतु, कुसुमासव, मकरन्द, पुष्पासव, माक्षिक।
मछली- मत्स्य, मीन, शफरी, क्षष, जल-जीवन।
मत- सम्मति, मन्तव्य, धारणा, राय, विचार।
मदिरा - मधु, आसव, दारू, शराब, सोम, मद्य, मध्वासव, सुरा, वारुषी, हाला, माध्वाक, माध्विजा।
महक- खुशबू, सुगन्ध, परिमल, वास, सुवास।
माँ - माता, मातु, मातृ, मातरि, मैया, महतारी, अम्ब, जननी, जनपित्री, धात्री, प्रसू, अम्बिका, जन्मदात्री, अम्मा, माई।
मित्र- सखा, मीत, दोस्त, पार, हमदम, सुहृद।
मुख- मुँह, वदन, आनन, चेहरा।
मूर्ख - अज्ञानी, मूढ़, जड़, गँवार, निर्बुद्धि।
मुर्गा- अरुणशिखा, ताम्रचूड़, कुक्कुट, चरणायुध।
मुनि- तापस, योगि, तपस्वी, कती, साधु, ऋषि, संत।
मृत्यु- ईन्तकाल, अन्तकाल, देहान्त, प्राणान्त, निधन, मौत, देहावसान, स्वर्गवास, शरीरान्त।

मेढक - दादुर, शालूक, शालू, वर्षा-भू, चातक, मण्डूक वर्षाप्रिय, दर्दुर।

मैना- कलहप्रिया, मदन, चित्रनेत्रा, चित्राक्षी, सारिका।

मोती- शक्तिज, मुक्ता, स्वातिसुत, सीपिज, मौक्तिक।

मोर - केकी, मयूर, कल्पयी, शिखी, सिखण्डी, बहिं, ध्वजी, नीलकण्ठ, भुजंगारि, सारंग, हरि, शिव सतु-वाहन।

मोक्ष- मुक्ति, निर्वाण, कैवल्य, अपवर्ग, परमपद, परमगति, परमधाम, सद्गति अमृतत्व।

मार्ग- डगर, पथ, राह, रास्ता, पंथ, सड़क।

(य)

यम - सूर्यपुत्र, जीवनपति, अन्तक, धर्मराज, शमन, कीनास, कतान्त, जीविनेश, काल, मृत्युपति, यमराज, यमुनाभ्राता, दण्डधर, श्राध्ददेव।

यमुना - जमुना, कालिन्दी, अर्कजा, रवितनया, कृष्णा, कालगंगा, सूर्यसुता, भानुजा, तरणितनूजा, अर्कसुता, यमभगिनी।

युद्ध - जंग, रण, समर, लड़ाई, संग्राम।

युवती- श्यामा, सुन्दरी, श्यामा, किशोरी, तरुणी, नवयौवना, नवोदा, यौवनवती, रमणी।

(र)

रक्त- लोहू, लौहित, शोणित, खून, रुधिर, लहू।

रावण - दशशीश, दशकन्धर, दशानन, लंकेश, लंकाधिपति, दैत्येन्द्र, दशकण्ठ, दशवदन, राक्षसराज।

राजा - नृप, नृपति, भूप, महीप, नरेश, नरपति, भूपति, राव, नरेन्द्र, सम्राट, महीपति, भूस्वामी, पृथ्वीनाथ, पृथ्वीपाल, पृथ्वीपति, भूपाल।

रात - रात्रि, रैन, रजनी, विभा, निशा, निशीथ, क्षपा, यामिनी, विभावरी, शर्वरी, तमी, त्रियासा, तमिस्रा, क्षणदा, दोषा।

राधा - राधिका, वृषभानुजा, हरिप्रिया, ब्रजरानी, वृषभानुदुलारी, सर्वेश्वरी।

रामचन्द्र - राघव, रघुवीर, अवधेश, अवधनरेश, सीतापति, रघुनन्दन, रघुपति, पुरुषोत्तम, कमलनयन।

राही- राहगीर, बटोही, पथिक, यात्री, मुसाफिर।

(ल)

लक्ष्मण - शेषावतार, लखन, रामानुज, सौमित्र, अनन्त, शेष, सुमित्रापुत्र।

लक्ष्मी - कमला, श्री, रमा, पद्मा, पद्मासना, इन्दिरा, समुद्रजा, हरिप्रिया, क्षीरोद, भार्गवी, सिन्धुसुता।

लज्जा- हया, शर्म, ब्रीड़ा, संकोच, लाज।

लता- बल्ली, बेल, बल्लरी, लतिका।

लहर- तरंग, हिलोर, वीचि, लहरी, उर्मि, वेग, प्रवाह।

लाल- रक्ताभ, सुख, रक्तिम, अरुण, सुर्प, लोहित।

लालची- पेटू, औदारिक, बहुत खाने वाला।

लोहा- आयस, सार, लौह, फौलाद, अश्मसार।

(व)

वर- उत्तम, श्रेष्ठ मुख्य, सर्वोपरि, प्रधान, उत्कृष्ट।

वर्ग- कोटि, समुदाय, सम्प्रदाय, समूह, श्रेणी, जमात।

वर्णन- वृत्तान्त, विवेचन, निरूपण, चित्रण, बयान।

विगत- अतीत, बीता, व्यतीत, गया हुआ।

विद्यालय - मदरसा, पाठशाला, स्कूल, शिक्षणसंस्थान, विद्यामन्दिर, शिक्षालय।

विष्णु - अच्युत, चक्रपाणि, गरुडध्वज, जनार्दन, विश्वम्भर, मुकुन्द, नारायण, ऋषिकेश, दामोदर, केशव, माधव, गोविन्द, लक्ष्मीपति, विधु, जलाशयी, विश्वरूप, वनमाली, उपेन्द्र, पीताम्बर, चतुर्भुज, मधुरिपु, रमापति, रमेश, चक्रधर, गदाधर, मुरारी, शंखधर, इन्दिरापति।

विपन्न- पीड़ित, दुःखी, विपत्तिग्रस्त, मथित, आर्त।

विवाह - पाणिग्रहण, ब्याह, परिणाम, शादी, गठबन्धन, निकाह, गठजोड़।

विधवा- अनाथा, पतिहीना, रौंड, पतिविहीना, पतिरहिता।

विमुख- अनासक्त, उदासीन, तटस्थ, बेलाग, विरक्त, निरक्षेप।

विष- माहुर, गरल, जहर, कालकूट, हलाहल।

वीर्य- धातु, शुक्र, जीवन, सार, तेज, बीज।

वृक्ष- पादप, शाखी, विटप, द्रुम, रूख, पेड़, गाँछ।

वेश्या - गणिका, सदासुहागिन, वारांगना, पतुरिया, रण्डी, तवायफ, चंचला।

वैश्य - वणिक, बनिया, व्यापारी, लाला, आपणिक, सौदागर वनिकया।

(श)

शंकर - उमापति, शिव, शम्भु, भोलेनाथ, त्रिपुरारि, महादेव, महेश, देवाधिदेव, कैलाशपति, मदनारि, चन्द्रमौलि।

शरण- त्राण, आश्रय, पनाह, रक्षा, संश्रय।

शत्रु- रिपु, बैरी, दुश्मन, अरि, विपक्षी, प्रतिपक्षी, प्रतिद्वन्द्वी।

शालीन- भद्र, सौम्य, शिष्ट, सलज्ज, नम्र, विनम्र।

शीघ्र- अविलम्ब, तुरन्त, जल्दी, त्वरित, तत्क्षण, क्षिप्र, आशु।

शिक्षा- प्रशिक्षण, तामील, उपदेश, नसीहत, ज्ञान, सीख।

(स)

संध्या - दिनावसान, निशारम्भ, दिनान्त, सायंकाल, गोधूलि, प्रदोषकाल, साँझ।

संन्यासी- दण्डी, बैरागी, विरत, त्यागी, परिव्राजक।

सफल- कामयाब, कृतार्थ, फलवान, कृतकृत्य, फलीभूत।

सफेद - शुक्ल, धवल, उजला, धौला, श्वेत, शुभ्र, गौर, सित, अवदात, उज्ज्वल।

समान- तुल्य, बराबर, तत्सम, तद्रूप, अनुरूप, सदृश, सम।

समीक्षा- निरूपण, आलोचना, विवेचना, समालोचना मीमांशा।

समुद्र - सागर, सिन्धु, जलधि, उदधि, पारावार, नदीश, पयोनिधि, पयोधि, रत्नाकर, अर्णव, नीरनिधि, अब्धि, वारिधि, जलधाम, नीरधि, टोपनिधि, वारीश।

सरस्वती - शारदा, भारती, वीणा, गिरा, भाषा, ब्राह्मी, वीणापति, वागीश, महाश्वेता, निधात्री, वागेश्वरी, वागिवधात्री, हंसवाहिनी, वीणावादिनी।

सर्प - भुजंग, अहि, मणिधर, फणिधर, व्याल, विषधर, फणी, उरग, पन्नग, नाग, सांप, सरीसृप।

साफ - उजला, स्वच्छ, निर्मल, उज्ज्वल, पवित्र, शुक्ल, श्वेत, शुचि, धवल, सिति, गौर।

सिंह - हरि, शार्दूल, केहरि, केशरी, मृगराज, मृगेन्द्र, वनराज, व्याघ्र, केशी, पुण्डरीक, नखायुध, वनहरि, मृगारि, शेर, बाहुबल, नाहर, चित्रक।

सीता - भूभिजा, वैदेही, जनककिशोरी, जनकतनया, जानकी, रामप्रिया, जनकसुता, जगजननी।

सीमित- परिसीमित, मर्यादित, निश्चित, परिमित, निर्धारित।

सुन्दर- रूपसी, सुभागा, रूपराशि, सुदर्शना, छबीली, हसीना।

सुअर- वाराह, वराह, सूकर।

सोना - कंचन, स्वर्ण, हाटक, कनक, हिरण्य, हेम, जातरूप, चामीकर, सुवर्ण, पुष्कल, जातक, रूक्म, तामरस।

सूर्य - भानु, रवि, दिनकर, दिवाकर, भास्कर, प्रभाकर, सविता, पतंग, आदित्य, अर्क, कमलबन्धु, दिनमणि, मारीचिमाली, चण्डाशु, हंस, तेजोराशि।

स्तन- उरस, कुच, छाती, उरोज।

स्वर्ग - देवलोक, द्यौ, सुरलोक, इन्द्रपुरी, दिव, सुरपुर, नाक, बैकुण्ठ, परलोक, परमधाम।

(ह)

हंस- मराल, मुक्तभुक, सरस्वतीवाहन।

हनुमान - पवनकुमार, पवनसुत, महावीर, रामदूत, मारुततनय, बंब्रागी, मारुतिनन्दन, आंजनेय, कपीश, पवनपुत्र, अंजनिपुत्र, केशरीनन्दन, बजरंगबली, कपीश्वर।

हाथी - गज, हस्ती, करी, कुंजर, द्विरद, नाग, दन्ती, कुम्भी, गजेन्द्र, मतंग, वितुण्ड, द्विप, गयन्द।

हिमालय - नगराज, हिमपति, शैलेन्द्र, नगपति, हिमाद्रि, हिमांचल, गिरिराज, हिमगिरि।

हिरन- सांग, मृग, हरिषा, सुरभी, कुरंग, चितल, बारहसीगा।

अनेकार्थक शब्द

ऐसे शब्द जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं, अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं। हिन्दी भाषा में व्यंग्यार्थ एवं गागर में सागर भरने की अद्वितीय शक्ति इन्हीं शब्दों के प्रयोग से आती है। प्रायः काव्य एवं गूढार्थपरक वक्तव्य में अनेकार्थी शब्दों का प्रयोग दर्शनीय होता है। कुछ ऐसे ही महत्वपूर्ण अनेकार्थी शब्द एवं उनके अर्थ निम्नलिखित हैं-

अर्क - सूर्य, मदार का पौधा, इन्द्र, स्फटिक, काड़ा।

अंक - चिह्न, अक्षर, भाग्य, धब्बा, परिच्छेद, नाटक का अध्याय, पत्रिका का नम्बर, गोंद, पाय, गिनती की संख्या।

अंकुश - दबाव, नियंत्रण।

अकूर - कृष्ण के चाचा, कोमल स्वभाव वाला, मित्र।

अज - मेष राशि, ब्रह्मा, बकरा, दशरथ के पिता।

अमृत - सुधा, पारा, दूध, गिलोय, जल, मृत्यु रहित।

अपवाद- कलंक, दोष, खण्डन।

अपेक्षा - आवश्यकता, बनिस्वत, आशा, इच्छा।

अक्षत - कच्चा चावल, पूरा, समूचा।

अक्षर - मोक्ष, सत्य, वर्ण, आकाश, नित्य, नाशरहित।

अम्बर - कपास, आकाश, अभ्रक, मेघ, वस्त्र।

अर्थ - इन्द्रिय विषयक, माने, धन, मतलब, अभिप्राय।

अनर्थ - अर्थ का अभाव, अशुभ घटना, अनुचित अर्थ, विपत्ति।

अब्ज - कमल, शंख, चन्द्रमा, कपूर।

अबोध - मूर्ख, दुरूह, दुर्बोध, ना समझ।

अंत - मृत्यु, समाप्ति, रहस्य, सिरा।

अन्तरंग- अन्दर का, घनिष्ठ, गुप्त।

अभिधान- शब्दकोष, उक्ति, नाम, पदनाम।

अंचल - प्रदेश, सिरा, साड़ी का पल्लू।

अकाल- कमी, अभाव, असमय, दुर्भिक्ष।

अमल - नशा-पानी, कार्यान्वयन, मलरहित।
अन्न - अनाज, खाद्य पदार्थ।
अध्यक्ष - विभाग का मुखिया, प्रभारी, सभापति।
अतिरिक्त - भिन्न, आलावा, फालतू।
अशुद्ध - गंदा, गलत, अपवित्र।
अवली - माला, पंक्ति, झुण्ड, श्रेणी।
असली - युद्ध, वास्तविक, मौलिक।
अलग - भिन्न, न लगा हुआ, पृथक्, अछूता।
अंबुज - बेत, ब्रह्मा, कमल, शंख, वज्र।
अंभोज - कपूर, चन्द्रमा, सारस, कमल, शंख।
अयन - समय, अंश, काल, गति, आश्रम, गति, स्थान।
अवैध - नाजायज, जारज, गैर कानूनी।
अर्ध - जलदान, भेंट, घोड़ा, मूल्य।
अलि - कोपल, मदिरा, कुत्ता, बिच्छू, कौआ, भौंरा।
अधर - आकाश, अनाधार, होंठ।
अचल - पहाड़, निश्चल, अटल।
अवतंस - टीका, भूषण, श्रेष्ठ व्यक्ति, थाली, दूल्हा, टीका।
अनंता - पार्वती, दूब, पीपर, पृथ्वी।
अहि - सूर्य, कष्ट, राहु, जल, एक वर्ण, साँप।
अग्र - पहले, अगुवा, मुख्य, सिरा, श्रेष्ठ, आगे।
अवरुद्ध - ढका हुआ, बंद, गुप्त, रूका हुआ।
अरुण - रक्तवर्ण, सूर्य, कुमकुम, सिंदूर।
आम - फल आम, सर्वसाधारण, मामूली।
आगम - ज्ञान, शास्त्र, आना।
आब - चमक, छवि, शोभा, पानी, इज्जत।
आन - क्षण, शपथ, टेक, स्वाभिमान, दूसरा।
आली - पंक्ति, गीला, मान्यवर, सखी।
आतुर - उतावला, कमजोर, दुःखी, उत्सुक।
आश्रम - आश्रय-स्थान, जीवन के चार अंगों में से एक, तपोभूमि।
आत्मा - ब्रह्मा, सूर्य, स्वरूप, चरमात्मा अग्नि।
आँख - दृष्टि, निगरानी, नेत्र।
आकर - स्रोत, कोष, पहुँचकर, खान।
आपत्ति - एतराज, प्रश्न, विपत्ति।
इष्ट - समीपी, ध्येय, परमात्मा।
इतर - अन्त्यज, नीच, चरस, अन्य।
इन्द्र - देवताओं का राजा, ज्येष्ठ नक्षत्र, स्वामी, श्रेष्ठ बड़ा।
इड़ा - गाय, वाणी, स्तुति, दुर्गा, पृथ्वी, अन्न, स्वर्ण।
इन्दु - कपूर, चन्द्रमा।
ईश - राजा, ईश्वर, आर्द्रा-नक्षत्र, एक उपनिषद्, पारा स्वामी, कुबेर, पति।
ईषन - देखना, वासना, दृष्टि, चाह।
ईशान - महादेव, पूर्व और उत्तर मध्य का कोण, अधिपति।
ईति - आपदा, पीड़ा, विघ्न-बाधा।
ईक्षण - विवेचन, जाँच, दर्शन, विचार, दृष्टि।
उतरना - ठहरना, नीचे आना, मद्धिम पड़ना (रंग)।
उत्तर - उत्तर-दिशा, बाद का (गणित में फल), जवाब।
उग्र - क्रूर, प्रचण्ड, गरम, सूर्य, भयानक, तीव्र।
उगना - निकल आना, प्रकट होना, उदय होना, पैदा होना।

उच्च - उठा हुआ, जोर का, बड़ा, श्रेष्ठ।
उत्पात - दंगा, हो-हल्ला, शरारत।
उर्मि - पीड़ा, दुःख, शिकन, लहर।
उमा - हल्दी, कान्ति, कीर्ति, आलसी, पार्वती, दुर्गा।
उपस्कर - अलंकार, सामान, संयंत्र।
उल्लास - हर्ष, आनन्द, प्रकाश, सर्ग, पर्व।
ऊना - न्यून, सुस्त, दुःखी, तुच्छ।
ऊपर - ऊँची जगह, ऊँची श्रेणी में, प्रत्यक्ष, आधार या सहारे पर।
ऊपरी - दिखावटी, फालतू, ऊपर की।
ऋतु - यथार्थ, वृत्ति-विशेष, मौसम, जल, सत्य, मोक्ष।
ऋजु - सुगम, प्रसन्न, सज्जन, सीधा, अनुकूल।
ऋण - घटाना, घटाने का चिह्न (-) कर्ज, दायित्व, उपकार।
ऋक्ष - भालू, तारा, शौनक वृक्ष, नक्षत्र।
एक - समान, केवल, अनोखा, अनिश्चित।
एका - सहमति, सम्मति, एकता, दुर्गा।
एक्का - एक घोड़े की सवारी, ताश का एक बूटी वाला पत्ता।
ऐल - इला का पुत्र, मंगल ग्रह, बहुतायत, बाढ़ कोलाहल।
ऐरावत - इन्द्रधनुष, एक नाग का नाम, बिजली, इन्द्र का हाथी।
ओक - ठिकाना, नक्षत्रों का समूह, घर।
ओल - गीला, मनौती, आड़, गोद, शरण, सूरन।
और - भिन्न, विशेष, फिर अन्य।
कर - हाथ, टैक्स, किरण, सूँड़।
कनक - धतूरा, सोना, गेहूँ, पलाश, नागकेशर, खजूर, टेसू, आटा।
कसरत - अधिकता, व्यायाम।
कमल - उस फूल का पौधा, जल, ताँबा, एक फूल, एक मासपिण्ड।
कलम - कूँची, पेड़ पौधों की हरी लकड़ी, लेखनी, कनपटी के बाल।
कटक - शिविर, कड़ा, चटाई, शृंखला, सेना, समूह।
करीब - लगभग, सगा, समीप।
कला - अंश, कौशल, शरीर की धातु, आर्ट।
कल - बीता दिन, आनेवाला दिन, मशीन, सुख।
काम - कार्य, कामवासना, नौकरी, कढ़ाई आदि।
काल - यमराज, समय, मौत।
काटना - रद्द करना, कटाई करना, डंक मारना, अलग करना।
कायदा - रिवाज, तरीका, उर्दू का बालबोध, नियम।
केतु - पुच्छल तारा, ध्वज, एक ग्रह।
केवल - निरा, विशुद्ध ज्ञान, एक मात्र।
कुशल - प्रशिक्षित, चतुर, खैरियत।
कुंभ - प्रयागराज का एक पर्व, घड़ा, हाथी के मस्तक के दोनों ओर का भाग।
कुंडली - गेंदुरी, इमरती, गोल रचना।
कूट - नोक, ढेर, जाली, रहस्य, झूठा, चोटी।
कील - नाक का एक गहना, फोड़ा का अंकुर, खंभा, किला, मेख।
किनारा - हाशिया, पार्श्व, तट, सिरा।
कर्तन - काटना, काटना, कतरना।
कंज - अमृत, ब्रह्मा, कमल, केश।

कंस	- सुराही, श्री कृष्ण का मामा, प्याला, मँजीरा।	चाक	- चक्की, तेल पेरने का कोल्हू, बवण्डर, गोल वस्तु, पानी की वस्तु।
कर्म	- भाग्य, क्रिया, मृतक-संस्कार।	चरण	- किसी चीज का चौथाई भाग, काम, गोत्र, किसी छन्द का एक पद, पैर।
कोरा	- गुणरहित (व्यक्ति), अलिखित (कागज), अप्रयुक्त, बिल्कुल नया।	छन्द	- बहाना, छल, मत, काव्य।
कोट	- समूह, पहनने का एक कपड़ा, गढ़।	छादन	- पर्दा/परदा, छप्पर, वस्त्र।
कोष्ठ	- ब्रैकेट, कोठा, पेट।	छुद्र	- नीच, थोड़ा, छोटा, कंजूस।
कोश	- तलवार की म्यान, थैली, संचित धन डिब्बा, अण्डा, समूह, शब्द कोश (एक ग्रंथ)।	जलना	- ईर्ष्या करना, आग ललना, शरीर तपना, भस्म हो जाना।
क्षुद्र	- थोड़ा, छोटा, अधम, कंजूस, नीच।	जलज	- मोती, चन्द्रमा, शंख, सिवार, कमल।
खर	- गधा, एक राक्षस का नाम, दुष्ट, तिनका, प्रखर।	जड़	- मूर्ख, अचेतन, चेष्टाहीन, शीतल, छठी, नींव, मूल।
खग	- वान, पक्षी, तारा।	जरा	- जल, थोड़ा, बुढ़ापा।
खंड	- मंजिल/तल्ला, प्रदेश, टुकड़ा, भाग।	जन	- गंवार, अनुचर, भवन, मजदूरी, प्रजा, लोग।
खल	- खरल, धतूरा, दुष्ट तलछट, चुगलखोर।	जीव	- आत्मा, जीविका, प्राणी, वृहस्पति, जीवात्मा।
खराब	- न चालू, बरबाद/नष्ट, गंदा बुरा।	जीवन	- प्राण, जिन्दगी, वायु, जल।
खत	- पत्र, कनपटी के बाल, लिखाई।	जलधर	- जलाशय, बादल, समुद्र।
खाली	- जो व्यस्त न हो, बेकार, अकेले, रीता।	जोड़	- गाँव, योग, मेल।
खोर	- गली, दोष, तिलक।	जुड़ना	- सम्मिलित होना, जोता जाना, जुटना।
खीर	- पायस, दूध और चावल से बना खाद्य पदार्थ।	ज्येष्ठ	- श्रेष्ठ, पति का बड़ा भाई, जेठ का महीना, बड़ा।
गठीला	- हष्ट-पुष्ट, स्वस्थ, गाँठों वाला।	झंझरी	- छननी, झरोखा, जाली।
गण	- सेना का एक भाग, व्याकरण में धातुओं और शब्दों के समूह, दूत, सेवक, अनुचर, श्रेणी, समूह, पिंगल में तीन वर्णों का समूह।	झाड़ना	- झाड़-फूँक (टोना) करना, झाड़न से धूल हटाना फटकारना, झटकना।
गहन	- गहरा, दुर्गम, दुरूह, जटिल, घना।	झाड़	- एक आतिशबाजी, डाट-फटकार, पौधों का एक झुरमुट, गुच्छा।
गति	- हालत, रीति, स्पन्दन, वेश, थाल, मोक्ष।	झोंका	- झटका, थोड़ी नींद, वायु, लहरी, वर्षा का थपेड़ा।
ग्रह	- लेना, अनुग्रह, कृपा, ग्रहण, राहु, तारे, नौ की संख्याय।	ठाँडा	- मचान, चौपायों का झुण्ड, कुटुंब, बंजारों का सामान।
गुरु	- शिक्षक, भारी, मन्त्रदाता, दो मात्राओं वाला वर्ण, (दीर्घ वर्ण) आचार्य, बड़ा।	टीका	- धब्बा, व्याख्या, बदनामी का टीका, तिलक, फलदान।
गला	- गरदन, आवाज, निगलने का अंग।	टेक	- सहारा, आदत, साधुओं की अधारी, गीत का छोटा पद आग्रह।
गंदा	- अश्लील, बुरा, मैला, अशुद्ध, घृणित।	ठहरना	- टिकना, शांत हो जाना, रुकना, पक्का होना।
गंध	- प्रणय, वास, आमोद, चन्दन, लेश।	ठस	- घनी बुनावट वाला, आलसी, झूठा, कंजूस, ठोस।
गिरा	- वाक्शक्ति, सरस्वती, जिह्वा, वाणी।	ठाट	- दिखावट, ढंग, ढाँचा, शृंगार, सामग्री, समूह युक्ति।
घड़ी	- समय बताने वाला यन्त्र, क्षण, 24 मिनट का समय।	डबस	- चिन्ता, तैयारी, रक्षण, व्यवस्था।
घन	- बादल, जिसकी लम्बाई-चौड़ाई सभी के बराबर हो, घन्टा, भारी, हथौड़ा।	डण्ड	- डण्डा, छड़ी, घाटा, सजा।
घट	- घड़ा, कम, शरीर।	ढलना	- छ़ास की ओर बढ़ना, साँचे में बनाया जाना, उड़ेल जाना, ढलान की ओर जाना।
घात	- हत्या, अवसर, दाँव, गुणनफल, चोट।	ढाल	- उतार, ढंग, तलवार, रक्षक, अस्त्र, चर्म, आड़।
घाट	- किसी नदी या जलाशय का वह स्थान जहाँ लोग पानी भरते और नहाते हैं, पहाड़, चाल-ढाल, तलवार की धार, पहाड़ी मार्ग, कम।	तंग	- पहनने में छोटा, सँकरा, परेशान।
घोड़ा	- बंदूक का खटका, शतरंज का एक मोहरा, एक पशु।	तरंग	- स्वर लहरी, लहर, उमंग।
घुटना	- साँस लेने में कठिनाई, पाँव का मध्य भाग, कष्ट सहना।	तरी	- तर (गीला) होने की अवस्था, शोरबा, कपड़े का छोर, नौका।
चपला	- लक्ष्मी, चंचल स्त्री, बिजली।	तलब	- आवश्यकता, वेतन, खोज, चाह, बुलावा।
चश्मा	- स्रोत, ऐनक।	तारक	- तारने वाला, आँख की पुतली, तारा।
चक्र	- चक्कर, घेरा, मंडल, चाक, पहिया।	तात	- गुरु, भाई, बड़ा, पिता, पूज्य, मित्र।
चन्द्र	- एक की संख्या, कपूर, जल, भूगोल का द्वीप, चन्द्रमा, सोना, हीरा।	तत्व	- यथार्थ, ब्रह्मा, सार, मूल।
चमकना	- बिगड़ना, प्रकाश देना, बिदकना, वृद्धि पर होना।	ताव	- गरमी, कष्ट, कागज का पूरा टुकड़ा, ताप, आवेश
चाल	- रफ्तार, आहट।	तम	- अन्धकार, सूअर, मोह, अज्ञान, क्रोध, कालिख, राहु, पाप।
		तक्षक	- बढ़ई, सूत्रधार, सर्प विशेष, विश्वकर्मा।

तुला - एक राशि, तौल, तुलना, तराजू।
थल - स्थान, भूमि, बाघ की माँद, रेगिस्तान, ऊँची धरती।
थान - निवास स्थान, कपड़े का पूरा टुकड़ा (गट्टर) ठिकाना।
थामना - सँभालना, गति रोकना, सहारा देना।
दल - पत्ता, फूल की पंखुड़ी, मंडली, सेना, पार्टी, झुण्ड, समूह।
दक्ष - ब्रह्मा के पुत्र का नाम, चतुर।
दण्ड - सजा, डण्डा, यम, अस्त्र, समय का विभेद।
द्विज - प्राणी, ब्राह्मण, पक्षी, चन्द्रमा, तारा, दाँत, अण्डज।
द्रोण - दोना, कौआ, द्रोणाचार्य, बिच्छू, लकड़ी का रथ, एक पर्वत विशेष।
दारू - शराब, बारूद, दवा।
दस्ता - सैनिक दल, चौबीस ताव का कागज, हथ्या।
दाम - मूल्य, रस्सी, धन।
धन - कुबेर, सम्पत्ति, गणित में जोड़ का चिह्न, जमा, योग, मूल, पूँजी।
धवल - सफेद, निर्मल, उजला, निष्कलंक, साफ।
धनञ्जय - चित्रक, अर्जुन का नाम, विष्णु, वृक्ष।
धर्म - स्वभाव, पुण्य, सहज, वृत्ति, प्रकृति, ईमान, कर्तव्य, सम्प्रदाय, सहज, न्याय।
धात्री - पृथ्वी, उपमाता, माता, धाय, आँवला।
धार - प्रवाह, पैना किनारा (चाकू का), धारा।
धर्मराज - यमराज, युधिष्ठिर, न्यायाधीश, धर्म का पालन करने वाला राजा।
ध्रुव - पर्वत, एक तारा का नाम, पर्वत, स्थिर, निश्चित उत्तानपाद।
नकली - बनावटी, झूठा, काल्पनिक।
नग - सूर्य, सर्प, संख्या, अदद, वृक्ष, पर्वत, रत्न।
नाल - डंडी, बन्दूक की नली, अर्धचन्द्राकार, नली।
नागर - सोंठ, नागरिक, गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति।
नायक - छोटा सेनाधिकारी, नाटक का मुख्य पात्र, मुखिया, सेनापति।
निष्कर्ष - अंतिम परिणाम, सिद्धान्त, सारांश, निश्चय।
नीलकंठ - शिव, एक पक्षी विशेष, मोर, जिसके कण्ठ और डैने नीले होते हैं।
नाका - चौकी, थाना, प्रवेश द्वारा, सुई का छेद।
नेपथ्य - रंगमंच का पिछला भाग जहाँ रंगमंच के पात्र सजते हैं, वेशभूषा।
न्यास - त्याग, ट्रस्ट, धरोहर, भेंट, उपस्थित करना।
पद - छंद का चरण, ओहदा, पैर, वाक्यांश, निशान, किरण, प्रदेश, शब्द अधिकार- स्थान।
पतंग - पक्षी, पतिंगा, कनकौआ, शरीर, सूर्य।
प्यार और प्रीति - प्यार और प्रीति शब्दों का प्रयोग सामाजिक और शृंगारिक दोनों क्षेत्रों में होता है, जिसमें अनुराग और स्नेह दोनों के तत्त्व होते हैं।
पत्र - पंख, किसी वृक्ष का पत्ता, समाचार पत्र, लिखा हुआ कागज चिट्ठी।
पक्ष - पार्श्व, ओर, पंख, पार्टी, दल, पन्द्रह दिनों की अवधि (पखवारा) निमित्त, टीर में लगा हुआ पर।
पटरी - काठ का छोटा पटरा, पैदल पथ, लिखने की तख्ती, रेलगाड़ी की लाइन।

पयोधर - स्तन, बादल, नागरमोथा, तालाब, कसेरु, पर्वत।
पय - अन्न, दूध, पानी।
पानी - चमक, इज्जत, जल, जज्जा, स्वाभिमान, वर्षा।
पार्थिव - मिट्टी का शिवलिंग, मिट्टी का बना हुआ, पृथ्वी का राजसी।
पारावार - दोनों ओर का तट, हद, समुद्र, सीमा, आर-पार।
परिकर - कमरबन्द, नौकर-चाकर, अनुयायियों का दल विवेक, समूह।
पंचानन - शिव, प्रकांड विद्वान, पाँचमुखों वाला सिंह।
पर्चा - कागज, प्रश्नपत्र, अखबार।
पात्र - नदी का पाट, कहानी का व्यक्ति, योग्य, बर्तन।
पार्श्व - क्षेत्र का अंग, पक्ष, हाशिया, बगल, पंजर।
पल्ला - दिशा, कपड़े का छोर, आँचल, किवाड़।
पुष्कर - कमल, पानी, सूर्य, युद्ध, तालाब, मद।
पालि - गाँव, एक प्रसिद्ध भाषा, पंक्ति, सीमा।
प्रत्यय - आवश्यकता, विचार, व्याख्या, विश्वास।
पैदा - अर्जित, प्राप्त, घटित, प्रकट, उत्पन्न।
प्रभाव - दबाव, महिमा, सामर्थ्य, असर।
फल - मेवा, लाभ, कर्मभोग, शास्त्र का अग्रभाग, परिणाम।
फूलना - पुष्पित होना, रूठना, बहुत प्रसन्न होना, घमंड करना।
बल - सेना, सहारा, मरोड़, शक्ति, चक्कर।
बहार - आनन्द, रोचक, एक राग विशेष, बसन्त ऋतु।
बदना - बुझना, अधिक होना, विस्तार, उन्नत होना।
बंसी - बाँसुरी, मछली, फसाने का काँटा।
बलि - राजा, बलिदान, उपहार, चढ़ावा, कर, मालगुजारी।
बौराना - विवेक अथवा बुद्धि खोना, पागल हो जाना।
बिजली - तड़ित, कान का एक गहना, विद्युत।
भगवान - ऐश्वर्यशाली, पूज्य, ईश्वर, महापुरुष।
भाव - प्रेम, अभिप्राय, ढंग, दर अस्तित्व, मुखाकृति, विचार, वृद्धा।
भोग - कब्जा, विलास, सुखानुभव, कर्मों का फल।
भेद - फूट, छेदन, छुपा हुआ, अंतर, रहस्य।
भूत - बीता काल, शरीर के पंचभूत, अतीत, प्रेत।
मंत्र - जादू जैसा वाक्य, सलाह, राय, वेद का श्लोक।
मर्त्य - मनुष्य, पृथ्वी, शरीर, मरने वाला।
मधु - मदिरा, शहद, मीठा, अमृत, फूल का रस, शराब, चैत्रमास बसन्त ऋतु।
मान - नाप-तौल, अभिमान, घमंड, माप, इज्जत।
मंडल - भूखंड, डिविजन, चक्कर, वृत्त, सूर्य चन्द्रमा का घेरा।
महीधर - शेषनाग, एक वर्णिक छन्द, पर्वत।
मानस - मन, दूत, मन से उत्पन्न, मानसरोवर, मनुष्य।
मिलाना - तुलना करना, जोड़ना, सटाना, भेंट अथवा, परिचय करना।
मूल - जड़, पूँजी, कंद, नींव, आरम्भ का भाग, एक नक्षत्र।
मूक - गूंगा, अवाक्, चुप, विवश।
मद - कश्टूरी, नशा, मद्य, अत्यधिक, मतवाला, हर्ष।
मुद्रा - मोहर, अँगूठी, चिह्न आकृति, सिक्का।
युक्त - नियुक्त, संयुक्त, जुड़ा हुआ, मिश्रित।
युक्ति - दलील, प्रथा, नीति, तरकीब, योग।

योग	- जोड़, मन की साधना, मेल, शुभकाल, लगाव।
रस	- स्वाद, शरबत, धातु का रस्म, सन्त, निचोड़, उमंग, प्रेम।
रंग	- मन की उमंग, प्रभाव, रोब, शोभा, मनोविनोद, वर्ण, ढंग।
रसाल	- मीठा, स्वादिष्ट, ईख, आम, मनोहर, रसीला।
रक्त	- केसर, कमल, लाल, कुंकुम, खून, ताँबा।
रश्मि	- फलक के रोएँ, घोड़े की लगाम, किरण, डोरी।
राशि	- धन, मेष वृष आदि राशि, किसी का उत्तराधिकारी।
लहर	- उमंग, झूलना, तरंग, झोंका।
लय	- ध्यान में डूबना, विनाश, अनुराग, प्रलय।
लगना	- चिपकना, नियुक्त होना, खर्च होना, जुड़ना, चुमना, सटाना।
लक्ष्य	- लक्षणार्थ, उद्देश्य, निशाना।
लाल	- प्रिय बालक, क्रुद्ध, चाह, श्री कृष्ण, छोटा, बेटा, रक्तवर्ण।
लोना	- फसल काटना, सुन्दर, नमकीन।
वन	- जल, काष्ठ, जंगल, बाम।
वर्ण	- रूप, शब्द, रंग, अक्षर, जाति, सोना, चातुर्वर्ण।
विग्रह	- विभाग, विरोध, शृंगार, लड़ाई, शरीर, विश्लेषण।
विधि	- तरीका, नियति, विधाता, विष्णु, कानून, अग्नि, भाग्य, ब्रह्मा।
विलक्षण-	विशिष्ट, अजीब, अलग।
विषय	- प्रसंग, स्थान, संभोग भौतिक पदार्थ।
वर	- श्रेष्ठ, वरण करने योग्य, दूल्हा, आशीर्वाद, पति।
विधान-	रचना, ढंग, प्रणाली, अनुष्ठान, पूजा, व्यवस्था।
वेला	- समय, समुद्र की लहर, अवकाश।
शक्ति	- माया, अधिकार, दुर्गा, ताकत प्रकृति।
शुद्ध	- स्वच्छ, खालिस, साफ, पवित्र, ठीक।
शूर	- योद्धा, विष्णु, वीर, सिंह, सूर्य।
षष्ठी	- कात्यायिनी, सम्बन्ध कारक, कृष्ण पक्ष या शुक्ल पक्ष की छठी तिथि।
सर	- पराजित, चिता, तालाब, चोटी, सिर।
संज्ञा	- नाम, संकेत, चेतना, ज्ञान।
सरल	- निष्कपट, ईमानदार, आसान, सीधा, खरा।
सम्बन्ध-	व्याकरण में छठा कारक, जोड़, रिश्ता ताल्लुक, मेल-जोल।
सही	- प्रामाणिक, हस्ताक्षर, ठीक, सच।
सुधा	- पानी, अमृत।
सारंग	- मोर, हंस, सिंह, मृग, सूर्य, भौरा, बादल, स्त्री, दीपक, सोना, सर्प, पानी, बाज, चातक, कोयल, घोड़ा, हाथी, चन्द्रमा, समुद्र, स्वर्ण, शंख, धनुष, राग विशेष।
स्नेह	- चिकना पदार्थ, कोमलता, प्रेम, तेल।
सूत	- तागा, बढ़ई, सारथी।
सूर	- वीर, विद्वान, भूरे रंग घोड़ा, अंधा, सूर्य।
सार	- लाभ, रस, मूलभाग, तत्व, रसा।
सिरा	- समाप्ति, चोटी, अंत।
सिद्ध	- तैयार, मोक्ष का अधिकारी, सम्पन्न, प्रमाणित, समाप्त सम्पन्न, योगी।

सुरभि	- तुलसी, सुगंध, शराब, गौ, ऋतु, बसन्त।
हस्ती	- हैसियत, अस्तित्व, हाथी।
हरि	- सर्प, सूर्य, चाँद, आग, विष्णु, इन्द्र, कामदेव।
हर	- शिव, हरण करने वाला, वध अथवा नाश करने वाला, प्रत्येक।
हंस	- सूर्य, प्राण, ब्रह्मा, पक्षी विशेष (मराल पक्षी) आत्मा, विष्णु।
हार	- हानि, सुन्दर, भाजक, हानि, पराजय, विरह, माला, थकावट।
हेम	- स्वर्ण, बर्फ, नागकेसर, इज्जत, पीला रंग।
हीन	- निकृष्ट, नम्र, थोड़ा, दीन, रहित।

समध्वनि भिन्नार्थक युग्म

ऐसे शब्द जो पढ़ने और सुनने में लगभग एक से लगते हैं जिनमें स्वर, मात्रा अथवा व्यंजन में थोड़ा-सा अन्तर होता है। वे बोलचाल में लगभग एक जैसे लगते हैं, परन्तु उनके अर्थ में पूर्णतः भिन्नता होती है। ऐसे शब्द समध्वनि (श्रुतिसम) समोच्चारित भिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं। ऐसे कुछ महत्वपूर्ण शब्द-युग्मों की सूची निम्नलिखित प्रकार है-

शब्द	अर्थ
1. अन्न	अनाज
अन्य	दूसरा
2. अजर	जिसे बुढ़ापा नहीं आता
अजिर	आँगन
3. अनल	अग्नि
अनिल	वायु
4. अब्ज	कमल
अब्द	वर्ष
5. अमर	पिछला
अवर	नीचे का
6. अलि	भौरा
अली	सखी
7. अरि	शत्रु
अरी	हे! संबोधन
8. असन	भोजन
आसन	बैठने की वस्तु
9. अशक्त	निर्बल
असक्त	उदासीन
10. अनादि	जिसका आरम्भ नहीं है
अन्नादि	अन्न वगैरह
11. अर्चन	पूजन
अर्जन	कमाना
12. अणु	कण
अनु	पीछे
13. अभिमान	अहंकार
अभियान	चढ़ाई
14. अविराम	लगातार
अभिराम	सुन्दर
15. अवलंब	सहारा
अवलंब	शीघ्र

16.	अर्ध अर्घ्य	अंजुलिभर जल देना बहुमूल्य	40.	उधार उद्धार	देय राशि ऊपर उठना, मुक्ति
17.	अपेक्षा उपेक्षा	तुलना तिरस्कार	41.	उत्कच उत्कट	गंजा तीव्र, उग्र, प्रबल
18.	अंश अंस	हिस्सा कन्धा	42.	उदथ उदधि	सूर्य समुद्र
19.	अंत अंत्य	समाप्ति अंतिम/निम्न	43.	उबारना उभारना	बचाना उकसाना, ऊँचा करना
20.	अगम आगम	जहाँ कोई न पहुँच सके उत्पत्ति	44.	उपेक्षा अपेक्षा	लापरवाही तुलना में
21.	आदि आदी	वगैरह/आरंभ/इत्यादि अभ्यस्त/अदरक	45.	उपधि उपाधि	धोखा, छल पद, प्रमाण पत्र
22.	आयात आयत	देश में माल लाना लम्बा-चौड़ा	46.	उदाहरण उद्धरण	मिसाल वाक्य का वैसा ही कथन
23.	आर्त आर्द्र	दुःखी गीला	47.	उज्जल उज्ज्वल	धारा के प्रतिकूल स्वच्छ
24.	आहूत आहुति	बुलाना हवन की चीज	48.	उपार अपार	भूल, दोष असीमित
25.	आचार आचार्य	रीति व्यवहार विद्वान	49.	ऊमक उभक	वेग रीछ
26.	आभास अभ्यास	भ्रम-सा आदत	50.	ऊषा ऊर्षा	प्रातःकाल देवताङ्ग नामक घास
27.	आपात आपाद	आकस्मिक घटना पैरों तक	51.	ऊसर उम्र	बंजर जमीन सूर्य की किरन
28.	आयास आवास	प्रयत्न निवास-स्थान	52.	ऊबट उबटि	अगम्य, टेढ़ा मार्ग उबटन लगातार
29.	आसन आसन्न	बैठने की जगह निकट का/संलग्न	53.	ऊभ उन्भ	ऊँचा उर्ध्व
30.	आरती आर्ति	धूप, दीप आदि द्वारा पूजन दुःख	54.	ऋद्ध ऋद्धि	समृद्ध समृद्धि, धन, औषध
31.	इतर इत्र	अन्य अतर/ पुष्पसार	55.	ऋत ऋतु	सत्य, यथार्थ, मोक्ष मौसम (वर्षा, गर्मी, जाड़ा आदि)
32.	इंद्रा इंदिरा	इंद्र की पत्नी लक्ष्मी	56.	एक ऐक्य	अनोखा, संख्या एकता
33.	इति ईति	अन्त विपत्ति, विघ्न	57.	एकांकी एकांगी	एक अंक वाला नाटक एक अंग वाला
34.	इस्तरी स्त्री	प्रेस करने का उपकरण महिला, औरत	58.	ऐन ऐन्य	आँख स्वामी
35.	इबादत इबारत	उपासना, पूजा लेखन	59.	ऐहिक एहि	सांसारिक इसको
36.	ईसा ईशा	ईसा मसीह हल की लम्बी लकड़ी, हरिष	60.	ओर और	तरफ एवं, तथा, अधिक
37.	ईश ईष	स्वामी, बलशाली व्यक्ति आश्विनी, शिव का एक अनुचर	61.	ओठ औँठ	अधर छोर
38.	उपल उत्पल	पत्थर, ओला कमल	62.	औँडा ओड़ा	अथाह, गम्भीर बड़ा टोकरा, दौरा
39.	उद्धत उद्यत	उदण्ड, अक्खड़ तैयार, तत्पर	63.	कीट किटि	कीड़ा सुअर

64.	कान्तार	जंगल	88.	कटक	सेना
	कान्ता	सुन्दर स्त्री		कटुक	कड़वा
65.	कृति	रचना	89.	कदम	डग
	कृती	निपुण/ पुण्यात्मा		कदंब	एक पेड़
66.	कुल	वंश	90.	किला	गढ़, दुर्ग
	कूल	किनार		कीला	लोहे का नुकीला खूँटा
67.	कपिश	मटमैला	91.	खाद	फसल हेतु उर्वरक
	कपीश	हनुमान, सुग्रीव		खाद्य	खाने योग्य
68.	कोश	शब्द संग्रह	92.	खोआ	दूध का बना ठोस पदार्थ
	कोष	खजाना		खोया	भूल गया
69.	कान्ति	चमक	93.	खाड़ी	उपसागर
	क्रान्ति	उलट-पलट, परिवर्तन		खारी	नमकीन
70.	कलि	कलियुग	94.	खाई	गड्ढा
	कली	पुष्प का अधखिला रूप		खायी	खाना क्रिया का भूतकाल
71.	करण	कारक की तृतीया विभक्ति	95.	खल	दुष्ट
	कर्ण	कान, कुन्ती पुत्र		खलु	ही, तो
72.	कृपण	कंजूस	96.	गर्भ	पेट
	कृपाण	तलवार		गर्व	अहंकार
73.	कटिबद्ध	तैयार	97.	ग्रन्थ	पुस्तक
	कटिबन्ध	करधनी, कमर बन्द		ग्रन्थि	गाँठ
74.	कुंजर	हाथी	98.	गणना	गिनती
	कंजर	नीच आदमी		गड़ना	चुभना
75.	काश	शायद	99.	गृह	घर
	कास	खाँसी		ग्रह	नक्षत्र
76.	कंकड़	पत्थर का छोटा टुकड़ा	100.	गण	समूह
	कंकण	कड़ा, कंगन		गण्य	गिनने योग्य
77.	कपी	घिरनी	101.	गिरा	वाणी
	कपि	बन्दर		गिरा	पतित
78.	कीर्ति	यश, प्रसिद्धि	102.	गिरि	पर्वत
	कृत्ति	मृगचर्म		गिरी	बीच का गूदा
79.	करि	हाथी	103.	गाड़ी	सवारी, यान
	कीर	तोता, सुग्गा		गाढ़ी	प्रगाढ़, गहरी
80.	करीष	सूखा गोबर	104.	गगरा	घड़ा
	करीश	गजराज		घघरा	लहँगा
81.	कर्म	कार्य	105.	गुटका	पुस्तिका
	क्रम	सिलसिला		गुटिका	गोली
82.	कश	चाबुक	106.	घोष	गर्जन
	कष	कसौटि		घोस	बस्ती
83.	केश	बाल	107.	घन	बादल
	केस	मुकदमा		घना	गाढ़ा
84.	कुट	किला, घर	108.	घुस	प्रवेश
	कूट	पहाड़ की चोटी, दफ्ती		घूस	रिश्वत
85.	काष्ठ	लकड़ी, काठ	109.	चर	दूत, जासूस
	काष्ठा	हृद, सीमा		चारु	मीठा, सुन्दर
86.	कृतज्ञ	उपकार मानने वाला	110.	चपत	तमाचा
	कृतघ्न	उपकार न मानने वाला		चम्पत	गायब
87.	कल्मष	पाप	111.	चित्त	मन
	कल्माष	चितकबरा, काला		चित	पीठ के बल पड़ा, कुश्ती में पराजय की स्थिति

112.	चूर	चूर्ण, कण	136.	जरठ	बूढ़ा
	चूड़	चोटी		जठर	पेट
113.	चिर	दीर्घकाल, प्राचीन	137.	जिन	महावीर स्वामी
	चीर	वस्त्र		जीन	जीर्ण
114.	चीता	एक जंगली जानवर	138.	जिजिया	जीजी, बड़ी बहन
	चिता	शवदाह के लिए बनाया		जजिया	वह कर जो मुस्लिम शासक हिन्दुओं पर लगाते थे
115.	चसक	लत, आदत	139.	जीवनि	संजीवनी बूटी
	चषक	मदिरा का प्याला		जीवनी	जीवन चरित्र
116.	चरम	अन्तिम, सबसे अधिक	140.	जुड़ा	संलग्न
	चर्म	चमड़ा		जूड़ा	केशों का बन्धन
117.	चरि	पशु	141.	झट	शीघ्र, तत्काल
	चरी	हरा चारा		झष	मछली
118.	च्युत	गिरा हुआ, पतित	142.	झक	सनक, धुन
	चूत	आम		झख	तुच्छ कार्य
119.	चक्रवात	आँधी-तूफान	143.	झंझा	आँधी
	चक्रवाक	चकवा पक्षी		झण्डा	पताका
120.	चरित	जीवनी	144.	टुक	थोड़ा
	चरित्र	आचरण		टूक	टुकड़ा
121.	चंट	चातुर	145.	टोटा	घाटा
	चंड	तीक्ष्ण, क्रोधी		टोंटा	कारतूस
122.	चेली	शिष्या	146.	ठण्ड	शीत
	चैली	लकड़ी के पतले टुकड़े		ठण्ठ	सूखा पेड़
123.	चर्मणा	एक प्रकार की मक्खी	147.	ठगनी	ठगने वाली
	चर्मण्य	चमड़े का काम		ठटनि	श्रृंगार, सजावट
124.	चौंक	एकाएक आहट	148.	ठीका	नियत समय
	चौक	नगर का मध्य भाग		ठीहा	ऊँचा स्थान, हृद
125.	छत	पाटन	149.	डीठ	दृष्टि
	क्षत	जख्मी		ढीठ	निडर
126.	छकना	हारना	150.	डोंगी	छोटी नाव
	चहकना	चहचहाना		ढोंगी	पाखण्डी
127.	छत्र	छाता	151.	डाँट	फटकार
	क्षत्र	क्षत्रिय		डाट	टेक
128.	छात्र	विद्यार्थी	152.	ढाढ़ी	एक प्रकार के मुस्लिम गवैए
	क्षात्र	क्षत्रिय का		दाढ़ी	दाढ़ के बाल
129.	जलज	कमल	153.	ढंग	शैली, रीति, तरीका
	जलद	बादल		ढंख	ढाक पलाश
130.	जगत्	संसार, विश्व	154.	ढाल	रक्षक
	जगत	कुएँ के चतुर्दिक बना चबूतरा		ढाल	उतराव
131.	जन्त्र	ताबीज	155.	तमीश	चन्द्रमा
	यन्त्र	मशीन		तमीज	अदब
132.	जमाना	किसी पतली चीज को ठोस बनाना (दूध का दही जमाना)	156.	तरंग	लहर
	जमाना	युग, अरसा, बहुत समय		तुरंग	घोड़ा
133.	जबान	जीभ	157.	तरनी	नौका
	जवान	युवा		तरणि	सूर्य
134.	जनता	लोग	158.	तूणि	शीघ्र तेज
	जन्ता	चक्की		तुणी	तरकश
135.	जाया	पत्नी			
	जाया	बरबाद			

159.	तड़ाक तड़ाग	जल्दी तालाब	184.	धरा धारा	पृथ्वी बहाव, प्रवाह
160.	तूणन तूणक	वेणु, बाँसुरी एक छंद जिसमें पन्द्रह अक्षर होते हैं	185.	धुरा धूर	अक्ष धूल
161.	तृप्त तप्त	सन्तोष युक्त उष्ण	186.	ध्मान ध्यान	बजाना एकाग्र
162.	तनु तनू	पतला, सुन्दर पुत्र	187.	धनेष धनेस	कुबेर एक पक्षी
163.	तिक्त तिग्म	तीता तीक्ष्ण, प्रखर	188.	धर्म गर्म	कर्तव्य गर्मी/गरमी
165.	ताप तप	गर्मी तपस्या	189.	नहर नाहर	जलमार्ग सिंह
166.	तृण त्राण	तिनका मुक्ति, छुटकारा	190.	नार नाड़ी	गर्दन, कण्ठ, ग्रीवा नब्ज
167.	थल थाल	पृथ्वी थाली	191.	नीर नीड़	स्त्री पानी
168.	थान थाना	कपड़े का पूरा माप पुलिस स्टेशन	192.	नन्दी नन्दि	घोंसला शिव का बैल, पुत्र
169.	दिन दीन	दिवस निर्धन	193.	नियत नियति	आनन्द, प्रसन्नता निश्चित
170.	द्विप द्वीप	हाथी टापू	194.	निहत निहित	भाग्य मरा हुआ
171.	दारु दारू	लकड़ी शराब	195.	नीरज नीरद	संलग्न, छिपा हुआ कमल
172.	दारा द्वारा	पत्नी माध्यम	196.	निसान निशान	बादल झण्डा
173.	देश द्वेष	राज्य ईर्ष्या, शत्रुता	197.	निर्माण निर्वाण	चिह्न बनाना
174.	दशन दंशन	दाँत डंक मारना, काटना	198.	निधन निर्धन	मुक्ति, मोक्ष मृत्यु
175.	दरथ दरद	गुफा दर्द, पीणा	199.	नव नौ	गरीब नया
176.	दंश दस	डंक, काट दस का अंक	200.	निवृत निवृत्त	संख्या ओढ़नी
177.	द्रव द्रव्य	रस, पिघला हुआ पदार्थ, घन	201.	निवार नीवार	लौटा हुआ रोकना
178.	दान धान	भिक्षा के निमित्त अर्पण एक प्रकार का अन्न	202.	नमः नम	जंगली धान प्रणाम
179.	दर्प दपु	अहंकार शेखी	203.	निर्झर निर्जर	गीला आर्द्र झरना
180.	यूत धूर्त	जुआ चालबाज	204.	नद नत	देवता नदिया
181.	दात दांत	धर्म-दान दन्त	205.	निबाह निबह	विनम्र निर्वाह
182.	धन्व धन्य	धनुष प्रशंसा, सराहना	206.	निमित्त नमित	समूह हेतु
183.	धन धना	सम्पत्ति प्रीतम	207.	निशिति निशीथ	झुका हुआ तीक्ष्ण
					आधी रात

208.	परवा परभा	पड़वा, प्रतिपदा शोभा	231.	पर्यंक पर्यन्त	चारपाई, पलंग भर, तक
209.	प्रकार प्राकार	रीति किले की चहार दीवारी	232.	फन फण	हुनर, कला साँप का सिर
210.	प्रसाद प्रासाद	प्रसन्नता कृपा महल	233.	फल फाल	खाने वाला फल साड़ी में लगाने वाला कपड़ा, हल की नौक
211.	पुरुष पुरुष	कठोर मनुष्य, आदमी	234.	वाद वाद	पश्चात् प्रकरण, मुकदमा
212.	प्रथा पृथा	रीति कुन्ती	235.	वास बास	रहने का स्थान दुर्गन्ध
213.	परिणाम परिमाण	फल, प्रभाव, नतीजा मात्रा	236.	बाड़ बाढ़	रोक सैलाब
214.	प्रवाह परवाह	बहाव चिन्ता	237.	बलि बली	बलिदान वीर, बलवान
215.	प्रभूति प्रभूत	आदि उन्नत	238.	बर वर	बट वरदान
216.	प्रणाम प्रमाण	अभिवादन, नमस्कार साक्षी	239.	बुरा बूरा	खराब शक्कर
217.	प्रहार परिहार	मारना त्यागना	240.	बन वन	बनना जंगल
218.	परिणति/परिणत प्रणति परिणीत	विकास, रूपान्तरित प्रणाम करना विवाहित प्रणीत	241.	बानस बाण	आदत तीर
219.	पावन पवन	पवित्र, शुद्ध वायु, हवा	242.	बदन वदन	शरीर मुख
220.	पुष्कर पुष्कल	तालाब, सरोवर पवित्र, पर्याप्त	243.	बेश वेश	ज्यादा, अधिक हुलिया
221.	पड़ना पढ़ना	गिरना अध्ययन	244.	बल वल	शक्ति मेघ, बादल
222.	पाहन पावन	पत्थर पवित्र	245.	बारिश वारीश	वर्षा सागर
223.	पतन पत्तन	ह्रास बन्दरगाह	246.	बन्दी वन्दी	कैदी वन्दना करने वाला
224.	परीक्षा परिक्षा	इम्तिहान, जाँच कीच, कीचड़	247.	भवन भुवन	घर संसार
225.	पीड़ा पीढ़ा	दर्द लकड़ी का आसन	248.	भक्त भक्ति	उपासक, श्रद्धालु उपासना
226.	प्रेषित प्रोषित	भेजा हुआ प्रवासी	249.	भट भाट	सिपाही, योद्धा चारण
227.	प्राप्त पर्याप्त	मिला बहुत, अधिक, भरपूर	250.	भंगि भंगी	लहर, टेढ़ापन भंग करने वाला, मेहतर
228.	परक परख	युक्त परीक्षा	251.	भाव भव	अर्थ, मतलब विश्व, संसार
229.	पास पाश	निकट, नजदीक बन्धन	252.	भाग भाग्य	हिस्सा तकदीर, नियति
230.	पाश्व पारंग पराग	बगल में चतुर मकरंद	253.	भावी भाभी	आने वाला बड़े भाई की पत्नी

254.	भीत/भीति भित्ति	भय, डर दीवार	277.	रिक्ष रीझ	रीछ मुग्ध
255.	मनोज मनोज मनुज	कामदेव सुन्दर मानव	278.	रेषा रेशा	सिंह का गर्जन सूत का धागा
256.	मूल मूल्य	जड़ कीमत	279.	लक्ष लक्ष्य	लाख उद्देश्य, निशाना
257.	मद मद्य	अहंकार, मतवाला शराब, मदिरा	280.	लपट लिपट	ज्वाला चिपकना
258.	मांस मास	गोश्त महीना	281.	लवण लवन	नमक खेत में कटाई
259.	मत मति	राय बुद्धि	282.	लोक लोग	संसार मनुष्य
260.	मरीचि मरीची मारीच	किरण सूर्य एक राक्षस का नाम	283.	लगन लग्न	चाव, निष्ठा शुभ मुहूर्त
261.	मेदा मैदा	पेट वारीक आटा	284.	वित्त वृत्त	धन गोलाकार क्षेत्र
262.	मात्र मातृ	केवल माता	285.	विकृत विक्रीत	खराब बैंचा हुआ
263.	मिल मील	कारखाना दूरी की माप	286.	विष विस	जहर कमल-नाल
264.	मूल मूल्य	जड़ कीमत	287.	वसन व्यसन	वस्त्र, कपड़ा बुरी आदत
265.	मोर मौर	मयूर पक्षी मुकुट	288.	वास बास	निवास दुर्गन्ध
266.	मानक मानिक	मानदंडानुसार रत्न	289.	वृत्त वृन्द	डण्डल समूह
267.	मनि मणि	अभिमान गर्व बहुमूल्य पत्थर	290.	व्रण वर्ण	घाव रंग, अक्षर
268.	युक्त युक्ति	उचित, जुड़ा हुआ उपाय	291.	वाद वाद्य	विचार बाजा
269.	यक्ष अक्ष	गन्धर्व, उपदेवता धुरी	292.	वन वन्य	जंगल जंगली, वन में पैदा
270.	रग राग	नस लय	293.	विवरण विवर्ण	वृत्तांत रंगहीन
271.	रन रण	ताल, झील युद्ध	294.	वास्तु वस्तु	मकान चीज
272.	रंग रंक	वर्ण निर्धन, गरीब		वंशी वंसी	मुरली मंछली पकड़ने का यंत्र
273.	राज राज	शासन रहस्य	295.	विज्ञात विख्यात	अज्ञात विश्व प्रसिद्ध
274.	रत रति	लीन प्रेम	296.	वादी बादी	वक्ता, मुद्दई गरिष्ठ भोजन
275.	रक्त रिक्त	खून, रुधिर खाली, शून्य	297.	विलक्षण विचक्षण	अद्भुत चतुर
276.	रेखा लेखा	लकीर हिसाब	298.	वप्रि वप्री	समुद्र बाँबी, मिट्टी का ढूहा
			299.	शकल सकल	खण्ड, सूरत सम्पूर्ण

300.	शर	बाण	324.	सहर	सबेरा
	सर	तालाब		शहर	नगर
301.	शत्रु	बैरी	325.	सुर	देवता, स्वर
	सत्र	यज्ञ, काल		सूर	सूर्य, सूरदास
302.	शंकर	महादेव	326.	सम्प्रति	इस समय
	संकर	मिश्रित, मिला हुआ		सम्प्राप्ति	प्राप्त होना
303.	शमी	विशेष वृक्ष	327.	सर्वदा	हमेशा
	समीर	हवा		सर्वथा	सभी प्रकार से
304.	शुचि	पवित्र	328.	सवर्ण	उच्च वर्ण का
	शची	इन्द्राणी		स्वर्ण/सुवर्ण	सोना
305.	शस्त्र	हथियार	329.	सीसा	एक धातु
	शास्त्र	ग्रन्थ		शीशा	देखने वाला काँच
306.	शव	लाश	330.	समान	तरह
	शब	रात		सामान	सामग्री
307.	शान	इज्जत	331.	साला	पत्नी का भाई
	सान	धार तेज करने का पत्थर		शाला	मकान
308.	शराब	मदिरा	332.	सूचि	सुई
	शराव	मिट्टी का प्याला		सूची	विषयक्रम, तालिका, नामावली
309.	शील	चरित्र	333.	सुत	बेटा
	सील	मुहर, ठप्पा		सूत	रूई का धागा
310.	श्वेत	सफेद	334.	सुगंध	खुशबू, सुवास
	स्वेद	पसीना		सौगन्ध	कसम
311.	शर्म	लज्जा	335.	सास	पत्नी की माँ
	श्रम	मेहनत		साँस	नाक से हवा लेना
312.	श्वसुर	पति या पत्नी के पिता	336.	सीता	जानकी
	शमश्रु	दाढ़ी-मूँछ		सिता	चीनी
313.	शिखर	चोटी	337.	सीकर	जल कम
	शेखर	सिर		सीकड़	जंजीर
314.	श्रोत	कान	338.	संग	साथ
	स्रोत	उद्गम स्थान		संघ	समिति
315.	शूर	वीर	339.	सँवार	सजाना
	सूर	सूर्य, अन्धा		सवार	आच्छादन
316.	शित	दुर्बल	340.	सुखी	सुख वाला
	शीत	ठण्ड		सूखी	शुष्क
317.	शान्त	चुप	341.	स्वजन	अपने आदमी/लोग
	सान्त	सीमित		श्वजन	कुत्ता
318.	शिरा	नाड़ी	342.	हरि	विष्णु
	सिरा	छोरा		हरी	हरे रंग की
319.	षष्टि	साठ वर्ष	343.	हँस	हँसने की क्रिया
	षष्ठी	छठी		हंस	एक पक्षी
320.	षट्	छः	344.	हत	घायल, वध, हत्या
	शठ	दुष्ट		हथ	हाथ का संक्षिप्त रूप
321.	सर्ग	सृष्टि, काव्य खण्ड	345.	हार	असफलता, पराजय
	स्वर्ग	देवलोक		हार	माला, गले का आभूषण
322.	संस्कृत	एक भाषा, परिमार्जित	346.	हास	हास्य रस का स्थाई भाव
	संस्कृति	सभ्यता		हास	क्षीण
323.	सर्व	सब	347.	हंसमुख	हंस का मुख
	शर्व	शिव		हँसमुख	मजाकिया

348. हाल बड़ा कमरा, समाचार
हाला शराब
349. हट परे हो
हठ जिद्द
350. हुंकार ललकार
हँकार पुकार
351. हल खेत जोतने का औजार
हल् शुद्ध व्यंजन
352. हरण ले जाना
हरिण मृग

विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. 'शहद' शब्द है—

- (a) तत्सम (b) तद्भव
(c) देशज (d) आगत

UP TET - Ist Paper (I-V) Dec. 2016

उत्तर : (d)

2. निम्नलिखित में वर्तनी की दृष्टि से कौन-सा शब्द युग्म शुद्ध है?

- (a) बरात, बसंत (b) बारात, बसंत
(c) बरात, वसंत (d) बारात, वसंत

UP TET - Ist Paper (I-V) Dec. 2016

उत्तर : (c)

3. इन शब्दों में से कौन-सा शब्द हिन्दी शब्दकोश में सबसे अन्त में आएगा?

- (a) क्लीव (b) क्रम
(c) कृषक (d) कृशानु

UP TET - Ist Paper (I-V) Dec. 2016

उत्तर : (a)

4. 'विरासत' शब्द का अर्थ है—

- (a) प्रकृति से प्राप्त (b) पुरखों से प्राप्त
(c) मित्रों से प्राप्त (d) मूल्य देकर खरीदा हुआ

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Dec. 2016

उत्तर : (b)

5. 'घुड़सवार' शब्द निम्न में से क्या है?

- (a) रुढ़ शब्द (b) योगरूढ़ शब्द
(c) यौगिक शब्द (d) निरर्थक शब्द

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2011

उत्तर : (c)

6. 'अजायबघर' है —

- (a) देशी शब्द (b) तत्सम शब्द
(c) विदेशी शब्द (d) संकर शब्द

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2011

उत्तर : (d)

7. निम्नलिखित में योगरूढ़ शब्द चुनिए—

- (a) पील (b) चक्रपाणि
(c) दूधवाला (d) नैन

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2011

उत्तर : (b)

8. दिए हुए शब्दों में भिन्न अर्थ वाला शब्द है—

- (a) आत्मजा (b) नन्दिनी
(c) भार्या (d) कन्या

UP TET - Ist Paper (I-V) June 2013

उत्तर : (c)

9. 'कष्ट' का अर्थ है—

- (a) खेद (b) शारीरिक असुविधा
(c) दुख (d) शोक

Bihar TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

उत्तर : (a)

10. वे शब्द जो प्रकृति प्रत्यय अथवा दूसरे शब्दों के योग से बने हों, कहलाते हैं—

- (a) योगरूढ़ (b) रूढ़
(c) सरल (d) यौगिक

Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (d)

11. 'जिस मूल शब्द में विकार होने से क्रिया बनती है, उसे क्या कहते हैं?

- (a) धातु (b) क्रिया
(c) मूल धातु (d) यौगिक धातु

Chhattisgarh TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

उत्तर : (c)

12. 'वर्ण' शब्द का अर्थ नहीं होता है—

- (a) रंग (b) आकाश
(c) जाति (d) अक्षर

Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011

उत्तर : (b)

13. 'पन्नग' का समानार्थी शब्द है—

- (a) उरग (b) पिक
(c) पिनाक (d) केशरी

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) April 2016

उत्तर : (a)

14. 'जहाँ-जहाँ' शब्द व्याकरण की दृष्टि से क्या है?

- (a) भिन्नार्थी शब्द-युग्म (b) विपरीतार्थक शब्द-युग्म
(c) पुनरुक्त शब्द-युग्म (d) एकार्थी शब्द-युग्म

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) April 2016

उत्तर : (c)

15. 'काकु' शब्द का सर्वाधिक उपयुक्त अर्थ कौन-सा है?

- (a) कौआ (b) कटु
(c) चाचा (d) व्यङ्ग्य

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Jan. 2011

उत्तर : (d)

16. 'निर्वात' का समानार्थी शब्द है—

- (a) भ्रम (b) विवाद रहित
(c) बिना हवा वाला (d) बुराई

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Jan. 2011

उत्तर : (c)

17. बड़ों के लिए उपयुक्त अभिवादन का चयन कीजिए -

- (a) सप्रेम नमस्कार (b) सादर प्रणाम
(c) सस्नेह (d) चिरंजीव

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Jan. 2011

उत्तर : (b)

18. 'धर्म-कर्म' किस प्रकार का शब्द है?

- (a) विकारी (b) युग्म
(c) विशेषण (d) अव्यय

Uttarakhand TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2013

उत्तर : (b)

19. 'अनुरोध-आग्रह' शब्द युग्म में अनुरोध का अर्थ होता है विनयपूर्वक याचना करना, तो 'आग्रह' का आशय होगा—

- (a) अधिकार-भावना से उद्भूत याचना
(b) अधिकार-भावना से सहृदय याचना करना
(c) अधिकार-भावना को स्वीकार करना
(d) अधिकार-भावना की कदापि उपेक्षा न करना

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2013

उत्तर : (b)

20. शब्दकोश में निम्न शब्दों का सही क्रम बताइये -

- (a) विश्व, विश्वभरा, विश्वस्त, विश्वास
(b) विश्वस्त, विश्व, विश्वभरा, विश्वास
(c) विश्वभरा, विश्वस्त, विश्व, विश्वास
(d) विश्वभरा, विश्व, विश्वस्त, विश्वास

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (d)

21. शब्द युग्म अवर -अपर का सही अर्थ है -

- (a) अतिरिक्त - निम्न (b) निम्न - अन्य
(c) उच्च - निम्न (d) निम्न - उच्च

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (b)

22. 'मुद्रा' शब्द का अर्थ समूह चुनिए—

- (a) मोहर, छाप, सिक्का, अँगूठी
(b) चेहरे का भाव, छाप, अँगूठी, प्रति
(c) नाम, लिखना, सिक्का, छापाखाना
(d) चोट, छापा, धन, स्टाम्प

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (a)

23. निम्नलिखित में से एक अनेकार्थी शब्द 'खग' का अर्थ नहीं है -

- (a) मन (b) तीर
(c) पक्षी (d) आकाश

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (a)

24. 'कनक' शब्द का अर्थ समूह चुनिए।

- (a) वृक्ष, स्वर्ण, धतूरा (b) स्वर्ण, धतूरा, गेहूँ
(c) स्त्री, पलाश, आभूषण (d) इनमें से कोई नहीं

Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (b)

25. निम्नलिखित में से कौन-से शब्द अपने विभाजन के पश्चात् अन्य अर्थ में प्रचलित हो जाते हैं?

- (a) सार्थक (b) योगरूढ़
(c) रूढ़ (d) यौगिक

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2015

उत्तर : (b)

26. वाक्यांश के लिए कौन-सा शब्द अशुद्ध है?

- (a) क्षण में या शीघ्र टूटने वाला - खण्डहर
(b) जिसकी आशा न की गई हो - अप्रत्याशित

- (c) जिसे जाना न जा सके - अज्ञेय
(d) दोपहर के पहले का समय - पूर्वाह्न

Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (a)

27. हिन्दी शब्दकोश के अनुसार संतान, सकल, सचल, सक्षम शब्दों का सही क्रम है—

- (a) संतान, सकल, सचल, सक्षम
(b) सकल, संतान, सचल, सक्षम
(c) सकल, सचल, संतान, सक्षम
(d) संतान, सकल, सक्षम, सचल

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (d)

28. 'अन्तर - अनन्तर' शब्द युग्म का सही अर्थ चुनिए—

- (a) भेद - बाद में (b) भेद - अनन्त
(c) मध्य का - अनन्त (d) आंतरिक - बाह्य

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (a)

29. 'वनिता' का प्रयोग किस अर्थ में होता है?

- (a) जंगल (b) स्त्री
(c) पुस्तक (d) व्यवसायी

UP TET - Ist Paper (I-V) Dec. 2016

उत्तर : (b)

30. 'मुकुंद' किसका पर्याय है?

- (a) विष्णु (b) शिव
(c) सूर्य (d) कामदेव

UP TET - Ist Paper (I-V) Dec. 2016

उत्तर : (a)

31. 'पुत्री' का पर्यायवाची शब्द नहीं है -

- (a) तनय (b) सुता
(c) आत्मजा (d) दुहिता

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2011

उत्तर : (a)

32. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'कमल' का पर्यायवाची शब्द नहीं है?

- (a) सरोज (b) अरविन्द
(c) सलिल (d) पंकज

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2011

उत्तर : (c)

33. जो शब्द 'धन' का पर्यायवाची नहीं है उसे चुनिए—

- (a) द्रव्य (b) द्रव
(c) सम्पदा (d) दौलत

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2011

उत्तर : (b)

34. 'चन्द्रमा' का पर्यायवाची शब्द चुनिए—

- (a) निशाकर (b) निशाचर
(c) तरणि (d) कृशानु

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2011

उत्तर : (a)

35. 'महादेव' का पर्यायवाची शब्द चुनिए—

- (a) गरुडध्वज (b) नारायण
(c) चन्द्रशेखर (d) विश्वम्भर

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2011

उत्तर : (c)

36. कानन का पर्यायवाची शब्द है
 (a) पुष्प (b) विहिप
 (c) वन (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Oct. 2017
 उत्तर : (c)
37. 'घूसर' शब्द का पर्याय है
 (a) अश्व (b) मेघ
 (c) गर्दभ (d) अजा
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Oct. 2017
 उत्तर : (c) :
38. 'कालिन्दी' का पर्यायवाची क्या है?
 (a) सरस्वती (b) लक्ष्मी
 (c) गंगा (d) यमुना
UP TET - Ist Paper (I-V) June 2013
 उत्तर : (d)
39. 'तरणि' का पर्यायवाची शब्द है—
 (a) सूर्य (b) नाम
 (c) युवती (d) नदी
UP TET - Ist Paper (I-V) June 2013
 उत्तर : (a)
40. 'मीन' का पर्यायवाची शब्द है—
 (a) शिखी (b) शापक
 (c) विभावरी (d) मत्स्य
UP TET - Ist Paper (I-V) June 2013
 उत्तर : (d)
41. अनुपम का पर्यायवाची शब्द है—
 (a) स्वर्गीय (b) लौकिक
 (c) पार्थिव (d) अद्वितीय
UP TET - Ist Paper (I-V) June 2013
 उत्तर : (d)
42. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'सूर्य' का पर्यायवाची नहीं है?
 (a) दिनकर (b) रवि
 (c) अंशुमाली (d) यामिनी
UP TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2011
 उत्तर : (d)
43. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'बादल' का पर्यायवाची है?
 (a) नीरद (b) नीरज
 (c) अम्बुज (d) अम्बु
UP TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2011
 उत्तर : (a)
44. 'अश्व' का पर्यायवाची शब्द निम्नलिखित में से कौन-सा नहीं है?
 (a) घोड़ा (b) घोटक
 (c) कटक (d) हय
UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014
 उत्तर : (c)
45. 'द्रौपदी' का पर्याय नहीं है —
 (a) द्रुपद सुता (b) याज्ञसेनी
 (c) पांचाली (d) रमणी
Bihar TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011
 उत्तर : (d)

46. अनुपम शब्द का पर्यायवाची शब्द इनमें से कौन-सा नहीं है?
 (a) अतुल (b) अनिल
 (c) अपूर्व (d) अनोखा
Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011
 उत्तर : (b)
47. कोप शब्द का पर्यायवाची शब्द है—
 (a) अवितथ (b) कृतान्त
 (c) अमर्ष (d) मृषा
Chhattisgarh TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011
 उत्तर : (c)
48. कौन-सा शब्द 'कमल' का पर्यायवाची नहीं है?
 (a) जलज (b) अम्बुज
 (c) मनसिज (d) पंकज
Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011
 उत्तर : (c)
49. कौन-सा शब्द 'भ्रमर' का पर्यायवाची नहीं है?
 (a) षट्पद (b) मधुकर
 (c) अलि (d) प्रभाकर
Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) April 2016
 उत्तर : (d)
50. कौन-सा शब्द जंगल शब्द का पर्यायवाची नहीं है?
 (a) अटवी (b) कान्ता
 (c) कान्तार (d) कानन
Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Jan. 2011
 उत्तर : (b)
51. सूर्य का पर्याय कौन नहीं है?
 (a) आदित्य (b) सुधांशु
 (c) दिवाकर (d) अंशुमाली
Uttarakhand TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2013
 उत्तर : (b)
52. निम्नलिखित में से पवन का पर्यायवाची शब्द है—
 (a) अनल (b) अनिल
 (c) नलिन (d) सलिल
Uttarakhand TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2013
 उत्तर : (b)
53. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'रात्रि' का पर्यायवाची नहीं है?
 (a) क्षपा (b) शशक
 (c) शर्वरी (d) यामिनी
Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2013
 उत्तर : (b)
54. निम्नलिखित शब्दों में से 'अग्नि' का पर्यायवाची है—
 (a) पीयूष (b) पावक
 (c) अम्बर (d) मयंक
Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2013
 उत्तर : (b)
55. निम्न में से कौन-सा समूह 'विष्णु' के पर्यायवाची शब्दों का है?
 (a) सुदेश, चक्रपाणि, चतुर्भुज, फणीश
 (b) चक्रपाणि, चतुर्भुज, शेषशायी, गरुडध्वज
 (c) शेखर, शशांक, दामोदर, विट्ठल
 (d) महीधर, वैनतेय, वासव, देवराज
Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2011
 उत्तर : (b)

56. 'इन्द्र' के पर्यायवाची शब्दों का समूह है—

- (a) वैनतेय, चन्द्रमौलि, सुरपति, देवराज
(b) मधवा, पुरन्दर, शचीपति, वासव
(c) सुरपति, पुरन्दर, उपेन्द्र, अंशुमाली
(d) वैनतेय, मधवा, सुरपति, वासव

Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (b)

57. 'जनार्दन' किसका पर्यायवाची है?

- (a) राम (b) कृष्ण
(c) विष्णु (d) ब्रह्मा

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2015

उत्तर : (c)

58. 'षट्पद' का पर्यायवाची है—

- (a) तितली (b) भ्रमर
(c) मकड़ी (d) केकड़ी

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2015

उत्तर : (b)

59. कौन-सा शब्द 'कामदेव' का पर्याय नहीं है?

- (a) अनंग (b) मनसिज
(c) कदर्प (d) अरविन्द

Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (d)

60. निम्न में से कौन-सा 'वारिद' का पर्यायवाची शब्द नहीं है?

- (a) मेघ (b) पयोद
(c) घन (d) अम्बुज

Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (d)

61. निम्न में से 'हाथी' का पर्याय है—

- (a) कुरंग (b) कुंजर
(c) कलहंस (d) केहरि

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (b)

62. 'उत्कर्ष' शब्द का विलोम लिखिए।

- (a) पतन (b) अपकर्ष
(c) अपभ्रष्ट (d) विकर्ष

UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (b)

63. 'समष्टि' का विपरीतार्थी शब्द है—

- (a) विशिष्ट (b) अशिष्ट
(c) अपुष्टि (d) व्यष्टि

UP TET - Ist Paper (I-V) Dec. 2016

उत्तर : (d)

64. 'आचार' का विलोम शब्द है—

- (a) आनाचार (b) अनाचार
(c) अत्याचार (d) विचार

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2011

उत्तर : (b)

65. 'परिसीमन' का विलोम है

- (a) ससीम (b) निरसीमन
(c) असीमन (d) ससीमन

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Oct. 2017

उत्तर : (c)

66. उन्मूलन का विलोम क्या है?

- (a) उत्थान (b) उत्कर्ष
(c) रोपण (d) अवनति

UP TET - Ist Paper (I-V) June 2013

उत्तर : (c)

67. 'निषेध' का विलोम है—

- (a) विधि (b) स्वीकृत
(c) निश्चित (d) स्वीकार

Bihar TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

उत्तर : (a)

68. 'पाश्चात्य' का विपरीतार्थी शब्द है—

- (a) पौरात्य (b) पूर्वात्य
(c) पौरवात्य (d) पुरुवात्य

Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (a)

69. 'अनुरक्त' का विलोम शब्द है—

- (a) आरक्त (b) विरक्त
(c) निरक्त (d) आसक्त

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) July 2011

उत्तर : (b)

70. विपरीत अर्थ का बोध कराने वाले शब्द को कहते हैं—

- (a) पर्यायवाची शब्द (b) विलोम शब्द
(c) समानार्थक शब्द (d) एकार्थक शब्द

Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011

उत्तर : (b)

71. 'ऋजुता' का सही विलोम है -

- (a) टेढ़ापन (b) वक्रता
(c) बाँकापन (d) तिरछापन

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) April 2016

उत्तर : (b)

72. लाघव शब्द का विपरीतार्थक शब्द है—

- (a) विस्तार (b) संक्षेप
(c) लम्बा (d) दीर्घकालीन

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Jan. 2011

उत्तर : (a)

73. 'नैसर्गिक' का विलोम है—

- (a) सात्विक (b) कल्पित
(c) कृत्रिम (d) जटिल

Uttarakhand TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2013

उत्तर : (c)

74. 'निषिद्ध' शब्द का विलोम है -

- (a) विहित (b) संदिग्ध
(c) अनुपयोगी (d) प्रतिबन्धित

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2013

उत्तर : (a)

75. 'त्यक्त' शब्द का सही विलोम है—

- (a) गृहीत (b) त्याज्य
(c) तुच्छ (d) प्रिय

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (a)

76. 'निर्दय' का विलोम शब्द है-

- (a) सहृदय (b) सह्य
(c) सभय (d) सदय

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2015

उत्तर : (d)

77. 'स्थावर' का विलोम है-

- (a) जंगल (b) संपत्ति
(c) जंगम (d) स्थापना

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2015

उत्तर : (c)

78. 'अवर' शब्द का विलोम होगा-

- (a) दूसरा (b) अपर
(c) प्रवर (d) अधम

Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (c)

79. अधोलिखित विलोम शब्द युग्मों में से कौन-सा सही नहीं है?

- (a) प्रसारण - संकुचन (b) ओजस्वी - निस्तेज
(c) भिज्ञ - सभिज्ञ (d) देहाती - शहरी

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (c)

80. निम्नलिखित में तद्भव शब्द है-

- (a) भ्रमर (b) अग्नि
(c) मस्तक (d) मछली

UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (d)

81. इनमें कौन-सा शब्द तद्भव है?

- (a) मधुप (b) भ्रमर
(c) मधुकर (d) भँवरा

UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (d)

82. 'मुदरी' का तत्सम रूप है-

- (a) मुंदरी (b) मुन्दरी
(c) मुदरिका (d) मुद्रिका

UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (d)

83. 'कर्पट' का तद्भव रूप है-

- (a) कपट (b) कारपेट
(c) कपूर (d) कपड़ा

UP TET - Ist Paper (I-V) Dec. 2016

उत्तर : (d)

84. तद्भव शब्द है-

- (a) अँधेरा (b) प्रकाश
(c) रात्रि (d) चन्द्र

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Dec. 2016

उत्तर : (a)

85. 'कटधरा' शब्द का तत्सम रूप क्या है?

- (a) कटहल (b) कड़वा
(c) काष्ठगृह (d) कंटफल

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Dec. 2016

उत्तर : (c)

86. 'कपूर' शब्द है-

- (a) तत्सम (b) तद्भव
(c) देशज (d) विदेशज

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (b)

87. निम्नलिखित शब्दों के दिए गए विकल्पों में तत्सम शब्द का चयन कीजिए -

- (a) कलश (b) कलस
(c) कल्स (d) कल्श

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2011

उत्तर : (a)

88. 'मोर' का तत्सम शब्द होगा-

- (a) मऊर (b) मयूर
(c) मोयूर (d) मउर

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2011

उत्तर : (b)

89. 'सूई' का तत्सम रूप क्या है?

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Oct. 2017

- (a) सुज्जा (b) सूचि
(c) सलाई (d) सूची

उत्तर : (b)

90. 'गोधूम' शब्द का तद्भव है

- (a) गेहूँ (b) गाय
(c) गोबर (d) गोधन

UP TET - Ist Paper (I-V) Oct. 2017

उत्तर : (a)

91. 'सीस' का तत्सम रूप क्या है?

- (a) शीशा (b) शीर्ष
(c) सिरा (d) शीर्षक

UP TET - Ist Paper (I-V) Oct. 2017

उत्तर : (b)

92. नीचे दिए गए विकल्पों में से तत्सम शब्द का चयन कीजिए-

- (a) आम्र (b) दूध
(c) शहीद (d) खिड़की

UP TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2011

उत्तर : (a)

93. निम्नलिखित में से 'तत्सम' शब्द है-

- (a) ऊँट (b) काठ
(c) दुग्ध (d) काम

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) June 2013

उत्तर : (c)

94. स्वर्ण शब्द है-

- (a) तत्सम (b) तद्भव
(c) देशज (d) विदेशी

Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (a)

95. संस्कृत के मूल शब्द जो हिन्दी भाषा में प्रचलित है वे कहलाते हैं-

- (a) तद्भव शब्द (b) विदेशी शब्द
(c) तत्सम शब्द (d) देशज शब्द

Chhattisgarh TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

उत्तर : (c)

96. संस्कृत के वे शब्द जो हिन्दी में बिना किसी परिवर्तन के प्रयुक्त होते हैं कहलाते हैं—
 (a) संस्कृत (b) तद्भव
 (c) तत्सम (d) देशज

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) July 2011

उत्तर : (c)

97. निम्न में से किस समूह में सभी शब्द तत्सम हैं?
 (a) शर्करा, पवन, ज्येष्ठ, अग्नि
 (b) काष्ठ, घृत, घोड़ा, कारीगर
 (c) ओष्ठ, किताब, नानी, चाकू
 (d) निष्ठुर, चम्मच, हाथी, कार्य

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) July 2011

उत्तर : (a)

98. 'श्मश्रु' शब्द का तद्भव रूप होगा—
 (a) मूँछ (b) अश्रु
 (c) आँसू (d) ससुर

Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011

उत्तर : (a)

99. साखी का मूल तत्सम शब्द क्या है?
 (a) शिक्षा (b) साक्षी
 (c) सखी (d) इनमें से कोई नहीं

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) April 2016

उत्तर : (b)

100. कौन-सा शब्द तत्सम नहीं है?

- (a) घृत (b) अतिन
 (c) दुग्ध (d) आँसू

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Jan. 2011

उत्तर : (d)

101. निम्नलिखित में 'तत्सम' शब्द है —

- (a) जलद (b) बादल
 (c) हवा (d) पानी

Uttarakhand TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2013

उत्तर : (a)

102. निम्नलिखित शब्दों में कौन-सा शब्द 'तत्सम' नहीं है?

- (a) आकाश (b) मेघ
 (c) पवन (d) सियार

Uttarakhand TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2013

उत्तर : (d)

103. 'निंदा' का विलोम है—

- (a) स्तुति (b) संस्तुति
 (c) संवेदना (d) स्तवन

उत्तर : (a)

104. 'परूष' शब्द का विलोम है —

- (a) अपौरूष (b) सरल
 (c) कठोर (d) कोमल

उत्तर : (d)

105. रुग्ण का विलोम शब्द है —

- (a) स्थूल (b) स्वस्थ
 (c) बीमार (d) कर्मठ

उत्तर : (b)

106. 'व्यष्टि' का विपरीतार्थक शब्द है

- (a) समास (b) समवेत
 (c) समष्टि (d) समस्त

उत्तर : (c)

107. 'सौम्य' शब्द का विलोम है—

- (a) सौभाग्य (b) उग्र
 (c) शत्रु (d) दुराशय

उत्तर : (b)

108. निम्नलिखित विकल्पों में से 'तद्भव' शब्द है —

- (a) अगम (b) आश्रय
 (c) अवगुण (d) स्नेह

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2013

उत्तर : (a)

109. निम्नलिखित विकल्पों में से 'तत्सम' शब्द है—

- (a) नारियल (b) उपरोक्त
 (c) तुरन्त (d) आलस्य

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2013

उत्तर : (d)

110. निम्न में से तद्भव शब्द है —

- (a) कुमार (b) कुक्कुर
 (c) काजल (d) कोण

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (c)

111. निम्न में से तत्सम शब्द है—

- (a) अगम (b) अमिय
 (c) आवला (d) आशीष

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (d)

112. 'अखरोट' शब्द का तत्सम रूप है —

- (a) अक्षवाट (b) अक्षोट
 (c) अक्षरोट (d) अषरोट

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2015

उत्तर : (b)

113. 'सियार' का तत्सम क्या है?

- (a) शृंगार (b) स्यार
 (c) श्यालक (d) शृगाल

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2015

उत्तर : (d)

114. निम्न में से तत्सम शब्द है—

- (a) लौंग (b) बहिन
 (c) पृष्ठ (d) जवान

Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (c)

115. निम्न में से तत्सम शब्द है—

- (a) अटारी (b) अहीर
 (c) आँख (d) अखिल

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (d)

116. जिन शब्दों में प्रयोग के अनुसार कोई परिवर्तन नहीं होता है, उन्हें कहा जाता है—

- (a) पद (b) विकारी शब्द
 (c) अविकारी शब्द (d) पदबन्ध

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) July 2011

उत्तर : (c)

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. उचित विलोम शब्द का चयन कीजिये-
'अर्वाचीन'
(a) नवीन (b) प्राचीन
(c) आदिकालीन (d) पाषाणकालीन
 2. 'आविर्भाव' का विपरीतार्थक शब्द निम्नलिखित विकल्पों में से छाँटिए:
(a) अन्तर्धान (b) सुप्त
(c) तिरोभाव (d) समभाव
 3. 'अवनि' का विलोम शब्द है
(a) धरा (b) शशांक (c) अम्बर (d) सितारा
 4. 'अनभिज्ञ' का विलोम शब्द है-
(a) भिज्ञ (b) अभिज्ञ (c) अज्ञ (d) अविज्ञ
 5. 'अलभ्य' का विलोम शब्द है-
(a) सुगम (b) सहज (c) सरल (d) सुलभ
 6. 'अज्ञ' शब्द का विलोम है
(a) विज्ञ (b) मूर्ख (c) अनुज्ञ (d) अल्प
 7. 'आर्द्र' का विलोम शब्द है -
(a) नम (b) शुष्क (c) गीला (d) लचीला
 8. 'ईप्सित' शब्द का विलोम है
(a) अनीप्सित (b) अभीप्सित (c) अधीप्सित (d) कुत्सित
 9. 'उक्त' शब्द का विलोम है -
(a) अनुक्त (b) उपयुक्त (c) अनुपयुक्त (d) उपर्युक्त
 10. 'ऋजु' शब्द का विलोम है
(a) वक्र (b) तक्र (c) सीधा (d) विरल
 11. गौरव का लाघव से वही सम्बन्ध है, जो नकल का से है।
(a) अंकल (b) मूल
(c) सकल (d) दिमाग
 12. अर्क के लिए बेमेल शब्द पहचानिए
(a) अफवन (b) काढ़ा
(c) अंतर (d) सूर्य
 13. क्षणप्रभा का पर्यायवाची है-
(a) स्त्री (b) बिजली
(c) चंद्रमा (d) गंगा
 14. समानार्थी जोड़े का अनुपयुक्त विकल्प चुनिए।
(a) उपयोगी-उपादेय, इष्टकर
(b) काक-सारंग, मयूर
(c) पुष्कर-जलाशय, ताल
(d) भूमि-मही, धरा
 15. 'केतु' शब्द का पर्यायवाची है-
(a) राहु (b) अंशुक
(c) ध्वज (d) नाग
 16. पर्यायवाची की दृष्टि से एक वर्ग शुद्ध है
(a) इन्द्र, रतीश, सहस्राक्ष, मघवा
(b) घर, निकेतन, आयतन, निलय
(c) यमुना, कालिन्दी, भानुतनया, जाह्नवी
(d) वस्त्र, पाटक, अम्बर, चीर
 17. 'नौका' का विकल्पों में से सही पर्यायवाची शब्द चुनिए-
(a) तरिणी (b) आपगा
(c) जलयान (d) तरंगिनी
 18. गंदला, मैला, मलिन किस शब्द के पर्यायवाची हैं?
(a) प्रलय (b) धवल
(c) पंकिल (d) पामर
 19. 'पुष्कर' का अर्थ बताइए।
(a) ट्रेन का नाम (b) मूषक
(c) नदी का नाम (d) सरोवर
 20. 'मार' शब्द पर्यायवाची है-
(a) 'जादू' का (b) 'स्वर्ण' का
(c) 'अधम' का (d) 'अनंग' का
 21. 'सरस्वती' के चार पर्याय दिये गये हैं। इनमें गलत कौन है?
(a) भारती (b) शारदा
(c) भामा (d) वागीश्वरी
 22. 'हाथी' का पर्यायवाची शब्द है-
(a) मृगेन्द्र (b) कुंजर
(c) तुरंग (d) अहि
 23. अनेकार्थी शब्द 'अब्ज' के गलत विकल्प का चयन कीजिए-
(a) शंख (b) चन्द्रमा
(c) मेघ (d) कपूर
 24. संधव का आशय निम्न में से कौन नहीं है-
(a) नमक (b) सोना
(c) घोड़ा (d) समुद्र
 25. 'कोटि' का अर्थ श्रेणी होता है। कोटि का अन्य अर्थ होता है।
(a) लगन (b) समूह
(c) करोड़ (d) बहुत
 26. निम्न में कौन सा शब्द अनेकार्थी है?
(a) अर्थ (b) अनुरोध
(c) अपराध (d) अधिक
 27. निम्नलिखित शब्दों में से एक का अर्थ 'तेल' भी है-
(a) प्रणय (b) प्रीति
(c) स्नेह (d) अनुराग
 28. 'जंगल' शब्द का पर्यायवाची है -
(a) प्रमोद (b) विश्रान्ति
(c) कान्तार (d) दिव
 29. 'तमस' शब्द का समानार्थी शब्द दिए गए विकल्पों में से कौन सा है?
(a) तमाशा (b) प्रकाश
(c) रस्सी (d) अंधकार
- निम्नलिखित पर्यायवाची शब्दों के लिए सही विकल्प चुनें।
30. दूध
(a) स्तन्य (b) खीर
(c) पेय (d) नवनीत

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (b) | 2. (c) | 3. (c) | 4. (b) | 5. (d) | 6. (a) | 7. (b) | 8. (a) | 9. (a) | 10. (a) |
| 11. (b) | 12. (c) | 13. (b) | 14. (b) | 15. (c) | 16. (b) | 17. (a) | 18. (c) | 19. (d) | 20. (d) |
| 21. (c) | 22. (b) | 23. (c) | 24. (b) | 25. (c) | 26. (a) | 27. (c) | 28. (c) | 29. (d) | 30. (a) |

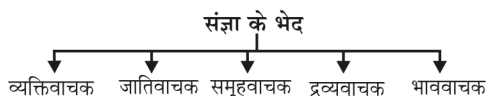
संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया एवं विशेषण तथा भेद

संज्ञा

किसी जाति, द्रव्य, गुण, भाव, व्यक्ति, स्थान और क्रिया आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं।

अथवा

‘संज्ञा’ उस विकारी शब्द को कहते हैं, जिससे किसी विशेष वस्तु, भाव और जीव के नाम का बोध हो। जैसे- पशु (जाति.), सुन्दरता (गुण.), मोहन (व्यक्ति.), दिल्ली (स्थान.), व्यथा (भाव.), मारना (क्रिया.)। इस प्रकार सामान्यतः संज्ञा के ‘पाँच’ भेद होते हैं, जो निम्न हैं-



1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा-** जिस शब्द से किसी एक ही व्यक्ति या वस्तु का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक ‘संज्ञा’ कहते हैं, जैसे- काशी, राम, संध्या, लखनऊ, गाँधी आदि।

व्यक्तियों के नाम- राम, दिनेश, महेश आदि।

दिशाओं के नाम - पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण आदि।

देशों के नाम- नेपाल, भारत, पाकिस्तान, भूटान।

समुद्रों के नाम- हिन्द महासागर, कालासागर, प्रशांत महासागर, भूमध्य सागर आदि।

पर्वतों के नाम- अलकनंदा, हिमालय, कराकोरम, विंध्याचल आदि।

नदियों के नाम- सिंधु, कृष्णा, वोल्गा, गंगा, ब्रह्मपुत्र, कावेरी आदि।

दिनों, महीनों के नाम- सोमवार, मंगलवार, बुधवार, मई जून आदि।

ऐतिहासिक युद्धों और घटनाओं के नाम- अक्तूबर-क्रांति, पानीपत की पहली लड़ाई आदि।

नगरों, चौकों और सड़कों के नाम- चाँदनी चौक, वाराणसी, गया, अशोक मार्ग आदि।

पुस्तकों तथा समाचारपत्रों के नाम- धर्मयुग, इंडियन नेशन, आर्यावर्त, रामचरितमानस आदि।

त्योहारों, उत्सवों के नाम- रक्षाबंधन, दीवाली, होली आदि।

राष्ट्रीय जातियों के नाम- अमेरिकी, रूसी, भारतीय आदि।

2. **जातिवाचक संज्ञा-** जिस संज्ञा से किसी जाति के सम्पूर्ण पदार्थों वा उनके समूहों का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं, जैसे- घर, मनुष्य, नदी, पहाड़ सभा इत्यादि।

पशु-पक्षियों के नाम- गाय, घोड़ा, तोता, मैना आदि।

प्राकृतिक तत्वों के नाम- भूकम्प, बिजली, वर्षा, तूफान ज्वालामुखी आदि।

संबंधियों, व्यवसायों पदों और कार्यों के नाम- मंत्री, बहन, प्रोफेसर, ठग आदि।

वस्तुओं के नाम- कमल, कुर्सी, घड़ी, टेबुल, मकान

3. **समूह वाचक संज्ञा-** जब किसी संज्ञा शब्द से वस्तु अथवा व्यक्ति के समूह का बोध हो, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- गिरोह, सभा कुंज, दल, मंडल आदि।

4. **द्रव्यवाचक संज्ञा-** जिस संज्ञा शब्द से नाप-तौल वाली वस्तु का बोध हो, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा है। जैसे- दूध, सोना, चाँदी, तेजाब आदि।

5. **भाववाचक संज्ञा-** जिस संज्ञा शब्द से व्यक्ति या वस्तु के गुण या धर्म दशा अथवा व्यापार को बोध होता है, उसे भाववाचक ‘संज्ञा’ कहते हैं, जैसे- बुढ़ापा, लम्बाई, मिठास, नम्रता, निजत्व आदि।

भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण जातिवाचक संज्ञा, विशेषण, क्रिया, सर्वनाम और अव्यय में प्रत्यय लगाकर भाववाचक संज्ञा बनता है, जैसे-

1. **जातिवाचक संज्ञा से-** बूढ़ा- बुढ़ापा, मित्र-मित्रता, पंडित-पंडिताई, दास-दासत्व इत्यादि।

2. **विशेषण से-** कठोर-कठोरता, चतुर-चतुराई, गर्म-गर्मी, सर्द-सर्दी इत्यादि।

3. **क्रिया से-** सजाना-सजावट, चढ़ना-चढ़ाई, बहना-बहाव, घबराना-घबराहट इत्यादि।

4. **सर्वनाम से-** मम-ममता या ममत्व, अपना-अपनापन या अपनत्व, निज-निजता या निजत्व इत्यादि।

5. **अव्यय से-** दूर-दूरी, निकट-नैकट्य, समीप-सामीप्य, शबाश-शाबाशी इत्यादि।

संज्ञाओं का प्रयोग

संज्ञाओं के प्रयोग में कभी-कभी उलटफेर भी हो जाया करता है। इस प्रकार से इसके निम्नलिखित उदाहरण दिए जा रहे हैं-

(अ) **व्यक्तिवाचक में जातिवाचक-** कभी-कभी व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक में होता है। ऐसा किसी व्यक्ति का असाधारण गुण या धर्म दिखाने के लिए किया जाता है। ऐसी दशा में व्यक्तिवाचक संज्ञा जातिवाचक संज्ञा में बदल जाती है। **जैसे-** उदयभान आज के गाँधी है। तुम कलियुग के राम हो, इत्यादि।

(ब) **जातिवाचक से व्यक्तिवाचक-** कभी-कभी जातिवाचक संज्ञाओं का प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञाओं में होता है। **जैसे-** 'देवी' से दुर्गा का, 'दाऊ' से कृष्ण के भाई बलदेव का, 'पुरी' से जगन्नाथ पुरी का, 'गोस्वामी' से तुलसीदास जी का बोध होता है। इस प्रकार बहुत सी योगरूढ़ संज्ञाएँ मूल रूप से जातिवाचक होते हुए भी प्रयोग में व्यक्तिवाचक के अर्थ में चली जाती हैं, **जैसे-** हनुमान, हिमालय, गणेश इत्यादि।

(स) **भाववाचक से जातिवाचक-** कभी-कभी भाववाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक संज्ञा में होता है, **जैसे-** ये सब कैसे अच्छे पहरावे हैं। यहाँ 'पहरावा' भाववाचक संज्ञा है, किन्तु प्रयोग जातिवाचक संज्ञा में हुआ। 'पहरावे' से 'पहनने के वस्त्र' का बोध होता है।

सर्वनाम

वाक्यों में संज्ञा की पुनरावृत्ति से बचने के लिए संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

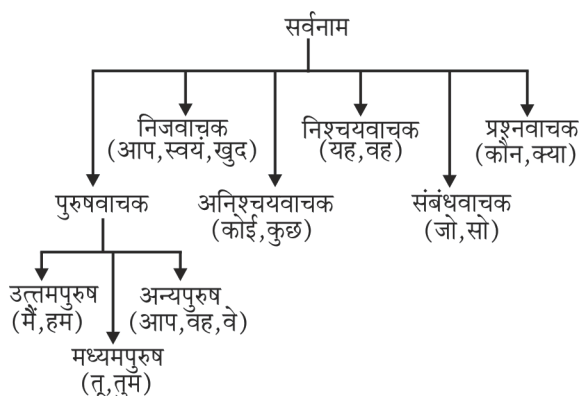
अथवा

'सर्वनाम' उस विकारी शब्द को कहते हैं, जो पूर्वापर संबंध से किसी भी संज्ञा के बदले आता है।

(पं. कामता प्रसाद गुरु)

जैसे- मैं, तुम, वह, यह इत्यादि। सर्व (सब) नामों (संज्ञाओं) के बदले जो शब्द आते हैं, उन्हें 'सर्वनाम' कहते हैं।

हिन्दी में कुल ग्यारह सर्वनाम हैं- मैं, तू, आप, यह, वह, जो, सो, कोई, कुछ, कौन, क्या। प्रयोग के अनुसार सर्वनाम के छः भेद हैं, जो निम्नलिखित हैं-



1. **पुरुषवाचक सर्वनाम-** जो सर्वनाम किसी पुरुष या स्त्री के लिए प्रयोग में आता है उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं, जैसे- मैं, तुम, वह आदि। इसके तीन प्रकार होते हैं-

1. **उत्तमपुरुष वाचक सर्वनाम-** वक्ता या लेखक अर्थात् बोलनेवाला/लिखनेवाला अपने को सबसे उत्तम मानता है वक्ता के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है वे उत्तम पुरुष सर्वनाम कहलाते हैं। **जैसे-** मैं, मेरा, हम, हमारा।

2. **मध्यमपुरुष वाचक सर्वनाम-** श्रोता के नाम के स्थान पर जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, उन्हें मध्यम पुरुषवाचक कहते हैं। **जैसे-** तू, तुम, आप आदि।

3. **अन्य पुरुष वाचक सर्वनाम-** वक्ता और श्रोता से भिन्न अन्य तीसरे व्यक्ति और वस्तु जो अनुपस्थित है, उनके लिए प्रयुक्त सर्वनाम अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। **जैसे-** वे, वह आदि।

1. **पुरुषवाचक सर्वनाम की विभक्ति एवं वचनवार तालिका**

विभक्ति	एकवचन			बहुवचन		
	उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	अन्य पुरुष	उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	अन्य पुरुष
मूल	मैं	तू	वह	हम	तुम/आप	वे
ने	मैंने	तूने	उसने	हमने	तुमने/आपने	उन्होंने
तिर्यक (परसर्ग सहित)	से, मैं, पर	मुझसे, मुझमें, मुझपर	तुझसे, तुझमें, तुझपर	उससे, उसमें, उसपर	हमसे, हममें, हमपर	तुमसे, तुममें, तुमपर, आपमें, आपपर
को	मझे/मुझको	तुझे/तुझको	उसे/उसको	हमें/हमको	तुम्हें/तुमको, आपको	उन्हें/उनको
संबंध वाचक	का, के, की, रा, रे, री	मेरा, मेरे, मेरी	तेरा, तेरे, तेरी	उसका, उसके, उसकी	हमारा, हमारे, हमारी	तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी
						उनका, उनके, उनकी

2. **निजवाचक सर्वनाम-** 'निज' अर्थात् अपना। जो सर्वनाम स्वयं के लिए प्रयुक्त होते हैं, वे निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। **जैसे-** आप आ जाओ, मैं खाना स्वयं ही लगा लूँगा।

अतः स्वयं, आपही, अपने आप, खुद, स्वतः आदि निजवाचक सर्वनाम हैं। निजवाचक सर्वनामों का प्रयोग क्रिया के पूर्व होता है।

3. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम-** जो सर्वनाम किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध नहीं करवाते वे अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं। **जैसे-** कोई, कुछ।

किसी वस्तु या व्यक्ति के संबंध में अनिश्चयपूर्ण स्थिति हो तो जिन सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है। वे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। **जैसे-**

- * मुझे लगा कि बाहर कोई खड़ा है।
- * ऐसे कैसे जाओगे, कुछ खाकर ही जाना।

नोट- प्रायः 'कोई' सर्वनाम का प्रयोग सजीव वस्तु के लिए तथा 'कुछ' सर्वनाम का प्रयोग निर्जीव वस्तु के लिए किया जाता है।

4. **निश्चयवाचक सर्वनाम-** जो सर्वनाम दूर या समीप की किसी वस्तु, घटना आदि का निश्चित बोध करवाते हैं, निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

अथवा

जिस सर्वनाम से किसी वस्तु का निश्चित बोध होता है, वह निश्चयवाचक सर्वनाम होता है। **जैसे-** यह, वह।

अतः दूरवर्ती वस्तुओं के लिए 'वह' और समीप की वस्तुओं के लिए 'यह' का प्रयोग होता है। **जैसे-**

- * वह उठकर दे दो (दूर पड़ी वस्तु के लिए)
- * यह आलमारी में रख दो (पास की रखी वस्तु के लिए)

4. **निश्चयवाचक, संबंधवाचक, प्रश्नवाचक**

विभक्ति	एकवचन			बहुवचन		
	निश्चयवाचक	संबंधवाचक	प्रश्नवाचक	निश्चयवाचक	संबंधवाचक	प्रश्नवाचक
	मूल - ने	यह वह जो इसने, उसने	कौन, क्या, किसने	ये, वे, इन्होंने, उन्होंने	जो जिन्होंने	कौन क्या किन्होंने
तिर्यक (परसर्ग सहित)	से, में, पर	इससे, इसमें, इसपर, उससे, उसमें, उसपर	जिससे, जिसमें, जिसपर	किस से, इससे, उनसे, इनमें, उनमें, इनपर, उनपर	जिन से, जिसमें, जिनपर	किनसे, किनमें, किनपर
	को	इसको/ इसे उसको/ उसे	जिसको/ जिसे	किसको/ किसे	इनको/ इन्हें उनको/ उन्हें	जिनको/ किन्हें
संबंधवाचक	का, के, की	इसका, इसके इसकी, उसका, उसके,	जिसका, जिसके, जिसकी	किसका, किसके, किसकी	इनका, इनके, इनकी, उनका, उनके,	जिनका, जिनके, जिनकी

	उसकी			उनकी		
--	------	--	--	------	--	--

⇒ निश्चय के रूप अन्य पुरुषवाचक के साथ ही देखने चाहिए, क्योंकि अन्य पुरुषवाचक ही निश्चय सर्वनाम है।

5. **संबंधवाचक सर्वनाम-** निश्चित वाक्य के उपवाक्यों में प्रयुक्त संज्ञा से संबंध दिखाने वाले सर्वनामों को संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं।

ये सर्वनाम प्रधान उपवाक्य में आए संज्ञा या सर्वनाम पदों के साथ आश्रित उपवाक्य का संबंध दर्शाने का काम करते हैं। जो, जिस आदि संबंधवाचक सर्वनाम है।

अथवा

जिस सर्वनाम से वाक्य में किसी दूसरे सर्वनाम से संबंध स्थापित किया जाए, उसे '**संबंधवाचक**' सर्वनाम कहते हैं।

इस प्रकार इसके उदाहरण निम्नलिखित हैं-

- * जो सही राह पर चलता है, उसे सब सम्मान देते हैं।
- * यह वही पुस्तक है जिसे तुम पढ़ना चाहते थे।
- * जिससे तुम मिलना चाहते हो, वह बाहर बैठा है।

अतः यहाँ जो, जिससे, जिसे, जिसकी, उसकी दूसरे उपवाक्यों से संबंध स्थापित कर रहे हैं।

6. **प्रश्नवाचक सर्वनाम-** जिन सर्वनामों से किसी संज्ञा के विषय में प्रश्न का बोध हो, वे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

अथवा

प्रश्न करने के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग होता है, उन्हें 'प्रश्नवाचक सर्वनाम' कहते हैं; **जैसे-** कौन, क्या, किसने, किसे आदि इसके उदाहरण इस प्रकार हैं-

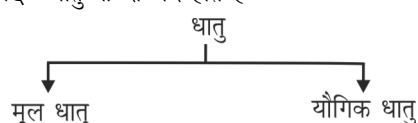
- * कौन आया है?
- * किसने कहा कि हम जीत गए?

धातु एवं क्रिया

धातु- क्रिया का मूल 'धातु' है जो किसी क्रिया के प्रायः सभी रूपों में पाया जाता है। हिन्दी में सामान्यतः क्रिया का रूप मूलधातु में 'ना' प्रत्यय लगाने से बनती है; **जैसे-** पढ़ + ना = पढ़ना, देख + ना = देखना।

हिन्दी में क्रियाएँ धातुओं के अलावा संज्ञा और विशेषण से भी बनती है; **जैसे-** चमक + आना = चमकाना, चिकना + आना = चिकनाना, दुहरा + आना = दुहराना।

धातु के भेद- धातु के दो भेद होते हैं-



मूलधातु- मूल धातु स्वतंत्र होती है। यह किसी दूसरे शब्द पर आश्रित नहीं होती; जैसे- खा, देख, पी इत्यादि।

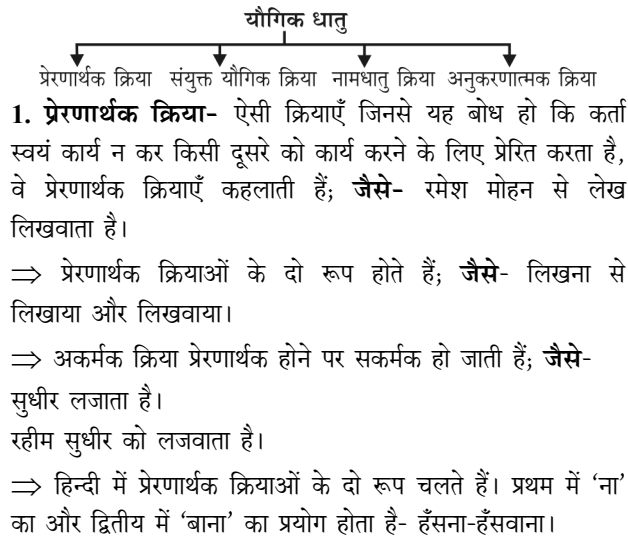
यौगिक धातु- ऐसी धातु जो किसी प्रत्यय के योग से बनती है यौगिक धातु कहलाती है; **जैसे-** पढ़ना से पढ़ा, लिखना से लिखा, दौड़ना से दौड़ा।

⇒ 'आ' प्रत्यय के जोड़ने से यौगिक धातु का निर्माण होता है।

यौगिक धातु की रचना

1. धातु में प्रत्यय लगाने से अकर्मक से सकर्मक और प्रेरणार्थक धातुएँ बनती हैं।
2. कई धातुओं को मिलाने (संयुक्त करने) से संयुक्त धातु का निर्माण होता है।
3. मूलधातु में संज्ञा व विशेषण प्रत्यय लगाने से नामधातु बनती है।

यौगिक धातु के प्रकार- यौगिक धातु को ही क्रिया भी कहते हैं, ये चार प्रकार होती हैं



मूलधातु	प्रत्यय	मूल क्रिया	प्रेरणार्थक क्रिया
उड़	ना	उड़ना	उड़ाना, उड़वाना
उठ	ना	उठना	उठाना, उठवाना
चल	ना	चलना	चलाना, चलवाना
कर	ना	करना	कराना, करवाना
खा	ना	खाना	खिलाना, खिलवाना
लिख	ना	लिखना	लिखाना, लिखवाना
पढ़	ना	पढ़ना	पढ़ाना-पढ़वाया
पी	ना	पीना	पिलाना, पिलवाना
चल	ना	चलना	चलाना, चलवाना

2. संयुक्त अथवा यौगिक क्रिया- दो या दो से अधिक धातुओं के मेल से जो क्रिया बनती है, वह यौगिक क्रिया कहलाती है; **जैसे-** लिखना-लिखाना, चलना-चलाना आदि।

3. नामधातु क्रिया- ऐसी धातुएँ जो संज्ञा या विशेषण से बनती है, उसे नामधातु कहते हैं; **जैसे-**

संज्ञा से- हाथ से हथियाना

विशेषण- चिकना से चिकनाना

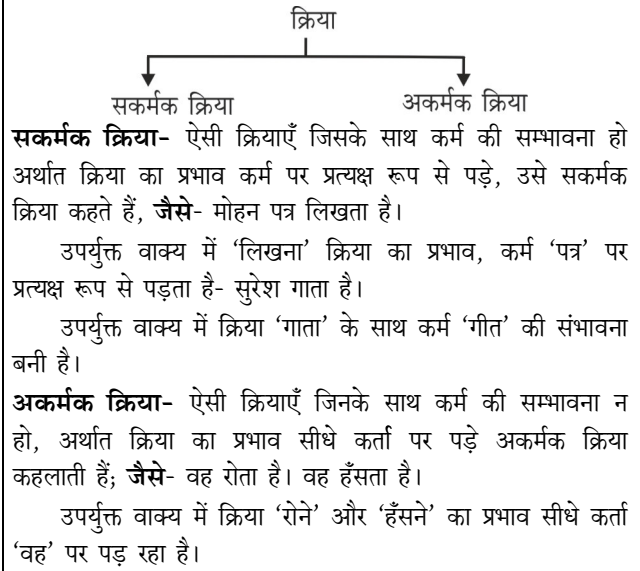
ठण्डा से ठण्डाना

4. अनुकरणात्मक क्रियाएँ- वह ध्वनि जिसे क्रियाओं के रूप में अपना लिया जाता है, अनुकरणात्मक क्रियाएँ कहलाती हैं; **जैसे-** बड़बड़ से बड़बड़ाना, टिकटिक से टिकटिकाना, थपथप से थपथपाना।

क्रिया

जिस शब्द से किसी काम का करना या होना पाया जाय उसे क्रिया कहते हैं; **जैसे-** खाना, पीना, दौड़ना, लिखना, रोना, गाना आदि। क्रिया एक विकारी शब्द है जिसके रूप, लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार बदलते हैं।

रचना की दृष्टि से क्रिया के भेद- रचना की दृष्टि से क्रिया के सामान्यतः दो भेद हैं।



विशेष-

सकर्मक और अकर्मक क्रिया की पहचान-

क्रिया में 'क्या', 'कैसे' या 'किसको' आदि प्रश्न करने से यदि उत्तर मिले तो ऐसी क्रियाएँ सकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं, यदि न मिले तो अकर्मक होगी। **जैसे-** रहीम पढ़ा - **वाक्य**

रहीम क्या पढ़ा- **प्रश्न**

रहीम किताब पढ़ा- **उत्तर (संभावित)**

नोट- जिन धातुओं का प्रयोग अकर्मक और सकर्मक दोनों रूपों में होता है, उन्हें उभयविध धातु कहते हैं।

द्विकर्मक क्रिया- ऐसी क्रियाएँ जिनके साथ दो कर्म हों, द्विकर्मक क्रिया कहलाती हैं; **जैसे-** मैं बालक को हिन्दी पढ़ाता हूँ।

उपर्युक्त वाक्य में 'पढ़ाना' क्रिया है। जिसका कर्म 'बालक' और 'हिन्दी' है।

संयुक्त क्रिया- ऐसी क्रियाएँ जो दो या दो से अधिक क्रियाओं के मेल से बनती है उन्हें संयुक्त क्रिया कहते हैं। पहली क्रिया प्रायः मुख्य होती है और दूसरी क्रिया पहली क्रिया कि अर्थ को और अधिक स्पष्ट करती है; **जैसे-** मैं बाजार जा सकता हूँ।

उपर्युक्त वाक्य में 'सकना' क्रिया 'जाना' क्रिया के अर्थ में विशेषता उत्पन्न करती है।

संयुक्त क्रिया के भेद- अर्थ के अनुसार संयुक्त क्रिया के 11 मुख्य भेद हैं।

संयुक्त क्रिया			
आरम्भ बोधक समाप्ति बोधक अवकाश बोधक अनुमति बोधक नित्यता बोधक आवश्यकता बोधक निश्चय बोधक इच्छा बोधक अभ्यास बोधक शक्ति बोधक पुनरुक्ति बोधक			
क्र.	संयुक्त क्रिया के भेद	परिभाषा	उदाहरण
1.	आरम्भबोधक क्रिया	जब संयुक्त क्रिया से क्रिया के आरम्भ होने का बोध हो	(i) रहीम जाने लगा। (ii) सीता खाने लगी। (iii) पानी बरसने लगा।
2.	समाप्तिबोधक क्रिया	जब संयुक्त क्रिया से मुख्य क्रिया की पूर्णता व्यापार की समाप्ति का बोध हो। नोट- धातु के आगे 'चुकना' जोड़ने से समाप्तिबोधक संयुक्त क्रियाएँ बनती हैं।	(i) वह जा चुका है। (ii) वह पढ़ चुका है। (iii) सीता खा चुकी है।
3.	अवकाश बोधक क्रिया	जिससे क्रिया को निष्पन्न करने के लिए अवकाश का बोध हो।	वह मुश्किल से सो पाया; जाने न पाया।
4.	अनुमति बोधक क्रिया	जिससे कार्य करने की अनुमति दिए जाने का बोध हो।	(i) मुझे पढ़ने दो। (ii) मुझे गाने दो। (iii) मुझे हँसने दो।
5.	नित्यता बोधक क्रिया	जिससे कार्य की नित्यता, उसके बन्द न होने का भाव प्रकट हो।	(i) रहीम गाता रहा। (ii) हवा चल रही है। (iii) पेड़ बढ़ता गया।
6.	आवश्यकता बोधक क्रिया	जिससे कार्य की आवश्यकता या कर्तव्य का बोध हो। नोट- साधारण क्रिया के साथ	(i) आप को यह कार्य करना चाहिए। (ii) मुझे स्कूल जाना पड़ता है। (iii) रहीम को पढ़ना चाहिए।

		'पढ़ना' 'होना' या 'चाहिए' क्रियाओं को जोड़ने से आवश्यकता बोधक संयुक्त क्रियाएँ बनती हैं।	
7.	निश्चय बोधक क्रिया	जिस संयुक्त क्रिया से मुख्य क्रिया के निश्चयता का बोध हो।	(i) उसने कहा मैं मार बैठूँगा। (ii) वह भाग गया। (iii) अब कह ही डालो।
8.	इच्छा बोधक क्रिया	जिससे क्रिया के करने की इच्छा प्रकट हो	(i) वह पढ़ना चाहता है। (ii) रहीम जाना चाहता है। (iii) वह घर आना चाहता है।
9.	अभ्यास बोधक क्रिया	जब क्रिया के करने के अभ्यास का बोध हो।	(i) राघव पढ़ा करता है। (ii) सीता लिखा करती है। (iii) तुम खेला करते हो।
10.	शक्ति बोधक क्रिया	जब कार्य करने की शक्ति का बोध हो।	(i) वह गा सकती है। (ii) तुम पढ़ सकते हो। (iii) सीता चल सकती है।
11.	पुनरुक्ति बोधक क्रिया	जब दो समानार्थक क्रियाओं का संयोग हो	(i) राधा पढ़ा लिखा करती है। (ii) राघव यहाँ आया जाया करता है। (iii) मनुष्य को आपस में मिलते-जुलते रहना चाहिए।

क्रिया के कुछ अन्य भेद- क्रिया के कुछ अन्य भेद निम्नवत् हैं- सहायक क्रिया- मुख्य क्रिया के अर्थ को स्पष्ट और पूरा करने में सहायता प्रदान करने वाली क्रिया, सहायक क्रिया कहलाती है; जैसे-

- (i) राम दौड़ता है।
(ii) तुम गाते हो।
(iii) वे खेल रहे हैं।

⇒ उपर्युक्त वाक्य में दौड़ना, गाना, खेलना मुख्य क्रियाएँ हैं। शेष क्रियाएँ हैं, रहे हैं- सहायक क्रियाएँ हैं।

नामबोधक क्रिया- संज्ञा अथवा विशेषण के साथ क्रिया जोड़ने से जो संयुक्त क्रिया बनती है उसे 'नामबोधक क्रिया' कहते हैं; **जैसे-** (i) दुःखी होना, (ii) निराश होना

नोट- नामबोधक क्रियाएँ संयुक्त क्रियाएँ नहीं हैं। संयुक्त क्रियाएँ दो क्रियाओं के योग से बनती हैं और नामबोधक क्रियाएँ संज्ञा अथवा विशेषण के मेल से बनती हैं। दोनों में यही अन्तर है।

पूर्वकालिक क्रिया- जब कर्ता एक क्रिया समाप्त कर उसी क्षण दूसरी क्रिया में प्रवृत्त होता है तब पहली क्रिया 'पूर्व कालिक' कहलाती है; **जैसे-** (i) महेश खाकर सो गया।

(ii) नहाकर पूजा किया।

⇒ उपर्युक्त वाक्य में 'नहाकर' 'खाकर' पूर्वकालिक क्रिया है।

क्रियार्थक क्रिया- जब क्रिया संज्ञा की तरह व्यवहार में आय तब वह क्रियार्थक संज्ञा कहलाती है; **जैसे-** टहलना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। हँसना हृदय के लिए अच्छा है।

विशेषण

जिस विकारी शब्द से संज्ञा की व्याप्ति मर्यादित होती है, उसे विशेषण कहते हैं। **जैसे-** काला, दयालु, सब, बड़ा आदि।

अथवा

जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताए, उसे विशेषण कहते हैं। **जैसे-** लाल, अच्छा, नीला आदि।

अथवा

विशेषण एक ऐसा विकारी शब्द है, जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है। **जैसे-** स्वच्छ, पीला, ऐसा आदि।

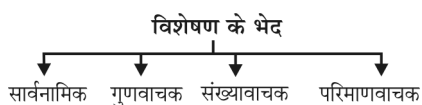
विशेष्य- विशेषण शब्द जिसकी विशेषता बताये, उसे विशेष्य कहते हैं, **जैसे-** काला कुत्ता

(इस वाक्य में 'कुत्ता' विशेष्य है तथा 'काला' विशेषण है)

अथवा

जिस शब्द (संज्ञा अथवा सर्वनाम) की विशेषता बतायी जाती है उसे विशेष्य कहते हैं **जैसे-** सफेद कबूतर (इस वाक्य में 'सफेद' विशेषण है तथा 'कबूतर' विशेष्य है।)

इस प्रकार विशेषण के मुख्यतः चार भेद हैं जो इस ग्राफ में दर्शाया गया है-



सर्वनामिक विशेषण-

पुरुषवाचक और निजवाचक सर्वनामों को छोड़कर शेष सर्वनामों का प्रयोग विशेषण के समान होता है जब ये शब्द अकेले आते हैं, तब सर्वनाम होते हैं और जब इनके साथ संज्ञा आती है तब ये विशेषण होते हैं।

कुछ सर्वनाम शब्द जब किसी संज्ञा की विशेषता बताने के लिए विशेषण के रूप में प्रयुक्त हों, तब वे सर्वनामिक विशेषण बन जाते

हैं। **जैसे-** यह पुस्तक पढ़ने लायक है। अतः इस वाक्य में 'यह' सर्वनामिक विशेषण है।

सर्वनामिक विशेषण के भेद

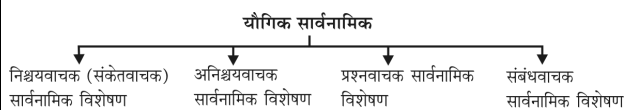
मौलिक सर्वनामिक

यौगिक सर्वनामिक

मौलिक सर्वनामिक- जो बिना किसी रूपान्तर के संज्ञा के साथ आते हैं; मौलिक सर्वनामिक कहलाते हैं, **जैसे-** वह लड़का, यह घर इत्यादि।

यौगिक सर्वनामिक- जो मूल सर्वनामों में प्रत्यय लगाने से बनते हैं और संज्ञा के साथ आते हैं उन्हें यौगिक सर्वनामिक विशेषण कहते हैं, **जैसे-** ऐसा आदमी, उतना काम, कैसा घर इत्यादि।

अतः यौगिक सर्वनामिक के निम्नांकित भेद हैं जो इस ग्राफ में दर्शाया गया है-



[i] निश्चयवाचक सर्वनामिक विशेषण- ये संज्ञा की ओर निश्चयात्मक संकेत करते हैं। **जैसे-** यह, वह, इस उस

उदाहरण- इस कमरे में अगरबत्ती जला दो। (अतः इन वाक्य में इस निश्चयात्मक संकेत दे रहा है)

[ii] अनिश्चयवाचक सर्वनामिक विशेषण- ये संज्ञा की अनिश्चयात्मक स्थिति की ओर संकेत करते हैं **जैसे-** कोई, कुछ, किसी।

उदाहरण- कोई किताब पढ़ सकते हैं। (यहाँ कोई अनिश्चितता की ओर संकेत कर रहा है)

कुछ लोग सभा बीच में छोड़कर चले गए। (यहाँ 'कुछ' अनिश्चय की ओर संकेत कर रहा है)

[iii] प्रश्नवाचक सर्वनामिक विशेषण- ये संज्ञा से संबंधित प्रश्नों का बोध कराते हैं। **जैसे-** कौन, क्या, किस।

उदाहरण- कौन-सा घर आपको पसंद है? (इस उदाहरण में 'कौन' प्रश्नवाचक की तरह संकेत कर रहा है)

[iv] संबंधवाचक सर्वनामिक विशेषण- जहाँ संबंध बताने वाले सर्वनामों का प्रयोग विशेषणों की तरह किया जाए। **जैसे-** जो, जिस।

उदाहरण- जिस काम को कोई नहीं कर पाया उस काम को लक्ष्मीबाई ने कर दिखाया।

विशेषण और विशेष्य सम्बन्ध- इस वाक्य में विशेषण का प्रयोग दो प्रकार से होता है-

- विशेष्य विशेषण
- विधेय विशेषण

1. विशेष्य विशेषण- विशेष्य के पहले आने वाले विशेषण को विशेष्य विशेषण कहते हैं। **जैसे-**

- काला घोड़ा दौड़ा रहा है। (यहाँ 'काला' विशेष्य विशेषण है।)

- गुड़ी सुशील गृहणी है। (यहाँ 'सुशील' विशेष्य विशेषण है)

2. विधेय विशेषण- विशेष्य के बाद और क्रिया के पहले आने वाले विशेषण को विधेय विशेषण कहते हैं, जैसे-

- मेरा कुत्ता काला है (यहाँ काला विधेय-विशेषण है।)
- मेरी गाय सीधी है। (यहाँ सीधी विधेय-विशेषण है।)

गुणवाचक विशेषण

जो विशेषण अपने विशेष्य के गुणों का बोध करवाते हैं, गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं। गुणों के तात्पर्य है किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण-दोष आकार-प्रकार, रूप रंग, अवस्था, दशा, स्थिति शीघ्र आदि का वर्णन करना। कुछ गुणवाचक विशेषणों के उदाहरण इस प्रकार हैं-

- [i] **गुण-दोष-** अच्छा, बुरा, दयालु, ईमानदार, उदार, अनुचित, समझदार, मेहनती, चतुर, आलसी, दुष्ट।
- [ii] **आकार-प्रकार-** मोटा, लंबा, गील, चौरस, छोटा, आयताकार।
- [iii] **रंग-रूप-** आकर्षक, काला, मनोहर, साँवला, गोरा, सुन्दर।
- [iv] **अवस्था/दशा-** गरीब, दुबला, पतला, स्वस्थ, दरिद्र, रोगी, कमजोर अमीर।
- [v] **स्वाद/गंध-** खट्टा, मीठा, कड़वा, फीका, सुगंधित, दुर्गंधपूर्ण सुवादित।
- [vi] **स्थान/देशकाल-** शहरी, जापानी, भाषी, भारतीय, आगामी, ऐतिहासिक, टिकाऊ, ग्रामीण, प्राचीन, पंजाबी।
- [vii] **स्थिति-** निचला, स्थिर, ऊपरी, बाहरी, आंतरिक, डाँवा-डोल, टिकाऊ
- [viii] **दिशा-** पश्चिमी, पूर्वी, उत्तरी, दक्षिणी।
- [ix] **स्पर्श-** खुरदरा, गर्म, ठंडा, हल्का, चिकना, मुलायम, कठोर।

नोट- गुणवाचक विशेषण की पहचान के लिए संज्ञा के साथ कैसा/कैसी लगाकर प्रश्न कीजिए। उत्तर में जो विशेषण आए वह गुणवाचक है, जैसे-

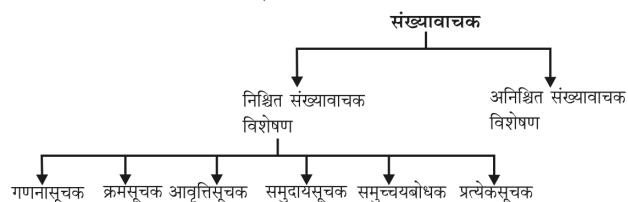
ताजे फल ले आओ।- कैसे फल?- ताजे।

ग्रामीण युवतियाँ काम करती हैं। कैसी युवतियाँ?- ग्रामीण।

ताजे और ग्रामीण-दोनों गुणवाचक विशेषण हैं।

संख्यावाचक विशेषण

जो विशेष्य की संख्या के बारे में बोध करवाएँ, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे- पचास फूल, कुछ लोग, सब बच्चे, अतः जिन वस्तुओं को गिना जा सकता है उनके विशेषण संख्यावाचक होते हैं। ये प्रायः जातिवाचक होती हैं। संख्यावाचक विशेषण के दो भेद हैं- जो इस ग्राफ में दर्शाया गया है।



[I] निश्चित संख्यावाचक विशेषण- ये विशेषण विशेष्य की निश्चित संख्या का संकेत करते हैं, जैसे कल से दुगुने फूल लाना।

इसके अन्य भेद इस प्रकार से हैं-

(क) गणनासूचक- जहाँ वस्तुओं और प्राणियों की गिनती की जाए- पाँच फूल, दो विद्यार्थी, तीन कमरे, पौना घंटा।

(ख) क्रमसूचक- क्रम की सूचना देने वाले विशेषण- पहला बच्चा दूसरी पंक्ति, तीसरी मंजिल, चौथा घर।

(ग) आवृत्तिसूचक- जिन विशेषणों से विशेष्य को तहों या गुणन का बोध हो दुगुनी रोटी, चौगुने वृक्ष, इकहरा बदन, दोहरा कपड़ा

(घ) समुदायसूचक- जो विशेषण कुछ संख्याओं के इकट्ठे समूह का बोध करवाएँ- दोनों बच्चे, चारों वृक्ष

(ङ) समुच्चयबोधक- प्रचलित समुच्चय को प्रकट करने वाले विशेषण- दर्जन (12), कौड़ी (20), गुर्स (149), जोड़ा या युग्म (दो), सतसई (700), बत्तीसी (32), चालीसा (40), शताब्दी (100)

(च) प्रत्येकसूचक- प्रत्येक का बोध करवाने वाले विशेषण- प्रत्येक साधक, हर घड़ी प्रतिवर्ष आदि।

[II] अनिश्चितसंख्यावाचक विशेषण- ये विशेषण विशेष्य की किसी निश्चित संख्या की सूचना न देकर उसका अस्पष्ट अनुमान प्रस्तुत करते हैं-

* बाहर बहुत लोग आए हैं।

* सब पक्षी उड़ गए।

* थोड़े कार्ड और बनने हैं।

⇒ बहुत, कुछ, सब, थोड़ा परिमाणवाचक विशेषण भी हो सकते हैं।

नोट- आप विशेष्य देखिए यदि गिना जा सकता है तो विशेषण संख्यावाचक होगा और यदि उसे मापतौल सकते हैं तो परिमाणवाचक विशेषण होगा।

• बहुत लोग/वृक्ष- संख्यावाचक विशेषण

• बहुत चावल/कपड़ा- परिमाणवाचक विशेषण

⇒ कई बार निश्चित संख्यावाचक विशेषण तो होता पर निश्चितता का बोध नहीं होता-

* सैकड़ों लोग बेघर हो गए।

* हजारों मेवशी बाढ़ में बह गए।

इस वाक्य में 'सैकड़ों', 'हजारों' आदि अनिश्चितता का बोध करवा रहे हैं, इन्हें अनिश्चित संख्यावाची मानना चाहिए।

परिमाणवाचक विशेषण

परिमाण का अर्थ है- मात्रा।

जो विशेषण की मात्रा अर्थात् माप, तौल की जानकारी दें, वे परिमाणवाचक विशेषण कहे जाते हैं।

जैसे- * चार लीटर दूध

* दो मीटर कपड़ा

* एक किलो अनाज

* थोड़ी चीनी

जिन वस्तुओं की गिनती संभव नहीं है उन्हें मापकर या तौलकर उसकी मात्रा का पता लगाया जाए, उनके विशेषण परिमाणवाचक होते हैं। परिमाणवाचक विशेषण के दो भेद माने गये हैं। जो इस ग्राफ में दर्शाया गया है।

परिमाणवाचक विशेषण

निश्चित परिमाणवाचक
विशेषण

अनिश्चित परिमाणवाचक
विशेषण

[I] निश्चित परिमाणवाचक विशेषण- जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित मात्रा या परिमाण का बोध करवाएँ-

- पाँच किलो आटा चाहिए।
- दस ग्राम सोने की चूड़ी बनी है।

इन दोनों वाक्यों में पाँच किलो, दस ग्राम निश्चित परिमाण का संकेत कर रहे हैं, अतः निश्चित परिमाणवाचक विशेषण हैं।

[II] अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण- ये ऐसे विशेषण होते हैं जिनसे मात्रा का ज्ञान तो होता है पर निश्चित नहीं होता मापा-तौल हुआ नहीं होता, अनुमानतः होता है। ऐसे विशेषणों को अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

- थोड़ी चटनी लेंगे आप?
- ज्यादा मीठा नहीं खाना चाहिए।

इन दोनों वाक्यों में थोड़ी, ज्यादा अनिश्चित परिमाण के विषय में बता रहे हैं इसलिए अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण हैं।

विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

- विशेषण के मुख्यतः कितने भेद होते हैं?**
(a) तीन (b) चार
(c) छह (d) दो
उ.प्र.पु. कांस्टेबल 25.10.2018
उत्तर : (b)
- निम्नलिखित शब्दों में से जो शब्द विशेषण नहीं है, उसका उल्लेख कीजिए -**
(a) सज्जन (b) दुर्जन
(c) सुकुमार (d) मानस
UP RO (Pre.), 2010
उत्तर : (d)
- ‘महान’ का उत्तरावस्था होगा -**
(a) महानतर (b) महत्तम
(c) महत्तर (d) महानतम
UDA/LDA परीक्षा, 2015
उत्तर : (c)
- निम्नलिखित शब्दों में से विशेषण को पहचानिए।**
(a) ऐतिहासिक (b) उपासना
(c) आश्वासन (d) अपेक्षा
UPP Constable, 19.06.2018 IInd Shift
उत्तर : (a)
- नीचे दिए गए शब्द किस गुणवाचक विशेषण के प्रकार हैं? अच्छा, दानी, न्यायी, कृपालु**
(a) आकारबोधक (b) गंधबोधक
(c) गुणबोधक (d) दोषबोधक
UPSI Batch - II 12 Dec.2017
उत्तर : (c)
- ‘मीठा अमरूद’ में ‘मीठा’ विशेषण किस कोटि का है?**
(a) परिमाणवाचक (b) गुणवाचक

(c) व्यक्तिवाचक

(d) संख्यावाचक

UP RO (Main), 2013

उत्तर : (b)

7. **‘उत्कर्ष एक कुशाग्र विद्यार्थी है’ - यहाँ कुशाग्र कौन-सा विशेषण है?**

- (a) परिमाणबोधक (b) सार्वनामिक
(c) संख्यावाचक (d) गुणवाचक

कनिष्ठ सहायक परीक्षा, 2016

उत्तर : (d)

8. **“दादी ने ढेर सारे खिलौने खरीदे।” इस वाक्य में प्रयुक्त विशेषण कौन-सा है?**

- (a) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण
(b) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण
(c) गुणवाचक विशेषण
(d) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण

UPSI Batch - II 19 Dec.2017

उत्तर : (b)

9. **“मीरा ने आधा लीटर दूध पी लिया” में विशेषण है**

- (a) गुणवाचक (b) संख्यावाचक
(c) परिमाणवाचक (d) सार्वनामिक

वन रक्षक परीक्षा, 2015

उत्तर : (c)

10. **‘दोनों’ शब्द है-**

- (a) समुदायवाचक विशेषण (b) आवृत्तिवाचक विशेषण
(c) गणनावाचक विशेषण (d) क्रमवाचक विशेषण

UP RO (Main), 2010

उत्तर : (a)

11. **‘रमेश की पुस्तक पुरानी है’-इस वाक्य में ‘पुस्तक’ शब्द है-**

- (a) विशेष्य (b) विशेषण
(c) क्रिया-विशेषण (d) सर्वनाम

UP RO (Main), 2014

उत्तर : (a)

12. **‘युद्ध देखकर अशोक का कठोर हृदय मोम जैसा पिघल गया’- वाक्य में विशेष्य है**

- (a) कठोर (b) अशोक
(c) हृदय (d) मोम

UP RO (Pre.), 2016

उत्तर : (c)

13. **‘वह श्रेष्ठ उपासक है’ में विशेष्य है -**

- (a) वह (b) श्रेष्ठ
(c) उपासक (d) है

UP RO (Pre.), 2010

उत्तर : (c)

14. **‘समुद्री साँप में घातक परन्तु बहुत कीमती ज़हर पाया जाता है’-वाक्य में हैं-**

- (a) तीन विशेषण और दो विशेष्य
(b) दो विशेषण और तीन विशेष्य
(c) दो विशेषण और दो विशेष्य

- (d) चार विशेषण और दो विशेष्य
UP RO (Main), 2010
- उत्तर : (a)
15. 'बुद्धिहीन' शब्द व्याकरण की दृष्टि से किस संवर्ग में है?
(a) संज्ञा (b) सर्वनाम
(c) विशेषण (d) क्रिया
UP TET - Ist Paper (I-V) Dec. 2016
- Ans : (c)
16. "राम ने सुरेश के साथ मित्रता का निर्वाह किया" इसमें भाववाचक संज्ञा है—
(a) राम (b) सुरेश
(c) निर्वाह (d) मित्रता
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Dec. 2016
- Ans : (d)
17. 'मेरा घर इसी शहर में है' - में कौन सा विशेषण है?
(a) गुणवाचक विशेषण (b) सार्वनामिक विशेषण
(c) संख्यावाचक विशेषण (d) परिमाणबोधक विशेषण
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Dec. 2016
- Ans : (b)
18. 'बाजार' से किस संज्ञा का बोध होता है?
(a) भाववाचक (b) समूहवाचक
(c) जातिवाचक (d) व्यक्तिवाचक
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016
- Ans : (b)
19. निम्नलिखित में से कौन गुणवाचक विशेषण नहीं है?
(a) गोल (b) अधिक
(c) नुकीला (d) भीतरी
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016
- Ans : (b)
20. मुख्य क्रिया के अर्थ को स्पष्ट करने वाली क्रिया होती है—
(a) सहायक क्रिया (b) प्रेरणार्थक क्रिया
(c) नामबोधक (d) नामधातु
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016
- Ans : (a)
21. महात्मा गाँधी में अमूल्य गुण थे। इस वाक्य में 'अमूल्य' शब्द है —
(a) विशेषण (b) संज्ञा
(c) सर्वनाम (d) क्रिया
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2011
- Ans : (a)
22. 'उसने नहाकर भोजन किया'—इस वाक्य में 'नहाकर' निम्नांकित में से किस क्रिया का उदाहरण है?
(a) संयुक्त क्रिया (b) प्रेरणार्थक क्रिया
(c) द्विकर्मक क्रिया (d) पूर्वकालिक क्रिया
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Oct. 2017
- Ans : (d)
23. 'बुढ़ापा' शब्द में कौन-सी संज्ञा है?
(a) जातिवाचक संज्ञा (b) भाववाचक संज्ञा
(c) व्यक्तिवाचक संज्ञा (d) इनमें से कोई नहीं
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014
- Ans : (b)
24. 'अपेक्षा' का विशेषण रूप क्या है?
(a) सापेक्ष (b) उपेक्षा
(c) निरपेक्ष (d) अपेक्षित
UP TET - Ist Paper (I-V) Oct. 2017
- Ans : (d)
25. 'चार गज मलमल' में कौन सा विशेषण है?
(a) संख्यावाचक (b) गुणवाचक
(c) परिमाणबोधक (d) सार्वनामिक
UP TET - Ist Paper (I-V) Oct. 2017
- Ans : (c)
26. व्युत्पत्ति के आधार पर संज्ञा के कितने भेद होते हैं?
(a) तीन (b) चार
(c) पाँच (d) छः
UP TET - Ist Paper (I-V) June 2013
- Ans : (c)
27. सर्वनाम के कितने भेद होते हैं?
(a) छह (b) पाँच
(c) सात (d) चार
UP TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2011
- Ans : (a)
28. यह नई साड़ी है। वाक्य में 'नई' शब्द है—
(a) सर्वनाम (b) क्रिया
(c) क्रिया विशेषण (d) विशेषण
UP TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2011
- Ans : (d)
29. श्याम धीरे-धीरे चलता है। 'धीरे-धीरे' शब्द है—
(a) क्रिया (b) क्रिया विशेषण
(c) विशेषण (d) इनमें से कोई नहीं
UP TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2011
- Ans : (b)
30. निम्न में से किस वाक्य में विशेषण का प्रयोग हुआ है?
(a) राम जाता है
(b) सीता फल खाती है
(c) मेरी गाय काली है
(d) जल्दी उठना स्वास्थ्यवर्द्धक होता है
UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014
- Ans : (c)
31. 'पापी' में कौन-सा विशेषण है?
(a) संख्यावाचक विशेषण (b) सार्वनामिक विशेषण
(c) गुणवाचक विशेषण (d) परिमाणवाचक विशेषण
UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014
- Ans : (c)
32. व्यक्तिवाचक संज्ञा है—
(a) लिपि (b) देवनागरी
(c) बच्चे (d) भाषा
Bihar TET - Ist Paper (I-V) 2011
- Ans : (b)
33. "बच्चे बहुत-सी गलतियाँ मात्राओं के प्रयोग में करते हैं" वाक्य में रेखांकित अंश है—
(a) गुणवाचक विशेषण
(b) निश्चित संख्यावाचक विशेषण
(c) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

(d) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण

Bihar TET - Ist Paper (I-V) 2011

Ans: (d)

34. गुणवाचक, परिमाणबोधक, सार्वनामिक, संख्यावाचक-ये सभी निम्न में से किसके उदाहरण हैं?

- (a) संज्ञा (b) सर्वनाम
(c) विशेषण (d) इनमें से कोई नहीं

Bihar TET - Ist Paper (I-V) 2011

Ans: (c)

35. 'कबीर कल बहुत सुन्दर दिख रहा था।' उपरोक्त वाक्य में रेखांकित कीजिए शब्द व्याकरण की दृष्टि से क्या है?

- (a) संज्ञा (b) सर्वनाम
(c) कारक (d) विशेषण

Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011

Ans: (d)

36. 'पशुता' शब्द उदाहरण है—

- (a) व्यक्तिवाचक संज्ञा का (b) द्रव्यवाचक संज्ञा का
(c) भाववाचक संज्ञा का (d) जातिवाचक संज्ञा का

Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011

Ans: (c)

37. मैं अपना सिर खुजाता हूँ। इस वाक्य में है -

- (a) अकर्मक क्रिया
(b) सकर्मक क्रिया
(c) अकर्मक सकर्मक दोनों क्रिया
(d) अकर्मक सकर्मक दोनों नहीं

Chhattisgarh TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

Ans: (b)

38. "मेरा कुत्ता काला है।" इस वाक्य में काला शब्द है—

- (a) सर्वनाम (b) संज्ञा
(c) विशेषण (d) क्रिया

Chhattisgarh TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

Ans: (c)

39. "कहु रावण, रावण जग केते" पद में रावण शब्द का प्रयोग क्रमशः हुआ है—

- (a) जातिवाचक संज्ञा एवं व्यक्तिवाचक संज्ञा
(b) व्यक्तिवाचक संज्ञा एवं व्यक्तिवाचक संज्ञा
(c) व्यक्तिवाचक संज्ञा एवं जातिवाचक संज्ञा
(d) जातिवाचक संज्ञा एवं जातिवाचक संज्ञा

Chhattisgarh TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

Ans: (c)

40. जातिवाचक संज्ञा नहीं है—

- (a) शैशव (b) लोहा
(c) लकड़ी (d) पुस्तक

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) July 2011

Ans: (a)

41. 'वह स्वतः ही जान जाएगा' में 'वह' सर्वनाम है—

- (a) पुरुषवाचक सर्वनाम (b) निजवाचक सर्वनाम
(c) सम्बन्धवाचक सर्वनाम (d) अनिश्चयवाचक सर्वनाम

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) July 2011

Ans: (a)

42. संयुक्त क्रिया का उदाहरण कौन-सा वाक्य है?

- (a) रस्सी जल गई
(b) सीमा पढ़ रही है
(c) तुम प्रतिदिन पढ़ने आया करो
(d) बच्चा सोता है

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) July 2011

Ans: (c)

43. 'भाववाचक संज्ञा' के अन्तर्गत आते हैं —

- (a) पशु-पक्षी आदि (b) गुण-दोष आदि
(c) दिशाएँ आदि (d) आभूषण आदि

Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011

Ans: (b)

44. 'मदन काली पतलून पहन कर खेलने आया' में विशेषण है—

- (a) काली (b) पतलून
(c) मदन (d) खेलने

Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011

Ans: (a)

45. क्रिया से बनने वाली भाववाचक संज्ञा है—

- (a) थकावट (b) बुराई
(c) आलस्य (d) बुढ़ापा

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) April 2016

Ans: (a)

46. 'कवि' शब्द में कौन-सी संज्ञा है?

- (a) व्यक्तिवाचक (b) जातिवाचक
(c) द्रव्यवाचक (d) भाववाचक

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) April 2016

Ans: (b)

47. 'गीता मन्द-मन्द मुस्कुरा रही है' इस वाक्य में 'मन्द-मन्द' व्याकरण की दृष्टि से क्या है?

- (a) विशेषण (b) क्रिया-विशेषण
(c) संज्ञा (d) सर्वनाम

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) April 2016

Ans: (b)

48. निम्न विकल्पों में से सकर्मक क्रिया का चयन कीजिए—

- (a) लेटना (b) छूटना
(c) पिघलना (d) तड़पना

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Jan. 2011

Ans: (d)

49. 'मानव' शब्द के लिए उपयुक्त भाववाचक संज्ञा का चयन कीजिए -

- (a) मनस्वी (b) मानवता
(c) मनुष्यत्व (d) आदमीयत

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Jan. 2011

Ans: (b)

50. 'परिश्रमी' शब्द में कौन-से विशेषण का बोध होता है?

- (a) गुणवाचक विशेषण
(b) संख्यावाचक विशेषण

- (c) परिमाण वाचक विशेषण
(d) सार्वनामिक विशेषण

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Jan. 2011

Ans: (a)

51. 'मैंने तो कुछ नहीं किया' प्रस्तुत वाक्य में 'तो' व्याकरण की दृष्टि से क्या है?

- (a) क्रिया-विशेषण (b) कर्ता
(c) कारक (d) निपात

Uttarakhand TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2013

Ans: (d)

52. 'वह आजकल दिल्ली में है'। इस वाक्य में रेखांकित शब्द है -

- (a) क्रिया-विशेषण (b) अव्यय
(c) सर्वनाम (d) क्रिया

Uttarakhand TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2013

Ans: (b)

53. 'हरियाली' है-

- (a) जातिवाचक संज्ञा (b) समूहवाचक संज्ञा
(c) भाववाचक संज्ञा (d) विशेषण

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2013

Ans: (c)

54. कौन-सा शब्द 'अव्यय' नहीं है?

- (a) आज (b) कल
(c) इधर (d) किसे

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2013

Ans: (d)

55. रीतिवाचक 'क्रिया-विशेषण' है-

- (a) अत्यन्त (b) आजकल
(c) कदाचित् (d) बाहर

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2013

Ans: (c)

56. 'हँसना' कैसी क्रिया है?

- (a) सकर्मक क्रिया (b) अकर्मक क्रिया
(c) संयुक्त क्रिया (d) प्रेरणार्थक क्रिया

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2011

Ans: (b)

57. 'पण्डित' से बनी भाववाचक संज्ञा है -

- (a) पाण्डित्य (b) पंडिताईन
(c) पठन (d) ये सभी

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2011

Ans: (a)

58. निम्न में से सकर्मक क्रिया है -

- (a) हँसना (b) पढ़ना
(c) सोना (d) रोना

Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

Ans: (b)

59. 'कवि' शब्द में संज्ञा है -

- (a) व्यक्तिवाचक (b) जातिवाचक
(c) द्रव्यवाचक (d) इनमें से कोई नहीं

Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

Ans: (b)

60. 'वह श्रेष्ठ उपासक है' में विशेष्य है-

- (a) वह (b) श्रेष्ठ
(c) उपासक (d) है

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2015

Ans: (c)

61. इनमें से किस वाक्य में 'पूर्वकालिक' क्रिया का प्रयोग हुआ है?

- (a) ठोकर लगते ही लड़का बेहोश हो गया।
(b) विद्यार्थी पढ़ेंगे तो पास होंगे।
(c) श्याम दूध पीकर घूमने जाता है।
(d) अध्यापक बच्चों को प्रतिदिन हिंदी पढ़ाता है।

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2015

Ans: (c)

62. निम्न में से अकर्मक क्रिया बताइए-

- (a) पढ़ना (b) लेना
(c) खाना (d) रोना

Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

Ans: (d)

63. जातिवाचक एवं व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का कौन-सा युग्म गलत है?

- (a) कुत्ता-पिल्ला (b) नगर-जयपुर
(c) पर्वत-हिमालय (d) स्त्री-श्वेता

Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

Ans: (a)

64. निम्न में कौन-सी सकर्मक क्रिया है?

- (a) दौड़ना (b) रूठना
(c) मुस्कराना (d) पीना

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2012

Ans: (d)

65. निम्नलिखित वाक्यों में अकर्मक क्रियार्थक वाक्य है

- (a) बूँद-बूँद से घड़ा भर जाता है
(b) इस टब को पानी से भर दो
(c) माँ बेटे को खाना खिला रही है
(d) चाचाजी ने मुझे पत्र लिखा है

Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011

Ans: (a)

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. 'संज्ञा' का भेद नहीं होता-

- (a) व्यक्तिवाचक (b) जातिवाचक
(c) निजवाचक (d) भाववाचक

2. निम्नलिखित विशेषणों में से संज्ञा को पहचानिए:

- (a) आसमानी (b) नियमित

- (c) पाश्चात्य

- (d) अनुशासन

3. निम्न में संज्ञा शब्द है :

- (a) हरा (b) पतला
(c) सभा (d) गहरा

4. 'बुढ़ापा एक प्रकार का अभिशाप है।' रेखांकित शब्द की संज्ञा:
 (a) जातिवाचक (b) भाववाचक
 (c) व्यक्तिवाचक (d) समूहवाचक
5. "शूर" की भाववाचक संज्ञा क्या है?
 (a) शौर्य (b) शूरपन
 (c) शौर्यता (d) शूरवीरता
6. "कालिमा" एक भाववाचक संज्ञा है, जो कि विशेषण से बना है।
 (a) काल (b) लालिमा
 (c) काला (d) कालापन
7. 'कक्षा' शब्द हिंदी व्याकरण के अनुसार 'संज्ञा' के भेदों की किस श्रेणी में आता है?
 (a) समूहवाचक संज्ञा (b) व्यक्तिवाचक संज्ञा
 (c) भाववाचक संज्ञा (d) जातिवाचक संज्ञा
8. निम्नलिखित में से किस वाक्य में सर्वनाम का प्रयोग हुआ है—
 (a) आज बरसात होगी (b) मैं कल दिल्ली जा रहा हूँ
 (c) घर का काम कर लो (d) सीमा और रीमा बहनें हैं
9. निम्नलिखित में सर्वनाम है—
 (a) घर (b) आप
 (c) पहाड़ (d) नदी
10. "सीधा" शब्द का निम्नलिखित में से किस रूप में प्रयोग नहीं किया जा सकता है?
 (a) क्रिया-विशेषण (b) संज्ञा
 (c) सर्वनाम (d) विशेषण
11. 'मैं अपने आप काम कर लूँगा' वाक्य में रेखांकित सर्वनाम शब्द का भेद क्या है
 (a) पुरुषवाचक सर्वनाम (b) निजवाचक सर्वनाम
 (c) निश्चयवाचक सर्वनाम (d) सम्बन्धवाचक सर्वनाम
12. 'यह' कौन-सा सर्वनाम है? नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प का चयन कीजिए:
 (a) निजवाचक (b) पुरुषवाचक
 (c) निश्चयवाचक (d) सम्बन्धवाचक
13. रचना की दृष्टि से क्रिया के भेद हैं –
 (a) तीन (b) दो
 (c) चार (d) पाँच
14. "मोहन पिताजी को पत्र लिख रहा है।" वाक्य में क्रिया का भेद प्रयुक्त हुआ है। रिक्त स्थान के लिए उचित विकल्प कौन-सा है?
 (a) प्रेरणार्थक (b) नामधातु
 (c) अकर्मक (d) सकर्मक
15. क्रिया के मूल रूप को कहते हैं।
 (a) धातु (b) काम
 (c) पुरुष (d) काल
16. निम्न में प्रेरणार्थक क्रिया है—
 (a) चलना (b) जगाना
 (c) पढ़ना (d) बदलना
17. किसी कार्य के करने या होने का बोध कराने वाले शब्द कहलाते हैं—
 (a) काल (b) संख्या
 (c) क्रिया (d) विशेषण
18. निम्नलिखित वाक्य में संज्ञा के रूप में क्या प्रयोग किया गया है?
 "वह इनमें से एक को जानता है।"
 (a) है (b) वह
 (c) इनमें (d) एक
- निर्देश: निम्नलिखित प्रश्नों में संज्ञा शब्द पहचानिए।
19. (a) मीठा (b) मधुर
 (c) चतुर (d) चातुर्य
20. "गरीबों" की सहायता करो। "गरीबों" शब्द क्या है?
 (a) विशेषण (b) विशेष्य
 (c) जातिवाचक संज्ञा (d) भाववाचक संज्ञा
21. निम्नलिखित में से कौन सा शब्द समूहवाचक संज्ञा नहीं है?
 (a) सभा (b) कक्षा
 (c) भीड़ (d) दौड़
22. हिन्दी में कुल कितने सर्वनाम हैं?
 (a) 9 (b) 10
 (c) 11 (d) 12
23. निम्नलिखित में से कौन निजवाचक सर्वनाम नहीं है?
 (a) निज (b) हम
 (c) आप (d) खुद
24. 'कोई आ रहा है'- वाक्य में 'कोई' किस प्रकार का सर्वनाम है?
 (a) अनिश्चयवाचक (b) निश्चयवाचक
 (c) संबंधवाचक (d) निजवाचक
25. निम्नलिखित में से क्या एक अप्राणिवाचक प्रश्नवाचक सर्वनाम है?
 (a) किस (b) कोई
 (c) कौन (d) क्या
26. 'समझदार' शब्द विशेषण का कौन सा भेद है—
 (a) सार्वनामिक विशेषण (b) संख्यावाचक विशेषण
 (c) परिमाण विशेषण (d) गुणवाचक विशेषण
27. "मोह" शब्द कौन-सा विशेषण है?
 (a) सार्वनामिक (b) परिमाणवाचक
 (c) संख्यावाचक (d) गुणवाचक
28. "मीरा जोर से हँसी।" यह वाक्य किस क्रिया का समुचित उदाहरण है?
 (a) अकर्मक (b) प्रेरणार्थक
 (c) द्विकर्मक (d) सकर्मक
29. निम्नलिखित में से किस वाक्य में अकर्मक क्रिया है?
 (a) पानी बरस रहा है।
 (b) मैं गेहूँ पिसवाता हूँ।
 (c) श्याम निबंध लिखता है।
 (d) राम मोहन को रुला रहा है।
30. 'हथियाना' में कौन सा क्रिया है?
 (a) प्रेरणार्थक (b) संयुक्त
 (c) अनुकरणात्मक (d) नामधातु

उत्तरमाला

1. (c) 2. (d) 3. (c) 4. (b) 5. (a) 6. (c) 7. (a) 8. (b) 9. (b) 10. (c)
 11. (b) 12. (c) 13. (b) 14. (d) 15. (a) 16. (b) 17. (c) 18. (d) 19. (d) 20. (c)
 21. (d) 22. (c) 23. (b) 24. (a) 25. (d) 26. (d) 27. (d) 28. (a) 29. (a) 30. (d)

06.

लिंग, वचन, कारक, काल, वाच्य

लिंग (Gender)

लिंग का शाब्दिक अर्थ है- प्रतीक या चिह्न अथवा निशान। संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसकी पुरुष जाति या स्त्री जाति का बोध होता है, उसे 'लिंग' कहा जाता है।

पुल्लिंग- (Masculine Gender)

संज्ञा या सर्वनाम के जिस शब्द से पुरुष जाति का बोध होता है, उसे पुल्लिंग कहते हैं।

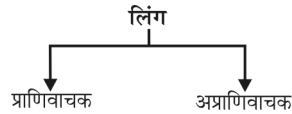
उदाहरण- राम, श्याम, मोहन, सोहन, इत्यादि।

स्त्रीलिंग- (Feminine Gender)

संज्ञा या सर्वनाम के जिस शब्द से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं।

उदाहरण- सीता, गीता, रीता, राधा इत्यादि।

हिन्दी के शब्द-



1. प्राणिवाचक-

नाम	लिंग	उदाहरण
शरीर के अंगों के नाम	पुल्लिंग	बाल, सिर, मस्तक, तालू, ओठ, दन्त, नेत्र, मुँह, हाथ, गाल, कान, पाँव आदि।
	स्त्रीलिंग	आँख, नाक, जीभ, जाँघ, नस आदि।
जीव - जन्तु एवं पक्षियों के नाम	पुल्लिंग	खटमल, भेड़िया, उल्लू, केचुआ आदि।
	स्त्रीलिंग	मक्खी, चील, मछली, जोंक, कोयल, मैना आदि।

2. अप्राणिवाचक-

नाम	लिंग	उदाहरण
1. धातुओं के नाम	पुल्लिंग	सोना, ताँबा, पीतल, लोहा, सीसा, टीन, काँसा आदि।
	स्त्रीलिंग	चाँदी, धातु इत्यादि।

2. रत्नों के नाम	पुल्लिंग	मोती, हीरा, मूँगा, पन्ना आदि।
	अपवाद	मणि आदि।
3. अनाजों के नाम	पुल्लिंग	जौ, गेहूँ, चावल, मटर, उड़द, चना आदि।
	अपवाद	मक्का, मूँग, अरहर, जुआर आदि।
4. द्रव, पदार्थों के नाम	पुल्लिंग	तेल, घी, दही, पानी शरबत, सिरका आदि।
	अपवाद	छाछ, स्याही आदि।
5. ग्रहों के नाम	पुल्लिंग	सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शनि, राहु, केतु, आदि।
	अपवाद	पृथ्वी
6. नदियों के नाम	पुल्लिंग	सोन, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र आदि।
	स्त्रीलिंग	गंगा, यमुना, महानदी, गोदावरी, सतलज, नर्मदा, रावी, व्यास, झेलम आदि।
7. वस्तुओं के नाम	पुल्लिंग -	कपड़ा, पैसा, पहिया, आटा, चमड़ा, चढ़ाव, बहाव, बड़प्पन, बुढ़ांपा, पानी, घी, मोती, दही, जौ आदि।
	स्त्रीलिंग	नदी, टोपी, रोटी, चिट्ठी, खटिया, डिबिया, फुड़िया, ठिलिया।

8. जीवन में प्रयोग करने वाले संज्ञा या सर्वनामों के नाम	पुल्लिंग	कुटुम्ब, संघ, राज्य, राष्ट्र, अधिवेशन, विद्यालय, विश्वविद्यालय, विद्यापीठ, कबीला, प्रशासन, परिवार, देश, स्कूल, कॉलेज, मंत्रिमंडल आदि।
	स्त्रीलिंग	संसद, राज्यसभा, विधानसभा, पुलिस, भीड़, गोष्ठी, कमेटी, सेना, फौज, मंडली, जाति, प्रजाति, नगरपालिका, जनता, सरकार, पाठशाला, टोली, समिति आदि।

संस्कृत के शब्द-

प्राणिवाचक-

लिंग	उदाहरण
पुल्लिंग	पालन, पोषण, वचन, गमन, हरण, जलज, स्वदेज, पिंडज, सरोज।
स्त्रीलिंग	दया, माया, कृपा, लज्जा, क्षमा।

अप्राणिवाचक-

लिंग	उदाहरण
पुल्लिंग	क्षेत्र, चित्र, सतीत्व, माधुर्य, धैर्य, नृत्य, लाघव।
स्त्रीलिंग	प्रार्थना, वेदना, प्रस्तावना, रचना, घटना, महिमा, गरिमा, कालिमा, नम्रता, लघुता, सुन्दरता, प्रभुता इत्यादि।

4. उर्दू के शब्द

अप्राणिवाचक

नाम	लिंग	उदाहरण
जिसके अन्त में आब हो	पुल्लिंग	गुलाब, जवाब, कबाब, हिसाब आदि।
	स्त्रीलिंग	शराब, किताब, मिहराब

जिसके अन्त में आर या आन हो	पुल्लिंग	बाजार, इकरार, मकान, सामान, इनकार आदि।
	अपवाद	सरकार, दुकान, तरकार आदि
शकारान्त संज्ञाएँ	पुल्लिंग	ताश, होश आदि
	अपवाद	नालिश, कोशिश, लाश, तलाश, मालिश आदि
तकारान्त संज्ञाएँ	पुल्लिंग	शरबत, दस्तखत, बन्दोबस्त, वक्त, तरख आदि।
	अपवाद	दौलत, कसरत, अदालत, कीमत, मुलाकात आदि

अंग्रेजी शब्द

लिंग	उदाहरण
पुल्लिंग	सोडा, डेल्टा, कैमरा
स्त्रीलिंग	डिक्शनरी, हिस्ट्री, लायब्रेरी

स्त्री प्रत्यय

प्राणिवाचक-

हिन्दी के शब्द- हिन्दी में पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के लिए नीचे लिखे प्रत्यय आते हैं-

इ, इया, इन, नी, आनी, आइन, आ ।

प्रत्यय	लिंग	
	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
1. ई प्रत्यय	लड़का बेटा घोड़ा	लड़की बेटी घोड़ी
2. इया प्रत्यय	कुत्ता बेटा बुझा	कुतिया बिटिया बुढ़िया
3. इन प्रत्यय	सुनार तेली नाती लुहार साँप	सुनारिन तेलिन नातिन लुहारिन साँपिन
4. नी प्रत्यय	ऊँट मोर हाथी सिंह हिन्दू	ऊँटनी मोरनी हथनी सिंहनी हिन्दुनी

5. आइन प्रत्यय	पाँडे पाठक बनिया सुकुल	पँड़ाइन पठकाइन बनियाइन सुकुलाइन
6. आनी प्रत्यय	देवर सेठ चौधरी नौकर	देवरानी सेठानी चौधरानी नौकरानी
7. आ प्रत्यय	भेड़ा रँदुआ भैसा	भेड़ रॉड भैस

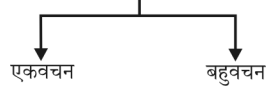
वचन

संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से एक या एक से अधिक संख्या का बोध हो, उसे वचन कहते हैं।

अथवा

संज्ञा और दूसरे विकारी शब्दों के जिस रूप से संख्या का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं।

वचन



एकवचन-

संज्ञा के जिस रूप से एक ही वस्तु का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं।

जैसे- लड़का, टोपी, कपड़ा, रूप, रंग आदि।

बहुवचन- संज्ञा के जिस रूप से एक से अधिक वस्तुओं का ज्ञान (बोध) होता है, उसे बहुवचन कहते हैं।

जैसे- बेटे, घोड़े, लड़के, टोपियाँ इत्यादि।

एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम-

नियम	एकवचन	बहुवचन
1. आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के 'आ' को 'ए' में बदलकर बहुवचन बनाना।	घोड़ा कौवा तोता लड़का लोटा कपड़ा बच्चा दूधवाला	घोड़े कौवे तोते लड़के लोटे कपड़े बच्चे दूधवाले
अपवाद- आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों का रूप दोनों वचनों में एक ही रहता है।	काका आजा मामा दादा	काका आजा मामा दादा
2. अकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के 'अ' को 'एँ' में बदलकर बहुवचन बनाना।	शाम बहन	शामें बहनें

	सन्तान गाय बात झील आँख रात	सन्तानें गायें बातें झीले आँखें रातें
3. इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के 'इ' को 'याँ' में बदलकर बहुवचन बनाना।	तिथि पंक्ति रीति राशि	तिथियाँ पंक्तियाँ रीतियाँ राशियाँ
4. ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के 'ई' को इकारान्त करके अन्त में 'याँ' जोड़कर बहुवचन बनाना।	टोपी नदी रानी सदी बधाई	टोपियाँ नदियाँ रानियाँ सदियाँ बधाइयाँ
5. आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के 'या' के अन्त में चन्द्रबिन्दु/अनुनासिक लगाकर बहुवचन बनाना।	लठिया गुड़िया लुटिया बुढ़िया खटिया डिबिया लुटिया	लठियाँ गुड़ियाँ लुटियाँ बुढ़ियाँ खटियाँ डिबियाँ लुटियाँ
6. आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के 'आ' के अन्त में 'एँ' लगाकर बहुवचन बनाना।	माता भुजा संस्था लता कथा बहू वधू	माताएँ भुजाएँ संस्थाएँ लताएँ कथाएँ बहुएँ वधुएँ
7. स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अन्त स्वर के परे 'एँ' या 'ओं' लगाते हैं और 'ऊ' ह्रस्व कर देते हैं।	बहू वधू	बहुओं वधुओं
8. एकवचन शब्दों के आगे, लोग, जन, वर्ग, जाति, गण, वृन्द आदि शब्द लगाकर बहुवचन बनाना।	दलित देवता शिक्षक अप्सरा मनुष्य स्त्री पाठक बंधु बाल भक्त तुम	दलितवर्ग देवतागण शिक्षकगण अप्सरागण मनुष्यजाति स्त्रीजन पाठकगण बंधुवर्ग बालवृन्द भक्तजन तुमलोग

9. कुछ पुल्लिंग शब्दों के एकवचन और बहुवचन समान रहते हैं।	आकाश ईश्वर मन सूर्य	आकाश ईश्वर मन सूर्य
10. आदर के लिए बहुवचन में व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के आगे जी, महाराज, साहब, महाशय, महोदय, बहादुर, शास्त्री, स्वामी, देवी इत्यादि लगाते हैं।	सीता मिश्र गणेश देवदत्त इन्द्रजीत सिंह वकील डॉक्टर सरदार महाराजा रामप्रसाद तुलसीराम गायत्री	सीता जी मिश्र जी गणेश जी देवदत्त महाराज इन्द्रजीत सिंह जी वकील साहब डॉक्टर साहब सरदार बहादुर महाराजा बहादुर रामप्रसाद शास्त्री तुलसीदास स्वामी गायत्री देवी

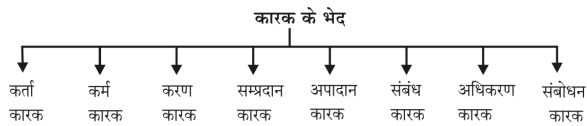
कारक-(Case)

कारक का अर्थ होता है- 'किसी कार्य को करने वाला।'

जो क्रिया की उत्पत्ति में सहायक हो या जो किसी शब्द का क्रिया से संबन्ध बताए वह कारक है।

जैसे- राम ने राक्षसों को वाणों से मारा।

कारक के भेद-



⇒ हिन्दी में आठ कारक तथा संस्कृत में कुल छह कारक होते हैं।

विभक्ति-

संज्ञा अथवा सर्वनाम के साथ जो प्रत्यय, कारक सूचित करने के लिए लगाया जाता है, उसे विभक्ति कहते हैं।

कारक एवं विभक्तियाँ-

क्रमांक	कारक	विभक्तियाँ
1.	कर्ता	ने
2.	कर्म	को
3.	करण	से, के द्वारा
4.	सम्प्रदान	को, के लिए
5.	अपादान	से (अलग होने के सम्बन्ध में)
6.	सम्बन्ध	का, के, की, रा, रे, री
7.	अधिकरण	में, पर
8.	संबोधन	हे! अरे! हो!

कारक सारणी

कारक	विभक्ति चिह्न	उदाहरण
1. कर्ता कारक- क्रिया को संपादित करने वाले को कर्ता कारक कहते हैं।	'ने' कभी कर्ता के साथ लगता है, और कभी नहीं।	1. लड़का सोता है। 2. चिट्ठी भेजी जायेगी। 3. नौकर ने दरवाजा खोला।
2. कर्मकारक- संज्ञा तथा सर्वनाम के जिस रूप पर क्रिया के व्यापार का फल पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं।	'को' इसका विभक्ति 'को' शब्द के साथ कभी रहता है और कभी नहीं।	1. लड़का पत्थर फेंकता है। 2. रामू ने धोड़े को पानी पिलाया। 3. विनय पुस्तक पढ़ रहा है। 4. मालिक ने नौकर को बुलाया।
नोट- (कर्ता की पहचान के लिए क्रिया के साथ कौन का प्रश्न और कर्म-पहचान के लिए क्या अथवा किसको का प्रश्न करते हैं। जिससे कर्ता और कर्म सरलता से ज्ञात हो जाते हैं।)		
3. करण कारक- जिस साधन से अथवा जिसके द्वारा क्रिया पूरी की जाती है, उस संज्ञा को करण कारक कहते हैं।	'से' 'के द्वारा'	1. राम ने रावण को बाण से मारा। 2. अर्पित ने अभिनव को डण्डे से मारा। 3. स्नेहा लेखनी से लिखती है। 4. छात्रों को पत्र के द्वारा परीक्षा की सूचना मिली।
4. सम्प्रदान कारक- जिसके लिए कोई क्रिया की जाती है, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं।	'को' 'के लिए' कर्म-कारक का विभक्ति को भी प्रयुक्त होता है, किन्तु उसका अर्थ 'के लिए' होता है।	1. माँ अपने बच्चे के लिए दूध ले आई! 2. मैं हिमालय को जा रहा हूँ! 3. दादा जी को नमस्कार। 4. बच्चे को गेंद लाओ। 5. विकास ने तुषार को गाड़ी दी।
5. अपादान कारक- जिस संज्ञा अथवा सर्वनाम से किसी वस्तु का अलग होना ज्ञात हो, उसे अपादान कारक कहते हैं।	'से' (अलग होने का भाव)	1. पेड़ से फल गिरा। 2. गंगा हिमालय से निकलती है। 3. महेश छत से गिर गया।

6. सम्बन्ध कारक- संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जो हमें किन्हीं दो वस्तुओं के बीच सम्बन्ध का बोध कराता है, वह सम्बन्ध कारक कहलाता है।	का, के, की, रा, रे, री	1. वह राम <u>का</u> बेटा है। 2. यह महेश <u>की</u> किताब है। 3. यह सुरेश <u>की</u> बहन है। 4. यह <u>मेरा</u> भाई है।
7. अधिकरण कारक- अधिकरण का अर्थ होता है- 'आश्रय' संज्ञा का वह रूप जिससे क्रिया के आधार का बोध हो, उसे अधिकरण कारक कहते हैं।	'में' 'पर'	1. मेज <u>पर</u> पुस्तक रखी है। 2. मैं तीन मिनट <u>में</u> आ रहा हूँ। 3. श्याम कमरे के <u>अन्दर</u> है। 4. महाभारत का युद्ध कुरुक्षेत्र <u>में</u> हुआ था।
8. सम्बोधन कारक- संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जिससे किसी को पुकारने का बोध हो, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं। नोट- संस्कृत में इसे कर्ता से अलग नहीं मानते हैं, किन्तु हिन्दी में पृथक् कारक मान लिया जाता है।	'हे'! 'अरे'! 'हो'!	1. <u>हे राम!</u> बहुत बुरा हुआ। 2. <u>अरे!</u> बच्चों! शोर मत करो। 3. <u>अरे!</u> यह इतना बड़ा हो गया। 4. <u>अजी!</u> सुनते हो क्या? 5. <u>हे प्रभु!</u> उसके ऊपर कृपा करना। 6. <u>हे अर्जुन!</u> तुम्हें यह काम अवश्य करना चाहिए।

काल

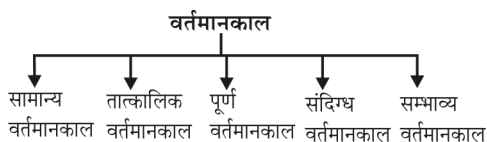
क्रिया के उस रूपान्तरण को 'काल' कहते हैं, जिससे उसके कार्य व्यापार का समय और उसकी अथवा अपूर्ण अवस्था का बोध हो।

⇒ काल तीन प्रकार के होते हैं-



वर्तमान काल- क्रियाओं के व्यापार की निरन्तरता को 'वर्तमान काल' कहते हैं। इसमें क्रिया का आरम्भ हो चुका होता है; जैसे- वह पढ़ती है। यहाँ 'पढ़ने' का कार्यव्यापार चल रहा है, समाप्त नहीं हुआ।

⇒ वर्तमान काल के पाँच भेद होते हैं-



1. सामान्य वर्तमान काल- क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया का वर्तमान काल में होना पाया जाय, 'सामान्य वर्तमान' काल कहलाता है;

जैसे- (i) वह आता है। (ii) राधा पढ़ती है।

2. तात्कालिक वर्तमान काल- इससे यह पता चलता है कि क्रिया वर्तमानकाल में हो रही है;

जैसे- (i) वह पढ़ रहा है। (ii) गीता जा रही है।

3. पूर्ण वर्तमान काल- इससे वर्तमान काल में कार्य की पूर्ण सिद्धि का बोध होता है;

जैसे- (i) वह आया है। (ii) सीता निबन्ध लिखी है।

4. संदिग्ध वर्तमान काल- जिससे क्रिया के होने में सन्देह प्रकट हो;

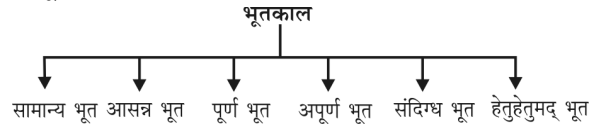
जैसे- (i) सुरेश गया होगा। (ii) रीना पुस्तक पढ़ी होगी।

5. सम्भाव्य वर्तमान काल- इससे वर्तमानकाल में काम के पूरा होने की सभावना रहती है;

जैसे- (i) वह पढ़ा हो। (ii) वह लौटा हो।

भूतकाल- जिसे क्रिया से कार्य की समाप्ति का बोध हो, उसे भूतकाल की क्रिया कहते हैं; जैसे- सीता पढ़ी थी, मोहन गाया था।

⇒ भूतकाल के छः भेद होते हैं-



1. सामान्य भूतकाल- क्रिया का वह रूप जिससे बीते हुए समय में कार्य के होने का बोध होता, परन्तु ठीक समय का ज्ञान न हो, सामान्य भूतकाल कहलाता है;

जैसे- राघव आया, गीता गयी।

2. आसन्न भूतकाल- क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया की समाप्ति निकट भूत में या तत्काल ही सूचित होने का बोध हो, आसन्न भूतकाल कहलाता है;

जैसे- (1) मैं पुस्तक पढ़ी है, (2) मैं चला हूँ।

3. पूर्ण भूतकाल- जहाँ क्रिया की समाप्ति का स्पष्ट बोध हो तथा क्रिया को समाप्त हुए काफी समय बीता हो वहाँ पूर्ण भूतकाल होता है;

जैसे- वह पढ़ा था, वह मोहन को मारा था।

4. अपूर्ण भूतकाल- जब क्रिया का भूतकाल में होने का बोध हो परन्तु उसकी समाप्ति का पता न हो, अपूर्ण भूतकाल कहलाता है;

जैसे- राघव पढ़ रहा था, रीना सो रही थी।

5. संदिग्ध भूतकाल- जहाँ यह सन्देह बना रहे कि भूतकाल में कार्य पूरा हुआ था या नहीं वहाँ संदिग्ध भूतकाल होता है;

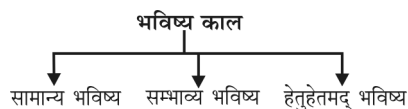
जैसे- वह पढ़ा होगा, तू गया होगा।

6. हेतुहेतुमद् भूतकाल- जहाँ यह ज्ञात हो कि क्रिया भूतकाल में होने वाली थी, पर किसी कारण से न हो सकी, तो वहाँ हेतुहेतुमद् भूतकाल होता है;

जैसे- मैं पढ़ता, वह जाता, तु खाता।

भविष्य काल- क्रिया का वह रूप जिससे आने वाले समय में कार्य के होने का बोध हो, भविष्य काल कहलाता है।

⇒ भविष्य काल के तीन भेद होते हैं-



1. सामान्य भविष्यकाल- जब कार्य सामान्यतः भविष्य में होने का बोध हो तो वहाँ सामान्य भविष्यकाल होता है;

जैसे- (i) वह पढ़ेगा, (ii) तुम जाओगे।

2. सम्भाव्य भविष्य काल- जब भविष्य में कार्य होने की सम्भावना हो, तो वहाँ सम्भाव्य भविष्यकाल होता है;

जैसे- (i) सम्भवतः राघव कल आयेगा,
(ii) लगता है फसल अच्छी होगी।

3. हेतुहेतुमद् भविष्य काल- जब एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर हो, तो वहाँ हेतुहेतुमद् भविष्यकाल होता है;

जैसे- (i) पढ़ोगे तो पास हो जाओगे। (ii) यदि बारिश होगी तो फसल अच्छी होगी।

वाच्य

क्रिया के उस परिवर्तन को 'वाच्य' कहते हैं, जिससे यह बोध हो कि वाक्य में कर्ता, कर्म अथवा भाव में से किसकी प्रधानता है।

⇒ वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन, या तो कर्ता के अनुसार होंगे या कर्म के अनुसार होंगे या तो फिर भाव के अनुसार होंगे।

⇒ प्रयोग के आधार पर वाच्य के तीन भेद होते हैं-



1. कर्तृ वाच्य- क्रिया का वह रूपान्तरण, जिससे वाक्य में कर्ता की प्रधानता का बोध हो, वह कर्तृ वाच्य कहलाता है;

जैसे- मैं पुस्तक पढ़ता हूँ। (इस वाक्य में क्रिया 'पढ़ना' कर्ता 'मैं' के अनुसार है)

2. कर्म वाच्य- क्रिया का वह रूपान्तरण, जिससे वाक्य में कर्म की प्रधानता का बोध हो, वह कर्म वाच्य कहलाता है;

जैसे- (i) पुस्तक पढ़ी गयी, (ii) गिटार बजाया जाता है।

3. भाववाच्य- क्रिया का वह रूपान्तरण, जिससे वाक्य में भाव अथवा क्रिया की प्रधानता का बोध हो, वह भाववाच्य कहलाता है;

जैसे- (i) राघव से पढ़ी नहीं जाता, (ii) मुझसे खाया नहीं जाता।

विशेष- (i) कर्तृवाच्य में क्रिया सकर्मक और अकर्मक दोनों हो सकती है। (ii) कर्मवाच्य में क्रिया केवल सकर्मक होती है। (iii) भाववाच्य में अकर्मक होती है।

वाच्य सारणी

	कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य	भाववाच्य
1.	राघव पुस्तक पढ़ता है	पुस्तक राघव द्वारा पढ़ी जाती है।	
2.	वागेश लिख नहीं सका।		वागेश से लिखा नहीं जा सका।

3.	सीता ने अपनी बहन को बढ़ाया	सीता द्वारा अपनी बहन को पढ़ाया गया।	
4.	मैं गा नहीं सकूँगा।		मुझसे गाया नहीं जा सकता।

विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. निम्न में से किस वाक्य में सम्प्रदान कारक है?

- (a) मेरा घर स्टेशन से बहुत दूर है
(b) राम घर पर सो रहा है
(c) राजा ने निर्धनों को कम्बल दिए
(d) निसार खेलता है

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) July 2011

उत्तर : (c)

2. 'चूहा बिल से बाहर निकला' -में कौन सा कारक है?

- (a) सम्प्रदान कारक (b) अपादान कारक
(c) करण कारक (d) सम्बन्ध कारक

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Dec. 2016

उत्तर : (b)

3. 'पेड़ से बन्दर कूदा', वाक्य में कौन-सा कारक है?

- (a) अपादान (b) कर्म कारक
(c) सम्प्रदान कारक (d) करण कारक

UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (a)

4. 'छत से ईंट गिरी' वाक्य में कौन सा कारक है?

- (a) अपादान (b) सम्बन्ध
(c) अधिकरण (d) सम्प्रदान

UP TET - Ist Paper (I-V) Dec. 2016

उत्तर : (a)

5. निम्न में से पुल्लिंग शब्द है :

- (a) रात (b) बात
(c) गीत (d) मात

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Dec. 2016

उत्तर : (c)

6. 'कर्म कारक' का चिह्न है-

- (a) ने (b) से, द्वारा
(c) को (d) को, के लिए, हेतु

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (c)

7. लड़का पेड़ से गिरा।

उपरोक्त वाक्य का कारक बताइए।

- (a) सम्प्रदान कारक (b) कर्म कारक
(c) अपादान कारक (d) कारण कारक

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2011

उत्तर : (c)

8. लोगों ने शोरगुल करके डाकुओं को भगाया।
उपरोक्त वाक्य में कारक बताइए—
(a) कर्ता कारक (b) करण कारक
(c) सम्प्रदान कारक (d) कर्म कारक
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2011
उत्तर : (d)
9. 'से' विभक्ति निम्न में से किस कारक के लिए प्रयुक्त होता है?
(a) कर्ता (b) कर्म
(c) सम्प्रदान (d) करण
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Oct. 2017
उत्तर : (d)
10. 'हे राम! तुम कहाँ हो' वाक्य में कौन-सा कारक है?
(a) सम्बन्ध (b) अधिकरण
(c) सम्बोधन (d) अपादान
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014
उत्तर : (c)
11. 'मुझसे उठा नहीं गया' वाक्य में वाच्य है
(a) कर्तृवाच्य
(b) कर्मवाच्य
(c) भाववाच्य
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं
UP TET - Ist Paper (I-V) Oct. 2017
उत्तर : (c)
12. हिन्दी के शब्दों का लिंग निर्धारण किसके आधार पर होता है?
(a) प्रत्यय (b) संज्ञा
(c) क्रिया (d) सर्वनाम
UP TET - Ist Paper (I-V) June 2013
उत्तर : (c)
13. कारक के कितने भेद होते हैं?
(a) सात (b) आठ
(c) नौ (d) दस
UP TET - Ist Paper (I-V) June 2013
उत्तर : (b)
14. निम्नलिखित में से पुलिङ्ग शब्द कौन-सा है?
(a) नदी (b) पानी
(c) इलायची (d) प्यास
UP TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2011
उत्तर : (b)
15. निम्न शब्द में अधिकरण कारक का प्रयोग हुआ है—
(a) वाहनारूढ़ (b) सत्ताधीश
(c) गंगाजल (d) रेखाचित्र
UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014
उत्तर : (a)
16. 'को' से किस कारक चिह्न का बोध होता है?
(a) कर्म कारक (b) करण कारक
(c) सम्प्रदान कारक (d) अधिकरण कारक
UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014
उत्तर : (a)

17. 'दाता' शब्द का स्त्रीलिङ्ग शब्द क्या है?
(a) दाती (b) दातृ
(c) दात्री (d) धात्री
UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014
उत्तर : (c)
19. 'पुस्तक' है -
(a) पुल्लिङ्ग (b) स्त्रीलिङ्ग
(c) नपुंसकलिङ्ग (d) इनमें से कोई नहीं
Bihar TET - Ist Paper (I-V) 2011
उत्तर : (b)
20. 'छात्र' का बहुवचन है -
(a) छात्रों (b) छात्र
(c) छात्राएँ (d) छात्रे
Bihar TET - Ist Paper (I-V) 2011
उत्तर : (a)
21. कौन-सा शब्द 'हरिण' का स्त्रीलिङ्ग रूप है?
(a) हरिणी (b) हिरिनी
(c) हिरणी (d) हिरिणी
Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011
उत्तर : (a)
22. संज्ञा का वह रूप जिससे क्रिया के आधार का बोध होता है—
(a) करण कारक (b) सम्बन्ध कारक
(c) सम्प्रदान कारक (d) अधिकरण कारक
Chhattisgarh TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011
उत्तर : (d)
23. हिन्दी में वचन होते हैं—
(a) एक (b) दो
(c) तीन (d) अनगिनत
Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) July 2011
उत्तर : (b)
24. 'आगरा' का बहुवचन होगा—
(a) आगरे (b) आगरों
(c) आगरें (d) बहुवचन नहीं होगा
Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) July 2011
उत्तर : (d)
25. 'कवि' का स्त्रीलिङ्ग रूप होगा—
(a) कवित्रि (b) कवि
(c) कवयित्री (d) कवियत्री
Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) July 2011
उत्तर : (c)
26. 'कारक' का अर्थ है—
(a) कार्यकर्ता (b) क्रिया को करनेवाला
(c) कार वाला (d) कारखाने वाला
Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) 2012
उत्तर : (b)
27. 'को' और 'के लिए' किस कारक के चिह्न है?
(a) सम्प्रदान कारक (b) करण कारक
(c) अपादान कारक (d) सम्बोधन कारक
Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011
उत्तर : (a)

28. 'कवि' शब्द का स्त्रीलिंग रूप क्या है?
 (a) कवियित्री (b) कवयत्री
 (c) कवयित्री (d) कवियत्री
Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Jan. 2011
 उत्तर : (c)
29. वह कौन-सा शब्द है जो प्रायः बहुवचन में प्रयुक्त होता है?
 (a) देव (b) छात्र
 (c) नक्षत्र (d) प्राण
Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Jan. 2011
 उत्तर : (d)
30. रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिए उपयुक्त कारक चिह्न का चयन कीजिए—
 प्रत्येक प्रश्न चार सम्भावित उत्तर दिए गए हैं।
 (a) के लिए (b) में
 (c) के (d) से
Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Jan. 2011
 उत्तर : (a)
31. 'पेड़ पर पक्षी बैठे हैं।' इस वाक्य में 'पेड़ पर' पद में कौन-सा कारक है?
 (a) करण (b) अपादान
 (c) सम्बन्ध (d) अधिकरण
Uttarakhand TET - Hnd Paper (VI-VIII) Nov. 2013
 उत्तर : (d)
32. निम्नलिखित में 'पुल्लिंग' शब्द है -
 (a) बुढ़ापा (b) जड़ता
 (c) घटना (d) दया
Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2013
 उत्तर : (a)
33. निम्न में से कौन शब्द हमेशा बहुवचन में प्रयुक्त होता है?
 (a) हस्ताक्षर (b) समाचारपत्र
 (c) चिड़िया (d) तिजोरी
Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2011
 उत्तर : (a)
34. "पण्डित दूध पीता है।" इस वाक्य में कारक है—
 (a) कर्म, करण (b) सम्प्रदान, सम्बन्ध

- (c) कर्ता, कर्म (d) इनमें से कोई नहीं
Haryana TET - Hnd Paper (VI-VIII) Feb. 2014
 उत्तर : (c)
35. निम्नलिखित वाक्यों में से अपादान कारक का उदाहरण कौन-सा है?
 (a) राधा घर से निकली।
 (b) सीता गीता से अच्छा गाती है।
 (c) मुझे आपसे बहुत डर लगता है।
 (d) उपर्युक्त सभी
Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2015
 उत्तर : (d)
36. 'वीर' का स्त्रीलिंग है—
 (a) वारांगना (b) वीरवति
 (c) वीरांगना (d) वीरावती
Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2012
 उत्तर : (c)
37. कवि का स्त्रीलिंग है—
 (a) कविइत्री (b) कवित्री
 (c) कवयित्री (d) कवियित्री
UP TET - Ist Paper (I-V) June 2013
 उत्तर : (c)
38. 'बिल्ली छत से कूद पड़ी।' कौन-सा कारक है?
 (a) अधिकरण कारक (b) कर्म कारक
 (c) सम्प्रदान कारक (d) अपादान कारक
UP TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2011
 उत्तर : (d)
39. 'ये फल उसके लिए है।' इस वाक्य में रेखांकित अंश है—
 (a) अन्यपुरुष, एकवचन, संप्रदान
 (b) मध्यमपुरुष, बहुवचन, कर्ता
 (c) मध्यमपुरुष, एकवचन, संप्रदान
 (d) उत्तमपुरुष, एकवचन, संप्रदान
Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2015
 उत्तर : (a)

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न-7

1. निम्नलिखित शब्दों में पुल्लिंग का चयन कीजिए :-
 (a) हवा (b) कोयल
 (c) दारा (d) शिक्षा
2. निम्नलिखित शब्दों में से एक पुल्लिंग शब्द है:
 (a) चाय (b) शिकंजी
 (c) लस्सी (d) दही
3. 'भगवान' शब्द का स्त्रीलिंग शब्द दिए गए विकल्पों में से कौन-सा है?
 (a) भगवती (b) भाग्यवती
 (c) भागिनी (d) भाग्यवान
4. "बिल्ली" शब्द का पुल्लिंग क्या होगा?
 (a) बिल्ला (b) बिलाव
 (c) बिलाओ (d) बिल्लो
5. "ठठरा" शब्द का लिंग परिवर्तित कीजिए।
 (a) ठठेरिन (b) ठठेरिनी
 (c) ठठेरी (d) ठठारी
6. निम्नलिखित में स्त्रीलिंग शब्द है—
 (a) किन्नर (b) अहिंसा
 (c) अंतरी (d) अपरिग्रह
7. 'कवि' का स्त्रीलिंग है :
 (a) कविइत्री (b) कवित्री
 (c) कवयित्री (d) कवियित्री
8. दिए विकल्पों में से स्त्रीलिंग शब्द कौन-सा है?
 (a) काया (b) चूल्हा
 (c) पुदीना (d) भ्रमर

9. निम्नलिखित में से कौनसा शब्द उभयलिंगी है?
(a) डॉक्टर (b) विद्वान
(c) अभिनेत्री (d) गायक
10. आने वाला “क्षण” लाल नज़र आता है।
रेखांकित शब्द का चयन पहचानिए।
(a) सदैव बहुवचन (b) सदैव एकवचन
(c) बहुवचन (d) एकवचन
11. प्रयुक्त शब्दों में से कौन-सा शब्द एकवचन नहीं है?
(a) सत्य (b) दर्शन (c) व्यथा (d) वर्षा
12. ‘गौ’ शब्द का वचन पहचानिए।
(a) सदा बहुवचन (b) एकवचन
(c) सदा एकवचन (d) बहुवचन
13. ‘मामा’ का बहुवचन बताएं।
(a) मामावर्ग (b) मामागण
(c) मामा (d) मामालोग
14. “सुधि” शब्द के अंत में क्या जोड़ने पर शब्द बहुवचन बन जाएगा।
(a) जन (b) वृंद
(c) वर्ग (d) गण
15. वह आयी हो तो मेरी चिट्ठी उसे दे देना। कौन-सा काल है?
(a) संदिग्ध वर्तमान (b) संभाव्य वर्तमान
(c) तात्कालिक वर्तमान (d) सामान्य वर्तमान
16. निम्न में से क्या काल कहलाता है?
(a) क्रिया के घटित होने का समय
(b) क्रिया का सामान्य रूप
(c) क्रिया का मूल रूप
(d) क्रिया का पूर्ण रूप
17. “मंदिर में जाने के बाद मन को शांति मिली है।” दिए गए वाक्य का काल पहचानिए।
(a) सामान्य भूतकाल (b) पूर्ण वर्तमानकाल
(c) अपूर्ण भूतकाल (d) सामान्य वर्तमानकाल
18. “मैं खाना खा चुका था,” इस वाक्य में कौन-सा भूतकालिक भेद है?
(a) आसन्न भूत (b) संदिग्ध भूत
(c) सामान्य भूत (d) पूर्ण भूत
19. “लोग बड़ी-बड़ी गाड़ियाँ लेकर आ रहे थे” वाक्य का काल पहचानिए।
(a) अपूर्ण वर्तमानकाल (b) सामान्य भूतकाल
(c) सामान्य भविष्यकाल (d) अपूर्ण भूतकाल
20. ‘प्रधानमंत्री बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों का दौरा करेंगे’ वाक्य में कौन-सा काल है?
(a) सामान्य भविष्यकाल (b) सामान्य भूतकाल
(c) संभाव्य भविष्यकाल (d) सामान्य वर्तमानकाल
21. “वह आये तो मैं जाऊँ”, प्रस्तुत वाक्य में कौन-सा काल है?
(a) संभाव्य भविष्य काल (b) हेतुहेतुमद् भविष्य काल
(c) सामान्य भविष्य काल (d) भूतकाल
22. वाच्य के कितने प्रकार हैं?
(a) तीन (b) चार
(c) एक (d) कोई प्रकार नहीं
23. ‘मरम वचन जब सीता बोला’-
पंक्ति का प्रयोग हुआ है
(a) कर्मवाच्य (b) कर्तृवाच्य
(c) गलत वाक्य (d) भाववाच्य
24. भाव वाच्य छाँटिए:
(a) दादाजी के द्वारा अनिल को डाँटा गया।
(b) तोते से उड़ा नहीं गया।
(c) अशोक ने आइसक्रीम खाई।
(d) चोर पकड़ा गया।
25. क्रियापरक व्याकरणिक कोटि चिह्नित कीजिए।
(a) कारक (b) लिंग
(c) वचन (d) पक्ष
26. मुख्य अतिथि के सम्मान में यह आयोजन किया गया है।
इस वाक्य में रेखांकित शब्द में कारक बताइये।
(a) अधिकरण (b) कर्ता
(c) कर्म (d) सम्प्रदान
27. “ठीक समय पर आ जाना” में कौन-सा कारक है?
(a) कर्म (b) करण
(c) सम्प्रदान (d) अधिकरण
28. ‘नौकर ने दरवाजा खोला’ वाक्य के रेखांकित पद में कौन सा कारक है?
(a) कर्ता कारक (b) कर्म कारक
(c) करण कारक (d) अपादान कारक
29. ‘कानों सुनी बात पर यकीन मत करो।’ रेखांकित पद का कारक बताइए।
(a) कर्ता (b) कर्म
(c) करण (d) संप्रदान
30. निम्नलिखित वाक्यों में से संबंध कारक वाले वाक्य को पहचानिए।
(a) राम खाना खाता है।
(b) राधा का कुत्ता बहुत तेज दौड़ता है।
(c) राम ने रावण को मारा।
(d) माँ अपने बच्चे को मारती है।

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (c) | 2. (d) | 3. (a) | 4. (b) | 5. (a) | 6. (b) | 7. (c) | 8. (a) | 9. (a) | 10. (d) |
| 11. (b) | 12. (b) | 13. (c) | 14. (a) | 15. (b) | 16. (a) | 17. (b) | 18. (d) | 19. (d) | 20. (a) |
| 21. (b) | 22. (a) | 23. (c) | 24. (b) | 25. (a) | 26. (a) | 27. (d) | 28. (a) | 29. (c) | 30. (b) |

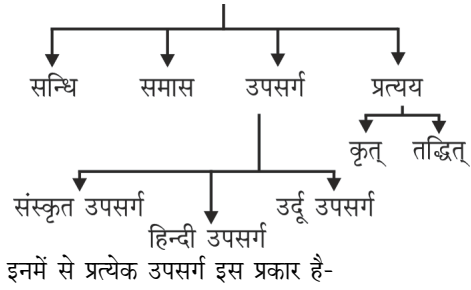
उपसर्ग (Prefixes)

परिभाषा-‘उपसर्ग’ उस शब्दांश या अव्यय को कहते हैं, जो किसी शब्द के पहले आकर उसका विशेष अर्थ प्रकट करता है।

⇒ उपसर्ग = उप (समीप) + सर्ग (सृष्टि करना) का अर्थ है- किसी शब्द के समीप आकर नया शब्द बनाना।

⇒ संस्कृत, हिन्दी, और उर्दू भाषा से प्राप्त उपसर्गों की संख्या इस तरह निश्चित की गयी है-

संस्कृत उपसर्ग- 19, हिन्दी उपसर्ग- 10, उर्दू उपसर्ग 12

हिन्दी शब्द निर्माण विधि

इनमें से प्रत्येक उपसर्ग इस प्रकार है-

1. संस्कृत उपसर्ग-19

उपसर्ग	अर्थ	शब्दरूप
अति-	अधिक, ऊपर, उस पार	अतिकाल, अतिरिक्त, अतिशय, अत्युक्ति अतिक्रमण इत्यादि
अधि-	श्रेष्ठ, ऊपर, समीप्य	अधिकरण, अधिकार, अधिराज, अध्यात्म, अध्यक्ष, अधिपति इत्यादि।
अनु-	क्रम, पश्चात्, समानता	अनुशासन, अनुकरण, अनुवाद, अनुचर, अनुज, अनुपात, अनुस्वार, अनुकूल, अनुशीलन, अनुवाद इत्यादि

अप-	लघुता, हीनता, अभाव, विरुद्ध	अपमान, अपशब्द, अपहरण, अपराध, अपकार, अपभ्रंश, अपयश, अपव्यय, अपवाद, अपकर्ष इत्यादि।
अभि-	सामीप्य, अधिक्य, ओर, इच्छा प्रकट करना	अभिभावक, अभियान, अभिशाप, अभिप्राय, अभियोग, अभिनव, अभ्युदय, अभ्यागत, अभ्यास, इत्यादि।
अव-	हीनता, अनादर, पतन	अवगत, अवलोकन, अवतार, अवसान, अवशेष, अवज्ञा, इत्यादि
आ-	सीमा, ओर, समेत, कमी, विपरीत	आरक्त, आगमन, आकाश, आकर्षण, आजन्म, आचरण, आरम्भ, आमुख आक्रोश इत्यादि।
उत् - उद्	ऊपर, उत्कर्ष	उत्तम, उत्कण्ठा, उत्कर्ष, उत्पन्न, उन्नति, उद्देश्य, उत्साह, उद्गम, उत्थान इत्यादि।

उप-	निकटता, सदृश, गौण, सहायक, हीनता	उपकार, उपकूल, उपनिवेश, उपदेश, उपवन, उपासना, उपभेद इत्यादि।
दुर्-दुस्	बुरा, कठिन, दुष्ट, हीन	दुर्दृश, दुर्वस्था, दुर्जन, दुर्लभ, दुष्कर्म, दुर्गुण, दुर्गम इत्यादि।
नि	भीतर, नीचे, अतिरिक्त	निदर्शन, निवृष्ट, निपात, नियुक्त, निवास, निरुपण, निवारण, निदान, निबन्ध इत्यादि।
निर् - निस्	बाहर, निषेध, रहित	निर्वास, निराकरण, निर्भय, निर्वाह, निर्दोष, निर्मल, निर्जीव इत्यादि।
परा	उलटा, अनादर, नाश	पराजय, पराक्रम, पराभव, परामर्श, पराभूत इत्यादि।
परि	आसपास, चारों ओर पूर्ण, अतिशय, त्याग	परिजन, परिणाम, परिक्रमा, परिपूर्ण परिधि, परिवर्तन, पर्याप्त इत्यादि।
प्र	अधिक, आगे, ऊपर, यश	प्रकाश, प्रख्यात, प्रचार, प्रबल, प्रमाण, प्रसन्न, प्रसिद्धि, प्रपञ्च इत्यादि।
प्रति	विरोध, बराबरी, प्रत्येक, परिवर्तन	प्रतिक्षण, प्रतिध्वनि, प्रतिनिधि, प्रत्येक, प्रत्यक्ष, प्रत्युपकार इत्यादि।

वि	भिन्नता, हीनता, असमानता, विशेषता	विराम, विस्मरण, विकार, विनाश इत्यादि।
सम्	पूर्णता, संयोग	संकल्प, संन्यास, संतोष, सम्मुख, संस्कार, संग्राम, संसर्ग, संस्कृत इत्यादि।
सु	सुखी, अच्छा, भाव, सहज, सुन्दर	सुकर्म, सुगम, सुलभ, सुदूर, स्वागत, सुभाषित, सुजन इत्यादि।

2. हिन्दी-उपसर्ग-10

उपसर्ग	अर्थ	शब्दरूप
अ-अन	निषेध के अर्थ में	अमोल, अपढ़, अजान, अगाध, अलग, अनमोल इत्यादि
अध	आधे के अर्थ में	अधजला, अधपका, अधखिला, अधमरा, अधसेरा इत्यादि
उन	एक कम	उन्नीस, उन्तीस, उनचास, उनसठ, उनहत्तर इत्यादि।
औ (अव)	हीनता, निषेध	अवगुण, औघट, औसर, औढर इत्यादि।
दु	बुरा, हीन	दुकाल, दुबला इत्यादि।
नि	निषेध, अभाव, विशेष	निकम्मा, निखरा, निडर, निधड़क इत्यादि।
बिन	निषेध	बिनब्याहा, बिनजाना, बिनबोया, बिनदेखा, बिनखाया, बिनचखा, बिनकाम इत्यादि।

भर	पूरा, ठीक	भरपेट, भरसक, भरपूर, भरदिन इत्यादि।
कु-क	बुराई, हीनता	कुखेत, कुपात, कुघड़ी, कपूत इत्यादि।
सु-स	श्रेष्ठता और साथ के अर्थ में	सुडौल, सुजान, सुपात्र, सपूत, सजग, सगोत्र, सरस, सहित इत्यादि।

3. उद्- उपसर्ग (अरबी-फारसी)-12

उपसर्ग	अर्थ	शब्दरूप
अल	निश्चल	अलबत्ता, अलगरज आदि
कम	हीन, थोड़ा	कमउम्र, कमखयाल, कमसिन इत्यादि।
खुश	श्रेष्ठता के अर्थ में	खुशबू, खुशदिल, खुशकिस्मत, खुशहाल, खुशखबरी इत्यादि
गैर	निषेध	गैरहाजिर, गैरवाजिब, गैरकानूनी, गैर सरकारी इत्यादि।
दर	में	दरकार, दरमियान इत्यादि।
ना	अभाव	नापसन्द, नामुमकिन, नराज, नालायक, नादान इत्यादि।
बद	बुरा	बदमाश, बदनाम, बदकार, बदकिस्मत, बदबू, बदहजमी इत्यादि।
बर	ऊपर, पर, बाहर	बरखास्त, बरदाश्त इत्यादि।

बिल	साथ	बिलकुल
बे	बिना	बेईमान, बेइज्जत, बेरहम इत्यादि
ला	बिना	लाचार, लाजवाब, लावारिस, लापरवाह, लापता, इत्यादि
हम	बराबर समान	हमउम्र, हमदर्दी, हमपेशा इत्यादि।

प्रत्यय- (Suffixes)

परिभाषा- मूलशब्दों के बाद जो शब्दांश जोड़ा जाता है, उसे 'प्रत्यय' कहते हैं।

⇒ प्रत्यय दो शब्दों से बना है- **प्रति + अय**।

प्रति का अर्थ- साथ में, और **अय** का अर्थ चलनेवाला है। अर्थात् शब्दों के साथ चलनेवाला या लगनेवाला।

प्रत्यय के भेद- मूलतः प्रत्यय के दो प्रकार होते हैं-

1. कृत् प्रत्यय
2. तद्धित प्रत्यय

1. कृत् प्रत्यय-

⇒ क्रिया या धातु के अन्त में प्रयुक्त होने वाले प्रत्ययों को 'कृत' प्रत्यय तथा कृत् प्रत्यय से युक्त शब्द 'कदन्त' कहलाते हैं।

सारणी द्रष्टव्य

कृत् - प्रत्यय	क्रिया	कृदन्त - शब्द
वाला	गाना	गानेवाला
हार	होना	होनहार
ऐया, वैया	रखना, खेना	रखैया, खेवैया
इया	छलना, जड़ना	छलिया, जड़िया
अक	कृ	कारक
अन	नी	नयन
ति	शक्	शक्ति
तव्य	कृ	कर्तव्य
यत्	दा	देय

कृत-प्रत्यय	धातु	विशेषण
क्त	भू	भूत
मान	विद्	विद्यमान

(क) संस्कृत के कृत-प्रत्यय और संज्ञाएँ-

कृत-प्रत्यय	धातु	भाववाचक संज्ञाएँ
अ	कम्	काम
अना	विद्	वेदना

आ	इष्	इच्छा
आ	पूज्	पूजा
ञ् (ङि)	यज्	यज्ञ
ति	शक्	शक्ति
उ	बन्ध्	बन्धु
उक	भिक्ष्	भिक्षुक
ई	त्याज्	त्यागी

कृत-प्रत्यय	धातु	कर्तृवाचक संज्ञाएँ
अक	गै	गायक
अ	सृप्	सर्प
अ	दिव्	देव

कृत् - प्रत्यय	धातु	कर्मवाचक संज्ञाएँ
य	कृ	कृत्य
अ	प्र+हृ	प्रहार

संस्कृत के कृत् - प्रत्यय और विशेषण-

कृत्	धातु	विशेषण
क्त	भू	भूत
न (क्त)	खिद्	खिन्न
ण (क्त)	जृ	जीर्ण
मान	सेव्	सेव्यमान
अनीय	दृश्	दर्शनीय
अनीय	श्रु	श्रवणीय

(ख) हिन्दी के कृत् - प्रत्यय

कृत् - प्रत्यय	धातु	भाववाचक संज्ञाएँ
अ	भर	भार
अन्त	भिड़	भिड़न्त
आ	फेर	फेरा

अई- इस प्रत्यय में भाववाचक संज्ञाएँ बनती है-

जैसे-	लड़ना	-	लड़ाई	खिलाना	-	खिलाई
	दिखाना	-	दिखाई	चराना	-	चराई
	सुनना	-	सुनाई	पिसाना	-	पिसाई
	पढ़ना	-	पढ़ाई	कमाना	-	कमाई
	सीना	-	सिलाई			

कारणवाचक संज्ञाएँ-

प्रत्यय	धातु	कारणवाचक संज्ञाएँ
आ	झूल	झूला
न	बेल	बेलन

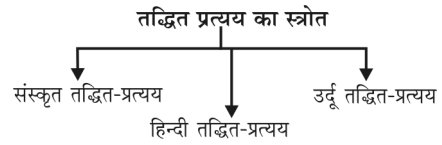
ई	रेत	रेती
ऊ	झाड़	झाड़ू
आनी	मथ	मथानी

कर्तृवाचक कृदन्त- विशेषण

प्रत्यय	धातु	विशेषण
आका	लड़	लड़ाका
आलू	झगड़	झगड़ा लू
अक्कड़	पी	पिअक्कड़

2. तद्धित प्रत्यय- संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के अन्त में लगने वाले प्रत्यय को 'तद्धित' प्रत्यय कहा जाता है और उनके मेल से बने शब्द को 'तद्धितान्त'।

⇒ कृत् - प्रत्यय, क्रिया या धातु के अन्त में लगता है, जबकि तद्धित प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के अन्त में।



संस्कृत के तद्धित- प्रत्यय

प्रत्यय	संज्ञा-विशेषण	तद्धितान्त
अ	निशा	नैश
अ	मुनि	मौन
अ	शिव	शैव
अक	शिक्षा	शिक्षक
ई	पक्ष	पक्षी
क	दर्श	दर्शक
ठ	कर्म	कर्मठ
य	दिति	दैत्य
मान्	बुद्धि	बुद्धिमान
त्व	गुरु	गुरुत्व
ईय	पाणिनि	पाणिनीय
आयन	काती	कात्यायन

जातिवाचक से भाववाचक संज्ञाएँ-

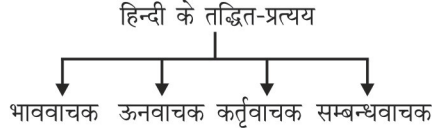
तद्धित प्रत्यय	संज्ञा	भाववाचक संज्ञाएँ
ता	वीर	वीरता
ता	शत्रु	शत्रुता
त्व	गुरु	गुरुत्व
त्व	मनुष्य	मनुष्यत्व

व्यक्तिवाचक से अपत्यवाचक संज्ञाएँ-

तद्धित प्रत्यय	-	व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ	अपत्यवाचक संज्ञाएँ
अ		पाण्डु	पाण्डव
अ		मनु	मानव
अ		कुरु	कौरव
य		दिति	दैत्य
एय		कुन्ती	कौन्तेय
अ		पृथा	पार्थ

विशेषण से भाववाचक संज्ञाएँ-

तद्धित- प्रत्यय	विशेषण	भाववाचक संज्ञाएँ
ता	मूर्ख	मूर्खता
ता	शिष्ट	शिष्टता
इमा	रिक्त	रिक्तिमा
त्व	लघु	लघुत्व
अ	गुरु	गौरव
अ	लघु	लाघव
इमा	शुक्ल	शुक्लिमा
त्व	वीर	वीरत्व
ता	बुद्धिमान्	बुद्धिमत्ता



प्रत्यय	संज्ञा-विशेषण	भाववाचक संज्ञाएँ
आई	चतुर	चतुराई
आन, आई	चौड़ा	चौड़ान, चौड़ाई
आस	मीठा	मिठास

प्रत्यय	संज्ञा-विशेषण	ऊनवाचक संज्ञाएँ
आ	ठाकुर	ठकुरा
इया	खाट	खटिया
ई	ढोलक	ढोलकी
ओला	साँप	साँपोला
ड़ा	बाछा	बछड़ा

प्रत्यय	संज्ञा-विशेषण	सम्बन्धवाचक संज्ञाएँ
हाल	नाना	ननिहाल
आल	ससुर	ससुराल
औती	बाप	बपौती
जा	भाई (भातृ)	भतीजा

एरा	मामा	ममेरा
एल	नाक	नकेल
ए	लेखा	लेखे

प्रत्यय	संज्ञा	कर्तृवाचक संज्ञाएँ
आर	सोना	सुनार
आर	लोहा	लुहार
ई	तमोल (ताम्बुल)	तमोली
ई	तेल	तेली
एरा	साँप	साँपेरा
एरा	काँसा	कसेरा
हारा	लकड़ी	लकड़हारा

3. उर्दू के तद्धित प्रत्यय

प्रत्यय	मूलशब्द	सप्रत्यय शब्द	वाचक
आ	खराब	खराबा	भाववाचक
आ	सफेद	सफेदा	भाववाचक
ई	खुश	खुशी	भाववाचक
नामा	इकरार	इकरारनामा	भाववाचक
गी	मर्दाना	मर्दानगी	भाववाचक
आब	गुल	गुलाब	स्थितिवाचक
आब	गिल (मिट्टी)	गिलाब (कीचड़)	स्थितिवाचक
दान	कलम	कलमदान	स्थितिवाचक

विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. 'अभ्यागत' शब्द में कौन सा उपसर्ग है?
 (a) अ (b) अभ्य
 (c) अभि (d) अभ्या
 UP TET - Ist Paper (I-V) Dec. 2016
 उत्तर : (c)
2. 'अत्याचार' शब्द में उपसर्ग है-
 (a) आ (b) अत्
 (c) अति (d) अत्या
 UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Dec. 2016
 उत्तर : (c)
3. 'अज्' शब्द को स्त्रीवाचक बनाने के लिए किस प्रत्यय का प्रयोग होगा?
 (a) ईय (b) इक
 (c) आ (d) ई
 UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016
 उत्तर : (c)
4. 'सजावट' शब्द का प्रत्यय बताइए।
 (a) आव (b) आवट
 (c) आहट (d) टा
 UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2011
 उत्तर : (b)

5. 'दुस्साहस' शब्द का उपसर्ग चुनिए—

- (a) दुस् (b) दुर
(c) दु (d) स

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2011

उत्तर : (a)

निर्देश (प्र. सं. 6-8) नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं, उनमें प्रयुक्त उपसर्ग चुनकर लिखिए।

6. अपमान—

- (a) अव (b) उप
(c) अति (d) अप

UP TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2011

उत्तर : (d)

7. दुरवस्था—

- (a) दुस् (b) दुर
(c) अव (d) दु

UP TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2011

उत्तर : (b)

8. पराजय—

- (a) परि (b) प्र
(c) परा (d) आ

UP TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2011

उत्तर : (c)

9. दिए गए विकल्पों में से तद्भव शब्द का चयन कीजिए -

- (a) बैंक (b) अमीर
(c) अग्नि (d) मुँह

UP TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2011

उत्तर : (d)

निर्देश (प्र. सं. 10-12) नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। प्रत्येक शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय विकल्पों से चुनिए।

10. घुमक्कड़—

- (a) ओड़ा (b) अक्कड़
(c) आक (d) ऊ

UP TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2011

उत्तर : (b)

11. डिबिया—

- (a) इया (b) आ
(c) आई (d) ई

UP TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2011

उत्तर : (a)

12. भिक्षुक—

- (a) अ (b) उ
(c) उक (d) अक

UP TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2011

उत्तर : (c)

13. 'लेखक' शब्द के अन्त में कौन-सा प्रत्यय लगा हुआ है?

- (a) क (b) इक
(c) आक (d) अक

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) June 2013

उत्तर : (d)

14. किस शब्द में 'इत' प्रत्यय है?

- (a) प्रत्येक (b) प्रोत्साहित
(c) उपस्थिति (d) निश्चित

Bihar TET_Ist Paper 2011

उत्तर : (b)

15. आवरण में कौन-सा उपसर्ग लगाकर नया शब्द बनाया जा सकता है?

- (a) नि (b) निवा
(c) परि (d) पर्य

Bihar TET_IInd Paper 2011

उत्तर : (c)

16. 'कल्पना', 'शिक्षा' में इक प्रत्यय का प्रयोग करने से शब्द बनेंगे -

- (a) काल्पनिक, शिक्षिक (b) कल्पनिक, शैक्षिक
(c) कल्पनिक, शिक्षिक (d) काल्पनिक, शैक्षिक

Bihar TET_IInd Paper 2011

उत्तर : (d)

17. 'आमरण' शब्द के प्रारम्भ में लगे 'आ' को व्याकरण की दृष्टि से क्या कहते हैं?

- (a) मूलशब्द (b) उपसर्ग
(c) प्रत्यय (d) तद्धित प्रत्यय

Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (b)

18. वर्ण में 'इक' प्रत्यय लगाने पर बनने वाला शब्द होगा—

- (a) वार्षिक (b) वणिक
(c) वर्णिक (d) वार्षिक

Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (d)

19. अनुकरणीय में लगा है प्रत्यय—

- (a) अनु (b) करण
(c) इय (d) ईय

Chhattisgarh TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

उत्तर : (d)

20. किस शब्द में 'कु' उपसर्ग नहीं है?

- (a) कुरूप (b) कुशल
(c) कुकर्म (d) कुचाल

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) July 2011

उत्तर : (b)

21. 'इन' प्रत्यय का प्रयोग किस शब्द में हुआ है?

- (a) पुजारिन (b) कठिन
(c) चिह्न (d) मीन

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) July 2011

उत्तर : (a)

22. जो शब्दांश किसी शब्द के अन्त में जुड़कर नया शब्द बनाते हैं, उसे कहते हैं -

- (a) समास (b) सन्धि
(c) प्रत्यय (d) उपसर्ग

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) April 2016

उत्तर : (c)

23. 'स्वयंवर' शब्द में कौन-सा उपसर्ग प्रयुक्त है?
 (a) स्व (b) स
 (c) स्वयं (d) सम्
Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Jan. 2011
 उत्तर : (c)
24. 'गवैया' किस प्रत्यय का शुद्ध रूप है?
 (a) कर्तृवाच्य
 (b) कर्मवाचक कृत् प्रत्यय
 (c) करण वाचक कृत् प्रत्यय
 (d) भारवाचक कृत् प्रत्यय
Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Jan. 2011
 उत्तर : (a)
25. धातु में प्रत्यय जोड़ने से बने शब्द कहलाते हैं -
 (a) विशेषण (b) कृदन्त
 (c) क्रिया (d) तद्धितान्त
Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2013
 उत्तर : (b)
26. निम्नलिखित में से किस शब्द का निर्माण उपसर्ग से नहीं हुआ है?
 (a) अवसाद (b) उन्नति
 (c) सज्जन (d) सुनहरा
Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2013
 उत्तर : (d)
27. निम्नलिखित में प्रत्यय युक्त शब्द नहीं है -
 (a) बोली (b) भाषा
 (c) पिपासा (d) अंकुर
Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2013
 उत्तर : (d)
28. निम्नलिखित में प्रत्यय युक्त शब्द है -
 (a) सादर (b) सावधान
 (c) स्वभाव (d) समझदार
Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2013
 उत्तर : (d)
29. टिकाऊ में प्रत्यय है -
 (a) ऊ (b) आऊ
 (c) वू (d) उक
Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2011
 उत्तर : (b)
30. किस शब्द में 'ल' प्रत्यय रूप में नहीं आया है?
 (a) कुशल (b) मृदुल
 (c) विमल (d) रोमल
Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014
 उत्तर : (c)
31. कौन-सा शब्द 'ईन' प्रत्यय के योग से नहीं बना है?
 (a) मनोहारिण (b) नमकीन
 (c) युगीन (d) ग्रामीण
Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014
 उत्तर : (a)
32. 'प्राक्तन' शब्द में उपसर्ग एवं मूल शब्द का सही विकल्प है -
 (a) प्रा + तन (b) प्राक् + तन
 (c) पर् + तन (d) प्रा + कतन
Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

- उत्तर : (b)
33. 'प्रत्युत्पन्नमति' में कौन-सा उपसर्ग है?
 (a) प्रत्य (b) प्रत्
 (c) प्रति (d) प्रत्यु
Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2015
 उत्तर : (c)
34. 'सावधानी' शब्द में कौन-सा प्रत्यय है?
 (a) नी (b) ई
 (c) इ (d) आनी
Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2015
 उत्तर : (b)
35. निम्नलिखित में से किस शब्द में एक प्रत्यय लगा हुआ है?
 (a) सागर (b) नगर
 (c) अगर (d) जादूगर
Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2015
 उत्तर : (d)
36. किस शब्द में कोई भी उपसर्ग नहीं है?
 (a) असुरक्षित (b) अप्रत्याशित
 (c) स्वागत (d) स्वार्थ
Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014
 उत्तर : (d)
37. 'अधि' उपसर्ग से बना शब्द नहीं है-
 (a) अध्यापन (b) अध्यवसाय
 (c) अधीर (d) अध्यादेश
Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014
 उत्तर : (c)
38. 'निरपराध' में प्रयुक्त उपसर्ग है-
 (a) नि (b) ने
 (c) निर् (d) इनमें से कोई नहीं
Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014
 उत्तर : (c)
39. 'अ' उपसर्ग के प्रयोग से बना शब्द है-
 (a) अनन्त (b) अन्वेषण
 (c) अवैतनिक (d) अपेक्षा
Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2012
 उत्तर : (c)
40. निम्न में से किस शब्द में प्रत्यय का प्रयोग नहीं हुआ है?
 (a) बसन्त (b) रटन्त
 (c) भिङ्गन्त (d) धङ्गन्त
Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2012
 उत्तर : (a)
41. 'सुत्' शब्द को स्त्रीवाचक बनाने के लिए किस प्रत्यय का प्रयोग होगा?
 (a) ईय (b) ई
 (c) इक (d) आ
UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014
 उत्तर : (d)
42. कृदन्त प्रत्यय किसके साथ जुड़ते हैं?
 (a) संज्ञा (b) सर्वनाम
 (c) धातु (d) विशेषण
Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2015
 उत्तर : (c)

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. उपसर्ग को कहते हैं-
(a) शब्दांश (b) वाक्यांश
(c) शब्द (d) पद
2. 'उपसर्ग' से सम्बन्धित सूत्र है :
(a) प्रादयः (b) परश्च
(c) गतिश्च (d) इनमें से कोई नहीं
3. 'अप' उपसर्ग दिए गए विकल्पों में से किस के साथ प्रयुक्त हो सकता है?
(a) जय (b) राम (c) मान (d) रण
4. 'निर्गुण' शब्द में उपसर्ग है-
(a) नि (b) नी (c) निर् (d) निर्गु
5. 'संयोग' शब्द में उपसर्ग एवं मूल कौन से हैं?
(a) सः+योग (b) स + योग
(c) सम् +योग (d) सन् + योग
6. 'निरभिमानी' शब्द में मूलशब्द क्या है?
(a) मान (b) अभिमानी
(c) अभिमान (d) मानी
7. 'प्रत्यर्पण' शब्द मेंउपसर्ग लगा है।
(a) प्र (b) प्रति (c) प्रत्य (d) पर
8. 'प्रतिष्ठा' शब्द में उपसर्ग है।
(a) प्र (b) प्रा (c) प्रति (d) प्रतिष्
9. 'अधि' उपसर्ग का उदाहरण इनमें से किस शब्द के माध्यम से दिया जा सकता है?
(a) आधार (b) अधूरा (c) अधर (d) अध्याय
10. 'आगमन' में उपसर्ग है :
(a) आ (b) अ (c) आग (d) मन
11. 'कहावत' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है -
(a) हावत (b) वत (c) कह (d) आवत
12. सुशिक्षित में उपसर्ग है
(a) पर (b) सु (c) उ (d) सी
13. "उन्नीस" शब्द में उपसर्ग है-
(a) उत् (b) उत (c) उन (d) उन्
14. "अभ्यागत" शब्द में उपसर्ग है-
(a) अभि (b) अ (c) अभ्य (d) अंभ
15. "परिभाषा" में कौन-सा उपसर्ग है?
(a) अव (b) अपि (c) प्र (d) परि
16. 'बहिर्मुखी' शब्द में कौन-सा उपसर्ग है?
(a) बहिर् (b) बहिर (c) बहिस (d) बहि
17. 'अधिमानता' में प्रयुक्त उपसर्ग बताएँ-
(a) अ (b) अध (c) अधि (d) ता
18. "परा" उपसर्ग का अर्थ है-
(a) भीतर (b) उल्टा (c) बाहर (d) आस-पास
19. 'आगमन' शब्द में कौन-सा उपसर्ग है? नीचे दिए गए विकल्पों में से चयन कीजिए :
(a) अव (b) आग (c) अ (d) आ
20. प्रत्यय होता है-
(a) शब्दांश (b) वाक्यांश
(c) पदांश (d) पद्यांश
21. कृदन्त प्रत्यय किन शब्दों के साथ जुड़ते हैं-
(a) संज्ञा (b) सर्वनाम
(c) क्रिया (d) अव्यय
22. 'खिलौना' शब्द का मूलशब्द है _____ और प्रत्यय है _____।
रिक्त स्थान हेतु सही विकल्प चुनें।
(a) खेलना + औना (b) खेल + औना
(c) चिल + औना (d) चिलना + औना
23. मिलाप - शब्द में कौन-सा प्रत्यय है?
(a) मिल (b) आप
(c) अप (d) लाप
24. 'गौरव' शब्द किस तद्धित प्रत्यय के योग से बना है?
(a) अ (b) इक
(c) आयन (d) इनमें से कोई नहीं
25. 'पाण्डव' शब्द में कैसा प्रत्यय है -
(a) कदन्त (b) तद्धित
(c) स्त्री (d) प्रत्यय नहीं है
26. 'प्रत्यय' रहित शब्द बताइए -
(a) मर्मज्ञ (b) वैज्ञानिक
(c) कृपालु (d) अनुवाद
27. 'विचार' में 'इक' प्रत्यय लगाने से बनता शब्द:
(a) वेचारिक (b) विचारिक
(c) विचौरिक (d) वैचारिक
28. "आंशिक" शब्द में प्रत्यय क्या है?
(a) अ (b) क (c) इक (d) शिक
29. निम्नलिखित पद में कौन सा पद 'वैया' प्रत्यय लगाने से बना है?
(a) रवैया (b) डटैया
(c) खवैया (d) बचैया
30. 'पुस्तकीय' शब्द में प्रत्यय बताइए-
(a) कीय (b) य
(c) ईय (d) इय

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (a) | 2. (a) | 3. (c) | 4. (c) | 5. (c) | 6. (a) | 7. (b) | 8. (c) | 9. (d) | 10. (a) |
| 11. (d) | 12. (b) | 13. (c) | 14. (a) | 15. (d) | 16. (a) | 17. (c) | 18. (b) | 19. (d) | 20. (a) |
| 21. (c) | 22. (b) | 23. (b) | 24. (a) | 25. (b) | 26. (d) | 27. (d) | 28. (c) | 29. (c) | 30. (c) |

मुहावरा

रूढ़ या विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त वाक्यांश मुहावरा कहलाता है। 'मुहावरा' मूल रूप से अरबी भाषा का शब्द है।

परिभाषा-

“ऐसा वाक्यांश जो सामान्य अर्थ का न बोध कराकर किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीति कराये मुहावरा कहलाता है।”

(डॉ. वासुदेवनन्दन प्रसाद)

“मुहावरा भाषा विशेष में प्रचलित उस अभिव्यक्त इकाई को कहते हैं, जिसका प्रयोग प्रत्यक्षार्थ से अलग रूढ़ि लक्ष्यार्थ के लिए किया जाता है।”

(डॉ. भोलानाथ तिवारी)

लोकोक्ति- किसी विशेष स्थान पर प्रसिद्ध हो जाने वाले कथन को लोकोक्ति कहते हैं अर्थात्- जब कोई पूरा कथन किसी प्रसंग विशेष में उद्धृत किया जाता है तो लोकोक्ति कहलाता है लोकोक्ति शब्द 'लोक + उक्ति' शब्दों से मिलकर बना है जिसका अर्थ है- 'लोक में प्रचलित उक्ति या कथन'। लोकोक्ति को 'कहावत' भी कहते हैं।

मुहावरा और लोकोक्ति में अन्तर-

क्र.स.	मुहावरा	लोकोक्ति
1.	मुहावरा बात को कहने की रीति या पद्धति है।	कहावत कथन में व्यक्त अनुभव/विचार का सारगर्भित और स्थायी निचोड़ है।
2.	मुहावरा फल से सम्बन्धित नहीं होता	कहावत फल से सम्बन्धित होती है।
3.	मुहावरे का स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता।	कहावत का स्वतंत्र प्रयोग होता है।
4.	मुहावरों के अन्त में बहुधा 'ना' आता है जैसे- खाक छानना, गाल बजाना आदि।	कहावत में प्रायः ऐसा कुछ नहीं होता है।
5.	मुहावरा वाक्यांश है।	कहावत वाक्य है
6.	मुहावरे लाक्षणिक अर्थ देने के लिए प्रयुक्त होते हैं।	कहावत का प्रयोग प्रायः अन्योक्ति या अप्रस्तुत व्यंजना के लिए होता है।
7.	मुहावरे का कार्य चमत्कार उत्पन्न कर भाषा- सौन्दर्य को स्थापित करना है।	कहावत का कार्य कथन के खण्डन-मण्डन अथवा विरोध को रेखांकित करने का होता है।

मुहावरे**अर्थ**

अंक भरना	- स्नेह/प्रेम से लिपटा लेना
अंकुश रखना	- नियन्त्रण में रखना
अक्ल की दुम	- अपने को बड़ा होशियार लगाने वाला
अक्ल के पीछे लठ लिये फिरना	- मूर्खता करना
अक्ल पर पत्थर/पर्दा पड़ना	- बुद्धि भ्रष्ट होना
अक्ल चकराना	- कुछ समझ में न आना
अक्ल का पुतला	- अधिक बुद्धिमान
अक्ल का अंधा	- मूर्ख
अंग टूटना	- थकावट से दर्द होना
अंगारों पर लोटना	- दुःख सहना/डाह होना
अंगार बनना	- क्रुद्ध होना
अंगर-मंगर करना	- टालमटोल करना
अंगार सिर पर धरना	- कठिन दुःख सहना
अंगारों पर पैर रखना	- जान-बूझकर खतरनाक कार्य करना
अंगारे उगलना	- क्रोध में कठोर वचन बोलना
अंग-अंग फूले न समाना	- बहुत खुश होना
अंग-अंग ढीला होना	- फुर्ती न रहना
अंग-अंग खिल उठना	- खुश हो जाना
अंगद का पैर होना	- अत्यन्त दृढ़ होना
अंग गिराना	- उत्साह न दिखना
अंग-अंग फड़कना	- स्फूर्ति और ऊर्जा से परिपूर्ण होना
अँगूठा दिखाना	- समय पर धोखा देना
अँगूठा चूमना	- चापलूसी करना
अँगूठे पर मारना	- परवाह न करना
अँगुली पकड़ कर पहुँचा पकड़ना	- थोड़ा सा सहारा पाकर विशेष प्राप्ति के लिए उत्साहित होना
अँचरा पसारना	- माँगना/याचना करना
अँतड़ियाँ गले पड़ना	- संकट में पड़ना
अँतड़ियाँ कुलबुलाना	- बहुत भूख लगना
अँतड़ियाँ में बल पड़ना	- पेट दुखने लगना
अँधेरे मुँह	- उजाला होने से पूर्व
अन्धाधुन्ध लुटाना	- बहुत अपव्यय करना
अँधेर घर का उजाला	- एक मात्र पुत्र
अँगुली पर नचाना	- वश में करना
अंगार बरसना	- कड़ी धूप होना
अंगूर खट्टे होना	- असफलता पर पर्दे डालना

अगले जमाने का आदमी	- सीधा-सादा, ईमानदार	अन्न-जल उठना	- रहने का संयोग न होना/मरना
अंदर होना	- जेल में बन्द होना	अन्त पा लेना	- भेद जानना
अंधेरे में रखना	- भेद छिपाना	अन्न का कन्न करना	- अच्छी चीज को खराब करना
अन्धे की लकड़ी	- एक मात्र सहारा	अन्तर पट खोलना	- हृदय की बात कह देना
अन्धा होना	- विवेक खो देना/विवेक भ्रष्ट होना	अमर बेल बनना	- दृढ़तापूर्वक चिपकना
अन्धा बनाना	- धोखा देना	अगस्त्य का समुद्र पान	- असम्भव कार्य
अन्धाधुन्ध लुटाना	- बिना विचारे व्यय	अग्नि परीक्षा	- कठिन जाँच
अन्धेरनगरी	- जहाँ धाँधली का बोलबाला हो	अमचुर हो जाना	- दुर्बल हो जाना/सुखकर कांटा हो जाना
अन्धे को दिया दिखाना	- व्यर्थ के कार्य करना	अधजल गगरी छलकत जाय	- ओछे व्यक्ति का इतरा कर चलना
अन्धे के हाथ बटेर	- अयोग्य के हाथ अनायास अच्छी वस्तु का लगना	अगिया बैताल	- अत्यन्त क्रोधी होना
अन्धेरखाता	- अन्याय	अथ से इति तक	- प्रारम्भ से समापन तक
अन्धेरे में तीर चलाना	- लक्ष्य-विहीन प्रयास करना	अरमान निकालना	- इच्छायें पूरी करना
अन्धों में काना राजा	- अयोग्य व्यक्तियों के बीच कम योग्य भी ज्यादा योग्य बनता है।	अधर में लटकना	- दुविधा में पड़ा रह जाना
अण्टी मारना	- चाल चलना	अगर-मगर करना	- टालमटोल करना
अटकलें भिड़ाना	- उपाय सोचना	अब-तब होना	- परेशान होना/ मरने के करीब होना
अंड-बंड कहना	- भला-बुरा कहना/अण्ट-सण्ट कहना	अब-तब करना	- बहाना करना
अण्डे सेना	- घर में बेकार बैठना	आँच न आने देना	- जरा भी कष्ट या दोष न आने देना
आठ-आठ आँसू रोना	- बुरी तरह पछताना	आसमान टूट पड़ना	- गजब का संकट पड़ना
अढ़ाई दिन की हुकूमत	- कुछ दिनों की शानोशौकत	आसन डोलना	- क्षुब्ध या विचलित होना
अड़ियल टट्टू	- अटक-अटककर काम करने वाला/ हठी/जिद्दी	आवाज उठाना	- विरोध प्रकट करना
अठखेलियाँ सूझना	- हँसी/ दिल्लगी करना	आकाश कुसुम होना	- पहुँच से बाहर होना
अपना सा मुँह लेकर रह जाना	- शर्मिन्दा होना	आस्तीन का साँप	- कपटी मित्र/विश्वासघाती होना
अपना राग अलापना	- अपनी ही कहते रहना	आकाश/आसमान टूट पड़ना	- अकस्मात् विपत्तियों का आना
अपना रख पराया चख	- अपना बचा कर दूसरों का हड़प करना	आटा-दाल का भाव मालूम होना	- कष्टों का अनुभव होना
अपना किया पाना	- कर्म का फल भोगना	आसमान सिर पर उठाना	- बहुत अधिक जिद करना
अपना ही राग अलापना	- अपनी कहना दूसरे की न सुनना	आकाश पाताल का अन्तर	- बहुत बड़ा अन्तर
अपना उल्लू सीधा करना	- अपना काम निकालना/स्वार्थ सिद्ध करना	आकाश/आसमान से बातें करना	- बहुत ऊँचा होना
अपने पैरों खड़ा होना	- स्वावलम्बी होना	अम्बर/आकाश के तारे तोड़ना	- असम्भव कार्य करना
अपने पाँव आप कुल्हाड़ी मारना	- संकट मोल लेना	आसमान में उड़ना	- कल्पना में उड़ान भरना
अपने मुँह मियाँ मिट्टू होना	- अपनी बड़ाई आप करना	आकाश-पाताल एक करना	- सारा प्रयास कर डालना
अपनी खिचड़ी अलग पकाना	- अलग रहना/स्वार्थी होना	आसमान पर थूकना	- महापुरुषों का निरादर करना
अपना-अपना है, पराया पराया	- अपने पराये की पहचान	आग बबूला होना	- अत्यन्त क्रोधित होना
अपनी खाल में मस्त रहना	- अपनी दशा से संतुष्ट रहना	आगा-पीछा करना	- हिचकिचाना
अन्न लगना	- स्वस्थ रहना	आग में घी डालना	- क्रोध भड़काना/उकसाना
अन्न न लगना	- खाकर भी सेहत न बनना	आगा-पीछा न देखना	- बिना सोचे काम करना
अन्न-जल करना	- जलपान, नाराजगी आदि के कारण निराहार के बाद आहार-ग्रहण	आगे का पैर पीछे पड़ना	- भाग्य उल्टा होना
		आग लगने पर कुआँ खोदना	- पहले से ही कोई उपाय न करना
		आँख दिखाना	- धमकाना/डाँटना
		आँख मिलाना	- सामना करना
		आँख मारना	- इशारा करना
		आँख कान खोल कर चलना	- सावधान होकर चलना
		आँख चुराना	- अपने को छिपाना

आँख बन्द करके काम करना - लापरवाही से काम करना
 आँख का काजल - अत्यंत प्रिय
 आँख उठाकर न देखना - तिरस्कार करना
 आँख लग जाना - झपकी आना
 आँख लगाना - बुरी अथवा लालच भरी दृष्टि से देखना
 आँख रखना - निगरानी करना
 आँख मैली करना - नीयत खराब करना
 आँख बचाना - कतराना
 आँख का अंधा गाँठ का पूरा - बेवकूफ लेकिन धनवान
 आँख की किरकिरी होना - आँखों को चुभने वाला/अच्छा न लगना
 आँखें बिछाना - हृदय से आदर करना
 आँखें पथरा जाना - आँखें थक जाना
 आँखें फेर लेना - प्रतिकूल हो जाना
 आँखें तरसना - देखने को इच्छुक होना
 आँखें फाड़कर देखना - उत्सुकता से घूरना
 आँखें सेंकना - देख सुनकर अनुभव
 आँखें बदल जाना - अपनापन न रहना
 आँखें लाल-पीला करना - क्रोध करना
 आँखें मूँदना - मर जाना
 आँखें तरेरना - क्रोध करना
 आँखें नीची होना - लज्जित होना
 आँखें चमकना - प्रसन्न होना
 आँखें चार होना - एक दूसरे को देखना
 आँखों से गिरना - सम्मान खो देना
 आँखों में रात काटना - सारी रात जागते रहना
 आँखों का तारा होना - अत्यन्त प्रिय/प्यारा
 आँखों में खून उतर जाना - क्रोध करना/गुस्से से आँखें लाल हो जाना
 आँखों में खटकना - बुरा लगना
 आँखों में बसना - अत्यन्त प्रिय होना
 आँखों में धूल झोंकना - धोखा देना
 आँखों में चर्बी छाना/चढ़ना - अधिक घमण्ड होना
 आँखों में सरसों फूलना - नशे में होना/विवेक न होना।
 आँखों का काँटा बनना/होना - बुरा लगना
 आँखों का काजल चुराना - सफाई से चोरी करना
 आँखों में बैठना - बहुत आदर सत्कार करना
 आँखों में गड़ जाना - प्राप्त करने की इच्छा होना
 आँखों के आगे अंधेरा छा जाना - संसार सूना सा प्रतीत होना बेहोश हो जाना।
 आँखों में पानी भर आना - द्रवित होना
 आँखों पर पर्दा पड़ना - जानकारी न होना

आँखों का पानी मरना - निर्लज्ज होना
 आँसू पीकर रह जाना - चुपचाप दुःख सह लेना
 आँसू पोछना - धैर्य प्रदान करना
 आँच आना - हानि पहुँचना
 आँच न आना - आपत्ति से बच जाना
 आँचल पसारना - दया की भीख माँगना
 आटे के साथ घुन भी पिसता है - बुरे की संगति से निरपराध भी दण्ड का भागी बनता है।
 आँधी के आम - सामयिक लाभ
 आधा तीतर-आधा बटेर - सुचारु रूप से नहीं
 इधर की उधर लगाना - चुगली करना
 इधर की दुनिया उधर होना - अनहोनी होना
 इधर का न उधर का - बे आबरू होना/ स्थिति समाप्त कर लेना
 इधर-उधर करना - अस्त-व्यस्त करना
 इधर-उधर की हाँकना - बेकार की बातें करना
 इन्द्रायन का फल - देखने में अच्छा पर गुणों में खराब
 इन्द्रासन की परी होना - बहुत सुन्दर होना
 इन्द्र का आखाड़ा - विलास में डूबा हुआ समाज
 इतिश्री होना - समाप्त होना
 इशारे पर नाचना - गुलाम बनकर रह जाना
 उस कान से उड़ा देना - ध्यान न देना
 इज्जत बिगाड़ना - किसी की मर्यादा भंग करना
 इज्जत अपने हाथ होना - मर्यादा का वश में होना
 इज्जत पर पानी फिरना/ इज्जत में बट्टा लगाना - प्रतिष्ठा कम होना/ इज्जत खराब करना
 इस हाथ ले, उस हाथ दे - लेन-देन साफ करना
 इल्लत पालना - झंझट पाल लेना
 इहा कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं - यहाँ कोई कायर नहीं
 ईंट से ईंट बजाना - नष्ट भ्रष्ट कर देना। बर्बाद कर देना
 ईंट तक बिकवा देना - सर्वस्व नष्ट करना
 ईंट का जबाब पत्थर से देना - क्रिया के जवाब में कड़ी प्रतिक्रिया/ दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार करना
 ईंट का घर मिट्टी होना - अच्छा काम बिगड़ जाना
 ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया - भाग्य की विचित्रता
 ईद का चाँद होना - बहुत समय बाद दिखायी देना
 ईमान बह जाना - धर्म नष्ट हो जाना
 ईमान बगल में दबाना - बेईमानी करना
 उतार चढ़ाव देखना - अनुभव प्राप्त करना
 उल्टी माला फेरना - अनिष्ट की कामना करना
 उल्टे छूरे से मूड़ना - मूर्ख बनाकर स्वार्थ सिद्ध करना

उल्टी गंगा बहाना	- उल्टा काम करना/प्रतिकूल कार्य	एक लाठी सबको हाँकना	- उचित-अनुचित का बिना विचारे व्यवहार
उल्टे पाँव लौटना	- निराश लौटना/शीघ्र लौटना	एक ही थैली के चट्टे-बट्टे होना	- सबका एक समान होना
उल्टा तवा	- अत्यधिक काला	एक आँख से देखना	- बराबर मानना/समान भाव से देखना
उलटा पासा पड़ना	- योजना के विपरीत कार्य होना	एक लकड़ी हाँकना	- सभी के साथ समान व्यवहार
उल्लू सीधा करना	- काम निकालना/ स्वार्थ सिद्ध करना	एक अनार सौ बीमार	- आवश्यकता से अधिक माँग
उल्लू बनाना	- मूर्ख बनाना	एक पंथ दो काज	- एक कार्य के साथ दूसरा कार्य भी पूरा करना
उल्लू का पट्टा	- मूर्ख	एक खून	- जातीय प्रभाव
उल्लू फँसाना	- मूर्ख बनाकर काम निकालना	एक-एक करके	- बारी-बारी से
उल्लू बोलना	- उजाड़ होना	एक टक	- पलक झपकाए बिना
उबल पड़ना	- एक दम क्रोधित हो जाना	एक आवाज	- संघटित माँग अथवा विचार प्रकट करना
उगल देना	- भेद प्रकट कर देना/गुप्त बात प्रकट करना	एक और एक ग्यारह होना	- संगठन में शक्ति का होना
उँगली उठाना	- आलोचना करना	एक-एक नस पहचानना	- सब कुछ समझना
उँगली पकड़कर पहुँचा पकड़ना	- धीरे-धीरे साहस को बढ़ावा देना	एक न चलना	- बश न चलना
उँगली पर नचाना	- वश में रखना	एक दो तीन बोलना	- नीलमी बोलना
उँगलियों पर नाचना	- किसी की इच्छाओं का तुरंत पालन करना	एक हाथ से ताली न बजना	- एक पक्ष से कुछ नहीं होता
उन्नीस- बीस होना	- करीब-करीब एक समान होना/ बहुत मामूली सा अन्तर होना/ एक का दूसरे से कुछ अच्छा होना	एक घाट पानी पीना	- एकता और सहनशीलता का होना
उन्नीस पड़ना	- कुछ घटकर होना	एक टाँग पर खड़ा रहना	- सदा तैयार रहना
उठ जाना	- मरना	एक-एक कोना छान डालना	- सब जगह खोजना
उठा न रखना	- कोई कसर न रखना	एड़ी-चोटी का पसीना एक करना	- कठिन परिश्रम करना
उड़ती चिड़िया के पंख गिनना	- विशेष जानकारी प्राप्त कर लेना	एड़ी-चोटी का जोर लगाना	- बहुत परिश्रम करना/प्रयत्न करना
उड़ती चिड़िया पहचानना	- मन की बात जानना	एड़ियाँ रगड़ना (धिसना)	- सिफारिश के लिए चक्कर लगाना
उड़न छू होना	- गायब होना	ऐब निकालना	- दोष निकालना
उड़ती खबर	- अफवाह	ऐब को हुनर चाहिए	- बुरे कार्य के लिए भी बुद्धि की आवश्यकता होती है।
उड़ती तीर लेना	- अकारण मुसीबत मोल लेना	ऐबों पर पर्दा डालना	- अवगुण छिपाना
उधेड़ बुन में पड़ना	- सोच-विचार में पड़ना	ऐंठ कर चलना	- गर्व से चलना
ऊँट का गरदन	- लम्बी गरदन	ऐंठ कर रह जाना	- मन मसोज कर रह जाना
ऊँट के मुँह में जीरा	- अपर्याप्त वस्तु	ऐंठ निकलना	- घमण्ड चूर होना
ऊँट किस करवट बैठे	- परिणाम का संदिग्ध होना	ऐतबार उठना	- विश्वास हटना
ऊँट का सूई की नोक से निकलना	- असंभव होना	ऐसी-वैसी बात करना	- ओछी बात करना
ऊपर-ऊपर जाना	- न रुकना	ऐँचातानी करना	- खींचातानी करना
ऊँची दूकान के फीके पकवान	- आडम्बर ही आडम्बर	ओस के चाँटे प्यास नहीं बुझती	- बड़ी आवश्यकता छोटी वस्तु से पूरा नहीं होती
ऊँची साँस लेना	- शोक में डूब जाना	ओस पड़ जाना	- शर्म-शर्म हो जाना
ऊँचे-नीचे पैर पड़ना	- गलत कार्य होना	ओठ बिचकाना	- घृणा प्रकट करना
ऊँच-नीच	- भला-बुरा	ओठ चिपकना	- खूब मीठा होना
ऊँचा सुनना	- कम सुनना	ओठ चबाना	- क्रोध में आ जाना
ऋद्धि-सिद्धि पाना	- समृद्धि और सफलता पाना	ओठ तक न हिलना	- मुख से शब्द न निकलना
ऋण चढ़ना	- कर्ज बढ़ाना		
एक के तीन बनाना	- अत्यधिक लाभ प्राप्त करना		

ओढ़ लेना	- सिर पर लेना, उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लेना	काठ का उल्लू	- बहुत बड़ा मूर्ख
ओछे की प्रीति: बालू की भीति	- दुष्ट व्यक्ति की मित्रता स्थायी नहीं होती	काठ की हाँडी	- धोखे का माध्यम
ओले पड़ना	- विपत्ति आना	काल के गाल में जाना	- मर जाना
ओखली में सिर देना	- जानबूझ कर संकट मोल लेना	कुआँ देखते फिरना	- मरने का प्रयास करना
और का और हो जाना	- बदल जाना	कुआँ खोदना	- हानि पहुँचना
और ही रंग खिलाना	- कुछ विचित्र करना	कुत्ते की दुम	- वैसे का वैसे
और घर देखना	- दूसरे के यहाँ जाना	कुएँ में गिरना	- आफत में पड़ना
औघर की झोली	- अनेक करामाती वस्तुओं का संग्रह	कोल्हू का बैल होना	- दिन-रात परिश्रम करना
औघट चाल चलना	- असली मार्ग छोड़कर चलना	कोल्हू का बैल बनना	- काम में बुरी तरह जुटे रहना
औचट में पड़ना	- संकट में पड़ना	कोख का हीरा	- सूपूत
औधी खोपड़ी होना	- निपट निरामूर्ख	कोख की आँच	- सन्तान का वियोग
औने-पौने में बेचना	- जो कुछ मिलें उसी मूल्य पर बेच देना	कोदो देकर पढ़ना	- ध्यान न देकर पढ़ना/अल्प ज्ञान होना
आँधे मुँह गिरना	- पराजित होना	कौड़ी के मोल बिकना	- बेकार
कलम तोड़ना	- बढ़िया लिखना/बहुत अच्छा लिखना	कौड़ी-कौड़ी पर जान देना	- कंजूस होना
कल पड़ना	- चैन मिलना	किताब का कीड़ा होना	- अधिक पढ़ने वाला
कलेजा थामकर रह जाना	- कठिनता से धैर्य धारण करना	किये कराये पर पानी फेरना	- बिगाड़ देना
कलेजा ठण्डा होना	- संतोष होना	किंकर्तव्य-विमूढ़ होना	- अनिश्चयात्मक स्थिति
कलेजे पर साँप लोटना	- कुढ़ना/डाह करना	किस खेत की मूली	- नगण्य
कलेजा दो टूक होना	- बहुत दुःख होना	किरकिरा हो जाना	- बिगड़ जाना
कमर सीधी करना	- थकान मिटाना	किस्मत लड़ना	- अनायास सफलता मिलना
कदम चूमना	- चापलूसी करना, विनय करना	किनारा करना	- अलग करना
कच्ची गोटी खेलना	- अनुभवहीन होना	किस्मत खुलना	- सफलता मिलना
कफन से सिर बाँधना	- हर तरह की बाधा झेलने के लिए तत्पर	किस्मत फूटना	- काम बिगड़ जाना
कागज काला करना	- बिना मतलब कुछ लिखना	किराये का टट्टू होना	- बेगारी, पैसे के लालच में साथ देना
कागजी घोड़े दौड़ना	- केवल लिखा-पढ़ी करना, पर कुछ काम की बात न होना	किसी गली का न होना	- कोई ठिकाना न होना
काम चलाना	- कठिनता से निर्वाह होना	किसी कीमत पर	- किसी प्रकार प्राप्त करना
कान खड़े होना	- सावधान होना	कीचड़ उछालना	- बदनाम करना
काम तमाम करना	- मार डालना	कन्धे से कन्धा मिलाना	- पूर्ण रूप से सहयोग देना
कान पर जूँ न रेंगना	- बिलकुल ध्यान न देना	कन्धे से कन्धा हिलाना	- भारी भीड़ होना
कान खोलना	- सावधान करना	कंधा लगाना	- मुसीबत को दूर करना
कान देना/लगाना	- ध्यान देना	कंचन बरसना	- धन की अच्छी प्राप्ति होना
कान भरना	- पीठ पीछे शिकायत करना	कंगाली में आटा गीला	- अभाव में भी अभाव
कान में तेल डालना	- कुछ न सुनना	कदम पर कदम रखना	- पीछे-पीछे चलना, अनुकरण करना
कान फूँकना	- बुरी तरह भरना	ककड़ी खीरा समझना	- तुच्छ या नगण्य समझना
कान खाना	- ज्यादा बातें करके कष्ट पहुँचाना	कालिया दमन	- दुष्टों का संहार
काफूर होना	- गायब हो जाना	कच्चा चबा जाना	- पूरी तरह नष्ट कर देने की धमकी देना
काजल की कोठारी	- कलंकित होने का स्थान	काया पलट हो जाना	- रूप बदल जाना
		कच्चा चिढ़ा खोलना	- सब भेद खोल देना
		कदम उखड़ना	- भाग खड़े होना
		कलेजे का टुकड़ा	- बहुत प्यारा

कलेजा मुँह को आना - दुःख होना
 कली खिलना - खुश होना
 काँटो पर पाँव रखना - जानबूझ कर मुसीबत मोल लेना
 काँटा निकल जाना - रूकावट मिट जाना
 काँटा दूर होना - बाधा दूर होना
 काँटे बिछाना - अड़चनें पैदा करना
 काँटो में घसीटना - विपत्ति में डालना
 कहा सुनी होना - झगड़ा
 कूच करना - चल देना
 कूप मण्डूक होना - सीमित ज्ञान होना
 कूड़े पर गुलाब डालना - कृतघ्न के साथ नेकी करना
 कलम का धनी - अच्छा लेखक
 कढ़ी का सा उबाल - मामूली जोश
 कट जाना - शर्मिन्दा होना
 कन्नी काटना - कतरा कर निकल जाना
 खरी-खोटी सुनाना - भला-बुरा कहना
 खप जाना - सब काम में आ जाना
 खरी-खरी सुनाना - कटु सत्य कहना
 खबर लेना - सजा देना
 खटपट होना - झगड़ा होना
 खरा-खोटा परखना - भले-बुरे की पहचान करना
 खटाई में पड़ना - रूक जाना/ व्यवधान पड़ना
 खाक छानना - दर-दर भटकना
 खार खाना - चिढ़ जाना
 खाल खींचना - बहुत पीटना
 खाली हाथ - बिना हथियार के
 खाने को दौड़ना - एक दम क्रुद्ध हो जाना
 खाला जी का घर - जहाँ मनमानी चले
 खा कर डकार नहीं लेना - हजम कर जाना
 खा-पका डालना - खतम कर देना
 खाक मिलाना - नष्ट कर देना
 खेलना खाना - आनन्द से जीवन बिताना
 खेत रहना - संग्राम में मारा जाना
 खेल बिगाड़ना - काम बिगाड़ना
 खेल-खेल में - आसानी से
 खेल खेलना - परेशान करना
 खोपड़ी खाना - बकवास करना
 खोपड़ी को मान जाना - बुद्धि का लोहा मानना
 खोपड़ी गंजी करना - मारकर खोपड़ी के बाल उड़ा देना
 अर्थात् खूब पिटाई करना
 खुले आम - सबके सामने
 खुले हाथ - उदारता से

खुल पड़ना - साफ-साफ कह डालना प्रकट हो जाना
 खुशामदी टट्टू - मुँह पर बड़ाई करने वाला
 खून सवार होना - जोश कम हो जाना
 खून सूख जाना - भयभीत हो जाना
 खून के घूँट पीना - अपमान सहना
 खून खौलना - उत्तेजित होना
 खून सफेद हो जाना - दया, मोह न रह जाना
 खून पसीना एक करना - कड़ी मेहनत करना
 खून आँखों से उतरना - क्रोध से आँख-मुँह लाल होना
 खूँटे के बल कूदना - कोई सहारा मिलने पर अकड़ना
 खिल उठना - प्रसन्न होना
 खिल्लियाँ उड़ाना - उपहास करना, हँसी उड़ाना
 खीसें निपोरना - गिड़गिड़ाकर माफी माँगना
 गरदन पर छुरी फेरना - हानि पहुँचना
 गड़े मुर्दे उखाड़ना - पुरानी बातों पर प्रकाश डालना
 गले का हार - अत्यन्त प्रिय
 गरदन उठाना - प्रतिवाद करना
 गरदन फँसाना - संकट में पड़ना
 गरम होना - नाराज होना
 गजब ढाना - आश्चर्य-जनक काम करना
 गले पड़ा ढोल बजाना - सिर पर पड़ी जिम्मेदारी को मजबूरन पूरा करना
 गहरा हाथ मारना - बहुत कुछ हसिल करना
 गले लगाना - स्वीकार करना
 गज-भर की छाती होना - अत्यधिक गर्व का अनुभव करना
 गढ़ जीतना - बहुत कठिन काम करना
 गाढ़े का साथ - बुरे समय में सहायता करने वाला
 गाल फुलाना - रूठना
 गागर में सागर भरना - थोड़े में ही बहुत कहना
 गाल बजाना - बकवास करना
 गाजर मूली समझना - तुच्छ समझना
 गीता का ज्ञान - पूर्ण ज्ञान होना
 गीदड़ भभकी - झूठमूठ डराना
 गिरगिट की तरह रंग बदलना - काम निकल जाने पर प्रतिज्ञा न निभाना/अवसरवादी
 गिन-गिन कर दिन काटना - कष्टमय जीवन व्यतीत करना
 गिन-गिन कर पैर रखना - सावधानी बरतना
 गोहूँ के साथ घुन पिस जाना - दोषी के साथ निर्दोष का भी अहित होना
 गोटी बैठना/बैठाना - युक्ति सफल होना
 गोबर गणेश - मूर्ख
 गोल कर जाना - गायब कर देना

गुड़ गोबर होना	- काम बिगड़ जाना	घोट कर पी जाना	- सम्पूर्ण नष्ट कर देना/ एक-एक अक्षर याद कर लेना
गुदड़ी का लाल/ गुदड़ी में लाल	- साधारण वस्तु में अनमोल पदार्थ का छिपा रहना	घोघा बसन्त	- मूर्ख
गुस्सा पीना	- व्यक्त न करना/क्रोध को पी लेना	चम्पत होना	- भाग जाना
गुड़ देकर मारना	- कपट स्नेह दिखाकर विश्वासघात	चक्कर में डालना	- भ्रम पैदा कर देना
गुल खिलाना	- कुछ नया एवं निन्दनीय कार्य करना	चक्की में पिसना	- बहुत अधिक कष्ट उठाना
गूलर का पेट फूलना	- औकात से ज्यादा बात करना	चन्द्रमा का कलंक	- उत्तम वस्तु में भी दोष लगाना
गूलर का फूल होना	- न दिखायी पड़ना	चन्द्रमा के समान सुन्दर होना	- अत्यधिक सुन्दर होना
गूँगे का गुड़	- अकथनीय आनन्द	चल बसना	- मर जाना
गाँठ काटना	- ठगना	चंगुल में फँसाना	- वश में करना
गाँठ का पूरा	- धनी	चांडाल चौकड़ी	- निकम्मे तथा बदमाश किस्म के लोग
गाँठ बाँधना	- खूब याद रखना	चंडूखाने की गप मारना	- झूठी-मूठी बातें करना
गंगा नहाना	- कठिन कार्य पूरा करके छुट्टी पाना	चण्पा-चण्पा छान मारना	- ढूँढ़ लेना
गड्ढे में गिरना	- पतित होना	चलता पुर्जा	- चालाक और व्यवहार कुशल
गण्डे लड़ाना	- बेकार की बातें करना	चलती गाड़ी में रोड़ा अटकाना	- बनते काम में विघ्न डालना
घड़ियाँ गिनना	- बेचैनी से इन्तजार करना	चलता बनना	- खिसक जाना
घर करना	- पूरी तरह से रच-बस जाना	चचा बनाकर छोड़ना	- खूब मरम्मत करना
घर-घर पूजा होना	- सर्वत्र सम्मान मिलना	चक्रमा देना	- धोखा देना
घर की खेती	- अपनी चीज	चलता करना	- हटा देना
घड़ो पानी पड़ना	- अत्यन्त लज्जित होना	चादर के बाहर पाँव पसारना	- सीमा से बाहर जाना
घर उजड़ना	- घर में किसी प्रकार की व्यवस्था न होना	चारपाई से लगना	- बीमारी से न उठ पाना
घर बैठे गंगा आना/घर में गंगा बहना-	अनायास लाभ	चारों खाने चित्त करना	- परास्त करना
घर में भूँजी भाँग न होना	- कंगाल होना	चार चाँद लगना	- शोभा बढ़ाना
घर का न घाट का	- कहीं का नहीं	चाँदी का जूता मारना	- घूस देना
घर फूँक तमाशा देखना	- अपना नुकसान करके मौज उड़ाना	चाँद पर थूकना	- किसी अच्छे आदमी पर कलंक लगाना
घात लगाना	- अवसर की तलाश करना	चाँदी काटना	- खूब पैसा कमाना
घाट-घाट का पानी-पीना	- संसार का अनुभव प्राप्त करना	चाँद का टुकड़ा होना	- बहुत सुन्दर
घास छीलना	- व्यर्थ समय खोना	चित से उतरना	- उपेक्षित होना
घास काटना	- कार्य को ठीक ढंग से न करना	चित्त पर चढ़ना	- पसन्द आना
घाव हरा होना/ हो जाना	- दुःख का ताजा होना	चिकना घड़ा होना	- जिस पर किसी बात का प्रभाव न हो
घाव पर नमक छिड़कना	- सताये को और सताना	चिराग गुल होना	- निकट के दोष को न देख पाना
घुटने टेक देना	- आत्म-समर्पण करना	चींटी के पर निकलना	- हैसियत से बढ़कर बात या काम करना/नष्ट होने के करीब होना
घुन लगना	- बेकार हो जाना	चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना	- घबरा जाना
घुल-मिल जाना	- एक हो जाना	चैन की वंशी बजाना	- मौज करना
घुटा हुआ	- बहुत चालाक/अनुभवी	चोली-दामन का साथ	- धनिकता, आत्मीयता, गहरी मित्रता
घूँघट की लाज	- सतीत्व की मर्यादा	चोली बदलना	- नया रूप बनाना
घी खिचड़ी होना	- खूब मिलजुल जाना	चोटी हाथ में होना	- वश में होना
घी के दिये जलाना	- अत्यन्त प्रसन्न होना	चोटी का पसीना एड़ी तक आना	- कड़ा परिश्रम करना
घिग्घी बाँधना	- डर के मारे बोल न पाना	चौकड़ी भूलना	- घबरा जाना/ अक्ल काम न करना
घोड़े बेचकर सोना	- निश्चित होना		
घोड़े पर चढ़े आना	- उतावली में आना		

चुल्लू भर पानी में डूब मरना - शर्म के मारे मुँह न दिखाना
 चूड़ियाँ सलामत रहना - सौभाग्य बना रहना
 चूड़ियाँ पहनना - औरतों की तरह डरपोक
 चूलें ढीली होना - अधिक परिश्रम के कारण बहुत थकावट होना
 चूलें हिलाना - झकझोरना
 चूना लगाना - नुकसान पहुँचाना
 छक्का-पंजा भूलना - कुछ भी याद न रहना
 छक्का-पंजा करना - जुआ खेलना
 छप्पर फाड़कर देना - बिना परिश्रम किये धन मिलना
 छक्के छूटना - बुद्धि चकरा जाना/ हिम्मत हारना
 छक्के छुड़ाना - पराजित करना/हैरान करना
 छठी का दूध याद आना - बहुत कष्ट होना
 छाती ठोकना - साहस दिखाना
 छाती पर साँप लोटना - ईर्ष्या से जलना
 छाती पर बाल होना - उदार होना
 छाती छलनी हो जाना - लगातार दुःख आते रहना
 छाती पर मूँग दलना - निरन्तर दुःख देना/पास रहकर कष्ट देना
 छुरी-कटारी दिखाना - मारने की धमकी देना
 छुरी-तले दबाना - कष्ट देना
 छूछे हाथ - रुपये-पैसे से खाली हाथ
 छुरी तेज करना - हानि करने की तैयारी
 छू-मन्तर हो जाना - भाग जाना
 छुपा रुस्तम - देखने में साधारण पर वस्तुतः असाधारण
 छोह दिखाना - ऊपरी प्रेम प्रकट करना
 छोटी हँडिया - छोटे दिल का
 छोटे मुँह बड़ी बात - सामर्थ्य से अधिक
 जल मरना - डाह/कुढ़न/ईर्ष्या करना
 जमीन पर पाँव न पड़ना - बहुत अभिमान करना
 जहर के घूँट पीना - क्रोध को प्रकट न होने देना
 जले पर नमक छिड़कना - दुःख पर और दुःख देना
 जहर की पुड़िया - मुसीबत की जड़
 जबान पर चढ़ना - याद आना
 जहर उगलना - कष्टदायक बातें करना
 जलती आग में घी डालना - और भड़काना/क्रोध बढ़ाना
 जमीन आसमान एक करना - प्रत्येक उपाय कर डालना
 जली-कटी सुनाना - बुरा-भला कहना
 जबान में लगाम न होना - बिना नियन्त्रण के बोलना
 जमीन आसमान का फर्क - बहुत भारी अन्तर
 जमीन में गड़ना - लज्जा से सिर नीचा होना
 जख्म हरा होना - अप्रिय घटना याद आना

जबान काटकर देना - वादा करना
 जमीन आसमान के कुलाबे मिलाना - शेखी बघारना
 जबान कैंची की तरह चलना - बढ़-चढ़ कर तीखी बातें करना
 जंगल में मंगल होना - निर्जन स्थान में भी आनन्द का मिलना
 जान के लाले पड़ना - संकट में पड़ना
 जान में जान आना - मन को चैन पड़ना/ सुख मिलना
 जान हथेली पर रखना - प्राणों की परवाह न करना
 जान पर खेलना - जान की बाजी लगा देना
 जान से हाथ धो बैठना - मारा जाना
 जी भर आना - दुःखी होना
 जी-जान से खेलना - मृत्यु की परवाह न करना
 जी चुराना - काम चोर
 जी जान से लगना - पूर्ण रूपेण लगना
 जी को मारना - मन की इच्छाओं को रोकना
 जी खोलकर - निःसंकोच
 जी का जंजाल - व्यर्थ की परेशानी
 जीती मक्खी निगलना - जान-बूझकर अन्याय सहना
 जिगरी दोस्त - घनिष्ठ मित्र
 जितनी डफली उतने राग - जितने लोग उतने तरीके
 जिस पत्तल पर खाना उसी में छेद करना - उपकारी का ही अपकार करना
 जिन्दगी के दिन पूरे करना - कठिनाई में समय बिताना
 जूतियाँ सीधी करना - दास की तरह सेवा करना
 जूतियाँ चाटना - चापलूसी में बहुत निम्न स्तर तक जाना
 जूतियाँ चटकाते फिरना - मारा-मारा फिरना
 जोड़-तोड़ करना - उपाय करना
 जोंक लगना - चिपकना/ चिन्ता करना
 जोखिम में पड़ना - खतरे में पड़ना
 झण्डे-तले आना - युद्ध में किसी का पक्ष लेना
 झक सवार होना - ज़िद में आ जाना
 झड़ी लगा देना - अधिक परिमाण में उपस्थित करना
 झक मारना - विवश होना/ समय नष्ट करना
 झण्डे/झण्डा गाड़ना - अधिकार जमाना
 झगड़ा मोल लेना - जान-बूझकर झगड़ा में पड़ना
 झाँसा देना - धोखे में डालना/ टरका देना
 झाड़ू से बात करना - कर्कशा होना
 झाड़ू फेरना - नष्ट करना
 झूमने लगना - आनन्द-विभोर हो जाना
 झीसी पड़ना - बूँदाबाँदी होना/थोड़ा-थोड़ा पानी गिरना
 झेंप खाना - लजा जाना

झोंटा-झोटी होना	- लड़ाई होना
झोली फैलाना	- भीख माँगना
झोंक देना	- अधिक डालना
टका-सा जवाब देना	- तुरन्त अस्वीकार कर देना
टस से मस न होना	- तनिक भी प्रभावित न होना
टका-सा मुँह लेकर रह जाना	- लज्जित हो जाना
टपक पड़ना	- अकस्मात आ जाना
टट्टी की ओट से शिकार खेलना	- छल-कपट से काम लेना
टरका देना	- बहाना बनाकर लौटा देना
टट्टू पार होना	- काम निकल जाना
टाट उलटना	- दिवाला निकलना
टाँय-टाँय फिस होना	- बुरी तरह असफल होना
टाँग पसार कर सोना	- निश्चिन्त होना
टूट पड़ना	- अचानक हमला कर देना
टेढ़ी खीर	- कठिन कार्य
टेढ़ी उँगली से घी निकालना	- बलपूर्वक काम निकालना
टेढ़ा मुँह कर देना	- निरुत्तर कर देना
टोह लगाना	- पता लगाना
टोपी उछालना	- निरादर करना
टिड्डी दल	- अत्यधिक संख्या में
टिप्पस लगाना/ भिड़ाना	- सिफारिश करवाना
टीम-टाम करना	- दिखावटी शान-शौकत करना
टीका-टिप्पणी करना	- आलोचना करना/ त्रुटि खोजना
ठण्डा करना	- आग बुझाना/शान्त करना
ठन-ठन गोपाल	- खोखला/खाली
ठठरे-ठठरे बदलाई न होना	- ठगों का आपस में न ठग सकना
ठग-विधा खेलना	- छल-कपट करना
ठकुर-सुहाती करना	- चापलूसी करना/हाँ में हाँ मिलाना
ठण्डी सास लेना	- सोच में उदास होना
ठुकरा देना	- अस्वीकार कर देना
ठेका लेना	- जिम्मेदारी लेना
ठोकरें खाना	- कष्ट उठाना
ठीकरा फोड़ना	- दोष लगाना
ठीकरा समझना	- बेकार समझना
ठिकाने लगाना	- काम तमाम करना
डग भरना	- कदम बढ़ाना
डकार जाना	- माल पचा जाना
डण्डा बजाते फिरना	- बेकार घूमना फिरना
ड्योढ़ी का खुलना	- दरबार में आने-जाने की आज्ञा मिलना
डंक मारना	- कटु वचन कहना/ बिच्छु का काटना
डंका बजना	- शोहरत होना

डंके की चोट पर कहना	- स्पष्ट घोषणा करना
डाँवाडोल होना	- अस्थिर होना
डूबती नाव को पार लगाना	- संकट से छुड़ाना
डूबते को तिनके का सहारा	- दुःख में थोड़ा भी सहायता करना
डेढ़ पसली का पहलवान	- दुबला-पतला झगडालू व्यक्ति
डेढ़ बीता कलेजा करना	- अत्यधिक साहस दिखाना
डेढ़ चावल की खिचड़ी अलग पकाना	- मिलकर कार्य न करना
डोरे डालना	- फुसलाना
डोलती नौका	- अस्थिर अवस्था
डील-डौल होना	- दृष्ट-पुष्ट होना
डींग मारना	- मिथ्याभिमान करना/व्यर्थ बढ़ाई करना
ढकोसला होना	- ऊपरी बनावट होना
ढंग पर आना	- सुधर जाना
ढाई दिन की बादशाहत होना	- थोड़े समय के लिए अधिकार मिलना
ढाक के तीन पात	- सदा एक-सी दशा में रहना
तबेले की बला बन्दरू के सिर	- दोष किसी का और दोषोपेक्ष किसी पर
तरख्ता उलटना/पलटना	- अपदस्थ होना
तवे की बूँद होना	- तुरन्त अदृश्य हो जाना
ताक पर धरना/रखना	- हटा देना/ काम में न लाना
तारीफ के पुल बाँधना	- झूठी प्रशंसा करना
तारे गिनना	- रात को नींद न आना
तू-तू मैं-मैं होना/करना	- विवाद होना
तूती बोलना	- धाक जमना
तूफान खड़ा करना	- बवाल मचाना
तिलाञ्जलि देना	- परित्याग कर देना
तिल का ताड़ बनाना	- छोटी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना
तीन-पाँच करना	- इधर-उधर की बात करना
तीन-पाँच में न रहना	- झगड़ा-झंझट से दूर रहना
तीन-तेरह करना/होना	- तितर-बितर करना
तीसमार खाँ बनना	- काबिल बनना
तेली का बैल होना	- हर समय काम में लगे रहना
तेवर दिखाना	- क्रोध करना
तेल की कचौड़ियों पर गवाही देना	- सस्ते में काम करना
तौबा करना	- किसी बुरे काम से बाज आने की दृढ़ प्रतिज्ञा करना
तोता के समान रटना	- बिना समझे याद करना
थई-थई करना	- नाचना
थाली का बैगन होना	- सिद्धान्तहीन होना/अवसरवादी होना
थूक कर चाटना	- प्रतिज्ञा भंग करना/अपनी बात से मुकर जाना

दमड़ी के लिए चमड़ी उधेड़ना - छोटी गलती के लिए बड़ी सजा देना

दाँत काटी रोटी - अत्यन्त घनिष्ठ मित्रता

दाँत तोड़ना - परास्त करना

दुम दबाकर भाग जाना - डर कर भागना

दूध का दूध, पानी का पानी - सच्चा न्याय

दूज का चाँद होना - कम दिखायी देना

दूध का धुला होना - निर्दोष/निष्कलंक होना

दूसरे के कंधे पर बंदूक चलाना - दूसरे के बहाने अपना काम करना

दाना पानी उठना - जगह छोड़ना

दबे पैर - अहिस्ता

दाँतों तले अँगुली दबाना - आश्चर्य करना

दाल में काला होना - सन्देह की बात होना

दाई से पेट छिपाना - जानकार से भेद छिपाना

दाँत खट्टे करना - पराजित करना

दूध की नदियाँ बहाना - धन-धान्य से सम्पन्न होना

दो टूक बात करना - स्पष्ट रूप से बात करना

दूध की मक्खी - काम होने के बाद बेकार

दाल न गलना - मतलब न निकलना

दिल बैठ जाना - मायूस हो जाना

दिन-रात एक करना - लगातार प्रयास करते रहना

दो नावों पर पैर रखना - एक साथ दो काम करना

दमड़ी के तीन होना - सस्ते होना

द्रोपदी का चीर होना - अन्त न होना

धब्बा लगना - कलंक लगना

धज्जियाँ उड़ाना - बुरी तरह परास्त करना

धूल में मिल जाना - नष्ट हो जाना

धूप में बाल सफेद होना - अनुभवी न होना

धाक जमाना - प्रभुत्व स्थापित करना

धोखे की टट्टी - धोखे में डालने वाला/सारहीन वस्तु

धुन सवार होना - किसी बात के पीछे पड़ना

नशा उतरना - वास्तविकता का ज्ञान होना

न तीन में न तेरह में - जो किसी गिनती में न हो

नज़र करना - भेंट देना

न घर का न घाट का - जो कहीं का न हो

नदी-नाव संयोग - संयोग से मिलना

नमक-मिर्च लगाना - बढ़ा-चढ़ाकर बातें करना

नाक में गुस्सा रहना - शीघ्र ही क्रोध करना

नाक नीची होना - बदनामी होना

नाक रगड़ना - खुशामद करना

नाक कटना - बेइज्जत होना

नाक रखना - इज्जत रखना

नाक पर मक्खी न बैठने देना - सम्मान पर आँच न आने देना

नाक का बाल होना - बहुत प्रिय होना

नानी याद आना - मुसीबत में पड़ना

नारद मोह होना - माया में पड़ना/आसक्ति होना

नाकों-चने चबाना - परेशान होना

नौ-दो ग्यारह होना - भाग जाना

निन्यानवे के फेर में पड़ना - लालच में फँसना

नींव का पत्थर - आधार स्वरूप

पलक न पसीजना - अत्यन्त कठोर हृदय होना

पसीना-पसीना होना - बहुत थक जाना

पट्टी पढ़ाना - भुलावे

पगड़ी रखना - इज्जत रखना

पहाड़ टूट पड़ना - अकस्मात् विपत्ति का आना

पापड़ बेलना - काफी मुसीबत सहना

पासा पलटना - स्थिति विपरीत हो जाना

पानी-पानी हो जाना/ होना - लज्जित होना

पानी पड़ना/पानी फिरना - चौपट हो जाना/नष्ट हो जाना

पाँव में बेड़ी पड़ना - नियंत्रण में होना

पाँव उखड़ना - घबरा जाना

पाँव धरती पर न टिकना - गर्व करना

पाँव भारी होना - गर्भवती होना

पौ बाहर होना - अधिक लाभ होना

पीठ में छूरा भोंकना - धोखा देना

पीठ दिखाना - लड़ाई से भाग जाना

पेट में चूहे कूदना - भूख लगना

पेट में दाढ़ी होना - कम उम्र में अनुभवी और ज्ञानी होना

पेट का पानी न पचना - किसी बात को बिना कहे न रहना

प्राण-पखेरू उड़ जाना - मर जाना

पत्थर पर कुआँ खोदना - व्यर्थ परिश्रम करना

पैरो तले से जमीन निकल जाना - हक्का-बक्का होना

फकीर हो जाना - साधु हो जाना

फलना- फूलना - तरक्की करना

फबतियाँ कसना - व्यंग्य करना

फूँक-फूँक कर कदम रखना - अत्यन्त सावधान रहना

फूटी आँखों न देख सकना - बहुत बुरा लगना/ अप्रसन्न होना

फूल कर कुप्पा होना - बहुत खुश होना

फूला न समाना - बहुत प्रसन्न होना

बरस पड़ना - अति क्रुद्ध होकर डाँटना

बखिया उधेड़ना - भेद खोलना

बत्तीसी खिलना - हँसी आना

बड़े घर की हवा खाना - जेल जाना

बात का धनी होना	- वचन का पक्का होना
बाछें खिल जाना	- अत्यंत प्रसन्न होना
बासी कढ़ी में उबाल आना	- उचित समय बीत जाने पर इच्छा जगाना
बाल बाँका न कर सकना	- कुछ भी हानि न पहुँचा सकना
बाजार गर्म होना	- काम धंधा तेज होना
बालू से तेल निकालना	- असंभव को संभव कर दिखाना
बिल्ली के गले में घंटी बाँधना	- अपने को संकट में डालना
भगीरथ प्रयत्न	- भारी कोशिश
भाड़े का टट्टू	- पैसे लेकर ही काम करने वाला
भीगी बिल्ली बनना	- डर/सहम जाना
भैंस के आगे बीन बजाना	- मूर्ख आदमी को उपदेश देना
मन मैला करना	- खिन्न होना
मजा किरकिरा होना	- आनन्द में विघ्न पड़ना
माथा ठनकना	- अनिष्ट की आशंका होना
मक्खन लगाना	- चापलूसी करना
मीठी छुरी चलाना	- विश्वासघात करना
मिट्टी का माधो	- बिल्कुल बुद्धू
मिट्टी पत्तीद होना	- दुर्दशा करना
मन के लड्डू खाना	- हवा में कल्पना करना
मन में चोर बैठना	- मन में कपट/छल होना
माथे पर बल पड़ना	- परेशान होना
मुँह फुलाना	- रुठ जाना
मुँह पर नाक न होना	- निर्लज्ज होना
मुँह फैलाना	- माँगना
मुँह काला होना	- बदनाम होना
मुँह मोड़ना	- छोड़ देना
मुँह लगना	- अधिक सम्पर्क में रहना
मुँह लगाना	- अत्यधिक सम्पर्क में रखना
मुँह में पानी आना	- लालच आना
मुँह की खाना	- बेइज्जत होना
मुँह छिपाना/चुराना	- बचते-बचते फिरना
मुँह धो आना	- आशा रखना
मुट्टी गरम करना	- रिश्त देना
मुट्टी गरम होना	- धन की प्राप्ति
यमराज का द्वार देख आना	- मरकर जीवित हो जाना
यमराज का बुलावा आना	- जीवन का अन्तिम क्षण
योग-क्षेम पूछना	- कुशल-मंगल पूछना
युधिष्ठिर होना	- अत्यन्त सत्यप्रिय होना
रंग बदलना	- परिवर्तन होना
रंग जमाना	- प्रभाव बढ़ना
रंग में भंग होना	- आनन्द में विघ्न आना
रंगा सियार	- कपटी/ धोखेबाज

रंगे हाथों पकड़ना	- तत्काल अपराध करते हुए पकड़ना
राम कहानी	- आप-बीती
राम तले दबाना	- कब्जे में रखना
रावण होना	- पापी होना
लीक पीटना/लकीर पीटना	- अवसर निकल जाने पर व्यर्थ प्रयत्न
लकीर का फकीर होना	- अवसर निकल जाने पर व्यर्थ प्रयत्न
लहू के घूँट पीना	- अपमान सह लेना
लहू पसीना एक करना	- खूब मेहनत करना
लकड़ी के बल बन्दर नाचै	- भयवश काम करना
लाल-पीला होना	- आग-बबूला होना
लाई लगाना	- शिकायत करना
लेने के देने पड़ना	- लाभ के स्थान पर घाटे में पड़ जाना
लोहे के चने चबाना	- बुरी तरह पराजित करना
लोहा मानना	- महत्व स्वीकार करना
लम्बा हाथ मारना	- बड़ी उपलब्धि प्राप्त करना
लुटिया डुबोना	- काम खराब कर देना
वज्र बेशरम होना	- निर्लज्ज होना
वसंत की कोकिल	- वैभवशाली का गुणगान करने वाला
वाह-वाह होना	- प्रशंसा होना
विष घोलना	- गड़बड़ पैदा करना
विभीषण होना	- भ्रातृद्रोही होना
विष के घूँट पीना	- कटुवचन सहन कर लेना
शहद की छूरी होना	- ऊपर से मधुर और भीतर से कटु होना
शाम की सुबह करना	- समय व्यतीत करना
शामत का घेरा	- दुर्दशा का समय
सफेद झूठ	- पूर्ण निराधार बात
सपना देखना	- वास्तविकता से दूर रहना
सब्ज-बाग दिखाना	- लालच देकर बहकाना
सिर मुड़ाते ओले पड़ना	- आरम्भ में ही संकट उत्पन्न होना
सिर उठाना	- उपद्रव खड़ा करना
सिर आँखों पर रखना	- आदर पूर्वक
सिर पर सवार होना	- किसी चीज के लिए हठपूर्वक पड़ना
सिर पर भूत सवार होना	- किसी बात/चीज की जिद
सींग कटाकर बछड़ा में मिलना	- छद्म वेश बनाकर काम निकालने का प्रयास करना
साँप छछूंदर की गति	- असमंजस या दुविधा में होना
साँप को दूध पिलाना	- दुष्ट के साथ उपकार करना

साँप सूँघना	- एकदम गुप-चुप हो जाना
सोने पर सुहागा	- अच्छे में और गुण आ जाना
सोने का मृग	- भ्रम/धोखा
सूर्य के समान	- तेजवान होना
सीधी उँगली घी नहीं निकलता	- सीधेपन से काम नहीं चलता
हाथ धोना	- खो देना
हाथ डालना	- शुरू करना
हाथ-पाँव फूलना	- भयभीत हो जाना
हाथ-पाँव मारना	- असफल प्रयत्न करना
हाथ पीले करना	- लड़की का विवाह करना
हाथ धोकर पीछे पड़ना	- बहुत तंग करना
हाथ मलते रह जाना	- पश्चाताप करना
हाथों के तोते उड़ना	- होश उड़ना
हाथ का मैल	- तुच्छ वस्तु
हाथों हाथ लेना	- सहर्ष स्वीकार होना
हवा हो जाना	- भाग जाना/ न रहना
हवा बाँधना	- दिखावा करना
हवा का रुख	- स्थिति देखकर
हवा लगना	- प्रभाव पड़ना
हवा से बातें करना	- बहुत तेज दौड़ना
हथियार डाल देना	- हार मान लेना
हथेली पर जान लिए फिरना	- मौत की परवाह न करना
हथेली पर सरसों उगाना	- असम्भव कार्य करना
हवाई किले बनाना	- कोरी कल्पना करना
हवाईयाँ छूटना	- रंग उड़ जाना
हृदय के कपाट खुलना	- ज्ञानवान होना
हुक्का पानी बंद करना	- बिरादरी से अलग करना
श्री गणेश करना	- प्रारम्भ करना
त्राहि-त्राहि करना	- रक्षा के लिए पुकारना

लोकोक्ति

- अर्थ

अन्धा क्या चाहे दो आँखें	- इच्छित वस्तु का प्राप्त होना।
अपना रख, पराया चख	- अपनी वस्तु का बचाव करना और दूसरे का मनमाना उपयोग करना।
अन्धे के आगे रोना-	
अपना दीदा खोना	- दुःख सुनाने पर ध्यान न देना
अक्ल बड़ी या भैंस	- शारीरिक शक्ति से बुद्धि श्रेष्ठ है।
अपनी पगड़ी अपने हाथ	- अपनी प्रतिष्ठा अपने हाथ।
अन्धेर नगरी चौपट राजा:	- मुख और गुणवान का समान
टके सेर भाजी, टके सेर खाजा	आदर।

अधजल गगरी छलकत जाय	- कम ज्ञान, धन सम्मान वाले व्यक्ति अधिक प्रदर्शन करते हैं।
अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम-	ईश्वर सबकी आवश्यकतायें पूरी करता है।
अपनी करनी पार उतरनी	- अपने कर्म का फल स्वयं भोगना पड़ता है।
अन्त भला से सब भला	- जिसका अन्त उत्तम हो, वही उत्तम कार्य है।
अपने मरे बिना स्वर्ग नहीं दिखता है-	स्वयं प्रयत्न करने पर ही काम बनता है।
अन्धों में काना राजा	- मूर्खों के बीच कोई एक सुयोग्य।
अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता	- अकेला व्यक्ति लाचार होता है।
आधा तीतर आधा बेटर	- अनमेल वस्तुओं का संयोग।
आगे नाथ न पीछे पगहा	- जिसका कोई न हो।
आगे कुआँ, पीछे खाई	- चारों ओर कठिनाई ही कठिनाई।
आम के आम: गुठलियों के दाम	- दुहरा लाभ।
आटा-दाल का भाव मालूम होना	- कठिनाई का अनुभव होना।
आग खाएगा तो अंगार उगलेगा	- बुरे काम का बुरा फल।
आज का बनिया कल का सेठ	- निरन्तर कार्य करने से व्यक्ति प्रगति करता है।
आ बैल मुझे मार	- बिना कारण मुसीबत मोल लेना
आँख का अन्धा गाँठ का पूरा-	धनी किन्तु मूर्ख
इतनी सी जान, गज भर जबान-	उम्र के हिसाब से अधिक बोलना
ईंट की लेनी, पत्थर की देनी	- दुष्ट के साथ और अधिक दुष्टता
ईश्वर की माय कहीं धूप, कहीं छाया-	भाग्य की गति विचित्र है, ईश्वर की माया विचित्र है।
उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे-	दोषी व्यक्ति निर्दोष पर दोष लगाये
उल्टे छूरे से मूड़ना	- बहुत प्रताड़ित करना।
उल्टी गंगा पहाड़ को चली	- असंभव या विपरीत कार्य
ऊँची दूकान फीका पकवान	- दिखावा ही दिखावा, या आडम्बर ही आडम्बर
ऊँट के मुँह में जीरा	- अपर्याप्त, अल्प
ऊँधो का लेना न माधो का देना	- किसी से किसी प्रकार का सम्बन्ध न रखना।
एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा-	दुर्गुणी, दुर्गुणी का संयोग
एक मछली सारे तलाब को गंदा करती है-	एक बुरा मनुष्य समस्त समाज को
कलंकित कर देता है।	
एक म्यान में दो तलवारें-	एक वस्तु या पद पर दो शक्तिशाली व्यक्तियों को अधिकार नहीं हो सकता।
एक तवे की रोटी, क्या छोटी क्या मोटी-	किसी प्रकार का भेदभाव नहीं है।

एक तो चोरी ऊपर से सीना जोरी- एक तो गलती करना उल्टे रोब गाँठना।

एक हम्माम में सब नंगे - सहयोगी एक दूसरे की दुर्बलताएँ जानते हैं।

एक पंथ दो काज/ एक ढेले से दो शिकार- एक उपाय से दो कार्य होना

एक हाथ से ताली नहीं बजती - अकेले झगड़ा नहीं होता

एकहि साधे सब सधे, सब साधे सब जाए- मूल कार्य की ओर ध्यान जाना चाहिए।

एक अनार सौ बीमार - वह वस्तु जिसकी लालसा या इच्छा सभी को हो पर उपलब्धता कम हो।

ऐसे बूढ़े बैल को कौन बाँध भुस देय- बूढ़ा और बेकार आदमी दूसरे पर बोझ हो जाता है।

ओस चाटे प्यास नहीं बुझती - बहुत कम वस्तु से आवश्यकता की पूर्ति नहीं होती है।

ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डरना- कठिन काम प्रारम्भ करने पर कठिनाईयों से नहीं डरना चाहिए।

ओछे की प्रीति बालू की भीति- नीच की मित्रता-क्षण भंगुर अथवा अस्थायी होती है।

कहाँ राजा भोज; कहाँ गंगू तेली- दो असमान व्यक्तियों की तुलना

कंगाली में आटा गीला - विपत्ति पर विपत्ति आना।

कभी नाव गाड़ी पर, कभी गाड़ी नाव पर- प्रायः स्थिति में उलट-फेर हुआ करता है।

का वर्षा/ बरखा जब कृषि सुखाने - अवसर निकल जाने पर सहायता देना व्यर्थ है

काला अक्षर भैंस बराबर - निरक्षर/अनपढ़ मनुष्य।

कागज की नाव नहीं चलती - गलत काम बहुत दिन नहीं चलता।

काम को काम सिखाता है - काम करने से अनुभव प्राप्त होता है।

करत-करत अभ्यास से जड़मति होत सुजान - सतत प्रयत्न से सफलता प्राप्त होती है।

कुत्ते को घी नहीं पचता - निम्नकोटि का व्यक्ति उच्चपद पाकर घमंड करने लगता है।

खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे - क्रोधावेश में अटपटा कार्य करना।

खोदा पहाड़ निकली चुहिया - अधिक परिश्रम के बाद साधारण लाभ।

खाक डाले चाँद नहीं छिपता - अच्छे व्यक्ति की निन्दा से उसका कुछ नहीं बिगड़ता।

गंगा गये गंगादास, जमुना गये जमुना दास- अवसर वादिता

गेहूँ के साथ घुन भी पिसता है - बुरे के साथ नेक भी बरबाद या बदनाम होता है।

गुड़ खाय, गुलगुलों से परहेज- एक काम करना और उसी से सम्बन्धित दूसरे काम को करने में हिचक होना।

गरीब की जोरु सब की भौजाई/भाभी- कमजोर से सब लाभ उठाते हैं।

गुरु कीजै जान, पानी पीजै छान- जाँच पड़ताल कर कोई काम करना।

गुरु गुड़ ही रह गया चेला शक्कर हो गया- गुरु से चेले का बढ़ जाना।

घर का भेदी लंका ढाये - आपसी फूट अत्यधिक हानिकारक होती है।

घर में नहीं दाने, अम्मा चली भुजाने- योग्यता एवं सामर्थ्य न होने पर भी बढ़-चढ़ कर बातें करना।

घर की मुर्गी साग/ दाल बराबर- अपने घर के गुणी व्यक्ति का सम्मान न करना।

घायल की गति घायल जाने - कष्ट सहने वाला ही दूसरों के कष्ट को समझ सकता है।

घी का लड्डू टेढ़ा भी भला - अच्छी वस्तु का रूप-रंग नहीं देखा जाता।

चार दिन चाँदनी फिर अँधेरी रात- सब क्षण भंगुर है, सुख के बाद दुःख अवश्यम्भावी है।

चिकना घड़ा - निर्लज्ज व्यक्ति

चोर-चोर मौसरे भाई - एक स्वभाव वाले शीघ्र ही मित्रता कर लेते हैं/दुष्टों की मित्रता शीघ्र होती है।

चाँद को भी ग्रहण है - सज्जन व्यक्ति में भी दोष होते हैं।

चट मँगनी पट ब्याह - शीघ्रता से प्रस्तावित कार्य का सम्पन्न हो जाना

चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय - अत्यधिक कंजूस

छोटे मियाँ तो छोटे मियाँ बडेमियाँ सुभान अल्लाह - छोटे में बड़ा, अवगुणों में भारी।

छोटा/छोटे मुँह बड़ी बात - छोटे लोगों का बढ़-चढ़कर बोलना।

जल में रहकर मगर से बैर - आश्रयदाता से शत्रुता नहीं रखनी चाहिए।

जैसा देश वैसा भेष - परिस्थिति के अनुसार बदलना/परिस्थिति के अनुसार अपने-आप को ढाल लेना

जान बची लाखों पाये - छुटकारा मिलना/किसी भी रूप में हानि उठाकर भी मुक्त होना।

जिसकी लाठी उसकी भैंस - शक्तिशाली व्यक्ति की ही विजय होती है।

जैसी करनी-वैसी भरनी - कर्म के अनुसार फल की प्राप्ति

जो गरजते हैं बरसते नहीं - डींग मारने वाले काम नहीं करते

जितनी चादर हो, उतना ही पैर पसारो- सामर्थ्य के अनुसार काम करना।	दर्जी की सुई, कभी धागे में कभी टाट में- हर परिस्थिति में सहनशीलता बनाये रखना।
जड़ काटते जाएँ, पानी देते जाएँ - भीतर से दुश्मन, ऊपर से दोस्त	दाने-दाने पर मुहर - हर व्यक्ति का अपना भाग्य।
जब तक जीना तब तक सीना - जब तक जीवन है तब तक कोई न कोई काम धंधा करना ही पड़ता है।	दिल्ली दूर है - अभी सफलता में देरी है।
जहाँ चार बासन होंगे, वहाँ आपस में खटकेंगे ही- जहाँ कई व्यक्ति हों वहाँ झगड़ा होना स्वाभाविक है।	दुविधा में दोनों गए माया मिली न राम- दुविधा में पड़ने से कुछ नहीं मिलता।
जंगल में मोर नाचा किसने देखा - ऐसे स्थान पर गुण प्रदर्शन न करें जहाँ कद्र न हो।	दूध का दूध पानी का पानी - ठीक-ठीक न्याय हो जाना।
जस दूल्हा तस बनी बराता - जैसे आप वैसे साथी।	दूध पिलाकर साँप पोसना - शत्रु का उपकार करना।
जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि- कवि की कल्पना सब जगह पहुँचती है।	दूर के ढोल सुहावने - दूर से चीज अच्छी लगती है।
जैसा मुँह वैसा थप्पड़ - जो जिसके योग्य हो उसे वही मिलता है।	दूसरे की पत्तल लंबा-लंबा भात- दूसरे की वस्तु अच्छी लगती है।
ज्यों ज्यों भीजे कामरी त्यों-त्यों भारी होय- जैसे-जैसे समय बीतता है जिम्मेदारियाँ बढ़ती जाती हैं।	दो लड़े तीसरा ले उड़े - दो की लड़ाई में तीसरे की बन आती है।
झूठ के पाँव नहीं होते - झूठा आदमी एक बात पर पक्का नहीं रह पाता।	धनवंती को कांटा लगा दौड़े लोग हजार- धनी आदमी को थोड़ा सा कष्ट हो तो भी बहुत लोग आ जाते हैं।
झोपड़ी में रहे, महलो के ख्वाब देखें- अपनी सामर्थ्य से बढ़कर चाहना।	धन का धन गया, मीत की मीत गई- उधार में पैसा तो जाता ही है, मित्रता भी नहीं रहती।
टके का सब खेल है - पैसा सब कुछ करता है।	धूप में बाल सफेद नहीं किए हैं- सांसारिक अनुभव बहुत है।
ठंडा करके खाओ - धीरज से काम करो।	धन्ना सेठ के नाती बने हैं - अपने को अमीर समझते हैं।
ठंडा लोहा गरम लोहे को काट देता है- शांत व्यक्ति क्रोधी को झुका देता है।	नंगी क्या नहायगी क्या निचौड़ेगी- निर्धन के पास है ही क्या।
ठोकर लगे तब आँख खुले - कुछ खोकर ही अक्ल आती है।	नंगा बड़ा परमेश्वर से - निर्लज्ज से सब डरते हैं।
डायन को दामाद प्यारा - अपना सब को प्यारा।	न इधर के रहे न उधर के रहे - दुविधा में हानि हो जाती है।
डूबते को तिनके का सहारा - विपत्ति में थोड़ी सी सहायता भी उबार देती है।	नदी नाव संयोग - संयोग से मिलाप हो जाना।
ढोल के भीतर पोल - केवल दिखावटी शान।	न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी- न पूरी होने वाली शर्त।
ढाक के वही तीन पात - फिर-फिर वही बात या दशा।	नया नौ दिन पुराना सौ दिन - पुरानी चीजें ज्यादा दिन चलती हैं।
तन को कपड़ा न पेट को रोटी - अत्यधिक दरिद्र।	न साँप मरे न लाठी टूटे - बिना किसी हानि के काम पूरा हो जाए।
तीन में न तेरह में - कुछ भी महत्व नहीं है।	नाक कटी पर घी तो चाटा - निर्लज्ज होकर कुछ पाना।
तेरी करनी तेरे आगे, मेरी करनी मेरे आगे- सब को अपने-अपने कर्म का फल भोगना पड़ता है।	नाच न जाने आँगन टेढ़ा - अपना दोष बहाना करके टालना।
तुम्हारे मुँह में घी-शक्कर - तुम्हारी बात सच हो।	नानी क्वाँरी मर गई, नाती के नौ-नौ ब्याह- झूठी बड़ाई।
तुरन्त दान महा कल्याण - जो करना हो चटपट करें, शुभ कार्य में देर कैसी।	नानी के आगे ननिहाल की बातें - जिसको सब कुछ मालूम है, उसको जानकारी देना।
तेली का तेल जले, मशालची का दिल जले- दान कोई करे कूढ़न दूसरे को हो।	नाम बड़े और दर्शन छोटे - प्रसिद्धि बहुत होना पर वास्तव में गुण न होना।
तू डाल-डाल, मैं पात-पात - एक से बढ़कर दूसरा चालाक।	नेकी और पूछ-पूछ - भलाई करने के लिए पूछना क्या।
थका ऊँट सराय ताकता - थकने पर विश्राम चाहिए।	नौ नगद, न तेरे उधार - नगद का काम उधार के काम से अच्छा है।
	नौ सौ चूहे खा के बिल्ली हज को चली- जीवन भर कुकर्म करते रहे, अंत में भले बन बैठे।
	पढ़े तो है गुने नहीं - पढ़ -लिखकर भी अनुभव हीन
	पढ़े फारसी बेचे तेल, यह देखों करमों का खेल- गुणवान् होने पर भी दुर्भाग्य से छोटा काम मिला है।
	पराया घर थूकने का भी डर - दूसरे के घर में संकोच रहता है।

पराये धन पर लक्ष्मी नारायण - दूसरे के धन पर गुलछरें उड़ाना।
 पाँचों उँगलियाँ घी में - सब लाभ ही लाभ।
 पाँचों उँगलियाँ बराबर नहीं होती - सब आदमी एक जैसे नहीं होते।
 पानी मथने से घी नहीं मिलता- बेकार की बहस का कोई लाभ नहीं है।
 पाप का घड़ा भरकर डूबता है - पाप जब बहुत बढ़ जाता है तब विनाश होता है।
 पिया गये परदेश, अब डर काहे का- जब कोई निगरानी करने वाला न हो, तो मौज उड़ाना।
 पहले तोलो, पीछे बोलो - बात समझ- सोचकर करनी चाहिए।
 पेड़ फल से जाना जाता है - कर्म का महत्व उसके परिणाम से होता है।
 प्यासा कुएँ के पास जाता है - जिसे गरज होती है, वही दूसरों के पास जाता है।
 बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद- वह इस वस्तु का महत्व नहीं समझता।
 बड़ी मछली, छोटी मछली को खाती है- निर्बल सबल द्वारा सजाया जाता है।
 बड़े बोल का सिर नीचा - जो घमंड करता है उसको नीचा देखना पड़ता है।
 बर्नी के सब यार - अच्छे दिनों में सब दोस्त बनते हैं।
 बहरा सो गहरा - चुप्पा बहुत चालक होता है।
 बाँझ का जाने प्रसव की पीड़ा - दुःख को दुःखी ही समझता हैं।
 बाँह गहे की लाज - शरण में आए की रक्षा करनी चाहिए।
 बाप भला न भड़या, सब से भला रुपड़या- नाते रिश्ते बेकार पैसा सब कुछ।
 बारह बरस पीछे घूरे के भी दिन फिरते हैं- एक न एक दिन अच्छे दिन आ ही जाते हैं।
 बिच्छू का मंतर न जाने, साँप के बिल में हाथ डाले- अनाड़ी होकर बड़े काम में हाथ डाले।
 भीख माँगे और आँख दिखाए- भिखारी होकर अकड़ता है।
 भरी गगरिया चुपके जाय - ज्ञानी आदमी गंभीर होता है।
 भले का भला - भलाई का बदला भलाई में मिलता है।
 भूख लगे तो घर की सूझी - जरूरत पड़ने पर अपनों की याद आती है।
 भैंस के आगे बीन बजाए, भैंस खड़ी पगुराय- मूर्ख के आगे ज्ञान की बात करना बेकार है।
 मजनू को लैला का कुत्ता भी प्यारा- प्यारे की हर चीज प्यारी लगती है।

मन के लड्डुओं से भूख नहीं मिटती- मन में सोचने मात्र से इच्छा पूरी नहीं होती।
 मन चंगा तो कठौती में गंगा - मन की शुद्धता ही वास्तविक शुद्धता है।
 मरता क्या न करता - मजबूरी में आदमी सब कुछ करता है।
 मार के आगे भूत भागे - मार से सब डरते हैं।
 मियाँ की जूती मियाँ के सिर - अपने ही से हानि उठाना।
 मुँह में राम बगल में छुरी - ऊपर से मित्र, भीतर से शत्रु।
 मुँह चिकना, पेट खाली - केवल ऊपरी दिखावा।
 मेरी ही बिल्ली और मुझसे ही म्याऊँ- नौकर को मालिक के सामने अकड़ना नहीं चाहिए।
 मुँह माँगी मौत नहीं मिलती - अपनी इच्छा से कुछ नहीं होता।
 मै की गरदन पर छुरी - अंहकार का नाश।
 यह मुँह और मसूर की दाल - अपनी औकात से बढ़कर होना।
 रघुकुल रीति सदा चली आई प्राण जायँ पर वचन न जाई- अपने वचन का पालन करना चाहिए।
 रस्सी जल गई पर ऐंठन न गई - सर्वनाश हो गया पर घमण्ड नहीं गया।
 राम की माया कहीं धूप कहीं छाया- भगवान कहीं सुख कहीं दुःख कही धन कहीं निर्धनता देता रहता है।
 राम मिलाई जोड़ी एक अन्धा एक कोढ़ी- बराबर का मेल हो जाता है।
 रोज कुआँ खोदना, रोज पानी पीना- रोज कमाना और तब खाना।
 लड्डू कहे मुँह मीठा नहीं होता - केवल कहने से काम नहीं बन जाता।
 लातों के भूत बातों से नहीं मानते- कुछ लोगों से कड़ाई से पेश आना पड़ता है।
 ले दही, दे दही - गरज का सौदा।
 लेना एक न देना दो - कुछ मतलब न रखना।
 लोहा लोहे को काटता है - बराबर के लोग आपस में निपट सकते हैं।
 वा सोने को तजिए जिससे काटे कान- कीमती चीज भी यदि दुःख देती है तो त्याज्य है।
 विष सोने के बरतन में रखने से अमृत नहीं हो जाता- किसी चीज का प्रभाव बदल नहीं जाता।
 शक्ल चुडैल की, मिजाज परियों का- बेकार का नखरा।
 शेखी सेठ की धोती भाड़े की- कुछ न होने पर भी बड़प्पन दिखाना।
 शौकीन बुढ़िया मलमल का लहंगा- अजीब शौक करना।
 सड़ियाँ भाए कोतवाल अब डर काहे का- अपने अधिकारियों से अनुचित लाभ उठाना।

सबरे का भूला सांझ को घर आ जाए तो भूला नहीं कहलाता-
गलती करके सुधार लेने वाला दोषी
नहीं कहलाता।

समय चूंकि पुनि का पछताने - अवसर खोकर पछताने से कोई
लाभ नहीं।

सहज पके सो मीठा होय - आराम से किया गया काम सुखकर
होता है।

साँप मरे न लाठी टूटे - बिना बल प्रयोग के काम हो जाए।
सीधे का मुँह कुत्ता चाटे - सीधेपन का लोग अनुचित लाभ
उठाते हैं।

सिर तो नहीं खुजला रहा - तुम्हारा जी मार खाने को हो रहा
है।

सुनते-सुनते कान बहरे हो गए - बार-बार सुनते-सुनते तंग आ गए
हैं।

सूरज धूल डालने से नहीं छिपता- गुणी व्यक्ति का गुण प्रकट हो
ही जायेगा।

सेर को सवा सेर - एक से बढ़कर दूसरा।

सोने में सुहागा - गुण के साथ और कोई विशेषता

हड्डी खाना आसान पर पचाना मुश्किल- घूस पानेवाला कभी न
कभी पकड़ा जाता है।

हर मर्ज की दवा - हर बात का उपाय है।

हराम की कमाई हराम में गँवाई - बेईमानी का पैसा बुरे कर्मों में
लग जाता है।

हीजड़े के घर बेटा हुआ - असंभव बात।

होनहार फिरती नहीं होवे बिस्वे बीस- भाग्य की रेखा नहीं
मिटती।

होनहार बिरवान के होत चीकने पात- होनहार बालक के गुण
बचपन से दिखाई देने लगते हैं।

होटों निकली कोठो चढ़ी - मुँह से निकली बात सब जगह
फैल जाती है।

हिसाब जौ-जौ बखशीश सौ-सौ- हिसाब करने में कड़ा, दान देने
में उदार

हाथी के पाँव में सबका पाँव - बड़ों के रहते छोटों को क्या पूछना
हरर लगे न फिटकरी, रंग भी चोखा होय- बिना कुछ खर्च किये
काम बन जाये।

हम साँप नहीं हवा पीकर जियें - भरपेट खाना चाहिए।

विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. 'आगे कुआँ पीछे खाई' का अर्थ है-

- (a) चारों तरफ जल ही जल होना
- (b) रास्ते का बन्द होना
- (c) दोनों ओर मुसीबत
- (d) बीच में निकल भागना

UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (c)

2. 'चोर की दाढ़ी में तिनका' मुहावरे का सही अर्थ है-

- (a) अपराधी का अपनी दाढ़ी खुजलाना
- (b) अपराधी का शंकाग्रस्त रहना
- (c) अपराधी को पहचान हो जाना
- (d) अपराधी का अपनी पहचान छिपाना

UP TET - Ist Paper (I-V) Dec. 2016

उत्तर : (b)

3. 'एक मुँह दो बात' मुहावरे का अर्थ है-

- (a) अत्यधिक बातें करना
- (b) बहुत कम बोलना
- (c) अपनी बात से पलट जाना
- (d) बात बनाना

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (c)

4. कपटी मित्र के लिए सही मुहावरा है-

- (a) दाँत काटी रोटी
- (b) आस्तीन का साँप
- (c) अक्ल की दुम
- (d) आबनूस का कुन्दा

UP TET - Ist Paper (I-V) June 2013

उत्तर : (b)

5. 'नाक रगड़ना' का क्या अर्थ है?

- (a) नाक में चोट लगना
- (b) इज्जत देना
- (c) दीनतापूर्वक प्रार्थना करना
- (d) चापलूसी करना

UP TET - Ist Paper (I-V) June 2013

उत्तर : (c)

6. 'कार्य के आरम्भ में ही विघ्न पड़ना' किस मुहावरे का अर्थ है?

- (a) सिर मारना
- (b) सिर पर सेहरा बँधा होना
- (c) सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना
- (d) सिर पर शैतान सवार होना

UP TET - Ist Paper (I-V) June 2013

उत्तर : (c)

7. कान का कच्चा होने का अर्थ है -

- (a) कम सुनना
- (b) सुनी बात पर विश्वास करना
- (c) दूसरे की बात मानना
- (d) कान का कमजोर होना

UP TET - Ist Paper (I-V) June 2013

उत्तर : (b)

8. 'नाक का बाल होना' मुहावरे का अर्थ है-

- (a) अधिक समीप होना
- (b) कष्ट देना
- (c) अधिक प्रिय होना
- (d) पालतू होना

UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (c)

9. कौन-सा तुमने यह मोबाइल फोन मोल में खरीदा है, जो इसके मॉडल की इतनी बुराई कर रहे हो। अरे भाई.....खाली स्थान के लिए सर्वाधिक उपयुक्त लोकोक्ति पर चिह्न लगाइए।

- (a) नया नौ दिन पुराना सौ दिन
(b) दान की बछिया के दाँत नहीं देखे जाते
(c) नाक कटी पर घी तो चाटा
(d) नाम बड़े और दर्शन छोटे

Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (b)

10. 'हमेशा आनन्द का अनुभव करना' अर्थ को व्यक्त करने के लिए सटीक लोकोक्ति है—

- (a) सदा दीवाली सन्त की, बारह मास बसन्त
(b) न सावन सूखा, न भादों हरा
(c) जहाँ चाह वहाँ राह
(d) आप भला तो जग भला

Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (a)

11. इस वाक्य में किस लोकोक्ति का प्रयोग होगा?

“तीर्थों के पण्डे पुजारी प्रायः ऐसे यजमानों की खोज में रहते हैं जो.....हों”

- (a) आँख के अन्धे, गाँठ के पूरे
(b) मान न मान मैं तेरा मेहमान
(c) गंगा गए गंगादास, जमुना गए जमुनादास
(d) आप काज महाराज

Chhattisgarh TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

उत्तर : (a)

12. “एक अनार सौ बीमार” यह एक—

- (a) मुहावरा है (b) वाक्य है
(c) वाक्यांश है (d) लोकोक्ति है

Chhattisgarh TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

उत्तर : (d)

13. प्रधान अध्यापक की बातें सुनकर मैं शर्म के मारे चुप हो गया। रेखांकित वाक्यांश का भाव किस मुहावरे से व्यक्त होता है—

- (a) आकाश पाताल एक कर गया
(b) अपना-सा मुँह लेकर रह गया
(c) अपना उल्लू सीधा करने लग गया
(d) उल्टी गंगा बहाने लगा

Chhattisgarh TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

उत्तर : (b)

14. 'आँखे दिखाना' मुहावरा किस अर्थ में प्रयुक्त होता है?

- (a) लज्जित करना (b) स्वागत करना
(c) सावधान करना (d) क्रोध से देखना

Chhattisgarh TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

उत्तर : (d)

15. 'शेर को सामने देख कर..... यह वाक्य किस मुहावरे से पूर्ण होगा?

- (a) मैं सातवें आसमान पर पहुँच गया
(b) मैं आग बबूला हो उठा
(c) मैंने आसमान सिर पर उठा लिया
(d) मेरे प्राण सूख गए

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) July 2011

उत्तर : (d)

16. सही मुहावरा है—

- (a) नेत्रों में मिट्टी डालना (b) आँखों में रेत फेंकना
(c) आँखों में धूल झोंकना (d) आँखों में कचरा डालना

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) July 2011

उत्तर : (c)

17. 'हाथ न आना' इस मुहावरे का निकटतम अर्थ है—

- (a) पकड़ में न आना (b) बहुत बड़ा होना
(c) हाथों का व्यायाम करना (d) हाथ-फैलाना

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) July 2011

उत्तर : (a)

18. 'सिर फिर जाना' का अभिप्राय है—

- (a) चक्कर आ जाना (b) अहंकारी हो जाना
(c) सर दर्द हो जाना (d) पीछे मुड़कर देखने लगना

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) July 2011

उत्तर : (b)

19. 'अवसर का लाभ उठाना' के लिए उपयुक्त है—

- (a) बहती गंगा में हाथ धोना
(b) आकाश-पाताल एक करना
(c) फूला न समाना
(d) अंगारों पर पैर रखना

Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011

उत्तर : (a)

20. 'बाधा डालना' मुहावरे का अर्थ है —

- (a) पाला पड़ना
(b) रोड़ा अटकाना
(c) बरस पड़ना
(d) दाँतों में जीभ होना

Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011

उत्तर : (b)

21. 'अपना हाथ जगन्नाथ' का अर्थ है—

- (a) मनमानी करना
(b) अपना हाथ पूजनीय होता है
(c) अपने हाथ से काम करना ही उपयुक्त होता है
(d) अपने हाथ से दान करना

Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011

उत्तर : (c)

22. 'मैं तुम सबको खूब समझता हूँ, तुम सब एक जैसे हो' के लिए उपयुक्त है -

- (a) चोर-चोर मौसेरे भाई
- (b) एक ही थैली के चट्टे-बट्टे
- (c) केर-बेर का संग
- (d) जैसे नागनाथ वैसे सांपनाथ

Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011

उत्तर : (b)

23. 'सुदामा के तन्दुल' का अर्थ है-

- (a) गरीबी में जीना
- (b) गरीबी में भी तन्दुल का शौक रखना
- (c) सामान्य किन्तु प्रेमपूर्वक भेंट
- (d) बढ़-चढ़ कर बातें करना

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (c)

24. 'खरी मजूरी चोखा काम' का अर्थ है-

- (a) लोग मजदूरी की परवाह करते हैं कार्य की नहीं
- (b) पूरी मजदूरी देने पर अच्छा कार्य होता है
- (c) साधारण काम के अधिक पैसे माँगना
- (d) बिना काम के दौलत चाहना

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (b)

25. स्थिति में परिवर्तन न होने के भाव को व्यक्त करने वाली सही कहावत है -

- (a) जस दूल्हा तस बनी बराता
- (b) न सुख में मोटे न दुःख में दुबले
- (c) न गरजे न बरसे वही धूप की धूप
- (d) वही ढांक के तीन पात

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) April 2016

उत्तर : (d)

26. 'कुपात्र की सहायता करना व्यर्थ है' इस उक्ति को चरितार्थ करने वाली कहावत है -

- (a) अन्धे को न्यौता, दो जने आए
- (b) कुत्ते को खिलाई खीर, पाप में न पुण्य में
- (c) गधे की खाई खेती, ना पाप में न पुण्य में
- (d) बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Jan. 2011

उत्तर : (b)

27. 'अनिश्चितता' के भाव को प्रकट करने के लिए उपयुक्त मुहावरे का चयन कीजिए -

- (a) बंद मुट्ठी में क्या है
- (b) पर्दे के पीछे कौन है
- (c) न जाने भाग्य में क्या है
- (d) न जाने ऊँट किस करवट बैठेगा

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Jan. 2011

उत्तर : (d)

28. 'न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी' का भाव है-

- (a) काम न करने का बहाना बनाना
- (b) खूब काम करना
- (c) काम से दिल ऊबना
- (d) काम में आलस्य करना

Uttarakhand TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2013

उत्तर : (a)

29. 'प्रायः निर्दलीय, सत्तारूढ़ दल में सम्मिलित होकर लाभ उठा लेते हैं।'

उपरोक्त वाक्य के लिए सर्वाधिक उपयुक्त मुहावरा होगा-

- (a) बहती गंगा में हाथ धोना
- (b) पाँव जमीन पर न रखना
- (c) नहले-पे-दहला मारना
- (d) दो नावों पर पाँव रखना

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2013

उत्तर : (a)

30. निम्नलिखित में लोकोक्ति कौन-सी है?

- (a) आसमान पर थूकना
- (b) उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे
- (c) गूलर का फूल होना
- (d) कोढ़ में खाज होना

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2013

उत्तर : (b)

31. 'अनजान सुजान, सदा कल्याण' लोकोक्ति का भावार्थ है-

- (a) अनजान और सुजान के साथ सदैव लाभ मिलता है
- (b) भोला-भाला ज्ञानी कल्याणकारक होता है
- (c) मूर्ख और ज्ञानी दोनों मजे में रहते हैं
- (d) मूर्ख स्वयं को ज्ञानी समझकर नुकसान कराता है

Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (c)

32. 'दुष्ट अपनी दुष्टता नहीं छोड़ता' के लिए उचित लोकोक्ति है -

- (a) खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे
- (b) गंगा गए तो गंगादास, जमुना गए तो जमुनादास
- (c) कबहुँ निरामिष होय न कागा
- (d) जिस पत्तल में खाया, उसी में छेद करना

Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (c)

33. 'उत्तर गई लोई तो क्या करेगा कोई' कहावत का सही अर्थ है-

- (a) कंगले को किसी हानि की आशंका नहीं होती
- (b) गंभीर रोगी की चिकित्सा संभव नहीं होती
- (c) खोई हुई प्रतिष्ठा वापस नहीं मिल सकती

- (d) बेशर्म हो चुके व्यक्ति को इज्जत गँवा देने का भय नहीं रहता

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2015

उत्तर : (d)

34. 'कार्य करने के बाद उसके बारे में जाँच करना' अर्थ वाली कहावत है—

- (a) साँप निकलने पर लकीर पीटते रहना
(b) पानी पीकर जाति पूछना
(c) अब पछताए होत का जब चिड़िया चुग गई खेत
(d) उपर्युक्त सभी

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (b)

35. अधोलिखित लोकोक्ति का सही अर्थ बताइये—

'आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास'

- (a) धर्म के नाम पर व्यापार करना
(b) पवित्र जगहों को दुरुपयोग करना
(c) बड़ा लक्ष्य निर्धारित करके छोटे कार्यों में लग जाना
(d) उपर्युक्त सभी

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (c)

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. "अन्धे को दीपक दिखाना" मुहावरे का सही अर्थ चुनिए-

- (a) अन्धे का रास्ता रोशन करना
(b) ना समझ को उपदेश देना
(c) ना समझ को रोशनी देना
(d) अन्धे की सहायता करना

2. 'अक्ल पर पत्थर पड़ना' मुहावरे का अर्थ है—

- (a) मूर्ख बन जाना (b) अपमानजनक बात कहना
(c) बुद्धि भ्रष्ट होना (d) बेफिक्र होना

3. 'अवांछित संवाद' अर्थ के लिए उपयुक्त मुहावरा है—

- (a) सिर खपाना (b) सिर खाना
(c) सिर नीचा होना (d) सिर पड़ना

4. "अचानक घबरा जाना" अर्थ के लिए निम्नलिखित में से उचित मुहावरा कौन-सा विकल्प है?

- (a) हक्का-बक्का रह जाना
(b) हाथों के तोते उड़ना
(c) भीगी बिल्ली बनना
(d) अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना

5. "आधा तीतर आधा बटेरा" मुहावरे का अर्थ बताइये।

- (a) दो चीजों का मिश्रण
(b) बेमेल चीजों का मिश्रण
(c) आधा-आधा खाना
(d) तीतर और बटेर मिलाकर खाना

6. 'एकमात्र सहारा' मुहावरे का सही अर्थ है?

- (a) आँखों का तारा (b) नाक का बाल होना
(c) अंधे की लाठी होना (d) आँखे बिछाना

7. निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ क्या है।

- कान भरना
(a) हिम्मत बँधाना (b) प्रेरित करना
(c) गुपचुप निन्दा करना (d) हतोत्साहित करना

8. "काठ का उल्लू" का अर्थ क्या है?

- (a) अडिग। (b) निर्जीव।
(c) अत्यधिक सरल। (d) मूर्ख।

9. "खराद पर चढ़ना" का अर्थ कौन सा विकल्प है?

- (a) शत्रु के आमने-सामने आना
(b) कठिनाई में पड़ना
(c) जाँच में आना
(d) सच्चाई का सामना करना

10. 'गूलर का फूल होना' मुहावरे का सही अर्थ है—

- (a) फूल की तरह खिलना (b) अति प्रसन्न होना
(c) दुर्लभ वस्तु (d) सुगन्धित होना

11. 'गुदड़ी का लाल' इस मुहावरे से क्या आशय है?

- (a) निर्धन परिवार में धन का आना
(b) धोखेबाज मित्र
(c) निर्धन परिवार में गुणी का जन्म होना
(d) निर्धन परिवार में बेटे का जन्म होना

12. 'चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना' का अर्थ है:

- (a) तेजी से चलना (b) घबरा जाना
(c) जवाब न देना (d) क्रोधित होना

13. 'थोथा चना बाजे घना' मुहावरे के अर्थ का चयन करें।

- (a) चने रूपी खिलाँने से खेलना
(b) दिखावा बहुत करना परन्तु सार न होना।
(c) चने को बजाना।
(d) बहुत आवाज करना।

14. निम्नलिखित में से मुहावरा कौन-सा है ?

- (a) न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी।
(b) दाँत खट्टे करना।
(c) नाच न जाने ऑगन टेढ़ा।
(d) दूर के ढोल सुहावने।

15. निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ क्या है?

"नाक में दम होना"

- (a) तंग होना (b) परास्त हो जाना
(c) मर जाना (d) ध्वस्त हो जाना

16. 'पानी पीकर जात पूछना' का अर्थ है-

- (a) अनोखा काम करना
- (b) विपरीत काम करना
- (c) काम निकलने के बाद सोचना
- (d) आराम से विचार करना

17. 'बहती गंगा में हाथ धोना' का सही अर्थ है -

- (a) चातुर्यवृत्ति से काम निकालना
- (b) अपना काम निकालना
- (c) पुण्य का कार्य करना
- (d) अवसर का लाभ उठाना

18. "बिल्ली के गले में घंटी बांधना" के अर्थ का उचित विकल्प चुनिये।

- (a) बिल्ली को सजाना।
- (b) घंटी सुनने के मजे लेना।
- (c) अपने को संकट में डालना।
- (d) बिल्ली को क्रोधित करना।

19. 'सिर उठाना' मुहावरे का सही अर्थ है -

- (a) रंग उतर जाना
- (b) भेद प्रकट करना
- (c) बहुत पछताना
- (d) विद्रोह करना

20. "लोहे के चने चबाना" निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प इस मुहावरे का उचित अर्थ दर्शाता है?

- (a) लोहे के चनों का शौकीन होना
- (b) चनों के लिये मारे-मारे फिरना
- (c) बहुत खतरा उठाना
- (d) बहुत कठिनाई का सामना करना

21. 'सिक्का जमाना' मुहावरे का अर्थ क्या है?

- (a) सफलता प्राप्त करना
- (b) प्रभाव स्थापित करना
- (c) कड़ी टक्कर देना
- (d) जीत जाना

22. 'आँख न दीदा काढ़े कसीदा' लोकोक्ति का अर्थ क्या है?

- (a) बहुत निपुण बनना
- (b) साधन न होने पर भी काम कर लेना
- (c) सर्वथा अयोग्य
- (d) योग्यता न रहने पर भी काम करने की शेखी भरना

23. "आग लगने पर कुआँ खोदना" दिए गए विकल्पों में से लोकोक्ति का सही अर्थ बताएं।

- (a) तसल्ली से कोई काम करना
- (b) व्यर्थ भाग-दौड़ करना
- (c) विपत्ति आ जाने पर उसका निराकरण करना
- (d) विपत्ति आ जाने पर तुरन्त समाधान खोजना

24. 'कब बबा मरही त कब बरा चुरही' का अर्थ है -

- (a) किसी के लिए अपशगुन शब्द कहना
- (b) कार्य का अनिश्चित होना

(c) प्रसन्नता व्यक्त करना

(d) किसी का इंतजार करना

25. 'काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती', इस लोकोक्ति का अर्थ क्या है?

- (a) दुर्भाग्य की मार बार-बार नहीं होती
- (b) बुरे दिन हमेशा नहीं रहते
- (c) छल-कपट का व्यवहार हमेशा नहीं चलता
- (d) लकड़ी का बर्तन अग्नि से जल सकता है

26. घड़ी में तोला घड़ी में माशा का अर्थ है -

- (a) बहुत ही नाजुक मिजाज
- (b) डण्डी मारने में कुशल व्यापारी
- (c) ऐसा व्यापार जिसमें एक पल मुनाफा हो तो दूसरे कहीं नुकसान
- (d) जरा सी बात पर खुश और नाराज होना

27. जबरदस्ती का मेहमान अर्थ के लिए सही लोकोक्ति है-

- (a) ऊँची दुकान फीकी पकवान
- (b) अधजल गगरी छलकत जाए
- (c) आंख के अंधे नाम नैन सुख
- (d) मान न मान मैं तेरा मेहमान

28. "पैसे से ही आदमी की इज्जत है" के लिए निम्नलिखित में से उचित लोकोक्ति का चयन कीजिये-

- (a) अपनी पगड़ी अपने हाथ
- (b) होनहार बिरवान के होत चिकने पात
- (c) जैसी तेरी कामरी वैसे मेरे गीत
- (d) जर है तो नर नहीं तो खंडहर

29. 'शैतान की आँत'- इस मुहावरे का उपयुक्त अर्थ है-

- (a) अत्यन्त धूर्त व्यक्ति
- (b) बहुत लम्बी वस्तु
- (c) अत्यन्त नगण्य वस्तु
- (d) अत्यन्त लाभदायक वस्तु

30. नीचे लोकोक्तियाँ और उनके अर्थ दिए गए हैं। इनमें गलत अर्थ वाली लोकोक्ति का चयन कीजिए।

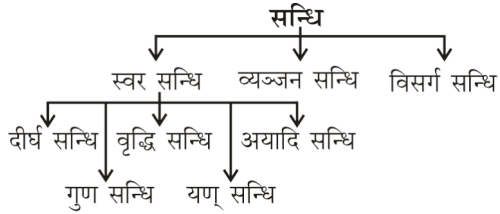
- (a) आगे नाथ न पीछे पगहा - बन्धनहीन
- (b) तीन तेरह होना - संगठित होना
- (c) एक टकसाल के ढले हैं - सब एक जैसे हैं
- (d) आँख के अन्धे गाँठ के पूरे - मूर्ख लेकिन धनवान

उत्तरमाला

1. (b)	2. (c)	3. (b)	4. (b)	5. (b)	6. (c)	7. (c)	8. (d)	9. (c)	10. (c)
11. (c)	12. (b)	13. (b)	14. (b)	15. (a)	16. (c)	17. (d)	18. (c)	19. (b)	20. (d)
21. (b)	22. (d)	23. (d)	24. (b)	25. (c)	26. (d)	27. (d)	28. (d)	29. (b)	30. (b)

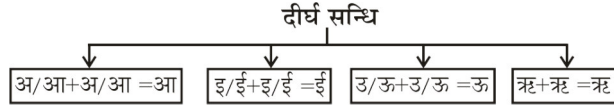
सन्धि

सन्धि- दो समीपवर्ती वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार (परिवर्तन) को सन्धि कहते हैं। सन्धि के तीन भेद होते हैं। जो निम्नांकित ग्राफ द्वारा स्पष्ट है-



स्वर सन्धि- दो स्वरों के मेल से होने वाले परिवर्तन को स्वर सन्धि कहते हैं। स्वर सन्धि के पाँच भेद होते हैं जो ऊपर ग्राफ में भी अंकित हैं।

1. दीर्घ सन्धि- ह्रस्व/दीर्घ अ, इ, उ, ऋ के पश्चात् क्रमशः समान स्वर वर्ण आये तो दोनों को मिलाकर दीर्घ आ, ई, ऊ, ऋ होता है।



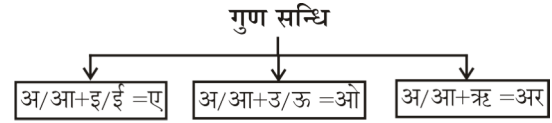
विगत परीक्षाओं के आधार पर संग्रहित उदाहरण-

सत्य + अर्थी = सत्यार्थी	अति + इव = अतीव
धन + अर्थी = धनार्थी	अभि + इष्ट = अभीष्ट
दैत्य + अरि = दैत्यारि	गिरि + ईश = गिरीश
राम + अवतार = रामावतार	परि + ईक्षा = परीक्षा
धर्म + आत्मा = धर्मात्मा	क्षिति + ईश = क्षितीश
परम + आवश्यक = परमावश्यक	अधि + ईश्वर = अधीश्वर
राम + आधार = रामाधार	देवी + इच्छा = देवीच्छा
पुस्तक + आलय = पुस्तकालय	मही + इन्द्र = महीन्द्र
विद्या + अध्ययन = विद्याध्ययन	महती + इच्छा = महतीच्छा
विद्या + अर्थी = विद्यार्थी	लक्ष्मी + इच्छा = लक्ष्मीच्छा
वर्षा + अंत = वर्षांत	पृथ्वी + ईश्वर = पृथ्वीश्वर
कदा + अपि = कदापि	पृथ्वी + ईश = पृथ्वीश
महा + आशय = महाशय	रजनी + ईश = रजनीश
आत्मा + आनंद = आत्मानंद	श्री + ईश = श्रीश
वार्ता + आलाप = वार्तालाप	लक्ष्मी + ईश = लक्ष्मीश
विद्या + आलय = विद्यालय	विधु + उदय = विधूदय
प्रति + इति = प्रतीति	साधु + उपदेश = साधूपदेश
गिरि + इन्द्र = गिरीन्द्र	गुरु + उपदेश = गुरुपदेश
भानु + उदय = भानूदय	स्वयंभू + उदय = स्वयंभूदय

भानु + ऊर्ध्व = भानूर्ध्व
सिन्धु + ऊर्मि = सिन्धूर्मि
मंजु + ऊषा = मंजूषा
भू + उत्तम = भूत्तम
वधू + उपालम्भ = वधूपालम्भ

भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व
मातृ + ऋण = मातृण
होतृ + ऋकार = होतृकार
पितृ + ऋण = पितृण
वधू + उल्लास = वधूल्लास

2. गुण सन्धि - अ/आ पश्चात् के इ/ई, उ/ऊ एवं ऋ आये तो दोनों मिलकर क्रमशः 'ए', 'ओ' और 'अर्' हो जाते हैं। ग्राफ देखें-



उप + इन्द्र = उपेन्द्र

देव + इन्द्र = देवेन्द्र

नर + इन्द्र = नरेन्द्र

उप + इन्द्र = उपेन्द्र

देव + ईश = देवेश

सुर + ईश = सुरेश

खग + ईश = खगेश

नर + ईश = नरेश

गण + ईश = गणेश

रसना + इन्द्रिय = रसनेन्द्रिय

महा + इन्द्र = महेन्द्र

रमा + ईश = रमेश

महा + ईश = महेश

राका + ईश = राकेश

महा + ईश्वर = महेश्वर

प्राप्त + उदक = प्राप्तोदक

चन्द्र + उदय = चन्द्रोदय

जल + उदय = जलोदय

सूर्य + उदय = सूर्योदय

पर + उपकार = परोपकार

समुद्र + ऊर्मि = समुद्रोर्मि

दीर्घ + ऊपल = दीर्घोपल

जल + ऊर्मि = जलोर्मि

महा + उदय = महोदय

महा + उपदेश = महोपदेश

यथा + उचित = यथोचित

महा + उत्सव = महोत्सव

महा + ऊर्मि = महोर्मि

गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि

महा + ऊर्जा = महोर्जा

महा + ऊर्जस्वी = महोर्जस्वी

ब्रह्म + ऋषि = ब्रह्मर्षि

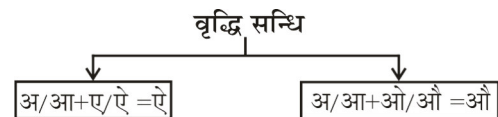
देव + ऋषि = देवर्षि

राज + ऋषि = राजर्षि

सप्तर्षि + ऋषि = सप्तर्षि

महा + ऋषि = महर्षि

3. वृद्धि सन्धि - यदि अ/आ के पश्चात् 'ए'/'ऐ' आये, तो दोनों मिलकर 'ऐ' एवं ओ/औ आये, तो दोनों मिलकर 'औ' हो जाता है।



एक + एक = एकैक

तत्र + एव = तत्रैव

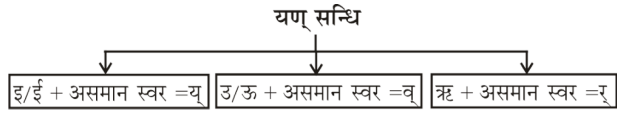
एकदा + एव = एकदैव

महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य

दिन + एक = दिनैक
 एक + एव = एकैव
 मत + ऐक्य = मतैक्य
 विश्व + ऐक्य = विश्वैक्य
 देव + ऐश्वर्य = देवैश्वर्य
 धर्म + ऐक्य = धर्मैक्य
 सदा + एव = सदैव
 सर्वदा + एव = सर्वदैव
 तथा + एव = तथैव

परम + ओज = परमौज
 जल + ओक = जलौक
 जल + ओस = जलौस
 वन + औषध = वनौषध
 परम + औषध = परमौषध
 परम + औदार्य = परमौदार्य
 महा + ओज = महौज
 महा + औषध = महौषध
 महा + औदार्य = महौदार्य

4. यण् सन्धि- यदि 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ' और 'ऋ' के पश्चात् कोई असमान स्वर आये, तो इ/ई का 'य्' उ/ऊ का 'व्' और ऋ का 'र' हो जाता है। ग्राफ निम्नानुसार है-



अति + अधिक = अत्यधिक
 प्रति + अर्पण = प्रत्यर्पण
 अधि + अयन = अध्ययन
 रीति + अनुसार = रीत्यनुसार
 यदि + अपि = यद्यपि
 इति + अर्थ = इत्यर्थ
 अति + आवश्यक = अत्यावश्यक
 अग्नि + आशय = अग्न्याशय
 इति + आदि = इत्यादि
 अति + आचार = अत्याचार
 उपरि + उक्त = उपर्युक्त
 प्रति + उत्तर = प्रत्युत्तर
 अभि + उदय = अभ्युदय
 अति + उत्तम = अत्युत्तम
 अभि + उत्थान = अभ्युत्थान
 प्रति + उपकार = प्रत्युपकार
 वि + उत्पत्ति = व्युत्पत्ति
 अति + उक्ति = अत्युक्ति
 प्रति + ऊष = प्रत्यूष
 नि + ऊन = न्यून
 वाणि + ऊर्मि = वाण्यूर्मि
 प्रति + एक = प्रत्येक
 देवी + अर्थ = देव्यर्थ
 नदी + अर्पण = नद्यर्पण
 सखी + आगमन = सख्यागमन
 देवी + आलय = देव्यालय
 गुरु + औदार्य = गुर्वौदार्य
 मधु + औषध = मध्वौषध

देवी + आगम = देव्यागम
 देवी + उक्ति = देव्युक्ति
 स्त्री + उचित = सत्र्युचित
 सखी + उचित = सख्युचित
 नदी + ऊर्मि = नद्यूर्मि
 देवी + ओज = देव्योज
 देवी + औदार्य = देव्यौदार्य
 देवी + ऐश्वर्य = देव्यैश्वर्य
 अनु + अय = अन्वय
 अनु + अर्थ = अन्वर्थ
 ऋतु + अन्त = ऋत्वन्त
 मनु + अन्तर = मन्वन्तर
 मधु + अरि = मध्वरि
 अनु + आदेश = अन्वादेश
 मधु + आचार्य = मध्वाचार्य
 सु + आगत = स्वागत
 साधु + आचार = साध्वाचार
 मधु + आलय = मध्यालय
 अनु + इष्ट = अन्विष्ट
 अनु + इत = अन्वित
 धातु + इक = धात्विक
 जनु + इत = जन्वित
 अनु + एषण = अन्वेषण
 अनु + ईक्षण = अन्वीक्षण
 लघु + ओष्ठ = लघ्वोष्ठ
 मधु + ओदन = मध्वोदन
 पितृ + अनुदेश = पित्रनुदेश
 मातृ + आदेश = मात्रादेश

वधू + अर्थ = वध्वर्थ
 वधू + आदेश = वध्वादेश
 वधू + इष्ट = वध्विष्ट
 वधू + ईर्ष्या = वध्वीर्ष्या
 वधू + एषण = वध्वेषण
 पितृ + अनुमति = पित्रनुमति

पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा
 मातृ + आनन्द = मात्रानन्द
 पितृ + आदेश = पित्रादेश
 भ्रातृ + एषणा = भ्रात्रेषणा
 भ्रातृ + ओक = भ्रात्रोक

5. अयादि सन्धि - यदि 'ए', 'ऐ', 'ओ', 'औ' के पश्चात् कोई असमान स्वर आए, तो 'ए' का 'अय्', 'ऐ' का 'आय्' 'ओ' का 'अव्' एवं 'औ' का आव् हो जाता है।



चे + अन = चयन
 ने + अन = नयन
 शे + अन = शयन
 नै + अक = नायक
 विनै + अक = विनायक
 गै + अक = गायक
 विधै + अक = विधायक
 गै + अन = गायन
 सै + अक = सायक
 गो + अन = गवन
 भो + अति = भवति
 पो + अन = पवन
 भो + अन = भवन
 श्रो + अन = श्रवण
 गो + ईश = गवीश
 पो + इत्र = पवित्र
 पौ + अन = पावन
 धौ + अक = धावक
 पौ + अक = पावक

व्यंजन सन्धि

व्यंजन सन्धि - व्यंजन से स्वर या व्यंजन के मेल से उत्पन्न विकार (परिवर्तन) को व्यंजन सन्धि कहते हैं। व्यंजन सन्धि के निम्न नियम हैं -

नियम- 1 - यदि 'क्' 'च्' 'ट्' 'त्' 'प्' के पश्चात् किसी वर्ग का तीसरा या चौथा वर्ण आये, अथवा 'य', 'र', 'ल', 'व', या कोई स्वर आये, तो 'क्' 'च्' 'ट्' 'त्' 'प्' के स्थान पर अपने ही वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है।

जैसे:-

दिक् + अम्बर = दिगम्बर
 दिक् + गज = दिग्गज
 दिक् + भ्रम = दिग्भ्रम

वाक् + ईश = वागीश
वाक् + दन्त = वाग्दन्त
वाक् + दान = वाग्दान
वाक् + ईश्वरी = वागीश्वर
अच् + आदि = अजादि
अच् + अन्त = अजन्त
षट् + दर्शन = षट्दर्शन
षट् + आनन = षडानन
सत् + आचार = सदाचार
तत् + इच्छा = तदिच्छा
भगवत् + गीता = भगवद्गीता
वृहत् + रथ = वृहद्रथ
भगवत् + भक्ति = भगवद्भक्ति
सत् + आशय = सदाशय
सत् + वंश = सद्वंश
उत् + अय = उदय
सत् + उपयोगी = सदुपयोगी
तत् + रूप = तद्रूप
उत् + योग = उद्योग
सत् + आनन्द = सदानन्द
जगत् + ईश = जगदीश
सत् + गति = सद्गति
कृत् + अन्त = कृदन्त
उत् + घाटन = उद्घाटन
सत् + वाणी = सद्वाणी
उत् + गम = उद्गम
जगत् + आनन्द = जगदानन्द
अप् + धि = अब्धि
सुप् + अन्त = सुबन्त
अप् + ज = अब्ज

नियम - 2 - यदि 'क्' 'च्' 'ट्' 'त्' 'प्' के पश्चात न/ म आये तो क् च् ट् त् प् अपने ही वर्ग के पंचम वर्ण (ङ, ज, ण, न, म) में बदल जाता है।

जैसे:-

अप् + मय = अम्मय
जगत् + नाथ = जगन्नाथ
उत् + नति = उन्नति
सत् + मार्ग = सन्मार्ग
वाक् + मय = वाङ्मय
षट् + मास = षण्मास
षट् + मार्ग = षण्मार्ग
उत् + माद = उन्माद
चित् + मय = चिन्मय
दिक् + मण्डल = दिङ्मण्डल

नियम - 3 - यदि म् के पश्चात कोई स्पर्श व्यंजन वर्ण आये, तो म् का अनुस्वार या बाद वाले वर्ण के वर्ग का पंचम वर्ण हो जाता है।

जैसे:-

पम् + चम = पंचम, पञ्चम
किम् + चित = किञ्चित्, किञ्चित्
अहम् + कार = अहंकार, अहङ्कार
सम् + गम = संगम, सङ्गम

नियम - 4 - त्/द् के पश्चात यदि च/छ हो तो त्/द् के स्थान पर च् हो जाता है।

जैसे:-

उत् + छेद = उच्छेद
उत् + चारण = उच्चारण
महत् + छत्र = महच्छत्र
सत् + छात्र = सच्छात्र
सत् + चरित्र = सच्चरित्र
सत् + चित = सच्चित
शरत् + चन्द्र = शरच्चन्द्र
उत् + चाटन = उच्चाटन
उत् + चारण = उच्चारण
वृहत् + छत्र = वृहच्छत्र
उत् + छिन्न = उच्छिन्न

नियम - 5 - यदि त्/द् के पश्चात ल हो तो त्/द् 'ल्' में बदल जाते हैं और 'न्' के पश्चात 'ल्' रहे तो 'न्' का अनुनासिक के साथ 'ल' हो जाता है।

जैसे:-

तत् + लीन = तल्लीन
उत् + लास = उल्लास
उत् + लंघन = उल्लंघन
उत् + लेख = उल्लेख
महान् + लाभ = महाल्लाभ

नियम - 6 - यदि त्/द् के पश्चात ज्/झ हो तो त् या द् के स्थान पर ज् हो जाता है।

जैसे:-

सत् + जन = सज्जन
विपद् + जाल = विपज्जाल
उत् + झटित = उल्लज्जटित
उत् + ज्वल = उज्ज्वल

नियम - 7 - त्/द् के पश्चात 'उ/ड' हो तो त्/द् के स्थान पर ड हो जाता है।

जैसे:-

उत् + डयन = उड्डयन

नियम - 8 - त्/द् के बाद ट/ठ हो तो त्/द् के स्थान पर ट् हो जाता है।

जैसे:-

सत् + टीका = सट्टीका
वृहत् + टीका = वृहट्टीका
तत् + टीका = तट्टीका

नियम - 9 - त्/द् के पश्चात श हो तो त्/द् का च् और श का छ हो जाता है।

जैसे:-

सत् + शासन = सच्छासन

उत् + श्वास = उच्छ्वास

उत् + श्रृंखल = उच्छ्रृंखल

सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र

शरद् + शशि = शरच्छशि

महत् + शक्ति = महच्छक्ति

उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट

नियम - 10- त् या द् के पश्चात् ह् हो तो त्/द् के स्थान पर द् और ह् के स्थान पर ध् हो जाता है।

जैसे:-

तत् + हित = तद्धित

उत् + हरण = उद्धरण

उत् + हार = उद्धार

पद् + हति = पद्धति

उत् + हत = उद्धत

नियम - 11- म् के पश्चात् यदि य, र, ल, व, श, ष, स, ह हो तो म् अनुस्वार में बदल जाता है।

जैसे:-

सम् + सार = संसार

सम् + वेग = संवेग

सम् + हार = संहार

सम् + योग = संयोग

सम् + यम = संयम

सम् + लाप = संलाप

सम् + वाद = संवाद

सम् + शय = संशय

किम् + वा = किंवा

नियम - 12- ऋ, र्, ष् के पश्चात् न हो तथा इनके बीच में कोई स्वर, क वर्ग, प वर्ग अनुस्वार 'य', 'व', 'ह' आता हो तो 'न' का 'ण' हो जाता है।

जैसे:-

राम् + अयन = रामायण

भर् + अन = भरण

भूष् + अन = भूषण

प्र + मान = प्रमाण

ऋ + न = ऋण

पोष + अन = पोषण

तृष + ना = तृष्णा

नियम - 13- यदि स के पहले अ, आ को छोड़ कर कोई स्वर आता है तो स के स्थान पर ष हो जाता है।

जैसे:-

वि + सम = विषम

सु + सुप्त = सुषुप्त

सु + समा = सुषमा

युधि + स्थिर = युधिष्ठिर

नि + सिद्ध = निषिद्ध

नि + सेध = निषेध

अभि + सेक = अभिषेक

विसर्ग सन्धि

विसर्ग के साथ स्वर अथवा व्यंजन के मेल से जो विकार (परिवर्तन) होता है, उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।

नियम - 1- यदि विसर्ग के पश्चात् च/छ हो, तो विसर्ग का 'श्' 'ट/ठ' हो तो 'ष्' और 'त'/'थ' हो तो 'स्' हो जाता है।

जैसे:-

कः + चित् = कश्चित

निः + चय = निश्चय

तः + ठकार = तष्ठकार

निः + छल = निश्छल

धनुः + टङ्कार = धनुष्टङ्कार

निः + चेष्ट = निश्चेष्ट

निः + चल = निश्चल

निः + तेज = निस्तेज

निः + तार = निस्तार

दुः + तर = दुस्तर

दुः + ट = दुष्ट

निः + छिद्र = निश्छिद्र

नियम - 2- यदि विसर्ग के पूर्व इ/उ हो और विसर्ग के बाद क, ख, प, फ हो तो विसर्ग का ष् हो जाता है।

जैसे:-

निः + पाप = निष्पाप

दुः + प्रवृत्ति = दुष्प्रवृत्ति

निः + कारण = निष्कारण

चतुः + पद = चतुष्पद

दुः + पुत्र = दुष्पुत्र

निः + फल = निष्फल

निः + कपट = निष्कपट

दुः + कर्म = दुष्कर्म

दुः + फल = दुष्फल

नियम - 3- यदि विसर्ग के पूर्व 'अ' हो और बाद में क, ख, प, फ में से कोई वर्ण हो, तो विसर्ग ज्यों का त्यों रहता है।

जैसे:-

रजः + कण = रजःकण

पयः + पान = पयःपान

अन्तः + करण = अन्तःकरण

अधः + पतन = अधःपतन

अन्तः + पुर = अन्तःपुर

प्रातः + काल = प्रातःकाल

दुः + ख = दुःख

नोट- कुछ शब्दों में विसर्ग का स हो जाता है-

जैसे:-

पुरः + कार = पुरस्कार

नमः + कार = नमस्कार

भाः + कर = भास्कर

तिरः + कार = तिस्कार

नियम - 4- यदि 'इ'/'उ' के पश्चात् विसर्ग हो और इसके पश्चात् र आये, तो इ/उ का ई/ऊ हो जाता है और विसर्ग लुप्त हो जाता है।

जैसे:-

नि: + रोग = नीरोग

नि: + रस = नीरस

नि: + रव = नीरव

दु: + राज = दूराज

नियम - 5- यदि विसर्ग के पूर्व 'अ' आये और उसके बाद वर्ग का तीसरा, चौथा अथवा पाँचवाँ वर्ण आये अथवा य, र, ल, व, ह रहे, तो विसर्ग का उ हो जाता है और यह 'उ' पूर्ववती 'अ' से मिलकर गुणसन्धि द्वारा 'ओ' हो जाता है।

जैसे:-

मन: + हर = मनोहर

मन: + ज्ञ = मनोज्ञ

मन: + रथ = मनोरथ

मन: + वेग = मनोवेग

मन: + योग = मनोयोग

मन: + नयन = मनोनयन

मन: + विकार = मनोविकार

मन: + ज = मनोज

तम: + गुण = तमोगुण

अध: + घात = अधोघात

यश: + गान = यशोगान

पुर: + हित = पुरोहित

पय: + द = पयोद

पय: + धर = पयोधर

वय: + वृद्ध = वयोवृद्ध

यश: + लाभ = यशोलाभ

यश: + दा = यशोदा

यश: + धरा = यशोधरा

तप: + भूमि = तपोभूमि

तप: + बल = तपोबल

तप: + धन = तपोधन

सर: + रूह = सरोरूह

अध: + जल = अधोजल

अध: + गति = अधोगति

नियम - 6- यदि विसर्ग के पूर्व 'अ' और 'आ' को छोड़कर कोई दूसरा स्वर आये और विसर्ग के पश्चात् कोई स्वर हो अथवा किसी वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण हो अथवा य, र, ल, व हो, तो विसर्ग के स्थान में 'रू' हो जाता है।

जैसे:-

नि: + जल = निर्जल

नि: + धन = निर्धन

नि: + गुण = निर्गुण

नि: + उपाय = निरुपाय

नि: + मल = निर्मल

नि: + झर = निर्झर

दु: + गन्ध = दुर्गन्ध

दु: + नीति = दुर्नीति

दु: + उपयोग = दुरुपयोग

दु: + आत्मा = दुरात्मा

नि: + विकार = निर्विकार

नि: + आधार = निराधार

नि: + उत्तर = निरुत्तर

नि: + ईह = निरीह

नि: + गम = निर्गम

नियम - 7- यदि विसर्ग के आगे-पीछे 'अ' हो तो पहला 'अ' और विसर्ग मिलकर छोटे नियम की तरह ओकार हो जाता है और बाद वाले 'अ' का लोप होकर उसके स्थान में लुप्ताकार या अवग्रह (ऽ) का चिह्न लग जाता है।

जैसे:-

मन: + अभिलषित = मनोऽभिलषित

यश: + अभिलाषा = यशोऽभिलाषा

प्रथम: + अध्याय: = प्रथमोऽध्याय:

नोट - विसर्ग के पश्चात् 'अ' के सिवा दूसरा स्वर आये, तो यह नियम लागू नहीं होगा बल्कि विसर्ग का लोप हो जायेगा।

अत: + एव = अतएव।

समास

समास का शाब्दिक अर्थ संक्षेप होता है; अर्थात् दो या अधिक पदों के मध्य कारक चिह्नों का लोप करके उनको संक्षिप्त करना समास कहलाता है: जैसे-

राजपुत्र- राजा का पुत्र (उदाहरण में कारक चिह्न 'का' का लोप करके 'राजपुत्र' बना)

समास की विशेषताएँ-

- (I) समास में कम से कम दो पदों का योग होता है।
- (II) वे दो या अधिक पद एक पद हो जाते हैं 'एकपदीभाव: समास:'
- (III) समास में समस्त होने वाले पदों का विभक्ति चिह्न लुप्त हो जाता है।

सन्धि और समास में अन्तर-

- (I) समास में दो पदों का योग होता है; किन्तु सन्धि में दो वर्णों का मेल होता है।
- (II) समास में पदों के प्रत्यय समाप्त कर दिये जाते हैं; किन्तु सन्धि के लिए दो वर्णों के मेल और विकार की गुंजाइश रहती है।
- (III) सन्धि के तोड़ने को 'विच्छेद' कहते हैं; जबकि समास का 'विग्रह' होता है।
- (IV) हिन्दी में सन्धि केवल तत्सम पदों में होती है, जबकि समास संस्कृत तत्सम, हिन्दी, उर्दू हर प्रकार के पदों में होता है।

पद प्रधानता के आधार पर समास

प्रधानता	समास
पूर्वपद प्रधान	अव्ययीभाव समास
उत्तरपद प्रधान	तत्पुरुष समास, द्विगु समास, कर्मधारय समास
दोनों पद प्रधान	द्वन्द्व समास
अन्य पद प्रधान	बहुव्रीहि समास

पूर्वपद- समास की क्रिया में भाग लेने वाले पहले पद को पूर्वपद कहते हैं; **जैसे-** जलधारा = जल की धारा। इसमें जल पूर्वपद है।

उत्तरपद- समास का क्रिया में भाग लेने वाले दूसरे पद को उत्तर पद कहते हैं; **जैसे-** जलधारा = जल की धारा। इसमें 'धारा' उत्तरपद है।

समस्त पद या सामासिक पद- समास के नियमों से निर्मित शब्द सामासिक शब्द कहलाता है। इसे 'समस्तपद' भी कहते हैं। समास होने के बाद विभक्तियों के चिह्न (परसर्ग) लुप्त हो जाते हैं; जैसे- जलधारा = जल की धारा। इसमें 'जलधारा' समस्त या सामासिक पद है।

विग्रह- सामासिक शब्दों के बीच के संबंधों को स्पष्ट करना समास विग्रह कहलाता है। **जैसे-** 'जलधारा = जल की धारा में 'जल की धारा' समस्त पद है।

समास के प्रकार-

1. अव्ययीभाव समास
2. बहुव्रीहि समास
3. तत्पुरुष समास
4. कर्मधारय समास
5. द्वन्द्व समास
6. द्विगु समास

नोट:- कुछ स्थलों पर द्विगु समास और कर्मधारय समास, तत्पुरुष समास के भेद माने जाते हैं।

(1) अव्ययी भाव समास- जिस समास के पूर्वपद की प्रधानता हो और सामासिक पद अव्यय हो जाय तथा समास का पूरा पद क्रियाविशेषण अव्यय हो जाता हो, वह अव्ययीभाव समास कहलाता है। इस समास का पहला पद आ, अनु, यथा, प्रति, भर, यावत्, आदि से प्रारम्भ होता है; जैसे- आमरण, अनुसार, यथासाध्य, प्रतिदिन, भरपेट, यावज्जीवन।

समास	समास-विग्रह
प्रतिदिन	दिन-दिन
यथाविधि	विधि के अनुसार
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
आजन्म	जन्म तक
आमरण	मरण तक
यावज्जीवन	जब तक जीवन है
व्यर्थ	बिना अर्थ के
प्रत्यंग	अंग-अंग
निर्भय	बिना भय का
भरपेट	पेट भरकर

समक्ष	अक्षि के सामने
निधङ्क	बिना धङ्क के
बखूबी	खूबी के साथ
यथार्थ	अर्थ के अनुसार
बेकाम	बिना काम का
परोक्ष	अक्षि के परे

(2) तत्पुरुष समास- तत्पुरुष समास में अन्तिम पद प्रधान होता है विभक्ति का लिंग, वचन दूसरे पद के अनुसार होता है और दोनों पदों के बीच का कारक चिह्न का लोप हो जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं; **जैसे-** गगनचुम्बी = गगन को चूमने वाला, गृहागत = गृह को आगत, स्वर्ग प्राप्त = स्वर्ग को प्राप्त आदि।

विभक्ति नामों के आधार पर तत्पुरुष समास के भेद:-

विभक्ति के आधार पर तत्पुरुष के निम्न 6 भेद होते हैं-

- (i) कर्म तत्पुरुष
- (ii) करण तत्पुरुष
- (iii) सम्प्रदान तत्पुरुष
- (iv) अपादान तत्पुरुष
- (v) संबंध तत्पुरुष
- (vi) अधिकरण तत्पुरुष

नोट:- विभक्तियों के नाम के आधार पर समास के भेद में कर्ता और संबोधन विभक्ति की गणना नहीं होती है।

(i) कर्म तत्पुरुष- वह समास जिसमें कारक चिह्न 'को' का लोप हुआ हो, कर्म तत्पुरुष कहलाता है; **जैसे-** पाकिटमार, गृहागत, स्वर्ग प्राप्त।

समास	समास विग्रह
कष्टापन्न	कष्ट को आपन्न
स्वर्ग प्राप्त	स्वर्ग को प्राप्त
गृहागत	गृह को आगत
चिड़ीमार	चिड़ियाँ को मारने वाला
मुँहतोड़	मुँह को तोड़ने वाला
स्वर्ग प्राप्त	स्वर्ग को प्राप्त
रोजगारोन्मुख	रोजगार को उन्मुख

(ii) करण तत्पुरुष- वह समास जिसमें कारक चिह्न 'से, के द्वारा' का लोप हुआ हो करण तत्पुरुष कहलाता है; **जैसे-** मदमाता, रसभरा, प्रेमासक्ति, तुलसीकृत।

समास	समास विग्रह
रसभरा	रस से भरा
रोगपीड़ित	रोग से पीड़ित
दुःखार्त	दुःख से आर्त
मदान्ध	मद से अन्ध
शोकार्त	शोक से आर्त
कामचोर	काम से चोर
मुँहचोर	मुँह से चोर

शोकाकुल	शोक से आकुल
तुलसीकृत	तुलसी द्वारा कृत
ईश्वर दत्त	ईश्वर द्वारा दिया गया
पदललित	पद से ललित

(iii) **सम्प्रदान तत्पुरुष-** वह समास जिनमें कारक चिह्न 'के लिए' का लोप हुआ हो, सम्प्रदान तत्पुरुष कहलाता है; **जैसे-** रसोईघर, मार्गव्यय, स्नानघर।

समास	समास विग्रह
रसोई घर	रसोई के लिए घर
मार्गव्यय	मार्ग के लिए व्यय
स्नानघर	स्नान के लिए घर
शिवार्पण	शिव के लिए अर्पण
मालगोदाम	माल के लिए गोदाम
देशभक्ति	देश के लिए भक्ति
राहखर्च	राह के लिए खर्च
गोशाला	गो के लिए शाला
विधानसभा	विधान के लिए सभा
प्रौढ़शिक्षा	प्रौढ़ के लिए शिक्षा

(iv) **अपादान तत्पुरुष-** वह समास जिसमें कारक चिह्न 'से' (अलग) का लोप हुआ हो अपादान तत्पुरुष कहलाता है; **जैसे-** बलहीन, पदभ्रष्ट मायारिक्त, पापमुक्त आदि।

समास	समास विग्रह
बलहीन	बल से हीन
पद भ्रष्ट	पद से भ्रष्ट
मायारिक्त	माया से रिक्त
पापमुक्त	पाप से मुक्त
नेत्रहीन	नेत्र से हीन
ईश्वरविमुख	ईश्वर से विमुख
लोकोत्तर	लोक से उत्तर (परे)
जन्मांध	जन्म से अन्धा
पदच्युत	पद से च्युत
व्ययमुक्त	व्यय से मुक्त

(v) **सम्बंध तत्पुरुष-** वह समास जिसमें कारक चिह्न 'का, की, के' का लोप हुआ हो सम्बंध तत्पुरुष कहलाता है; **जैसे-** देवालय, श्रमदान, राजभवन, मनःस्थिति।

समास	समास विग्रह
अन्नदान	अन्न का दान
देवालय	देव का आलय
श्रमदान	श्रम का दान
राजभवन	राजा का भवन
आनन्दाश्रम	आनन्द का आश्रम
रामायण	राम का अयन
खरारि	खर का अरि
रामोपासक	राम का उपासक

देशसेवा	देश की सेवा
राजगृह	राजा का गृह
सभापति	सभा का पति
विद्यासागर	विद्या का सागर
गुरुसेवा	गुरु की सेवा
पुस्तकालय	पुस्तक का आलय
हिमालय	हिम का आलय
राष्ट्रपति	राष्ट्र का पति
ग्रामोद्धार	ग्राम का उद्धार
सेनानायक	सेना का नायक

(vi) **अधिकरण तत्पुरुष-** वह समास जिसमें कारक चिह्न 'में, पर' का लोप हो अधिकरण तत्पुरुष कहलाता है; **जैसे-** पुरुषसिंह, आत्मनिर्भर, शरणागत आदि।

समास	समास विग्रह
पुरुष सिंह	पुरुषों में सिंह
आत्मनिर्भर	आत्म पर निर्भर
शरणागत	शरण में आगत
पुरुषोत्तम	पुरुषों में उत्तम
ग्रामवास	ग्राम में वास
शास्त्रप्रवीण	शास्त्रों में प्रवीण
क्षत्रियाधम	क्षत्रियों में अधम
मुनिश्रेष्ठ	मुनियों में श्रेष्ठ
नरोत्तम	नरों में उत्तम
ध्यानमग्न	ध्यान में मग्न
दानवीर	दान में वीर
गृहप्रवेश	गृह में प्रवेश

3. **कर्मधारय समास-** जिस समास के पूर्वपद (प्रथम पद) विशेषण तथा उत्तर पद (अन्तिम पद) विशेष्य हो, उत्तर पद प्रधान हो और लिंग, वचन में समान हों वहाँ 'कर्मधारय समास' होता है।

कर्मधारय समास के भेद- कर्मधारय समास के निम्न चार भेद हैं।

(i) विशेषण पूर्वपद कर्मधारय

(ii) विशेष्य पूर्वपद कर्मधारय

(iii) विशेषणोभयपद कर्मधारय

(iv) विशेष्योभयपद कर्मधारय

(i) **विशेषण पूर्वपद-** इस समास में पहला पद विशेषण होता है जैसे- पीताम्बर, परमेश्वर, नीलगाय।

समास	समास विग्रह
नवयुवक	नव युवक
सद्भावना	सत् भावना
छोटभैये	छोटे भैये
कापुरुष	कुत्सित पुरुष
कदन्न	कुत्सित अन्न

नीलोत्पल	नीला उत्पल
महापुरुष	महान् पुरुष
पीताम्बर	पीत अम्बर
सन्मार्ग	सत् मार्ग
परमेश्वर	परम ईश्वर
सज्जन	सत् जन
महाकाव्य	महान काव्य
महावीर	महान वीर
महात्मा	महान आत्मा
प्रिसखा	प्रिय सखा

(ii) **विशेष्य पूर्वपद-** इस समास में पहला पद विशेष्य होता है; **जैसे-** कुमारी, श्रमणा।

समास	समास विग्रह
कुमारी	क्वारी लड़की
श्रमणा	संयास ग्रहण की हुई
श्यामसुन्दर	श्याम जो सुन्दर है
मदनमनोहर	मदन जो मनोहर है
जनकखेतिहर	जनक खेतिहर (खेती करने वाला)

नोट- इस प्रकार के समास बहुलतः संस्कृत में मिलते हैं।

विशेषणोभयपद- इस समास में दोनों पद विशेषण होते हैं; **जैसे-** शीतोष्ण, लालपीला, भलाबुरा।

समास	समास विग्रह
नीलपीत	नीला-पीला
शीतोष्ण	शीत-उष्ण
कृताकृत	किया- बेकिया
लालपीला	लाल पीला
भलाबुरा	भला-बुरा

(iii) **विशेष्योभयपद-** इस समास में दोनों पद विशेष्य होता है; **जैसे-** आमगाछ या आम्रवृक्ष = आम्र है जो वृक्ष, वापसदम्पति = वापस है जो दम्पति।

4. द्विगु समास- जिस समास का पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण हो उसे द्विगु समास कहते हैं। इसमें समाहार अथवा समूह का बोध होता है; **जैसे-** त्रिलोक, पंचवटी, त्रिभुवन।

समास	समास विग्रह
त्रिलोक	तीन लोकों का समाहार
पंचवटी	पाँच वटों का समाहार
पसेरी	पाँच सेरों का समाहार
त्रिकाल	तीन कालों का समाहार
चवन्नी	चार आनों का समाहार
नवग्रह	नौ ग्रहों का समाहार
त्रिगुण	तीन गुणों का समूह

अष्टाध्यायी	अष्ट (आठ) अध्यायों का समाहार
त्रिपाद	तीन पदों का समाहार
चौराहा	चार राहों का समाहार
त्रिफला	तीन फलों का समाहार
नवरत्न	नव रत्नों का समाहार
सतसई	सात सौ का समाहार
पंचपात्र	पाँच पात्रों का समाहार
चतुर्वेद	चार वेदों का समाहार
षट्स	षट् (छह) रसों का समाहार

5. बहुव्रीहि समास- समास में आये हुए पद जब किसी अन्य पद की विशेषता प्रगट करें तो वहाँ बहुव्रीहि समास होता है। इस समास में अन्य पद की प्रधानता होती है। पूरा समस्त पद अन्य पद का विशेषण होता है; **जैसे-** पीताम्बर, लम्बोदर, त्रिनेत्र, नीलकण्ठ।

बहुव्रीहि समास के भेद- बहुव्रीहि समास के निम्न चार भेद होते हैं-

(i) समानाधिकरण बहुव्रीहि

(ii) व्यधिकरण बहुव्रीहि

(iii) तुल्ययोग बहुव्रीहि

(iv) व्यतिहार बहुव्रीहि

(i) **समानाधिकरण बहुव्रीहि-** इसमें सभी पद प्रथमा, अर्थात् कर्ताकारक विभक्ति के होते हैं; किन्तु समस्तपद द्वारा जो अन्य उक्त होता है वह किसी भी विभक्ति में उक्त हो सकता है; **जैसे-** प्राप्नोदक, निर्धन, मिठबोला, नेकनाम, सतखण्ड।

समास	समास विग्रह
पीताम्बर	पीला है जिसका अम्बर अर्थात्- कृष्ण
त्रिलोचन	तीन हैं लोचन जिसके अर्थात् शंकर
लम्बोदर	लम्बा है उदर जिसका अर्थात् गणेश
नीलकंठ	नीला है कंठ जिसका अर्थात् शंकर
दशानन	दश हैं आनन जिसके अर्थात् रावण
त्रिनेत्र	तीन हैं नेत्र जिसके अर्थात् शंकर
सुलोचना	सुन्दर है लोचन जिसके अर्थात् मेघनाथ की पत्नी
दुरात्मा	बुरी आत्मावाला (दुष्ट)
श्वेतांबर	श्वेत हैं जिसके अंबर (वस्त्र) अर्थात् सरस्वती
मृत्युंजय	मृत्यु को जीतने वाला अर्थात् शिव
विषधर	विष को धारण करने वाला अर्थात् सर्प

(ii) **व्यधिकरण बहुव्रीहि-** इस समास में पहला पद तो प्रथमा विभक्ति या कर्ताकारक की विभक्ति के रूप में होता है तथा बाद वाला पद सम्बन्ध या अधिकरण कारक का हुआ करता है; **जैसे-** वीणापाणि, शूलपाणि, गिरिधर।

समास	समास विग्रह
चन्द्रशेखर	चन्द्र है सिर पर जिसके अर्थात् शंकर
वीणापाणि	वीणा है पाणि में जिसके अर्थात् सरस्वती
शूलपाणि	शूल है पाणि में जिसके अर्थात् शंकर
गिरिधर	गिरि को धारण किया है जिसने अर्थात् कृष्ण
चन्द्रमौली	चन्द्र है मौलि (मस्तक) पर जिसके अर्थात् शंकर
चन्द्रभाल	चन्द्र है भाल पर जिसके अर्थात् शंकर

(iii) **तुल्ययोग बहुव्रीहि या सहबहुव्रीहि** - इस समास में पहला 'सह' होता है। 'सह' का अर्थ 'साथ' होता है पर समास होने पर 'सह' की जगह 'स' रह जाता है; **जैसे-** सबल, सपरिवार, सचेत, सदेह।

समास	विग्रह
सचेत	चेत (चेतना) के साथ है जो
सबल	बल के साथ है जो
सपरिवार	परिवार के साथ है जो
सदेह	देह के साथ है जो
सशरीर	शरीर के साथ है जो

(iv) **व्यतिहार बहुव्रीहि-** इस समास में घात-प्रतिघात होता प्रतीत होता है; **जैसे-** मुक्का-मुक्की, खींचातानी, मादामाटी, डण्डाडण्डी।

समास	समास विग्रह
मुक्का मुक्की	मुक्के मुक्के से जो लड़ाई हुई
लाठालाठी	लाठी-लाठी से जो लड़ाई हुई
बाताबाती	बात-बात से जो लड़ाई हुई
डण्डाडण्डी	डण्डे-डण्डे से जो लड़ाई हुई
धक्कामुक्की	धक्का-मुक्की से जो लड़ाई हुई

कर्मधारय और बहुव्रीहि में अन्तर- कर्मधारय समास में प्रथम (पहला) पद द्वितीय पद का विशेषण होता है जबकि बहुव्रीहि समास में प्रथम और द्वितीय दोनों पद मिलकर अपने से अलग किसी तीसरे (अन्य) के विशेषण होते हैं; **जैसे-**

पीताम्बर = पीत + अम्बर (पीला कपड़ा)- **कर्मधारय समास**

पीताम्बर = पीला है अम्बर जिसका अर्थात् विष्णु, **बहुव्रीहि समास**

नोट- समास विग्रह के अन्तर से ही समझा जा सकता है कि कौन कर्मधारय समास है और कौन बहुव्रीहि समास।

द्विगु और बहुव्रीहि में अन्तर- द्विगु समास का पहला पद हमेशा संख्यावाचक विशेषण होता है और दूसरा पद विशेष्य होता है, जबकि बहुव्रीहि समास में प्रथम और द्वितीय दोनों पद मिलकर अपने से अलग किसी अन्य के विशेषण होते हैं; **जैसे-**

चतुर्भुज- चार भुजाओं का समूह- (द्विगु समास)

चतुर्भुज- चार हैं भुजाएँ जिसकी अर्थात् विष्णु (बहुव्रीहि समास)

6. द्वन्द्व समास- इस समास के सभी पद (दोनों पद) प्रधान होते हैं; **जैसे-** अन्न-जल, राजा-रानी, लेन-देन।

द्वन्द्व समास के तीन भेद होते हैं-

(i) इतरेतर द्वन्द्व

(ii) समाहार द्वन्द्व

(iii) वैकल्पिक द्वन्द्व

(i) **इतरेतर द्वन्द्व-** ऐसे द्वन्द्व समास जिसमें और से सभी पद जुड़े हुए हों और पृथक् (इतर) अस्तित्व रखते हो, इतरेतर द्वन्द्व कहलता है; **जैसे-** राम-कृष्ण, भरत-शत्रुहन, भाई-बहन।

समास	समास विग्रह
राम-कृष्ण	राम और कृष्ण
गाय-बैल	गाय और बैल
भाई-बहन	भाई और बहन
माँ-बाप	माँ और बाप
बेटा-बेटी	बेटा और बेटी
राजा-रानी	राजा और रानी
सीता-राम	सीता और राम
राम-लखन	राम और लखन

(ii) **समाहार द्वन्द्व-** 'समाहार' का अर्थ है समष्टि या समूह। जब दोनों पद 'और' समुच्चयबोधक से जुड़ने के बाद भी अलग-अलग अस्तित्व न रखें, बल्कि समूह का बोध कराये तो वहाँ समाहार द्वन्द्व होता है; **जैसे-** दाल-रोटी, हाँथ-पाँव, अन्न-जल।

समास	समास विग्रह
दाल-रोटी	दाल और रोटी (भोजन के सभी मुख्य पदार्थ)
आहार-निद्रा	आहार और निद्रा (केवल आहार और निद्रा ही नहीं बल्कि इसी तरह की और भी बातें)
हाँथ-पाँव	हाँथ और पाँव (हाँथ और पाँव तथा शरीर के दूसरे अंग भी)
कपड़ा-लत्ता	कपड़ा और लत्ता (कपड़ा और लत्ता तथा अन्य वस्त्र भी)
गाय-भैंस	गाय और भैंस (गाय और भैंस तथा अन्य मवेशी)
मोटा-ताजा	मोटा और ताजा (मोटा और ताजा तथा दृष्ट-पुष्ट)

वैकल्पिक द्वन्द्व- ऐसे द्वन्द्व समास जिसके बीच में 'या' अथवा अव्यय छिपे हों, उसे वैकल्पिक द्वन्द्व कहते हैं। इस समास में सामान्यतः विपरीतार्थक शब्दों का योग रहता है; जैसे- पाप-पुण्य, धर्माधर्म, भला-बुरा, थोड़ा-बहुत।

समास	समास विग्रह
पाप-पुण्य	पाप या पुण्य
धर्माधर्म	अर्ध अथवा अधर्म
भला- बुरा	भला या बुरा
थोड़ा- बहुत	थोड़ा या बहुत
लाभ-हानि	लाभ या हानि
ठण्डा- गरम	ठण्डा अथवा गर्म

विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

- 'सूर्योदय' शब्द का सन्धि-विच्छेद है-
(a) सूर्यो + दय (b) सूर्य + उदय
(c) सूर्यः + उदय (d) सूर्ये + उदय
UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016
उत्तर : (b)
- 'महोर्मि' का सन्धि-विच्छेद है-
(a) महत् + उर्मि (b) महा + उर्मि
(c) महा + ऊर्मि (d) महत् + मर्मि
UP TET - Ist Paper (I-V) Dec. 2016
उत्तर : (c)
- 'महोत्सव' का सही सन्धि-विच्छेद क्या है?
(a) महा + उत्सव (b) महो + उत्सव
(c) महोत् + सव (d) महे + उत्सव
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Dec. 2016
उत्तर : (a)
- 'तथैव' शब्द का सन्धि-विच्छेद है
(a) तथ + एव (b) तथे + एव
(c) तथा + एव (d) तथा + एव
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016
उत्तर : (d)
- 'लघूर्मि' में कौन-सी सन्धि है?
(a) अयादि स्वर सन्धि (b) दीर्घ स्वर सन्धि
(c) वृद्धि स्वर सन्धि (d) यण स्वर सन्धि
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016
उत्तर : (b)
- 'निर्गुण' का सन्धि-विच्छेद होगा -
(a) निर + गुण (b) नि + गुण
(c) निः + गुण (d) निर + गूण
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2011
उत्तर : (c)

- निम्नलिखित शब्द का सन्धि-विच्छेद क्या होगा?
भानूदय
(a) भानु + उदय (b) भानू + उदय
(c) भानू + ऊदय (d) भानु + ऊदय
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2011
उत्तर : (a)
- 'जगन्नाथ' किस सन्धि का उदाहरण है?
(a) व्यंजन सन्धि (b) विसर्ग सन्धि
(c) दीर्घ स्वर सन्धि (d) यण स्वर सन्धि
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2011
उत्तर : (a)
- पवन का सन्धि-विच्छेद है-
(a) प + अवन (b) प + वन
(c) पो + अन (d) पौ + अन
Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) July 2011
UP TET - Ist Paper (I-V) June 2013-Nov-11
उत्तर : (c)
- पुनर्जन्म का सन्धि-विच्छेद है-
(a) पुनर + जन्म (b) पुः + नरजन्म
(c) पुनः + जन्म (d) पुनर् + आजन्म
UP TET - Ist Paper (I-V) June 2013
उत्तर : (c)
- 'इत्यादि' शब्द में कौन-सी सन्धि है?
(a) यण् सन्धि (b) वृद्धि सन्धि
(c) गुण सन्धि (d) दीर्घ सन्धि
UP TET - Ist Paper (I-V) June 2013
UP TET - Ist Paper (I-V) Feb 2014
उत्तर : (a)
- 'मनोरथ' का सन्धि-विच्छेद होगा-
(a) मनः + रथ (b) मन + ओरथ
(c) मनो + रथ (d) मन + रथ
UP TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2011
उत्तर : (a)
- 'विद्यार्थी' उदाहरण है-
(a) वृद्धि स्वर सन्धि का (b) गुण स्वर सन्धि का
(c) व्यंजन सन्धि का (d) दीर्घ स्वर सन्धि का
UP TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2011
उत्तर : (d)
- 'दिग्भ्रम' उदाहरण है -
(a) विसर्ग सन्धि का (b) अयादि स्वर सन्धि का
(c) व्यंजन सन्धि का (d) यण स्वर सन्धि का
UP TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2011
उत्तर : (c)
- विद्या + आलय = विद्यालय शब्द में है-
(a) गुण स्वर सन्धि (b) वृद्धि स्वर सन्धि
(c) यण स्वर सन्धि (d) दीर्घ स्वर सन्धि
Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011
उत्तर : (d)

16. भगवद्भक्ति में सन्धि है—

- (a) विसर्ग सन्धि (b) स्वर सन्धि
(c) व्यंजन सन्धि (d) गुण स्वर सन्धि

Chhattisgarh TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

उत्तर : (c)

17. 'विद्यालय' शब्द में है—

- (a) स्वर सन्धि (b) व्यंजन सन्धि
(c) विसर्ग सन्धि (d) इनमें से कोई नहीं

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) July 2011

उत्तर : (a)

18. किस शब्द में 'गुण सन्धि' है?

- (a) सिन्धूर्मि (b) भारतेन्दु
(c) नारीश्वर (d) लोकेश्वर

Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011

उत्तर : (b)

19. 'वृक्षच्छाया' का सन्धि-विच्छेद होगा—

- (a) वृक्षः + छाया (b) वृक्षः + छाया
(c) वृक्षच् + छाया (d) वृक्ष + छाया

Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011

उत्तर : (d)

20. 'रीत्यनुसार' का सही सन्धि-विच्छेद है—

- (a) रीत्य + अनुसार (b) रीत + अनुसार
(c) रीति + अनुसार (d) रीत्य + नुसार

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) April 2016

उत्तर : (c)

21. 'अन्वेषण' का सन्धि-विच्छेद होगा -

- (a) अन + वेषण (b) अनु + एषण
(c) अनु + एषण (d) अन् + वेषण

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Jan. 2011

उत्तर : (b)

22. 'महर्षि' शब्द में कौन-सी सन्धि है?

- (a) दीर्घ सन्धि (b) वृद्धि सन्धि
(c) गुण सन्धि (d) यण् सन्धि

Uttarakhand TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2013

उत्तर : (c)

23. 'उल्लास' का सन्धि-विच्छेद है—

- (a) उल + आस (b) उल्ल + आस
(c) उल् + लास (d) उत् + लास

Uttarakhand TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2013

उत्तर : (d)

24. 'गुडाकेश' का सन्धि-विच्छेद है -

- (a) गुडा + केश (b) गुडाके + ईश
(c) गुडाका + ईश (d) गुड + आकेश

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2013

उत्तर : (c)

25. 'हृषीकेश' की संधि है -

- (a) हृषी + केश (b) ऋषी + केश
(c) हृषीक + ईश (d) ऋषी + ईश

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (c)

26. किस शब्द का सन्धि-विच्छेद सही नहीं है?

- (a) प्र + ऊढ = प्रौढ (b) नी + ऊन = न्यून
(c) अम्बु + ऊर्मि = अम्बूर्मि (d) शची + इन्द्र = शचीन्द्र

Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (b)

27. विसर्ग सन्धि का उदाहरण है—

- (a) अतएव (b) विस्मरण
(c) उच्चारण (d) विसर्ग

Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (a)

28. 'तत् + शंकर' संधि विच्छेद से बनने वाला शब्द है—

- (a) तच्छंकर (b) तत्शंकर
(c) तच्छंकर (d) तत्संकर

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2015

उत्तर : (a)

29. 'पित्राज्ञा' शब्द का सही संधि विच्छेद है—

- (a) पित्र + आज्ञा (b) पित्रा + आज्ञा
(c) पितृ + आज्ञा (d) उपर्युक्त सभी

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2015

उत्तर : (c)

30. किस शब्द का सन्धि-विच्छेद शुद्ध नहीं है?

- (a) मात्रा + आनन्द = मात्रानन्द
(b) सदा + एव = सदैव
(c) पितृ + अनुमति = पित्रनुमति
(d) परम + औदार्य = परमौदार्य

Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (a)

31. 'ऋणमुक्त' समस्त पद का विग्रह है—

- (a) ऋण + मुक्त (b) ऋण की मुक्ति
(c) ऋण और मुक्त (d) ऋण से मुक्त

Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (d)

32. यण् सन्धि का उदाहरण नहीं है—

- (a) स्वल्प (b) स्वच्छ
(c) स्वागत (d) स्वांग

Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (d)

33. किस शब्द में विसर्ग सन्धि नहीं है?

- (a) अनुस्वार (b) मनोनुकूल
(c) मनस्ताप (d) पयोद

Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (a)

34. 'यशः + दा' का संधि युक्त पद होगा—

- (a) जसोदा (b) यशोदा
(c) यशुदा (d) यशःदा

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (b)

35. यथाशक्ति में समास है-

- (a) अव्ययीभाव (b) तत्पुरुष
(c) द्विगु (d) कर्मधारय

UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (a)

36. चराचरम् (जगत) में कौन सा समास है?

- (a) तत्पुरुष (b) द्वन्द्व
(c) बहुव्रीहि (d) कर्मधारय

UP TET - Ist Paper (I-V) Dec. 2016

उत्तर : (b)

37. 'चौमासा' में समास है-

- (a) द्विगु (b) द्वन्द्व
(c) कर्मधारय (d) तत्पुरुष

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Dec. 2016

उत्तर : (a)

38. 'अजातशत्रु' में कौन-सा समास है?

- (a) तत्पुरुष (b) द्वन्द्व
(c) कर्मधारय (d) बहुव्रीहि

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (d)

39. 'चौराहा' कौन सा समास है?

- (a) बहुव्रीहि (b) द्वन्द्व
(c) द्विगु (d) तत्पुरुष

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2011

उत्तर : (c)

40. 'यथाशीघ्र' शब्द का समास बताइए—

- (a) अव्ययीभाव (b) द्वन्द्व
(c) कर्मधारय (d) तत्पुरुष

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2011

उत्तर : (a)

41. 'पंकज' में कौन-सा समास है?

- (a) द्वन्द्व (b) द्विगु
(c) कर्मधारय (d) बहुव्रीहि

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Oct. 2017

उत्तर : (d)

42. 'उपकूल' में कौन-सा समास है?

- (a) द्वन्द्व (b) द्विगु
(c) अव्ययीभाव (d) तत्पुरुष

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (c)

43. द्विगु समास का उदाहरण है—

- (a) माता-पिता (b) यथाशक्ति
(c) नवग्रह (d) पीताम्बर

UP TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2011

उत्तर : (c)

44. 'समास' का अर्थ है—

- (a) संक्षेप (b) विच्छेद
(c) विस्तार (d) नवीन अर्थ

UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (a)

45. 'लिखने-पढ़ने' में कौन-सा समास है?

- (a) द्विगु (b) द्वन्द्व
(c) तत्पुरुष (d) कर्मधारय

Bihar TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (b)

46. 'अष्टाध्यायी' समास है —

- (a) द्वन्द्व (b) द्विगु
(c) तत्पुरुष (d) कर्मधारय

Bihar TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

उत्तर : (b)

47. निम्नांकित शब्दों में से 'सम्बन्ध बहुव्रीहि' सामासिक शब्द है—

- (a) दशानन (b) लुप्तपद
(c) प्राप्तोदक (d) उपहतपशु

Chhattisgarh TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

उत्तर : (a)

48. 'जनतन्त्र' शब्द निम्नांकित में से किस समास-प्रकार के अन्तर्गत है?

- (a) सम्प्रदान तत्पुरुष समास (b) कर्म तत्पुरुष समास
(c) सम्बन्ध तत्पुरुष समास (d) करण तत्पुरुष समास

Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (c)

49. 'पॉकिटमार' शब्द में समास है—

- (a) अव्ययीभाव (b) तत्पुरुष
(c) कर्मधारय (d) द्वन्द्व

Chhattisgarh TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

उत्तर : (b)

50. जब किसी समास में दोनों शब्द प्रधान हों तो उसको कहते हैं—

- (a) द्वन्द्व समास (b) द्विगु समास
(c) प्रधान समास (d) तत्पुरुष समास

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) July 2011

उत्तर : (a)

51. जिसमें पहला पद संख्यावाचक हो और जो किसी समूह विशेष का बोध कराए उसे कहते हैं—

- (a) कर्मधारय समास (b) द्वन्द्व समास
(c) अव्ययीभाव समास (d) द्विगु समास
Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) July 2011
उत्तर : (d)
52. द्वन्द्व समास है—
(a) लम्बोदर (b) अंधकूप
(c) नर-नारी (d) शरणागत
Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) July 2011
उत्तर : (c)
53. 'अनुरूप' समस्त पद में कौन-सा समास है?
(a) तत्पुरुष (b) कर्मधारय
(c) अव्ययीभाव (d) बहुव्रीहि
Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) April 2016
उत्तर : (c)
54. कौन-सा शब्द अव्ययी भाव समास का उदाहरण है?
(a) नवग्रह (b) गाँठकर
(c) महात्मा (d) आमरण
Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Jan. 2011
उत्तर : (d)
55. 'चन्द्रशेखर' शब्द में समास है—
(a) तत्पुरुष (b) द्विगु
(c) बहुव्रीहि (d) कर्मधारय
Uttarakhand TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2013
उत्तर : (c)
56. 'निर्विवाद' में समास है —
(a) कर्मधारय (b) अव्ययीभाव
(c) तत्पुरुष (d) बहुव्रीहि
Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2013
उत्तर : (b)
57. निम्न में तत्पुरुष समास का उदाहरण है -
(a) एकतरफा (b) धनंजय
(c) आत्मनिर्भर (d) वक्रतुण्ड
Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2013
उत्तर : (c)

58. 'पतझड़' में समास है -
(a) करण तत्पुरुष (b) कर्म तत्पुरुष
(c) बहुव्रीहि (d) द्वन्द्व
Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2011
उत्तर : (c)
59. निम्न में से किस शब्द में बहुव्रीहि समास है?
(a) चौराहा (b) पंसेरी
(c) शताब्दी (d) पंजाब
Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014
उत्तर : (d)
60. 'देहलता' इस सामासिक पद में कौन-सा समास है?
(a) कर्मधारय (b) द्विगु
(c) अव्ययीभाव (d) द्वन्द्व
Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2015
उत्तर : (a)
61. बहुव्रीहि समास का उदाहरण नहीं है —
(a) पंसेरी (b) बारहसिंगा
(c) कुसुमायुध (d) दीर्घ-बाहु
Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014
उत्तर : (b)
62. 'रघुपति' शब्द किस समास का उदाहरण है?
(a) द्विगु (b) द्वन्द्व
(c) बहुव्रीहि (d) कर्मधारय
Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014
उत्तर : (c)
63. स्त्री-पुरुष में प्रयुक्त समास है —
(a) अव्ययीभाव (b) कर्मधारय
(c) द्वन्द्व (d) द्विगु
Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014
उत्तर : (c)
64. निम्नलिखित में से 'द्विगु समास' का उदाहरण है—
(a) त्रिभुवन (b) त्रिनेत्र
(c) एकदन्त (d) दशानन
Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2012
उत्तर : (a)

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

- दो वर्णों के मेल से होने वाले विकार या परिवर्तन को कहते हैं—
(a) संधि (b) समास
(c) उपसर्ग (d) प्रत्यय
- दीर्घ सन्धि, गुण सन्धि, वृद्धि सन्धि, यण् सन्धि व अयादि सन्धि, सन्धि के किस मूल भेद के अन्तर्गत सन्निहित हैं?
(a) व्यंजन सन्धि (b) स्वर सन्धि
(c) विसर्ग सन्धि (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं
- सही सन्धि विच्छेद का चयन कीजिये?
(a) वि + द्यार्थी (b) विद्या + अर्थी
(c) विद्या + आर्थी (d) विद्या + र्थी
- “महर्षि” का सही संधि विच्छेद चुनें?
(a) मम + ऋषि (b) महः + अर्शी
(c) महा + ऋषि (d) महर + शिः
- मतैक्य किस संधि का उदाहरण है?
(a) गुण संधि (b) यण संधि
(c) वृद्धि संधि (d) व्यंजन संधि

6. पितृ + अनुमति का सही संधिपद है—
 (a) पित्रानुमति (b) पित्रीनुमति
 (c) पित्रनुमति (d) पित्रानूमति
7. 'अत्यधिक' का शुद्ध संधि-विच्छेद क्या है?
 (a) अत्य + धिक (b) अति + अधिक
 (c) अती + अधिक (d) अत्यधि + क
8. 'अन्वेषण' का शुद्ध सन्धि -विच्छेद है -
 (a) अन्वेष + ण (b) अन्वे + षण
 (c) अनु + वेषण (d) अनु + एषण
9. 'पावन' शब्द का सन्धि-विच्छेद होगा :
 (a) पा + वन (b) पो + वन
 (c) पौ + वन (d) प + वन
10. 'तल्लीन' शब्द में सही उपसर्ग का विच्छेद है -
 (a) तल् + लीन (b) तद् + लीन
 (c) तत + लीन (d) तत् + लीन
11. 'उच्छ्वास' शब्द का संधिविच्छेद होगा :
 (a) उत् + श्वास (b) उत + च्वास
 (c) उ + च्छ्वास (d) उच्छ + वास
12. 'यशोदा' में प्रयुक्त संधि का नाम है -
 (a) स्वर (b) व्यंजन
 (c) विसर्ग (d) इनमें से कोई नहीं
13. 'गौः + चरति' की सन्धि है-
 (a) गोस्वरति (b) गौचरति
 (c) गौश्चरति (d) गौहचरति
14. तत्पुरुष समास में 'तत्पुरुष' का शब्दार्थ क्या होता है?
 (a) मेरा पुरुष (b) उस का पुरुष
 (c) जिस का पुरुष (d) किस का पुरुष
15. 'महाजन' शब्द में समास है—
 (a) कर्मधारय समास (b) द्वन्द्व समास
 (c) द्विगु समास (d) अव्ययीभाव समास
16. नीलोत्पलम् में कौन सा समास है?
 (a) कर्मधारय (b) बहुव्रीहि
 (c) अव्ययीभाव (d) तत्पुरुष
17. 'युधिष्ठिर' किस समास का समस्तपद है?
 (a) कर्मधारय (b) अधिकरण तत्पुरुष
 (c) अलुक् तत्पुरुष (d) नञ् तत्पुरुष

18. कौन सा अधिकरण तत्पुरुष समास नहीं है।
 (a) पुरुषोत्तम (b) देशाटन
 (c) कुलश्रेष्ठ (d) धर्मघ्रष्ट
19. "आशातीत" में कौन-सा तत्पुरुष समास पाया जाता है?
 (a) अपादान (b) सम्प्रदान
 (c) सम्बन्ध (d) अधिकरण
20. "हस्तलिखित" में कौन-सा समास पाया जाता है?
 (a) अधिकरण तत्पुरुष (b) सम्बन्ध तत्पुरुष
 (c) करण तत्पुरुष (d) कर्म तत्पुरुष
21. 'राजपुत्र' में समास है—
 (a) द्विगु (b) द्वंद्व
 (c) अव्ययीभाव (d) तत्पुरुष
22. 'देशभक्ति' में समास है—
 (a) द्वंद्व (b) द्विगु
 (c) तत्पुरुष (d) अव्ययीभाव
23. कौन सा शब्द बहुव्रीहि समास के अन्तर्गत आता है
 (a) वीणापाणि (b) दुमाता
 (c) लालपीला (d) विद्याभ्यास
24. 'निर्दय' में समास है
 (a) कर्मधारय समास (b) द्वन्द्व समास
 (c) द्विगु समास (d) बहुव्रीहि समास
25. अव्ययीभाव समास का उदाहरण है :
 (a) पल - पल (b) अन्न - जल
 (c) अंत - अनंत (d) धर्मा - धर्म
26. 'रातोंरात' शब्द में समास है
 (a) तत्पुरुष (b) द्वन्द्व
 (c) अव्ययीभाव (d) कर्मधारय
27. 'प्रतिदिन' में समास है—
 (a) तत्पुरुष (b) अव्ययीभाव
 (c) कर्मधारय (d) द्वन्द्व
28. कतर ब्योंत में कौन सा समास है—
 (a) द्वन्द्व (b) द्विगु (c) तत्पुरुष (d) बहुव्रीहि
29. अष्टाध्यायी
 (a) बहुव्रीहि (b) द्विगु
 (c) कर्मधारय (d) तत्पुरुष
30. "सतसई" शब्द में समास का भेद बताइये?
 (a) कर्मधारय (b) द्विगु
 (c) तत्पुरुष (d) द्वन्द्व

उत्तरमाला

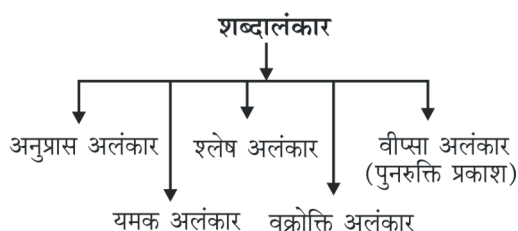
- | | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (a) | 2. (b) | 3. (b) | 4. (c) | 5. (c) | 6. (c) | 7. (b) | 8. (d) | 9. (c) | 10. (d) |
| 11. (a) | 12. (c) | 13. (c) | 14. (b) | 15. (a) | 16. (a) | 17. (c) | 18. (d) | 19. (a) | 20. (c) |
| 21. (d) | 22. (c) | 23. (a) | 24. (d) | 25. (a) | 26. (c) | 27. (b) | 28. (a) | 29. (b) | 30. (b) |

अलंकार एवं उसके भेद

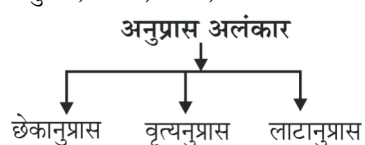
अलंकार



अलंकार- अलंकार का शाब्दिक अर्थ है- सजावट, शृंगार, आभूषण। 'अलंकरोति इति अलंकारः' अर्थात् जो अलंकृत करे, उसे अलंकार कहते हैं। जिस प्रकार आभूषण स्वर्ण से बनते हैं, उसी प्रकार अलंकार भी सुवर्ण (सुन्दर वर्णों) से बनते हैं।



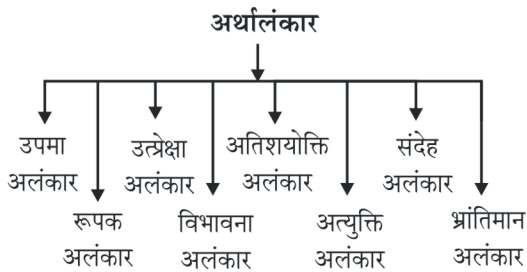
1. **शब्दालंकार-** जहाँ शब्दों के कारण- कविता में सौन्दर्य या चमत्कार उत्पन्न हो, वहाँ शब्दालंकार होता है। शब्दालंकार के मुख्यतः 4 अलंकार हैं- अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति।



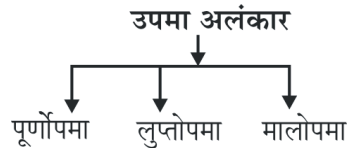
अलंकार	लक्षण	उदाहरण	स्पष्टीकरण
1. अनुप्रास अलंकार	जहाँ किसी पंक्ति के शब्दों में एक ही वर्ण एक से अधिक बार आता है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।	चारुचन्द्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल थल में।	यहाँ 'च' वर्ण की आवृत्ति हुई है।

i. छेकानुप्रास	जहाँ कोई वर्ण केवल दो बार आये, वहाँ छेकानुप्रास होता है।	इस कुरुणा कलित हृदय में अब विकल रागिनी बजली है।	यहाँ करुणा कलित में क्रमागत दो बार 'क' वर्ण आया है।
ii. वृत्त्यनुप्रास	जहाँ एक व्यंजन की आवृत्ति एक या अनेक बार हो, वहाँ वृत्त्यनुप्रास होता है।	सेस महेस गनेस दिनेस सुरेसहु जाहि निरन्तर गावें।	यहाँ 'स' वर्ण की आवृत्ति अनेक बार हुई है।
iii. लाटानुप्रास	लाटानुप्रास में ऐसे शब्द दुबारा आते हैं, जिनका सामान्य अर्थ तो एक ही होता है, किन्तु अन्वय करने से पूरी उक्ति का अर्थ बदल जाता है।	पूत सपूत तो क्यों धन संचिय? पूत कपूत तो क्यों धन संचिय?	यहाँ कई शब्द दो बार आये हैं- पूत, तो क्यों, धन संचिय। प्रथम बार सबका अन्वय सपूत के साथ है और दूसरी बार कपूत के साथ।
2. यमक अलंकार	जहाँ कोई शब्द एक से अधिक बार आवे और प्रत्येक स्थान पर भिन्न-भिन्न अर्थ दे, वहाँ यमक अलंकार होता है।	कनक-कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय। वा खाये बौराइ नर, या पाये बौराय।।	यहाँ 'कनक' शब्द दो बार आया है। पहले 'कनक' का अर्थ धतूरा और दूसरे 'कनक' का अर्थ है- सोना।

3. श्लेष अलंकार	जहाँ किसी शब्द के एक से अधिक अर्थ निकले, वहाँ श्लेष अलंकार होता है। श्लेष का अर्थ है- चिपका हुआ।	रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून। पानी गये न ऊबरै, मोती मानुष, चून।।	यहाँ पानी के तीन अर्थ हैं- मोती के साथ कान्ति मनुष्य के साथ इज्जत और चूने के साथ जल।
4. वक्रोक्ति अलंकार	जहाँ बात किसी एक आशय से कही जाय और सुनने वाला उससे भिन्न दूसरा अर्थ लगा दे, वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है।	को तुम हो? इत आए कहाँ? 'घनश्याम' हैं, तो कितहूँ बरसो।	

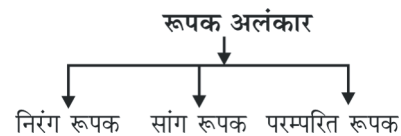


अर्थालंकार- जहाँ अर्थ के कारण कविता में रमणीयता आ जाती है, वहाँ अर्थालंकार होता है।



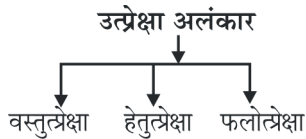
अलंकार	लक्षण	उदाहरण	स्पष्टीकरण
1. उपमा अलंकार	जहाँ एक वस्तु की समता दूसरी वस्तु से की जाय, वहाँ उपमा अलंकार होता है। ‘उप’ का अर्थ है- समीप। ‘मा’	नवल सुन्दर श्याम-शरीर की, सजल नीरद-सी कल कान्ति थी।	यहाँ कान्ति- उपमेय, नीरद- उपमान, सी- समानतावाचक पद, कल-समान धर्म, समानतावाचक पद- ज्यों, सम,

	का अर्थ है- मापना या तोलना।		सा, सी, तुल्य, नाई इत्यादि।
i. पूर्णोपमा	जहाँ उपमा के चारों अंग उपस्थित रहते हैं, तब 'पूर्णोपमा' होती है।	नील गगन सा शांत हृदय था हो रहा। मैं समझयो निरधार यह जग काँचौ काँच सौ।	यहाँ हृदय-उपमेय नील गगन-उपमान सा-समानतावाचक और शांत-समान धर्म
ii. लुप्तोपमा	जब उपमेय, उपमान, साधारण धर्म, समानतावाचक पद में से किसी एक की कमी रहती है तब लुप्तोपमा अलंकार होता है।	कमल के समान सुन्दर।	उपमान-कमल, वाचक शब्द-के समान, साधारण धर्म-सुन्दर उपमेय लुप्त है।
iii. मालोपमा	जब किसी की तुलना एक ही उपमान से की जाती है लेकिन जहाँ किसी उपमेय के लिए बहुत से उपमान लाए जाएँ और वहाँ उनकी एक माला-सी तैयार हो जाती है, वहाँ मालोपमा अलंकार होता है।	पन्नग-समूह में गरुड़ सदृश, तृण में विकराल कृशानु कृशानु सदृश। राणा भी रण में कूद पड़ा घन अन्धकार में भानु सदृश।।	यहाँ राणा- प्रताप एक उपमेय के लिए गरुड़, कृशानु (अग्नि) सभी का साधारण धर्म एक है- 'कूद पड़ना'।



अलंकार	लक्षण	उदाहरण
i. निरंग रूपक	निरंग रूपक में केवल उपमेय और उपमान का अभेद रहता है।	है शत्रु भी यों मग्न जिसके शौर्य- पारावार में।

ii. सांग रूपक	जहाँ उपमेय और उपमान के अंगों का भी आरोप हों, वहाँ सांग रूपक होता है।	उदित उदय गिरि-मंच पर रघुवर-बाल पतंग।
iii. परम्परित रूपक	परम्परित रूपक में एक रूपक के द्वारा दूसरे रूपक की पुष्टि होती है।	उदयो ब्रज नभ आइ यह हरि मुख मधुर मयंक।



3. उत्प्रेक्षा अलंकार	जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना की जाती है, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। मानो, मानहु, मनहु, मन जानो, जानहु, जनु, निश्चय, मेरे जान, इव आदि उत्प्रेक्षा के वाचक शब्द हैं।	सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात। मनौ नीलमनि सैल पर, आतप, परयौ प्रभात।।
4. विभावना अलंकार	जहाँ बिना कारण के ही कार्य हो जाय वहाँ विभावना अलंकार होता है।	(i) बिनु पद चलै सुनै बिनु काना। कर बिनु करम करे बिधि नाना।। (ii) आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु वाणी वकता बढ़ जोगी।।
5. असंगति अलंकार	जहाँ कव्रण कहीं हो और उसका कार्य कहीं, वहाँ असंगति अलंकार होता है।	दृग उरझत, टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति। परति गाँठ दुरजन हिये, दर्ई नई यह रीति।।
6. अतिशयोक्ति अलंकार	जहाँ किसी वस्तु का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जाय अथवा सीमा के बाहर की बात कही जाय, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।	बाँधा था विधु को किसने इन काली जंजीरो से। मणि वाले फणियों का मुख, क्यों भरा हुआ हीरों से।।

7. अत्युक्ति अलंकार	जहाँ किसी वस्तु का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन है और झूठा प्रतीत हो, वहाँ अत्युक्ति अलंकार होता है।	लखन सकोप वचन जब बोले। डगमगानि महि दिग्गज डोले।।
8. संदेह अलंकार	जहाँ किसी वस्तु को देखकर संशय बना रहे, निश्चय न हो वहाँ संदेह अलंकार होता है।	सारी बीच नारी है, कि नारी बीच सारी है, कि सारी ही की नारी है, कि नारी ही कि सारी है?
9. भ्रान्तिमान अलंकार	जहाँ समता के कारण किसी वस्तु को कुछ और ही समझकर उसका चमत्कार पूर्ण वर्णन किया जाए, वहाँ भ्रान्तिमान अलंकार होता है।	पाय महावर देन को नाइन बैठी आइ। पुनि पुनि जान महावरी एड़ी मीडति जाय।।

कुछ अन्य महत्वपूर्ण अर्थालंकार

1. अपह्नुति अलंकार	जहाँ सत्य बात का निषेध कर मिथ्या वस्तु का आरोप किया जाय, वहाँ अपह्नुति अलंकार होता है।	सावन की अंधी रजनी वारिद-मिस रोती आयी। यहाँ जल-वर्षा का निषेध कर, अश्रुवर्षा का आरोप है।
2. दृष्टांत अलंकार	जहाँ उपमेय और उपमान तथा उनके साधारण धर्मों में बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव हों, वहाँ दृष्टांत अलंकार होता है।	सठ सधुरहि सत संगति पाई। पारस परसि कुधातु सुहाई।।
3. उदाहरण अलंकार	जहाँ किसी बात के समर्थन में उदाहरण किसी वाचक शब्द के साथ दिया जाय, वहाँ उदाहरण अलंकार होता है।	वे रहीम नर धन्य है, पर उपकारी अंग। बाँटन वारे को लगै, ज्यों मेंहदी को रंग।।
3. उल्लेख अलंकार	जहाँ किसी वस्तु का अनेक प्रकार से वर्णन किया जाय, तब उल्लेख अलंकार होता है।	जाकी रही भावना जैसी। प्रभु मूरति देखी तिन तैसी।।

4.व्यतिरेक अलंकार	जहाँ उपमेय को उपमान से श्रेष्ठ बताया जाय और उसका कारण भी दिया जाय, वहाँ व्यतिरेक अलंकार होता है।	संत हृदय नवनीत समाना, कहा कविन पै कहत न जाना।
5.काव्यलिंग अलंकार	जहाँ किसी उक्ति के समर्थन, का कारण बताया जाय, वहाँ काव्यलिंग अलंकार होता है।	कनक-कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय। वा खाये बौरात नर, या पाये बौराय।।
6.समासोक्ति अलंकार	जहाँ प्रस्तुत से अप्रस्तुत का भी बोध है, वहाँ समासोक्ति अलंकार होता है।	कुमुदिनिहु प्रमुदित भई सँझ कलानिधि जोय।
7.विरोधाभास अलंकार	जब दो विरोधी पदार्थों का संयोग एक साथ दिखाया जाय, तब विरोधाभास अलंकार होता है। इसमें विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास होता है।	सुलगी अनुराग की आग वहाँ, जल से भरपूर तड़ाग जहाँ। (यहाँ जल और आग दो विरोधी पदार्थों। का संयोग एक साथ दिखाया गया है।)
8.दीपक अलंकार	जहाँ उपमेय और उपमान दोनों का एक धर्म कहा जाय, वहाँ दीपक अलंकार होता है।	संग ते जती, कुमंत्र ते राजा, मान ते ज्ञान, पान ते लाजा। प्रीति प्रनय बिनु, मद ते गुनी, नासहिं बेगि नीति अस सुनी।।
9.अर्थान्तरन्यास अलंकार	जहाँ किसी सामान्य बात का विशेष बात से तथा विशेष बात का सामान्य बात से समर्थन किया जाय वहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार होता है।	जो 'रहीम' उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग। चंदन विष व्यापत नहि, लिपटे रहत भुजंग।।
10.विशेषोक्ति अलंकार	जहाँ कारण के होने पर भी कार्य न हो, वहाँ विशेषोक्ति होती है।	पानी बिच मीन, मीन पियासी। मोहि सुनि-सुनि आवै हाँसी।।

11.तद्गुण अलंकार	जब कोई वस्तु अपना गुण त्यागकर अपने पास की किसी दूसरी वस्तु का गुण ग्रहण कर लेती है, तब तद्गुण अलंकार होता है।	अधर धरत, हरि के परत, ओठ, दीठि, पट ज्योति। हरित-बाँस की बाँसुरी, इन्द्रधनुष- रंग होति।।
------------------	---	--

विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. 'तेरी बरछी ने बर छीने हैं, खलन के' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
(a) रूपक (b) अनुप्रास
(c) श्लेष (d) यमक

UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (d)

2. निम्नलिखित पंक्तियों में कौन सा अलंकार—
बालधी बिसाल बिकराल ज्वाल जाल मानौ,
लंक लीलिलबै को काल रसना पसारी है
(a) उपमा और रूपक (b) यचक और श्लेष
(c) उत्प्रेक्षा और अनुप्रास (d) अनुप्रास और यमक

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Dec. 2016

उत्तर : (c)

3. 'चरण-कमल बन्दौ हरिराई।' उपरोक्त पंक्ति में अलंकार है
(a) उत्प्रेक्षा (b) यमक
(c) रूपक (d) उपमा

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (c)

4. 'उल्का सी रानी दिशा दीप्त करती थी' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
(a) यमक (b) रूपक
(c) उत्प्रेक्षा (d) उपमा

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (d)

5. बिनु पग चलै सुनै बिनु काना,
कर बिनु कर्म करै विधि नाना।
इस पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार है
(a) विभावना (b) विशेषोक्ति
(c) असंगति (d) दृष्टान्त

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Oct. 2017

उत्तर : (a)

6. 'तरनि-तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए' में कौन-सा अलंकार है?

(a) अनुप्रास (b) यमक
(c) उत्प्रेक्षा (d) उपमा

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014
उत्तर : (a)

7. 'नवल सुन्दर श्याम-शरीर की, सजल नीरद-सी कल-कान्ति थी।' में कौन-सा अलंकार है?

(a) उपमा (b) रूपक
(c) श्लेष (d) उत्प्रेक्षा

UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (a)

8. निम्नलिखित पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

'फूले कास सकल महि छाई।
जनु बरसा रितु प्रकट बुढ़ाई॥'

(a) उपमा (b) उत्प्रेक्षा
(c) रूपक (d) श्लेष

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) June 2013

उत्तर : (b)

9. सोहत ओढ़े पीत पट, श्याम सलोने गात।
मनो नीलमणि शैल पर, आतप परयो प्रभात॥
प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

(a) अनुप्रास (b) उपमा
(c) रूपक (d) उत्प्रेक्षा

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) April 2016

उत्तर : (d)

10. 'हरि-पद कोमल कमल से' इस पद में अलंकार है -

(a) उपमा (b) रूपक
(c) प्रतीप (d) उत्प्रेक्षा

Uttarakhand TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2013

उत्तर : (a)

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. अलंकार का शाब्दिक अर्थ होता है—

(a) वस्त्र (b) वर्ण
(c) आभूषण (d) विशिष्ट

2. इनमें से कौन-सा विकल्प "शब्दालंकार" का भेद नहीं है?

(a) यमक (b) रूपक
(c) श्लेष (d) अनुप्रास

3. निम्नलिखित में कौन-सा अर्थालंकार नहीं है?

(a) विरोधाभास (b) विभावना
(c) श्लेष (d) भ्रांतिमान

4. जहाँ वर्णों की आवृत्ति बार-बार होती है' उसमें कौन सा अलंकार होता है?

(a) यमक (b) श्लेष
(c) अनुप्रास (d) उत्प्रेक्षा

5. "कितनी करुणा कितने संदेश" में कौन-सा अलंकार है?

(a) यमक (b) अनुप्रास
(c) श्लेष (d) उत्प्रेक्षा

6. दिए गए विकल्पों में से अनुप्रास अलंकार का उचित उदाहरण पहचानिए।

(a) सारंग ले सारंग चली
(b) नवजीवन दो घनश्याम हमें
(c) अब जीवन में नहीं जीवन है।
(d) कानन कठिन भयंकर भारी

7. "तीन बेर खाती थी वो तीन बेर खाती है।" में कौन सा अलंकार है?

(a) अनुप्रास (b) यमक
(c) श्लेष (d) रूपक

8. 'तरिणी के ही संग तरल तरंग में, तरणिडूबी थी हमारी ताल में।' इसमें प्रयुक्त अलंकार है—

(a) श्लेष (b) यमक
(c) रूपक (d) उत्प्रेक्षा

9. 'रावण सिर सरोज बनचारी।

चलि रघुवीर सिली-मुख धारी।'
सिली-मुख में अलंकार है—

(a) श्लेष (b) लाटानुप्रास
(c) वृत्त्यनुप्रास (d) उपमा

10. रहिमान पानी राखिये, बिन पानी सब सूना।

पानी गये न ऊबरै, मोती, मानुस, चून॥

इस दोहे में कौन सा अलंकार है?

(a) वक्रोक्ति अलंकार (b) श्लेष अलंकार
(c) अर्थालंकार (d) विभावना

11. 'जहाँ उपमालंकार का सौन्दर्य अर्थ में निहित हो' वह कौनसा अलंकार कहलाता है?

(a) शब्दालंकार (b) अर्थालंकार
(c) उभयालंकार (d) अलंकार

12. "नील परिधान बीच सुकुमार,

खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।

खिला हो ज्यों बिजली का फूल

मेघ बन बीच गुलाबी रंग।"

इन पंक्तियों में कौन सा अलंकार है?

(a) उत्प्रेक्षा (b) श्लेष
(c) रूपक (d) उपमा

13. 'चरण कमल बंदौ हरिराई' में अलंकार :

(a) श्लेष (b) उपमा
(c) रूपक (d) रूपकातिशयोक्ति

14. उदित उदय गिरि-मंच पर रघुवर बाल पतंग।
बिकसे सन्त सरोज सब, हरषे लोचन-भृंग॥
उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?
(a) उपमा (b) रूपक
(c) अद्भुत रस (d) रौद्र रस
15. 'बसंत में नाचा बहुत मेरा मनमयूर।' रेखांकित अंश में-
.....अलंकार है।
(a) यमक (b) उत्प्रेक्षा
(c) रूपक (d) उपमा
16. "ले चला साथ मैं तुझे कनक ज्यों भिक्षुक लेकर स्वर्ण
झनक" में अलंकार बताइये?
(a) रूपक (b) उत्प्रेक्षा
(c) उपमा (d) श्लेष
17. जहाँ बिना कारण के ही कार्य की संभावना व्यक्त की
गई हो, वहाँ कौन-सा अलंकार होता है?
(a) विभावना (b) निदर्शना
(c) असंगति (d) अर्थान्तरन्यास
18. मुख-कमल समीप सजे थे,
दो किसलय दल पुरइ के।
उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?
(a) रूपक (b) अतिशयोक्ति
(c) उत्प्रेक्षा (d) उपमा
19. "आगे नदिया पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार।"
राणा ने देखा इस पार, तब तक चेतक था उस पार॥"
दी गई पंक्तियों में कौन सा अलंकार है?
(a) अतिशयोक्ति (b) उपमा
(c) उत्प्रेक्षा (d) अनुप्रास
20. निम्न पंक्ति में सही अलंकार का चयन कीजिए।
पानी विच मीन प्यासी।
मोहि सुनि सुनि आवै हासी॥
(a) विभावना (b) अतिशयोक्ति
(c) विशेषोक्ति (d) उपमा
21. "पापी मनुज भी आज मुख से, राम नाम निकालते"-
इस काव्य-पंक्ति में अलंकार है
(a) विरोधाभास (b) दृष्टान्त
(c) विभावना (d) उदाहरण
22. दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या-सुन्दरी परी सी
धीरे-धीरे-धीरे
इन पंक्तियों में कौन सा अलंकार है?

- (a) रूपक (b) उपमा
(c) श्लेष (d) मानवीकरण
23. "देख दशा रघुवीर की, वृक्ष फूट फूट कर रोये" इस
पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार कौन-सा है?
(a) शब्दालंकार (b) प्रतीप अलंकार
(c) अंगज अलंकार (d) मानवीकरण अलंकार
24. 'उसी तपस्वी से लम्बे थे देवदार दो-चार खड़े' में
अलंकार है—
(a) श्लेष (b) अतिशयोक्ति
(c) परिसंख्या (d) प्रतीप
25. 'बूँद अघात सहै गिरि कैसे। खल के बचन सन्त सह
जैसे।' में अलंकार है —
(a) उपमा (b) उदाहरण
(c) उत्प्रेक्षा (d) रूपक
26. "सम सुबरन सुखमाकर सुखद न थोर।
सीय अंग सखि कोमल कनक कठोर॥"
-इस उद्धरण में अलंकार है-
(a) उपमा (b) परिसंख्या
(c) अतिशयोक्ति (d) व्यतिरेक
27. निम्नलिखित में "साधारण धर्म" क्या है?
"मखमल के झूले पड़े, हाथी-सा टीला"
(a) इसमें साधारण धर्म लुप्त है
(b) टीला
(c) सा
(d) हाथी
28. "नाक का मोती अधर की कान्ति से, बीज दाडिम का
समझकर भ्रान्ति से। देखकर सहसा हुआ शुक मौन है,
सोचता है अन्य शुक यह कौन है?" इस पंक्ति में
प्रयुक्त अलंकार कौन-सा है?
(a) भ्रांतिमान अलंकार (b) प्रतीप अलंकार
(c) समुच्चय अलंकार (d) एकावली अलंकार
29. भ्रांतिमान अलंकार का उपयुक्त उदाहरण कौन-सा है?
(a) मेरी भवबाधा हरो, राधा नागरि सोइ
(b) सफरी से चंचल घने, मृग से पीन सुऐन
(c) वह टूटे तरु की छूटी लता सी दीन
(d) ओस बिन्दु चुग रही हंसिनी मोती उनको जान
30. 'राम नाम सुन्दर करतारी।
संशय बिहग उड़ावन हारी॥'
उक्त पंक्ति में कौन-सा रूपक है—
(a) सांग रूपक (b) निरंग रूपक
(c) परम्परित रूपक (d) कोई नहीं

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (c) | 2. (b) | 3. (c) | 4. (c) | 5. (b) | 6. (d) | 7. (b) | 8. (b) | 9. (a) | 10. (b) |
| 11. (b) | 12. (d) | 13. (c) | 14. (b) | 15. (c) | 16. (b) | 17. (a) | 18. (a) | 19. (a) | 20. (c) |
| 21. (a) | 22. (d) | 23. (d) | 24. (d) | 25. (b) | 26. (d) | 27. (a) | 28. (a) | 29. (d) | 30. (c) |

रचना-रचनाकार तथा विधाएँ

रचनाकार एवम् रचनाएँ		तुलसीदास	वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञाप्रश्न, रामलला नहछू, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, रामचरितमानस, कृष्णगीतावली, गीतावली, विनय पत्रिका, दोहावली, बरवै रामायण, कवितावली
रचनाकार	रचनाएँ	नाभादास	अष्टयाम, भक्तमाल
सरहपा	दोहाकोश	केशवदास	रसिकप्रिया, कविप्रिया, रामचन्द्रिका, विज्ञानगीता
शबरपा	चर्यापद	सेनापति	कवित रत्नाकर, काव्य कल्पद्रुम
स्वयंभू	पउमचरिउ, रिडुठोमि चरिउ, स्वयंभू छन्द।	प्राणचन्द चौहान	रामायण महानाटक
हेमचन्द्र	कुमारपाल चरित, प्राकृत व्याकरण, छन्दोनुशासन, देशी नाममाला कोष।	हृदयराम	हनुमन्नाटक
गोरखनाथ	विवेक मार्तण्ड, सिध्द सिद्धान्त-पद्धति, प्राण-संकली, गोरक्षशतक।	निम्बार्काचार्य	वेदान्त पारिजात सौरभ, दशश्लोकी, श्री कृष्ण स्तवराज, मंतरहस्य षोडशी।
दलपति विजय	खुमाण रासो	बल्लभाचार्य	पूर्व मीमांसा भाषा, उत्तर मीमांसा या ब्रह्मसूत्र जो अणु भाष्य नाम से प्रसिद्ध है।
नरपतिनाल्ह	बीसलदेव रासो	सूरदास	सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी
जगनिक	परमाल रासो	नंददास	अनेकार्थ मंजरी, रसमंजरी, भँवरगीत, रासपंचाध्यायी
चन्दवरदायी	पृथ्वीराज रासो	हरिदास	सिद्धान्त के पद, केलिमाला
केदारभट्ट	जयचन्द प्रकाश	हितहरिवंश	हित चौरासी, राधा सुधानिधि, यमुनाष्टक
मधुकरभट्ट	जयमयंक जसचंद्रिका	मीराबाई	गीत गोविन्द की टीका, नरसीजी का मायरा, राग सोरठा, राग गोविन्द मलार राग, रुक्मणी मंगल
शार्ङ्गधर	हम्मीर रासो	रसखान	सुजान रसखान, प्रेम वाटिका, दानलीला, दोहावली, नगर शोभा, शृंगार सोरठा, मदनाष्टक, बरवै नायिका भेद
नल्ह सिंह	विजयपाल रासो	रहीम	सुदामाचरित, ध्रुवचरित, विचारमाला
श्रीधर	रणमल्ल छंद	नवरोत्तमदास	फूल मंजरी, रसरज, ललितललाम, वृत्त कौमुदी
विद्यापति	कीर्तिलता, कीर्ति पताका, पदावली	मतिराम	भाषा भूषण
अमीरखुसरो	खालिकबारी, पहेलियाँ, मुकरियाँ, दो सुखने।	जसवंत सिंह	रस रहस्य, द्रोण पर्व, नखशिख, संग्रामसार।
कबीर	साखी, सबद, रमैनी	कुलपति मिश्र	भाव विलास, अष्टयाम, राग रत्नाकर, काव्य रसायन
गुरुनानक	जपुजी, नसीहतनामा	देव	अंग दर्पण, रस प्रबोध
दादूदयाल	हरडेबानी, अंग बंधू	रसलीन	नाम कोश, रस सारांश, काव्य निर्णय, शृंगार निर्णय
मूलकदास	रत्नखान, ज्ञानबोध, ज्ञान परोछि।	भिखारीदास	पञ्चाभरण, जगद् विनोद, गंगा लहरी
असाइत	हंसावली	पञ्चाकर	रस विलास, कविकुलकल्पतरु, कवित विचार
मुल्लादाऊद	चंदायन	चिन्तामणि	शिवराज भूषण, शिवा बावनी, छत्रशाल दशक
ईश्वरदास	सत्यवती कथा, भरत मिलाप, अंगदपैज।	भूषण	अलंकार माला
कुतुबन	मृगावती	सूरति मिश्र	विहारी सतसई
जायसी	पद्मावत, अखरावत, आखिरी कलाम।	बिहारी	सुजान सार, इश्कलता, विरहलीला, कोकसार
मंझन	मधुमालती	घनानन्द	विरह वारीश, इश्कनामा
नंददास	रूपमंजरी	बोध	
आलम	माधवानल कामकंदला		
नारायणदास	छिताईवार्ता		
उसमान	चित्रावली		
पुहकर	रसरतन		
शेखनबी	ज्ञानदीप		
नूर मुहम्मद	इंद्रावती, अनुराग बाँसुरी		
रामानन्द	वैष्णवमताब्ज भास्कर, श्री रामार्चन पद्धति, योगचिन्तामणि, रामरक्षास्तोत्र, आनन्दभाष्य।		
अग्रदास	ध्यान मंजरी, रामाष्टपाया		

ठाकुर
द्विजदेव
भारतेन्दु

ठाकुर ठसक, ठाकुर शतक
शृंगार लतिका, शृंगार बत्तीसी
भक्ति सर्वस्व, प्रेम सरोवर, प्रेम तरंग, उत्तरार्द्ध
भक्तमाल, प्रेम प्रलाप, वर्षा विनोद, फूलों का
गुच्छा, प्रेम फुलवारी, देवी छत्र लीला, दान-
लीला, बकरी-विलाप, रिपुनाष्टकस्फुट कविताएँ,
नारद भक्ति सूत्र, उर्दू का स्यापा।

प्रताप नारायण मिश्र प्रेम पुष्पावली, लोकोक्ति शतक, तृप्यन्ताम
ठाकुर जगमोहन सिंह प्रेम सम्पत्तिलता, श्यामा सरोजनी
राधाकृष्ण दास देशदशा, भारत बारहमासा
राधा चरण गोस्वामी नवभक्तमाल
श्रीधर पाठक वनाष्टक, भारतगीत, स्वर्गीय वीणा, सांध्य
अटन, गुनवंत हेमंत, कश्मीर-सुषमा।
महावीर प्रसाद द्विवेदी काव्य मंजूषा, सुमन देवी, स्तुति शतक।

प्रमुख कवि और उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ

रामधारी सिंह दिनकर	हुंकार, द्वन्द्वगीत, कुरुक्षेत्र, इतिहास के आँसू, रश्मिस्थी, धूप और धुआँ, दिल्ली, रसवन्ती, उर्वशी
‘हरिऔध’ अयोध्या सिंह उपाध्याय	प्रियप्रवास, पद्यप्रसून, वैदेही-वनवास, रसकलस, चोखे चौपदे, चुभते चौपदे
मैथिलीशरण गुप्त	साकेत, जयद्रथ वध, रंग में भंग, विकट भट, भारत-भारती, द्वापर, यशोधरा, पंचवटी, झंकार
सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’	अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास
श्रीधर पाठक	एकान्तवासी योगी, ऊजड़ ग्राम, वनाष्टक, काश्मीर सुषमा, देहरादून, भारतगीत
सुमित्रानन्दन ‘पंत’	उच्छवास, ग्रंथि, वीणा, पल्लव, गुंजन, लोकयतन, युगांत, ग्राम्या, स्वर्ण किरण, स्वर्ण धूलि, उत्तरा
जयशंकर प्रसाद	वनमिलन, प्रेमराज्य, अयोध्या का उद्धार, कानन कुसुम, प्रेमपथिक, शोकोच्छवास, वभ्रुवाहन, झरना, आँसू, लहर, कामायानी
महादेवी वर्मा	नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, यामा
हरिवंशराय बच्चन	मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश
गिरजा कुमार माथुर	मंजीर, नाश और निर्माण, धूप के धान, शिलालेख चमकीले
भवानी प्रसाद मिश्र	सतपुड़ा के जंगल, सन्नाटा, गीतफरोश
धर्मवीर भारती	सात गीत वर्ष, कनुप्रिया, अन्धा युग
नागार्जुन	बादल को धिरते देखा है, पाषाणी, तुम्हारी दंतुरित मुस्कान
रांगेय राघव	अजेय खंडहर, मेधावी, पांचाली

नरेन्द्र शर्मा	प्रभातफेरी, प्रवासी के गीत, पलाश वन
भगवतीचरण वर्मा	प्रेम संगीत, मानव
उदयशंकर भट्ट	राका, मानसी, विसर्जन, युगदीप, अमृत और विष
सियारामशरण गुप्त	उन्मुक्त, बापू, दूर्वादल, मृण्मयी, पाथेय, मौर्यविजय
केदारनाथ अग्रवाल	मांझी न बजाओ वंशी, वसंती हवा (कविताएँ), फूल नहीं रंग बोलते हैं (कविता संग्रह)
त्रिलोचन	दिगंत, ताप के ताये हुए दिन
अज्ञेय	तारसप्तक, दूसरा सप्तक, तीसरा सप्तक, चौथा सप्तक, रूपाम्बरा, भग्नदूत, चिन्ता, इत्यलम, अरी ओर करुणा प्रभामय
मुक्तिबोध	चाँद का मुँह टेढ़ा है, अँधेरे में
कुँवरनारायण	आत्मजयी (कठोपनिषद् के नचिकेता प्रसंग पर आधारित प्रबन्धकाव्य)
नरेश मेहता	संशय की एक रात, वनपाखी सुनो, मेरा समर्पित एकांत, बोलने दो चीड़ को
डॉ. विनय	एक पुरुष और भी
केदारनाथ सिंह	अभी बिल्कुल अभी, नींद के बादल, अपूर्व, युग की गंगा
सर्वेश्वर दयाल ‘सक्सेना’	काठ की घंटियाँ, बाँस का पुल, कुआनो नदी, गर्म हवाएँ, जंगल का दर्द
रामकुमार वर्मा	रूपराशि, निशीथ, चित्ररेखा, आकाशगंगा
रघुवीर सहाय	आत्महत्या के विरुद्ध, हँसो-हँसो जल्दी हँसो, लोग भूल गये हैं, कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ
शमशेर बहादुर सिंह	अमन का राग, चुका भी नहीं हूँ मैं, इतने अपने पास
उदयशंकर भट्ट	तक्षशिला
मोहनलाल महर्षि ‘वियोगी’	आर्यावर्त
दुष्यंत कुमार	साये में धूप, सूर्य का स्वागत, एक कंठ विषपायी, आवाज के घंटे
प्रभाकर माचवे	जहाँ शब्द हैं, तेल की पकौड़ियाँ, स्वप्न भंग, मेपल
शंभूनाथ सिंह	खंडित सेतु, मन्वंतर
नरेश मेहता	महाप्रस्थान, शबरी, प्रवाद पर्व, चैत्या अरण्य
रामनरेश त्रिपाठी	मिलन, पथिक, मानसी, स्वप्न, कविता कौमुदी
गद्याप्रसाद शुक्ल	कृषक क्रन्दन, राष्ट्रीय वीणा, करुणा

‘सनेही’	कादंबिनी
अम्बिकादत्त व्यास	पावस पचासा, सुकवि सतसई, हो-हो होरी
सदलमिश्र	नासिकेतोपाख्यान
रामप्रसाद निरंजनी	भाषायोग वाशिष्ठ
राय देवीप्रसाद ‘पूर्ण’	मृत्युंजय, स्वदेशी कुण्डल
नरेन्द्र शर्मा	प्रभात फेरी, प्रवासी के गीत, पलाशवन
भारतभूषण अग्रवाल	कागज के फूल, जागते रहो, मुक्तिमार्ग, उतना वह सूरज है, अग्निलीक
शिवमंगलसिंह ‘सुमन’	हिल्लोल, जीवन के गान, प्रलय सृजन, विश्वास बढ़ता ही गया, मिट्टी की बारात
विजय देवनारायण ‘साही’	मछलीघर, संवाद तुम से, साखी
हरिनारायण व्यास	मृग और तृष्णा, एक नशीला चाँद, उठे बादल झुके बादल, त्रिकोण पर सूर्योदय
राजकमल चौधरी	कंकावती, मुक्तिप्रसंग
अशोक बाजपेयी	एक पतंग अनन्त में, शहर अब भी संभावना है।
उदय प्रकाश	सुनो कारीगर, क से कबूतर
सुदामा पाण्डेय ‘धूमिल’	संसद से सड़क तक, कल सुनना मुझे, सुदामा पाण्डे का प्रजातन्त्र
अजित कुमार	अंकित होने दो, अकेले कंठ की पुकार
शैलेश जैदी	अब किसे वनवास दोगे
रामेश्वर शुक्ल ‘अंचल’	अपराजिता, चढ़ती धूप, शीलजयी, मधुलिका, लाल चूनर, किरण बेला
श्रीकान्त वर्मा	मगध, मायादर्पण, शब्दों की शताब्दी, दीनारम्भ
बद्री नारायण चौधरी ‘प्रेमधन’	जीर्णजनपद, आनन्द अरुणोदय, हार्दिक हर्षादर्श, मयंकमहिमा, अलौकिक लीला, वर्षा बिंदु
सुभद्रा कुमारी चौहान	त्रिधारा, मुकुल

दलित आत्मकथा

मोहन दास नैमिशराय	अपने-अपने पिंजरे
ओम प्रकाश वाल्मीकि	जूठन
कौशल्या बैसंती	दोहरा अभिशाप
माता प्रसाद	झोपड़ी से राजभवन
सूरजपाल सिंह चौहान	तिरस्कृत, संतप्त
शयौराज सिंह बेचैन	बेवक्त गुजर गया माली, मेरा बचपन मेरे कन्धे पर
रमाशंकर आर्य	घुटन
तुलसीराम	मुर्दहिया, मर्णिकर्णिका
धर्मवीर भारती	मेरी पत्नी और भेड़िया
सुशीला टकभोरे	शिकंजे का दर्द

महिला आत्मकथा

लेखिका	आत्मकथा
जानकी देवी बजाज	मेरी जीवन यात्रा
प्रतिभा अग्रवाल	दस्तक जिंदगी की
कुसुम अंसल	जो कहा नहीं गया
कृष्णा अग्निहोत्री	लगता नहीं है दिल मेरा
पद्मा सचदेव	बूंद बावड़ी
शीला झुनझुनवाला	कुछ कही कुछ अनकही
मैत्रेयी पुष्पा	कस्तूरी कुण्डल बसै, गुड़िया भीतर गुड़िया
रमणिका ठाकुर गुप्ता	हादसे
प्रभा खेतान	अन्या से अनन्या
चन्द्र किरण सौनरेक्सा	पिंजरे की मैना
अनीता राकेश	सतरें और सतरें
ममता कालिया	कितने शहरों में कितनी बार
चन्द्रकांता	हासिये की इबारतें
मन्नू भण्डारी	एक कहानी यह भी

हिन्दी उपन्यासकार और उनके प्रसिद्ध उपन्यास

श्रद्धाराम फिल्लौरी	भाग्यवती
लाला श्रीनिवास दास	परीक्षा गुरु
बालकृष्ण भट्ट	नूतन ब्रह्मचारी, सौ अजान एक सुजान
ठाकुर जगमोहन सिंह	श्यामा स्वप्न
राधाकृष्ण दास	निस्सहाय हिन्दू
पं. लज्जाराम शर्मा	धूर्त रसिक लाल, स्वतन्त्र रमा परतन्त्र लक्ष्मी, आदर्श दम्पति, आदर्श हिन्दू
किशोरी लाल गोस्वामी	त्रिवेणी, लीलावती, चपला, अंगूठी का नगीना, तारा, लवंगलता, लखनऊ की कब्र, आदर्श रमणी
अयोध्या सिंह उपाध्याय	अधखिला फूल, ठेठ हिन्दी का ठाट
वृन्दावन लाल वर्मा	गढ़ कुण्डार, विराटा की पद्मिनी
ब्रजनन्दन सहाय	सौन्दर्योपासक, लाल चीन
प्रेमचन्द	सेवासदन, प्रेमाश्रम, निर्मला, रंगभूमि, कायाकल्प, कर्मभूमि, गबन, गोदान, मंगलसूत्र
अमृतलाल नागर	महाकाल, बूँद और समुद्र, सुहाग के नूपुर, करवट, अमृत और विष, नाच्यो बहुत गोपाल, भूख बिखरे तिनके, अग्निगर्भा, सात घूँघट वाला मुखड़ा, खंजन नयन, एकदानैमिषारण्य

हजारी प्रसाद द्विवेदी	बाणभट्ट की आत्मकथा, चारुचन्द्र लेख, पुनर्नवा, अनामदास का पोथा
पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'	चन्द हसीनों के खतूत, बुधुवा की बेटी, सरकार तुम्हारी आँखों में, मनुष्यानन्द
जैनेन्द्र	परख, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, सुखदा, विवर्त, जयवर्धन, मुक्तिबोध, अनन्तर, अनाम स्वामी, दर्शाक
अज्ञेय	नदी के द्वीप, शेखर एक जीवनी, अपने-अपने अजनबी
यशपाल	दादा कामरेड, दिव्या, पार्टी कामरेड, मनुष्य के रूप, अमिता, मेरी तेरी उसकी बात, झूठा-सच
नागार्जुन	रतिनाथ की चाची, नई पौध, बलचनमा, इमरतिया, बाबा बटेसरनाथ, दुःख मोचन, वरुण के बेटे, हीरक जयन्ती
फणीश्वर नाथ रेणु	मैला आँचल, परती परिकथा, दीर्घतपा, जुलूस, पलटू बाबू रोड
मायानन्द मिश्र	माटी के लोग सोने की नैया
मोहन राकेश	अंधेरे बंद कमरे, अन्तराल
ऊषा प्रियंवदा	रुकोगी नहीं राधिका, शेष यात्रा, पचपन खम्भे लाल दीवारें

हिन्दी कहानीकार एवं उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ

प्रेमचंद	पूस की रात, शतरंज के खिलाड़ी, नमक का दारोगा, पंच परमेश्वर, (प्रेमचंद की पहली कहानी), मंत्र, बड़े घर की बेटी, कफन, गृहदाह, बड़े भाई साहब, ईदगाह, बूढ़ी काकी, मानसरोवर
विश्वम्भरनाथ शर्मा	ताई, रक्षाबन्धन, माता का हृदय, कृतज्ञता (कहानियाँ) तथा चित्रशाला, मणिमाला (कहानी संग्रह)
सुदर्शन	संसार की सबसे बड़ी कहानी, राजपूतानी का प्रायश्चित, कवि की स्त्री, हार की जीत, आशीर्वाद, अलबम, न्याय मन्त्री, ऐथेन्स का सत्यार्थी (कहानियाँ) तथा सुदर्शन सुधा, पनघट, तीर्थयात्रा (कहानी संग्रह)
जयशंकर प्रसाद	आकाशदीप, आँधी, पुरस्कार, मधुआ, बिसाती (कहानियाँ) तथा आकाश-दीप, प्रतिध्वनि, छाया (कहानी-संग्रह)
जैनेन्द्र	पत्नी, खेल (जैनेन्द्र की पहली कहानी), जाह्नवी, पाजेब (कहानियाँ)

अज्ञेय	कोठरी की बात, गैरीन, रोज, छोड़ा हुआ रास्ता (कहानियाँ), विपथगा, शरणार्थी, कोठरी की बात, अमरवल्लरी, परम्परा (कहानी संग्रह)
यशपाल	डिप्टी साहब, मक्रील, ज्ञान-दान, फूलों का कुर्ता, प्रतिष्ठा का बोझ (कहानियाँ) पिंजड़े की उड़ान, सच बोलने की भूल, भस्माश्रुत चिंगारी (कहानी संग्रह)
अमरकान्त	डिप्टी कलकटरी, जिन्दगी और जॉक, दोपहर का भोजन, (कहानियाँ)
मोहन राकेश	इन्सान के खंडहर, जानवर और जानवर, एक और जिन्दगी (कहानी-संग्रह)
कमलेश्वर	राजा निरबंसिया, कस्बे का आदमी, खोई हुई दिशाएँ, माँस का दरिया, बयान (कहानी-संग्रह), जार्ज पंचम की नाक 1972 में समानान्तर कहानी का आन्दोलन चलाया। (कहानी)
निर्मल वर्मा	परिदे, जलती झाड़ी, पिछली गर्मियों में, बीच बहस में, कौवे और काला पानी (कहानी-संग्रह)
फणीश्वर नाथ 'रेणु'	तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम (प्रसिद्ध कहानी), ठुमरी, आदिम रात्रि की महक, अग्नि खोर, एक श्रावणी दोपहर की धूप (कहानी-संग्रह)
शिवप्रसाद सिंह	आर-पार की माला, कर्मनाशा की हार, इन्हें भी इंतजार है, मुरदा सराय, अंधेरा हँसता है, भेड़िये (कहानी संग्रह)

प्रमुख निबन्धकार एवं उनके प्रसिद्ध निबन्ध

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	कश्मीर कुसुम, बादशाह दर्पण, तदीप सर्वस्व
बालकृष्ण भट्ट	चन्द्रोदय, संसार महानाट्यशाला, आत्मगौरव, कालचक्र का चक्कर
अध्यापक पूर्ण सिंह	सच्ची वीरता, आचरण की सभ्यता, पवित्रता, मजदूरी और प्रेम, कन्यादान
जयशंकर प्रसाद	काव्यकला, रहस्यवाद, यथार्थवाद और छायावाद, रस
जैनेन्द्र	प्रस्तुत प्रश्न, जड़ की बात, श्रेय और प्रेय, सोच विचार, साहित्य और संस्कृति
नन्ददुलारे वाजपेयी	हिन्दी साहित्य: बीसवीं शताब्दी, राष्ट्रभाषा की कुछ समस्याएँ, रस सिद्धान्त
हजारी प्रसाद द्विवेदी	अशोक के फूल, कल्पलता, विचार और वितर्क, कुटज, साहित्य सहचर, विचार प्रवाह, आलोक पर्व

महादेवी वर्मा	शृंखला की कड़ियाँ, क्षणदा, साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबन्ध, संकल्पिता, संभाषण, चिन्तन के क्षण, भारतीय संस्कृति के स्वर
अज्ञेय	त्रिशंकु, सबरंग और कुछ राग, आत्मनेपद, आलवाल, लिखि कागद कोरे, अद्यतन, स्मृतिछन्दा, छाया का जंगल
रामविलास शर्मा	साहित्य और संस्कृति, प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ, परम्परा का मूल्यांकन
नगेन्द्र	विचार और अनुभूति, विचार विश्लेषण, विचार और विवेचन
विद्यानिवास मिश्र	छितवन की छाँह, राम का मुकुट भीग रहा है, आँगन का पंछी, बंजारा मन
शिवप्रसाद सिंह	राजाभोज का सपना
चन्द्रधर शर्मा गुलेरी	मारेसि मोहिं कुठांव, कछुआ धर्म
बालमुकुन्द गुप्त	शिवशम्भु के चिट्ठे, चिट्ठे और खत
पद्मसिंह शर्मा	पद्मपराग
बाबू गुलाबराय	फिर निराश क्यों, ठलुवा कलब, मन की बातें मेरी असफलताएँ, कुछ उथले कुछ गहरे
रामचन्द्र शुक्ल	चिन्तामणि (तीन भाग)
रामधारी सिंह 'दिनकर'	मिट्टी की ओर, रेती के फूल, अर्द्ध-नारीश्वर, पंत, प्रसाद और मैथिलीशरण गुप्त, उजली आग
यशपाल	चक्कर क्लब, बात-बात में मात, गांधीवाद की शव परीक्षा, न्याय का संघर्ष, देखा सोचा समझा
कन्हैयालाल मिश्र	बाजे पायलिया के घुँघरू, जिंदगी मुस्कराई महके आँगन चहके द्वार
देवेन्द्र सत्यार्थी	धरती गाती है
विजयदेव नारायण साही	लघु मानव के बहाने हिन्दी कविता पर एक बहस
धर्मवीर भारती	ठेले पर हिमालय
कुबेरनाथ राय	रस आखेटक, प्रिया नीलकंठी, विषाद योग
निर्मल वर्मा	शब्द और स्मृति, कला का जोखिम, ढलान से उतरे हुए
नामवर सिंह	बकलम खुद, इतिहास और आलोचना

प्रसिद्ध आलोचक एवं उनके प्रसिद्ध ग्रन्थ

प्रकाश चन्द गुप्त	नया हिन्दी साहित्य, आधुनिक हिन्दी साहित्य
रामविलास शर्मा	प्रेमचन्द और उनका युग, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आचार्य राम चन्द्र शुक्ल, हिन्दी जाति का साहित्य

गजानन माधव 'मुक्तिबोध'	कामायनी: एक पुनर्विचार, नयी कविता का आत्मसंघर्ष और अन्य निबन्ध, नये साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र
नेमिचन्द्र जैन	अधूरे साक्षात्कार, बदलते परिदृश्य, जनांतिक
रमेश चन्द्र शाह	वागर्थ, समानान्तर, सबद निरन्तर
परमानन्द श्रीवास्तव	समकालीन कविता का यथार्थ
जगन्नाथ प्रसाद 'भानु'	काव्यप्रभाकर
लाला भगवानदीन	अलंकार मंजूषा
जगन्नाथदास 'रत्नाकर'	समालोचनादर्श (आलोचनात्मक कृति एस्से ऑन क्रिटिसिज्म का पद्यात्मक अनुवाद)
हजारी प्रसाद द्विवेदी	कबीर, मध्यकालीन बोध का स्वरूप, सूर साहित्य
नगेन्द्र	रस सिद्धान्त, रीतिकाव्य की भूमिका, देव और उनकी कविता, आधुनिक हिन्दी नाटक, विचार और अनुभूति, आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ, नयी समीक्षा नए सन्दर्भ, कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ, भारतीय सौन्दर्यशास्त्र की भूमिका
विश्वनाथ प्रसाद मिश्र	वाङ्मय विमर्श, बिहारी की वाग्विभूति, हिन्दी साहित्य का अतीत (दो भाग)
शिवदान सिंह चौहान	प्रगतिवादी, साहित्य की परख, आलोचना के मान, साहित्य की समस्याएँ, साहित्यानुशीलन
देवराज	छायावाद का पतन, साहित्य चिन्ता
अज्ञेय	त्रिशंकु, आत्मनेपद, हिन्दी साहित्य: एक आधुनिक परिदृश्य
सुरेशचन्द्र गुप्त	आधुनिक हिन्दी कवियों के काव्य सिद्धान्त
धर्मवीर भारती	मानव मूल्य और साहित्य
विद्यानिवास मिश्र	रीतिविज्ञान
लक्ष्मीकांत वर्मा	नयी कविता के प्रतिमान, नये प्रतिमान पुराने निकष
जगदीश गुप्त	नयी कविता स्वरूप और समस्याएँ
नामवर सिंह	कविता के नये प्रतिमान, छायावाद, वाद विवाद संवाद, इतिहास और आलोचना, कहानी नई कहानी, हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योगदान
सुमित्रानन्दन 'पंत'	गद्यपथ, शिल्प और दर्शन, छायावाद: पुनर्मूल्यांकन

ज्ञानपीठ पुरस्कार

वर्ष	रचना	रचनाकार
1968	चिदम्बरा	सुमित्रानन्दन पंत
1972	उर्वशी	रामधारी सिंह दिनकर
1978	कितनी नावों में कितनी बार	सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय
1982	यामा	महादेवी वर्मा
1992	सम्पूर्ण साहित्य पर	नरेश मेहता
1999	सम्पूर्ण साहित्य पर	निर्मल वर्मा
2005	सम्पूर्ण साहित्य पर	कुँवर नारायण
2009	सम्पूर्ण साहित्य पर	अमरकांत एवं श्रीलाल शुक्ल (संयुक्त रूप से)
2013	सम्पूर्ण साहित्य पर	केदारनाथ सिंह
2017	सम्पूर्ण साहित्य पर	कृष्णा सोबती

नोट- सन् 1984 ई. के पश्चात् भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार कृति विशेष को न देकर सम्पूर्ण साहित्य के लिए दिया जाने लगा है।

साहित्य अकादमी पुरस्कार

वर्ष	रचना	रचनाकार
1955	हिमतरंगिणी	माखन लाल चतुर्वेदी
1956	पद्मावत संजीवनी व्याख्या	वासुदेव शरण अग्रवाल
1957	बौद्ध धर्म दर्शन	आचार्य नरेन्द्र देव
1958	मध्य एशिया का इतिहास	राहुल सांकृत्यायन
1959	संस्कृति के चार अध्याय	रामधारी सिंह दिनकर
1960	कला एवं बूढ़ा चाँद	सुमित्रानन्दन पन्त
1961	भूले बिसरे चित्र	भगवती चरण वर्मा
1963	कलम का सिपाही	अमृत राय
1964	आँगन के पार द्वारा	अज्ञेय
1965	रस सिद्धान्त	डॉ. नगेन्द्र
1966	मुक्तिबोध	जैनेन्द्र
1967	अमृत और विष	अमृत लाल नागर
1968	दो चट्टानें	हरिवंश राय बच्चन
1969	राग दरबारी	श्रीलाल शुक्ल
1970	निराला की साहित्य साधना	राम विलास शर्मा
1971	कविता के नये प्रतिमान	नामवर सिंह
1972	बुनी हुई रस्सी	भवानी प्रसाद मिश्र
1973	आलोक पर्व	हजारी प्रसाद द्विवेदी
1974	मिट्टी की बारात	शिव मंगल सिंह 'सुमन'
1975	तमस	भीष्म साहनी
1976	तेरी मेरी उसकी बात	यशपाल
1977	चुका भी नहीं हूँ मैं	शमशेर बहादुर सिंह

1978	उतना वह सूरज है	भारत भूषण अग्रवाल
1979	कल सुनना मुझे	सुदामा पाण्डेय 'धूमिल'
1980	जिन्दगी -जिन्दा रुख	कृष्णा सोबती
1981	ताप के ताये हुए दिन	त्रिलोचन
1982	विकलांग श्रद्धा का दौर	हरिशंकर परसाई
1983	खूंटियों पर टंगे लोग	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
1984	लोग भूल गए हैं	रघुवीर सहाय
1985	कच्चे और काला पानी	निर्मल वर्मा
1986	अपूर्वा	केदारनाथ अग्रवाल
1987	मगध	श्रीकान्त वर्मा
1988	अरण्या	नरेश मेहता
1989	अकाल में सारस	केदारनाथ सिंह
1990	नीला चाँद	शिव प्रसाद सिंह
1991	मैं वक्त के हूँ सामने	गिरिजा कुमार माथुर
1992	ढाई घर	गिरिराज किशोर
1993	अर्द्ध नारीश्वर	विष्णु प्रभाकर
1994	कहीं नहीं वहीं	अशोक वाजपेयी
1995	कोई दूसरा नहीं	कुँवर नारायण
1996	मुझे चाँद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा
1997	अनुभव के आकाश में चाँद	लीलाधर जगूड़ी
1998	नये इलाके में	अरुण कमल
1999	दीवार में एक खिड़की रहती थी	विनोद कुमार शुक्ल
2000	हम जो देखते हैं	मंगलेश डबराल
2001	कलिकथा-वाया बाईपास	अलका सरावगी
2002	दो पंक्तियों के बीच	राजेश जोशी
2003	कितने पाकिस्तान	कमलेश्वर
2004	दुष्चक्र में स्रष्टा	वीरेन डंगवाल
2005	क्याप	मनोहर श्याम जोशी
2006	संशयात्मा	ज्ञानेन्द्रपति
2007	इन्हीं हथियारों से	अमरकान्त
2008	कोहरे में कैद रंग	गोविन्द मिश्र
2009	हवा में हस्ताक्षर	कैलाश वाजपेयी
2010	मोहनदास	उदय प्रकाश
2011	रेहन पर रघू	काशीनाथ सिंह
2012	पत्थर फेंक रहा हूँ	चन्द्रकान्त देवताले
2013	मिलजुल मन	मृदुला गर्ग
2014	विनायक	रमेशचन्द्र शाह
2015	आग की हँसी	राम दरश मिश्र
2016	पारिजात	नासिरा शर्मा
2017	विश्वमिथक सरित्सागर	रमेश कुंतल मेघ
2018	पोस्ट बॉक्स नं. 203 नारा सोपारा	चित्रा मुद्गल

व्यास सम्मान

वर्ष	रचना	रचनाकार
1991	भारत के प्राचीन भाषा परिवार	रामविलास शर्मा
1992	नीला चाँद	डॉ. शिव प्रसाद सिंह
1993	मैं वक्त के हूँ सामने	गिरिजा कुमार माथुर
1994	अंधायुग	धर्मवीर भारती
1995	कोई दूसरा नहीं	कुँवर नारायण
1996	हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास	राम स्वरूप चतुर्वेदी
1997	उत्तर कबीर तथा अन्य कविताएँ	केदारनाथ सिंह
1998	पाँच आँगनों वाला घर	गोविन्द मिश्र
1999	विश्रामपुर का संत	श्रीलाल शुक्ल
2000	पहला गिरमिटिया	गिरिराज किशोर
2001	आलोचना का पक्ष	रमेश चन्द्र शाह
2002	पृथ्वी का कृष्णपक्ष	कैलाश वाजपेयी
2003	आवां	चित्रा मुद्गल
2004	कठगुलाब	मृदुला गर्ग
2005	कथा सरित्सागर	चन्द्रकान्ता
2006	कविता अर्थात्	परमानन्द श्रीवास्तव
2007	समय सरगम	कृष्णा सोबती (प्राप्त नहीं किया)
2008	एक कहानी यह भी	मन्नू भण्डारी
2009	इन्हीं हथियारों से	अमरकान्त
2010	फिर भी कुछ रह जायेंगे	विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
2011	आम के पत्ते	राम दरश मिश्र
2012	न भूतो न भविष्यति	नरेन्द्र कोहली
2013	व्योमकेश दरवेश	विश्वनाथ त्रिपाठी
2014	प्रेमचन्द की कहानियों का कालक्रमानुसार अध्ययन	कमल किशोर गोयनका
2015	क्षमा (काव्य संग्रह)	सुनीता जैन
2016	काटना शमी का वृक्ष : पद्यपंखुरी की धार से	सुरेन्द्र वर्मा
2017	दुःखम-सुखम	ममता कालिया
2018	जितने लोग उतने प्रेम	लीलीधर जगूड़ी

भारत-भारती सम्मान

साहित्यकार	वर्ष
महादेवी वर्मा	1982
धर्मवीर भारती	1990
जगदीश गुप्त	1998
जानकी वल्लभ शास्त्री	2001
नामवर सिंह	2005
परमानन्द श्रीवास्तव	2006
रामदरश मिश्र	2007
केदारनाथ सिंह	2008
अशोक वाजपेयी	2008
महीप सिंह	2009
कैलाश वाजपेयी	2010
गोविन्द मिश्र	2011
गोपाल दास नीरज	2012
दूधनाथ सिंह	2013
काशीनाथ सिंह	2014
विश्वनाथ त्रिपाठी	2015
डॉ. आनन्द प्रकाश दीक्षित	2017
डॉ. रमेशचन्द्र शाह	2018

विश्व हिन्दी सम्मेलन

क्रम	वर्ष	स्थान
प्रथम	1975	नागपुर (भारत)
द्वितीय	1976	पोर्ट लुइस (मॉरीशस)
तृतीय	1983	नई दिल्ली (भारत)
चतुर्थ	1993	पोर्ट लुइस (मॉरीशस)
पंचम	1996	पोर्ट ऑफ स्पेन (त्रिनिदाद और टुबैगो)
षष्ठ	1999	लन्दन (यू. के.)
सप्तम्	2000	पारामारिबो (सूरीनाम)
अष्टम्	2007	न्यूयार्क (यू. एस. ए.)
नवम्	2012	जोहान्सबर्ग (दक्षिण अफ्रीका)
दशम्	2015	भोपाल (भारत)
एकादश	2018	पोर्टलुई (मॉरीशस)
द्वादश	2021	न्यूयार्क (प्रस्तावित)

विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. अष्टछाप के कवि नहीं हैं -

- (a) नाभादास (b) कृष्णदास
(c) परमानन्ददास (d) नन्ददास

UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (a)

2. 'आचरण की सभ्यता' किसका निबन्ध है?

- (a) महावीरप्रसाद द्विवेदी (b) सरदार पूर्ण सिंह
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) पद्मसिंह

UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (b)

3. 'भूषण' किस काल के कवि हैं?

- (a) वीरगाथाकाल (b) भक्तिकाल
(c) रीतिकाल (d) आदिकाल

UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (c)

4. 'कवितावली' के रचनाकार हैं-

- (a) सूरदास (b) जायसी
(c) तुलसीदास (d) घनानन्द

UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (c)

5. विनय पत्रिका की भाषा कौन-सी है?

- (a) अवधी (b) खड़ीबोली
(c) ब्रजभाषा (d) अपभ्रंश

UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (c)

6. 'अन्धेर-नगरी' के लेखक हैं -

- (a) प्रतापनारायण मिश्र (b) हरिकृष्ण प्रेमी
(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (d) रामकुमार वर्मा

UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (c)

7. आदिकाल में पहलियाँ लिखने वाले कवि थे -

- (a) जगनिक (b) खुसरो
(c) सरहपा (d) गोरखनाथ

UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (b)

8. निम्नलिखित में से कौन-सा निबन्ध हजारीप्रसाद द्विवेदी का नहीं है?

- (a) अशोक के फूल (b) कुटज
(c) विचार प्रवाह (d) वृत्त और विकास

UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (d)

9. परमाल रासो किसके द्वारा रचित है?

- (a) नल्लसिंह (b) नरपति नाल्ह
(c) चन्दबरदाई (d) जगनिक

UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (d)

10. 'मृगावती' किसकी रचना है?

- (a) उसमान (b) मंझन
(c) कुतुबन (d) जायसी

UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (c)

11. 'रामचरितमानस' की भाषा क्या है?

- (a) अवधी (b) ब्रज
(c) खड़ीबोली (d) भोजपुरी

UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (a)

12. आदिकाल के लिए 'वीरगाथाकाल' नाम किसने प्रस्तावित किया?

- (a) डॉ. रामकुमार वर्मा
(b) महापण्डित राहुल सांकृत्यायन
(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(d) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (c)

13. आदिकाल की रचना है-

- (a) अखरावट (b) छत्रसाल दसक
(c) दीपशिखा (d) खुमाण रासो

UP TET - Ist Paper (I-V) Dec. 2016

उत्तर : (d)

14. राष्ट्रवादी कवि रामधारीसिंह 'दिनकर' को 'उर्वशी' के लिए 'ज्ञानपीठ-पुरस्कार' किस वर्ष प्रदान किया गया?

- (a) सन् 1971 ई. में (b) सन् 1972 ई. में
(c) सन् 1973 ई. में (d) सन् 1974 ई. में

UP TET - Ist Paper (I-V) Dec. 2016

उत्तर : (b)

15. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का निबन्ध संग्रह है-

- (a) माटी का फूल (b) चिन्तामणि
(c) क्षण बोले कण मुसकाए (d) आलोक पर्व

UP TET - Ist Paper (I-V) Dec. 2016

उत्तर : (b)

16. 'हिन्दी भाषा और साहित्य' नामक ग्रन्थ के लेखक हैं-

- (a) भगवत शरण उपाध्याय (b) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(c) डॉ. श्यामसुन्दर दास (d) डॉ. हरदेव बाहरी

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Dec. 2016

उत्तर : (c)

17. हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यास किसे माना जाता है?

- (a) नूतन ब्रह्मचारी (b) तितली
(c) त्याग-पत्र (d) परीक्षा गुरु

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Dec. 2016

उत्तर : (d)

18. 'तदीय समाज' की स्थापना किसने की थी?

- (a) दयानन्द सरस्वती (b) राजा राममोहन राय
(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (d) केशवचन्द्र सेन

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (c)

19. 'मधुलिका' जयशंकर प्रसाद की किस कहानी की पात्र है?
 (a) आकाशदीप (b) इन्द्रजाल
 (c) गुण्डा (d) पुरस्कार
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016
 उत्तर : (d)
20. 'आधे-अधूरे' नाटक के रचनाकार है—
 (a) अमृतलाल नागर (b) मन्नू भण्डारी
 (c) मोहन राकेश (d) निर्मल वर्मा
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016
 उत्तर : (c)
21. 'अन्धा-कुआँ नाटक के लेखक है—
 (a) मोहन राकेश (b) विष्णु प्रभाकर
 (c) जगदीशचन्द्र माथुर (d) लक्ष्मीनारायण लाल
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016
 उत्तर : (d)
22. 'तारसप्तक' का प्रकाशन वर्ष है—
 (a) 1943 ई. (b) 1938 ई.
 (c) 1954 ई. (d) 1941 ई.
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016
 उत्तर : (a)
23. हिन्दी साहित्य के इतिहास के संबंध में 'द मॉडर्न वार्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' किसने लिखा है?
 (a) जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन (b) सुनीति कुमार चटर्जी
 (c) गार्सा द तासी (d) धीरेन्द्र वर्मा
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Oct. 2017
 उत्तर : (a)
24. सूफी संतों की शैली है
 (a) मर्सिया (b) मसनवी
 (c) गजल (d) तर्जुमा
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Oct. 2017
 उत्तर : (b)
25. 'गुड़िया भीतर गुड़िया' के रचनाकार कौन है?
 (a) कृष्णा सोबती (b) मैत्रेयी पुष्पा
 (c) प्रभा खेतान (d) उषा प्रियंवदा
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Oct. 2017
 उत्तर : (b)
26. 'सौ अजान एक सुजान' के रचनाकार का नाम है
 (a) बदरीनारायण चौधरी (b) बालकृष्ण भट्ट
 (c) बालमुकुन्द गुप्त (d) सरदार पूर्ण सिंह
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Oct. 2017
 उत्तर : (b)
27. गोस्वामी तुलसीदास का निधन वाराणसी के किस घाट पर हुआ?
 (a) दशाश्वमेध घाट
 (b) अस्सी घाट
 (c) रामघाट
 (d) मणिकर्णिका घाट
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Oct. 2017
 उत्तर : (b)
28. 'भक्तमाल' के रचनाकार है
 (a) नाभादास (b) केशव दास
 (c) विष्णु दास (d) सुन्दर दास
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Oct. 2017
 उत्तर : (a)
29. डॉ. नगेन्द्र ने किस युग को 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह' कहा है?
 (a) भारतेन्दु युग (b) भक्तिकाल
 (c) रीतिकाल (d) छायावाद
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014
 उत्तर : (d)
30. 'मेरी तिब्बत-यात्रा' के रचनाकार कौन है?
 (a) श्री राम शर्मा (b) बनारसीदास चतुर्वेदी
 (c) महादेवी वर्मा (d) राहुल सांकृत्यायन
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014
 उत्तर : (d)
31. 'त्याग-पत्र' उपन्यास के उपन्यासकार कौन है?
 (a) यशपाल (b) जैनेन्द्र
 (c) अज्ञेय (d) उपेन्द्रनाथ अश्क
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014
 उत्तर : (b)
32. मैथिलीशरण गुप्त ने नहीं लिखा है—
 (a) साकेत (b) कामायनी
 (c) जयद्रथ वध (d) यशोधरा
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014
 उत्तर : (b)
33. 'रामचरितमानस' में काण्ड का सही क्रम है—
 (a) सुन्दरकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, बालकाण्ड, लंकाकाण्ड
 (b) बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड
 (c) अयोध्याकाण्ड, बालकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड
 (d) लंकाकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, बालकाण्ड, सुन्दरकाण्ड
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014
 उत्तर : (b)
34. अमृतलाल नागर के किस उपन्यास में गोस्वामी तुलसीदास की जीवनी को आधार बनाया गया है?
 (a) बूँद और समुद्र (b) सुहाग के नूपुर
 (c) मानस का हंस (d) अमृत और विष
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014
 उत्तर : (c)
35. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने आदिकाल को क्या संज्ञा दी है?
 (a) चारणकाल (b) आदिकाल
 (c) वीरकाल (d) बीजवपन काल
UP TET - Ist Paper (I-V) June 2013
 उत्तर : (d)

36. आधुनिक हिन्दी साहित्य की पहली आत्मकथा के लेखक कौन माने जाते हैं?
 (a) बाबू श्यामसुन्दर दास (b) देवेन्द्र सत्यार्थी
 (c) हरिवंशराय बच्चन (d) जयशंकर प्रसाद
UP TET - Ist Paper (I-V) June 2013
उत्तर : (a)
37. किस कवि को 'कवियों का कवि' कहा जाता है?
 (a) धर्मवीर भारती
 (b) शमशेर बहादुर सिंह
 (c) रघुवीर सहाय
 (d) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
UP TET - Ist Paper (I-V) June 2013
उत्तर : (b)
38. 'चिन्तामणि' किसका निबन्ध संग्रह है?
 (a) बालमुकुन्द गुप्त (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
 (c) रामचन्द्र शुक्ल (d) श्यामसुन्दर दास
UP TET - Ist Paper (I-V) June 2013
उत्तर : (c)
39. 'प्रेमसागर' किसकी रचना है?
 (a) मुंशी सदा सुखलाल (b) सदल मिश्र
 (c) लल्लू लाल जी (d) रामप्रसाद निरंजनी
UP TET - Ist Paper (I-V) June 2013
उत्तर : (c)
40. हिन्दी किस लिपि में लिखी जाती है?
 (a) ब्राह्मी (b) देवनागरी
 (c) खरोष्ठी (d) गुरुमुखी
UP TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2011
उत्तर : (b)
41. हिन्दी दिवस मनाया जाता है-
 (a) 14 सितम्बर को (b) 05 सितम्बर को
 (c) 02 अक्टूबर को (d) 26 जनवरी को
UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014
उत्तर : (a)
42. घनानन्द को किस युग का कवि माना जाता है?
 (a) आदिकाल (b) भक्तिकाल
 (c) रीतिकाल (d) भारतेन्दु काल
UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014
उत्तर : (c)
43. सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन का उपनाम है-
 (a) हरिऔध (b) निराला
 (c) अज्ञेय (d) गुलेरी
UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014
उत्तर : (c)
44. 'बिहारी' के प्रसिद्ध हैं-
 (a) कवित्त (b) सवैया
 (c) पद (d) दोहा
UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014
उत्तर : (d)
45. 'सूरदास' ने किस भाषा में 'सूरसागर' की रचना की?
 (a) अवधी (b) ब्रज
 (c) खड़ीबोली (d) राजस्थानी
UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014
उत्तर : (b)
46. 'बीजक' किसकी रचना है?
 (a) सूर (b) तुलसी
 (c) कबीर (d) जायसी
UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014
उत्तर : (c)
47. 'चन्दायन' के रचयिता हैं -
 (a) मलिक मोहम्मद जायसी (b) कुतुबन
 (c) मंझन (d) मुल्ला दाऊद
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) June 2013
उत्तर : (d)
48. 'द्विवेदी युग' नामकरण किया गया है-
 (a) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के नाम पर
 (b) शान्तिप्रिय द्विवेदी के नाम पर
 (c) महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर
 (d) सोहनलाल द्विवेदी के नाम पर
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) June 2013
उत्तर : (c)
49. छायावादी प्रवृत्ति किसकी रचना में सबसे पहले दिखाई पड़ी -
 (a) सुमित्रानन्दन पन्त की कविता में
 (b) मुकुटधर पाण्डेय की रचनाओं में
 (c) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' में
 (d) श्रीधर पाठक में
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) June 2013
उत्तर : (b)
50. एक-दूसरे से भिन्न-भिन्न, नये-नये विचारों एवं रचना शैलियों के जो सात कवि प्रयोगवाद के कवि के रूप में प्रसिद्ध हुए, उनकी कविताओं के संग्रह का सही नाम था-
 (a) पहला तार सप्तक (b) प्रथम तार सप्तक
 (c) तार शप्तक (d) तारसप्तक
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) June 2013
उत्तर : (d)
51. 'अपने-अपने पिंजरे' आत्मकथा किसकी है?
 (a) ओमप्रकाश वाल्मीकि (b) मोहनदास नैमिशराय
 (c) जयप्रकाश कर्दम (d) श्योराज सिंह 'बेचैन'
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) June 2013
उत्तर : (b)

52. 'इदन्नम' रचना किसकी है?

- (a) ममता कालिया (b) मन्नू भण्डारी
(c) चित्रा मुद्गल (d) मैत्रेयी पुष्पा

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) June 2013

उत्तर : (d)

53. कौन-सा उपन्यास बालकृष्ण भट्ट का है?

- (a) सौ अजान और एक सुजान (b) धूर्त रसिकलाल
(c) निस्सहाय हिन्दू (d) श्यामास्वप्न

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) June 2013

उत्तर : (a)

54. 'गोदान' उपन्यास की कथावस्तु की कसावट में कमी आई है -

- (a) बहुत कम चरित्रों को शामिल करने से
(b) शहरी और ग्रामीण पृष्ठभूमि के दो विस्तृत और लगभग विरोधी वातावरणों को समेट लेने से
(c) दार्शनिक श्रेणी के चरित्रों द्वारा लम्बे भाषण तथा अल्पज्ञ चरित्रों द्वारा उपदेश दिलाने से
(d) साधारण स्तर की स्त्रियों के साथ उत्कृष्ट कोटि की स्त्रियों को एक ही मंच पर ले आने से

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) June 2013

उत्तर : (b)

55. कवि केशवदास की कौन-सी कृति अपने वर्ण्य-विषय की अपेक्षा छन्दों की विविधता में भटक गई लगती है?

- (a) रामचन्द्रिका (b) कविप्रिया
(c) रसिकप्रिया (d) रतन बावनी

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) June 2013

उत्तर : (a)

56. लोकमंगल की भावना के सर्वश्रेष्ठ कवि इनमें से कौन-से हैं?

- (a) मलिक मोहम्मद जायसी
(b) गोस्वामी तुलसीदास
(c) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'
(d) मुक्तिबोध

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) June 2013

उत्तर : (b)

57. 'अन्या से अनन्या' किसकी रचना है?

- (a) मैत्रेयी पुष्पा (b) मृदुला गर्ग
(c) कृष्णा सोबती (d) प्रभा खेतान

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) June 2013

उत्तर : (d)

58. 'आवारा मसीहा' जीवनी में किसका जीवन-चरित्र है?

- (a) बंकिमचन्द्र चटर्जी (b) शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय
(c) भगतसिंह (d) जैनेन्द्र

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) June 2013

उत्तर : (b)

59. 'पिता' कहानी के लेखक कौन हैं?

- (a) शेखर जोशी (b) उषा प्रियंवदा
(c) उदयप्रकाश (d) ज्ञानरंजन

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) June 2013

उत्तर : (d)

60. 'हिन्दी नये चाल में ढली' कथन किसका है?

- (a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) नगेन्द्र

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) June 2013

उत्तर : (b)

61. 'यामा' किसकी रचना है?

- (a) भवानी प्रसाद मिश्र (b) महादेवी वर्मा
(c) अज्ञेय (d) मुक्तिबोध

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) April 2016

उत्तर : (b)

62. हिन्दी का 'कौन'-सा प्रेमाख्यान कवि एक आँख का काना था?

- (a) ईश्वर दास (b) शेखनवी
(c) कुतुबन (d) जायसी

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) April 2016

उत्तर : (d)

63. ज्ञानपीठ पुरस्कार किस क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करने पर दिया जाता है?

- (a) समाज सेवा (b) सिनेमा
(c) विज्ञान (d) साहित्य

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) April 2016

उत्तर : (d)

64. हिन्दी की मूल उत्पत्ति किससे हुई है?

- (a) लौकिक संस्कृत (b) वैदिक संस्कृत
(c) मागधी (d) शौरसेनी अपभ्रंश

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Jan. 2011

उत्तर : (d)

65. 'लोकायतन' किस कवि की रचना है?

- (a) सोहनलाल द्विवेदी (b) सुमित्रानन्दन पन्त
(c) श्रीधर पाठक (d) महादेवी वर्मा

Uttarakhand TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2013

उत्तर : (b)

66. निम्नलिखित में से आचार्य चतुरसेन रचित उपन्यास का नाम है-

- (a) गोदान (b) गुड़ कुण्डार
(c) चन्द्रकान्ता (d) सोमनाथ

Uttarakhand TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2013

उत्तर : (d)

67. रामचरितमानस की रचना की गई है -

- (a) अवधी में (b) ब्रजभाषा में
(c) भोजपुरी में (d) मैथिली में

Uttarakhand TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2013

उत्तर : (a)

68. सुमित्रानन्दन पन्त का जन्म.....में हुआ था।
 (a) भवाली (b) कौसानी
 (c) नैनीताल (d) अल्मोड़ा
Uttarakhand TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2013
 उत्तर : (b)
69. 'पहाड़ पर लालटेन' किसकी रचना है?
 (a) रमेशचन्द्र शाह (b) शिवानी
 (c) मंगलेश डबराल (d) नागार्जन
Uttarakhand TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2013
 उत्तर : (c)
70. जयशंकर प्रसाद बहुत बड़े नाटककार थे। उन्होंने.....
 नाटक की रचना की।
 (a) अजातशत्रु (b) शशिगुप्त
 (c) झाँसी की रानी (d) राजमुकुट
Uttarakhand TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2013
 उत्तर : (a)
71. निम्नलिखित में से रीतिकालीन कवि कौन हैं?
 (a) मीराबाई (b) सूरदास
 (c) नाभादास (d) बिहारी लाल
Uttarakhand TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2013
 उत्तर : (d)

72. 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' के लेखक हैं -
 (a) यशपाल (b) नागार्जन
 (c) गजानन माधव मुक्तिबोध (d) अमृतराय
Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2013
 उत्तर : (c)
73. रामधारी सिंह 'दिनकर' की रचना नहीं है -
 (a) उर्वशी (b) रेणुका
 (c) रश्मिस्थी (d) स्वर्णधूलि
Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2013
 उत्तर : (d)
74. भाषा शिक्षक ने कक्षाकक्ष में व्यक्ति विशेष की आकृति,
 वेशभूषा, मुद्रा, चेष्टा, स्वभाव, सौंदर्य आदि का वर्णन
 किया। शिक्षक किस विधा का शिक्षण करा रहा है?
 (a) यात्रावृत्तांत (b) संस्मरण
 (c) रेखाचित्र (d) जीवनी
Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2012
 उत्तर : (c)

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

- | | |
|---|--|
| <p>1. हिन्दी साहित्य को कितने काल-खंडों में विभक्त किया गया है?
 (a) दो (b) चार
 (c) पाँच (d) तीन</p> <p>2. "पृथ्वीराज रासो" किस कवि की रचना है?
 (a) सारंगधर (b) नरपति नाल्ह
 (c) चंदबरदाई (d) जगनिक</p> <p>3. 'जयचंद प्रकाश' नामक महाकाव्य के लेखक हैं
 (a) बलदेवचंद्र (b) भगवान सिंह
 (c) चंदबरदाई (d) भट्ट केदार</p> <p>4. अमीर खुसरो का वास्तविक नाम क्या था?
 (a) अब्दुल रही (b) शिवप्रसाद
 (c) अबुल हसन (d) सुदर्शन</p> <p>5. कबीरदास, तुलसीदास, सूरदास आदि कौन से काल के संत कवि हैं?
 (a) आदिकाल (b) भक्तिकाल
 (c) रीतिकाल (d) आधुनिककाल</p> <p>6. 'बीजक' किस रचयिता की रचनाओं का संग्रह है?
 (a) जायसी (b) तुलसी
 (c) कबीर (d) सूरदास</p> | <p>7. मलिक मुहम्मद जायसी ने किस भाषा का सरल और साधारण रूप अपनाया था?
 (a) अरबी-फारसी (b) मागधी
 (c) अवधी (d) ब्रजभाषा</p> <p>8. हिरामन सूआ का उल्लेख आता है
 (a) कबीर ग्रंथावली (b) पद्मावत
 (c) सूरसागर (d) रामचरित मानस</p> <p>9. तुलसीदास की कौन-सी काव्य-रचना ब्रजभाषा में है?
 (a) रामचरित्रमानस (b) विनयपत्रिका
 (c) रामलला नहछू (d) रामाज्ञाप्रश्न</p> <p>10. सूरदास के गुरु थे—
 (a) मध्वाचार्य (b) शंकराचार्य
 (c) वल्लभाचार्य (d) व्यासाचार्य</p> <p>11. 'कठिन काव्य का प्रेत' कहलाते हैं—
 (a) अज्ञेय (b) पद्याकर
 (c) केशव (d) बिहारी</p> <p>12. हिन्दी गद्य का सर्वप्रथम युग किसे माना जाता है?
 (a) भारतेन्दु युग (b) द्विवेदी युग
 (c) शुक्ल युग (d) प्रेमचंद युग</p> |
|---|--|

13. 'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल' किसकी काव्य पंक्ति है?
 (a) भवानीप्रसाद मिश्र (b) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
 (c) मैथिलीशरण गुप्त (d) महावीरप्रसाद द्विवेदी
14. खड़ी बोली में सर्वप्रथम लोककवि कौन माने जाते हैं?
 (a) रामधारी सिंह दिनकर (b) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला
 (c) श्याम नारायण पाण्डेय (d) मैथिली शरण गुप्त
15. 'हल्दी घाटी' के रचनाकार कौन है?
 (a) राणाप्रताप (b) हरिऔध
 (c) श्यामनारायण पांडे (d) सोहनलाल द्विवेदी
16. 'अंचल' किस साहित्यकार का उपनाम है?
 (a) हरिवंश राय (b) बालकृष्ण शर्मा
 (c) बद्रीनाथ भट्ट (d) रामेश्वर शुक्ल
17. महादेवी वर्मा का प्रथम काव्य संकलन कौन-सा है?
 (a) नीरजा (b) रश्मि
 (c) नीहार (d) दीपशिखा
18. 'प्रकृति का सुकुमार कवि' किसे कहा जाता है?
 (a) सुमित्रानंदन पंत (b) महादेवी वर्मा
 (c) जयशंकर प्रसाद (d) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
19. हिन्दी साहित्य की लब्धप्रतिष्ठित कृति 'कामायनी' के रचनाकार कौन हैं?
 (a) प्रेमचंद (b) अज्ञेय
 (c) सुदर्शन (d) जयशंकर प्रसाद
20. "तुम रक्तहीन, तुम माँसहीन, हे अस्थिशेष, तुम अस्थिहीन।
 तुम शुद्ध-बुद्ध आत्मा केवल, हे चिरपुराण, हे चिरनवीन॥"
 महात्मा गाँधी के विषय में किस कवि ने यह विचार व्यक्त किया है?
 (a) जयशंकर प्रसाद (b) मैथिलीशरण गुप्त
 (c) सुमित्रानन्दन पंत (d) हरिवंश राय बच्चन
21. 'मधुशाला' किसके द्वारा रचित है?
 (a) महादेवी वर्मा (b) मैथिली शरण गुप्त
 (c) हरिवंशराय बच्चन (d) सुमित्रानन्दन पंत
22. "रश्मिरथी" के रचयिता कौन हैं?
 (a) रामधारी सिंह दिनकर (b) श्यामसुन्दर दास
 (c) शिवसिंह (d) पंडित जगन्नाथ
23. 'अज्ञेय' जी को किस कृति पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला है?
 (a) भग्नदूत
 (b) इत्यलम
 (c) हरी घास पर क्षण भर
 (d) कितनी नावों में कितनी बार
24. इनमें से ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता नहीं है
 (a) नरेश मेहता (b) कुँवर नारायण
 (c) कमलेश्वर (d) दिनकर
25. साहित्य अकादमी पुरस्कार का प्रारंभ कब से हुआ?
 (a) 1955 (b) 1947
 (c) 1960 (d) 1950
26. कला और बूढ़ा चाँद के लिए सुमित्रानंदन पंत को किस साहित्य पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया?
 (a) ज्ञानपीठ पुरस्कार
 (b) व्यास सम्मान
 (c) मंगला प्रसाद पारितोषिक
 (d) हिन्दी साहित्य अकादमी पुरस्कार
27. "अलका सरावगी" को किस रचना के लिए हिन्दी साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला?
 (a) यारों के यार (b) एक लड़की
 (c) कलिकथा : वाया बाईपास (d) कितना बड़ा झूठ
28. मृदुला गर्ग के उपन्यास 'मिलजुल मन' को किस पुरस्कार से सम्मानित किया गया है?
 (a) देव पुरस्कार
 (b) व्यास सम्मान
 (c) ज्ञानपीठ
 (d) साहित्य अकादमी पुरस्कार
29. 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' किसकी रचना है?
 (a) ज्योतिरीश्वर ठाकुर
 (b) अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध"
 (c) किशोरीदास बाजपेयी
 (d) चंद्रधर शर्मा गुलेरी
30. 'निष्कवच' उपन्यास किस लेखक की कृति है?
 (a) राजी सेठ (b) शिवानी
 (c) कृष्णा सोबती (d) अमृता प्रीतम

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (b) | 2. (c) | 3. (d) | 4. (c) | 5. (b) | 6. (c) | 7. (c) | 8. (b) | 9. (b) | 10. (c) |
| 11. (c) | 12. (a) | 13. (b) | 14. (d) | 15. (c) | 16. (d) | 17. (c) | 18. (a) | 19. (d) | 20. (c) |
| 21. (c) | 22. (a) | 23. (d) | 24. (c) | 25. (a) | 26. (d) | 27. (c) | 28. (d) | 29. (b) | 30. (a) |

दिये हुए गद्यांश का शीर्षक, सार एवं आधारित प्रश्नोत्तर

अपठित गद्यांश मानसिक स्तर का स्पष्ट अभिज्ञान कराता है। यह सम्बन्धित विषय के समझने के साथ ही साथ विश्लेषण करने की स्पष्ट क्षमता का मूल्यांकन कराता है। दिये गये पाठ्यक्रम में यह प्रश्न प्रतियोगी के मौलिक प्रतिभा का मूल्यांकन करता है। इसमें प्रश्न के अंतर्गत एक उद्धरण दिया गया होता है। उसका सम्यक अवलोकन कर उसके नीचे दिये गये गद्यांश सम्बन्धित प्रश्नों का उत्तर देना होता है। ये प्रश्न बहुविकल्पी प्रकार के होते हैं। उन्हीं निर्दिष्ट चारों विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करना होता है जो प्रतियोगी की अवबोध क्षमता का परिचायक होती है।

कतिपय आवश्यक बातें

प्रतियोगी से यह अपेक्षा की जाती है कि प्रश्नगत उद्धरण गम्भीरता से पढ़कर उसके अर्थ गाम्भीर्य को अपने अंदर धारण कर ले ताकि पूछे गये विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कर सकना उसके लिए सहज हो सके। इसके लिए आवश्यक बातें निम्न हैं-

- (a) इसके अवलोकन में गहरे ध्यान की आवश्यकता होती है। अर्थ-बोध उद्धरणों को विशेष ध्यान देकर समग्र रूप से पढ़ने की आवश्यकता है।
- (b) प्रत्येक शब्द और वाक्य पर विशेष समझ रखते हुए आगे बढ़ना चाहिए ताकि लेखक का आशय स्पष्ट होता रहे।
- (c) ध्यातव्य है कि अर्थ-बोध में भाषा बोध का आशय दिये गये उद्धरण के शाब्दिक आशय को समझने की क्षमता से है। इसलिए यह आवश्यक है कि प्रतियोगी को भाषा पर अच्छी पकड़ होनी चाहिए।
- (d) 'एकाग्रता' परीक्षा का एक अन्य विशिष्ट पहलू है, जिसकी परीक्षा के समय विशेष आवश्यकता होती है। एकाग्रता के विचलन में भाव का भंग होना सम्भाव्य रहता है। एकाग्रता के अभाव में अनुच्छेद को बार-बार पढ़ने पर समय की हानि होती है। एकाग्रता से हम सही उत्तर बिना समय के अनावश्यक खर्च के दे सकते हैं।

निहितार्थ की समझ

- (1) एकाग्रता के साथ अनुच्छेद के पठन के बीच हमें इस बात पर विशेष ध्यान देना है कि इसका मूल कथ्य क्या है? पंक्तिबद्ध भावों का हृदयंगम करना आवश्यक है। पढ़ते समय हमारे मन-मस्तिष्क पर कही हुई बात का एक चित्र उभरता रहे और वे सारी बातें हम धारण करते रहें ताकि प्रश्नों के पढ़ने पर तत्काल उसका उत्तर सामने स्पष्ट हो जाय। निश्चय ही इसके लिए सायास-प्रयास की आवश्यकता होती है। इससे पाठ के शब्द और अर्थ को सहजता से समझने में मदद मिलेगी।
- (2) मूल अनुच्छेद में दिये गये निहितार्थ को समझने का आशय यह है कि विषय-वस्तु के माध्यम से कही जा रही मूल कथ्य का स्पष्ट भान हो सके। चूँकि उद्धरणगत प्रश्न कभी-कभी सीधे न होकर उद्धरण में चिपके हुए होते हैं जिसका सही उत्तर हम तभी

दे सकते हैं जब हम समग्र निहितार्थ भावों का सूक्ष्मतम अवलोकन करते हैं।

- (3) निर्दिष्ट अनुच्छेद को पढ़ते समय यह ध्यान दें कि कतिपय पंक्तियाँ जो आपने पढ़ी हैं, उसके मूल भावों को क्या आपने आत्मसात कर लिया है? स्वयं से पूछें। यदि भावगत बातें समझ में न आई हों तो पुनः लौट चले, एक बार और पढ़ लें। पढ़ने में शीघ्रता के बजाय समझने में ज्यादा ध्यान दें। पैराग्राफ के अलग-अलग भावों के साथ-साथ पूरे उद्धरण के मूल कथ्य को समझना होगा।
- (4) प्रश्न हमारे मस्तिष्क को उत्तर पाने के लिए सक्रिय कर देता है। अवतरण को पढ़ने से पूर्व यदि हम प्रश्नों का अवलोकन कर लें तो एकाग्रता तो बढ़ती ही है प्रश्न के उत्तर तक पहुँचने में शीघ्रता भी होती है। कभी-कभी गद्यांश में निहित तथ्यों पर प्रश्न सीधेतौर पर आधारित होता है। ऐसे प्रश्नों के उत्तर शीघ्रता एवं सरलता से प्राप्त हो जाते हैं।

उद्धरण कैसे पढ़ें

- (1) कतिपय लोगों की यह अवधारणा है कि उद्धरण का पठन जितनी तीव्रता से हम करेंगे उतना ही बेहतर होगा किन्तु यह बात सर्वथा उचित नहीं। प्रश्न यहाँ यह उठ खड़ा होता है कि जितनी तीव्रता से हम पठन करते हैं, क्या उतनी ही तीव्रता से हम उद्धरणगत भावों को आत्मसात भी करते हैं। जब तक हमारी पकड़ विशेष कथ्य पर नहीं होगी, इस तरह तीव्रता से पढ़ लेना कोई आशयपूर्ण नहीं होगा।
- (2) यह बात सर्वमान्य है कि तेजी से पढ़ने पर तेजी से हल किया जा सकता है किन्तु यह हमारी ग्राह्य क्षमता पर अवलम्बित है जो हमारी बुद्धिलब्धि को स्पष्ट करती है। जैसा कि पूर्व में हम इस बात को स्पष्ट कर चुके हैं, अखबारी पद्धति से उद्धरण पाठ का कोई लेना-देना नहीं है। अतः समझ की गहरी पैठ होनी चाहिए तभी हम प्रश्नों का सहजता से उत्तर दे सकने में समर्थ हो सकेंगे। तीव्रता से पढ़ने की तुलना में गम्भीरता से हमें पढ़ना चाहिए। सामान्य ढंग से पढ़ने पर भावों को स्वतः ही हम आत्मसात करते जाते हैं। सही अर्थों में तो यही कहना उचित है कि हमारी जो गति पढ़ने की हो, उसी गति से हमें चलना चाहिए। किन्तु यह भी ध्यातव्य रहे कि इस प्रश्न के हल होने में कितना समय लगता है क्योंकि आगे अभी अन्य प्रश्नों को भी हल करना है। अतः समय पर दृष्टि देने के साथ-साथ समझ पर भी दृष्टि रखनी होगी।
- (3) अनुच्छेद आधारित प्रश्नों के अभ्यास के समय प्रायः ऐसे क्लिष्ट शब्द आ गुजरते हैं जो हमारे सामने कभी आये ही नहीं होते हैं। अनुच्छेद का आशय वहाँ अवरुद्ध हो जाता है। ऐसी स्थिति के लिए हमें चाहिए कि उन शब्दों को अपनी डायरी में नोट कर लें और शब्दकोश से उसमें आशय को समझे। प्रायः शब्दों का प्रयोग भी बड़ा महत्वपूर्ण होता है। किस तरह के वाक्य में किस तरह के शब्दों का प्रयोग किया जाय। यह बड़ा महत्वपूर्ण है।

उत्तर देने सम्बन्धी महत्वपूर्ण बातें

- (i) जिस समय हम अनुच्छेद पढ़ रहे होते हैं उस समय कतिपय विशेष शब्दों या वाक्यों को रेखांकित करते चलें। इससे उद्धरण के विशेष कथ्य को समझने में आसानी होती है कुछ वाक्य उद्धरण के मूल आशय को अपने में समाहित करते हैं। रेखांकित वाक्यों की मदद से प्रश्नों के हल में सहजता होगी।
- (ii) उद्धरणगत प्रश्न का अवलोकन करने के उपरांत थोड़ा विराम लें। प्रश्न की पुनरावृत्ति करें। उसके उत्तर हेतु स्वयं विचार करें यदि उत्तर सहज नहीं मिल रहा है तो सद्यः उद्धरण का अवलोकन करें। समय को नष्ट न करें।
- (iii) प्रश्न को बड़ी सावधानी से पढ़ें। नकारात्मक प्रश्नों पर भी विशेष ध्यान रखें शीघ्रता के कारण प्रश्नों की प्रकृति न समझ पाने से उत्तर गलत हो जाता है। यह भी ध्यान रहे कि प्रश्नगत उत्तर सर्वथा उद्धरण तथ्यों पर ही आधारित होना चाहिए। भले ही उसका कोई सही सर्वमान्य उत्तर आपकी समझ में है।
- (iv) प्रश्नगत विकल्पों को बड़ी सावधानी से पढ़ना चाहिए। कभी-कभी दो विकल्प भी प्रायः उत्तर के करीब लगते हैं किन्तु उसमें भी सही उत्तर कोई एक ही होता है। अतएव यहाँ पर पैनी दृष्टि रखनी आवश्यक है। ध्यान रहे कि जो विकल्प गलत भासित होते हैं, उसमें तत्काल निशान लगा दें।
- (v) प्रश्न का अंतिम छोर बहुत महत्वपूर्ण होता है। उसे बहुत ध्यान से पढ़ना चाहिए। कभी-कभी प्रश्न के अन्तिम छोर में 'नहीं' (निषेधात्मक भाव वाला शब्द) शामिल रहता है और हम जल्दबाजी में उस पर ध्यान नहीं देते और उत्तर गलत कर देते हैं। यदि आप किसी प्रश्न का उत्तर देने में असमर्थ हो रहे हों तो तत्काल उसे छोड़कर आगे बढ़ जाना ही श्रेयस्कर है। बाद में जब समय बचे तब उसे उठाना चाहिए।

विगत परीक्षाओं में अपठित अनुच्छेद

निर्देश : गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में सबसे उचित विकल्प चुनिए।

मनु बहन ने पूरे दिन की डायरी लिखी, लेकिन एक जगह लिख दिया, “सफाई वगैरह की।”

गाँधी जी प्रतिदिन डायरी पढ़कर उसपर अपने हस्ताक्षर करते थे। आज की डायरी पर हस्ताक्षर करते हुए गाँधीजी ने लिखा है, “कातने की गति का हिसाब लिखा जाए। मन में आए हुए विचार लिखे जाएँ। जो-जो पढ़ा हो, उसकी टिप्पणी लिखी जाए। वगैरह का उपयोग नहीं चाहिए। डायरी में ‘वगैरह’ शब्द के लिए कोई स्थान नहीं है।”

जिसने जो पढ़ा हो, वह लिखा जाए। ऐसा करने से पढ़ा हुआ कितना पच गया है, यह मालूम हो जाएगा। जो बातें हुई हों वे लिखी जाएँ। मनु को अपनी गलती का अहसास किया और डायरी विधा की पवित्रता को समझा।

गाँधीजी ने पुनः मनु से कहा- “डायरी लिखना आसान कार्य नहीं है। यह इबादत करने जैसी विधा है। हमें शुद्ध व सच्चे रूप से प्रत्येक छोटी-बड़ी घटना को निष्पक्ष रूप से लिखना चाहिए चाहे कोई बात हमारे विरुद्ध ही क्यों न हो। इससे हममें सच्चाई स्वीकार करने की शक्ति प्राप्त होगी।”

(गाँधी के रोचक संस्मरण)

1. मनु को अपनी किस गलती का अहसास हुआ?
(a) उन्होंने गाँधीजी की बात नहीं मानी थी
(b) मनु ने डायरी में कातने की गति का हिसाब लिखा था
(c) उन्होंने डायरी में सही-सही बातें लिखी थीं
(d) उन्होंने डायरी में ‘वगैरह’ शब्द का प्रयोग किया था।
CTET- Ist Paper (I-V) June 2011
- उत्तर : (d)
2. गाँधीजी ने ‘वगैरह’ शब्द पर अपनी आपत्ति क्यों जताई?
(a) ‘वगैरह’ शब्द की जगह आदि शब्द का प्रयोग सही है
(b) गाँधीजी चाहते थे कि सही भाषा का प्रयोग हो
(c) ‘वगैरह’ शब्द में कार्य और विचार की स्पष्टता नहीं है
(d) वे चाहते थे कि बातों को ज्यों-का-त्यों लिखा जाए
CTET- Ist Paper (I-V) June 2011
- उत्तर : (c)
3. गाँधीजी ने डायरी लिखने को इबादत करने जैसा क्यों कहा है?
(a) दोनों में समय लगता है
(b) दोनों कार्य हमारे कर्तव्यों में शामिल हैं
(c) दोनों कार्य रोज़ किए जाते हैं
(d) दोनों में सच्चाई और ईमानदारी चाहिए
CTET- Ist Paper (I-V) June 2011
- उत्तर : (d)
4. डायरी लिखना इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि -
(a) इसमें व्यक्ति स्वयं का विश्लेषण करता है और स्व-मूल्यांकन भी करता है
(b) इससे व्यक्ति पूरे दिन किए गए जमा-खर्च का हिसाब-किताब कर सकता है
(c) गाँधीजी इसे महत्वपूर्ण मानते हैं
(d) इससे व्यक्ति का समय अच्छा गुजर जाता है।
CTET- Ist Paper (I-V) June 2011
- उत्तर : (a)
5. गाँधीजी प्रतिदिन डायरी पढ़कर क्या करते थे?
(a) हस्ताक्षर करते थे क्योंकि यह नियम था
(b) लोगों को उनकी गलती का अहसास कराते थे
(c) डायरी पर हस्ताक्षर करते थे और यह देखते थे कि व्यक्ति अपने कार्य और विचार में किस दिशा में जा रहा है
(d) हस्ताक्षर करते थे ताकि जाँच का प्रमाण दिया जा सके
CTET- Ist Paper (I-V) June 2011
- उत्तर : (c)
6. ‘प्रतिदिन’ शब्द में कौन-सा समास है?
(a) द्वंद्व समास
(b) अव्ययीभाव समास
(c) द्विगु समास
(d) तत्पुरुष समास
CTET- Ist Paper (I-V) June 2011
- उत्तर : (b)
7. ‘पढ़ा हुआ कितना पच गया है’ का अर्थ है—
(a) कितना सही उच्चारण के साथ पढ़ा है
(b) पढ़े हुए का कितना विश्लेषण किया है
(c) पढ़ा हुआ कितना समझ में आया है
(d) पढ़ा हुआ कितना आत्मसात् किया है
CTET- Ist Paper (I-V) June 2011
- उत्तर : (d)
8. ‘कार्य’ शब्द का तद्भव रूप बताइए—
(a) सेवा
(b) कारज
(c) काज
(d) काम
CTET- Ist Paper (I-V) June 2011
- उत्तर : (c)

9. 'विचार' में इक प्रत्यय लगाकर शब्द बनेगा—

- (a) वैचारीक (b) विचारिक
(c) विचौरिक (d) वैचारिक

CTET - Ist Paper (I-V) June 2011

उत्तर : (d)

निर्देश : गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में सबसे उचित विकल्प चुनिए।

मैं जिस घर में रहती थी, वहाँ मेरी आदत बहुत सवेरे उठने की थी। एक दिन उतने सवेरे एक छोटा बच्चा, जो शायद डेढ़ साल से कम का होगा, मेरे कमरे में आया। मैंने सोचा कि यह शायद भूखा होगा और उससे पूछा कि वह कुछ खाना चाहता है? उसने उत्तर दिया, 'कीड़े।' मैंने आश्चर्य से कहा, 'कीड़े?' जब उसने देखा कि मेरी समझ में उसकी बात नहीं आ रही है तो मेरी सहायता के लिए उसने एक शब्द और जोड़ा 'अण्डा।' मैंने अपने मन में सोचा कि इतने सवेरे कुछ पीना चाहता है क्या? यह आखिर कहना क्या चाह रहा है? उसने फिर कहा, 'नीना, अण्डे, कीड़े।' अब मुझे पूरी बात समझ में आ गई। एक दिन पहले, उसकी बहन नीना कागज पर अण्डे की शक्ल बनाकर उसमें रंग भर रही थी। इस बच्चे की इच्छा थी कि वह भी रंग भरे, पर नीना ने उसे गुस्से में आकर भगा दिया। उसने नीना का विरोध नहीं किया और बड़े धैर्य और लगन के साथ मौके का इन्तजार करता रहा। मैंने उसे क्रेयॉन का रंग दे दिया और उसका चेहरा खुशी से दमक उठा। उससे अण्डे के आकार की रेखा नहीं खींची गई, तो मैंने उसके लिए चित्र बना दिया। फिर उसने अपनी टेढ़ी-मेढ़ी लकीरों से उसमें रंग भरना शुरू कर दिया। उसकी बहन सीधी रेखाओं में रंग भरती थी, और उसने कीड़े की तरह लहरदार रेखाओं में रंग भरा।

-मारिया मांटेसरी

1. बच्चे ने 'कीड़े' के बाद 'अण्डा', 'नीना, अण्डे, कीड़े' शब्दों का प्रयोग किया, क्योंकि—

CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011

- (a) वह रंग भरने की बात बताना चाहता था
(b) वह अण्डा बनाना चाहता था
(c) वह कागज और क्रेयॉन चाहता था
(d) वह जान गया था कि लेखिका उसकी बात समझ नहीं पाई है

उत्तर : (d)

2. अनुच्छेद से पता चलता है कि डेढ़ साल के बच्चे —

CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011

- (a) कागज चाहते हैं
(b) सम्प्रेषण के लिए कथ्य के मुख्य शब्दों का प्रयोग करते हैं
(c) रंग चाहते हैं
(d) तस्वीरें चाहते हैं

उत्तर : (b)

3. टेढ़ी-मेढ़ी लकीरों को 'कीड़े' कहना इस ओर संकेत करता है कि बच्चा—

CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011

- (a) हर हालत में अपनी बात कह देता है
(b) लकीरों को कीड़ा मानता है
(c) टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें ही बना सकता है
(d) दो अलग चीजों में आकृति के आधार पर समानता खोज लेता है

उत्तर : (d)

4. डेढ़ साल का बच्चा 'अण्डा' नहीं बना पाया। यह बात किस ओर संकेत करती है?

CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011

- (a) बच्चा चित्र बनाने में सक्षम नहीं है
(b) बच्चे ने अण्डा देखा नहीं इसलिए वह अण्डा नहीं बना पाया
(c) उसका अभी अपने हस्त संचालन की गति और दिशा पर नियन्त्रण नहीं हो पाया है
(d) बच्चा अण्डा नहीं बना सकता

उत्तर : (c)

5. रेखाओं को बच्चे ने 'कीड़े' कहा। बच्चा वृत्त को क्या कह सकता है?

CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011

- (a) चूड़ी (b) पेड़
(c) छतरी (d) चम्मच

उत्तर : (a)

6. 'उतने सवेरे' पद में 'उतने' शब्द किस ओर संकेत करता है?

CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011

- (a) बहुत सवेरे की ओर
(b) सवेरे का वह समय जितने बजे लेखिका को उठने की आदत है
(c) बहुत जल्दी
(d) सवेरे की ओर

उत्तर : (b)

7. अनुच्छेद में से मिश्रित वाक्य का उदाहरण है—

CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011

- (a) यह आखिर कहना क्या चाह रहा है?
(b) अब मुझे पूरी बात समझ में आ गई
(c) मैंने आश्चर्य से कहा, 'कीड़े.'
(d) उसने नीना का विरोध नहीं किया और बड़े धैर्य और लगन के साथ मौके का इन्तजार करता रहा

उत्तर : (c)

8. 'उसका चेहरा खुशी से दमक उठा।' वाक्य में रेखांकित अंश के स्थान पर कौन-सा मुहावरा आएगा?

CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011

- (a) खुश हो गया (b) खुशी से फूला न समाया
(c) गद्-गद् हो गया (d) खिल उठा

उत्तर : (d)

9. 'इतने सवेरे कुछ पीना चाहता है क्या?' वाक्य में 'कुछ' शब्द है—

CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011

- (a) प्रश्नवाचक सर्वनाम
(b) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
(c) निश्चयवाचक सर्वनाम
(d) अनिश्चय संख्यावाचक विश्लेषण

उत्तर : (b)

निर्देश: निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के लिए सबसे उचित विकल्प चुनिए।

कैसे कहूँ मैं शिक्षा? क्या है शिक्षा का सच? कैसा होता है शिक्षित व्यक्ति और कैसा होता है पढ़ा-लिखा समाज? मेरे गुरु श्री दयालचन्द्र जी सोनी तो पूरी एक काव्यात्मक पुस्तक लिख गए। इस पुस्तक का नाम है, हूँ अणिभणियों शिक्षित हूँ। उनका आशय स्पष्ट है कि हर पढ़ा-लिखा आदमी अनपढ़ है। उन्होंने जब यह पुस्तक लिखी तो साफ कहा कि यह किताब उनके पूरे जीवन की शिक्षा का सार है। तब फिर हमें यह भी मान लेना चाहिए कि हमारा पूरा पढ़ा-लिखा समाज खासा अनपढ़ है, अशिक्षित है। तब फिर बताइए कि शिक्षा को कहाँ खोजें?

कहते हैं कि शिक्षा बालक के जन्म के साथ बालक को मिली प्रतिभा का विकास है। उसकी सोई हुई शक्तियों को जगाने का नाम शिक्षा है। मगर ऐसा तो तब सम्भव है जब हम जान लें कि कौन-कौन-सा बालक कौन-कौन-सी प्रतिभा के साथ पैदा हुआ है? उसके शरीर में एवं उसके मन-मस्तिष्क में कौन-कौन सी शक्तियाँ सोई हुई हैं?

इसका अर्थ यह हुआ कि जो बालक शाला में आया है उसको हम पहले पढ़ें। हर बालक को पढ़-पढ़ कर पहचानें कि वह क्या है? उसकी प्रदत्त प्रतिभा क्या है? और कौन-कौन सी सुषुप्त शक्तियों को लिए हुए वह हमारे सामने उपस्थित हुआ है?

1. शिक्षा का अर्थ है –

- (a) बच्चों को जानकारी देना
- (b) बच्चों को केवल अक्षर ज्ञान देना
- (c) बच्चों को शक्तिशाली बनाना
- (d) बच्चों में विद्यमान शक्तियों का प्रस्फुटित करना

CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013

उत्तर : (d)

2. लेखक के अनुसार –

- (a) सभी बच्चे समान रूप से प्रतिभाशाली होते हैं
- (b) बच्चों में अलग-अलग प्रतिभा होती है
- (c) सभी बच्चे शाला जाकर प्रतिभाशाली बन जाते हैं
- (d) सभी बच्चों की शक्तियाँ सुषुप्त अवस्था में ही रहती हैं

CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013

उत्तर : (b)

3. बच्चों को शिक्षा देने के लिए सबसे पहले क्या जरूरी है?

- (a) प्रतिभाओं के विभिन्न रूप जानना
- (b) बच्चों को प्रतिभाओं के अनुसार वर्गीकृत करना
- (c) बच्चों की समस्त क्षमताओं, प्रतिभाओं को जानने के लिए उन्हें पढ़ना
- (d) बच्चों को पढ़ाना

CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013

उत्तर : (c)

4. इस गद्यांश में शिक्षा का कौन-सा सिद्धान्त निहित है?

- (a) सभी बच्चे समान रूप से प्रतिभाशाली होते हैं
- (b) सभी बच्चों में वैयक्तिक भिन्नता होती है
- (c) शक्तियाँ सदैव सुषुप्त अवस्था में ही रहती हैं
- (d) पढ़े-लिखे लोग अनपढ़ होते हैं

CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013

उत्तर : (b)

5. हर बालक को पढ़-पढ़ कर पहचानें कि वह क्या है? वाक्य में 'पहचानें' क्रिया का कर्ता हो सकता है—

- (a) मैं
- (b) हम
- (c) तुम
- (d) वह

CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013

उत्तर : (b)

6. 'उसकी प्रदत्त प्रतिभा क्या है?' वाक्य है—

- (a) विधानवाचक
- (b) नकारात्मक
- (c) प्रश्नवाचक
- (d) सन्देशवाचक

CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013

उत्तर : (c)

7. 'शरीर' में इक प्रत्यय लगाने पर शब्द बनेगा—

- (a) शरीरिक
- (b) शारीरीक
- (c) शारीरिक
- (d) शारिरिक

CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013

उत्तर : (c)

8. लेखक के अनुसार शिक्षित होना और साक्षर होना—

- (a) दोनों समान हैं
- (b) दोनों में मूलभूत अन्तर होता है
- (c) दोनों पर्यायवाची हैं
- (d) दोनों में थोड़ा-बहुत अन्तर है

CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013

उत्तर : (b)

9. यहाँ 'पढ़ा-लिखा' होने से तात्पर्य है—

- (a) शिक्षित होना
- (b) अशिक्षित होना
- (c) साक्षर होना
- (d) निरक्षर होना

CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013

उत्तर : (c)

निर्देश : गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में सबसे उचित विकल्प चुनिए।

समस्याओं का हल ढूढ़ने की क्षमता पर एक अध्ययन किया गया। इसमें भारत में तीन तरह के बच्चों के बीच तुलना की गई- एक तरफ वे बच्चे जो दुकानदारी करते हैं पर स्कूल नहीं जाते, ऐसे बच्चे जो दुकान सँभालते हैं और स्कूल भी जाते हैं और तीसरा समूह उन बच्चों का था जो स्कूल जाते हैं पर दुकान पर कोई मदद नहीं करते।

उनसे गणना के बाद इबाराती सवाल पूछे गए। दोनों ही तरह के सवालों में उन स्कूली बच्चों ने जो दुकानदार नहीं हैं, मौखिक गणना या मनगणित का प्रयोग बहुत कम किया, बनिस्बत उनके जो दुकानदार थे। स्कूली बच्चों ने ऐसी गलतियाँ भी कीं, जिनका कारण नहीं समझा जा सकता। इससे यह साबित होता है कि दुकानदारी से जुड़े हुए बच्चे हिसाब लगाने में गलती नहीं कर सकते क्योंकि इसका सीधा असर उनके काम पर पड़ता है, जबकि स्कूलों के बच्चे वहीं हिसाब लगाने में अक्सर भयंकर गलतियाँ कर देते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि जिन बच्चों को रोजमर्रा की जिंदगी में इस तरह के सवालों से जूझना पड़ता है, वे अपने लिए जरूरी गतिगतीय क्षमता हासिल कर लेते हैं।

लेकिन साथ ही इस बात पर भी गौर करना महत्वपूर्ण है कि इस तरह की दक्षताएँ एक स्तर तक और एक कार्य-क्षेत्र तक सीमित होकर रह जाती हैं। इसलिए वे सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश जो कि ज्ञान को बनाने व बढ़ाने में मदद करते हैं, वही उस ज्ञान को संकुचित और सीमित भी कर सकते हैं।

1. समस्याओं का हल खोजने पर आधारित अध्ययन किस विषय से जुड़ा हुआ था?

- (a) सामाजिक विज्ञान
- (b) गणित
- (c) भाषा
- (d) दुकानदारी

CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012

उत्तर : (b)

2. किन बच्चों ने सवाल हल करने में मौखिक गणना का ज्यादा प्रयोग किया?

- (a) जो सिर्फ स्कूल जाते हैं
- (b) जो बच्चे न तो दुकानदारी करते हैं और न ही स्कूल जाते हैं
- (c) जो स्कूली बच्चे दुकानदारी नहीं करते
- (d) जो दुकानदारी करते हैं

CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012

उत्तर : (d)

3. अनुच्छेद के आधार पर कहा जा सकता है कि—
- बच्चे रोजमर्रा के जीवन में काम आने वाली दक्षताओं को स्वतः ही हासिल कर लेते हैं
 - सिर्फ दुकानदार बच्चे ही गणित सीख सकते हैं
 - बच्चों को गणित सीखना चाहिए
 - बच्चों को गणित सीखने के लिए दुकानदारी करनी चाहिए

CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012

उत्तर : (a)

4. दुकानदार बच्चे हिसाब लगाने में प्रायः गलती नहीं करते क्योंकि—

- वे कभी भी गलती नहीं करते
- गलती का असर उनके काम पर पड़ता है
- इससे उन्हें माता-पिता से डाँट पड़ेगी
- वे जन्म से ही बहुत दक्ष हैं

CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012

उत्तर : (b)

5. जो दक्षताएँ हमारे दैनिक जीवन में काम नहीं आती उनमें हमारा प्रदर्शन अक्सर—

- खराब-अच्छा होता रहता है
- संतोषजनक होता है
- खराब होता है
- अच्छा होता है

CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012

उत्तर : (a)

6. अनुच्छेद के आधार पर बताइए कि सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश ज्ञान को —

- सीमित कर सकता है
- बनाने में मदद भी करता है और उसे संकुचित, सीमित भी कर सकता है
- बनाने में मदद करता है
- संकुचित कर सकता है

CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012

उत्तर : (b)

7. 'इक' प्रत्यय का उदाहरण है—

- सांस्कृतिक
- चूँकि
- सीमित
- संकुचित

CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012

उत्तर : (a)

8. 'मनगणित' का अर्थ है—

- कठिन गणित
- मनगढ़ित गणित
- मनपसंद गणित
- मन-ही-मन हिसाब लगाना

CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012

उत्तर : (d)

9. संयुक्त क्रिया का उदाहरण है—

- दुकान सँभालते हैं
- हिसाब लगाते हैं
- स्कूल जाते हैं
- अध्ययन किया गया

CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012

उत्तर : (d)

निर्देश : नीचे दिए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उचित उत्तर दीजिए।

क्या आपने कभी महसूस किया है कि किसी सवाल का सही उत्तर मिल जाने के बाद सिर्फ उकताहट के सिवा कुछ बाकी नहीं बचता। इसके बाद सारे रास्ते बन्द से लगने लगते हैं। दूसरी ओर एक गलत जवाब उतना ही रोचक होता है जितना कोई रहस्यमय कल्ल!

मुझे इस बात पर आश्चर्य होता है कि अपने अट्ठाइस वर्षों के अध्यापन के अनुभव में मैंने गलत उत्तरों से कितना कुछ सीखा है। अपनी खुद की और अपने विद्यार्थियों, दोनों द्वारा की गई गलतियों से। अब जब भी कोई विद्यार्थी किसी प्रश्न का गलत उत्तर देता है, तो मैं उससे सबसे पहले यह पूछता हूँ कि उसने ऐसा उत्तर क्या सोचकर दिया?

कला-संकाय के छात्र अक्सर यह शिकायत करते हैं कि विज्ञान-सम्बन्धी परीक्षाएँ उतनी रोमांचक नहीं होती-क्योंकि उनके प्रश्नों और उत्तरों का सही-सही अनुमान लगाया जा सकता है। यदि व्यक्ति को किसी प्रश्न को हल करने का तरीका पहले से ही मालूम है, तो उसके लिए कोई चुनौती नहीं बचती। यही सही है, भौतिक विज्ञान के शिक्षक बहुत कड़ी मेहनत करते हैं और सुनिश्चित करना चाहते हैं कि उनके विद्यार्थी सही उत्तर तक पहुँच पाएँ।

हालाँकि यह भी अपनी जगह सच है कि भौतिक विज्ञान के शिक्षक के लिए सबसे मजेदार स्थिति तब पैदा होती है जब विद्यार्थी एक ऐसा गलत जवाब कर देने की क्षमता हो। यही वह स्थिति होती है जब भौतिकी के किसी पहलू पर पकड़ बनाने की कोशिश कर रहे विद्यार्थी के दिमाग की कशमकश को समझा जा सकता है।

बहुत-से गलत जवाबों की तह में कुछ सही तथ्य और सोचने की शक्ति छिपी होती है। हो सकता है कि उत्तर देने वाला अपना तर्क सही न दे पाया हो या शिक्षक द्वारा दी गई व्याख्या को सही प्रकार से न समझा गया हो या फिर ऐसा भी हो सकता है कि जिस रूप में उसके समक्ष तथ्य प्रस्तुत किए गए उन्हीं में कोई कमी रह गई हो। हो सकता है कि भौतिक विज्ञान के सहज नियमों को समझने में ही कोई भूल हुई हो।

1. गलत जवाब को रोचक क्यों कहा गया है?

- गलत जवाब पर हँसने को मिलता है
- गलत जवाब प्रश्नकर्ता को सोचने के लिए प्रेरित कर सकते हैं
- गलत जवाब रोचक ही होते हैं
- गलत जवाब में बेतुकी बातें होती हैं

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012

उत्तर : (b)

2. लेखक ने अपने और अपने विद्यार्थियों के गलत जवाब से क्या सीखा?

- गलत जवाब देने से रोमांच समाप्त हो जाता है
- लोग गलत जवाब देकर रोमांच महसूस करते हैं
- सवालियों के सही जवाब
- लोगों के सोचने के तरीके अलग-अलग होते हैं

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012

उत्तर : (d)

3. कला-संकाय के छात्रों को विज्ञान की परीक्षाएँ उतनी रोमांचक नहीं लगती थीं, क्योंकि—

- विज्ञान की परीक्षाएँ अनुमान लगाने का अवसर नहीं देती क्योंकि उसके जवाब तयशुदा हैं
- विज्ञान की परीक्षाओं में चुनौतीपूर्ण प्रश्न होते हैं
- विज्ञान के सभी सवालियों के जवाब सुनिश्चित हैं
- विज्ञान की परीक्षाओं में अच्छे सवाल नहीं होते थे

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012

उत्तर : (c)

4. अनुच्छेद के आधार पर इनमें से कौन-सा कथन गलत है?
- गलत जवाब बच्चों के दिमाग में चल रही चिन्तन प्रक्रिया को उजागर करने की कोशिश करते हैं
 - गलत उत्तर से दिमाग में कशमकश होने लगती है
 - भौतिक विज्ञान के शिक्षक बच्चों से सही जवाब चाहते थे
 - भौतिक विज्ञान के शिक्षक सही उत्तर के लिए बहुत मेहनत करते थे

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012

उत्तर : (b)

5. गलत जवाब का क्या कारण नहीं हो सकता?

- व्याख्या को सही रूप में प्रस्तुत न करना
- नियमों में कमियाँ
- तर्क का अभाव, तथ्यों की सही उपलब्धि
- समझ न आना

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012

उत्तर : (b)

6. पाठ में मुख्य रूप से यह कहा गया है कि—

- गलत जवाब यह बताता है कि बच्चे के दिमाग में क्या चल रहा है?
- गलत जवाब की मुख्य जिम्मेदारी बच्चे की है
- गलत जवाब बच्चों की चिन्तन-प्रक्रिया को कुन्द कर देते हैं
- गलत जवाब शिक्षकों को अच्छे लगते हैं

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012

उत्तर : (a)

7. 'विज्ञान' में 'इक' प्रत्यय लगाने से शब्द बनेगा—

- वेज्ञानिक
- विज्ञानीक
- विज्ञानिक
- वैज्ञानिक

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012

उत्तर : (d)

8. परीक्षा, प्रश्न, गलती शब्द के बहुवचन रूप है—

- परीक्षाएँ, प्रश्न, गलतियों
- परीक्षाएँ, प्रश्न, गलतियाँ
- परीक्षाएँ, प्रश्नों, गलतियाँ
- परीक्षाओं, प्रश्नों, गलतियों

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012

उत्तर : (d)

9. अपनी खुद की और अपने विद्यार्थियों.....वाक्य में रेखांकित सर्वनाम है।

- निजवाचक सर्वनाम
- अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- पुरुषवाचक सर्वनाम
- सम्बन्धवाचक सर्वनाम

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012

उत्तर : (a)

10. नाटक, सिनेमा, परिचर्चा, वाद-विवाद आदि बच्चों की..... व स्वाभाविक.....एवं.....प्रतिक्रिया व्यक्त करने की क्षमता का विकास करने में मदद करते हैं।

- स्वतन्त्र, मौखिक, लिखित
- स्वतन्त्र, प्रभावी, संस्कृतनिष्ठ
- मानक, सहज, प्रभावी
- मानक, प्रभावी, संस्कृतनिष्ठ

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (a)

निर्देश : नीचे दिए गए गद्यांश को पढ़कर सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए।

समूची स्वार्थी व अहं-प्रेरित प्रवृत्तियाँ नकारात्मक हैं, ऐसे कर्मों में ऊँचे उद्देश्य नहीं होते, उनमें लोक-संग्रह नहीं होता, भव्य आदर्श नहीं होते। दूसरे, भले ही आप अपने सामने एक ऊँचा आदर्श रखें, तो भी आपके कर्म यदि आपके मन के चाहे या अनचाहे से प्रेरित हैं, तो वे हासमान ही होंगे, क्योंकि पसन्द-नापसन्द से किए जाते कार्य वासनाओं को बढ़ाए बिना नहीं रहते। कोई कार्य आपको महज इस आधार पर नहीं करना चाहिए कि वह आपको पसन्द है। उसी तरह कोई कार्य करने से आपको महज इस आधार पर नहीं कतराना चाहिए कि वह कार्य आपका मनचाहा नहीं है। कार्य का निर्णय बुद्धि-विवेक के आधार पर होना चाहिए, मनचली भावनाओं, तुनकमिजाजी के आधार पर कर्तई नहीं। इस एक बात को हमेशा याद रखिए कि पसन्द और नापसन्द आपके सबसे बड़े शत्रु हैं। आप इन्हें पहचानते तक नहीं। उल्टे आप इन्हें पाल-पोसकर दुलारते हैं। वे तो हर क्षण आपकी हानि व हास करने पर ही तुलें हैं। इनसे निबटने का व्यावहारिक मार्ग यह है कि अपनी रुचि और अरुचि का विश्लेषण करें।

1. कैसी प्रवृत्तियाँ नकारात्मक हैं?

- जिनमें अर्थ का भाव हो
- जिनमें अहं और स्व-हित का भाव हो
- जो स्वयं का हित देखती हों
- जो अहं से ग्रसित हों

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (b)

2. कौन-से कार्य हानि की ओर ले जाते हैं?

- जिनमें संग्रह अनुपस्थित होता है
- जिनमें संग्रह कूट-कूटकर भरा होता है
- जो मन के अनुसार और हित साधते हैं
- जो अपनी पसन्द-नापसन्द के आधार पर किए जाते हैं

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (d)

3. इस गद्यांश में किस प्रकार के कार्यों का समर्थन किया गया है?

- जो बुद्धि और विवेक-शक्ति के आधार पर किए जाते हैं
- जो मनचली भावनाओं और बुद्धि से परे होते हैं
- जो मनचाहे होते हैं
- जो मनचाहे नहीं होते हैं

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (a)

4. इस गद्यांश में किन्हें शत्रु कहा गया है?

- अहं और स्वार्थ
- रुचि-अरुचि
- मनचली भावनाएँ
- तुनकमिजाजी

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (b)

5. लेखक ने इन शत्रुओं से निबटने का कौन-सा मार्ग सुझाया है?

- लोक-संग्रह करना
- कर्म करना
- विश्लेषण करना
- भव्य आदर्श रखना

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (c)

6. 'नकारात्मक' का विलोम शब्द है—

- अननकारात्मक
- असकारात्मक
- अनकारात्मक
- सकारात्मक

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (d)

7. “वे तो हर क्षण आपकी हानि व हास करने पर ही तुले हैं।” वाक्य में ‘वे’ सर्वनाम किसके लिए आया है?
- स्वार्थ-प्रेरित प्रवृत्तियों के लिए
 - पसन्द-नापसन्द के लिए
 - मनचली भावनाओं के लिए
 - अहं-प्रेरित प्रवृत्तियों के लिए

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (b)

8. किस शब्द में ‘न’ उपसर्ग का प्रयोग नहीं किया जा सकता है?

- पसन्द
- वाकिफ़
- क्राबिल
- हाज़िर

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (d)

9. ‘विश्लेषण’ का विलोम है –

- संश्लिष्ट
- संक्षेपण
- संश्लेषण
- अविश्लेषण

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (c)

निर्देश : नीचे दिए गए गद्यांश को पढ़कर सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए।:

शिक्षा की बैंकीय अवधारणा (बैंकिंग कॉनसेप्ट) में ज्ञान एक उपहार होता है, जो स्वयं को ज्ञानवान समझने वालों के द्वारा उनको दिया जाता है, जिन्हें वे नितान्त अज्ञानी मानते हैं। दूसरों को परम अज्ञानी बताना उत्पीड़न की विचारधारा की विशेषता है। वह शिक्षा और ज्ञान को जिज्ञासा की प्रक्रिया नहीं मानती। शिक्षक अपने छात्रों के समक्ष स्वयं को एक आवश्यक विलोम के रूप में प्रस्तुत करता है; उन्हें परम अज्ञानी मानकर वह अपने अस्तित्व का औचित्य सिद्ध करता है। छात्र, हेगेलीय द्वन्द्ववाद में वर्णित दासों की भाँति, अलगाव के शिकार होने के कारण अपने अज्ञान को शिक्षक के अस्तित्व का औचित्य सिद्ध करने वाला समझते हैं—लेकिन इस फर्क के साथ कि दास तो अपनी वास्तविकता को जान लेता है (कि मालिक का अस्तित्व उसके अस्तित्व पर निर्भर है) लेकिन ये छात्र अपनी इस वास्तविकता को कभी नहीं जान पाते कि वे भी शिक्षक को शिक्षित करते हैं।

1. शिक्षा की बैंकीय अवधारणा शिक्षा को किस रूप में प्रस्तुत करती है?

- शिक्षा की प्रक्रिया में केवल परम अज्ञानी शामिल होते हैं
- शिक्षा ज्ञान के लेन-देन की प्रक्रिया है
- शिक्षा में केवल छात्र शिक्षकों को शिक्षित करते हैं
- शिक्षा में उपहारों का लेन-देन होता है।

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (b)

2. गद्यांश के अनुसार छात्र अपनी किस वास्तविकता को नहीं जान पाते?

- शिक्षक ज्ञानवान है
- शिक्षा में ज्ञान ही सर्वोपरि है
- शिक्षक पूर्णतः शिक्षित नहीं है
- वे अज्ञानी है

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (c)

3. इस गद्यांश के अनुसार शिक्षा की प्रक्रिया सम्पन्न होने के लिए अनिवार्य शर्त है -

- शिक्षक की उपस्थिति
- शिक्षक का परम ज्ञानवान होना

- छात्र का परम अज्ञानी होना
- छात्रों का सीखने के लिए उत्सुक होना

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (a)

4. गद्यांश के अनुसार उत्पीड़न की विचारधारा की विशेषता क्या है?

- शिक्षा ज्ञान का उपहार है
- शिक्षक ‘श्रेष्ठ’ है और छात्र ‘हीन’ है
- आदर्श शिक्षक सदैव उत्पीड़क होता है
- परम अज्ञानियों का शोषण अनिवार्य है

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (b)

5. गद्यांश में.....पर करारा व्यंग्य किया गया है।

- ज्ञानवान व्यक्तियों
- उत्पीड़ितों की दिशा
- शिक्षितों की दशा
- शिक्षक और छात्र के मध्य सम्बन्ध

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (d)

6. ‘जिज्ञासा’ शब्द से बनने वाला विशेषण है -

- जिज्ञासी
- जिज्ञासावाला
- जिज्ञासु
- जिज्ञासाशील

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (c)

7. किस शब्द में दो प्रत्ययों का प्रयोग हुआ है?

- वास्तविकता
- ज्ञानवान
- विशेषता
- विचारधारा

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (a)

8. प्रस्तुत गद्यांश में ‘नितान्त’ शब्द का अर्थ है -

- केवल
- एकान्त
- बहुत
- बिल्कुल

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (d)

9. “उन्हें परम अज्ञानी मानकर वह अपने अस्तित्व का औचित्य सिद्ध करता है।” रेखांकित शब्द की जगह किस शब्द का प्रयोग किया जा सकता है?

- प्रमाणित
- प्रतिफलित
- अंतर्निहित
- प्रतिस्थापना

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (a)

निर्देश : निम्न गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में से सबसे उचित विकल्प को चुनिए।

22 दिसम्बर, 1939 को श्री धनसिंह नागरकोटी का घर रिसने लगा। मल्ली ताल में दाहिनी ओर बने कुछ घर भी रिसने लगे। जाड़ों के दिनों में रिसना कम ही होता था पर अबकी पता नहीं क्यों पहाड़ी पर बने घरों में भी इस रिसाव के कारण ठण्ड का प्रभाव कुछ ज्यादा ही होने लगा। सन्तोष की बात थी कि शाम तक पानी का जोर हल्का पड़ने लगा। पर रात को जो बर्फ गिरनी शुरू हुई तो अगले दो दिन तक थमने का नाम ही नहीं लिया। 24 दिसम्बर की शाम तक आकाश खुल गया और लोग ‘ह्वाइट क्रिसमस’ या ‘श्वेत बड़ा दिन’

मनाने की तैयारी में जुट गए। बड़ा दिन जब आया तो सूर्यदेव के दर्शन हुए। छतों पर की बर्फ खिसक-गिरकर घरों के सामने जमा हो गई थी। उसे हटाकर रास्ता साफ किया गया। पिघलती बर्फ के कारण हाड़ कँपाने वाली सर्दी में भी लोगों का उत्साह कम नहीं हुआ और वे परस्पर क्रिसमस की शुभकामनाएँ और डालियों का आदान-प्रदान करने लगे। तापमान शून्य से तीन डिग्री नीचे हो गया था। पानी की आपूर्ति नलों के भीतर पानी के जमने से उनके फट जाने से रूक गई थी।

1. गद्यांश में क्रिसमस के लिए 'ह्वाइट क्रिसमस' शब्द इसलिए आया है क्योंकि –

- क्रिसमस के अवसर पर सब लोग सफेद रंग के कपड़े पहनते हैं
- क्रिसमस के अवसर पर सब लोग सफेद केक खाते हैं
- क्रिसमस के अवसर पर बहुत बर्फ पड़ी थी
- क्रिसमस का असली नाम यही है

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014

उत्तर : (c)

2. जाड़े के दिनों में पानी का रिसना –

- हमेशा ज्यादा होता है
- इस बार ज्यादा था
- कभी-कभी होता था
- इस बार कम था

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014

उत्तर : (b)

3. सन्तोष की क्या बात थी?

- शाम को ठण्ड का प्रभाव ज्यादा नहीं था
- सुबह ठण्ड का प्रभाव बिल्कुल नहीं था
- शाम को बारिश रूक गई
- शाम को बारिश कम होने लगी

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014

उत्तर : (d)

4. गद्यांश के अनुसार बर्फ कब से पड़ना शुरू हुई?

- 22 दिसम्बर की शाम से
- 22 दिसम्बर की सुबह से
- 24 दिसम्बर की शाम से
- 24 दिसम्बर की सुबह से

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014

उत्तर : (a)

5. पानी की आपूर्ति क्यों नहीं हो पाई?

- पानी पर्याप्त मात्रा में नहीं था
- पानी नलों में जम गया था
- पानी फट गया था
- बर्फ धीमी गति से पिघल रही थी

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014

उत्तर : (b)

6. गद्यांश के आधार पर कहा जा सकता है कि –

- पहाड़ों का जीवन आसान है
- पहाड़ों पर हमेशा त्योहार मनाए जाते हैं
- पहाड़ों पर जीवन व्यतीत करना कठिन होता है
- पहाड़ों पर हमेशा बर्फ जमी रहती है

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014

उत्तर : (c)

7. 'हाड़ कँपाने वाली सर्दी' से आशय है-

- हॉट कँपाने वाली सर्दी
- हाथ कँपाने वाली सर्दी
- सिर कँपाने वाली सर्दी
- हड्डी कँपाने वाली सर्दी

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014

उत्तर : (d)

8. 'उत्साह' शब्द है –

- भाववाचक संज्ञा
- सकर्मक क्रिया
- गुणवाचक विशेषण
- सम्बन्धवाचक सर्वनाम

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014

उत्तर : (a)

9. 'घर' का बहुवचन रूप है –

- घरों
- घर
- घरें
- घराएँ

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014

उत्तर : (b)

निर्देश : गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में सबसे उचित विकल्प चुनिए।

गुलजार जी, क्या लिखते समय पाठ आपके चिंतन में होते हैं? देखिए, जब मैं लिखता हूँ, मेरे जेहन में मैं होता हूँ। मैं पहले यही तय करता हूँ। बात मुझे अपनी कहनी होती है। पाठक को सामने रखकर लिखने का कोई मतलब नहीं होता। दूसरी महत्वपूर्ण बात मैं महसूस करता हूँ वह है कम्युनिकेशन...अपनी बात को पाठक तक पहुँचाना,.... आर्ट ऑफ कम्युनिकेशन....हाँ मैं अपने लेखन को इस कसौटी पर रखता हूँ। मीडिया से जुड़े होने के कारण कहने के तरीके को लेकर मैं सोचता अवश्य हूँ विषय मेरे होते हैं, मेरी बात सही है या नहीं। आप अपनी ग्रोथ के साथ एक अहाता बनाते चलते हैं। हर फाइन आर्ट लोगों तक पहुँचनी ही चाहिए। संगीत हो, कला हो, या लेखन हो वो अपने लक्ष्य तक पहुँचनी चाहिए, कहने का ऐसा तरीका तो होना ही चाहिए।

1. जब गुलजार लिखते हैं तो विषय किसके होते हैं?

- फिल्म बनाने वालों के
- स्वयं उनके
- मीडिया के
- पाठकों के

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014

उत्तर : (b)

2. गुलजार के अनुसार लिखने वाले के जेहन में स्वयं लेखक होता है। इसका आशय यह है कि-

- लेखक पाठक की उपेक्षा करता है।
- लेखक को अपनी ग्रोथ चाहिए
- लेखक की संवेदनाएँ, आत्मानुभूति केंद्र में होती है।
- लेखक स्वयं को सर्वोपरि मानता है।

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014

उत्तर : (c)

3. एक लेखक के लिए दूसरी महत्वपूर्ण बात क्या है?

- मीडिया
- कला
- लेखन
- संप्रेषण

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014

उत्तर : (d)

4. किसी भी कला का लक्ष्य क्या है?

- लोगों तक वह बात पहुँचे
- मीडिया द्वारा सराहा जाए
- सरल भाषा का प्रयोग करना
- वह सुंदर तरीके से कही गई हो

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014

उत्तर : (a)

5. गुलजार अपने लेखन को किस कसौटी पर कसते हैं?

- वह व्यंग्य भरे अंदाज में कही गई है या नहीं
- वह सब लोगों द्वारा सराही गई है या नहीं

- (c) मेरी ग्रोथ हो रही है या नहीं
(d) वह बात पाठक तक पहुँच रही है या नहीं

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014

उत्तर : (d)

6. गुलजार लिखने से पहले क्या तय करते हैं।

- (a) क्या कहना है (b) कैसे कहना है
(c) क्यों कहना है (d) किसके लिए कहना है

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014

उत्तर : (a)

7. 'जेहन' का अर्थ है -

- (a) दिमाग (b) खयाल
(c) सपना (d) दिल

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014

उत्तर : (a)

8. 'संगीत' से विशेषण शब्द बनेगा—

- (a) संगीतज्ञ (b) संगीतवाला
(c) संगीतवान (d) संगीता

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014

उत्तर : (a)

9. 'कहने का ऐसा तरीका तो होना ही चाहिए।' वाक्य में निपात शब्द हैं—

- (a) तो, का (b) ही, ऐसा
(c) तो, ही (d) ऐसा, तो

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014

उत्तर : (c)

निर्देश : नीचे दिए गए गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही/सबसे उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनिए।

माँ : रमेश, मीना क्यों रो रही है?

रमेश : मैंने चाँटा मारा था। मुझे पढ़ने नहीं दे रही थी।

माँ : लेकिन तुम इस समय क्यों पढ़ रहे हो? यह भी कोई पढ़ने का समय है? क्या आजकल पढ़ाई चौबीसों घण्टे की हो गई है? दिमाग है या मशीन? और क्या पढ़ने के लिए बहन को पीटना जरूरी है?

रमेश : माँ, पढ़ूँगा नहीं तो कक्षा में अव्वल कैसे आऊँगा? मुझे तो फर्स्ट आना है। तुम भी तो यही कहती थी।

माँ : हाँ, कहती थी, पर तुम? हर वक्त खेल-खेल-खेल। फर्स्ट आना था तो शुरू से पढ़ा होता। अब जब परीक्षाएँ सर पर आ गई तो रटने बैठे हो। तुम क्या समझते हो कि ऐसे रटने से अव्वल आ जाओगे? अरे! पढ़ना थोड़ी देर का ही काफी होता है, अगर नियम से मन लगाकर पढ़ा जाए।

रमेश : अब रहने दो माँ! मैं आज खेलने भी नहीं जाऊँगा। कोई आए तो मना कर देना। अब मुझे पढ़ने दो - "अकबर का जन्म अमरकोट में हुआ था।

माँ : अकबर का जन्म जहाँ भी हुआ हो, तुम्हारा जन्म यहीं हुआ है और मैं तुम्हें रटूँ तोता नहीं बनने दूँगी। पढ़ने के समय पढ़ना और खेलने के समय खेलना अच्छा होता है।

1. मीना और रमेश हैं, परस्पर—

- (a) मित्र (b) भाई-बहन
(c) सहपाठी (d) रिश्तेदार

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (b)

2. रमेश ने मीना की पिटाई की, क्योंकि वह—

- (a) कक्षा में अव्वल आ सकती थी
(b) अक्सर शैतानियाँ करती थी
(c) पढ़ नहीं रही थी
(d) पढ़ने नहीं दे रही थी

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (d)

3. कक्षा में प्रथम आने के लिए आवश्यक है—

- (a) शुरू से नियमित पढ़ाई करना
(b) खेलकूद छोड़ देना
(c) रात-दिन पढ़ाई करना
(d) पढ़ाई के दिनों परिश्रम करना

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (a)

4. "यह भी कोई पढ़ने का समय है?" प्रश्न का आशय है—

- (a) पढ़ने का कोई समय नहीं होता
(b) वह समय पढ़ने का नहीं है
(c) यह भी पढ़ने का एक समय है
(d) यह पढ़ने का ही कोई समय है

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (b)

5. जो शब्द शेष से भिन्न हो, उसे छाँटिए।

- (a) परीक्षा (b) प्रथम
(c) अव्वल (d) फर्स्ट

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (a)

6. कौन-सा विशेषण रमेश के लिए उपयुक्त है?

- (a) रटूँ तोता (b) लापरवाह
(c) पढ़ाकू (d) परिश्रमी

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (a)

7. 'पर तुम' का भाव है—

- (a) पर तुमने पढ़ना छोड़ दिया (b) पर तुम पढ़ते ही रहे
(c) पर तुमने ध्यान नहीं दिया (d) पर तुमने रटना ही सीखा

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (a)

8. अकबर का जन्म कहाँ हुआ था?

- (a) आगरा (b) अमरकोट
(c) दिल्ली (d) फतेहपुर

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (b)

9. 'बहुत निकट आना' के लिए मुहावरा है—

- (a) अव्वल आना (b) तोता रटने
(c) पास आना (d) सर पर आना

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (d)

निर्देश : नीचे दिए गए गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही/सबसे उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनिए।

कभी सोचा है भारत में कितने प्रकार के वाद्ययन्त्र प्रचलित हैं? सोचने में शीघ्रता मत कीजिए। तमिलनाडु-केरल से कश्मीर तक, राजस्थान-गुजरात में नागालैण्ड-मणिपुर तक इस भारत नामक विशाल भू-खण्ड में सैकड़ों प्रकार के वाद्ययन्त्र परम्परा से प्रचलित रहे हैं। विशेषकर चमड़े से गढ़े वाद्ययन्त्र तो सर्वाधिक हैं। बाँसुरी जैसे फूँककर बजाए जाने वाले भी कम नहीं। ये तार वाले भी कुछ गज से बजाए जाते हैं और कुछ छोटी-सी अँगूठी-जैसी मिजराव से।

अब प्रश्न उठता है कि जिन्हें हम भारतीय वाद्ययन्त्र कहते हैं क्या वे भारत में ही जन्मे हैं या कहीं और से आए हैं? कहना कठिन है। जब भी हम किसी वाद्ययन्त्र को बजते देखते-सुनते हैं, तो मन कहता है कि उसकी उत्पत्ति भारत में हुई हो। अनेक बाहर से भी आए हैं। और यह भी सच है कि अनेक भारतीय वाद्ययन्त्र यहीं से अन्य देशों में प्रचलित हुए हैं। सभ्यता और संस्कृति का इतिहास जानने का एक माध्यम वाद्ययन्त्र आज भी प्रयुक्त हो रहे हैं। हमारी वीणा, मिस्त्री, सुमेरी, जापानी, चीनी संस्कृति में भी विद्यमान रही हैं।

1. जिन्हें हम भारतीय वाद्ययन्त्र कहते हैं

- (a) वे कहीं और से आए हैं
(b) उनमें से कुछ भारत के और कुछ बाहर के हैं
(c) वे चीन और इण्डोनेशिया के हैं
(d) वे भारत में ही जन्मे हैं

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (b)

2. कौन-सा भारतीय वाद्ययन्त्र मिस्त्र, चीन, जापान आदि की संस्कृति में भी विद्यमान है?

- (a) तबला (b) झाँझ
(c) वीणा (d) बाँसुरी

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (c)

3. कौन-सा कथन असत्य है?

- (a) तमिलनाडु और केरल के वाद्ययन्त्र सबसे प्रसिद्ध हैं
(b) कुछ वाद्ययन्त्र 'गज' से बजाए जाते हैं
(c) प्राचीन भारतीय वाद्ययन्त्र इण्डोनेशिया में भी प्रयुक्त होते हैं
(d) भारत में अनेक प्रकार के वाद्ययन्त्र प्रचलित हैं

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (a)

4. गद्यांश के अनुसार, सभ्यता और संस्कृति का इतिहास जानने में सहायक हैं-

- (a) साहित्यिक ग्रन्थ (b) वाद्ययन्त्र
(c) कलाकार (d) प्राचीन यन्त्र

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (b)

5. 'भारतीय' शब्द व्याकरण की दृष्टि से है-

- (a) सर्वनाम (b) विशेषण
(c) क्रिया (d) संज्ञा

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (b)

6. किस शब्द में उपसर्ग और प्रत्यय दोनों हैं?

- (a) भारतीय (b) शीघ्रता
(c) विशाल (d) प्रचलित

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (d)

7. वेदों में चर्चित कुछ वाद्ययन्त्रों के प्रमाण मिले हैं-

- (a) हड़प्पा सभ्यता में (b) सुमेरी संस्कृति में
(c) पुराणों में (d) भारतीय सभ्यता में

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (a)

8. 'जन्म' शब्द का समानार्थी है-

- (a) उत्पत्ति (b) उल्लेख
(c) विद्यमान (d) प्रयुक्त

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (a)

9. 'भू-खण्ड' शब्द से समास है-

- (a) कर्मधारय (b) द्वन्द्व
(c) द्विगु (d) तत्पुरुष

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (d)

10. पद्य, गद्य और नाटक हमारी.....संवेदना को धार प्रदान करने के साथ-साथ हमारे जीवन के... पहलू को समृद्ध करते हैं।

- (a) भाषिक, सौन्दर्यात्मक (b) भाषिक, ज्ञानात्मक
(c) सांस्कृतिक साहित्यिक (d) सांस्कृतिक, भौतिक

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (c)

निर्देश : नीचे दिए गए गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में सबसे उचित विकल्प को चुनिए।

पर्यावरण के प्रति गहरी संवेदनशीलता प्राचीनकाल से ही मिलती है। अथर्ववेद में लिखा है- भूमि माता है, हम पृथ्वी की सन्तान हैं। एक स्थान पर यह भी लिखा है कि हे पवित्र करने वाली भूमि, हम कोई ऐसा काम न करें जिससे तेरे हृदय को आघात पहुँचे। हृदय को आघात पहुँचाने का यहाँ अर्थ है पृथ्वी के पारिस्थितिकी तन्त्र के साथ क्रूर छेड़छाड़। हमें प्राकृतिक संसाधनों के अप्राकृतिक और असीमित दोहन से बचना होगा। आज आवश्यकता इस बात की है कि विश्व के तमाम राष्ट्र जलवायु परिवर्तन के गम्भीर खतरे को लेकर आपसी मतभेद भुला दें और अपनी-अपनी जिम्मेदारी ईमानदारी से निभाएँ, ताकि समय रहते सर्वनाश से उबरा जा सके। विश्व-विनाश से निपटने के लिए सामूहिक एवं व्यक्तिगत प्रयासों की जरूरत है। इस दिशा में आन्दोलन हो रहे हैं। अरण्य-रोदन के बदले अरण्य-संरक्षण की बात हो रही है, सचमुच हमें आत्मरक्षा के लिए पृथ्वी की रक्षा करनी होगी। भूमि माता है और हम उसकी सन्तान-इस कथन को चरितार्थ करना होगा।

1. 'हम पृथ्वी की सन्तान हैं'-'हम' से तात्पर्य है-

- (a) संसार के सभी लोग (b) हम सभी नागरिक
(c) एक खास देश के लोग (d) हम भारतवासी

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015

उत्तर : (a)

2. 'पर्यावरण' का सन्धि-विच्छेद होगा-

- (a) पर् + आवरण (b) पर् + यावरण
(c) परि + आवरण (d) परि + यावरण

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015

उत्तर : (c)

3. हम प्रकृति के हृदय को आघात पहुँचाते हैं यदि हम-

- (a) पारिस्थितिकी से छेड़छाड़ करते हैं
(b) पृथ्वी की खुदाई करते हैं
(c) संसाधनों का दोहन करते हैं
(d) पृथ्वी से बुरा व्यवहार करते हैं

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015

उत्तर : (a)

4. 'सर्वनाश से उबरा जा सके'-'उबरा' का अर्थ है-

- (a) हटा (b) बचा
(c) निपटा (d) तैरा

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015

उत्तर : (b)

5. गद्यांश में 'चरितार्थ करना' का उल्लेख है। इसका आशय है—
 (a) बहस करना (b) सिद्ध करना
 (c) अपनाना (d) चरित्र-चित्रण करना
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015
 उत्तर : (b)
6. विश्व के सभी देशों से अपेक्षा की गई कि वे—
 (a) पर्यावरण की रक्षा करें
 (b) अपने उत्तरदायित्व ईमानदारी से निभाए
 (c) व्यक्तिगत प्रयास करें
 (d) मिलजुल कर कार्य करें
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015
 उत्तर : (b)
7. 'अरण्य-संरक्षण' का अर्थ है—
 (a) वनों की रक्षा (b) प्रकृति की रक्षा
 (c) पर्यावरण की रक्षा (d) सभी की रक्षा
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015
 उत्तर : (a)
8. जो सम्बन्ध माँ और उसकी सन्तान में है, वही सम्बन्ध है—
 (a) पृथ्वी और पृथ्वी निवासियों में
 (b) माता और पुत्र में
 (c) धरती और सभी देशों में
 (d) प्रकृति और पर्यावरण में
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015
 उत्तर : (a)
9. 'कूर' शब्द है—
 (a) सर्वनाम (b) क्रिया
 (c) विशेषण (d) संज्ञा
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015
 उत्तर : (c)
- निर्देश : नीचे दिए गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सबसे उचित उत्तर वाले विकल्प चुनिए।**
 स्थूल एवं बाह्य पदार्थ एवं मानसिक पदार्थों एवं भावों की अपेक्षा अधिक महत्व के विषय नहीं है। जो व्यक्ति रचनात्मक कार्य करने में समर्थ है, उसे भौतिक स्थूल लाभ अथवा प्रलोभन न तो लुभाते हैं और न ही प्रोत्साहित करते हैं।
 विश्व में विचारक दस में से एक ही व्यक्ति होता है। उसमें भौतिक महत्वाकांक्षाएँ अत्यल्प होती हैं। 'पूँजी' का रचयिता कार्ल मार्क्स जीवनभर निर्धनता से जूझता रहा। राज्याधिकारियों ने सुकरात को मरवा डाला, पर वह जीवन के अन्तिम क्षणों में भी शान्त था, क्योंकि वह अपने जीवन के लक्ष्य का भली-भाँति निर्वाह कर चुका था। यदि उसे पुरस्कृत किया जाता, प्रतिष्ठा के अम्बारों से लाद दिया जाता, परन्तु अपना काम न करने दिया जाता तो निश्चय ही वह अनुभव करता कि उसे कठोर रूप में दण्डित किया गया है। ऐसे अनेक अवसर आते हैं जब हमें बाहरी सुख-सुविधाएँ आकर्षित करती हैं, वे अच्छे जीवन के लिए अनिवार्य लगने लगती हैं, किन्तु महत्वपूर्ण यह है कि क्या हमने जीवन का उद्देश्य प्राप्त कर लिया? यदि इसका उत्तर हाँ है, तो बाह्य वस्तुओं का अभाव नहीं खलेगा और यदि नहीं है, तो हमें अपने को भटकने से बचाना होगा और लक्ष्य की ओर बढ़ना होगा।
1. मनुष्य को बाहरी सुख क्यों लुभाते हैं?
 (a) सम्पन्नता के लिए (b) भरे-पूरे जीवन के लिए
 (c) अच्छे जीवन के लिए (d) आराम के लिए
CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015
 उत्तर : (c)
2. "जो व्यक्ति रचनात्मक कार्य करने में समर्थ हैं.....।" वाक्य में रेखांकित शब्द के स्थान पर कौन-सा शब्द प्रयुक्त नहीं किया जा सकता है?
 (a) क्षमतावान (b) सक्षम
 (c) शक्तिशाली (d) सामर्थ्यवान
CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015
 उत्तर : (c)
3. 'प्रतिष्ठा के अम्बारों से लाद दिया जाता।' रेखांकित का तात्पर्य है—
 (a) ढेर से (b) आभार से
 (c) कृतज्ञता से (d) भार से
CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015
 उत्तर : (a)
4. 'भली-भाँति निर्वाह कर चुका था।' उपरोक्त वाक्यांश में क्रिया-विशेषण है—
 (a) भली-भाँति (b) निर्वाह
 (c) कर चुका (d) भली
CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015
 उत्तर : (a)
5. 'महत्वाकांक्षा' किन शब्दों से मिलकर बना है?
 (a) महत्त्व + आकांक्षा (b) महत्त्व + आकांक्षा
 (c) महत्त्व + कांक्षा (d) महत् + आकांक्षा
CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015
 उत्तर : (a)
6. भौतिक लाभ किन्हें नहीं लुभाते?
 (a) सामर्थ्यवान लोगों को
 (b) जीवन का लक्ष्य पूरा करने वालों को
 (c) रचनात्मक कार्य करने वालों को
 (d) धन-सम्पन्न लोगों को
CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015
 उत्तर : (c)
7. 'पूँजी' का रचयिता कार्ल मार्क्स कथन से संकेत मिलता है कि 'पूँजी' का अर्थ है—
 (a) एक विचार (b) एक ग्रन्थ
 (c) विरासत (d) धन-सम्पत्ति
CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015
 उत्तर : (b)
8. विचारकों की एक विशेषता यह है कि उनमें—
 (a) भौतिक महत्वाकांक्षाएँ कम होती हैं
 (b) पद-प्रतिष्ठा प्राप्त करने की इच्छा होती है
 (c) रचनात्मक कार्य करने की क्षमता होती है
 (d) महत्वाकांक्षाएँ नहीं होती
CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015
 उत्तर : (a)
9. सुकरात को अपना काम न करने देने की स्थिति कठोर दण्ड जैसी प्रतीत होती, क्योंकि—
 (a) वह जीवन के कार्य समाप्त कर चुका था
 (b) वह स्थूल प्रलोभनों की अपेक्षा नहीं करता था
 (c) उसे जीवन का उद्देश्य प्राप्त करने में रोक दिया गया होता
 (d) वह अन्तिम क्षणों में भी शान्त था
CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015
 उत्तर : (c)

निर्देश : निम्नलिखित गद्यांश ध्यानपूर्वक पढ़कर इस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

गिजुभाई न केवल बच्चों की क्षमताओं, बौद्धिकता में विश्वास व्यक्त करते हैं अपितु वे उनकी सृजनात्मकता में भी अगाध आस्था रखते हैं। उनके अनुसार कुछ हत्याएँ पीनल कोड की धारा के अधीन नहीं आती। उनमें कानूनवेत्ताओं को अपराध जैसी कोई चीज़ नजर नहीं आती। कानूनवेत्ताओं की न्याय नीति-सम्बन्धी मर्यादाएँ सिर्फ पीनल कोड से बँधी होती हैं। शिक्षाशास्त्रियों के पास राज्य, रूढ़ि अथवा धर्म की कोई सत्ता नहीं है इसलिए जीवन के प्रति जो अपराध होते हैं उसके लिए न कोई पीनल कोड, न कोई उन्हें निंदनीय मानता है, न कोई धार्मिक भय है। जीवन के प्रति होने वाला एक ऐसा ही अपराध है- बालक की सृजन-शक्ति की हत्या। ईश्वर ने मनुष्य का सृजन किया और उसे अपनी सृजन-शक्ति प्रदान की तथा ईश्वर की शक्ति मनुष्य के सृजन की अनन्त शक्ति के समान ही अनगिनत है। साहित्य एक सृजन है, चित्रकला दूसरा सृजन है, संगीत तीसरा सृजन है और स्थापत्य चौथा सृजन है। इस तरह गिनने बैठा जाए तो मनुष्य के द्वारा बनाई गई अनेकानेक कृतियों को गिनाया जा सकता है। जब शिक्षक या अभिभावक यह तय करते हैं कि बच्चे को क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए- वस्तुतः इस निर्णयों में ही वे बालक की सृजन-शक्ति का दमन कर देते हैं।

1. गिजुभाई का किसमें विश्वास नहीं है?

- (a) उनकी रचनात्मकता में
- (b) उनके भविष्य का निर्णय शिक्षकों एवं अभिभावकों द्वारा तय करने में
- (c) बच्चों की बौद्धिकता में
- (d) उनकी क्षमताओं में

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012

उत्तर : (b)

2. कौन-सा अपराध पीनल कोड की धारा के अधीन नहीं आता है?

- (a) बालक की सृजन-शक्ति का दमन
- (b) रिश्वत लेना
- (c) धोखाधड़ी करना
- (d) चोरी करना

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012

उत्तर : (a)

3. 'बच्चे क्या करें और क्या न करें' जब शिक्षक और अभिभावक यह तय करते हैं तब -

- (a) बच्चे में रचनात्मकता भर जाती है
- (b) अभिभावक व बच्चों के सम्बन्धों में प्रगाढ़ता आती है
- (c) बच्चे में पढ़ने-लिखने के प्रति रुचि जाग्रत हो जाती है
- (d) बच्चे में सृजन-शक्ति का दमन होता है

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012

उत्तर : (d)

4. निम्नलिखित में से 'सृजन' के अन्तर्गत नहीं आता है -

- (a) किसी विषय पर अपने विचार लिखना
- (b) प्रश्नों के उत्तर रटना
- (c) कहानी-लेखन
- (d) मिट्टी से खिलौने बनाना

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012

उत्तर : (b)

5. 'साहित्य' शब्द में 'इक' प्रत्यय लगाने पर शब्द बनेगा-

- (a) साहित्यीक
- (b) सहित्यिक
- (c) साहित्यिक
- (d) साहित्यइक

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012

उत्तर : (c)

6. बौद्धिक, ऐतिहासिक शब्दों में मूल शब्द तथा प्रत्यय हैं-

- (a) बौद्ध (मूल शब्द) + 'इक' प्रत्यय, ऐतिहास (मूल शब्द) + 'इक' प्रत्यय
- (b) बुद्ध (मूल शब्द) + 'इक' प्रत्यय, इतिहास (मूल शब्द) + 'इक' प्रत्यय
- (c) बौद्धि (मूल शब्द) + 'क' प्रत्यय, ऐतिहास (मूल शब्द) + 'इक' प्रत्यय
- (d) बुद्धि (मूल शब्द) + 'इक' प्रत्यय, इतिहास (मूल शब्द) + 'इक' प्रत्यय

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012

उत्तर : (d)

7. न्याय-नीति में.....समास है-

- (a) कर्मधारय
- (b) द्वन्द्व समास
- (c) अव्ययीभाव
- (d) तत्पुरुष

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012

उत्तर : (b)

8. 'ईश्वर' का पर्यायवाची नहीं है -

- (a) जगदीश
- (b) परमेश्वर
- (c) परमात्मा
- (d) ब्रह्मा

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012

उत्तर : (d)

9. 'समान' का विलोम शब्द है -

- (a) सामना
- (b) असमानता
- (c) सामान
- (d) असमान

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012

उत्तर : (d)

निर्देश : गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के सबसे उचित विकल्प चुनिए।

मुझे मालूम नहीं था कि भारत में 'तिलोनिया' नाम की भी कोई जगह है जहाँ हमारे देश के समसामयिक इतिहास का एक विस्मयकारी पन्ना लिखा जा रहा है। उस वक्त तक तिलोनिया के बारे में मुझे इतनी ही जानकारी थी की वहाँ पर एक स्वावलम्बी विकास-केंद्र चल रहा है, जिसे स्थानीय ग्रामवासी, स्त्री-पुरुष मिलजुलकर चला रहे हैं। मुझे वहाँ जाने का अवसर मिला। बस्ती क्या थी, कुछ पुराने और कुछ नए छोटे-छोटे घरों का झुरमुट थी।

वहाँ एक सज्जन ने बताया कि एक सुशिक्षित तथा उसके दो साथियों टाइपिस्ट तथा फोटोग्राफर ने मिलकर 1972 में इस संस्थान की स्थापना थी। संस्थान का नाम था- सामाजिक कार्य तथा शोध-संस्थान(एस.डब्ल्यू आर.सी.)।

मेरे मन में संशय उठने लगे थे। आज के जमाने में वैज्ञानिक उपकरणों और जानकारी के बल पर ही तरक्की की जा सकती है। उससे कटकर और अवेहलना करते हुए नहीं की जा सकती। एक पिछड़े हुए गाँव के लोग अपनी समस्याएं स्वयं सुलझा लेंगे, यह नामुमकिन था। वह सज्जन कहे जा रहे थे "हमारे गाँव आज नहीं बसे हैं इन गाँवों में शताब्दियों से हमारे पूर्वज रहते आ रहे हैं पहले जमाने

में भी हमारे लोग अपनी सूझ और पहलकदमी के बल पर ही अपनी दिक्कतें सुलझाते रहे होंगे। जरूरत इस बात की है कि हम शताब्दियों की इस परंपरागत जानकारी को नष्ट न होने दें उसका उपयोग करें।” फिर मुझे समझाते हुए बोले “हम बाहर की जानकारी से भी पूरा-पूरा लाभ उठाते हैं, पर मूलतः स्वावलंबी बनना चाहते हैं, स्वावलंबी, आत्मनिर्भर।” मुझे बार-बार गाँधीजी के कथन याद आ रहे थे। मैंने गाँधीजी का जिक्र किया तब वह बड़े उत्साह से बोले “आपने ठीक ही कहा है। यह संस्थान गाँधी जी की मान्यताओं के अनुरूप ही चलता है- सादापन, कर्मठता, अनुशासन, सहभागिता। यहाँ सभी निर्णय मिल-बैठकर किए जाते हैं। आत्मनिर्भरता.....।” आत्मनिर्भरता से मतलब कि ग्रामवासियों की छिपी क्षमताओं को काम में लाया जाए और गाँधी जी के अनुसार, ग्रामवासी अपनी अधिकांश बुनियादी जरूरत की वस्तुओं का उत्पादन स्वयं करें।

(एक तीर्थ यात्रा, स्रोत: भीष्म साहनी)

1. सामाजिक कार्य तथा शोध-संस्थान का उद्देश्य था—

- (a) उन्हें केवल अनुशासित करना
- (b) उन्हें स्वावलंबी आत्मनिर्भर बनाना
- (c) उन्हें प्राचीन परंपराओं से परिचित कराना
- (d) ग्रामवासियों को देश-विदेश की जानकारी प्रदान करना।

CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012

उत्तर : (b)

2. लेखक का मानना था—

- (a) ग्रामवासी अपनी समस्याएं स्वयं सुलझा सकते हैं
- (b) ग्रामवासियों को अपनी समस्याएं स्वयं सुलझाने की आदत है।
- (c) आधुनिक समय में वैज्ञानिक उपकरणों और जानकारी से कटकर या उसकी अवहेलना करके तरक्की नहीं की जा सकती है।
- (d) आधुनिक समय में वैज्ञानिक उपकरणों और जानकारी के बल पर ही तरक्की नहीं की जा सकती है।

CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012

उत्तर : (c)

3. संस्थान के निर्णय और संचालन में आधारभूत भूमिका इनमें से किसकी है?

- (a) केवल गरीब और दलित महिलाओं की
- (b) उस गाँव में रहने वाले सभी लोगों की
- (c) गाँव-प्रधान की
- (d) संस्थापक की

CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012

उत्तर : (b)

4. 'आत्म' उपसर्ग किस शब्द में नहीं है?

- (a) आत्मसम्मान
- (b) आत्मीय
- (c) परमात्मा
- (d) आत्मनिर्भर

CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012

उत्तर : (c)

5. लेखक के अनुसार “तिलोनिया” गाँव में हमारे देश के आजकल के इतिहास का विस्मयकारी पन्ना लिखा जा रहा है” इसका कारण है -

- (a) वहाँ एक स्वावलंबी विकास-केन्द्र चल रहा है
- (b) वहाँ के लोग अनुदान पर आश्रित हैं
- (c) केन्द्र में इतिहास पर विस्मयकारी शोध किया जा रहा है
- (d) ‘तिलोनिया’ गाँव पिछड़े गाँव के रूप में जाना जाता है।

CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012

उत्तर : (a)

6. 'शताब्दी' समास का उदाहरण है—

- (a) द्विगु
- (b) तत्पुरुष
- (c) अव्ययीभाव
- (d) बहुव्रीहि

CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012

उत्तर : (a)

7. गाँधीजी को मान्यता नहीं देते हैं—

- (a) कर्मठता
- (b) अकर्मण्यता
- (c) सादापन
- (d) आत्मनिर्भरता

CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012

उत्तर : (b)

8. निम्नलिखित में से संज्ञा का उदाहरण नहीं है—

- (a) स्वावलंब
- (b) अनुशासन
- (c) अनुशासित
- (d) आत्मनिर्भरता

CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012

उत्तर : (c)

9. 'उपयोगी' शब्द का विलोम है—

- (a) अनुपयोगी
- (b) अनपयोगी
- (c) उपयोगिता
- (d) उपयोगी

CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012

उत्तर : (a)

निर्देश : नीचे दिए गए गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही/सबसे उचित उत्तर वाले विकल्प को चुनिए।

शिक्षा आज दुविधा के अजब दौरा में खड़ी है। एक रास्ता चकाचौंध का है, मृगतृष्णा शिक्षार्थी को लोभ-लालच देकर अपनी तरफ दौड़ाते रहने को विवश करने को उतारू खड़ी है। बाजार के इन ललचाने वाले रास्तों पर आकर्षण है, चकाचौंध है और सम्मोहित कर देने वाले सपने हैं। दूसरी तरफ शिक्षा का साधना मार्ग है जो शांति दे सकता है, संतोष दे सकता है और हमारे आत्मतत्त्व को प्रबल करता हुआ विमल विवेक दे सकता है। निश्चित ही वह मार्ग श्रेयस्कर है, मगर अपनी ओर आकर्षित करने वाले बाजार का मार्ग प्रेयस्कर है। इस दौरा में खड़ा शिक्षार्थी बाजार को चुन लेता है। लाखों-करोड़ों लोग आज इसी रास्ते के लालच में आ गए हैं और शिक्षा के भँवरजाल में फँस गए हैं। बाजार की खूबी यही है कि वह फँसने का अहसास किसी को नहीं होने देता और मनुष्य लगातार फँसता चला जाता है। किसी को यह महसूस नहीं होता कि वह दलदल में है बल्कि महसूस वह होता है कि बाजार द्वारा दिए गए पैकेज के कारण वह सुखी है। अब यह अलग बात है कि सच्चा सुख क्या है? और सुख का भ्रम क्या है? जरूरत विचार करने का है। सवाल यह है कि बाजार विचार करने का भी अवकाश देता है या कि नहीं।

1. लेखक ने शिक्षा के संदर्भ में किस बात को महत्व दिया है?

- (a) साधना को
- (b) विवेक को
- (c) शिक्षार्थी को
- (d) बाजार को

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016

उत्तर : (b)

2. “दूसरी तरफ शिक्षा का साधना मार्ग है” — तो पहली तरफ क्या है?

- (a) एक अच्छा पैकेज और सुख-शांति
- (b) दलदल में फँसे होने का अहसास
- (c) दुविधा का दौरा और भटकाव
- (d) बाजार की चकाचौंध, सम्मोहन और सपने

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016

उत्तर : (d)

3. निम्न में से कौन-सी विशेषता बाजार की नहीं है?

- बाजार सुखी होने का भ्रम पैदा करता है
- बाजार लोगों को सुख-शांति देता है।
- बाजार लोगों को अपने आकर्षण से बाँधता है।
- बाजार एक दलदल की तरह है।

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016

उत्तर : (b)

4. गद्यांश के अनुसार लोग बाजार को चुनते हैं, क्योंकि—

- लोगों के पास धन-संपत्ति की कमी है
- लोग बाजार से प्रेम करते हैं
- सभी लोग लालची हैं
- बाजार में आकर्षण है

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016

उत्तर : (d)

5. गद्यांश के आधार पर कहा जा सकता है कि—

- लोग सांसारिक जीवन जीना पसंद करते हैं
- लोग दूसरों को ठगने में आनंदित होते हैं
- भौतिकवादी सोच हावी नहीं हो रही है
- भौतिकवादी सोच हावी हो रही है

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016

उत्तर : (d)

6. 'आकर्षण' का विलोम शब्द है—

- उत्कर्ष
- विकर्षण
- गुरुत्वाकर्षण
- संघर्षण

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016

उत्तर : (b)

7. 'मृगतृष्णा' का तात्पर्य है—

- देर से लगी हुई प्यास का एहसास
- किसी को फँसाने का षड्यंत्र
- हिरनों की प्यास का सामूहिक नाम
- दूर से ललचाने वाली वस्तु का भ्रम

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016

उत्तर : (d)

निर्देश : नीचे दिए गए गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही/सबसे उचित उत्तर वाले विकल्प को चुनिए।

मेरे मकान के आगे चौराहे पर ढाबे के आगे फुटपाथ पर खाना खाने वाले लोग बैठते हैं— रिक्षेवाले, मजदूर, फेरीवाले, कबाड़ी वाले। आना-जाना लगा ही रहता है। लोग कहते हैं— “आपको बुरा नहीं लगता? लोग सड़क पर गंदा फैला रहे हैं और आप इन्हें बरदाश्त कर रहे हैं? इनके कारण पूरे मोहल्ले की आबोहवा खराब हो रही है।”

मैं उनकी बातों को हलके में ही लेता हूँ। मुझे पता है कि यहाँ जो लोग जुटते हैं वे गरीब लोग होते हैं। अपने काम-धाम के बीच रोटी खाने चले आते हैं और खाकर चले जाते हैं। ये आमतौर पर बिहार से आए गरीब ईमानदार लोग हैं जो हमारे इस परिसर के स्थायी सदस्य हो गए हैं। ये उन अशिष्ट अमीरों से भिन्न हैं जो साधारण-सी बात पर भी हंगामा खड़ा कर देते हैं। लोगों के पास पैसा तो आ गया पर धनी होने का शऊर नहीं आया। अधजल गगरी छलकत जाए की तर्ज पर इनमें दिखावे की भावना उबाल खाती है।

असल में यह ढाबा हमें भी अपने माहौल से जोड़ता है। मैं लेखक हूँ तो क्या हुआ? गाँव के एक सामान्य घर से आया हुआ व्यक्ति हूँ। बचपन में गाँव-घरों की गरीबी देखी है और भोगी भी है। खेतों की मिट्टी में रमा हूँ, वह मुझमें रमी है। आज भी उस मिट्टी को झाड़झूड़ कर भले ही शहरी बनने की कोशिश करता हूँ, बन नहीं पाता। वह मिट्टी बाहर से चाहे न दिखाई दे, अपनी महक और रसमयता से वह मेरे भीतर बसी हुई है। इसीलिए मुझे मिट्टी से जुड़े

ये तमाम लोग भाते हैं। इस दुनिया में कहा-सुनी होती है, हाथापाई भी हो जाती है लेकिन कोई किसी के प्रति गाँठ नहीं बाँधता। दूसरे-तीसरे ही दिन परस्पर हँसते-बतियाते और एक दूसरे के दुख-दर्द में शामिल होते दिखाई पड़ते हैं। ये सभी कभी-न-कभी एक दूसरे से लड़ चुके हैं लेकिन कभी इसकी प्रतीति नहीं होती कि ये लड़ चुके हैं। कल के गुस्से को अगले दिन धूल की तरह झाड़कर फेंक देते हैं।

1. लोग लेखक से क्यों पूछते हैं कि क्या आपको बुरा नहीं लगता?

- वे गंदे लोग हैं।
- वे लोग आसपास गंदगी बिखेर देते हैं।
- वे लेखक से रुष्ट रहते हैं।
- उन्हें गरीबों से मेल-जोल पसंद नहीं।

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016

उत्तर : (d)

2. लेखक लोगों की शिकायतों को हलके में लेता है, क्योंकि—

- जुटने वाले लोग गरीब और ईमानदार हैं
- शिकायत करना लोगों की आदत होती है
- यह किसी बात को गंभीरता से नहीं लेता
- लेखक उन्हें जानता-पहचानता हैं

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016

उत्तर : (a)

3. साधारण बात पर भी हंगामा कौन खड़ा कर देते हैं?

- अमीर किन्तु असभ्य लोग
- लेखक के परिचित लोग
- अशिष्ट रेहड़ी-पटरी वाले
- गाँव से आए गरीब मजदूर

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016

उत्तर : (a)

4. प्रस्तुत गद्यांश साहित्य की किस विधा के अंतर्गत आएगा?

- रेखाचित्र
- कहानी
- जीवनी
- संस्मरण

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016

उत्तर : (a)

5. 'गाँठ बाँधना' का अर्थ है—

- क्रोध करना
- सँभालकर रखना
- गाँठ लगाना
- मन में रखना

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016

उत्तर : (d)

6. “इस दुनिया में कहा-सुनी होती है”.... ‘इस दुनिया’ का संकेत है—

- अमीर किन्तु अशिष्ट लोग
- गाँव से शहर आ बसे गरीब
- शहर से गाँव आ बसे मजदूरों की दुनिया
- लेखक को उकसाने वाला पड़ोस

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016

उत्तर : (b)

7. ‘अधजल गगरी छलकत जाए’ किसके संदर्भ में कहा गया है?

- अमीर बन गए असभ्य लोगों के लिए
- गाँव से शहर आकर कमाई करने वालों के लिए
- लेखक जैसे प्रबुद्धों के लिए
- अनपढ़ ग्रामीणों के लिए

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016

उत्तर : (a)

8. 'धूल की तरह झाड़कर फेंक देना' का आशय है—

- (a) सफाई से रहना (b) छोटों की उपेक्षा करना
(c) दूसरे को दे देना (d) पूरी तरह भुला देना

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016

उत्तर : (d)

निर्देश : नीचे दिए गए गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों से सही/सबसे उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनिए।

हमें स्वतंत्र हुए 15 वर्ष ही हुए थे कि पड़ोसी चीन ने हमारी पीठ में छुरा भोंक दिया। उत्तर सीमा की सफेद बर्फाली चोटियाँ शहीदों के खून से सनकर लाल हो गईं। हजारों माँओं की गोदें सूनी हुईं, हजारों की माँग का सिंदूर पुँछ गया और लाखों अभागे बच्चे पिता के प्यार से वंचित हो गए।

गणतंत्र दिवस निकट आ रहा था। देश का हौसला पस्त था। कोई उमंग नहीं रह गई थी पर्व मनाने की। तब यह सोचा गया कि जानी-मानी फिल्मी हस्तियाँ आयोजन में शामिल हों तो भीड़ उमड़ेगी। वहाँ कोई ऐसा गीत प्रस्तुत हो जो लोगों के दिलों को छूकर उन्हें झकझोर सके। चुनौती फिल्म जगत तक पहुँची। एक नौजवान गीतकार प्रदीप ने चुनौती स्वीकारने का मन बनाया और गीत लिखना शुरू किया। लेकिन सुर और स्वर के बिना गीत का क्या! प्रदीप संगीत निर्देशक सी. रामचंद्र के पास पहुँचे। उन्हें गीत पसंद आया और रक्षा मंत्रालय को सूचना दे दी गई।

26 जनवरी का शुभ दिन आया। लाखों की भीड़ बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रही थी। तब तक जो धुन बज रही थी वह हटी और थोड़ी देर शांति रही। तभी उस शांति को चीरता हुआ लता मंगेशकर का वेदना और चुनौती भरा स्वर सुनाई पड़ा— “ऐ मेरे वतन के लोगों, जरा आँख में भर लो पानी”। समय जैसे थम गया। सभी के मन एक ही भाव, एक ही रस में डूब गए। गीत समाप्त हुआ तो लगभग दो लाख लोग सिसक रहे थे। आँसू थे कि थमते ही न थे।

1. “ऐ मेरे वतन के लोगों.....” गीत के बारे में क्या सच नहीं है?

- (a) मन्ना डे ने सुर दिया
(b) सी. रामचंद्र ने संगीत दिया
(c) लता मंगेशकर ने स्वर दिया
(d) प्रदीप ने लिखा

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016

उत्तर : (a)

2. भारत में 26 जनवरी का पर्व मनाने की उमंग न रहने का कारण था—

- (a) सैनिकों के द्वारा मार्च-पास्ट से इनकार
(b) रक्षा मंत्रालय की अनिच्छा
(c) चीन का दबाव
(d) हजारों युवकों का शहीद होना

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016

उत्तर : (d)

3. रक्षा मंत्रालय को क्या सूचना दी गई होगी?

- (a) फिल्मी हस्तियाँ भाग लेंगी
(b) गीत प्रस्तुत करने की चुनौती स्वीकार है
(c) प्रदीप और सी. रामचंद्र भी दिल्ली आएंगे
(d) 26 जनवरी का पर्व मनाया जाए

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016

उत्तर : (a)

4. 'पीठ में छुरा भोंकना' का अर्थ है—

- (a) आक्रमण करना (b) विश्वासघात करना
(c) पराजित करना (d) युद्ध में घायल करना

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016

उत्तर : (b)

5. जानी-मानी फिल्मी हस्तियों को बुलाने का निर्णय क्यों लिया गया?

- (a) भीड़ जुटाने के लिए
(b) लता मंगेशकर का गीत सुनने के लिए
(c) शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिए
(d) गणतंत्र दिवस मनाने के लिए

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016

उत्तर : (a)

6. 'माँग का सिंदूर पुँछ जाना' मुहावरे का अर्थ है—

- (a) विधवा हो जाना (b) वियोगिनी होना
(c) अभागिन होना (d) अनाथ हो जाना

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016

उत्तर : (a)

7. देश का हौसला पस्त था, क्योंकि—

- (a) तैयारियाँ नहीं की गई थी
(b) कोई उमंग शेष नहीं थी
(c) फिल्मी हस्तियाँ साथ नहीं दे रही थी
(d) चीन से मात खाई थी

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016

उत्तर : (d)

8. 'उमड़ना' क्रिया का कौन-सा प्रयोग ठीक नहीं है?

- (a) नदी उमड़ आई (b) दूध उमड़ने लगा
(c) आँसू उमड़ चले (d) भीड़ उमड़ पड़ी

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016

उत्तर : (b)

निर्देश : नीचे दिए गए गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही/सबसे उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनिए।

बारिश के लिहाज से वह साल ठन-ठन गोपाल था। खेतों में जैसे-तैसे धान रोप दिया गया था लेकिन तेज धूप ने उसे झुलसा डाला था। सावन सिर पर था और बादल लापता। कि तभी एक उमसती हुई रात में बिजली कड़कने से नींद खुली। थोड़ी देर में झीसियाँ पड़ने लगी। चारपाइयाँ आँगन से उठाकर भीतर कर ली गईं। लेकिन हवा गुम थी और गर्मी ज्यों-की-त्यों, लिहाजा वह रात रतजगे में ही गई। सुबह हुई तो लोग धान बच जाने को लेकर ऊपर वाले का शुक्रिया अदा करते दिखे। बरसात रात वाली रफ्तार से ही जारी थी। न उससे धीमी, न तेज। आसमान समतल और तकरीबन सफेद था। बादल बीच-बीच में जरा-सा गुर्गर खामोश हो जा रहे थे। स्कूल का टाइम हुआ तो हम जैसे ढीलों ने इकतरफा तौर पर 'रेनी डे' मनाने का फैसला किया, जबकि पढ़ाकुओं ने बस्ता लादा और सुपरिचित रास्ते पर बढ़ चले। थके-हारे पढ़वेये शाम को लौटे तो उनकी हालत कटे खेत में पानी भरने पर भागे चूहों जैसी थी। बारिश से बुरी तरह ऊबकर हम सोए, इस उम्मीद में किस कल नीला आकाश देखने को मिलेगा।

1. “बारिश के लिहाज से वह साल ठन-ठन गोपाल था।”

वाक्य का भाव है—

- (a) बहुत बारिश हुई थी
(b) अकाल के कारण पैसा नहीं था
(c) पढ़ाई नहीं कर पाए थे
(d) बारिश नहीं हुई थी

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016

उत्तर : (d)

2. “सावन सिर पर था।” इस कथन का आशय है कि सावन—

- (a) दूर था (b) आने वाला था
(c) आ चुका था (d) सूखा था

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016

उत्तर : (c)

3. गद्यांश के आधार पर कहा जा सकता है कि अगले दिन—

- (a) लोग तेज बारिश के न होने से खुश थे
(b) तेज बारिश में ‘रेनी डे’ मनाया जाता है
(c) लोग बारिश होने से खुश थे
(d) लोग बारिश के न होने से परेशान थे

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016

उत्तर : (c)

4. ‘झीसियाँ’ शब्द का भाव है—

- (a) तेज फुहारें (b) तेज बूँदा-बाँदी
(c) बहुत हल्की बूँदा-बाँदी (d) मूसलाधार बारिश

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016

उत्तर : (c)

5. “हम जैसे ढीलों ने इकतरफा तौर पर ‘रेनी डे’ मनाने का फैसला किया।” वाक्य में लेखक ने अपनी किस विशेषता को बताया है?

- (a) पढ़ाई में पिछड़े
(b) हर्षोल्लास से त्योहार मनाने वाले
(c) दिमाग से कमजोर
(d) बारिश का मजा लेने वाले

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016

उत्तर : (a)

6. किन लोगों ने ‘रेनी डे’ नहीं मनाया ?

- (a) जो पढ़ाकू थे (b) जो डरपोक थे
(c) जो भीगना नहीं चाहते थे (d) जो बारिश से बचते थे

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016

उत्तर : (a)

7. “सावन सिर पर था और बादल लापता।” वाक्य है?

- (a) सरल (b) मिश्र
(c) संयुक्त (d) संकेतवाचक

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016

उत्तर : (c)

8. भाषा अर्जन के सम्बन्ध में कौन-सा कथन सत्य है?

- (a) भाषा सीखना एक उद्देश्य होता है।
(b) समाज-सांस्कृतिक परिवेश के अनुसार अर्थ-ग्रहण की प्रक्रिया स्वाभाविक होती है।
(c) भाषा अर्जन में बच्चे को बहुत अधिक प्रयास करना पड़ता है।
(d) भाषा अर्जन में किसी अन्य भाषा का व्याघात होता है।

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015

उत्तर : (b)

निर्देश : नीचे दिए गए गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में सबसे उचित विकल्प चुनिए।

सारा संसार नीले गगन के तले अनंत काल से रहता आया है। हम थोड़ी दूरी पर ही देखते हैं क्षितिज तक, जहाँ धरती और आकाश हमें मिलते दिखाई देते हैं। लेकिन जब वहाँ पहुँचते हैं, तो यह नजारा आगे खिसकता चला जाता है और इस नजारे का कोई ओर-छोर हमें नहीं दिखाई देता है। ठीक इसी तरह हमारा जीवन भी है।

जिंदगी की न जाने कितनी उपमाएँ दी जा चुकी हैं, लेकिन कोई भी उपमा पूर्ण नहीं मानी गई, क्योंकि जिंदगी के इतने पक्ष हैं कि कोई भी उपमा उस पर पूरी तरह फिट नहीं बैठती। बर्नार्ड शाँ जीवन को एक खुली किताब मानते थे, और यह भी मानते थे कि सभी जीवों को समान रूप से जीने का हक है। वह चाहते थे कि इंसान अपने स्वार्थ में अंधा होकर किसी दूसरे जीव के जीने का हक न मारे। यदि इंसान ऐसा करता है, तो यह बहुत बड़ा अन्याय है। हमारे विचार स्वाभाविक रूप से एक-दूसरे से मेल नहीं खाते हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं होता कि हम दूसरों को उसके जीने के हक में वंचित कर दें।

यह खुला आसमान, यह प्रकृति और यह पूरा भू-मंडल हमें दरअसल यही बता रहा है कि हाथी से लेकर चींटी तक सभी को समान रूप से जीवन बिताने का हक है। जिस तरह से खुले आसमान के नीचे हर प्राणी बिना किसी डर के जीने, साँस लेने का अधिकारी है, उसी तरह से मानव-मात्र का स्वभाव भी होना चाहिए कि वह अपने जीने के साथ दूसरों से उनके जीने का हक न छीने। यह आसमान हमें जिस तरह से भय से छुटकारा दिलाता है, उसी तरह से हमें भी मानव-जाति से इतर जीवों को डर से छुटकारा दिलाकर उन्हें जीने के लिए पूरा अवसर देना चाहिए। दूसरों के जीने के हक को छीनने से बड़ा अपराध या पाप कुछ नहीं हो सकता।

1. ‘क्षितिज’ किसे कहते हैं?

- (a) जहाँ धरती और आसमान मिले हुए दिखाई देते हैं
(b) जहाँ धरती और आकाश पास-पास होते हैं
(c) जहाँ तक धरती दिखाई पड़ती है
(d) जहाँ से धरती और आकाश दिखाई पड़ते हैं

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015

उत्तर : (a)

2. यदि किसी का ओर-छोर नहीं है, तो -

- (a) उसके बहुत से सिरे हैं (b) उसका सिरा नहीं मिलता
(c) उसकी सीमा नहीं है (d) उसका विस्तार अधिक है

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015

उत्तर : (c)

3. ‘फिट’ और ‘इंसान’ शब्द है -

- (a) देशज (b) आगत
(c) तत्सम (d) तद्भव

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015

उत्तर : (b)

4. बर्नार्ड शाँ ने जीवन की उपमा किससे दी है?

- (a) पढ़ी जा रही पुस्तक से (b) खुली पुस्तक से
(c) सभी जीवों से (d) क्षितिज से

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015

उत्तर : (b)

5. हम बहुत बड़ा अन्याय कर रहे होते हैं, यदि -

- (a) किसी से दुश्मनी रखते हैं
(b) किसी को लूट लेते हैं
(c) किसी को टिकने नहीं देते
(d) किसी को जीने का अधिकार नहीं देते

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015

उत्तर : (d)

6. प्रकृति और खुला आसमान बता रहे हैं कि सबको -

- (a) निडर बने रहना चाहिए
(b) मनमर्जी करने का हक है

- (c) प्रकृति से प्रेम करना चाहिए
(d) जीने का हक है

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015

उत्तर : (d)

7. आसमान हमें दिलाता है -

- (a) रक्षा करने का वचन
(b) साथ-साथ रहने का अनुशासन
(c) भय से छुटकारे का आश्वासन
(d) भयभीत न करने का आग्रह

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015

उत्तर : (c)

8. किस शब्द में 'इक' प्रत्यय का प्रयोग नहीं किया जा सकता ?

- (a) भय (b) जीव
(c) स्वभाव (d) प्रकृति

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015

उत्तर : (a)

9. 'अपराध' शब्द है -

- (a) भाववाचक संज्ञा (b) पदार्थवाचक संज्ञा
(c) व्यक्तिवाचक संज्ञा (d) जातिवाचक संज्ञा

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015

उत्तर : (a)

निर्देश : नीचे दिए गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सबसे उचित उत्तर वाले विकल्प चुनिए।

“किसी को देखने के लिए आँख की नहीं, दृष्टि की आवश्यकता होती है” स्वामी विवेकानन्द का यह कथन इस महिला के जीवन का दर्शन बन गया है। इसी जीवन दर्शन के सहारे उन्होंने एक ओर कठिनाइयों का सामना किया, तो दूसरी ओर सफलता का मार्ग ढूँढ़ा और उस पर निर्भयता से बढ़ चलीं। जी हाँ, हम बात कर रहे हैं मुम्बई की रेवती रॉय की।

रेवती रॉय वह महिला हैं जिन्होंने महिलाओं की कठिनाइयों को ध्यान में रख केवल उन्हीं की सुविधा के लिए 'फॉरशी' नाम से कैब सेवा प्रारम्भ की। उद्देश्य स्पष्ट था- कामकाजी और जरूरतमन्द महिलाओं को अपने शहर में सुरक्षित सफर का भरोसा देना। यह सेवा उन महिलाओं के लिए वरदान साबित हुई जिन्हें महानगरों में मुँह बाएँ बैठे अपराधी तत्वों या परपीड़ा में आनन्द लेने वालों से प्रायः रोज ही जूझना पड़ता है।

खतरों और आशंकाओं से भरी सड़क-परिवहन की जिन्दगी में कदम रखने का निर्णय लेना रेवती के लिए सरल नहीं था। लेकिन कभी-कभी विवशता भी प्रेरणा देती है। ऐसे ही अवसरों पर 'आँख नहीं, दृष्टि' वाला दर्शन प्रेरक होता है। गम्भीर बीमारी से जूझ रहे पति के इलाज में सारी जमापूँजी चुक जाने के बाद रेवती को अपने अस्तित्व के लिए कुछ-न-कुछ करना था। सो उन्होंने एकदम नया रास्ता चुना- कैब के द्वारा महिलाओं को सुरक्षित यात्रा का आश्वासन।

1. कौन-सा विकल्प गद्यांश के मुख्य भाव के सबसे निकट है?

- (a) साहस और खतरे
(b) पहले घर फिर बाहर
(c) हिम्मत और जिन्दगी
(d) हिम्मत करे इन्सान तो क्या काम है मुश्किल

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2015

उत्तर : (d)

2. किस शब्द में उपसर्ग और प्रत्यय दोनों हैं?

- (a) प्रारम्भ (b) सफलता
(c) परिवहन (d) कठिनाइयाँ

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2015

उत्तर : (b)

3. 'परपीड़ा' शब्द का गद्यांश में प्रयोग के अनुसार अर्थ है—

- (a) दूसरों से पीड़ा (b) दूसरों में पीड़ा
(c) दूसरों की पीड़ा (d) दूसरों को पीड़ा

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2015

उत्तर : (c)

4. गद्यांश के प्रारम्भ में उद्धृत कथन किसके जीवन का दर्शन बना?

- (a) संघर्षशील व्यक्ति के (b) रेवती रॉय के
(c) विवेकानन्द के (d) असुरक्षित महिलाओं के

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2015

उत्तर : (b)

5. रेवती रॉय की कैब सेवा मूलतः किसके लिए है?

- (a) कामकाजी महिलाओं के लिए
(b) महानगरों के लिए
(c) जरूरतमन्द लोगों के लिए
(d) मुम्बई के निवासियों के लिए

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2015

उत्तर : (a)

6. कामकाजी महिलाओं को प्रायः नित्य ही जूझना पड़ता है—

- (a) मनमानी करने वाले बालकों से
(b) परिवहन की समस्याओं से
(c) गृहस्थी की समस्याओं से
(d) परपीड़क और अपराधी लोगों से

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2015

उत्तर : (d)

7. कैब सेवा प्रारम्भ करने के पीछे कारण था—

- (a) समाजसेवा की भावना (b) महिलाओं की कठिनाइयाँ
(c) सामाजिक दबाव (d) पारिवारिक विवशता

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2015

उत्तर : (b)

8. रेवती रॉय ने एकदम नया रास्ता चुना—

- (a) खतरों में कदम रखने का
(b) लोगों की सेवा करने का
(c) बीमार पति की देखभाल का
(d) महिलाओं के लिए कैब संचालन का

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2015

उत्तर : (d)

9. किस जिन्दगी को खतरों और आशंकाओं से भरा माना गया है?

- (a) 'फॉरशी' कैब संचालन की (b) कामकाजी महिलाओं की
(c) महानगरों की (d) सड़क परिवहन की

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2015

उत्तर : (d)

निर्देश : नीचे दिए गए गद्यांश को पढ़कर सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए।

समाज में पाठ्यशालाओं, स्कूलों अथवा शिक्षा की दूसरी दुकानों की कोई कमी नहीं है। छोटे से छोटे बच्चे को माँ-बाप स्कूल भेजने की जल्दी करते हैं। दो-ढाई साल के बच्चे को भी स्कूल में बिठाकर आ जाने का आग्रह भी हर घर में बना हुआ है।

इसके विपरीत हर घर की दूसरी सच्चाई यह भी है कि कोई भी माँ-बाप बालकों के बारे में, बालकों की सही शिक्षा के बारे में और साथ ही सच्चा एवं अच्छा माता-पिता अथवा अभिभावक होने का शिक्षण कहीं से भी प्राप्त नहीं करता। माता-पिता बनने से पहले किसी भी नौजवान जोड़े को यह नहीं सिखाया जाता है कि माँ-बाप बनने का अर्थ क्या है? इससे पहले किसी भी जोड़े को यह भी नहीं सिखाया जाता है कि अच्छे और सच्चे दाम्पत्य की शुरुआत कैसे की जानी चाहिए? पति-पत्नी होने का अर्थ क्या है? यह भी कोई नहीं बताता। परिणाम साफ है कि जीवन शुरू होने से पहले ही घर टूटने बिखरने लगते हैं। घर बसाने की शाला न आज तक कहीं खुली है और न खुलती दिखती है। समाज और सत्ता दोनों या तो इस संकट के प्रति सजग नहीं है या फिर इसे अनदेखा कर रहे हैं।

1. 'भी' शब्द है -

- (a) क्रिया (b) क्रियाविशेषण
(c) संबंधवाचक (d) निपात

CTET - Ist Paper (I-V) July 2013

उत्तर : (d)

2. इसके विपरीत हर घर की दूसरी सच्चाई यह भी है कि ...

- (a) सूक्ति (b) वास्तविक
(c) वास्तविकता (d) सद्बचन

CTET - Ist Paper (I-V) July 2013

उत्तर : (c)

3. 'घर के टूटने-बिखरने का मुख्य कारण क्या है?

- (a) बच्चों के बारे में न जानना
(b) माता-पिता बनने का अर्थ न जानना
(c) दाम्पत्य का अर्थ न जानना
(d) घर बसाने की जल्दी करना

CTET - Ist Paper (I-V) July 2013

उत्तर : (c)

4. हर घर में किस चीज का आग्रह बना हुआ है?

- (a) बच्चों को स्कूल न भेजने का
(b) बहुत छोटे बच्चे को स्कूल में पढ़ाने का
(c) बहुत छोटे बच्चे की दुकान भेजने का
(d) बहुत छोटे बच्चे को स्कूल में बिठाकर आने का

CTET - Ist Paper (I-V) July 2013

उत्तर : (d)

5. लेखक के लिए किसका शिक्षण प्राप्त करना जरूरी है?

- (a) पति-पत्नी बनने का
(b) बच्चों को किसी भी प्रकार की शिक्षा देने का
(c) अच्छे माता-पिता बनने का
(d) छोटे-छोटे बच्चों को उच्च विद्यालयों में प्रवेश दिलाने का

CTET - Ist Paper (I-V) July 2013

उत्तर : (c)

6. माता-पिता को बच्चों की सही शिक्षा के बारे में जानना क्यों जरूरी है?

- (a) बच्चों को ज्ञानवान् बनाया जा सके।
(b) ताकि बच्चों को उच्च डिग्रियाँ प्राप्त करवाई जा सकें।

- (c) ताकि बच्चे स्वयं प्रवेश लेने योग्य बन सकें।
(d) जिससे बेहतर समाज का निर्माण किया जा सके।

CTET - Ist Paper (I-V) July 2013

उत्तर : (d)

7. समाज और सत्ता किसके प्रति सजग नहीं है?

- (a) अभिभावकों के द्वारा शिक्षा प्राप्त न करने के प्रति
(b) ज्ञानवान् समाज न बन पाने के घोर संकट के प्रति
(c) घर बसाने की शिक्षा देने वाली शाला खोलने के प्रति
(d) माता-पिता द्वारा बच्चों का पालन-पोषण न करने के प्रति

CTET - Ist Paper (I-V) July 2013

उत्तर : (c)

8. लेखक के अनुसार सबसे पहले क्या जानना जरूरी है?

- (a) दाम्पत्य की शुरुआत कैसे की जानी चाहिए
(b) बच्चों के बारे में
(c) बच्चों की शिक्षा के बारे में
(d) माता-पिता के शिक्षा-स्तर को

CTET - Ist Paper (I-V) July 2013

उत्तर : (a)

9. 'माता-पिता' शब्द युग्म है—

- (a) सार्थक-निरर्थक शब्द-युग्म (b) सार्थक शब्द-युग्म
(c) निरर्थक शब्द-युग्म (d) पुरुरवत शब्द-युग्म

CTET - Ist Paper (I-V) July 2013

उत्तर : (b)

10. हिन्दी गद्य-शिक्षण की पाठ-योजना में उद्देश्य कथन आता है

- (a) पूर्वज्ञान
(b) प्रस्तावना प्रश्न के पश्चात्
(c) आदर्श वाचन के पश्चात्
(d) मौन वाचन के पहले

UP TET - Ist Paper (I-V) Dec. 2016

उत्तर : (b)

11. गद्य शिक्षण में काठिन्य निवारण किया जा सकता है

- (a) चित्र दिखाकर (b) वस्तु को प्रत्यक्ष दिखाकर
(c) मॉडल दिखाकर (d) उपर्युक्त सभी

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Dec. 2016

उत्तर : (d)

निर्देश : दिए गए गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प छाँटिए।

धर्म पालन करने के मार्ग में सबसे अधिक बाधा चित्त की चंचलता, उद्देश्य की अस्थिरता और मन की निर्बलता से पड़ती है। मनुष्य के कर्तव्य मार्ग में एक ओर तो आत्मा के बुरे-भले कामों का ज्ञान दूसरी ओर आलस्य और स्वार्थपरता रहती है। बस मनुष्य इन्हीं दोनों के बीच में पड़ा रहा है। अंत में उसका मन पक्का हुआ तो वह आत्मा की आज्ञा मानकर अपना धर्म पालन करता है, पर उसका मन दुविधा में पड़ा रहा है तो स्वार्थपरता उसे निश्चित ही घेरगी और उसका चरित्र घृणा के योग्य हो जायेगा। इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि आत्मा जिस बात को करने की प्रवृत्ति दे, उसे बिना स्वार्थ सोचे, झटपट कर डालना चाहिए। इस संसार में जितने बड़े-बड़े लोग हुए हैं सभी ने अपने कर्तव्य को सबसे श्रेष्ठ माना है, क्योंकि जितने कर्म उन्होंने किए उन सबने अपने कर्तव्य पर ध्यान देकर न्याय का बर्ताव किया। जिन जातियों में यह गुण पाया जाता है, वे ही संसार में उन्नति करती हैं और संसार में उनका नाम आदर से लिया जाता है। जो लोग स्वार्थी होकर अपने कर्तव्य पर ध्यान नहीं देते, वे संसार में लज्जित होते हैं और सब लोग उनसे घृणा करते हैं। जो कर्तव्य पालन करता

है, उनसे वह अपने कामों और वचनों से सत्यता का बर्ताव भी रखता है। सत्यता ही एक ऐसी वस्तु है जिससे इस संसार में कोई काम झूठ बोलने से नहीं चल सकता। झूठ बोलना कई रूपों में दिख पड़ता है, जैसे चुप रहना, किसी बात को बढ़ाकर कहना, किसी बात को छिपाना, झूठ-मूठ दूसरों की हाँ में हाँ मिलाना आदि। कुछ ऐसे लोग भी होते हैं जो मुँह देखी बातें बनाया करते हैं, पर करते वहीं हैं जो उन्हें रुचता है। ऐसे लोग मन में समझते हैं कि कैसे सबको मूर्ख बनाकर हमने अपना काम कर लिया, पर वास्तव में वे अपने को ही मूर्ख बनाते हैं और अंत में उनकी पोल खुल जाने पर समाज के लोग उनसे घृणा करते हैं।

1. धर्म पालन करने में बाधा डालने वाली प्रवृत्तियाँ कौन-सी हैं?

- (a) कमजोर मन, उद्देश्य का निश्चित न होना तथा चंचल मनोवृत्ति का होना
(b) धर्म का ज्ञान न होना
(c) आलस्य की अधिकता
(d) जानकारी की कमी

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Oct. 2017

उत्तर : (a)

2. संसार के बड़े-बड़े लोगों ने सबसे श्रेष्ठ माना है

- (a) उत्तम चरित्र को (b) सदाचार को
(c) परोपकार को (d) अपने कर्तव्य को

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Oct. 2017

उत्तर : (d)

3. 'निर्बलता' शब्द में उपसर्ग और प्रत्यय का सही विकल्प है

- (a) निर् + बल + ता (b) निर + बल + ता
(c) निर + बलत + आ (d) निर + बल + अता

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Oct. 2017

उत्तर : (a)

4. 'कायर' की भाववाचक संज्ञा है

- (a) अकायरता (b) कायरत्व
(c) कायरपन (d) कायरता

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Oct. 2017

उत्तर : (d)

5. 'अपना मतलब निकालने वाला' के लिए उचित शब्द क्या है?

- (a) स्वार्थी (b) स्वार्थपरता
(c) स्वार्थपरक (d) कुटिल

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Oct. 2017

उत्तर : (a)

निर्देश : दिए गए गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प छाँटिए।

आदिम आर्य घुमक्कड़ ही थे। यहाँ से वहाँ वे घूमते ही रहते थे। घूमते भटकते ही वे भारत पहुँचे थे। यदि घुमक्कड़ी का बाना उन्होंने न धारण किया होता, यदि वे एक स्थान पर ही रहते, तो आज भारत में उनके वंशज न होते। भगवान बुद्ध घुमक्कड़ थे। भगवान महावीर घुमक्कड़ थे। वर्षा-ऋतु के कुछ महीनों को छोड़कर एक स्थान में रहना बुद्ध के वंश का नहीं था। 35 वर्ष की आयु में उन्होंने बुद्धत्व प्राप्त किया। 35 वर्ष से 80 वर्ष की आयु तक जब उनकी मृत्यु हुई, 45 वर्ष तक वे निरंतर घूमते ही रहे। अपने आपको समाज सेवा और धर्म प्रचार में लगाये रहे। अपने शिष्यों से उन्होंने कहा था 'चरथ भिक्खवे चारिक' हे भिक्षुओं! घुमक्कड़ी करो यद्यपि कभी भारत के बाहर नहीं गए, किन्तु उनके शिष्यों ने उनके वचनों को सिर आँखों

पर लिया और पूर्व में जापान, उत्तर में मंगोलिया, पश्चिम में मकदूनिया और दक्षिण में बाली द्वीप तक धावा मारा। श्रावण महावीर ने स्वच्छन्द विचरण के लिए अपने वस्त्रों को त्याग दिया। दिशाओं को उन्होंने अपना अम्बर बिना लिया, वैशाली में जन्म लिया, पावा में शरीर त्याग दिया। जीवनपर्यन्त घूमते रहे। मानव के कल्याण के लिए मानवों के राह प्रदर्शन के लिए और शंकराचार्य बारह वर्ष की अवस्था में सन्यास लेकर कभी केरल, कभी मिथला, कभी कश्मीर और कभी बद्रिकाश्रम में घूमते रहे। कन्याकुमारी से लेकर हिमालय तक समस्त भारत को अपना कर्मक्षेत्र समझा। सांस्कृतिक एकता के लिए, समन्वय के लिए, श्रुति धर्म की रक्षा के लिए शंकराचार्य के प्रयत्नों से ही वैदिक धर्म का उत्थान हो सका।

1. 'घुमक्कड़' शब्द में कौन-सा प्रत्यय है?

- (a) अक्कड़ (b) ड़
(c) अड़ (d) कड़

UP TET - Ist Paper (I-V) Oct. 2017

उत्तर : (a)

2. महावीर स्वामी का जन्म कहाँ हुआ था?

- (a) पावापुरी (b) वैशाली
(c) कुशीनगर (d) पारसौली

UP TET - Ist Paper (I-V) Oct. 2017

उत्तर : (b)

3. 'स्वच्छन्द' में कौन-सी संधि है?

- (a) विसर्ग (b) दीर्घ
(c) गुण (d) व्यंजन

UP TET - Ist Paper (I-V) Oct. 2017

उत्तर : (d)

4. महात्मा बुद्ध ने जब बुद्धत्व प्राप्त किया तब उनकी अवस्था कितनी थी?

- (a) 12 वर्ष (b) 35 वर्ष
(c) 45 वर्ष (d) 80 वर्ष

UP TET - Ist Paper (I-V) Oct. 2017

उत्तर : (b)

5. 'श्रुति धर्म' का क्या अर्थ है?

- (a) जैन धर्म (b) बौद्ध धर्म
(c) मुस्लिम धर्म (d) वैदिक धर्म

UP TET - Ist Paper (I-V) Oct. 2017

उत्तर : (d)

निर्देश : नीचे दिए गए अनुच्छेद को पढ़िए और प्रश्नों के लिए सही विकल्प का चयन कीजिए-

जो सबसे महत्वपूर्ण बात इस प्रशिक्षण के दौरान सामने आई- वह थी छात्रों तथा शिक्षकों के बीच परस्पर सम्बन्ध। हमने अध्यापकों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया था कि वे प्रत्येक छात्र की भावना की कद्र करें तथा यह देखें कि छात्र क्या चाहता है। यदि एक बार छात्र शिक्षक से डरना बन्द कर देता है तथा दोनों के बीच एक दोस्ताना रिश्ता कायम हो जाता है तो छात्र/छात्रा के लिए सीखना आनन्ददायक और आसान हो जाता है। शिक्षक की निकटता और उपस्थिति बहुत महत्वपूर्ण होती है, चाहे वह कक्षा में बैठकर हो या स्कूल के बाद खेल के मैदान में। इससे शिक्षक एवं छात्र एक दूसरे के निकट आ जाते हैं तथा छात्र के सम्पूर्ण विकास में इसका बहुत योगदान रहता है। दूसरा महत्वपूर्ण पहलू यह है कि शासकीय शिक्षकों के साथ भी एक रिश्ता बनाए रखना चाहिए क्योंकि समान्तर शिक्षकों के रहते नियमित शिक्षक प्रायः यह समझने लगते हैं कि उनकी कोई आवश्यकता नहीं है। एक तरह से वे निश्चिन्त हो जाते हैं तथा सारा काम समान्तर शिक्षकों पर डाल देते हैं।

1. बच्चों के सीखने में सबसे महत्वपूर्ण है -

- (a) शिक्षक का सौम्य स्वभाव
- (b) शिक्षक की विद्वता
- (c) शिक्षक और बच्चों के बीच मित्रवत सम्बन्ध
- (d) शिक्षक की संवेदनशीलता

Bihar TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (c)

2. प्रत्येक छात्र/छात्रा की भावना की कद्र होती है -

- (a) उनकी बातों को ध्यान से सुनने से
- (b) यह जानने से कि वे क्या जानते हैं
- (c) उनका सम्मान करने से
- (d) उपरोक्त सभी

Bihar TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (d)

3. शिक्षक विद्यालय के बाद भी बच्चों से रिश्ता बनाए रखता है-

- (a) ऐसा करना ठीक नहीं है क्योंकि विद्यालय के बाहर शिक्षक-शिक्षक नहीं रहता
- (b) ऐसा करना ठीक नहीं है क्योंकि यह परम्परा के विरुद्ध है
- (c) ऐसा करना ठीक है क्योंकि शिक्षक की जिम्मेदारी विद्यालय के बाद समाप्त नहीं हो जाती
- (d) ऐसा करना ठीक है क्योंकि ऐसा करने से शिक्षक और बच्चों के बीच निकटता और विश्वास का रिश्ता बनता है जो बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक है

Bihar TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (d)

4. नियमित शिक्षकों को ऐसा क्यों लगता है कि उनकी कोई आवश्यकता नहीं है?

- (a) समान्तर शिक्षकों पर पूर्ण निश्चिन्त होकर काम डाल दिया जाता है।
- (b) समान्तर शिक्षक ही विद्यालय की गतिविधियों के लिए जिम्मेदार हैं।
- (c) समान्तर शिक्षक नियमित नहीं होते और उनकी नौकरी स्थायी नहीं होती, इसलिए उन्हें सभी के कार्य करने पड़ते हैं।
- (d) समान्तर शिक्षक का यह दायित्व है कि वह नियमित शिक्षक का बोझ कम करे।

Bihar TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (a)

5. शिक्षक और छात्रों के बीच कैसा सम्बन्ध लेखक को प्रिय है?

- (a) मित्रवत् सम्बन्ध
- (b) शिक्षक के प्रति श्रद्धापूर्ण व्यवहार
- (c) अनुशासन में रहकर शिक्षक की बात सुनी जाए
- (d) उपरोक्त सभी

Bihar TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (a)

6. छात्र के सम्पूर्ण विकास में शिक्षक की भूमिका है -

- (a) छात्र/छात्रा की स्थिति और आकांक्षा समझकर शिक्षक उनके अनुरूप प्रशिक्षण दे
- (b) छात्र/छात्रा को पाठ समझकर उन्हें याद करा दे

- (c) छात्र/छात्रा को दण्डित करे
- (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Bihar TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (a)

निर्देश : नीचे दिए गए अनुच्छेद को पढ़िए और सही

विकल्प का चयन कीजिए।

रूढ़ संज्ञा और कथापूर्व विशेषण देकर घटना या संवाद को पहले से तय कर देने वाली कहानियों की ही पूरक वे तमाम रचनाएँ कही जा सकती हैं, जिन्हें 'कविता' कहकर हिन्दी पाठ्यपुस्तकों में शामिल किया जाता है। हिन्दी विषय के अन्तर्गत पढ़ाई जाने वाली तथाकथित कविताएँ पढ़कर बच्चे को दी गई पंक्तियों का लक्ष्यार्थ पहचानना और लिखना होता है। जिसे मैं लक्ष्यार्थ कह रहा हूँ, वह प्रायः एक घिरते हुए प्रतीकार्थ जैसा दिखता अवश्य है, पर इसे प्रतीकार्थ कहना ठीक नहीं होगा। प्रतीकों में आभा का गुण होता है यानी जिस भाव या अनुभव की क्षणिक रचना वे मन में करते हैं, उनके इर्द-गिर्द एक आभावृत्त की गुंजाइश रहती है। इस आभावृत्त को हम ऐसा निर्जन क्षेत्र कह सकते हैं, जिसमें हमारी कल्पना कविता की मदद से थोड़ी देर विचार लेती है और ऐसा कुछ देखने में समर्थ हो जाती है जो निर्दिष्ट नहीं था- कवि के द्वारा तो नहीं ही था, हमारे होशियार मन द्वारा भी नहीं। इसी निर्जन क्षेत्र के दरवाजे खोलने की क्षमता के कारण ही कविता की शिक्षा को भाषा-शिक्षण की सामान्य, सीमित परिधि के परे जाने वाली शिक्षा माना जा सकता है। कविता ही भाषा-शिक्षण में यह मुक्तिदायी आयाम जोड़ सकती है। लेकिन यह सम्भावना तथाकथित कविताओं की मदद से नहीं खोली जा सकती जो हिन्दी की पाठ्यपुस्तक में अनिवार्य रूप से शामिल रहती है।

1. अनुच्छेद में 'पूरक' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

- (a) पाठ्यपुस्तक
- (b) कहानी
- (c) कविता
- (d) रचनाएँ

Bihar TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

उत्तर : (c)

2. प्रतीकों में कौन-सा गुण होता है?

- (a) आभा का
- (b) लक्ष्यार्थ का
- (c) भाव से जुड़ी वैविध्यपूर्ण कल्पनाओं का
- (d) अनुभव का

Bihar TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

उत्तर : (a)

3. 'निर्जन क्षेत्र' किस अर्थ की ओर संकेत करता है?

- (a) सुनसान जगह
- (b) खामोश जगह
- (c) आभावृत्त
- (d) पहले से तय किसी भाव/अर्थ से मुक्त मन

Bihar TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

उत्तर : (c)

4. कविता की शिक्षा को भाषा-शिक्षण की सामान्य परिधि के परे जाने वाली शिक्षा क्यों माना जाता है?

- (a) कविता मनोरंजन करती है
- (b) सामान्य भाषा-शिक्षण अनुमान, कल्पना करने का अवसर नहीं देता जबकि कविता में बिना किसी पूर्वधारणा के कल्पना करने के पर्याप्त अवसर होते हैं

- (c) सामान्य भाषा-शिक्षण में अनेक कमियाँ हैं, जो कविता शिक्षण में नहीं हैं
- (d) सामान्य भाषा-शिक्षण में कहानियाँ होती हैं जो बच्चों को कल्पना करने का अवसर नहीं देती जबकि कविता कल्पना करने के अवसर देती है

Bihar TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

उत्तर : (b)

5. उन तथाकथित कविताओं की मदद.....जो.....वाक्य में किन कविताओं की ओर संकेत किया गया है?

- (a) जो अनिवार्य हैं
- (b) जो हिन्दी की हैं
- (c) जो कल्पना द्वारा अप्रत्यक्ष भावों को समझने का अवसर देती हैं
- (d) जो मुक्तिदायी हैं

Bihar TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

उत्तर : (c)

6. प्रायः 'लक्ष्यार्थ' कैसा दिखता है?

- (a) मुख्यार्थ से मिलता-जुलता
- (b) प्रतीकार्य जैसा
- (c) अभिधार्थ जैसा
- (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Bihar TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

उत्तर : (b)

- निर्देश : निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

भाषा प्रतीकों का एक व्यवस्थित ढाँचा है। इन प्रतीकों से बनी भाषा द्वारा ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक सांस्कृतिक विचार व धरोहर संचरित होती है। यह संस्कृति का अहम हिस्सा है। संस्कृति की तरह ही भाषा इन्सान के पैदा होने से पहले ही उपस्थित रहती है। अमेरिका में पैदा होने वाला बच्चा अंग्रेजी भाषा के सम्पर्क में आता है, रूस में पैदा होने वाला रूसी के, इसी तरह भाषाएँ अलग-अलग समाजों में प्रतीकात्मक समझ के लिए एक सन्दर्भ प्रदान करती हैं। इस मायने में भाषा संस्कृति का हिस्सा है जो इन्सान का अनुभवातीत करता है। भाषा के बिना संस्कृति को संचारित करने में परेशानी होगी। संस्कृति के बिना मानव अपनी अद्वितीय मानवता खो देंगे।

1. 'अनुभवातीत' का मतलब है—

- (a) अतीत व अनुभव (b) अनुभव का अतीत
- (c) अनुभव के परे (d) अनुभवहीनता

Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (c)

2. कौन-सा कथन सही नहीं है?

- (a) भाषा प्रतीकों का व्यवस्थित ढाँचा है
- (b) भाषा हमारे अनुभव बाँटने के काम आती है
- (c) भाषा बिना संस्कृति संचारित नहीं हो सकेगी
- (d) सम्प्रेषण के लिए बोली हुई भाषा आवश्यक है

Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (c)

- निर्देश : गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में सबसे उचित विकल्प चुनिए :

राजस्थान समाज के आगे मैं इसलिए नतमस्तक हूँ कि उसने ओरण की व्यवस्था सैकड़ों वर्ष पहले निकाली। ओरण यानि एक ऐसा जंगल जो केवल अकाल के समय में खुलेगा। इसका मतलब एक ऐसा कुआँ जो केवल आग लगने पर उसे बुझाने के काम आए। मतलब उसको पीने के लिए या नहाने के लिए नहीं लगाना है। ऐसे विशेष जंगल उन्होंने बनाए। इसका यह मतलब नहीं कि राजस्थान में अकाल नहीं आते। अकाल खूब आए लेकिन उनसे लड़ने की और उनको सहने की हमारी तैयारी पक्की रखी। लड़ना भी शब्द नहीं रहा। अकाल भी हमारे परिवार का एक हिस्सा है। प्रकृति आज थोड़ा-सा ज्यादा पानी बरसा गई है, कल थोड़ा कम गिरा देगी। तो उसके स्वभाव को देखना है। उन्होंने एक अन्दाज लगाया होगा अपने 500 पीढ़ियों के इतिहास में से। हर 13-14 साल में वर्षा कम हो जाती है, अकाल पड़ता है। तो अपने को 12-13 साल तक एक जंगल को बचा कर रखना है। ओरण का जो अलग-अलग बंद और खुलने का समय है वह भी तय किया गया। पूजा और मंदिर से भी जोड़ा गया, वह तो इसलिए कि उनको बड़े पैमाने पर कोई चीज करनी थी। वह धर्म से जुड़े बिना नहीं हो सकती थी।

1. कौन शब्द विदेशी है?

- (a) शब्द (b) धर्म
- (c) अंदाज (d) प्रकृति

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (c)

2. निम्न किस शब्द में प्रत्यय नहीं है?

- (a) पीढ़ियों (b) विशेष
- (c) लड़ना (d) सैकड़ों

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (b)

3. 'व्यवस्था' में संधि है—

- (a) यण् (b) दीर्घ
- (c) वृद्धि (d) गुण

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (a)

4. 'नतमस्तक' में समास है—

- (a) तत्पुरुष (b) द्विगु
- (c) बहुव्रीहि (d) द्वन्द्व

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (c)

5. संज्ञा नहीं है—

- (a) ओरण (b) कुआँ
- (c) लड़ना (d) जंगल

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (c)

6. 'तय' शब्द है—

- (a) तत्सम (b) तद्धव
- (c) देशज (d) विदेशी

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (d)

7. 'आग' का तत्सम है—

- (a) आग (b) आगि
- (c) अग्नि (d) अग्ग

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (c)

निर्देश : निम्न गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और फिर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है यह केवल नीति और सद्वृत्ति का ही नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि का भी क्षय करता है। किसी युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी तो वह उसके पैरों में बंधी चक्की के समान होगी, जो उसे दिन-रात अवनति के गड्ढे में गिराती आएगी और यदि अच्छी होगी तो सहारा देने वाली बाहु के समान होगी, जो उसे निरन्तर उन्नति की ओर उठाती जाएगी।

1. इस गद्यांश का शीर्षक होगा –

- (a) कुसंग की महत्ता (b) अच्छी संगति
(c) संगति (d) युवा पुरुष

Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011
उत्तर : (c)

2. 'कुसंग' का अर्थ है –

- (a) कुशल साथी (b) कक्षा के साथी
(c) संगति के साथी (d) बुरी संगति

Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011
उत्तर : (d)

3. इस गद्यांश का केन्द्रीय भाव है –

- (a) संगति का महत्त्व (b) युवा पुरुष
(c) नीति और सद्वृत्ति (d) उन्नति

Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011
उत्तर : (a)

निर्देश : निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

भारत अब प्रौढ़ावस्था में आ पहुँचा है। भीषण घात-प्रतिघात से साक्षात्कार करते हुए भी उसने बहुमुखी विकास किया है, इसमें सन्देह नहीं। लेकिन उसका एक प्रकोष्ठ अन्धकार में अभी भी डूबा हुआ है- हृदय, जोकि मानवीय क्रिया व्यापार का नियन्ता है। इस समय वह स्वार्थपरता और भोगवाद के ऐसे रोग से ग्रसित हो गया है जिसके कारण मानवीय आचरण भी बनैला हो गया है। क्षेत्रवाद, जातिवाद, भाषावाद, सम्प्रदायवाद-प्रभृति विभीषिकाएँ जो आजादी के साथ उपहार में मिली थीं, आए दिन कहीं-न-कहीं अपनी लोमहर्षक जलीला सम्पन्न करती रहती हैं। परिणामस्वरूप शिथिल पड़ते अनुशासन के बन्धन, विखण्डित होती श्रद्धा और कलंकित होता विश्वास; मानवता के लिए काँटों की सेज बन प्रस्तुत हो रहे हैं। फिर भी 21वीं सदी में प्रवेश की अधीरता ही सर्वाधिक रही है। कतिपय लोल कपोलों की कृत्रिम रंगिनियाँ समूह देशवासियों का पर्याय मान लेना उचित नहीं। अतः कल्पना के भव्य महलों के ध्वंसावशेषों पर यथार्थ की झोपड़ियों का निर्माण ही उचित होगा।

1. वह शब्द बताइए जिसमें सन्धि तथा प्रत्यय दोनों का प्रयोग हुआ है—

- (a) रंगिनियाँ (b) ध्वंसावशेषों
(c) अधीरता (d) सम्प्रदायवाद

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016
उत्तर : (b)

2. इनमें से वह शब्द बताइए जिसमें समास तथा उपसर्ग का प्रयोग हुआ है—

- (a) घात-प्रतिघात (b) भारतवासियों
(c) कर्मयोगी (d) आत्मनिर्भरता

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016
उत्तर : (b)

3. वह तत्सम शब्द बताइए जिसके साथ उपसर्ग और प्रत्यय दोनों का प्रयोग हुआ है—

- (a) मानवीय (b) मानवता
(c) अधीर (d) विखण्डित

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016
उत्तर : (d)

4. कर्म तत्पुरुष समास का उदाहरण इनमें से कौन-सा है?

- (a) लोमहर्षक (b) आत्मनिर्भरता
(c) देशवासियों (d) सर्वाधिक

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016
उत्तर : (a)

5. इनमें से कौन-सा शब्द तत्सम है?

- (a) स्वतन्त्रता (b) श्रद्धा
(c) झोपड़ियों (d) आजादी

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016
उत्तर : (b)

निर्देश : निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

कुसुम शाम को मन्दिर में दर्शन करते हुए घर गई। वह देर तक गीत गाती रही। उसे समय का पता ही न था। आधी रात बीत गई। उसने सितार बजाई। फिर भी उसका मन न लगा। उसने टहलना शुरू किया, रात किसी तरह कटी। सुबह उसकी आँखें नींद से बेझिल हो रही थी। वह देर तक सोती रही। माँ ने आकर जगाया और कलेवा करने के लिए कहा। जैसे-तैसे वह उठी, नहाई और साइकिल से कॉलेज के लिए चली। कॉलेज में उसकी सखी ने घी के पराँठे खिलाए। कुसुम के संगीत प्रेम की कॉलेज में छात्र ही नहीं, परिवार में मामा, चाचा, नाना और भाई-बहन भी प्रशंसा करते हैं।

1. इनमें से कौन-सा शब्द स्त्रीलिंग नहीं है?

- (a) शाम (b) रात
(c) कलेवा (d) आँखें

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016
उत्तर : (c)

2. 'कुसुम शाम को घर गई।' इस वाक्य में कौन-सा काल है?

- (a) सामान्य भूत (b) आसन्न भूत
(c) पूर्ण भूत (d) संदिग्ध भूत

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016
उत्तर : (a)

3. कारक चिह्न के प्रयोग के बावजूद इनमें से किस शब्द का बहुवचन नहीं बनता?

- (a) घी (b) गीत
(c) घर (d) सखी

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016
उत्तर : (a)

4. इनमें से किस शब्द का लिंग नहीं बदलता?

- (a) चाचा (b) छात्र
(c) साइकिल (d) मामा

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016
उत्तर : (c)

5. इनमें से कौन-सा शब्द सदैव बहुवचन में ही प्रयुक्त होता है—

- (a) दर्शन (b) मन
(c) पराँठा (d) सितार

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016
उत्तर : (a)

निर्देश : निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

डॉ. रामकुमार वर्मा ने ऐतिहासिक एवं समस्यामूलक एकांकियों की रचना की है। उनके एकांकियों का मूल स्वर आदर्शवादी है। प्रेम, सेवा, उदारता, त्याग और बलिदान की भावनाओं से ओत-प्रोत इन ऐतिहासिक एकांकियों में भारत के अतीत गौरव को प्रस्तुत करते हुए राष्ट्रीयता की भावना जगाने का प्रयास किया गया है। समस्यामूलक एकांकियों में वर्मा जी ने शिक्षित मध्यमवर्गीय दम्पतियों की अनेक समस्याओं - प्रेम, सेक्स, सन्देह, दम्भ आदि को कथानक का विषय बनाया है, किन्तु उनकी परिणति आदर्श में हुई है क्योंकि उनके एकांकियों की नायिकाएँ अन्ततः अपने पति के सम्मान की रक्षा करती हुई दिखाई पड़ती हैं यथा 'रेशमी टाई' की ललिता और 'एक्ट्रेस' एकांकी की नायिका प्रभात कुमारी। अतिशय आदर्शवादिता के कारण वर्मा जी के एकांकी यथार्थ से दूर हो गए जान पड़ते हैं, किन्तु एकांकी की शिल्प की दृष्टि से वे हिन्दी के युग प्रवर्तक एकांकी माने जा सकते हैं। आरम्भ, कौतुहल, संकलन त्रय, चरम सीमा आदि तत्व उनके एकांकियों में बड़ी सूक्ष्मता से विद्यमान है। रंगमंचीयता एवं अभिनेयता के गुणों से भी उनके एकांकी सम्पन्न है तथा उनमें सरसता के साथ-साथ शिल्प की प्रौढ़ता भी विद्यमान है। वस्तुतः एकांकी कला को चरम यौवन पर पहुँचाने का श्रेय डॉ. रामकुमार वर्मा को ही दिया जाता है।

1. उपरोक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?

- डॉ. वर्मा की लेखन शैली
- डॉ. रामकुमार वर्मा के एकांकी
- डॉ. रामकुमार वर्मा के नाटकों में राष्ट्रीयता
- डॉ. वर्मा के एकांकियों में रंगमंचीयता

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) April 2016

उत्तर : (b)

2. उपरोक्त गद्यांश में प्रयुक्त शैली है -

- विवरणात्मक
- विवेचनात्मक
- आलोचनात्मक
- गवेषणात्मक

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) April 2016

उत्तर : (c)

3. डॉ. रामकुमार वर्मा के एकांकियों का मूल स्वर है -

- यथार्थवादी
- आदर्शवादी
- आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी
- उपरोक्त में से कोई नहीं

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) April 2016

उत्तर : (b)

4. रंगमंचीयता एवं अभिनेयता की दृष्टि से वर्मा जी के एकांकी -

- सफल है
- असफल है
- सम्पादन माँगते हैं
- इनमें से कोई नहीं

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) April 2016

उत्तर : (a)

5. वर्मा जी के समस्यामूलक एकांकियों में चित्रण किया गया है -

- शिक्षित मध्यमवर्गीय दम्पतियों की समस्या का
- राजनीतिक समस्या का
- शोषण की समस्या का
- सामाजिक समस्या का

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) April 2016

उत्तर : (a)

निर्देश : निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प का चयन कीजिए।

इस युग के युवक के चित्त को जिस नई विद्या ने सबसे अधिक प्रभावित किया है, वह है मनोविश्लेषण। मनोविज्ञान और मनोविश्लेषण शास्त्र निःसन्देह पठनीय शास्त्र है। इन्होंने हमारे मन के भीतर चलती रहने वाली अलक्ष्य धाराओं का ज्ञान कराया है, परन्तु यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि "साँच मिले तो साँच है, न मिले तो झूठ" वाली बात सार्वदेशिक होती है। मनोविश्लेषण शास्त्र मनुष्यों की उद्भासित विचार निधियों का एक अकिंचन अंश मात्र है। जीवन शास्त्र और पदार्थ विज्ञान के क्षेत्र में हमें जो नवीन तथ्य मालूम हुए हैं, उसके साथ इस शास्त्र के अनुसन्धानों का सामंजस्य स्थापित नहीं किया जा सकता। फिर भी इतना तो निश्चित है कि मानव विश्लेषण के आचार्यों के प्रचारित तत्त्ववाद में से कुछ विचार इन दिनों वायुमण्डल में व्याप्त हैं। नवीन साहित्यकार उन्हें अनायास पा जाता है, परन्तु इन विचारों को संयमित और नियंत्रित करने वाले प्रतिकूलगामी शास्त्रीय परिणाम उसे इतनी आसानी से नहीं मिलते। इसका परिणाम यह हुआ है कि हमारा नवीन साहित्यकार इन विचारों के मायाजाल को आसानी से काट नहीं पाता। वह कुछ इस प्रकार सोचता है कि अब चेतन चित्त की शक्तिशाली सत्ता हमारे चेतन चित्त के विचारों और कार्यों को रूप दे रही है। हम तो कुछ सोच समझ रहे हैं, वस्तुतः वैसे ही सोचने और समझने का हेतु हमारे अंजाम में हमारे ही अवचेतन चित्त वर्तमान है और यह तो हम सोच रहे हैं, समझ रहे हैं और सोच-समझकर कर रहे हैं। इन बातों का अभिमान करने वाला हमारा चेतन चित्त कितना नगण्य है, अदृश्य में वर्तमान हमारी अवदमित वासनाओं को प्रसुप्त कामनाओं के महासमुद्र में यह दृश्य चेतन चित्त बोटल के कॉर्क के समान उतर रहा है, अदृश्य महासमुद्र की प्रत्येक तरंग इसे अभिभूत कर जाती है।

1. वह दृश्य चेतन चित्त -

- अवदमित और प्रसुप्त कामनाओं के महासमुद्र में बोटल के कॉर्क के समान उतर रहा है।
- अवचेतन के महासमुद्र से प्रेरणा ग्रहण करता रहता है।
- अवचेतना की रद्दी की टोकरी में पड़ा रहता है।
- अवदमित और प्रसुप्त कामनाओं के महासमुद्र से संयोग करने को प्रयत्नशील रहता है।

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Jan. 2011

उत्तर : (a)

2. हमारे चेतन चित्त के विचारों और कार्यों को -

- हमारी चिन्तन पद्धति रूप दे रही है।
- हमारी भावनाएँ रूप दे रही हैं।
- हमारे अवचेतन चित्त की शक्तिशाली सत्ता ही रूप देती है।
- हमारा चेतन चित्त रूप दे रहा है।

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Jan. 2011

उत्तर : (c)

3. युवक चित्त को सबसे अधिक प्रभावित जिस शास्त्र ने किया है, वह है -

- मनोविज्ञान और मनोविश्लेषण शास्त्र
- तत्त्ववाद
- भौतिक विज्ञान
- विकासवाद

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Jan. 2011

उत्तर : (a)

4. उपरोक्त अवतरण का उपयुक्त शीर्षक चुनिए -

- चेतन और अवचेतन चित्त का सम्बन्ध
- मनोविश्लेषण शास्त्र का महत्व

- (c) मनोविश्लेषण और साहित्य का सम्बन्ध
(d) मनोविश्लेषण शास्त्र का मायाजाल

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Jan. 2011

उत्तर : (a)

5. नीचे लिखे वाक्यों में से किस में विराम चिह्नों का सही प्रयोग हुआ है?

- (a) हाँ मैं सच कहता हूँ बाबू जी। माँ बिमार है। इसलिए मैं नहीं गया।
(b) हाँ मैं सच कहता हूँ। बाबू जी, माँ बिमार है। इसलिए मैं नहीं गया।
(c) 'हाँ, मैं सच कहता हूँ, बाबू जी। माँ बिमार है, इसलिए मैं नहीं गया।'
(d) हाँ मैं सच कहता हूँ, बाबू जी। माँ बिमार है इसलिए मैं नहीं गया।

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Jan. 2011

उत्तर : (c)

निर्देश : निम्नलिखित गद्यांश का ध्यानपूर्वक अध्ययन करके इस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

मनुष्य नाशवान प्राणी है। वह जन्म लेने के बाद मरता अवश्य है। अन्य लोगों की भाँति महापुरुष भी नाशवान हैं। वे भी समय आने पर अपना शरीर छोड़ देते हैं, पर वे मरकर भी अमर हो जाते हैं। वे अपने पीछे छोड़े गए कार्य के कारण अन्य लोगों के द्वारा याद किए जाते हैं। उनके ये कार्य चिरस्थायी होते हैं और समय के साथ-साथ परिणाम और बल में बढ़ते जाते हैं। ऐसे कार्य के पीछे जो उच्च आदर्श होते हैं, वे स्थायी होते हैं और बदली परिस्थितियों में नये वातावरण के अनुसार अपने को ढाल लेते हैं। संसार ने पिछली पच्चीस शताब्दियों से भी अधिक में जितने भी महापुरुषों को जन्म दिया है, उनमें गाँधीजी को यदि बड़ा माना जाता है, तो भविष्य में भी उन्हें सबसे बड़ा माना जाएगा क्योंकि उन्होंने अपने जीवन की गतिविधियों को विभिन्न भागों में नहीं बाँटा, बल्कि जीवनधारा को हमेशा एक और अविभाज्य माना। जिन्हें हम सामाजिक, आर्थिक और नैतिक के नाम से पुकारते हैं, वे वास्तव में उसी धारा की उपधाराएँ हैं, उसी भवन के अलग-अलग पहलू हैं। उन्होंने सदा साध्य को ही महत्व नहीं दिया, बल्कि उस साध्य को पूरा करने के लिए अपनाए जाने वाले साधनों का भी ध्यान रखा। साध्य के साथ-साथ उसकी पूर्ति के लिए अपनाए गए साधन भी उपयुक्त होने चाहिए।

1. सामान्य पुरुष की तुलना में महापुरुष में सर्वाधिक विशेषता क्या है?

- (a) महापुरुष के कार्य समय के साथ परिणाम और बल में बढ़ते जाते हैं
(b) महापुरुष मरकर भी अमर हो जाते हैं
(c) महापुरुष शरीर छोड़ने के बाद भी लोगों द्वारा याद किए जाते हैं
(d) महापुरुष जीवन में महान कार्य करते हैं

Uttarakhand TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2013

उत्तर : (b)

2. महापुरुष मरकर भी अमर क्यों हो जाते हैं?

- (a) महापुरुष बदली परिस्थितियों में नये वातावरण के अनुसार अपने को ढाल लेते हैं
(b) उनके कार्य भावी पीढ़ी के लिए अनुकरणीय होते हैं
(c) महापुरुष आजीवन लोक मंगल की साधना में तत्पर रहते हैं
(d) वे अपने पीछे छोड़ गए चिरस्थायी आदर्श कार्यों के कारण अन्य लोगों द्वारा याद किए जाते हैं

Uttarakhand TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2013

उत्तर : (d)

3. गाँधीजी को सबसे बड़ा महापुरुष क्यों माना जाता है?

- (a) क्योंकि वह पिछली पच्चीस शताब्दियों में सबसे महान थे
(b) क्योंकि उन्होंने अपने जीवन की गतिविधियों को विभिन्न भागों में नहीं बाँटा
(c) गाँधीजी का एकमात्र लक्ष्य दरिद्रनारायण के सामाजिक, आर्थिक और नैतिक स्तर को सुदृढ़ करना था और इसके लिए वे समर्पित थे
(d) उन्होंने साध्य व साधन को समान महत्व नहीं दिया

Uttarakhand TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2013

उत्तर : (b)

4. गाँधीजी के अनुसार साध्य और साधन में अधिक महत्वपूर्ण क्या है?

- (a) साधन का ध्यान रखना अधिक महत्वपूर्ण है
(b) साध्य व साधन दोनों का पारस्परिक समान महत्व है
(c) साध्य के बिना साधन अर्थहीन है
(d) साधन व साध्य दोनों का अलग-अलग महत्व है

Uttarakhand TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2013

उत्तर : (b)

निर्देश : निम्नलिखित गद्यांश का ध्यानपूर्वक अध्ययन करके इस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

वैज्ञानिक प्रयोग की सफलता ने मनुष्य की बुद्धि का अपूर्व विकास कर दिया है। द्वितीय महायुद्ध में एटम बम की शक्ति ने कुछ क्षणों में ही जापान के अजेय शक्ति को पराजित कर दिया। इस शक्ति की युद्धकालीन सफलता ने अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस आदि सभी देशों को ऐसे शस्त्रास्त्रों के निर्माण की प्रेरणा दी कि सभी भयंकर और सर्वविनाशकारी शस्त्र बनाने लगे। अब सेना को पराजित करने तथा शत्रु देश पर पैदल सेना द्वारा आक्रमण करने के लिए शस्त्र निर्माण के स्थान पर देश के विनाश करने की दिशा में शस्त्रास्त्र बनने लगे हैं। इन हथियारों का प्रयोग होने पर शत्रु देशों की अधिकांश जनता और सम्पत्ति थोड़े समय में ही नष्ट की जा सकेगी। चूँकि ऐसे शस्त्रास्त्र प्रायः सभी स्वतन्त्र देशों के संग्रहालयों में कुछ-न-कुछ आ गए हैं। अतः युद्ध की स्थिति में उनका प्रयोग भी अनिवार्य हो जाएगा, जिससे बड़ी जनसंख्या प्रभावित हो सकती है इसलिए निःशस्त्रीकरण की योजनाएँ बन रही हैं। शस्त्रास्त्रों के निर्माण की जो प्रक्रिया अपनाई गई, उसी के कारण आज इतने उन्नत शस्त्रास्त्र बन गए हैं, जिनके प्रयोग से व्यापक विनाश आसन्न दिखाई पड़ता है। अब भी परीक्षणों की रोकथाम तथा बने शस्त्रों का प्रयोग रोकने के मार्ग खोजे जा रहे हैं। इन प्रयासों के मूल में एक भयंकर आतंक और विश्व-विनाश का भय कार्य कर रहा है।

1. इस गद्यांश का मूल कथन क्या है?

- (a) आतंक और सर्वनाश का भय
(b) विश्व में शस्त्रास्त्रों की होड़
(c) द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिका
(d) निःशस्त्रीकरण और विश्व शान्ति

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2013

उत्तर : (d)

2. भयंकर विनाशकारी आधुनिक शस्त्रास्त्रों को बनाने की प्रेरणा किसने दी?

- (a) अमेरिका ने
(b) अमेरिका की विजय ने
(c) जापान पर गिराए गए 'अणु बम' ने
(d) बड़े देशों की पारस्परिक प्रतिस्पर्धा ने

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2013

उत्तर : (b)

3. एटम बम की अपार शक्ति का प्रथम अनुभव कैसे हुआ?

- (a) जापान में हुई भयंकर विनाशलीला से
- (b) जापान की अजेय शक्ति की पराजय से
- (c) अमेरिका, रूस, ब्रिटेन और फ्रांस की प्रतिस्पर्धा से
- (d) अमेरिका की विजय से

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2013

उत्तर : (b)

4. बड़े-बड़े देश आधुनिक विनाशकारी शस्त्रास्त्र क्यों बना रहे हैं?

- (a) अपनी-अपनी सेनाओं में कमी करने के उद्देश्य से
- (b) अपने संसाधनों का प्रयोग करने के उद्देश्य से
- (c) अपना-अपना सामरिक व्यापार बढ़ाने के उद्देश्य से
- (d) पारस्परिक भय के कारण

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2013

उत्तर : (d)

5. आधुनिक युद्ध भयंकर व विनाशकारी होते हैं, क्योंकि—

- (a) दोनों देशों के शस्त्रास्त्र इन युद्धों में समाप्त हो जाते हैं
- (b) अधिकांश जनता और उनकी सम्पत्ति नष्ट हो जाती है
- (c) दोनों देशों में महामारी और भुखमरी फैल जाती है
- (d) दोनों देशों की सेनाएँ इन युद्धों में मारी जाती हैं

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Nov. 2013

उत्तर : (b)

निर्देश : निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर सबसे उचित विकल्प चुनकर दीजिए।

लोकगीत अपनी लोच, ताजगी और लोकप्रियता में शास्त्रीय संगीत से भिन्न है। लोकगीत सीधे जनता के संगीत हैं। घर, गाँव और नगर की जनता के गीत हैं ये। इनके लिए साधना की जरूरत नहीं होती। त्योहारों और विशेष अवसरों पर ये गाए जाते हैं।

एक समय था जब शास्त्रीय संगीत के सामने इनको हेय समझा जाता था। अभी हाल तक इनकी बड़ी उपेक्षा की जाती थी। पर इधर साधारण जनता की ओर जो लोगों की नजर फिरी है जो साहित्य और कला के क्षेत्र में भी परिवर्तन हुआ है। अनेक लोगों ने विविध बोलियों के लोक-साहित्य और लोकगीतों के संग्रह पर कमर बाँधी है और इस प्रकार के अनेक संग्रह अब तक प्रकाशित भी हो गए हैं।

वास्तविक लोकगीत देश के गाँवों और देहातों में है। इनका संबंध देहात की जनता से है। चैता, कजरी, बारहमासा, सावन आदि मिर्जापुर, बनारस और उत्तर प्रदेश के पूरबी और बिहार के पश्चिमी जिलों में गाए जाते हैं। बाउल और भतियाली बंगाल के लोकगीत हैं। हीर-राँझा, सोहनी-महीवाल संबंधी गीत पंजाबी में और ढोला-मारू आदि के गीत राजस्थानी में बड़े चाव से गाए जाते हैं।

1. 'देहात की जनता' का तात्पर्य है -

- (a) कस्बे का जनसमुदाय
- (b) ग्रामीण जनसमुदाय
- (c) शहरी जनसमुदाय
- (d) आदिवासी जनसमुदाय

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (b)

2. 'कजरी' गायी जाती है-

- (a) उत्तर प्रदेश में
- (b) आसाम में
- (c) गुजरात में
- (d) राजस्थान में

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (a)

3. 'नजर फिरी है' का तात्पर्य है—

- (a) उपेक्षा करना
- (b) दृष्टिकोण में परिवर्तन आना
- (c) अवलोकन करना
- (d) कुदृष्टि डालना

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (b)

4. जनता का संगीत है -

- (a) लोकगीत
- (b) फिल्म संगीत
- (c) शास्त्रीय संगीत
- (d) पाश्चात्य संगीत

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (a)

5. 'बाउल' कहाँ का लोक संगीत है?

- (a) गुजरात
- (b) उत्तर प्रदेश
- (c) बिहार
- (d) बंगाल

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (d)

निर्देश : निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर सबसे उचित विकल्प चुनकर दीजिये :

मोर के सिर की कलगी और सघन, ऊँची तथा चमकीली हो गई। चोंच अधिक बंकिम और पैनी हो गई, गोल आँखों में इंद्रनी की नीलाभ द्युति झलकने लगी। लंबी नील-हरित ग्रीवा की हर, भंगिमा में धूपछाँही तरंगें उठने-गिरने लगी। दक्षिण-वाम दोनों पंखों में सलेटी और सफेद आलेखन स्पष्ट होने लगे। पूँछ लंबी हुई और उसके पंखों पर चंद्रिकाओं के इंद्रधनुषी रंग उद्दीप्त हो उठे। रंग-रहित पैरों को गरवीली गति ने एक नयी गरिमा से रंजित कर दिया। उसका गरदन ऊँची कर देखना, विशेष भंगिमा के साथ उसे नीची कर दाना चुगना, पानी पीना, टेढ़ी कर शब्द सुनना आदि क्रियाओं में जो सुकुमारता और सौंदर्य था, उसका अनुभव देखकर ही किया जा सकता है। गति का चित्र नहीं आँका जा सकता।

मोरनी का विकास मोर के समान चमत्कारिक तो नहीं हुआ-परंतु अपनी लंबी धूपछाँही गरदन, हवा में चंचल कलगी, पंखों की श्याम-श्वेत पत्रलेखा, मंथर गति आदि से वह भी मोर की उपयुक्त सहचारिणी होने का प्रमाण देने लगी।

1. प्रस्तुत गद्यांश है -

- (a) एक शब्दचित्र
- (b) एक निबंध
- (c) एक रिपोर्टाज
- (d) एक कहानी

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (a)

2. 'रंजित' का तात्पर्य है -

- (a) रंगयुक्त
- (b) आवेश युक्त
- (c) शोभा युक्त
- (d) इनमें से कोई नहीं

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (c)

3. मंथर गति होती है -

- (a) तेज गति
- (b) धीमी गति
- (c) लय युक्त गति
- (d) टेढ़ी गति

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (b)

4. बंकिम का तात्पर्य है -

- (a) टेढ़ा
- (b) सुंदर
- (c) तीखा
- (d) कठोर

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (a)

5. किसकी क्रियाओं में सुकुमारता व सौंदर्य था?

- (a) मोर की (b) मोरनी की
(c) तोते की (d) लेखिका की

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (a)

निर्देश : निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सबसे उचित विकल्प को चुनकर उत्तर दीजिए।

वर्तमान मेरे लिए और मुझ जैसे बहुत से और लोगों के लिए मध्ययुगीनता, भयंकर गरीबी एवं दुर्गति और मध्य वर्ग की कुछ-कुछ सतही आधुनिकता का विचित्र मिश्रण है। मैं अपने वर्ग और अपनी किस्म के लोगों का प्रशंसक नहीं था, फिर भी भारतीय संघर्ष में नेतृत्व के लिए मैं निश्चित रूप से मध्य वर्ग की ओर देखता था। यह मध्य वर्ग स्वयं को बंदी और सीमाओं में जकड़ा हुआ महसूस करता था और खुद तरक्की और विकास करना चाहता था। अंग्रेजी शासन के ढाँचे के भीतर ऐसा न कर पाने के कारण उसके भीतर विद्रोह की चेतना पनपी लेकिन यह चेतना उस ढाँचे के खिलाफ नहीं जाती थी जिसने हमें रौंद दिया था। ये उस ढाँचे को बनाए रखना चाहते थे और अंग्रेजों को हटाकर उसका संचालन करना चाहते थे। ये मध्य वर्ग के लोग इस हद तक इस ढाँचे की पैदाइश थे कि उसे चुनौती देना या उसे उखाड़ फेंकने का प्रयास करना इसके बस की बात नहीं थी।

1. लेखक किस वर्ग से सम्बन्धित है?

- (a) सामन्त वर्ग (b) मध्य वर्ग
(c) निम्न वर्ग (d) इनमें से कोई नहीं

Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (b)

2. मध्य वर्ग में विद्रोही चेतना का कारण था -

- (a) मध्य वर्ग साम्राज्यवाद विरोधी था
(b) मध्य वर्ग राष्ट्रवादी था
(c) मध्य वर्ग अंग्रेजों को विस्थापित करके शासन संचालन चाहता था
(d) उपरोक्त सभी

Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (c)

3. गद्यांश में आए भारतीय संघर्ष का सन्दर्भ है—

- (a) भारत का स्वतन्त्रता संघर्ष
(b) चीन के विरुद्ध संघर्ष
(c) पाकिस्तान के विरुद्ध संघर्ष
(d) महाशक्तियों के विरुद्ध संघर्ष

Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (a)

4. निम्न में से कौन-सा सामाजिक वर्ग ब्रिटिश शासन प्रणाली की उपज था?

- (a) उच्च वर्ग (b) सामन्त वर्ग
(c) किसान (d) मध्य वर्ग

Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (d)

निर्देश : निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

संस्कृति किसी दो मंजिला मकान की तरह होती है। पहली मंजिल पर एकदम मूलभूत मगर चिरन्तन जीवन-मूल्य होते हैं। इसमें परस्पर सहकार्य, न्याय, सौन्दर्य जैसे मूलभूत तत्व आते हैं। ये मूल्य समय से परे होते हैं। पहली मंजिल पर दूसरी मंजिल का निर्माण किसी समाज की विशिष्ट आवश्यकता के अनुरूप होता है। धार्मिक, ऐतिहासिक परम्परा, आर्थिक लेन-देन, स्त्री-पुरुष सम्बन्ध और परिस्थितिजन्य अन्य मूल्यों का निर्माण में योगदान होता है। यह व्यवस्था मूलतः संरक्षणात्मक होने के कारण तरह-तरह के प्रतीक, परम्परा, रूढ़ि और अन्धविश्वास का सड़ा-सा पिंजरा बनाती है। इससे पहली मंजिल के मूलभूत मूल्यों की उपेक्षा होने लगती है। समाज को भ्रम होने लगता है कि दूसरी मंजिल की मूल व्यवस्था ही अपनी सच्ची संस्कृति है। भ्रम से कई तरह की विकृति उत्पन्न होती है, जो सामाजिक परिवर्तन से संघर्ष करने लगती है। वस्तुतः आज इन्हीं परिस्थितियों को मात देकर नई संस्कृति का निर्माण करना देश के सामने सबसे बड़ा कार्य है। इसमें शिक्षा पद्धति और प्रसार माध्यम महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। शिक्षा से भावी पीढ़ी पर सांस्कृतिक निष्ठा के संस्कार डाले जाते हैं। हमारी शिक्षा इस कसौटी पर खरी नहीं उतरी है। समाज में विषमता की खाई चौड़ी करने में ही इसका योगदान रहा है। यह अमीरों की दोस्त और गरीबों की दुश्मन हो गई है। एकाध ठीक-ठाक पाठशाला में बच्चे को प्रवेश दिलाने में बीस हजार रुपये तक हफ्ता देना पड़ता है।

1. परस्पर सहकार्य, न्याय तथा सौन्दर्य को संस्कृति के मूल तत्त्व क्यों कहा गया है?

- (a) ये समय के साथ बदलते हैं
(b) इन्हें प्राप्त करने में बहुत कठिनाई होती है
(c) इनकी जड़ें बहुत गहरी हैं
(d) इसमें समाज की अधिक आस्था होती है

Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (d)

2. संस्कृति के मूल तत्त्वों की उपेक्षा क्यों होने लगती है?

- (a) संस्कृति के मूल तत्व इतने दुःसाध्य हैं कि उन्हें हर समय बनाए रखना कठिन है
(b) पुरानी रूढ़ियाँ और परम्पराएँ हम पर हावी हो जाती हैं और हम ठीक प्रकार से नहीं सोच पाते
(c) उसका निर्माण अलग-अलग लोग करते हैं इसलिए कोई अपना उत्तरदायित्व नहीं मानता
(d) संस्कृति अदृश्य है अतः सामान्य जनता उसके महत्व को नहीं जानती

Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (b)

3. संस्कृति को दो मंजिला मकान की तरह क्यों बताया गया है?

- (a) उसके निर्माण में श्रम और समय दोनों लगते हैं
(b) उसके दो अलग-अलग घटक हैं
(c) उसका सम्बन्ध उच्च और निम्न वर्ग दोनों से है
(d) वह किसी भी राष्ट्र की दो स्थितियों को स्पष्ट करती है

Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (c)

4. संस्कृति के पुनर्निर्माण में सबसे अधिक सहायक कौन हो सकता है?
- लोगों की दृढ़ इच्छाशक्ति
 - संस्कृति का सरलीकरण
 - शिक्षा पद्धति में बदलाव
 - संस्कृति का सामान्य जनों में उचित प्रसार-प्रचार

Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (d)

5. शिक्षा पद्धति सफल क्यों नहीं हो रही है?
- वह अमीरों और गरीबों के बीच खाई चौड़ी कर रही है
 - शिक्षा बहुत महंगी हो गई है
 - वह संस्कृति के प्रति पूज्य भाव के संस्कार नहीं डाल पा रही है।
 - वह हर बार बदल दी जाती है

Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (a)

निर्देश : निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के सबसे उपयुक्त उत्तर दीजिए।

मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का पक्षपाती हूँ। जो वाग्जाल मनुष्य को दुर्गति, हीनता और परमुखापेक्षिता से बचा न सके, जो उसकी आत्मा को तेजोदीप्त न बना सके, जो उसके हृदय को परदुःखकातर और संवेदनशील न बना सके, उसे साहित्य कहने में मुझे संकोच होता है। मैं अनुभव करता हूँ कि हम लोग एक कठिन समय से गुजर रहे हैं। दुनिया छोटे-छोटे संकीर्ण स्वार्थों के आधार पर अनेक दलों में विभक्त हो गयी है। अपने दल के बाहर का आदमी सन्देह की दृष्टि से देखा जाता है। उसके प्रत्येक त्याग और बलिदान के कार्य में भी 'बाल' का सन्धान पाया जाता है और अपने-अपने दलों में ऐसा करने वाला सफल नेता भी मान लिया जाता है। बड़े-बड़े राष्ट्रनायक जब अपनी विराट् अनुचरवाहिनी के साथ इस प्रकार का गन्दा प्रचार करते हैं तो ऊपर-ऊपर से चाहे जितनी भी सफलता उनके पक्ष में आती हुई क्यों न दिखायी दे, इतिहास विधाता का निष्ठुर नियम प्रवाह भीतर ही भीतर उनके स्वार्थों का उन्मूलन करता रहता है। जो लोग द्रष्टा हैं, वे इस गलती को समझते हैं, पर उनकी बात मदमत व्यक्तियों की ऊँची गदियों तक नहीं पहुँच पाती। संसार में अच्छी बात कहने वालों की कमी नहीं है, परन्तु मनुष्य के सामाजिक संगठन में ही कहीं कुछ ऐसा बड़ा दोष रह गया है जो मनुष्य को अच्छी बात सुनने और समझने से रोक रहा है। इसलिए आज की सबसे बड़ी समस्या यह नहीं है कि अच्छी बात कैसे कही जाए; बल्कि यह है कि अच्छी बात को सुनने और मानने के लिए मनुष्य को कैसे तैयार किया जाए?

1. साहित्य का मूल प्रयोजन है—

- वाग्जाल फैलाना
- मनोरंजन करना
- मनुष्य को उदात्त बनाना
- मनुष्य के हृदय को कठोर बनाना

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (c)

2. लेखक ने वर्तमान को कठिन समय क्यों कहा है?

- संसार में अच्छी बात करने वाले नहीं हैं।
- संसार में अच्छी बात सुनने वाले नहीं हैं।
- आज विरोधियों को संदेह की दृष्टि से देखा जाता है।
- संकीर्ण स्वार्थों ने मनुष्य को अंधा कर दिया है।

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (d)

3. 'वाग्जाल' का तात्पर्य है—

- काल्पनिक बातें
- अलंकृत भाषा युक्त रचना
- विचारों का जाल
- उपयुक्त में से कोई नहीं

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (b)

4. लेखक के अनुसार 'द्रष्टा' किस गलती को समझते है?

- स्वार्थपूर्ण नीतियों की निस्सारता
- इतिहास विधाता के नियम प्रवाह को
- साहित्य की उपयोगिता को
- मनुष्य के सामाजिक संगठन को-

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (a)

5. आज बड़ी समस्या क्या है?

- अच्छी बात कैसे कही जाये
- अच्छी बात को सुनने और मानने के लिए मनुष्य को कैसे तैयार किया जाए
- दुनिया का स्वार्थमय हो जाना
- दुनिया का अनेक दलों में बँट जाना

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (b)

6. गद्य शिक्षण का मूल उद्देश्य है—

- भाषा ज्ञान
- सामान्य ज्ञान
- चरित्र निर्माण
- इनमें से कोई नहीं

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (a)

निर्देश : कविता की पंक्तियाँ पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में सबसे उचित विकल्प चुनिए:

अब न गहरी नींद में तुम सो सकोगे,
गीत गाकर मैं जगाने आ रहा हूँ।
अतल अस्ताचल तुम्हें जाने न दूँगा,
अरुण उदयाचल सजाने आ रहा हूँ।
कल्पना में आज तक उड़ते रहे तुम,
साधना से सिहरकर मुड़ते रहे तुम।
अब तुम्हें आकाश में उड़ने न दूँगा,
आज धरती पर बसाने आ रहा हूँ।

----- सोहनलाल द्विवेदी

1. गहरी नींद में सोने का अर्थ है -

- मृत्यु को प्राप्त होना
- परिश्रमी होना
- बेखबर होना
- चिंतायुक्त होना

CTET- Ist Paper (I-V) June 2011

उत्तर : (c)

2. कवि लोगों को कहाँ नहीं जाने देगा?

- पाताल में
- अतल गहराई में
- जहाँ सूर्य अस्त होता है
- पतन की राह पर

CTET- Ist Paper (I-V) June 2011

उत्तर : (d)

3. कवि किस तरह के व्यक्तियों को संबोधित कर रहा है?

- जो अत्यधिक प्रेरित है
- जो बहुत पश्चिमी है

- (c) जो जीवन की कठोर वास्तविकताओं से बेखबर हैं
(d) जो आकाश की ऊँचाइयों को छूना चाहते हैं

CTET- Ist Paper (I-V) June 2011

उत्तर : (c)

4. कवि लोगों को क्यों जगाना चाहता है?

- (a) ताकि लोग गीत सुन सकें
(b) ताकि मनुष्यों में गतिशीलता आ सके और वे प्रगति के पथ पर आगे बढ़ सकें
(c) सुबह हो गई है
(d) यह कवि का दायित्व

CTET- Ist Paper (I-V) June 2011

उत्तर : (b)

5. 'अतल अस्ताचल तुम्हें जाने न दूँगा' पंक्ति में कौन सा अलंकार है?

- (a) श्लेष अलंकार (b) उपमा अलंकार
(c) रूपक अलंकार (d) अनुप्रास अलंकार

CTET- Ist Paper (I-V) June 2011

उत्तर : (d)

6. कविता का उपयुक्त शीर्षक हो सकता है—

- (a) हर्ष (b) कोलाहल
(c) आकाश (d) जागृति

CTET- Ist Paper (I-V) June 2011

उत्तर : (d)

निर्देश : कविता की पंक्तियाँ पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में सबसे उचित विकल्प चुनिए।

जग-जीवन में जो चिर महान,
सौन्दर्य पूर्ण औ सत्यप्राण,
मैं उसका प्रेमी बनूँ नाथ!
जिससे मानव-हित हो समान!
मिले जावे जिसमें अखिल व्यक्ति!

जिससे जीवन में मिले शक्ति
छूटे भय-संशय, अन्ध-भक्ति,
मैं वह प्रकाश बन सकूँ नाथ!

- सुमित्रानन्दन पन्त

1. कवि ने 'चिर महान' किसे कहा है?

- (a) ईश्वर को
(b) जो सत्य और सुन्दर से सम्पूर्ण हो
(c) शक्ति को
(d) मानव को

CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011

उत्तर : (d)

2. कवि कैसा प्रकाश बनना चाहता है?

- (a) अन्धकार दूर हो जाए
(b) जो जीने की शक्ति देता है
(c) जिसमें मनुष्य सभी भेदभाव भुलाकर एक हो जाते हैं
(d) जिससे सब तरफ उजाला हो जाए

CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011

उत्तर : (c)

3. कवि ने 'अखिल व्यक्ति' का प्रयोग क्यों किया है?

- (a) कवि अमीर लोगों की बात करना चाहता है
(b) कवि भारत के व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाहता है

- (c) कवि सांसारिक बात करना चाहता है

- (d) कवि समस्त विश्व के व्यक्तियों की बात करना चाहता है

CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011

उत्तर : (d)

4. कविता के किस अंश में तर्कहीन आस्था का उल्लेख हुआ है?

- (a) मिल जावे जिसमें अखिल व्यक्ति!
(b) मैं वह प्रकाश बन सकूँ, नाथ!
(c) जिससे मानव-हित हो समान!
(d) छूटे भय-संशय, अंध-भक्ति,

CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011

उत्तर : (d)

5. कवि ने कविता की पंक्तियों के अन्त में विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग क्यों किया है?

- (a) कवि अपनी इच्छा प्रकट कर रहा है
(b) इससे कविता का सौन्दर्य बढ़ता है
(c) पूर्ण विराम की लीक से हटने के लिए
(d) कविता को तुकान्त बनाने के लिए

CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011

उत्तर : (a)

6. कविता का मूल भाव क्या है?

- (a) अमर दान का प्राप्ति
(b) विश्व-परिवार की भावना
(c) सत्य की प्राप्ति
(d) कल्याण

CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011

उत्तर : (d)

निर्देश : निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के लिए सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए।

दम्भ का जहाँ-जहाँ पड़ाव था,
सत्य से जहाँ-जहाँ दुराव था,
वह चला कि अग्नि-बाण मारता,
पाप की अहा-अहा उजाड़ता,
वज्र बन गिरा गिरे विचार पर!

1. 'गिरे विचार' से तात्पर्य है—

- (a) सभी प्रकार के विचार
(b) मिथ्या विचार
(c) सत्य और हित से परे विचार
(d) उलझे विचार

CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013

उत्तर : (c)

2. नौजवान शहीद ने अग्नि-बाण इसलिए चलाए क्योंकि वह—

- (a) अपना साम्राज्य स्थापित करना चाहता था
(b) सुराज स्थापित करना चाहता था
(c) ब्रज गिराना चाहता था
(d) अपनी शक्ति की गरिमा बनाए रखना चाहता था

CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013

उत्तर : (b)

3. 'दुराव' शब्द से तात्पर्य है—

- (a) दुर्गम स्थल (b) आवरण
(c) काठिन्य (d) बैर

CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013

उत्तर : (d)

4. 'जहाँ-जहाँ' शब्द है—

- (a) एकार्थी शब्द-युग्म (b) पुनरुक्त शब्द-युग्म
(c) विपरीतार्थक शब्द-युग्म (d) भिन्नार्थी शब्द-युग्म

CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013

उत्तर : (b)

5. 'पाप' का विलोम शब्द है—

- (a) प्रायश्चित्त (b) अपाप
(c) पुण्य (d) निरपराध

CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013

उत्तर : (c)

6. नौजवान शहीद ने किसे नष्ट किया?

- (a) अहंकार को (b) असत्य को
(c) अहंकार और सत्य को (d) अहंकार और असत्य को

CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013

उत्तर : (d)

निर्देश : कविता को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के सबसे उचित विकल्प चुनिए।

हरा-भरा हो जीवन अपना स्वस्थ रहे संसार,
नदियाँ, पर्वत हवा, पेड़ से आती है बहार।
बचपन, कोमल तन-मन लेकर,
आए अनुपम जीवन लेकर,
जग से तुम और तुमसे है ये प्यारा संसार,
हरा भरा हो जीवन अपना स्वस्थ रहे संसार,
वृंद-लताएँ, पौधे, डाली
चारों ओर भरे हरियाली
मन में जगे उमंग यही है सृष्टि का उपहार,
हरा-भरा हो जीवन अपना स्वस्थ रहे संसार,
मुश्किल से मिलता है जीवन,
हम सब इसे बनाएँ चंदन
पर्यावरण सुरक्षित न हो तो है सब बेकार
हरा-भरा हो जीवन अपना स्वस्थ रहे संसार

1. 'हरा-भरा जीवन' का अर्थ है—

- (a) पेड़-पौधे से धिरा जीवन (b) हरे रंगों से भरा जीवन
(c) हरियाली-युक्त जीवन (d) खुशियों से परिपूर्ण जीवन

CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012

उत्तर : (d)

2. कौन-सी चीज़ें बहार लेकर आती है?

- (a) नदियों की आवाज़ (b) पहाड़ों की चोटियाँ
(c) समस्त प्राकृतिक उपादान (d) पेड़ों की हवा

CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012

उत्तर : (c)

3. कवि ने सृष्टि का उपहार किसे कहा जाता है?

- (a) वृंद-लताएँ
(b) हरा-भरा

- (c) प्राकृतिक सुंदरता और उससे उत्पन्न होने वाली खुशी
(d) पौधे व डालियाँ

CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012

उत्तर : (c)

4. कवि यह संदेश देना चाहता है कि—

- (a) जीवन में सब बेकार है
(b) पर्यावरण-संरक्षण में ही जीवन संभव है
(c) प्रकृति में पेड़-पौधे, नदियाँ, पर्वत शामिल हैं
(d) चंदन के पेड़ लगाने चाहिए

CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012

उत्तर : (b)

5. 'जग से तुम और तुम से है प्यारा संसार' पंक्ति के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि—

- (a) व्यक्ति और संसार दोनों का अस्तित्व एक-दूसरे पर निर्भर करता है
(b) संसार चलाने के लिए व्यक्तियों की आवश्यकता होती है
(c) व्यक्ति का अस्तित्व संसार से स्वतंत्र है
(d) संसार का अस्तित्व व्यक्तियों से स्वतंत्र है

CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012

उत्तर : (a)

6. 'अनुपम' से अभिप्राय है—

- (a) सुखद (b) आनंदमय
(c) मनोहारी (d) जिसकी उपमा न दी जा सके

CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012

उत्तर : (d)

निर्देश : नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उचित उत्तर दीजिए।

नदी के उस पार जाने को
मेरा बहुत मन करता है माँ;
वहाँ कतार में
बँधी है नावें बाँस की खूंटियों से।
उसी रास्ते दूर-दूर जाते हैं
हल जोतने किसान
कन्धों पर हल रखें,
रँभाते हुए गाय-बैल
तैरकर जाते हैं उस पार
घास चरने
शाम को जब वे
लौटते हैं घर
ऊँची-ऊँची घास में छिपकर
हुक्के-हो करते हैं सियार।
माँ तू बुरा न माने तो
बड़ा होकर मैं नाव खेने वाला
एक नाविक बनूँगा।

1. इस कविता में कौन किसे सम्बोधित कर रहा है?

- (a) लेखक नाविक की माँ को
(b) कोई किसी को नहीं
(c) लेखक अपनी माँ को
(d) लेखक के रूप में एक बच्चा माँ को

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012

उत्तर : (d)

2. लेखक नाविक क्यों बनना चाहता है?
- वह नदी की यात्रा का मजा लेना चाहता है
 - वह नाव चलाने सम्बन्धी अपने शौक को पूरा करना चाहता है
 - वह नदी पार के सौन्दर्य का आनन्द उठाना चाहता है
 - वह हल चलाना चाहता है

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012

उत्तर : (c)

3. नावों को बाँसों की खूंटियों से क्यों बाँधा गया होगा?

- कहीं लहरें नाव को बहाकर न ले जाएँ
- बाँसों की खूंटियाँ पानी में तैरती रहती हैं
- ताकि कोई दूसरा व्यक्ति नाव न ले जाए
- नाविक ऐसा ही करते हैं

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012

उत्तर : (a)

4. 'माँ तू बुरा न माने तो' पंक्ति किस ओर संकेत नहीं करती?

- लेखक माँ की इच्छा के अनुसार कार्य करना चाहता है
- माँ को बुरा लग गया है
- लेखक माँ के संवेगों का ध्यान रखता है
- लेखक जानता है कि माँ उसे नाविक नहीं बनने देगी

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012

उत्तर : (d)

5. कविता में पुनरुक्त शब्द-युग्म आए हैं—

- दूर-दूर, ऊँची-ऊँची
- गाय-बैल
- दूर-दूर
- ऊँची-ऊँची

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012

उत्तर : (a)

6. 'तैरकर जाते हैं उस पार' पंक्ति में 'तैरकर' शब्द को पहले रखा गया है क्योंकि—

- लेखक तैरने पर बल देना चाहता है
- लेखक तुक मिला रहा है
- वह क्रिया शब्द है
- कविता में क्रिया शब्द पहले आते हैं

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012

उत्तर : (b)

- निर्देश : नीचे दी गई काव्य-पंक्तियों को पढ़कर सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए।

सदियों की ठण्डी-बुझी राख सुगबुगा उठी,
मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है;
दो राह, समय के रथ का घर्घर-नाद सुनो
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।
जनता, हाँ, मिट्टी की अबोध मूर्तें वही,
जाड़े-पाले की कसक सदा सहने वाली
जब अंग-अंग में लगे साँप हो चूस रहे,
तब भी न कभी मुँह खोल दर्द कहने वाली।

—रामधारी सिंह 'दिनकरे'

1. काव्य में किस जनता की ओर संकेत किया गया है?

- जो खेतो-खलिहानों, कारखानों में काम करती है
- जो रथ चलाती है

- जिसे बोध है
- जिसे साँप काटते हैं

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (a)

2. "समय के रथ का घर्घर-नाद सुनो" पंक्ति का आशय है—

- समय कोलाहल कर रहा है
- समय ने युद्ध-नाद बजा दिया है
- अब समय बदल रहा है
- समय का रथ बढ़ा आ रहा है

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (b)

3. "सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।" पंक्ति का भाव है —

- सारी जनता अब सिंहासनो पर ही बैठेगी
- राजतन्त्र के विरुद्ध लोकतन्त्र का स्वागत
- राजा के सिंहासन को खाली करना होगा
- जनता, राजा का सिंहासन हिला देगी

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (b)

4. सामान्य जनता ने अब तक बहुत कष्ट सहे हैं—इस भाव को व्यक्त करने वाली पंक्ति है —

- सदियों की ठण्डी-बुझी राख सुगबुगा उठी
- मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है
- जनता, हाँ, मिट्टी की अबोध मूर्तें वही
- जाड़े-पाले की कसक सदा सहने वाली

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (d)

5. 'साँप' किसकी ओर संकेत करता है?

- शोषकों की ओर
- सूदखोरों की ओर
- विषैल साँपों की ओर
- जमींदारों की ओर

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (a)

6. 'सुगबुगा उठना' का अर्थ है—

- धीरे-धीरे कहना
- अपने हक के लिए प्रयत्नशील होना
- राख का जल उठना
- अफवाह फैलाना

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (b)

- निर्देश : नीचे दी गई काव्य-पंक्तियों को पढ़कर सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए।

नहीं झुका करते जो दुनिया से
करने को समझौता,
ऊँचे से ऊँचे सपनों को
देते रहते जो न्योता,
दूर देखती जिनकी पैनी
आँख भविष्यत् का तक चीर
मैं हूँ उनके साथ खड़ी
जो सीधी रखते अपनी रीढ़।

1. कविता की पंक्तियों के अनुसार कविता किसके पक्ष में खड़ी है?

- (a) जो स्वाभिमानी, साहसी और निर्भीक हैं
- (b) जो केवल सपनों में खोए रहते हैं
- (c) जो उजाला फैलाते हैं
- (d) जो समझौता करके शांति फैलाते हैं

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (a)

2. व्यक्ति की दृष्टि कैसी होनी चाहिए?

- (a) अंधकार को चीरने वाली
- (b) दूर की चीजों को साफ-साफ देखने वाली
- (c) दूरदर्शिता से लैस
- (d) भविष्य का अँधेरा दूर करने वाली

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (c)

3. ऊँचे से ऊँचे सपनों को निमंत्रण देने का भाव है—

- (a) ऊँचे सपनों को आमंत्रित करना
- (b) उच्च कोटि के स्वप्न देखना और उन्हें साकार करने का प्रयास करना
- (c) स्वप्नशील रहना
- (d) सपनों को आमंत्रित करना

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (b)

4. 'तम' शब्द का पर्याय है—

- (a) यामिनी
- (b) रात
- (c) अंधकार
- (d) निशा

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (c)

3. "नहीं झुका करते जो दुनिया से" पंक्ति में किसके सामने न झुकने की बात की गई है?

- (a) विषम परिस्थितियों और अन्याय के सामने
- (b) दुनिया के सभी देशों के सामने
- (c) अन्यायी राजाओं के सामने
- (d) दुनिया के व्यक्तियों के सामने

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (a)

4. 'सीधी रीढ़' का आशय है -

- (a) आत्मनिर्भर होना
- (b) सीधी बात कहना
- (c) स्वाभिमानी और स्वावलम्बी होना
- (d) अभिमानी होना

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (c)

निर्देश : कविता की पंक्तियाँ पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में सबसे उचित विकल्प चुनिए।

एक ही दीया, स्नेह से भरा,
प्रेम का प्रकाश, प्रेम से धरा,
झिलमिला हवा को तिलमिला रहा
ज्योति का निशान जो हिला रहा
मुस्कुरा रहा है अन्धकार पर!

यह मजार है किसी शहीद का,
दर्शनीय था जो चाँद ईद का,
देश का सूपत था, गुमान था
सत्य का स्वरूप नौजवान था
जो चला किया सदा दुधार पर!

1. हवा क्यों तिलमिला रही है?

- (a) दीये के चलने से
- (b) दीये के निरन्तर जलने से
- (c) दीये के स्नेह से
- (d) अन्धकार होने से

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014

उत्तर : (b)

2. ईद का चाँद किसे कहा गया है?

- (a) मजार को
- (b) दर्शनीय स्थल को
- (c) शहीद को
- (d) नौजवानों को

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014

उत्तर : (c)

3. शहीद की कौन-सी विशेषता बताई गई है?

- (a) वह सच्चा इंसान था
- (b) वह तलवारबाजी में निपुण था
- (c) ईद के दिन पैदा हुआ था
- (d) उसे अपने ऊपर बहुत घमण्ड था

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014

उत्तर : (a)

4. कविता में 'अन्धकार' शब्द से आशय है -

- (a) तम
- (b) रात्रि
- (c) बुराईयाँ
- (d) चुनौतियाँ

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014

उत्तर : (c)

5. 'दर्शनीय' शब्द में प्रत्यय है—

- (a) ईय
- (b) नीय
- (c) ई
- (d) य

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014

उत्तर : (a)

6. 'हवा' का पर्यायवाची शब्द नहीं है -

- (a) अनिल
- (b) मारुत
- (c) समीर
- (d) अनल

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014

उत्तर : (d)

निर्देश : कविता को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में सबसे उचित विकल्प चुनिए।

जब नहीं था
इन्सान
धरती पर थे जंगल,
जंगली जानवर, परिंदे
इन्हीं सबके बीच उतरा
इन्सान
और घटने लगे जंगल
जंगली जानवर, परिंदे
इन्सान
बढ़ने लगा बेतहाशा

अब कहाँ जाते जंगल,
जंगली जानवर, परिदे
प्रकृति किसी के साथ
नहीं करती नाइंसाफी
सभी के लिए बनाती है जगह
सो अब
इन्सानों के भीतर उतरने लगे हैं
जंगल, जंगली जानवर
और परिदे

1. धरती पर इन्सान के आने के बाद क्या हुआ?

- (a) जानवर घटले लगे (b) पक्षी घटने लगे
(c) जंगल घटने लगे (d) उपर्युक्त सभी

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014

उत्तर : (d)

2. 'इन्सान बढ़ने लगा बेतहाशा' का भाव है-

- (a) इन्सान खूब तेज भागने लगा
(b) इन्सान खूब बढ़ा होने लगा
(c) इन्सान अपने पैरों पर चलने लगा
(d) इन्सान खूब तरक्की करने लगा

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014

उत्तर : (d)

3. प्रकृति किसके प्रति नाइंसाफी नहीं करती?

- (a) पशु-पक्षियों के प्रति (b) इन्सानों के प्रति
(c) जंगल के प्रति (d) उपर्युक्त सभी के प्रति

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014

उत्तर : (d)

4. कविता के अंत में क्या व्यंग्य किया गया है?

- (a) इन्सानों में अब इंसानियत खत्म हो गई है
(b) इन्सानों के भीतर जंगल की तरह पेड़ उग आए हैं
(c) इन्सानों ने जंगल उगाना शुरू कर दिया है
(d) प्रकृति ने इन्सानों के प्रति नाइंसाफी की

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014

उत्तर : (a)

5. 'अब कहाँ जाते जंगल' का भाव है कि-

- (a) अब जंगल खूब बढ़ने लगे
(b) अब जंगल समाप्त होने लगे
(c) जब जंगलों में परिदे नहीं रहते
(d) अब जंगल कहीं जाने लायक नहीं रहे

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014

उत्तर : (b)

6. 'जंगल' का पर्यायवाची नहीं है-

- (a) वन (b) कानन
(c) अरण्य (d) बगीचा

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014

उत्तर : (d)

निर्देश : निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही/सबसे उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए।

जीवन के इस मोड़ पर, कुछ भी कहा जाता नहीं।
अधरों को डयोढ़ी पर, शब्दों के पहरे हैं।

हँसने को हँसते हैं, जीने को जीते हैं
साधन-सुभीतों में, ज्यादा ही रीते हैं।
बाहर से हरे-भरे, भीतर घाव मगर गहरे
सबसे के लिए गूँगे हैं, अपने लिए बहरे हैं।

1. 'कुछ भी कहा जाता नहीं' - ऐसा क्यों?

- (a) साधन सुविधाओं के अभाव के कारण
(b) बन्धन और बेबसी के कारण
(c) गूँगा होने के कारण
(d) भीतर के घावों के कारण

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (b)

2. कविता की पंक्तियों में मुख्यतः बात की गई है-

- (a) कुछ भी न कह पाने की विवशता की
(b) घावों के हरे-भरे होने की
(c) गूँगा-बहरा होने की
(d) साधन-सुभीतों की

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (a)

3. 'रीते' शब्द से भाव है-

- (a) अपनेपन का (b) परायेपन का
(c) खालीपन का (d) खोलखलेपन का

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (c)

4. कविता की पंक्तियों के आधार पर कहा जा सकता है कि-

- (a) कवि कुछ भी कहने या सुन पाने की स्थिति में नहीं है
(b) कवि घावों के गहरे होने से दुःखी है
(c) कवि के जीवन में बहुत अभाव है
(d) कवि कुछ भी करने की स्थिति में नहीं है

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (b)

5. 'ड्योढ़ी' का अर्थ है-

- (a) घर (b) देहरी
(c) दरवाजा (d) चौखट

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (c)

6. 'भीतर के घाव' से तात्पर्य है-

- (a) शारीरिक क्षति (b) घर के भीतर की अशान्ति
(c) हृदय की पीड़ा (d) अन्दरूनी चोट

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (c)

निर्देश : निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही/सबसे उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए।

न अवरोध कोई, न बाधा कहीं है
न संदेह कोई, न व्यवधान कोई
बहुत दूर से हैं दिशाएँ बुलातीं
नहीं पथ-डगर आज अनजान कोई
दिशाएँ निमन्त्रण मुझे दे रही है,
दिगन्तर खुला सिर्फ मेरे लिए है।

नहीं कुछ यहाँ राह जो रोक पाए
न कोई यहाँ जो मुझे टोक पाए
अजानी हवा में उड़ा जा रहा हूँ
वियज गीत मेरा गगन मस्त गाए
हृदय में यही कह रहा बात कोई,
धरा और गगन सिर्फ तेरे लिए है।

1. कवि को कोई कह रहा है कि—

- (a) बाधाओं से दूर रहना चाहिए
- (b) धरती और आसमान उसके लिए है
- (c) लक्ष्य अभी बहुत दूर है
- (d) अजानी हवा में उड़ें

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (b)

2. कविता में दो समानार्थी शब्द एक वाक्य में आए हैं। वह वाक्य कौन-सा है?

- (a) धरा और गगन सिर्फ तेरे लिए है
- (b) न अवरोध कोई, न बाधा कहीं है
- (c) न सन्देह कोई, न व्यवधान कोई
- (d) अजानी हवा में उड़ा जा रहा हूँ

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (b)

3. कवि को कौन निमन्त्रण दे रहा है?

- (a) दिशाएँ
- (b) हवा
- (c) गगन
- (d) दिगन्तर

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (a)

4. अर्थ की दृष्टि से शेष से भिन्न शब्द छाँटिए।

- (a) धरा
- (b) पथ
- (c) डगर
- (d) राह

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (a)

5. कवि का विजय गीत कौन गा रहा है?

- (a) आकाश
- (b) धरती
- (c) दिशाएँ
- (d) हवा

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (a)

6. 'कोई' शब्द व्याकरण की दृष्टि से है—

- (a) सर्वनाम
- (b) विशेषण
- (c) अव्यय
- (d) क्रिया

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (a)

निर्देश : दी गई कविता की पंक्तियाँ पढ़कर पूछे गए प्रश्नों में सबसे उचित उत्तर वाले विकल्प चुनिए।

चमकीली है सुबह आज की आसमान में,
निश्चय कल की सुबह और चमकीली होगी,
बेचैनी की बाँहों में कल फूल खिलेंगे,
घुटन गमकती साँसों की आवाज सुनेगी।
कुण्ठाओं की टहनी छिन्न-भिन्न होगी फिर,
आशा अपने हाथों से अब कुसुम चुनेगी,

चटकीली है आज चहकती हुई चाँदनी,
कल चन्दा की किरण और चटकीली होगी,
खुल जाएँगे अब सबके दिल के दरवाजे,
आँखें अपनी आँखों को पहचान सकेंगी।

1. काव्यांश में 'चमकीली सुबह' का आशय है —

- (a) अन्धकार समाप्ति के बाद आशाभरी सुबह
- (b) सूर्य की किरणों से चमकती सुबह
- (c) सफेद कोहरे से चमकती सुबह
- (d) प्रातः काल का समय

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015

उत्तर : (a)

2. कवि को विश्वास है कि —

- (a) सुबह का समय सदा सुहाना होता है
- (b) कल की सुबह आज से अच्छी होगी
- (c) सुबह का सूर्य कष्ट दूर करता है
- (d) आज की सुबह सबसे अच्छी होगी

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015

उत्तर : (b)

3. 'कुण्ठाओं की टहनी छिन्न-भिन्न होगी' से तात्पर्य है—

- (a) दुःख की अनुभूति खत्म होगी
- (b) पुरानी डाल टूट जाएगी
- (c) निराशा दूर होगी
- (d) मन का दुःख दूर होगा

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015

उत्तर : (c)

4. 'चाँदनी' का विशेषण है—

- (a) चटकीली
- (b) तड़पती
- (c) गमकती
- (d) महकती

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015

उत्तर : (a)

5. 'दिल के दरवाजे खुल जाएँगे' का क्या अर्थ है?

- (a) आपस में बातें करेंगे
- (b) दिलों में सबके प्रति मित्रता रहेगी
- (c) कोई बात छिपी नहीं रहेगी
- (d) हृदय से हृदय मिलेंगे

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015

उत्तर : (b)

6. 'कुसुम' का पर्यायवाची शब्द नहीं है—

- (a) कमल
- (b) प्रसून
- (c) पुष्प
- (d) सुमन

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015

उत्तर : (a)

निर्देश : निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सबसे उचित उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए।

रोना और मचल जाना भी क्या आनन्द दिखाते थे।
बड़े-बड़े मोती से आँसू, जयमाला पहनाते थे।
मैं रोई, माँ काम छोड़कर आई, मुझको उठा लिया।
झाड़-पोछकर चूम-चूम गीले गालों को सुखा दिया।
आ जा बचपन! एक बार फिर दे-दे अपनी निर्मल शान्ति।

व्याकुल व्यथा मिटाने वाली, वह अपनी प्राकृत विश्रान्ति वह भोली-सी मधुर सरलता, वह प्यारा जीवन निष्पाप। क्या फिर आकर मिटा सकेगा तू मेरे मन का सन्ताप? मैं बचपन को बुला रही थी, बोल उठी बिटिया मेरी। नन्दन-वन-सी फूल उठी, यह छोटी-सी कुटिया मेरी।

-सुभद्रा कुमारी चौहान

1. 'बचपन' शब्द है—

- (a) विशेषण (b) क्रिया-विशेषण
(c) सर्वनाम (d) संज्ञा

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015

उत्तर : (d)

2. 'नन्दन-वन-सी फूल उठी, यह छोटी-सी कुटिया मेरी' का भाव है—

- (a) कुटिया सुन्दर हो गई
(b) कुटिया में आनन्द उमड़ उठा
(c) कुटिया में शान्ति छा गई
(d) छोटी कुटिया बड़ी हो गई

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015

उत्तर : (b)

3. 'मिटा सकेगा तू मेरे मन संताप?'

उक्त पंक्ति में 'तू' किसे कहा गया है?

- (a) बचपन को (b) कवि को
(c) पाठक को (d) बच्चे को

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015

उत्तर : (a)

4. कवयित्री अपने बचपन को क्यों बुलाना चाहती है?

- (a) अपनी बिटिया की याद में
(b) बचपन के आनन्द की याद में
(c) बचपन के खेलों की याद में
(d) अपनी माँ की याद में

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015

उत्तर : (b)

5. बच्चे की आँखों से निकलते आँसुओं को देखकर क्या अनुभूति होती है?

- (a) सुख की (b) विजय की
(c) प्यार की (d) कष्ट की

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015

उत्तर : (c)

6. 'व्याकुल व्यथा मिटाने वाली' में प्रयुक्त अलंकार है—

- (a) रूपक अलंकार (b) उपमा अलंकार
(c) अनुप्रास अलंकार (d) यमक अलंकार

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015

उत्तर : (c)

निर्देश : निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर, इस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

मेघ आए, बड़े बन-ठन के सँवर के
आगे-आगे नाचती गाती बयार चली
दरवाजे-खिड़कियाँ खुलने लगीं गली-गली
पाहुन ज्यों आए हो गाँव में शहर के
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के

पेड़ झुक-झाँकने लगे गरदन उचकाए
आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए,
बाँकी चितवन उठा नदी ठिठकी घूँघट सरके।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।
बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की
बरस बाद सुधि लीन्ही

बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की
हरसाया ताल लाया पानी परात भर के
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के
क्षितिज-अटारी गहराई दामिनी दमकी,
क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की
बाँध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढरके,
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

1. 'मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के' पंक्ति का भाव किसमें है?

- (a) बादलों ने सूरज को ढक लिया है
(b) बादलों ने बिजली से शृंगार किया है
(c) बादल सज-धज कर आए हैं
(d) भूरे-काले बादल आकाश में घिर आए हैं

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012

उत्तर : (c)

2. मेघों के आने से लगता है -

- (a) बादल आसमान में छा गए हैं
(b) मानों कहीं उत्सव मनाया जा रहा है
(c) मानों गाँव में शहर से मेहमान आए हों
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012

उत्तर : (c)

3. 'बरस बाद सुधि लीन्ही'-इस पंक्ति का भाव किसमें है?

- (a) बादल एक बरस के बाद आए हैं
(b) बादलों ने याद किया है
(c) बादल बन सँवर कर आए हैं
(d) बादल मेहमान बन कर आए हैं

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012

उत्तर : (a)

4. पूरी कविता में कौन-सा अलंकार है?

- (a) श्लेष अलंकार (b) रूपक अलंकार
(c) मानवीकरण अलंकार (d) उत्प्रेक्षा अलंकार

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012

उत्तर : (c)

5. बूढ़े पीपल ने किस प्रकार मेघों का स्वागत किया?

- (a) झुककर प्रणाम करके (b) प्रसन्न होकर
(c) गले लगाकर (d) उलाहना देकर

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012

उत्तर : (a)

6. 'पाहुन' शब्द का क्या अर्थ है?

- (a) आना (b) पालना
(c) मेहमान (d) पैर

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012

उत्तर : (c)

निर्देश : कविता को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के सबसे उचित विकल्प चुनिए।

सुनता हूँ मैंने भी देखा,
काले बादल में रहती चाँदी की रेखा।
काले बादल जाति-द्वेष के,
काले बादल विश्व-क्लेश के,
काले बादल उठते पथ पर
नवस्वतंत्रता के प्रवेश के
सुनता आया हूँ, है देखा
काले बादल में हँसती चाँदी की रेखा!

(चाँदी की रेखा, सुमित्रानन्दन पंत)

1. “काले बादल में रहती चाँदी की रेखा” पंक्ति का भाव है—
(a) विपत्तियों के बीच आशा की किरण दिखाई देती है।
(b) बादलों के टकराने से बिजली चमकती है
(c) अँधेरे के बाद प्रकाश आता है
(d) काले बादलों में चाँदी की रेखा रहती है

CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012

उत्तर : (c)

2. ‘काले बादल’ प्रतीक हैके—
(a) जातिगत वैमनस्य
(b) मानसून द्वारा आने वाली खुशहाली
(c) तूफान
(d) गर्मी से मुक्ति

CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012

उत्तर : (a)

3. ‘काले बादल में रहती चाँदी की रेखा’ में कौन-सा अलंकार है?
(a) रूपक अलंकार (b) उत्प्रेक्षा अलंकार
(c) श्लेष अलंकार (d) उपमा अलंकार

CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012

उत्तर : (c)

4. निम्न में से ‘बादल’ का पर्यायवाची शब्द नहीं है—
(a) जलद (b) घन
(c) पयोधर (d) जलज

CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012

उत्तर : (d)

5. ‘स्वतंत्रता’ का विलोम शब्द है—
(a) गुलाम (b) परतंत्रता
(c) पराधीनता (d) परतंत्र

CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012

उत्तर : (b)

6. कवि क्या सुनने और देखने की बात कहता है?
(a) बिजली को (b) आशा की किरण को
(c) निराशा को (d) बादलों को

CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012

उत्तर : (b)

निर्देश : नीचे दिए गए पद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के सबसे उचित विकल्प चुनिए।

चीटियाँ ईर्ष्यालु नहीं होती
दौड़ती भागती
एक-दूसरे को संदेश पहुँचातीं
जीवन को परखती पहुँचती हैं वहाँ,
जहाँ कोई नहीं पहुँचा कभी चीटियाँ से पहले।
संकेतों में करती हैं, वे शब्द संधान
रास्ता नहीं भूलती कभी स्मृति में रखती हैं संजोकर
दोस्त और दुश्मन के चेहरे
बिखरती हैं कभी-कभार वे मगर हर बार
नए सिरे से टटोलती हैं वे पूर्वजों द्वारा छोड़ी गई गंध
फिर से एकजुट होते हुए।

1. चीटियाँ आपस में बातचीत कैसे करती हैं?

- (a) छूकर (b) बोलकर
(c) संदेशों से (d) संकेतों से

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015

उत्तर : (d)

2. ‘ईर्ष्यालु’ किसे कहा जाता है?

- (a) दूसरों से जलने वाला
(b) सबसे घृणा करने वाला
(c) पाने की इच्छा करने वाला
(d) कुछ भी न चाहने वाला

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015

उत्तर : (a)

3. चींटियों के स्वभाव में नहीं है -

- (a) ईर्ष्या करना (b) संदेश पहुँचाना
(c) दौड़-भाग करना (d) जीवन को परखना

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015

उत्तर : (a)

4. बिखरी हुई चीटियाँ फिर से एकजुट कैसे होती हैं?

- (a) पूर्वजों की गंध से (b) रास्ता टटोलने से
(c) मित्रों के सहयोग से (d) शत्रुओं की चुनौती से

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015

उत्तर : (a)

5. मित्र और शत्रु के चेहरों को चीटियाँ -

- (a) पहचानती नहीं हैं (b) बिखेर देती हैं
(c) भूल जाती हैं (d) याद रखती हैं

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015

उत्तर : (d)

6. काव्यांश में ‘मगर’ का अर्थ है -

- (a) केवल (b) परन्तु
(c) मगरमच्छ (d) घड़ियाल

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015

उत्तर : (b)

निर्देश : निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सबसे उचित उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए।

गरजते घन घनन-घन-घन
नाचता है मोर-सा मन,
ऐसी पड़ी झर-झर झड़ी-

भीगा बदन बेसुध है मन।

आज वर्षा अजब आई।

बह रही है मस्त पुरवाई,

नदी है द्वार तक आई।

मेघों से लिपटकर सो गया सूरज-

ले रहे हैं खेत अँगड़ाई।

आज वर्षा गजब आई।

1. 'बेसुध है मन' कहकर कवि बताना चाहता है कि मन-

- (a) गाने लगता है
(b) झूमने लगता है
(c) पानी से भीग जाता है
(d) मस्त हो जाता है

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2015

उत्तर : (d)

2. खेत अँगड़ाइयाँ ले रहे हैं, क्योंकि-

- (a) सुबह हो गई, वे नींद से जाग रह हैं
(b) उन्हें बहुत आनन्द आ रहा है
(c) सूर्य दिखाई नहीं दे रहा है
(d) सूर्य के सो जाने से उन्हें भी नींद आ रही है।

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2015

उत्तर : (d)

3. 'गरजते घन घनन-घन-घन' में अलंकार है-

- (a) रूपक (b) श्लेष
(c) उपमा (d) अनुप्रास

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2015

उत्तर : (d)

4. मन की उपमा किससे दी गई है?

- (a) मोर से (b) सावन से
(c) बादलों से (d) वर्षा से

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2015

उत्तर : (a)

5. "लिपटकर सो गया सूरज" का भाव है कि सूर्य-

- (a) थक गया है (b) छिप गया है
(c) नींद में है (d) खो गया है

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2015

उत्तर : (b)

6. 'पुरवाई' से आशय है-

- (a) पूर्व की ओर बहने वाली पवन
(b) मदमस्त करने वाली हवा
(c) पूर्व से आने वाली वायु
(d) पूर्व को बहने वाली नदी

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2015

उत्तर : (c)

निर्देश : नीचे दी गई पंक्तियों को पढ़कर सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए:

पूछो किसी भाग्यवादी से,
यदि विधि-अंक प्रबल है।
पद पर क्यों देती न स्वयं
वसुधा निज रतन उगल है।

1. 'प्र' उपसर्ग से बनने वाला शब्द-समूह है-

CTET - Ist Paper (I-V) July 2013

- (a) प्रत्युत्तर, प्रदेश, प्रपत्र
(b) प्रत्येक, प्रभाव, प्रदेश
(c) प्रसाद, प्रत्येक, प्रपत्र
(d) प्रभाव, प्रदेश, प्रपत्र

उत्तर : (d)

2. कवि ने किसकी महिमा का खंडन किया है?

- (a) रतनों का (b) विधि के विधान का
(c) भाग्यवाद का (d) वसुधा का

CTET - Ist Paper (I-V) July 2013

उत्तर : (c)

3. विधि-अंक से तात्पर्य है-

- (a) न्यायवादी (b) न्याय-अंक
(c) 'विधाता' लिखा होना (d) भाग्य का लिखा हुआ

CTET - Ist Paper (I-V) July 2013

उत्तर : (d)

4. कवि के अनुसार यदि भाग्य ही सब कुछ होता तो क्या होता?

- (a) रत्न स्वयं प्रकाश युक्त हो उठते।
(b) रत्न मिल जाते।
(c) पैरा के नीचे वसुधा होती।
(d) धरती स्वयं ही रत्न रूपी संपत्ति उगल देती।

CTET - Ist Paper (I-V) July 2013

उत्तर : (d)

5. तुकबंदी के कारण कौन-सा शब्द बदले हुए रूप में प्रयुक्त हुआ है?

- (a) उगल (b) रतन
(c) प्रबल (d) स्वयं

CTET - Ist Paper (I-V) July 2013

उत्तर : (b)

6. इनमें से कौन-सा 'वसुधा' का समानार्थी है?

- (a) जलधि (b) वसुंधरा
(c) महीप (d) वारिधि

CTET - Ist Paper (I-V) July 2013

उत्तर : (b)

निर्देश- नीचे दी गई पंक्तियों को पढ़कर सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए-

मैं नहीं चाहता चिर सुख
चाहता नहीं अविरल दुख,
सुख-दुख की आँख-मिचौनी
खेले जीवन अपना मुख।
सुख-दुख के मधुर मिलन से
यह जीवन हो परिपूरन,
फिर घन से ओझल हो शशि,
फिर शशि से ओझल हो घन।
जग पीड़ित है अति दुख से
जग पीड़ित है अति सुख से,
मानव जग में बंट जावे

दुख-सुख से औ' सुख-दुख से।
अविरत दुख है उत्पीड़न,
अविरत सुख भी उत्पीड़न
सुख-दुख की निशा-दिवा में
सोता जगता जग-जीवन में।

1. कवि चिर सुख या चिर दुख क्यों नहीं चाहता है?

- (a) चिर सुख या चिर दुख संभव नहीं हैं
- (b) चिर दुख असहनीय होगा
- (c) सुख की अतिधातक होगा
- (d) दोनों मिलकर ही जीवन को पूर्ण बनाते हैं।

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (d)

2. कवि मानव के लिए किस स्थिति की कामना करता है?

- (a) दुख और सुख परस्पर बट जाएं
- (b) वह बहुत सुखी हो
- (c) वह दुखी नहीं हो
- (d) वह समृद्ध हो

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (a)

3. इस काव्यांश में नाद सौंदर्य की दृष्टि से कौन-सा विकल्प उपयुक्त है?

- (a) रूपक
- (b) उत्प्रेक्षा
- (c) अंत्यानुप्रास
- (d) उपमा

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (c)

4. कवि ने सुख और दुख का साम्य किनसे बताया है?

- (a) चाँद और सूरज
- (b) शशि और घन
- (c) दिन और रात
- (d) ठण्डा और गर्म

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (c)

5. 'सुख' और 'दुख' से ध्वनि साम्य वाला शब्द है -

- (a) अविरत
- (b) उत्पीड़न
- (c) आँख
- (d) मुख

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (d)

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित पाँच प्रश्न दिए गए हैं। अवतरण को ध्यान से पढ़िए तथा प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के लिए दिए गए चार विकल्पों में से उचित विकल्प का चयन कीजिए तथा निर्देशानुसार चिह्न लगाइए।

गद्यांश

राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए चरित्र निर्माण परम आवश्यक है। जिस प्रकार वर्तमान में भौतिक निर्माण का कार्य अनेक योजनाओं के माध्यम से तीव्र गति के साथ सम्पन्न हो रहा है, वैसे ही वर्तमान की सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि देशवासियों के चरित्र निर्माण के लिए भी प्रयत्न किया जाए। उत्तम चरित्रवान व्यक्ति ही राष्ट्र की सर्वोच्च संपदा है। जनतंत्र के लिए तो यह एक महान कल्याणकारी योजना है। जन-समाज में राष्ट्र, संस्कृति, समाज एवं परिवार के प्रति हमारा क्या कर्तव्य है इसका पूर्ण रूप से बोध कराना एवं राष्ट्र में व्याप्त समग्र भ्रष्टाचार के प्रति निषेधात्मक वातावरण का निर्माण करना ही चरित्र निर्माण का प्रथम सोपान है।

पाश्चात्य शिक्षा और संस्कृति के प्रभाव से आज हमारे मस्तिष्क में भारतीयता के प्रति 'हीन भावना' उत्पन्न हो गई है। चरित्र निर्माण, जो कि बाल्यावस्था से ही ऋषिकुल, गुरुकुल, आचार्यकुल की शिक्षा के द्वारा प्राचीन समय से किया जाता था, आज की लॉर्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति से संचालित स्कूलों एवं कॉलेजों के लिए एक हास्यास्पद विषय बन गया है। आज यदि कोई पुरातन संस्कारी विद्यार्थी संध्यावंदन या शिखा-सूत्र रख कर भारतीय संस्कृतिमय जीवन बिताता है, तो अन्य छात्र उसे 'बुद्धू' या अप्रगतिशील कहकर उसका मजाक उड़ाते हैं। आज हम अपने भारतीय आदर्शों का परित्याग करके पश्चिम के अंधानुकरण को ही प्रगति मान बैठे हैं। इसका घातक परिणाम चारित्र्य-दोष के रूप में आज देश में सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा है।

1. चरित्र निर्माण की परम आवश्यकता है

- (a) समाजोपयोगी कार्यों के लिए
- (b) राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए

- (c) राष्ट्र की योजनाओं के संचालन के लिए
- (d) मानवमात्र के कल्याण के लिए

2. जनतंत्र के लिए लाभकारी हो सकते हैं

- (a) निष्ठावान श्रमिक
- (b) धनवान व्यक्ति
- (c) उत्तम चरित्रवान व्यक्ति
- (d) शक्तिशाली सिपाही

3. उन्नत राष्ट्र के लिए विकास का प्रथम सोपान है?

- (a) भ्रष्टाचार के प्रति निषेधात्मक वातावरण
- (b) जनता में सांप्रदायिक सद्भाव
- (c) राजनीति के कुशल दौंव-पेंच
- (d) चरित्र निर्माण के लिए शैक्षिक वातावरण

4. अप्रगतिशील रूप में मजाक उड़ाया जाता है, जो

- (a) पाश्चात्य संस्कृति को हृदय से अपनाता है
- (b) सत्संग में अधिक समय नहीं बिताता
- (c) धार्मिक वातावरण में जीवन बिताता है
- (d) भारतीय संस्कृतिमय जीवन बिताता है

5. भारतीयता के प्रति हीन भावना का कारण है :

- (a) पुरातन संस्कारी संस्कृतिमय जीवन
- (b) लॉर्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति
- (c) प्राचीन गुरुकुल की शिक्षा पद्धति
- (d) वर्तमान वैज्ञानिक शिक्षा पद्धति

निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर सम्बद्ध वैकल्पिक

उत्तरों में से सही उत्तर का चयन कर उसे चिह्नित करें।

आवश्यकता इस बात की है कि हमारी शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषा हो, जिसमें राष्ट्र के हृदय-मन-प्राण के सूक्ष्मतरंग और गंभीरतम संवेदन मुखरित हों और हमारा पाठ्यक्रम यूरोप तथा अमेरिका के पाठ्यक्रम पर आधारित न होकर हमारी अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं एवं आवश्यकताओं का प्रतिनिधित्व करे। भारतीय भाषाओं, भारतीय इतिहास, भारतीय दर्शन, भारतीय धर्म और भारतीय समाजशास्त्र को हम सर्वोपरि स्थान दें। उन्हें अपने शिक्षाक्रम में गौण

स्थान देकर या शिक्षित जन को उनसे वंचित रखकर हमने राष्ट्रीय संस्कृति में एक महान रिक्ति को जन्म दिया है, जो नई पीढ़ी को भीतर से खोखला कर रहा है। हम राष्ट्रीय परम्परा से ही नहीं, सामयिक जीवन प्रवाह से भी दूर जा पड़े हैं।

विदेशी पश्चिमी चश्मों के भीतर से देखने पर अपने घर के प्राणी भी बे-पहचाने और अजीब-से लगने लगे हैं। शिक्षित जन और सामान्य जनता के बीच की खाई बढ़ती गई है और विश्व संस्कृति के दावेदार होने का दंभ करते हुए भी हम अपने घर में ही बामन बनकर रह गए हैं। इस स्थिति को हास्यास्पद ही कहा जा सकता है।

6. हमारी शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषा इसलिए होना चाहिए क्योंकि उसमें

- (a) विदेशी पाठ्यक्रम का अभाव होता है
- (b) सामयिक जीवन निरंतर प्रवाहित होता रहता है
- (c) भारतीय इतिहास और दर्शन का ज्ञान निहित है
- (d) भारतीय मानस का स्पंदन ध्वनित होता है

7. उपर्युक्त गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक है

- (a) हमारी शिक्षा-माध्यम और पाठ्यक्रम
- (b) हमारी सांस्कृतिक परम्परा
- (c) शिक्षित जन और सामान्य जनता
- (d) शिक्षा का माध्यम

8. हमें राष्ट्रीय सांस्कृतिक परम्परा के साथ-साथ जुड़ना चाहिए :

- (a) सामयिक जीवन प्रवाह से
- (b) अद्यतन साहित्यिक परंपरा से
- (c) समसामयिक वैज्ञानिक विचारधारा से
- (d) भारतीय नव्य-समाजशास्त्र से

निर्देश : काव्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ओह, समय पर उनमें कितनी फलियाँ फूटी!
कितनी सारी फलियाँ, कितनी प्यारी फलियाँ,
यह, धरती कितना देती है! धरती माता
कितना देती है अपने प्यारे पुत्रों को!
न समझ पाया था मैं उसके महत्व को,
बचपन में छिः स्वार्थ लोभ वश पैसे बोकर!
रत्न प्रसविनी है वसुधा, अब समझ सका हूँ!
इसमें सच्ची समता के दाने बोने हैं,
इसमें जन की क्षमता के दाने बोने हैं,
जिससे उगल सके फिर धूल सुनहली फसलें
मानवता की-जीवन श्रम से हैंसें दिशाएँ।
हम जैसा बोएँगे वैसा ही पाएँगे।

9. कवि किसका महत्व नहीं समझ पाया था?

- (a) माँ का
- (b) धरती माँ का
- (c) परिश्रम का
- (d) बचपन का

10. मानवता की सुनहली फसलें कब उगेंगी?

- (a) जब हम परिश्रम करेंगे
- (b) जब समता और क्षमता के बीज बोए जाएंगे।
- (c) जब चारों ओर शांति होगी
- (d) जब धूल सोना उगलेगी

11. कवि ने बचपन में किस भाव से पैसे बोए थे?

- (a) निःस्वार्थ भाव से
- (b) सोचविचार से
- (c) स्वार्थ एवं लोभ से
- (d) मोह से

12. “धरती कितना देती है” का आशय है-

- (a) बहुत कम देती है।
- (b) कितना देती है?
- (c) बहुत अधिक देती है।
- (d) कुछ देती ही कहाँ है?

निर्देश : निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यान से पढ़िए और इसके आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

मनुष्य तभी तक मनुष्य है, जब तक वह प्रकृति से ऊपर उठने के लिए संघर्ष करता रहता है। यह प्रकृति दो प्रकार की है - अन्तः प्रकृति और बाह्य प्रकृति। बाह्य प्रकृति को अपने वश में कर लेना बड़ी अच्छी और गौरव की बात है, पर अन्तः प्रकृति पर विजय पा लेना उससे भी अधिक गौरव की बात है। ग्रहों और तारों का नियमन करने वाले भौतिक नियमों का ज्ञान प्राप्त कर लेना गौरव-पूर्ण है, परन्तु मानव जाति के विचारों, भावों, वासनाओं और इच्छाओं का नियमन करने वाले नियमों को जान लेना उससे भी अधिक गौरव-पूर्ण है। अतएव हमें अपनी अन्तः प्रकृति और अन्तर्वृत्तियों पर विजय पाने का ही निरन्तर प्रयत्न करना चाहिए। दुनिया में होने वाले सभी युद्ध, विभाजन और वैमनस्य अन्तर्वृत्तियों के न जानने के ही परिणाम हैं।

13. दुनिया में होने वाले युद्ध, विभाजन और वैमनस्य का निम्नलिखित में से कौन सा प्रमुख कारण है?

- (a) मनुष्य का प्रकृति से ऊपर उठने के लिए संघर्ष।
- (b) अन्तः प्रकृति पर विजय प्राप्त करना।
- (c) अन्तः प्रकृति एवं अन्तः वृत्तियों को न जानना।
- (d) बाह्य प्रकृति को वश में कर लेना।

14. सर्वाधिक गौरव-पूर्ण क्या है?

- (a) बाह्य प्रकृति को जानना।
- (b) विचारों, भावों, वासनाओं और इच्छाओं का नियमन करने वाले नियमों को न जानना।
- (c) अन्तः प्रकृति और अन्तः प्रवृत्तियों पर विजय पाने का निरन्तर प्रयास।
- (d) प्रकृति से ऊपर उठने का निरन्तर संघर्ष

निर्देश : नीचे दिये गये गद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रेम की भाषा शब्द रहित है। नेत्रों की, कपोलों की मस्तक की भाषा भी शब्द-रहित है। जीवन का तत्त्व भी शब्द से परे है। सच्चा आचरण- प्रभाव, शील, अचल-स्थिति- संयुक्त आचरण -न तो साहित्य के लंबे व्याख्यानों से गढ़ा जा सकता है न वेद की श्रुतियों के मीठे उपदेश से, न अंजील से, न कुरान से, न धर्मचर्चा से, न केवल सत्संग से। जीवन के अरण्य में घुसे हुए पुरुष के हृदय पर प्रकृति और मनुष्य के जीवन के मौन व्याख्यानों के यत्न से सुनार के छोटे हथौड़े की मंद-मंद चोटों की तरह आचरण का रूप प्रत्यक्ष होता है।

15. गद्यांश में किसकी महिमा का वर्णन है?

- (a) आचरण
- (b) प्रेम
- (c) जीवन
- (d) वेद

16. गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक होगा-

- (a) प्रेम की भाषा
- (b) जीवन का अरण्य
- (c) सच्चा आचरण
- (d) मौन व्याख्यान

निर्देश : निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और फिर इसी के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

क्या आपने कभी इस बात पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया है कि आज हम जो कुछ भी हैं उसमें किस-किस का योगदान है? माता का, मातृभूमि का, मातृभाषा का, या फिर इन सब का? एक जननी हमें जन्म देती है, एक के आंगन में खेल-कूद कर तथा खा-पी कर हम पुष्ट होते हैं और एक हमें अपने विचारों, भावों इत्यादि को प्रकट करने की शक्ति देती है। इसी शक्ति के अभाव में हम गुँगे और बहरे बन कर रह जाते हैं। यह शक्ति हम पर पूर्ण रूप से मनुष्य बनाने का उपकार करती है। इस उपकार का ऋण हम पर सबसे अधिक है। उसके ऋण से मुक्त होने के लिए हमें सच्चे मन से उसकी सेवा करनी चाहिए। विदेशी भाषा के सम्मुख इसका तिरस्कार नहीं करना चाहिए तभी हम अपनी मातृभूमि के सच्चे सपूत कहलाएँगे किन्तु यह काम इतना सरल नहीं है। यह काम तो तलवार की धार पर चलने का है।

17. अपने मन की बात कहने की शक्ति हमें किससे मिलती है?

- (a) मातृभूमि (b) मातृभाषा
(c) माता (d) राष्ट्रभाषा

18. हम अपना मातृऋण कैसे चुका सकते हैं?

- (a) माँ को धन देकर (b) माँ को धन्यवाद देकर
(c) माँ की सेवा करके (d) माँ की भाषा अपना कर

19. इस गद्यांश का मुख्य विषय क्या है?

- (a) मातृभक्ति (b) मातृभूमि
(c) मातृसेवा (d) मातृभाषा

निर्देश : निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

आज विश्व भर में बेकारी ने विकराल रूप धारण कर रखा है। यह समस्या भारत को भी घुन की तरह खाए जा रही है। बेकारी का वास्तविक अर्थ है आजीविका कमाने में या तो असमर्थ होना या बना दिया जाना। इस समस्या का एकमात्र कारण आज की शिक्षा प्रणाली है, जो केवल अंग्रेजी शिक्षा पर बल देती है। यह केवल पुस्तकीय ज्ञान देती है, व्यावहारिक ज्ञान का इसमें सर्वथा अभाव है। आज देश भर में दो तरह की बेकारी है। शिक्षितों में बेकारी और अशिक्षितों में बेकारी। शिक्षित वर्ग केवल कार्यालय में बैठकर कलम चलाने में ही विश्वास रखता है। वह कोई छोटा काम नहीं करना चाहता। अशिक्षित वर्ग काम की तलाश में शहर आता है और काम न मिलने पर बेकार रहता है। इस समस्या का हल केवल यही है कि शिक्षित वर्ग के लिए शिक्षा-प्रणाली में संशोधन किया जाए और अशिक्षित वर्ग गाँव में ही रहकर खेती-बाड़ी का काम देखे।

20. कौन-सी समस्या भारत को घुन की तरह खाए जा रही है?

- (a) अशिक्षा की समस्या (b) गरीबी की समस्या
(c) बेकारी की समस्या (d) महंगाई की समस्या

21. आज की शिक्षा प्रणाली में किसका अभाव है?

- (a) नैतिक ज्ञान (b) हिन्दी ज्ञान
(c) अंग्रेजी ज्ञान (d) व्यावहारिक ज्ञान

22. कौन-सा वर्ग काम तलाश में गाँव से शहर आता है?

- (a) शिक्षित वर्ग (b) अशिक्षित वर्ग
(c) उच्च वर्ग (d) इनमें से कोई नहीं

निर्देश-निम्नांकित पंक्तियों के संबंध में प्रश्नों के अनुसार उत्तर दीजिए।

“दिवसावसान का समय

मेघमय आसमान से उतर रही है

वह संध्या-सुंदरी परी सी

धीरे-धीरे-धीरे।”

23. उपर्युक्त पंक्तियों में अलंकार है-

- (a) उपमा (b) रूपक
(c) मानवीकरण (d) उपर्युक्त सभी

24. उपर्युक्त पंक्तियों के रचयिता हैं-

- (a) सुमित्रा नंदन पंत
(b) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
(c) रामधारी सिंह दिनकर
(d) महादेवी वर्मा

25. 'दिवसावसान' का अर्थ है-

- (a) दिवस का अवसान (b) दिवा स्वप्न
(c) दिवस का अंत (d) संध्या

निर्देश-निम्नांकित पंक्तियों के संबंध में प्रश्नों के अनुसार उत्तर दीजिए।

अति मलीन, वृषभानु कुमारी।

अधमुख रहित, उरध नहिं चितवत्, ज्यों गथ हारे थकित जुआरी।

छूटे चिकुर बदन कुम्हिलानो, ज्यो नलिनी हिसकर की मारी।।

26. 'चिकुर' का अर्थ है-

- (a) प्रिय (b) प्राण
(c) हाथ (d) बाल

27. अंतिम रेखांकित पंक्ति में अलंकार है-

- (a) उपमा (b) रूपक
(c) उत्प्रेक्षा (d) अनुप्रास

28. उपर्युक्त पंक्तियों में रस है-

- (a) हास्य (b) करुण
(c) विप्रलम्भ शृंगार (d) संयोग शृंगार

29. 'गथ' से तात्पर्य है-

- (a) गाथा (b) युद्ध
(c) दांव (d) हार जाना

30. वृषभानुकुमारी से तात्पर्य है-

- (a) यमुना (b) सीता
(c) उर्मिला (d) राधा

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (b) | 2. (c) | 3. (a) | 4. (d) | 5. (b) | 6. (d) | 7. (a) | 8. (d) | 9. (b) | 10. (b) |
| 11. (c) | 12. (c) | 13. (c) | 14. (c) | 15. (a) | 16. (c) | 17. (b) | 18. (c) | 19. (c) | 20. (c) |
| 21. (d) | 22. (b) | 23. (c) | 24. (b) | 25. (d) | 26. (d) | 27. (a) | 28. (c) | 29. (c) | 30. (d) |

अधिगम का अर्थ

अधिगम का सामान्य अर्थ 'सीखना' होता है। अधिगम शिक्षण प्रक्रिया का प्रमुख बिन्दु है। यह एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। अधिगम द्वारा व्यवहार में स्थायी या अस्थायी परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। किसी अभिप्रेरणा (नशा, क्रोध, भावुकता आदि) के वशीभूत होकर यदि व्यवहार परिवर्तन होता है, तो उसे अधिगम की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। अधिगम वास्तव में अनुभव एवं प्रशिक्षण के कारण आये व्यवहार परिवर्तन को कहा जाता है।

भाषा अधिगम व्यक्ति के भाषायी व्यवहार में परिवर्तन लाता है। भाषा विज्ञान के आचार्यों का वर्ग कहता है कि बालकों में भाषा को ग्रहण करने की सहज व स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। प्रायः छः-सात वर्ष के बालक एक से अधिक भाषाएँ सरलता से सीख लेते हैं और इसका सबसे बड़ा कारण निःसंकोच अनुकरण की प्रवृत्ति होती है।

परिभाषाएँ-

ई. ए. पील के अनुसार- "भाषा अधिगम एक प्रकार का व्यक्ति में परिवर्तन लाता है उसे वातावरण के अनुकूल लगता है।"

स्लीनर के शब्दों में - "अधिगम वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य प्रगतिशील व्यवहार को स्वीकार करता है।"

गेट्स के अनुसार - "अनुभव के माध्यम से व्यवहार में आये बदलाव को ही अधिगम कहते हैं।"

क्रानबैक के अनुसार - "अनुभव के परिणामस्वरूप व्यवहार परिवर्तन ही अधिगम है।"

गिलफोर्ड के अनुसार - "व्यवहार के कारण ही व्यवहार परिवर्तन ही सीखना है।"

स्पष्ट है कि भाषायी व्यवहार में आये स्थायी या अस्थायी परिवर्तन को भाषा अधिगम कहते हैं।

भाषा अधिगम की प्रक्रिया-

भाषा अधिगम एक प्रक्रिया है जो निश्चित नियमों का अनुसरण करके विभिन्न चरणों में पूर्ण होती है। कोई भी व्यक्ति भाषा या किसी भी विषय के विविध अंगों से जिस प्रकार ज्ञान प्राप्त करता है भाषा अधिगम की प्रक्रिया कहलाती है। अधिगम की प्रक्रिया को प्रेरणा का परिणाम भी कहा जा सकता है। भाषा अधिगम अनिवार्य रूप से एक सृजनात्मक प्रक्रिया है।

परिवर्तन सृष्टि का नियम है यह सकारात्मक एवं नकारात्मक दो प्रकार का होता है। अधिगम के लिए या व्यवहार परिवर्तन के लिए औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा की आवश्यकता होती है। प्रत्येक व्यक्ति में अपने विचारों और मनोभावों को अभिव्यक्त करने की सहज प्रवृत्ति होती है। प्रत्येक बालक जिस भाषा के परिवेश में रहता है, वह उसी भाषा को सहज रूप से अनुकरण के द्वारा सीख लेता है।

भाषा अधिगम से सम्बन्धित कुछ विशिष्ट विचार

चॉम्स्की - बच्चे भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता के साथ पैदा होते हैं।

वाइगोत्स्की - बच्चों के भाषायी विकास में समाज की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

स्कनर - बच्चे अनुकरण द्वारा भाषा सीखते हैं।

पियाजे - भाषा अधिगम मूलतः संज्ञानात्मक विकास का ही एक अंग है।

भाषा अधिगम की विशेषताएँ-

भाषा अधिगम का अध्ययन करने से इसकी कुछ विशिष्टताएँ दृष्टिगोचर होती हैं, जो निम्नवत हैं-

- (i) मनुष्य में जन्मजात भाषायी क्षमता होती है।
- (ii) बालक भाषा को बोलने और समझने की योग्यता के रूप में ग्रहण करता है।
- (iii) बालक अनुकरण द्वारा भाषा सीखता है।
- (iv) भाषा बच्चे के बौद्धिक विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू है।
- (v) बालक अपने परिवेश के वयस्कों से अन्तःक्रिया करके भाषा सीखता है।
- (vi) बालक को मातृभाषा सीखने का स्वाभाविक अवसर प्राप्त होता है।
- (vii) अर्थ निकालना, अमूर्त सोच की क्षमता विकसित करना, विवेचना व कार्य, अधिगम की प्रक्रिया के सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू हैं।
- (viii) भाषा एक अर्जित क्षमता है।
- (ix) भाषा एक सामाजिक सम्पत्ति है।
- (x) भाषा अधिगम सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों होता है।

भाषा अधिगम की कठिनाइयाँ

- (i) सीखने वाले का परिवेश
- (ii) शारीरिक विकलांगता
- (iii) मानसिक अस्वस्थता
- (iv) संकोची स्वभाव
- (v) भययुक्त वातावरण
- (vi) आत्मविश्वास का अभाव
- (vii) शब्दों के संगत अर्थ के ज्ञान का अभाव।

भाषा अधिगम के सम्बन्ध में जीन पियाजे का दृष्टिकोण-

भाषा अधिगम के सम्बन्ध में जीन पियाजे का दृष्टिकोण उनके संज्ञानात्मक विकास की अवधारणा से पृथक नहीं है। पियाजे के अनुसार भाषा अधिगम मूलतः संज्ञानात्मक विकास का ही अंग है। संज्ञानात्मक विकास की सभी चार अवस्थाओं संवेदी पेशीय अवस्था (0-2 वर्ष), पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (2-7 वर्ष), मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (7-11 वर्ष) तथा अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था में वस्तुतः भाषा अधिगम का कार्य होता रहता है। जहाँ चॉम्स्की बालक में भाषा अधिगम की जन्मजात क्षमता को स्वीकार करते हैं वहीं पियाजे उनकी इस अवधारणा से कतई सहमत नहीं थे। उनके अनुसार सभी ज्ञान तंत्र इन्द्रियजनित मैकेनिज्म के माध्यम से ही निर्मित होते हैं।

भाषा शिक्षण के प्रमुख उद्देश्य-

भाषा सम्प्रेषण का परम साधन है। बालक में जन्मजात भाषायी क्षमता होती है। उसके इसी जन्मजात क्षमता को सुव्यवस्थित रूप एवं सही दिशा प्रदान करने के लिए शिक्षण की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त भाषा-शिक्षण के कुछ अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं-

1. **ज्ञानात्मक उद्देश्य-** भाषा ज्ञान की वृद्ध राशि तक पहुँचने का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है। विज्ञान एवं तकनीकी चाहे जितना विकसित हो जाये इसका महत्व कभी भी कम होने वाला नहीं।
2. **कौशलतात्मक उद्देश्य-** भाषा के चारों कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना) को प्राप्त करना भी भाषा शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य है।

नोट- ध्यातव्य हो कि सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना भाषा कौशलों का स्वाभाविक क्रम है इसमें बदलाव करने पर भाषा अधिगम सीधेतौर पर प्रभावित होता है।

3. **रसात्मक उद्देश्य-** साहित्य को संचित ज्ञान एवं रस (आनन्द) का स्रोत कहा गया है। विभिन्न साहित्यिक विधाओं के रसास्वादन के लिए तथा साहित्यकार के सूक्ष्म भावों और विचारों की रसानुभूति करने के लिए भाषा शिक्षण आवश्यक है।
4. **सृजनात्मकता के प्रकटीकरण का उद्देश्य-** भाषा शिक्षण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्देश्य है- सृजनात्मकता। भाषा शिक्षण के द्वारा लेखन की मौलिकता का विकास होता है। विचारों को प्रभावपूर्ण तरीके से व्यक्त करने की क्षमता का विकास होता है।
भाषा शिक्षण के सम्बन्ध में चॉम्स्की और पियाजें के विचार परस्पर विपरीत हैं। चॉम्स्की बालक में जन्मजात भाषा अधिगम की क्षमता को स्वीकारते हैं तो पियाजें के अनुसार भाषा अधिगम संज्ञानात्मक विकास का ही परिणाम है।
भाषा अधिगम और अर्जन में अन्तर
भाषा अधिगम
जब किसी भाषा को व्यवस्थित शिक्षण प्रक्रिया द्वारा सीखा जाता है तो उसे भाषा अधिगम कहते हैं। इसे निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा स्पष्टतौर पर समझा जा सकता है-
(i) भाषा अधिगम के लिए कौशलों का प्रयोग एवं अभ्यास अनिवार्य है।
(ii) भाषा अधिगम एक चेतन प्रक्रिया है सार्थक परिस्थितियों में यह प्रक्रिया और अधिक प्रभावशाली है।
(iii) भाषा अधिगम के लिए हमें विशेष परिस्थितियों का निर्माण करना पड़ता है ताकि अधिगमकर्ता की रुचि भाषा को सीखने में बनी रहे।
(iv) भाषा अधिगम द्वितीय और तृतीय भाषा के सीखने से संबद्ध है।
भाषा अर्जन
जब किसी भाषा को बिना किसी व्यवस्थित शिक्षण प्रणाली के स्वाभाविक रूप से सीखा जाता है, वह भाषा अर्जन कहलाता है। भाषा अर्जन की कुछ विशेषताएँ निम्नवत हैं-
(i) भाषा अर्जन मानव मस्तिष्क की जन्मजात क्षमता द्वारा होता है।
(ii) अधिगमकर्ता किसी भाषा का अर्जन उसके सहज वातावरण से करता है।
(iii) भाषा अर्जन अचेतन प्रक्रिया है। इसके लिए कोई विशेष प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है।
(iv) भाषा अर्जन यदि परिचित परिस्थितियों में हो तो और अधिक प्रभावशाली होता है।
(v) भाषा अर्जन मातृभाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा से संबद्ध रहता है।
- विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न**
1. **भाषा-शिक्षण की 'प्रत्यक्ष विधि' में -**
(a) मातृभाषा का निरर्थक हस्तक्षेप होता है
(b) भाषा-अर्जन की स्वाभाविक स्थिति का निर्माण होता है
(c) अतिरिक्त शिक्षण सामग्री की कोई आवश्यकता नहीं
(d) भाषा की विविध संरचनाओं के लेखन हेतु अभ्यास पर बल दिया जाता है
CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013
उत्तर : (b)
2. **चॉम्स्की के अनुसार.....के कारण बच्चे भाषा सीखते हैं।**
(a) भाषायी समाज
(b) भाषा-अर्जन क्षमता
(c) भाषा-आकलन क्षमता
(d) व्याकरणिक नियमों की जानकारी से ही
CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013
उत्तर : (b)
3. **द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी सीखने का मुख्य उद्देश्य है-**
(a) मानक हिन्दी लिखने में निपुणता प्राप्त करना
(b) हिन्दी और अपनी मातृभाषा के अन्तर को कंठस्थ करना
(c) हिन्दी के व्याकरण पर अधिकार प्राप्त करना
(d) दैनिक जीवन में हिन्दी में समझने तथा बोलने की क्षमता का विकास करना
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012
उत्तर : (d)
4. **सुहेल एक साल पहले असोम से पंजाब आया है। वह हिन्दी भाषा का प्रयोग करते समय त्रुटियाँ करता है। एक शिक्षक के रूप में आप किस कथन को सही मानेंगे?**
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012
(a) उसे रोज एक घण्टा हिन्दी भाषा के शब्द बोलने का अभ्यास कराना चाहिए
(b) सुहेल को भाषा प्रयोग के अधिकाधिक अवसर व प्रोत्साहन देना चाहिए
(c) सुहेल को बार-बार उसकी त्रुटियों के बारे में बताना चाहिए
(d) सुहेल की मातृभाषा का प्रभाव लक्ष्य भाषा पर नहीं पड़ने देना चाहिए
उत्तर : (b)
5. **भाषा-अर्जन-**
(a) शिक्षक की आवश्यक उपस्थिति की माँग करता है
(b) भाषा की कक्षा में ही सम्भव है
(c) सहज, स्वाभाविक होता है
(d) प्रयासपूर्ण होता है
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012
उत्तर : (c)
6. **भाषा के सन्दर्भ में स्कूली जीवन का यह उच्च प्राथमिक चरण, और बोध के विकास की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है।**
(a) साहित्य, सराहना, सामाजिक
(b) सौन्दर्य बोध, साहित्य बोध, सामाजिक-राजनैतिक
(c) भाषा, साहित्य, ऐतिहासिक
(d) साहित्य बोध, सराहना बोध, ऐतिहासिक
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014
उत्तर : (b)
7. **कक्षा आठ के बच्चों के लिए साहित्य का चयन करते समय आपके लिए क्या जानना सर्वाधिक जरूरी है?**
(a) बच्चों के भाषा-प्रयोग का स्तर
(b) अच्छे साहित्य के प्रकाशक, लेखक
(c) बच्चों की भाषिक पृष्ठभूमि
(d) बच्चों की मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ और भाषा-प्रयोग की क्षमता
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014
उत्तर : (d)
8. **हमारे अनुभवों को आकार देने में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसका शैक्षिक निहितार्थ यह है कि भाषा की कक्षा में -**
(a) डायरी-लेखन पर जोर दिया जाए ताकि लेखन परिपक्व बन सके
(b) बच्चों को विविध सन्दर्भों में अनुभव करने, विविध अनुभवों से स्वयं को जोड़ने के अवसर दिए जाएँ
(c) सदैव अनुभवों पर बातचीत की जाए
(d) अनुभवों को लेखन-कार्य बढ़ाया जाए
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014
उत्तर : (b)
9. **प्राथमिक स्तर पर बच्चों को भाषा सिखाने का सर्वोपरि उद्देश्य है -**
(a) मुहावरे-लोकोक्तियों का ज्ञान प्राप्त करना
(b) कहानी-कविताओं को दोहराने की कुशलता का विकास करना
(c) तेज प्रवाह के साथ पढ़ने की योग्यता का विकास करना
(d) अपनी बात को दूसरों के समक्ष अभिव्यक्ति करने की कुशलता का विकास करना
CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014
उत्तर : (d)

10. भाषा सीखने का व्यवहारवादी दृष्टिकोण.....पर बल देता है।
 (a) अनुकरण (b) रचनात्मकता
 (c) भाषा-प्रयोग (d) अभिव्यक्ति

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (a)

11. भाषा अर्जित करने की प्रक्रिया में किसका महत्व सर्वाधिक है?
 (a) भाषा-प्रयोगशाला का (b) पाठ्य-पुस्तक का
 (c) समाज का (d) भाषा-कक्षा का

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014

उत्तर : (c)

12. भाषा अर्जित करने में वाङ्मोत्सकी ने किस पर सबसे अधिक बल दिया है?
 (a) समाज में होने वाले भाषा-प्रयोगों पर
 (b) परिवार में बोली जाने वाली भाषा पर
 (c) कक्षा में बोली जाने वाली भाषा पर
 (d) भाषा की पाठ्य-पुस्तक पर

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014

उत्तर : (a)

13. प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों के भाषा-शिक्षण के सन्दर्भ में कौन-सा कथन सही है?
 (a) सतत् रूप से की जाने वाली टिप्पणियाँ एवं अनवरत अभ्यास भाषा सीखने में रुचि उत्पन्न करते हैं
 (b) बच्चे समृद्ध भाषिक परिवेश में सहज रूप से स्वतः भाषा में सुधार कर सकते हैं
 (c) बच्चों की भाषाई संकल्पनाओं और विद्यालय के भाषाई परिवेश में विरोधाभासी भाषा सीखने में मदद करता है
 (d) बच्चे भाषा की जटिल और समृद्ध संरचनाओं का ज्ञान विद्यालय में ही अर्जित करते हैं

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (d)

14. भाषा अर्जित करने की स्थिति में बच्चे -
 (a) भाषिक नियमों को स्वाभाविक रूप से रटते हैं
 (b) कभी कोई त्रुटि नहीं करते
 (c) अधिकतर त्रुटियाँ ही करते हैं
 (d) भाषिक नियमों को स्वाभाविक रूप से ग्रहण करते हैं

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (d)

15. उच्च प्राथमिक स्तर पर हिन्दी भाषा-शिक्षण के लिए क्या अपेक्षित नहीं है?
 (a) स्वाध्यायशीलता का विकास
 (b) सुनकर शब्दशः दोहराने की क्षमता का विकास
 (c) भाषा-प्रयोग की क्षमता का विकास
 (d) चिन्तनशीलता का विकास

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015

उत्तर : (b)

16. सुलेखा जब-तब बच्चों के साथ बातचीत करती रहती है। वह -
 (a) बच्चों को वाचाल बनाना चाहती है।
 (b) सदैव बच्चों की परीक्षा ले रही है।
 (c) समय नष्ट कर रही है।
 (d) बच्चों को भाषा अर्जित करने के लिए परिवेश दे रही है।

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012

उत्तर : (d)

17. सुमन बचपन से ही गुजराती बोल-समझ लेती है। वह कभी विद्यालय नहीं जाती है। यह उदाहरण है -

- (a) भाषा-अर्जन का (b) सुमन की प्रतिभा का
 (c) भाषा सीखने का (d) भाषा में पिछड़ेपन का

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012

उत्तर : (a)

18. भाषा-अर्जन और भाषा-अधिगम में महत्वपूर्ण अन्तर है—

- (a) भाषा का कठिनाई-स्तर
 (b) भाषा की पाठ्य-पुस्तक
 (c) भाषा सीखने-सिखाने की पद्धति
 (d) भाषिक परिवेश की उपलब्धता

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012

उत्तर : (d)

19. भाषा-शिक्षण के संदर्भ में 'बहुभाषी कक्षा' से तात्पर्य है कक्षा में—

- (a) भिन्न-भिन्न भाषाओं में कहानी-कविता के चार्ट आदि की उपलब्धता
 (b) कम-से-कम दो भाषाओं में शब्दकोश की आवश्यकता
 (c) अधिकाधिक भाषाओं की पुस्तकों की उपलब्धता
 (d) सभी बच्चों को अपनी-अपनी भाषा में बोलने के अवसरों की उपलब्धता

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016

उत्तर : (d)

20. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन प्राथमिक स्तर पर भाषा सीखने के एक महत्वपूर्ण उद्देश्य की ओर संकेत करता है?

- (a) गणित के पाठ्यक्रम के अनुरूप हिन्दी में संख्याएँ जानना
 (b) संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और वचन की शुद्ध पहचान करना
 (c) भाषण, वाद-विवाद और कविता-पाठ में भाग लेना
 (d) भाषा को अपने परिवेश एवं अनुभव को समझने का माध्यम मानना

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016

उत्तर : (d)

21. भाषा सीखने में शब्दकोश का बहुत महत्व है। निम्नलिखित में से शब्दकोश का सबसे कम महत्वपूर्ण उपयोग कौन-सा होगा?

- (a) अक्षरों/वर्णों का क्रम जानना
 (b) किसी शब्द का अर्थ जानना
 (c) किसी शब्द का समानार्थी शब्द जानना
 (d) किसी शब्द की सही वर्तनी जानना

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016

उत्तर : (a)

22. जब बच्चे भाषा से भिन्न कोई विषय पढ़ते हैं, तो वे—

- (a) साथ-साथ भाषा भी सीखते हैं
 (b) साथ-साथ परीक्षा की तैयारी भी करते हैं
 (c) केवल अवधारणा ही बना पाते हैं
 (d) केवल विषय ही पढ़ते हैं

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016

उत्तर : (a)

23. भाषा विकास के सम्बन्ध में कौन-सा कथन सही नहीं है?

- (a) भाषा विकास व्यक्ति निरपेक्ष है।
 (b) बड़ों का सम्पर्क भाषा विकास की गति को तीव्र कर देता है।
 (c) भाषा विकास व्यक्ति सापेक्ष है।
 (d) प्रारम्भिक भाषायी परिवेश की समृद्धता भाषायी विकास में सहायक होता है।

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015

उत्तर : (a)

24. “बच्चे अपने समाज-सांस्कृतिक परिवेश से अर्थ ग्रहण करते हैं।” यह विचार है –
 (a) पावलोव का (b) चॉम्स्की का
 (c) स्किनर का (d) वाइगोत्स्की का
Bihar TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011
 उत्तर : (d)
25. निम्नांकित में कौन-सा कथन सही है?
 अगर कोई बच्चा गलती कर रहा है, तो वह—
 (a) भाषा सीख रहा है
 (b) भाषा को भ्रष्ट कर रहा है
 (c) भाषा सीख ही नहीं रहा है
 (d) तुरन्त रोकने के लायक है
Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011
 उत्तर : (a)
26. मानव और पशुओं की भाषा सीखने की क्षमता के अध्ययन सम्बन्धी प्रयोग हुए अधिकतर—
 (a) चूहे व बिल्लियों पर (b) चिम्पेंजी और वानरों पर
 (c) खरगोश व मेमने पर (d) कुत्ते और सियारों पर
Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011
 उत्तर : (b)
27. एक भाषा-शिक्षक के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।
 (a) भाषा का आकलन
 (b) बच्चों को भाषा-प्रयोग के अवसर उपलब्ध कराना।
 (c) भाषा की त्रुटियों के प्रति कठोर रवैया अपनाना
 (d) भाषा की पाठ्य-पुस्तक
CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012
 उत्तर : (b)
28. एल. एस. वाइगोत्स्की के अनुसार—
 (a) भाषा चिन्तन को निर्धारित करती है
 (b) चिन्तन भाषा को निर्धारित करती है
 (c) भाषा एवं चिन्तन एक-दूसरे से स्वतन्त्र रूप से विकसित होते हैं
 (d) भाषा एक अर्जित योग्यता है
CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011
 उत्तर : (d)
29. किस तरह के बच्चों को हिन्दी भाषा सीखने में अधिक कठिनाई का सामना करना पड़ेगा?
 (a) जिनकी मातृभाषा मानक हिन्दी नहीं है
 (b) जिनकी मातृभाषा सरल है
 (c) जिनकी मातृभाषा हिन्दी से भिन्न है
 (d) जिनकी मातृभाषा हिन्दी के समान है
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016
 उत्तर : (c)
30. भाषा सीखने में होने वाली त्रुटियों के संदर्भ में कौन-सा कथन सत्य नहीं है?
 (a) त्रुटियाँ सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग है।
 (b) त्रुटियाँ अस्थायी होती हैं।
 (c) भाषा सीखने में होने वाली त्रुटियाँ स्थायी होती हैं।
 (d) भाषा सीखने में होने वाली त्रुटियाँ यह समझने में मदद करती हैं कि बच्चे के मस्तिष्क में क्या चल रहा है।
CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015
 उत्तर : (c)
31. जब भाषा सीखने की प्रक्रिया बच्चे के दैनिक जीवन की जरूरतों से जुड़ी हो, तो –
 (a) भाषा सीखना सार्थक होता है
 (b) भाषा सीखना निरर्थक होता है
 (c) भाषा सीखना कठिन हो जाता है
 (d) बच्चों को विशुद्ध मनोरंजन की प्राप्ति होती है
Bihar TET - Ist Paper (I-V) 2011
 उत्तर : (a)
32. हिन्दी की कक्षा में प्रायः हिन्दीतर-भाषी बच्चे हिन्दी सीखने में अनेक कठिनाइयों का सामना करते हैं, क्योंकि –
 (a) वे मन लगाकर हिन्दी नहीं सीखते।
 (b) हिन्दी सीखने के प्रति उनमें अरुचि होती है
 (c) हिन्दी बहुत कठिन भाषा है।
 (d) प्रायः हिन्दी और उनकी मातृभाषा की संरचना में अंतर होता है।
CTET - Ist Paper (I-V) June 2011
 उत्तर : (d)
33. द्वितीय भाषा सीखने के सन्दर्भ में सबसे कम महत्वपूर्ण है—
 (a) अभिभावक से प्राप्त प्रोत्साहन (b) भाषा की परीक्षा
 (c) अभिवृत्ति (d) शिक्षक का रवैया
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016
 उत्तर : (a)
34. चॉम्स्की के अनुसार कौन-सा कथन सही है?
 (a) बच्चों में भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता नहीं होती।
 (b) बच्चों में भाषा सीखने की क्षमताएँ बहुत सीमित होती हैं।
 (c) बच्चों को व्याकरण सिखाना जरूरी है
 (d) बच्चों में भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता होती है।
CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014
 उत्तर : (d)
35. भाषा सीखने में मातृ भाषा का व्याघात—
 (a) आंशिक रूप से होता है (b) पूर्ण रूप से होता है
 (c) नहीं होता है (d) होता है
CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015
 उत्तर : (a)
36. सुहैल की मातृभाषा भोजपुरी है। वह हिन्दी वाक्य लिखते समय अक्सर ‘ने’ का सही प्रयोग नहीं करता, इसका सम्भावित कारण क्या है?
 (a) सुहैल हिन्दी भाषा नहीं जानता
 (b) वह लापरवाह है
 (c) वह ध्यान से नहीं लिखता
 (d) यह उसकी मातृभाषा का प्रभाव है, जहाँ बोलते समय अक्सर आवश्यक स्थितियों में ‘ने’ का प्रयोग नहीं किया जाता
Bihar TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011
 उत्तर : (d)
37. भाषा सीखने में जो त्रुटियाँ होती हैं—
 (a) उन्हें कठोरता से लेना चाहिए
 (b) उन्हें जल्दी से दूर किया जाना चाहिए
 (c) वे बच्चों की त्रुटियों की ओर संकेत करती हैं
 (d) वे सीखने की प्रक्रिया और स्वाभाविक हिस्सा होती हैं जो समय के साथ दूर होने लगती हैं।
CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011
 उत्तर : (d)
38. बहुभाषिकता—
 (a) भाषायी समृद्धि को खतरे में डालती है
 (b) भाषा सीखने में बाधा उत्पन्न करती है
 (c) भाषा सीखने में एक महत्वपूर्ण संसाधन है
 (d) भाषा सीखने में बहुत बड़ी बाधा है
CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012
 उत्तर : (c)
39. उच्च प्राथमिक स्तर पर यह जरूरी है कि बच्चे –
 (a) भाषा के आकलन के लिए की जाने वाली सभी गतिविधियों में समान रूप से हिस्सा लें
 (b) भाषा का अतिरिक्त अभ्यास करें और परियोजना कार्य में इण्टरनेट का प्रयोग करें
 (c) समाचार-पत्र में छपी किसी खबर, लेख या कही गई बात का निहितार्थ समझ सकें
 (d) अपनी पाठ्य-पुस्तक के सभी पाठों का अभ्यास कर सकें
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014
 उत्तर : (c)

40. भाषा सीखने का अर्थ उस भाषा की.....सीखना भी है, क्योंकि भाषा किसी भी.....का अभिन्न हिस्सा होती है।
(a) ऐतिहासिकता, इतिहास (b) संस्कृति, संस्कृति
(c) बारीकी, व्याकरण (d) नियमबद्धता, व्याकरण
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014
उत्तर : (b)
41. उच्च प्राथमिक स्तर पर भाषा सीखने को प्रभावित करता है—
(a) बच्चों द्वारा किया जाने वाला सुलेख
(b) शिक्षक का भाषा-शिक्षण सम्बन्धी रवैया
(c) शिक्षक द्वारा ली गई लिखित परीक्षा
(d) भाषा सम्बन्धी गृहकार्य
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015
उत्तर : (b)
42. भाषा-अर्जन और भाषा-अधिगम के संदर्भ में कौन-सा कथन सही नहीं है?
(a) भाषा-अर्जन में विभिन्न संकल्पनाएँ मातृभाषा में बनती हैं
(b) भाषा-अधिगम प्रयासपूर्ण होता है
(c) भाषा-अर्जन सहज और स्वाभाविक होता है जबकि भाषा-अधिगम प्रयासपूर्ण होता है
(d) सांस्कृतिक विभिन्नता भाषा-अर्जन और भाषा अधिगम को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक है
CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012
उत्तर : (c)
43. भाषा-अर्जन में बच्चे भाषा को—
(a) सहज और स्वाभाविक रूप से सीखते हैं
(b) अभ्यास और यान्त्रिकता से सीखते हैं
(c) स्वाभाविक और प्रयासपूर्ण तरीके से सीखते हैं
(d) सहजता और अभ्यास से सीखते हैं
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015
उत्तर : (a)
44. भाषा-अर्जन में महत्वपूर्ण है -
(a) भाषा का शिक्षक (b) भाषा के विभिन्न रूपों का प्रयोग
(c) भाषा का व्याकरण (d) पाठ्य-पुस्तक
CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012
उत्तर : (b)
45. भाषा सीखने-सिखाने के संदर्भ में गृहकार्य का उद्देश्य होता है -
(a) सीखने को विस्तार देना
(b) अभिभावकों को प्रसन्न करना
(c) बच्चों को कार्य में व्यस्त रखना
(d) कॉपियाँ भरवाना
CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015
उत्तर : (a)
46. किसी रचना के बारे में स्वतन्त्र राय बनाने का आत्मविश्वास विकसित करने के लिए आवश्यक है—
(a) कवि और कविता बोध
(b) साहित्य बोध और ऐतिहासिक बोध
(c) साहित्य बोध और छन्द बोध
(d) भाषा बोध और साहित्य बोध
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2015
उत्तर : (d)
47. प्रिन्ट/मुद्रित अथवा लिखित भाषित परिवेश—
(a) भाषा सीखने में सहायक नहीं है
(b) भाषा सीखने में सहायक है
(c) समय और ऊर्जा की बचत है
(d) बच्चों का मनोरंजन करता है
Bihar TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011
उत्तर : (a)
48. तन्वी जब भी प्रश्न का उत्तर देने के लिए खड़ी होती है, वह बोलने में हकलाने लगती है—इसका कारण है -
(a) उसे बोलना नहीं आता
(b) आत्मविश्वास के साथ बोलने की योग्यता नहीं रखती
(c) औपचारिक स्थितियों में बोलने में वह मनोवैज्ञानिक दबाव महसूस करती है
(d) 'b' और 'c' दोनों
Bihar TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011
उत्तर : (d)
49. भाषा अर्जन और भाषा अधिगम में क्या अन्तर होता है?
(a) सहज एवं स्वाभाविक रूप से परिवेश के माध्यम से भाषा अर्जित की जाती है जबकि भाषा अधिगम प्रयासपूर्ण होता है
(b) भाषा अर्जन में अर्थ भी समाज से स्वतः ही प्राप्त होते हैं जबकि भाषा अधिगम में कई बार अर्थ सीखने पड़ते हैं
(c) भाषा अर्जन में मुख्यतः सुनना, बोलना कौशल शामिल है जबकि भाषा अधिगम में अनेक बार सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना- चारों कौशल सीखने पड़ते हैं
(d) उपरोक्त सभी
Bihar TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011
उत्तर : (d)
50. बच्चों में भाषा सीखने की क्षमता एवं समझ विकसित हो इसके लिए आवश्यक है कि—
(a) जिस भाषायी शैली में वक्ता व बच्चा सहज हो, उसी का प्रयोग करना चाहिए
(b) जिस भाषायी शैली में वक्ता, सहज हो, उसी का प्रयोग करना चाहिए
(c) जिस भाषायी शैली में वक्ता असहज हो व बच्चा सहज हो, उसी का प्रयोग करना चाहिए
(d) जिस भाषायी शैली में वक्ता सहज हो व बच्चा असहज हो, उसी को प्रयोग करना चाहिए
Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011
उत्तर : (a)
51. विद्यालय के बाहर का जीवन और वहाँ प्राप्त ज्ञान एवं अनुभव भाषा सीखने के लिए आवश्यक प्रेरणा देते हैं, क्योंकि—
(a) मानक वर्तनी का सम्यक् ज्ञान मिलता है
(b) लेखन की विभिन्न शैलियों का परिचय मिलता है
(c) समृद्ध भाषिक परिवेश मिलता है
(d) इससे व्याकरणिक नियमों की जानकारी प्राप्त होती है
CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015
उत्तर : (c)
52. पढ़ना सीखने की प्रक्रिया में किसकी भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है?
(a) बाल साहित्य के सार्थक प्रयोग की
(b) पाठ्य-पुस्तक की
(c) भाषा परीक्षाओं की
(d) भाषा प्रयोगशाला की
CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014
उत्तर : (a)
53. भाषा सीखने-सिखाने के सम्बन्ध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(a) बच्चे स्कूल आकर ही भाषा सीखते हैं।
(b) बच्चे अपने परिवार से ही भाषा सीखते हैं।
(c) बच्चे स्कूल में मानक भाषा का ही प्रयोग करते हैं।

(d) बच्चे स्कूल आने से पूर्व ही भाषायी पूँजी से लैस होते हैं।

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014

उत्तर : (d)

54. प्राथमिक स्तर पर भाषा सिखाने की सर्वश्रेष्ठ विधि है-

- (a) बच्चों को कहानी सुनाना
- (b) बच्चों को पाठ्य-पुस्तक पर आधारित वीडियो कार्यक्रम दिखाना
- (c) बच्चों को भाषा का प्रयोग करने के विविध अवसर देना
- (d) बच्चों के साथ कविता गाना

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014

उत्तर : (c)

55. भाषा सीखने-सिखाने का उद्देश्य है -

- (a) दूसरों की बात समझना सीखना
- (b) अपनी बात की पुष्टि के लिए तर्क देना
- (c) विभिन्न स्थितियों में भाषा का प्रभावी प्रयोग करना।
- (d) अपनी बात कहना सीखना

CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012

उत्तर : (c)

56. "बच्चों में भाषा सीखने की जन्मजात योग्यता होती है।" यह विचार है -

- (a) पावलोव का
- (b) चॉम्सकी का
- (c) वाइगोत्स्की का
- (d) पाणिनी का

Bihar TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

उत्तर : (b)

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. जीन पियाजे के शोध और दर्शन के अनुसार, शुरुआती जीवनकाल में बच्चों के अधिगम का आधार होता/होती है।
 - (a) कला
 - (b) अभिव्यक्ति
 - (c) नाटक
 - (d) आनंद
2. निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार (RTE) अधिनियम, 2009 की आयु के बीच के बच्चों पर लागू होता है।
 - (a) 14 - 35 साल
 - (b) 0 - 6 साल
 - (c) 6 - 14 साल
 - (d) 6 - 18 साल
3. नई शिक्षा नीति, 2016 के मसौदे में शिक्षकों के लिए स्व-शिक्षण ऑनलाइन पाठ्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
 - (a) निष्पक्षता और समानता
 - (b) लिंग संवेदनशीलता
 - (c) बाल अधिकार
 - (d) लड़कियों की शिक्षा
4. एक ही जगह पर पले-बढ़े बच्चों की तुलना में, बचपन विभिन्न जगहों पर बिताने वाला बच्चा आमतौर पर निम्न में सक्षम होता है-
 - (a) शांत रहने
 - (b) रचनात्मक सोच विकसित करने
 - (c) गहन सोच विकसित करने
 - (d) लोगों से जुड़ने
5. बुद्धिमत्ता और रचनात्मकता के बीच संबंध के बारे में से कौन सा कथन सही है?
 - (a) बुद्धिमत्ता और रचनात्मकता मनुष्य के व्यक्तित्व के स्वतंत्र पहलू होते हैं।
 - (b) बुद्धिमत्ता और रचनात्मकता केवल वातावरणीय कारकों से अर्जित की जाती है।
 - (c) बुद्धिमत्ता और रचनात्मकता में कोई अंतर नहीं होता है।
 - (d) रचनात्मक की अभिव्यक्ति के लिए बुद्धिमत्ता की आवश्यकता नहीं होती है।
6. विद्यालयों में कितनी भाषाएँ पढ़ाई जायें?
 - (a) केवल मातृभाषा
 - (b) मातृभाषा व राष्ट्रभाषा
 - (c) मातृभाषा, राष्ट्रभाषा व एक विदेशी भाषा
 - (d) मातृभाषा, राष्ट्रभाषा, विदेशी भाषा व एक प्राचीन भाषा
7. छात्रों को हिन्दी साहित्य के इतिहास की रूपरेखा से परिचित कराना किस प्रकार का उद्देश्य है?
 - (a) ज्ञानात्मक
 - (b) सृजनात्मक
 - (c) कौशलात्मक
 - (d) रसात्मक
8. निम्नलिखित में से कौन-सा शिक्षण सूत्र नहीं है?
 - (a) मूर्त से अमूर्त
 - (b) ज्ञात से अज्ञात
 - (c) विश्लेषण से संश्लेषण
 - (d) अनुकरण से अभ्यास
9. फ्रोबेल के अनुसार लेखन कब प्रारम्भ करना चाहिए?
 - (a) पढ़ने की क्रिया के बाद
 - (b) पढ़ने की क्रिया से पूर्व
 - (c) प्रतीकों की पहचान की कला के पूर्व
 - (d) पढ़ना-लिखना साथ चलना चाहिए
10.को अनुप्रेरित शिक्षण के एक संकेत के रूप में विवेचित किया जाता है
 - (a) कक्षा में अधिकतम उपस्थिति
 - (b) शिक्षक द्वारा दिया गया उपचारात्मक कार्य
 - (c) विद्यार्थियों द्वारा प्रश्न पूछना
 - (d) कक्षा में पूर्ण नीरसता
11. ब्लूम के वर्गीकरण के आधार पर उद्देश्य आधारित प्रश्नों के निर्माण में कौन-सा विकल्प असंगत है?
 - (a) विश्लेषण
 - (b) मूल्यांकन
 - (c) आत्मानुभूति
 - (d) अनुप्रयोग
12. निम्न कक्षाओं में शिक्षण की खेल विधि आधारित है
 - (a) शारीरिक शिक्षा कार्यक्रमों के सिद्धान्त पर
 - (b) शिक्षण की विधियों के सिद्धान्त पर
 - (c) विकास एवं वृद्धि के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त पर
 - (d) शिक्षण के सामाजिक सिद्धान्तों पर
13. आधुनिक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका है-
 - (a) सीखने हेतु एक अच्छे सुलभकर्ता की
 - (b) बच्चों को गणित, विज्ञान और भाषा सिखाने की
 - (c) बच्चों को मूल्य आधारित शिक्षा देने की
 - (d) बच्चों को सभी कुछ पढ़ाने की
14. सह-शैक्षणिक क्षेत्रों में निष्पादन के आधार पर शैक्षणिक क्षेत्रों में निष्पादन के स्तर को बढ़ाने का औचित्य स्थापन किस आधार पर किया जा सकता है
 - (a) यह हाथ से किए जाने वाले श्रम के प्रति सम्मान विकसित करता है।
 - (b) यह वैयक्तिक भिन्नताओं को संतुष्ट करता है
 - (c) यह हाशियाकृत विद्यार्थियों के लिए प्रतिपूरक भेदभाव की नीति का अनुगमन करता है
 - (d) यह सार्वभौमिक धारण (retention) को सुनिश्चित करता है।

15. एक बालक अधिक सीखता है, यदि उसे
 (a) पाठ्यपुस्तक के माध्यम से पढ़ाया जाये
 (b) कम्प्यूटर से पढ़ाया जाये
 (c) व्याख्यान विधि से पढ़ाया जाये
 (d) क्रिया विधि से पढ़ाया जाये
16. किस मनोवैज्ञानिक के अनुसार, “सीखने का मतलब ज्ञान निर्माण करना है”?
 (a) स्किनर (b) पियाजे
 (c) थॉर्नडाइक (d) लेव वाइगोत्सकी
17. विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों की सीखने सम्बन्धी समस्याओं को संबोधित करने का सबसे बेहतर तरीका है
 (a) महँगी और चमकदार सहायक सामग्री का प्रयोग करना
 (b) सरल और रोचक पाठ्य-पुस्तकों को प्रयोग करना
 (c) कहानी-कथन पद्धति का प्रयोग करना
 (d) क्षमता के अनुरूप विभिन्न शिक्षण-पद्धतियों का प्रयोग करना
18. एक शिक्षिका अपनी प्राथमिक कक्षा में प्रभावी अधिगम को बढ़ा सकती है—
 (a) अधिगम में छोटी-छोटी उपलब्धियों के लिए पुरस्कार देकर
 (b) ड्रिल और अभ्यास के द्वारा
 (c) अपने विद्यार्थियों में प्रतियोगिता को प्रोत्साहन देकर
 (d) विषयवस्तु को विद्यार्थियों के जीवन के साथ संबंधित करके
19. किसी प्रगतिशील कक्षा की व्यवस्था में शिक्षक एक ऐसे वातावरण को उपलब्ध कराकर अधिगम को सुगम बनाता है, जो—
 (a) खोज को प्रोत्साहन देता है
 (b) नियामक है
 (c) समावेशन को हतोत्साहित करता है
 (d) आवृत्ति को बढ़ावा देता है
20. सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका होनी चाहिए—
 (a) सुगमकर्ता की (b) अनुदेशनकर्ता की
 (c) प्रशिक्षक की (d) नियंत्रणकर्ता की
21. “विविध प्रकार की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बच्चों से युक्त कक्षा सभी विद्यार्थियों के अधिगम अनुभवों को बढ़ाती है।” यह कथन है—
 (a) गलत, क्योंकि यह बच्चों के लिए दुविधा उत्पन्न कर सकता है और वे स्वयं को अलग-अलग महसूस कर सकते हैं।
 (b) सही, क्योंकि बच्चे अपने साथियों से अनेक कौशल सीखते हैं।
 (c) सही, क्योंकि इससे कक्षा अधिक श्रेणीबद्ध दिखाई देती है।
 (d) गलत, क्योंकि यह अनावश्यक स्पर्धा की ओर ले जाता है।
22. किसने कहा था कि शिक्षण कला कभी भी दर्शनशास्त्र के बिना अपने आप में शुचिता प्राप्त नहीं कर पाएगी?
 (a) एम.के. गांधी (b) फ्रिण्ट
 (c) जॉन डेवी (d) गौतम बुद्ध
23. शिक्षण से अधिगम पर बल देने वाला परिवर्तन हो सकता है—
 (a) रटने को प्रोत्साहित करके
 (b) अग्र शिक्षण को तकनीक अपनाकर
 (c) परीक्षा परिणामों पर केन्द्रित होकर
 (d) बाल-केन्द्र शिक्षा-पद्धति अपनाकर
24. “एक छोटा बच्चा भूतकाल में समान परिस्थिति में उसके द्वारा की गई प्रतिक्रिया के आधार पर नवीन परिस्थिति पर प्रतिक्रिया देता है।” यदि संबंधित है—
 (a) अधिगम को “समरूपता का नियम”
 (b) अधिगम का “प्रभाव का नियम”
 (c) अधिगम प्रक्रिया का “अभिवृत्ति का नियम”
 (d) अधिगम का “तत्परता का नियम”
25. अधिगमन प्रक्रिया में अभिप्रेरणा —
 (a) शिक्षार्थी की स्मरणशक्ति को तीक्ष्ण करती है
 (b) पुराने अधिगम से नवीन अधिगम को भिन्न करता है
 (c) शिक्षार्थी को एक ही दिशा में विचार करवाती है
 (d) तरुण शिक्षार्थियों के बीच अधिगम को रुचिकर बनाती है
26. अधिगम को बेहतर बनाया जा सकता है, यदि—
 (a) वास्तविक जगत की परिस्थितियों को कक्षा में लाया जाए, जिसमें छात्र एक दूसरे से परस्पर संवाद करें तथा शिक्षक इसे सुगम बनाए
 (b) कक्षा में अधिक से अधिक सहायक सामग्री का उपयोग किया जाता है
 (c) शिक्षक अलग किस्मों के व्याख्यान एवं स्पष्टीकरणों का उपयोग किया जाता है
 (d) कक्षा में सर्वाधिक जाँच- परीक्षाओं पर अपेक्षित ध्यान दिया जाता है
27. ‘अधिगम का अंतर्दृष्टि सिद्धान्त’ प्रतिपादित किया गया—
 (a) ‘गेस्टाल्ट’ सिद्धान्त वादियों द्वारा
 (b) पावलोव द्वारा
 (c) जेन पियाजे
 (d) वायगोत्सकी
28. छोटे बच्चों की अधिगम प्रक्रिया में अभिभावकों को भूमिका निभानी चाहिए—
 (a) नकारात्मक (b) सकारात्मक
 (c) सहानुभूतिपूर्ण (d) तटस्थ
29. छात्रों की अधिगम कठिनाइयों को हल करने के लिए, विशेषकर प्राथमिक स्तर पर, उपयोग में लाया जाने वाला श्रेष्ठ तरीका है—
 (a) अपंगता हेतु उपयुक्त शिक्षण पद्धतियों के प्रकार
 (b) महँगा एवं चमकदार सामग्री का सहयोग
 (c) सरल एवं रुचिकर पाठ्यपुस्तक
 (d) कहानी सुनाने की पद्धति
30. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन अधिगम की प्रक्रिया की विशेषता नहीं माना जा सकता है?
 (a) अधिगम लक्ष्योन्मुखी होता है
 (b) न सीखना भी एक अधिगम प्रक्रिया है
 (c) शैक्षिक संस्थान ही मात्र ऐसे स्थान हैं जहाँ पर अधिगम होता है
 (d) अधिगम एक व्यापक प्रक्रिया है

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (c) | 2. (c) | 3. (c) | 4. (d) | 5. (a) | 6. (d) | 7. (a) | 8. (d) | 9. (a) | 10. (c) |
| 11. (c) | 12. (c) | 13. (a) | 14. (b) | 15. (d) | 16. (b) | 17. (d) | 18. (d) | 19. (a) | 20. (a) |
| 21. (b) | 22. (b) | 23. (d) | 24. (a) | 25. (d) | 26. (a) | 27. (a) | 28. (b) | 29. (d) | 30. (c) |

भाषा अध्यापन के सिद्धान्त

किसी भी कौशल के विकास में शिक्षण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षण की सफलता के लिए उचित योजना की आवश्यकता होती है। यह शिक्षण योजना छात्रों की रुचियों एवं योग्यताओं को ध्यान में रखकर बनायी जाती है। यह सत्य है कि प्रत्येक विषय की अपनी विशिष्टता होती है। पाठ्य विधियों का चयन इसी के अनुरूप करना होता है। भाषा शिक्षण की कुछ विधियाँ तो अन्य विषयों के शिक्षण से मेल खाती हैं और कुछ भिन्न एवं विशिष्ट होती हैं, जिनका उपयोग केवल भाषा शिक्षण में ही सम्भव है अन्य विषयों के शिक्षण में नहीं/भाषा-शिक्षण से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण शिक्षण सिद्धान्त हैं, जिनका विवरण निम्नानुसार है-

1. **भाषा का सिद्धान्त-** भाषा ही वह मात्र शक्ति है जो मनुष्य एवं पशु में भेद प्रकट करती है। भाषा के अभाव में मनुष्य और पशु में कोई अन्तर नहीं होगा। भाषा अर्जित सम्पत्ति है किन्तु इसे सीखने की शक्ति प्रकृति द्वारा प्राप्त है। मूल भाषा मौखिक भाषा है परन्तु इसका स्वरूप अस्थायी है। सुनना और बोलना मौखिक भाषा के दो प्रमुख कौशल हैं। विज्ञान एवं तकनीकी ने मौखिक भाषा को भी स्थायी स्वरूप प्रदान किया है। भाषा का लिखित रूप स्थायी माना जाता है। पढ़ना और लिखना लिखित भाषा के प्रमुख कौशल हैं। लिखित भाषा के लिए प्रशिक्षण आवश्यक है।
2. **क्रियाशीलता का सिद्धान्त-** क्रियाशीलता ही सजीवता की पहचान है जबकि क्रिया विहीनता निष्प्राणता का। जो क्रियाशील है वह निष्क्रिय नहीं रह सकता और जो सक्रिय है निष्पादन वही करता है। अधिगम ऐसी ही चेतन प्रक्रिया का परिणाम है। भाषा अधिगम में सक्रियता एवं तत्परता दोनों ही की आवश्यकता होती है। कक्षा में शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों के पूर्ण सक्रियता से ही भाषा अधिगम सम्भव है। प्रश्नोत्तर, मौखिक, वाचन, तत्परता के माध्यम से छात्रों में अधिकतम क्रियाशीलता प्राप्त हो सकती है।
3. **अभ्यास का सिद्धान्त-** उचित समयान्तराल में किया गया अभ्यास अधिगम को परिपक्वावस्था में पहुँचाता है। कोमल रस्सी के बार-बार घर्षण से पथर पर भी निशान बनने का दृष्टान्त प्रसिद्ध है। थार्नडाइक ने अधिगम के लिए अभ्यास का नियम दिया है। पहाड़ा, टाइपिंग, साइकिल चलाना आदि के सम्बन्ध में यह नियम पूर्णतः लागू होता है। ठीक इसी प्रकार भाषायी कौशलों के विकास हेतु भी अभ्यास का सिद्धान्त लागू होता है। विचार गोष्ठी, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, अंत्याक्षरी, व्याख्यान, आशु भाषण आदि भाषायी कौशल विकास हेतु कुछ ऐसे ही साधन हैं।
4. **प्रयत्न का सिद्धान्त-** भाषा एक जटिल एवं सूक्ष्म विषय है, अतः इसे केवल स्वाभाविक शक्ति द्वारा ही नहीं सीखा जा सकता। इसके अधिगम में प्रयत्न की आवश्यकता होती है। भाषा के साहित्यिक रूपों को सप्रयत्न जानना पड़ता है। आलंकारिक एवं कलात्मक भाषा प्रयत्न द्वारा सीखी जाती है। श्रुतलेख, वाक्य-रचना, सस्वर वाचन, अनुवाद जैसे कार्यों में प्रयत्न की आवश्यकता पड़ती है।
5. **बहुमुखी प्रयास का सिद्धान्त-** भाषा ज्ञान राशि से जुड़ने का माध्यम है। अतः इसके शुद्धता का बर्ताव न केवल भाषा कक्षा में किया जाय बल्कि जहाँ भी भाषायी व्यवहार का अवसर प्राप्त हो सर्वत्र शुद्ध भाषा के प्रयोग का प्रयास किया जाय, तभी

भाषायी कौशलों का समुचित विकास संभव है। ध्यातव्य है कि इतिहास, भूगोल, विज्ञान, अर्थशास्त्र, नागरिक शास्त्र आदि कोई भी विषय सीखने के लिए भाषा का बर्ताव आवश्यक है। इन सभी विषयों के ज्ञान में वृद्धि के साथ-साथ भाषा भी विकसित होती रहती है।

6. **वैयक्तिक भिन्नता का सिद्धान्त-** प्रत्येक बालक अपने आप में अद्वितीय है, अब शिक्षाशास्त्र में यह सर्वमान्य तथ्य बन गया है। प्रत्येक बालक रुचि, योग्यता, क्षमता, प्रवृत्ति, शारीरिक शक्ति, संवेग इत्यादि में भिन्न एवं अद्वितीय होता है और इसी के अनुरूप प्रत्येक क्षेत्र में अधिगम करता है। भाषा अधिगम भी वैयक्तिक भिन्नता के सिद्धान्त का पूर्णतः पालन करता है। अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी बालकों के भाषायी कौशलों के विकास में भी परस्पर भिन्नता दिखाई पड़ती है। वैयक्तिक भिन्नता को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक बालक की भाषायी वृत्ति का निदान करना चाहिए। निदानोपरान्त समुचित निराकरण की व्यवस्था करनी चाहिए।
7. **रुचि का सिद्धान्त-** यह मानव प्रवृत्ति है जिस कार्य में उसकी रुचि होती है उसमें वह तत्परता एवं शीघ्रता करता है। भाषा अधिगम के सम्बन्ध में भी यह सिद्धान्त लागू होता है। रुचि एवं अभ्यास के सातत्य व सामन्जस्य से ही अपने क्षेत्र में लोग प्रसिद्धि पाते हैं। भाषा के विविध रूप एवं साहित्य की विविध विधाएँ होती हैं आवश्यकता छात्रों की रुचि पहचानने की होती है। अपने रुचि के भाषायी क्षेत्र में बालक का अधिगम तीव्रता से होता है।
8. **प्रारम्भिक अवस्था का सिद्धान्त-** प्रारम्भिक अवस्थाएँ अर्थात् शैशवावस्था एवं बाल्यावस्था अधिगम की दृष्टि से महत्वपूर्ण अवस्थाएँ हैं। कहा जाता है कि इन दोनों ही अवस्थाओं में शिशु जितना सीखता है शेष जीवनकाल में उससे भी कम सीखता है। भाषा अधिगम की दृष्टि से यदि दोनों ही अवस्थाएँ बहुत महत्वपूर्ण होती हैं जन्मोपरान्त मात्र कुछ ध्वनियाँ उत्पादित करने वाला बालक दो वर्ष बीतते-बीतते अर्थ पूर्ण वाक्यों का निर्माण करने लगता है। 5-8 वर्ष तक बालक मौखिक भाषा में पूर्णतः परांगत होता है तथा किसी देखी-सुनी घटना का अपने शब्दों में भलीभाँति वर्णन कर सकता है। लिखित भाषा में अर्थपूर्ण ध्वनियों शब्दों एवं वाक्यों का निर्माण करने में सक्षम हो जाता है।
9. **मौलिकता का सिद्धान्त-** भाषा का परम उद्देश्य मौलिक विचारों की अभिव्यक्ति करना तथा उन्हें समझना सर्वप्रथम बालक बोलना सीखता है, अतः सर्वप्रथम बालक के मौखिक भाषा पर कार्य करने की आवश्यकता होती है। शिक्षक को चाहिए कि बालक को अधिकतम बोलकर भावों को व्यक्त करने का अवसर दें। मौखिक भाषा के कौशलों के विकास के उपरान्त लिखित भाषा का अधिगम प्रायः सरल हो जाता है लिखित भाषा में भी मौलिकता झलकने लगती है।
10. **अनुकरण का सिद्धान्त-** प्रसिद्ध शिक्षा विज्ञानी स्कैनर के अनुसार- भाषा अनुकरण द्वारा सीखी जाती है। शिशु अत्यधिक अनुकरणशील होते हैं। अनुकरण की प्रवृत्ति बाल्यावस्था में ही नहीं बल्कि किशोरावस्था में भी देखी जाती है वणों का समुचित उच्चारण अनुकरण के आधार पर ही सीखा जाता है अनुकरण करते हुये जब बालक जोर से ध्वनि के साथ उच्चारण करता है तो उसकी वागेन्द्रियों में दृढ़ता आती है एवं धीरे-धीरे शुद्ध

उच्चारण करने लगता है यही कारण है कि प्रायः प्राथमिक कक्षाओं में सस्वर वाचन कराया जाता है। अनुकरण की इस प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए शिक्षक को सदैव ही छात्रों के समक्ष भाषागत आदर्श को प्रस्तुत करना चाहिए।

11. **स्वतंत्रता का सिद्धान्त-** स्वतंत्रता प्रत्येक प्राणी का मूल भूत अधिकार है। विभिन्न कौशलों का विकास करने के लिए स्वतंत्रता परम आवश्यक तत्त्व है। भाषा पर अधिकार करने के लिए बालक को स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। स्वतंत्र वातावरण में वह सीखने का उत्सुक होता है और खुलकर अपनी जिज्ञासाओं को प्रस्तुत करता है। भय पूर्ण वातावरण में बालक अपने मौलिक विचारों को या मनोभावों को प्रकट करने से डरता है। बालक को स्वतंत्र रूप से वर्तलाप, वाद-विवाद, चर्चा-परिचर्चा, पत्र-व्यवहार, काव्य पाठ, कहानी कहना आदि क्रियाओं में संलग्न होने का अवसर प्रदान करना चाहिए जिससे उसकी झिझक समाप्त हो जाए और वह उन्मुक्त ढंग से भाषायी कौशलों को ग्रहण कर सके।
12. **बाल-केन्द्रियता का सिद्धान्त-** वर्तमान शिक्षा प्रणाली बताती है कि शिक्षा बालक के लिए है न कि बालक शिक्षा के लिए इसी अवधारणा को बालकेन्द्रियता कहते हैं। इस अवधारणा को ध्यान में रखते हुए बालक को इस योग्य बनाना चाहिए कि भाषायी कौशलों पर अधिकार कर सके। भाषा सीखाने में सदैव बालक की रुचियों योग्यताओं एवं क्षमताओं को ध्यान रखना चाहिए।

मातृभाषा

वह प्रथम भाषा जिसका व्यवहार शिशु अपने जीवन काल में प्रथम बार सुनता, देखता, या अनुभव करता है। कालान्तर में अनुकरण द्वारा सीखता है मातृभाषा कहलाती है। कुछ विद्वानों का मानना है कि जन्म के उपरान्त शिशु के माँ के द्वारा व्यवहार में लायी जाने वाली भाषा मातृभाषा है वहीं अन्य मत के अनुसार शिशु के मातृभूमि से सम्बद्ध भाषा जिसका वह अपने जीवन काल में प्रथम व्यवहार करता है मातृभाषा कहलाती है। इन दोनों विचारों के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि यदि जन्मोपरान्त माँ की मृत्यु हो जाए अथवा बच्चे का स्थानान्तरण कर दिया जाए तो फिर मातृभाषा की परिभाषा बदल जाएगी। अतः मातृभाषा के सम्बन्ध में यह कहना कि जन्मोपरान्त शिशु के समक्ष जिस भाषा का व्यवहार होता है और वह अपनी तोतली जुबान से जिस भाषा को बोलने का प्रयत्न करता है वहीं उसकी मातृभाषा होती है।

प्राथमिक विद्यालय में तीसरी के स्तर तक बच्चों को उनकी मातृभाषा में ही शिक्षा देनी चाहिए। इससे उनमें भाषा के मूलभूत नियम व सिद्धान्त की समझ विकसित हो जाती है जिसके आधार पर वे एकाधिक भाषाएँ सरलता से सीख लेते हैं। मातृभाषा का सीखना अनुकरण विधि द्वारा होता है। बालक प्रायः अपने से बड़ों के अनुकरण के द्वारा मातृभाषा का व्यवहार सीखता है यही कारण है कि भाषा को अर्जित सम्पत्ति या सामाजिक सम्पत्ति कहा गया है। मातृभाषा विभिन्न मानवीय गुणों के विकास का आधार भी होती है जो निम्न प्रकार है-

- (i) मातृभाषा से बौद्धिक एवं मानसिक विकास होता है। **गाँधी जी के अनुसार-** “मानसिक विकास के लिए मातृभाषा उतनी ही आवश्यक है जितना शारीरिक विकास के लिए माता का दूध”।
- (ii) मातृभाषा से शारीरिक विकास भी होता है मातृभाषा वह साधन है जिसमें बालक सामान्यतः प्रसन्नचित होकर भाँति-भाँति के खेल एवं मनोरंजनात्मक उक्तियों का प्रयोग करते हैं और प्रसन्न रहते हैं। यह प्रसन्नता उन्हें शारीरिक रूप से विकसित करती है।

(iii) मातृभाषा से भावनात्मक विकास होता है प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री कॉलरिज के शब्दों में- “मातृभाषा मनुष्य के हृदय के धड़कन की भाषा है।”

प्रायः यह देखा गया है कि समान मातृभाषा-भाषी लोगों में परस्पर प्रेम और सौहार्द बना रहता है वे एक दूसरे के प्रति सहायता एवं सद्भावना के भाव से पूर्ण होते हैं।

(iv) मातृ भाषा से सांस्कृतिक विकास भी होता है कहा जाता है साहित्य समाज का आइना होता है। जैसा समाज होता है वैसे ही साहित्य का सृजन होता है। मातृभाषा बालकों को अपने पूर्वजों के विचारों तथा महत्त्वकाक्षाओं की समृद्ध थाती से परिचित कराने का सर्वोत्तम साधन है।

(v) सामाजिक सम्पत्ति होने के कारण मातृभाषा सामाजिक विकास में भी सहयोग करती है। कोठारी आयोग के भाषा के राष्ट्रीकरण लक्ष्यों में यह तथ्य भी सामिल है।

(vi) मातृभाषा से नैतिक एवं चारित्रिक विकास भी होता है प्रारम्भिक जीवन के विचार व संस्कार ही चरित्र के विकास में सहायक होते हैं। दादी-नानी, की मातृभाषा में सुनायी गयी कहानियाँ - सत्य, ईमानदारी, चारित्रिक दृढ़ता इत्यादि मानवीय गुणों का आधार बालक के मस्तिष्क में तैयार करती है। जिनका समय-समय पर वह अवधारणा के रूप में प्रयोग करता है।

(vii) शिक्षा एवं ज्ञानवृद्धि में मातृभाषा सहायक है। **रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार-** “जब तक मातृभाषा को उच्च शिक्षा का माध्यम नहीं बनाया जाएगा तब तक पुस्तकें कैसे लिखी जाएगी, नई शब्दावली कैसे बनेगी?” **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की उक्ति-** “निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कै मूल।” वस्तुतः प्रारम्भिक शिक्षा मातृभाषा में ही प्रदान करनी चाहिए। प्रायः यह देखा जाता है कि बालक मातृभाषा के व्यवहार में निःसंकोच, बेबाक, स्पष्ट, प्रसन्नचित, ढंग से अपने विचार एवं भाव व्यक्त करता है एवं शिक्षा के समुचित दिशा में अग्रसर होता है।

(viii) मातृभाषा में सृजन एवं अभिव्यक्ति की क्षमताओं में पूर्ण विकास होता है। **माइकल वेस्ट के अनुसार-** “भाषा ही वह तत्त्व है, जिससे हमारी आत्मा का गठन होता है।” मातृभाषा के व्यवहार से कल्पनाशीलता एवं तर्कशीलता का विकास होता है। जो कि सृजनात्मकता का प्राण तत्त्व है।

भाषा शिक्षण के उद्देश्य

भाषा का मूल कार्य संप्रेषणीयता को धार प्रदान करना है। भाषा के विविध रूप होते हैं। मातृभाषा शिक्षण के संबंध में कुछ उद्देश्य द्रष्टव्य हैं-

- (i) चिन्तन प्रणाली का विकास करना।
- (ii) क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित भावविषयिक में सक्षम बनाना।
- (iii) रचनात्मकता का विकास करना।
- (iv) संवेदनशीलता एवं सहनशीलता का विकास करना।
- (v) स्पष्ट एवं मौलिक लेखन क्षमता का विकास करना।
- (vi) पठन कौशल का विकास करना।
- (vii) सहज अभिव्यक्ति क्षमता का विकास करना।
- (viii) अवधारणाओं के निर्माण में सहायता प्रदान करना।
- (ix) संचित ज्ञारशि एवं साहित्य से संबंध स्थापित करना।

भाषा के विविध स्वरूप एवं उनका शिक्षण

पूर्व में कहा जा चुका है कि भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। एक तरफ भाषा समाज को अभिव्यक्ति की क्षमता प्रदान करती है तो दूसरी तरफ चिन्तनशीलता एवं कल्पनाशीलता की शक्ति भी प्रदान करती है भाषा की यही शक्तियाँ सरस एवं आनन्दायक ज्ञान राशि से सम्बद्ध साहित्य का सृजन भी

करती है। भाषा के इन्हीं विशिष्टताओं के फलस्वरूप साहित्य में विविध विधाएँ प्राप्त होती हैं, गद्य, पद्य, नाटक, व्याकरण इत्यादि के माध्यम से मनुष्य अपनी संवेदनाओं को धार प्रदान करता है भाषा सीख गए बालक को उसके अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति में साहित्य की उक्ति विधाएँ बड़ी सहयोगी होती हैं। भाषा के विविध रूप उसके विविध स्वरूपों को दर्शाते हैं। इन विविध-विधाओं की शिक्षण विधियाँ भी भिन्न-भिन्न होती हैं जिनका विवरण निम्नानुसार-

पद्य शिक्षण- साहित्य का पद्य रूप सबसे प्राचीन रूप है सत्य तो यह है कि पहले पद्य को ही साहित्य माना जाता है पद्य शिक्षण को समझने के लिए हमें गद्य एवं पद्य के मूलभूत अन्तर को समझना होगा। पद्य या कविता का मूल तत्त्व भाव होता है जो कि हृदय की विषय वस्तु है। इसी प्रकार गद्य का मूल तत्त्व विचार है जो कि बुद्धि की विषय वस्तु है। पद्य के अन्तर्गत रस, छन्द, अलंकार, इत्यादि का अध्ययन एवं शिक्षण किया जाता है इनके शिक्षण से संबन्धित विधियाँ इस प्रकार हैं-

- | | |
|---------------|----------------------|
| 1. गीत विधि | 2. शब्दार्थ कथन विधि |
| 3. अन्वय विधि | 4. व्याख्यान विधि |
| 5. अभिनय विधि | 6. व्यास विधि |
| 7. तुलना विधि | 8. समीक्षा विधि |

1. **गीत विधि-** गेयता कविता का प्रमुख तत्त्व है और यह चित्ताकर्षक होता है जिसके कारण शिक्षण की यह विधि प्रायः सभी के लिए रुचिकर होती है परन्तु इनमें लय, ताल, स्वर, तुकान्तता का विशेष ध्यान रखना होता है।

2. **शब्दार्थ कथन विधि-** इस विधि का प्रयोग प्रायः उच्च कक्षाओं में किया जाता है इसके माध्यम से बच्चों की बोध गम्यता का विकास किया जाता है। हालांकि कविता शिक्षण की दृष्टि से यह विधि उपयुक्त नहीं मानी जाती है।

3. **अन्वय विधि-** इस विधि में 'सरल से कठिन की ओर' शिक्षण सिद्धान्त का पालन किया जाता है। इसमें प्रायः शिक्षक कविता को छोटे-छोटे खण्डों में विभक्त कर लेते हैं और उनका क्रमिक शिक्षण करते हैं। विद्यार्थियों की भागीदारी सतत् रूप में होने के कारण इसे शिक्षण के वैज्ञानिक विधि माना जाता है।

4. **व्याख्यान विधि-** कविता शिक्षण की इस विधि में शिक्षक विद्यार्थियों की सहायता से कविता की व्याख्या करता है। जिसमें रस, छन्द, अलंकार इत्यादि का स्पष्टीकरण करते हुए प्रश्न उत्तर द्वारा विद्यार्थियों की भागीदारी बनाये रखता है। इस विधि द्वारा विद्यार्थियों का कविता के साथ रागात्मक सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। इस शिक्षण में विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी अवश्यक है।

5. **अभिनय विधि-** अभिनय भावाभिव्यक्ति का सर्वोत्तम तरीका है। ध्यातव्य हो कि, किसी भी कार्य में जितनी अधिक ज्ञानेन्द्रियों का उपयोग किया जाता है उसका अधिगम उतना ही सरल हो जाता है इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए एडगरडेल ने बहुएन्द्रिय अनुदेश (Multisensory Interaction) सिद्धान्त प्रतिपादित किया। अभिनय में छात्र की पूर्ण भागीदारी एवं सक्रियता बनी रहती है। वह भावानुकूल ध्वनियों का उतार-चढ़ाव विभिन्न शारीरिक मुद्राओं आदि के द्वारा भावाभिव्यक्ति का प्रयत्न करता है। इससे उसके आंगिक एवं वाचिक भाषायी कौशलों का विकास होता है। परन्तु इस विधि का दोष यह है कि इसमें सभी बच्चों की भागीदारी सम्भव नहीं है तथा सभी कविताओं का अभिनय भी सम्भव नहीं है।

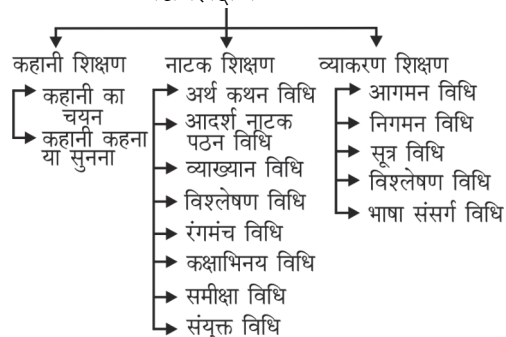
6. **व्यास विधि-** इस विधि में अध्यापक कविता के एक-एक भाव को स्पष्ट करने के लिए उदाहरणों और दृष्टान्तों का प्रयोग करता है। वह भाषा एवं भाव के प्रत्येक पक्ष को विस्तार पूर्वक व्याख्या करता है। इस विधि में शिक्षक सक्रिय एवं छात्र निष्क्रिय रहते हैं।

7. **तुलना विधि-** इस विधि में शिक्षक समान भाव की कविता जो उसी भाषा या किसी अन्य क्षेत्रीय भाषा में लिखी गयी हो से तुलना करके शिक्षण करता है। इसमें दूसरी कविता ऐसी होनी चाहिए जिसका भाव सरल हो तथा छात्र उससे पहले से ही परिचित हो

8. **समीक्षा विधि-** इस विधि में कविता की समीक्षात्मक व्याख्या की जाती है। कविता के भाव पक्ष एवं कला पक्ष दोनों पर ही दृष्टि रहती है। इस विधि के प्रयोग के लिए आवश्यक है कि छात्र एवं शिक्षक दोनों ही समीक्षा के सिद्धान्तों से परिचित हैं।

9. **गद्य शिक्षण-** जिस तरह पद्य में रस, छन्द, अलंकार, लय, तुक, यति, गति के साथ भाव आदि का विश्लेषण किया जाता है उसी प्रकार गद्य में शब्द, पद, वाक्य, अर्थ एवं व्याकरणिक कोटियों का अध्ययन करते हुए समुचित भाव को प्रकट किया जाता है। गद्य की अनेक विधाएँ हैं जैसे- कहानी, नाटक, निबन्ध, उपन्यास, आत्मकथा, जीवनी, संस्करण, रेखाचित्र इत्यादि। इन सभी विधाओं के माध्यम से विभिन्न भाषाओं कौशल का विकास किया जाता है तथा चिन्तन शक्ति का प्रावर्धन किया जाता है विधाओं के अनुसार गद्य शिक्षण की प्रमुख विधियाँ इस प्रकार हैं-

गद्य शिक्षण



1. **कहानी शिक्षण-** भारतीय परिप्रेक्ष्य में कहानियाँ अवधारणाओं के निर्माण का प्रमुख साधन है। दादी-नानी की कहानियाँ सुनकर के ही बच्चे बड़े होते थे। सोद्देश्य, शिक्षाप्रद एवं लघु कहानियाँ शिक्षण की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण होती है। कहानी शिक्षण की मुख्य दो विधियाँ इस प्रकार हैं-

(i) कहानी का चयन

(ii) कहानी कहना या सुनना

(i) **कहानी का चयन-** जैसा की पूर्व में कहा गया, कहानियाँ अवधारणाओं के निर्माण का साधन होती हैं। साथ ही साथ ये मनोरंजनात्मक भी होती हैं। यही कारण है कि प्रायः बच्चे रुचिपूर्वक कहानी पढ़ते हैं। कहानी का चयन ही कहानी को आकर्षक एवं रुचिपूर्ण बनाता है।

(ii) **कहानी कहना या सुनना-** कहानी का कहना एवं सुनना दोनों ही मौखिक भाषायी विकास के कौशल में महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षक को चाहिए कि आदर्श वाचन द्वारा ध्वनि के समुचित उतार-चढ़ाव को विद्यार्थियों के समक्ष प्रकट करें। और यथा सम्भव अधिकतम अवसर देकर के उनसे वाचन करायें। प्रश्नों के द्वारा विद्यार्थी सक्रियता बनायें रखे। उद्देश्य कथोपकथन भाषाशैली इत्यादि विषयों पर अवश्य चर्चा करें।

2. **नाटक शिक्षण-** नाटक गद्य की एक अनोखी विधा है जो अमूर्त भावों को भी सरलता से प्रकट करने की क्षमता रखती है। नाटक प्रमुख स्वरूप ससंवाद है। उचित स्वर, हाव भाव एवं आरोह - अवरोह के साथ मौखिक अभिव्यक्ति करना ही नाटक का प्रमुख उद्देश्य है। नाटक शिक्षण की निम्नलिखित विधियाँ हैं।
- (i) **अर्थ कथन विधि-** इस विधि में शिक्षक स्वयं अथवा विद्यार्थियों के समूह द्वारा नाटक का सस्वर वाचन करवाता है। तत्पश्चात् स्वयं अर्थ बताता है यह नाटक शिक्षण की एक नीरस विधि है।
- (ii) **आदर्श नाटक पठन विधि-** इस विधि में शिक्षक ध्वनियों के उचित उतार-चढ़ाव, अंग संचालन एवं हाव-भाव के द्वारा नाटक का वाचन करता है। इस विधि में शिक्षक सक्रिय एवं छात्र निष्क्रिय रहते हैं।
- (iii) **व्याख्यान विधि-** इस विधि में शिक्षक तथा वस्तु पात्र चरित्र-चित्रण, भाषा शैली, कथोपकथन, उद्देश्य, देशकाल, वातावरण इत्यादि की समुचित व्याख्या करता है। इस विधि का प्रयोग प्रायः उच्च कक्षाओं में किया जाता है।
- (iv) **विश्लेषण विधि-** इस विधि में शिक्षक-विद्यार्थियों से नाटक के विषय में प्रश्न करता है शिक्षक और छात्र दोनों ही सक्रिय भूमिका में होते हैं।
- (v) **रंगमंच विधि-** नाटक शिक्षण की यह सर्वोत्तम विधि मानी जाती है। शिक्षक की देखरेख में नाटक का रंगमंचन होता है। यह विधि नाटक शिक्षण के उद्देश्यों की पूर्ति करती है। प्रयोग की दृष्टि से यह विधि बहुत महँगी एवं समय साध्य है।
- (vi) **कक्षाभिनय विधि-** इस विधि में विभिन्न पात्रों के अनुरूप भिन्न-भिन्न छात्रों से संवाद का भाषानुकूल वाचन कराया जाएगा। इस वाचन में अभिनयता की झलक दृष्टिगोचर होती है। यह विधि शिक्षण के लिए प्रत्येक स्तर पर उपयोगी होती है।
- (vii) **समीक्षा विधि-** रंगमंचीय तत्वों को ध्यान में रखते हुए नाटक के गुण-दोष की समीक्षा करना/प्रश्न एवं व्याख्या द्वारा नाटक के मूल तत्व से अवगत कराना इस विधि का प्रमुख उद्देश्य है।
- (viii) **संयुक्त विधि-** पूर्व में वर्णित सभी नाटक शिक्षण-विधियों की अपनी कुछ सीमायें हैं। सभी विधियों का संयुक्त रूप से प्रयोग करना इस विधि को रुचिकर बनाता है। यह विधि नाटक शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होती है।
3. **व्याकरण शिक्षण-** व्याकरण भाषा का नियामक शास्त्र माना जाता है। यह भाषा के शुद्ध वर्ताव पर जोर देता है। भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान व्याकरण द्वारा ही होता है। अतः भाषा को सीखने के लिए व्याकरण सीखना अनिवार्य है। व्याकरण शिक्षण की निम्नलिखित विधियाँ-
- (i) आगमन विधि (ii) निगमन विधि
- (iii) सूत्र विधि (iv) विश्लेषण विधि
- (v) भाषा संसर्ग विधि
- (I) **आगमन विधि-** आगमन विधि व्याकरण शिक्षण की सर्वोत्तम विधि मानी जाती है यह कहना अनुचित न होगा कि व्याकरण की उत्पत्ति ही आगमन विधि के कारण हुई है। इस विधि में सर्वप्रथम कुछ उदाहरण दिये जाते हैं उन्हीं का सामान्यीकरण करके नियम बनाए जाते हैं। इस विधि में छात्र एवं शिक्षक दोनों ही सक्रिय रहते हैं। यह विधि रटने की प्रथा को पूरी तरह निषिद्ध करती है। विश्लेषण द्वारा निष्कर्ष तक पहुँचने की क्षमता विकसित करती है।

- (II) **निगमन विधि-** यह आगमन विधि की ठीक विपरीत विधि है इसमें नियम से उदाहरण की ओर बढ़ते हैं। जैसे- संज्ञा प्रकरण पढ़ाने के लिए सर्वप्रथम संज्ञा की परिभाषा देते हैं। तत्पश्चात् उदाहरणों द्वारा उसे सिद्ध करते हैं।
- (III) **सूत्र विधि-** यह निगमन विधि का ही एक प्रकार है इसका प्रयोग संस्कृत व्याकरण शिक्षण में बहुधा देखने को मिलता है जैसे- पाणिनी के अष्टाध्यायी में सूत्र द्वारा नियम का कथन होता है तत्पश्चात् उसी की व्याख्या होती है विश्लेषण प्रक्रिया शामिल होने के कारण इस विधि में छात्र एवं शिक्षक दोनों की सक्रियता आवश्यक है।
- (IV) **विश्लेषण विधि-** इस विधि में उदाहरणों की व्याख्या एवं उनके प्रयोग के आधार पर व्याकरणिक नियमों की व्याख्या की जाती है यह विधि आगमन और निगमन दोनों ही विधियों का समन्वित रूप में प्रयोग करते हैं।
- (V) **भाषा संसर्ग विधि-** इस विधि में अनुकरण द्वारा भाषा सिखायी जाती है व्याकरणिक नियमों का ज्ञान कराने के बजाय भाषा के शुद्ध रूप का अनुकरण किया जाता है। प्राथमिक स्तर पर बच्चों को व्याकरण के व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने के लिए यह विधि उपयुक्त है।

विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. **उच्च प्राथमिक स्तर पर भाषा-शिक्षण का सर्वोपरि उद्देश्य है -**
- (a) विभिन्न साहित्यिक विधाओं का गहनतम ज्ञान प्राप्त करना
(b) सरसरी तौर पर तीव्र गति से पढ़ना
(c) भाषा के सौन्दर्यशास्त्र से परिचय
(d) निजी अनुभवों के आधार पर भाषा का सृजनशील इस्तेमाल
- CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014**
- उत्तर : (d)
2. **सुनी, पढ़ी और समझी हुई भाषा को सहज और स्वाभाविक लेखन द्वारा अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास करने में निम्नलिखित में से कौन सहायक है?**
- (a) सुनी, देखी, पढ़ी घटना को अपने शब्दों में लिखित रूप में अभिव्यक्त करना
(b) 'मेरा प्रिय विद्यालय' विषय पर निबन्ध लिखना
(c) औपचारिक पत्र-लेखन
(d) किसी पढ़ी हुई कहानी को संक्षेप में लिखना
- CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014**
- उत्तर : (a)
3. **किसी समावेशी कक्षा में कौन-सा कथन भाषा-शिक्षण के सिद्धांतों के अनुकूल है?**
- (a) प्रिन्ट-समृद्ध माहौल भाषा सीखने में मदद करता है
(b) बच्चे अपने अनुभवों के आधार पर भाषा के नियम नहीं बना पाते
(c) भाषा विद्यालय में रहकर अर्जित की जाती है
(d) व्याकरण के नियमों का ज्ञान भाषा-विकास की गति त्वरित करता है
- CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016**
- उत्तर : (b)
4. **भाषा-कक्षा में समावेशी वातावरण का निर्माण करने के लिए जरूरी है कि -**
- (a) बच्चों की सभी आवश्यकताओं को पूर्ण किया जाए
(b) बच्चों को विविध दृश्य-श्रव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाए
(c) बच्चों के प्रति अति उदारवादी दृष्टिकोण रखा जाए
(d) बच्चों को विविध भाषाओं को पढ़ाया जाए
- CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016**
- उत्तर : (d)

5. भाषा नियमों द्वारा नियन्त्रित.....का माध्यम भर नहीं है, बल्कि यह हमारी सोच को भी निर्मित करती है।
(a) सौन्दर्यबोध (b) संस्कृति
(c) सम्प्रेषण (d) कला
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016
उत्तर : (c)
6. “बच्चे की भाषा समाज के साथ सम्पर्क का ही परिणाम है।” यह विचार किसका है?
(a) पियाजे (b) चॉक्स्की
(c) स्किनर (d) वाइगोत्स्की
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016
उत्तर : (d)
7. भाषा-शिक्षण में खेल का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि -
(a) भाषा-शिक्षक को कम श्रम करना पड़ता है
(b) खेल भाषा को विस्तार देते हैं
(c) खेल में आनन्द आता है
(d) खेल में शरीरिक विकास होता है
CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015
उत्तर : (b)
8. भाषा शिक्षण की पद्धति नहीं है—
(a) किण्डरगार्टन (b) मॉण्टेसरी
(c) डैकाली (d) अभिक्रमित अनुदेशन
UP TET - Ist Paper (I-V) Dec. 2016
उत्तर : (d)
9. भाषा शिक्षण के अन्तर्गत वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियों का निवारण करना चाहिए -
(a) वर्तनी का शुद्ध उच्चारण एवं लेखन अभ्यास करवाकर
(b) त्रुटियों का प्रकार गिनाकर
(c) वर्तनी के बारे में कुछ बातें बताकर
(d) त्रुटियों की उपेक्षा कर
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014
उत्तर : (a)
10. प्राथमिक स्तर पर हिंदी ‘भाषा-शिक्षण’ के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण है -
(a) भाषा-प्रयोग के अवसर
(b) पाठ्य-पुस्तक
(c) उच्चस्तरीय तकनीकी यन्त्र
(d) व्याकरणिक नियमों का स्मरण
CTET - Ist Paper (I-V) July 2013
उत्तर : (a)
11. प्राथमिक स्तर पर भाषा-शिक्षण की प्राथमिकता होनी चाहिए -
(a) केवल बोलकर पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
(b) कविता और कहानी के द्वारा केवल श्रवण-कौशल का विकास करना।
(c) बच्चों की रचनात्मकता और मौलिकता को पोषित करना।
(d) बच्चों की चित्रांकन-क्षमता का विकास करना।
CTET - Ist Paper (I-V) July 2013
उत्तर : (c)
12. एक भाषा शिक्षक के रूप में आपका क्या दायित्व है?
(a) बच्चों को भाषा सीखने का समृद्ध वातावरण उपलब्ध कराना
(b) बच्चों के सीखने के तरीकों के बारे में जानना ताकि उसी के अनुरूप शिक्षण कार्य सम्पादित किया जा सके
(c) बच्चों द्वारा की जाने वाली त्रुटियों के कारणों की पहचान करते हुए उपयुक्त उपचार करना
(d) उपरोक्त सभी
Bihar TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011
उत्तर : (d)
13. उच्च प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण का मुख्य उद्देश्य है—
(a) प्रसिद्ध साहित्यकारों से परिचित कराना
(b) साहित्यिक विधाओं से परिचय और व्याकरणिक नियम सिखाना
(c) हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तक पढ़ाना
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं
Bihar TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011
उत्तर : (b)
14. अर्थग्रहण के कौशल के विकास के लिए अधिक उपयोगी है—
(a) व्याकरण शिक्षा (b) समाचार वाचन
(c) मौन वाचन (d) सस्वर वाचन
Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) 2012
उत्तर : (c)
15. हिन्दी भाषा शिक्षण की विधि है—
(a) अनुकरण विधि (b) आगमन निगमन विधि
(c) भाषा प्रयोगशाला (d) उपरोक्त सभी
Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016
उत्तर : (d)
16. शिक्षण कौशल का उपयोग किया जाता है—
(a) कक्षा के अन्दर (b) कक्षा के बाहर
(c) (a) और (b) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं
Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016
उत्तर : (c)
17. भाषा शिक्षण का आदर्श वातावरण है -
(a) विद्यार्थियों को अभिव्यक्ति की पूरी आजादी
(b) भाषागत शुद्धता पर बल
(c) अध्यापक का एकालाप
(d) श्रव्य-दृश्य सामग्री का प्रचुर उपयोग
Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) April 2016
उत्तर : (a)
18. भाषा शिक्षण का आदर्श वातावरण है—
(a) विद्यार्थियों को अभिव्यक्ति के भरपूर अवसर
(b) भाषागत शुद्धता पर अत्यधिक बल
(c) अध्यापक का एकालाप
(d) दृश्य-श्रव्य सामग्री का प्रचुर उपयोग
Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2012
Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2014
उत्तर : (a)
19. भाषा शिक्षक के रूप में आप -
(a) पाठ्य-पुस्तक पर बल देंगे
(b) प्रश्नों के उत्तर पूछेंगे
(c) ड्राइंग बनाएँगे
(d) बच्चों को अपने अनुभव और विचार बताने के लिए उनमें उत्सुकता जगाएँगे
Bihar TET - Ist Paper (I-V) 2011
उत्तर : (d)
20. ‘बच्चे भाषा सीखने की क्षमता के साथ पैदा होते हैं।’ मुख्यतः यह किसका विचार है?
(a) एल. एस. वाइगोत्स्की (b) ईवान पैवलोव
(c) नॉओम चॉम्सकी (d) जीन पियाजे
CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011
उत्तर : (c)
21. एक बहुसांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाली कक्षा में भाषा सीखने के बारे में कौन-सा विचार उचित है?
(a) अधिकाधिक पुस्तकों का निर्माण किया जाए
(b) भाषा सिखाने के लिए व्याकरणिक नियमों का और अधिकाधिक प्रयोग होना चाहिए

- (c) भाषा परिवेश का निर्माण किया जाए ताकि भाषा-अर्जन की सहज स्थिति बन सके
(d) बच्चों में भाषा सीखने की क्षमता बलपूर्वक विकसित करनी होती है
CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011
उत्तर : (c)
22. अन्तःवाक् की संकल्पना किससे सम्बद्ध है?
(a) चॉम्स्की से (b) वाइगोत्स्की से
(c) पैवलॉव से (d) स्किनर से
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014
उत्तर : (b)
23. “भाषा और चिन्तन में सम्बन्ध होता है।” यह कथन—
(a) पूर्णतः सही है (b) आंशिक रूप से सही है
(c) पूर्णतः गलत है (d) व्यर्थ का है
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014
उत्तर : (a)
24. पाठ के अंत में अभ्यास और गतिविधियाँ देने का उद्देश्य है—
(a) बच्चों को व्यस्त रखने हेतु गतिविधियाँ बनाना।
(b) बच्चों को याद करने हेतु सामग्री उपलब्ध करने में सहायता करना।
(c) गृहकार्य की सामग्री जुटाना।
(d) बच्चों को अभिव्यक्ति के अवसर देना
CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014
उत्तर : (d)
25. “बच्चों के भाषायी विकास में समाज की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।” यह विचार किसका है?
(a) पियाजे (b) स्किनर
(c) चॉम्स्की (d) वाइगोत्स्की
CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016
उत्तर : (d)
26. विद्यार्थियों का भाषायी विकास समग्रता से हो सके, इसके लिए सबसे उपयुक्त अनुशंसा होगी—
(a) शब्दकोष एवं विश्वकोष के प्रयोग की
(b) भाषा प्रयोग के विविध अवसरों की
(c) सतत एवं व्यापक आकलन की
(d) सर्वोत्कृष्ट पाठ्य-पुस्तकों की
CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016
उत्तर : (b)
27. भाषा-शिक्षण के संदर्भ में बाल-साहित्य का उद्देश्य है—
(a) बच्चों को जीवन-कौशल सिखाना
(b) बच्चों को भाषा के नियमों की जानकारी देना
(c) बच्चों को उत्साही पाठक बनने के लिए प्रोत्साहित करना
(d) बच्चों को साहित्यिक विधाओं से परिचित करवाना
CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016
उत्तर : (c)
28. सुरभि किसी भी ऐसे शब्द विशेष को बोलने में कठिनाई अनुभव करती है जिसमें दो से अधिक बार ‘त’ की आवृत्ति हुई हो। आप उससे/उसे—
(a) ऐसे शब्दों का विकल्प ढूँढ़कर देंगी
(b) ऐसे शब्दों को बार-बार सुनने के लिए कहेंगी
(c) बोलते समय इस ओर ध्यान न देने के लिए कहेंगी
(d) ‘त’ वाले शब्दों का बार-बार उच्चारण करवाएँगी
CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016
उत्तर : (d)
29. अकादमिक सत्र शुरू होने के दो माह बाद तक भी कक्षा चार के विद्यार्थियों को भाषा की पाठ्य-पुस्तकें उपलब्ध नहीं करवाई जा सकी हैं। ऐसी स्थिति में शिक्षक—
(a) पाठ्य-पुस्तक के उपलब्ध होने तक पठन-लेखन की प्रक्रिया आरम्भ न करवाएँ
(b) भाषाई क्षमताओं के विकास के लिए अन्य विषयों की पाठ्य-पुस्तकों का प्रयोग करें
(c) श्रवण एवं वाचन कौशल का अभ्यास करवाते रहें
(d) विद्यार्थियों को पाठ्य-पुस्तक अपने-आप खरीदने के लिए प्रोत्साहित करें
CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016
उत्तर : (c)
30. पहली और दूसरी कक्षा में भाषा-शिक्षण के साथ ही कला शिक्षा को समेकित करने का उद्देश्य नहीं है -
(a) चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्ति का विकास
(b) बच्चों द्वारा आनन्द की प्राप्ति
(c) बच्चों के लेखन में परिपक्वता लाना
(d) बच्चों की रचनात्मकता का विकास
CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015
उत्तर : (c)
31. प्राथमिक स्तर पर बच्चों की घर की भाषा को अपनी कक्षा में स्थान देना जरूरी है, क्योंकि घर की भाषा -
(a) सरल होती है
(b) बच्चे ने अभी पूर्णतः नहीं सीखी है
(c) बच्चे की भाषायी पूँजी है
(d) मानक स्वरूप लिए होती है
CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015
उत्तर : (c)
32. हिन्दी भाषा के शिक्षक के रूप में आपके लिए सबसे कम महत्वपूर्ण है -
(a) भाषा प्रयोग की क्षमता का विकास
(b) व्याकरणिक नियमों की जानकारी
(c) भाषा-कौशलों का ज्ञान
(d) संवैधानिक मूल्यों की जानकारी
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2015
उत्तर : (d)
33. कक्षा ‘एक और दो’ के बच्चों के लिए आप किस तरह की कहानी का चयन करेंगे?
(a) जो बहुत छोटी हो।
(b) जिसमें बहुत सारे पात्र हों।
(c) जिसमें दो ही पात्र हों
(d) जिसके शब्दों, वाक्यों और घटनाओं के वर्णन की शैली चित्रात्मक हो।
CTET - Ist Paper (I-V) July 2013
उत्तर : (d)
34. शब्द का अर्थ स्पष्ट करने हेतु कौन-सा तरीका सर्वाधिक उपयुक्त है—
(a) वाक्यप्रयोग (b) व्याख्यान
(c) भ्रमण (d) चित्र-निर्माण
UP TET - Ist Paper (I-V) Dec. 2016
उत्तर : (a)
35. नाटक शिक्षण में ‘कक्षाभिनय प्रणाली’ के प्रयोग से—
(a) शिक्षक एवं बच्चों का समय व्यर्थ होता है
(b) पात्रानुसार बच्चों द्वारा अभिनय से सीखने की प्रक्रिया में तेजी आती है

- (c) बच्चों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं
- UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014**
उत्तर : (b)
36. आदर्श हिन्दी शिक्षक के लिए आवश्यक है –
(a) व्याकरण का ज्ञान होना (b) हिन्दी साहित्य का ज्ञान होना
(c) शुद्ध उच्चारण करना (d) उपरोक्त सभी
- UP TET - IInd Paper (VI-VIII) June 2013**
उत्तर : (d)
37. बच्चे के घर की भाषा और विद्यालय की भाषा के बीच के सम्बन्ध को –
(a) कठोरता से देखना चाहिए
(b) उपेक्षित करना चाहिए
(c) उसकी विविधता और लचीलेपन के साथ देखना चाहिए
(d) समाप्त कर देना चाहिए
- Bihar TET - Ist Paper (I-V) 2011**
उत्तर : (c)
38. गृह कार्य का मुख्य उद्देश्य है–
(a) छात्र को घर पर व्यस्त रखना
(b) पढ़ाए गए पाठ को दोहराने के लिए अवसर देना
(c) सुलेख की योग्यता का विकास करना
(d) सम्बन्धित पाठ में रुचि उत्पन्न करना
- Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016**
उत्तर : (b)
39. छात्रों के शब्द भण्डार में वृद्धि करने का उपाय है–
(a) शब्दकोश का उपयोग
(b) छात्रों में स्वाध्याय की प्रवृत्ति को बढ़ाना
(c) शिक्षक द्वारा अच्छे व नये शब्दों का प्रयोग
(d) उपरोक्त सभी
- Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016**
उत्तर : (d)
40. प्रत्येक पाठ के प्रारम्भ में होना चाहिए–
(a) पाठ का सार (b) परिशिष्ट
(c) प्रस्तावना (d) अभ्यास
- Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014**
उत्तर : (c)
41. विद्यार्थियों में भाषा की रुचि का विकास करने का उपयुक्त उपाय है–
(a) विद्यार्थियों के व्याकरण के ज्ञान को बढ़ाना
(b) विद्यार्थियों को पाठ्य-पुस्तकें पढ़वाना
(c) विद्यार्थियों को मौखिक रूप से अधिकाधिक समझाना
(d) उपरोक्त सभी
- Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014**
उत्तर : (c)
42. प्राथमिक स्तर पर भाषा अध्ययन में मुख्य तत्त्व होगा–
(a) व्याकरण का उपयोग (b) शब्द-भण्डार-अभिवृद्धि
(c) साहित्यिक समझ (d) उच्चारण की स्पष्टता
- Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014**
उत्तर : (d)
43. भाषा-शिक्षण की कौन-सी विधि मातृभाषा को मध्यस्थ बनाए बिना दूसरी भाषा को सिखाने पर बल देती है?
(a) द्विभाषीय विधि (b) अनुवाद विधि
(c) व्याकरण एवं अनुवाद विधि (d) प्रत्यक्ष विधि
- CTET - Ist Paper (I-V) Feb 2015**
CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011
उत्तर : (d)
44. भाषा सीखने के लिए कौन-सा कारक सर्वाधिक महत्वपूर्ण है?
(a) भाषा के व्याकरणिक नियम
(b) पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर
(c) भाषा की पाठ्य-पुस्तक
(d) समृद्ध भाषिक वातावरण
- CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012**
उत्तर : (d)
45. बच्चे विद्यालय आने से पहले–
(a) अपनी भाषा की नियमबद्ध व्यवस्था की व्यावहारिक कुशलता के साथ आते हैं
(b) कोरी स्लेट होते हैं
(c) भाषा का समुचित उपयोग करने में समर्थ नहीं होते हैं
(d) भाषा के चारों कौशलों पर पूर्ण अधिकार रखते हैं
- CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012**
उत्तर : (a)
46. नेहा अपनी बात कहते समय अपनी मातृभाषा के शब्दों का प्रयोग करती है। आप क्या करेंगे?
(a) लक्ष्य भाषा के शब्द का प्रयोग करते हुए सहजता से उसके वाक्य को दोहराएंगे
(b) उसे डाँटेंगे कि वह अपनी भाषा के शब्दों का प्रयोग न करे
(c) उसे बताएंगे कि किसी शब्द विशेष को क्या कहते हैं
(d) उसे बताएंगे कि ये शब्द गलत है
- CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014**
उत्तर : (a)
47. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा का माध्यम –
(a) अंग्रेजी होना चाहिए
(b) उर्दू होना चाहिए
(c) बच्चे की मातृभाषा होना चाहिए
(d) हिन्दी होना चाहिए
- CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014**
उत्तर : (c)
48. प्राथमिक स्तर की पाठ्य-पुस्तकों का निर्माण करते समय आप किस बिन्दु पर विशेष ध्यान देंगे?
(a) हिन्दी भाषा के वैविध्यपूर्ण रूप शामिल हों
(b) उपदेशात्मक पाठ शामिल हो
(c) कहानियाँ अधिक-से-अधिक शामिल हों
(d) प्रसिद्ध लेखकों की रचनाएँ शामिल हों
- CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014**
उत्तर : (a)
49. समग्र भाषा पद्धति पर आधारित कक्षा–
(a) गतिविधियों के आयोजन पर बल देती है
(b) बच्चों के भाषायी विकास की स्पष्ट समझ पर बल देती है
(c) बाल साहित्य को पढ़कर सुनाने पर बल देती है
(d) सभी भावाओं को सीखने पर बल देती है
- CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015**
उत्तर : (b)
50. बहुभाषिक एवं बहुसांस्कृतिक कक्षा में –
(a) बच्चों को मातृभाषा का प्रयोग वर्जित होना चाहिए
(b) बच्चों की मातृभाषा को समुचित सम्मान, स्थान देते हुए मानक भाषा से भी परिचय कराना चाहिए
(c) बच्चों को केवल मानक भाषा के प्रयोग के लिए ही पुरस्कृत करना चाहिए
(d) बच्चों की मातृभाषा का ही सदैव प्रयोग किया जाना चाहिए।
- CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012**
उत्तर : (b)

51. भाषा-शिक्षण के सन्दर्भ में किसी शिक्षक के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है—
 (a) पाठ्यचर्या सहगामी क्रियाओं का आयोजन करना
 (b) भाषा प्रयोग के अधिक अवसर प्रदान करना
 (c) निर्धारित पाठ्यक्रम को पूरा करना
 (d) परीक्षा का आयोजन करना
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2015
 उत्तर : (b)
52. 'बालक की प्रारम्भिक शिक्षा उसकी मातृभाषा में दी जाये' यह मानना है—
 (a) मॉण्टेसरी का (b) महात्मा गाँधी का
 (c) फ्रॉबेल का (d) क्लिपेट्रिक का
UP TET - Ist Paper (I-V) Dec. 2016
 उत्तर : (b)
53. प्राथमिक स्तर पर 'भाषा-सिखाने' से तात्पर्य है -
 (a) भाषावैज्ञानिक तथ्य स्पष्ट करना
 (b) भाषा का व्याकरण सिखाना
 (c) उच्चस्तरीय साहित्य पढ़ना
 (d) भाषा का प्रयोग सिखाना।
CTET - Ist Paper (I-V) July 2013
 उत्तर : (d)
54. सपना अपनी कक्षा के बच्चों को मौखिक अभिव्यक्ति के अवसर देने के लिए अनेक क्रिया-कलाप करती है। आप निम्नलिखित में से सबसे ज्यादा प्रभावी किसे मानते हैं?
 (a) विभिन्न परिस्थितियों से संवाद-अदायगी करना
 (b) शब्दों को जोर-जोर से बोलना
 (c) कहानी को बोल-बोलकर पढ़ना
 (d) समाचार-पत्र का वाचन करना
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012
 उत्तर : (a)
55. वाणी और लेखन में मूल अन्तर यह है कि लिखित भाषा..... स्तर पर देखी जाती है और..... होती है।
 (a) चेतन, स्वाभाविक (b) अचेतन, स्वाभाविक
 (c) अचेतन, कालबद्ध (d) सचेतन, कालबद्ध
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016
 उत्तर : (d)
56. पढ़ने की संस्कृति के विकास के क्रम में..... पठन को प्रोत्साहित किए जाने की आवश्यकता है।
 (a) वैयक्तिक (b) सस्वर
 (c) मौन (d) सामूहिक
CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015
 उत्तर : (a)
57. पढ़ने का प्रारंभ -
 (a) वर्णमाला से होना चाहिए।
 (b) कहानियों से होना चाहिए।
 (c) कविताओं से होना चाहिए।
 (d) अर्थ-पूर्ण सामग्री से होना चाहिए।
CTET - Ist Paper (I-V) July 2013
 उत्तर : (d)
58. एक बहु-सांस्कृतिक कक्षा में आप एक भाषा-शिक्षक के रूप में किस बात को अधिक महत्व देंगे?
 (a) पाठ्य-पुस्तक के प्रत्येक पाठ को भली-भाँति समझाना
 (b) बच्चों को व्याकरण सिखाना
 (c) स्वयं शुद्ध भाषा-प्रयोग
 (d) बच्चों को भाषा-प्रयोग के अधिक से अधिक अवसर देना
CTET - Ist Paper (I-V) June 2011
 उत्तर : (d)
59. बच्चे विद्यालय आने से पहले -
 (a) भाषा नहीं जानते
 (b) अपनी भाषा का व्याकरण जानते हैं
 (c) वर्णमाला जानते हैं
 (d) भाषा के सभी कौशलों में पारंगत होते हैं
Bihar TET - Ist Paper (I-V) 2011
 उत्तर : (a)
60. रमेश सातवीं कक्षा में पढ़ता है। वह सामान्य बातचीत में ठीक है, लेकिन पढ़ते समय वह बार-बार अटकता है। यह सम्भवतः..... से ग्रस्त है।
 (a) डिस्कैल्कुलिया (b) डिस्ग्राफिया
 (c) डिस्लेक्सिया (d) डिस्फेजिया
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016
 उत्तर : (c)
61. प्राथमिक स्तर पर बच्चों की भाषा शिक्षा के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
 (a) बच्चे समृद्ध भाषा-परिवेश में सहज और स्वतः रूप से भाषा में परिमार्जन कर लेंगे
 (b) बच्चे भाषा की जटिल और समृद्ध संरचनाओं के साथ विद्यालय आते हैं
 (c) बच्चों की भाषा-संकल्पनाओं और विद्यालय में प्रचलित भाषा परिवेश में विरोधाभास ही भाषा सीखने में सहायक होता है
 (d) सुधार के नाम पर की जाने वाली टिप्पणियों व निरर्थक अभ्यास से बच्चों में अरुचि उत्पन्न हो सकती है
CTET - Ist Paper (I-V) June 2011
 उत्तर : (c)
62. एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग—
 (a) कक्षायी जटिलताओं को बढ़ाता है
 (b) शिक्षकों के लिए गहन समस्या है
 (c) संज्ञानात्मक विकास में सहायक है
 (d) किसी भी एक भाषा में निपुणता में बाधक है
CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012
 उत्तर : (c)
63. प्राथमिक स्तर पर भाषा की पाठ्य-पुस्तकों में किस तरह की रचनाओं को स्थान दिया जाना चाहिए?
 (a) विदेशी साहित्य की रचनाएँ
 (b) ऐसी रचनाएँ जो बच्चों के परिवेश से जुड़ी हों और जिनमें भाषा की अलग-अलग छटाएँ हों
 (c) जो प्रत्यक्ष रूप से मूल्यों पर आधारित हो
 (d) केवल कहानियाँ अथवा कविताएँ
CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012
 उत्तर : (b)
64. कक्षा में मौजूद बहुभाषिकता—
 (a) बच्चों को 'लक्ष्य भाषा' सीखने के लिए हतोत्साहित करती है
 (b) शिक्षक के लिए एक जटिल और कठोर चुनौती है
 (c) भाषा-शिक्षण में बाधक है
 (d) भाषा-शिक्षण में एक संसाधन के रूप में प्रयुक्त हो सकती है
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012
 उत्तर : (d)
65. उच्च प्राथमिक स्तर पर हिन्दी भाषा-विकास के लिए कौन-सी गतिविधि उपयोगी नहीं हो सकती?
 (a) मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाना
 (b) सूचना, डायरी-लेखन, विज्ञापन-लेखन आदि का कार्य करवाना

- (c) पढ़ी गई कहानियों का समूह में नाट्य-रूपान्तरण
(d) विज्ञापनों, पोस्टरों, साइनबोर्ड और भाषा के अन्य उपयोगों का विश्लेषण करना
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014
उत्तर : (a)
66. कहानी, कविता, गीतों और नाटकों के माध्यम से बच्चे-
(a) केवल मूल्यों का अर्जन करते हैं
(b) केवल अपनी तर्कशक्ति का विकास करते हैं
(c) अपनी सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ते हैं
(d) केवल मनोरंजन प्राप्त करते हैं
CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014
उत्तर : (c)
67. भाषा की कक्षा में यह जरूरी है कि -
(a) भाषा की पाठ्य-पुस्तक पर विशेष ध्यान दिया जाए
(b) बच्चे मानक भाषा में ही बातचीत करें
(c) भाषिक पृष्ठभूमि के आधार पर किसी को पीछे न छोड़ा जाए
(d) बच्चों की अधिक-से-अधिक परीक्षाएँ ली जाएँ
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014
उत्तर : (c)
68. कविता-शिक्षण के सन्दर्भ में आप किस बिन्दु को सर्वाधिक महत्त्व देते हैं?
(a) कविता का एक निश्चित अर्थ होता है
(b) कविता के एक से अधिक अर्थ हो सकते हैं
(c) कविता में सामाजिक परिस्थितियों की झलक नहीं होती
(d) कविता में राजनीतिक परिस्थितियों की झलक नहीं होती
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014
उत्तर : (b)
69. उच्च प्राथमिक स्तर पर हिन्दी भाषा की समावेशी कक्षा का स्वरूप निर्धारित करने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है-
(a) अभ्यास कार्य (b) शिक्षण प्रक्रिया
(c) आकलन (d) पाठ्य-पुस्तक
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015
उत्तर : (b)
70. उच्च प्राथमिक स्तर पर मुहावरे-लोकोक्तियों के शिक्षण के सम्बन्ध में आपके लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है-
(a) मुहावरे-लोकोक्तियों का वाक्यों में प्रयोग करना
(b) अधिक-से-अधिक मुहावरे-लोकोक्तियों के प्रयोग द्वारा भाषा को आलंकारिक बनाना
(c) सन्दर्भानुसार मुहावरे-लोकोक्तियों के प्रयोगों को समझना और उनका प्रयोग करना
(d) मुहावरे-लोकोक्तियों का अर्थ समझने का प्रयत्न
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2015
उत्तर : (c)
71. भाषा शिक्षक में होना आवश्यक नहीं है-
(a) व्याकरण का ज्ञान
(b) सुन्दर लेख
(c) विषय और मूल्यांकन विविधियों का ज्ञान
(d) रसायनों का ज्ञान होना
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Dec. 2016
उत्तर : (d)
72. नाटक शिक्षण की उपयुक्त विधि है -
(a) कक्षा अभिनय प्रणाली (b) रंगमंच प्रणाली
(c) अर्थबोध प्रणाली (d) व्याख्या प्रणाली
- UP TET - IInd Paper (VI-VIII) June 2013**
उत्तर : (a)
73. सृजनात्मकता का विकास करने में कौन-सा सहायक नहीं है?
(a) कविता पूरी करना
(b) चित्र पर आधारित मौखिक अथवा लिखित वर्णन
(c) प्रश्नों के उत्तर लिखना
(d) अधूरी कहानी को पूरा करना
Bihar TET - Ist Paper (I-V) 2011
उत्तर : (c)
74. भाषा की कक्षा में-
(a) दीवारें चार्ट से भरी हों
(b) शिक्षक द्वारा प्रयुक्त गतिविधियाँ और युक्तियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं
(c) औपचारिक रूप से आकलन पर बल दिया जाए
(d) व्याकरणिक नियमों पर बल देना चाहिए
Bihar TET - Ist Paper (I-V) 2011
उत्तर : (b)
75. आगमन विधि के रूपों की संख्या है-
(a) पाँच (b) दो
(c) सात (d) तीन
Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016
उत्तर : (b)
76. किसी भाषा कक्षा में कहानी-कथन की आवश्यकता के सन्दर्भ में कौन-सा तर्क उचित नहीं है?
(a) सभी बच्चों को भाषा सुनने का परिवेश मिलता है।
(b) सभी बच्चों की क्षमता को ध्यान में रखते हुए यह उचित नहीं है
(c) बच्चों को शब्द-भण्डार के विकास के अवसर प्राप्त होते हैं।
(d) सभी बच्चों की क्षमता-अनुसार कल्पना-शक्ति का विकास होता है।
CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011
उत्तर : (d)
77. उच्च प्राथमिक स्तर पर कहानी, कविता पढ़ने के बाद यह जरूरी है कि बच्चे-
(a) प्रश्नों के लिखित उत्तर दे सकें
(b) उसे अपने शब्दों में दोहरा सकें
(c) विपरीत भाव की कहानी या कविता लिख सकें
(d) उन्हें अपने अनुभव संसार से जोड़ सकें
CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013
उत्तर : (d)
78. रश्मि अपनी कक्षा को बाहर मैदान में ले जाती है और पर्यावरण पर आधारित कविता-पाठ का कार्य करती है। रश्मि का उद्देश्य है-
(a) बच्चों को रोज़मर्रा की चर्चा से कुछ अलग माहौल देना
(b) बच्चों को मैदान में घूमने का अवसर देना
(c) मैदान के प्राकृतिक वातावरण के साथ सम्बन्ध जोड़ते हुए कविता को समझने का अवसर देना
(d) अपने शिक्षक-प्रशिक्षण में सीखी बातों का निर्वाह करना
CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013
उत्तर : (c)
79. विद्यालय में एक से अधिक भाषाओं का शिक्षण-
(a) जटिल समस्याएँ उत्पन्न करता है

- (b) अनेक भाषाओं के शिक्षकों के रोजगार को बढ़ावा देता है
- (c) बहुभाषिकता और राष्ट्रीय सद्भाव का प्रसार करता है
- (d) व्यावहारिक नहीं है

CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013

उत्तर : (c)

80. एक बहुभाषिक कक्षा में आप किसे सबसे कम महत्व देंगे?

- (a) विभिन्न प्रकार का बाल साहित्य
- (b) कक्षा में विभिन्न प्रकार की सामग्री
- (c) कक्षा के बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक संदर्भों के प्रति संवेदनशीलता
- (d) बच्चों को सिखाना कि दो भाषाओं के मध्य विद्यमान समानता व अन्तर का विश्लेषण कैसे किया जाता है

CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012

उत्तर : (d)

81. 'उसने पढ़ा।', 'उसने खाया।' और 'उसने चीखा।' जैसे भाषा-प्रयोग दर्शाते हैं—

- (a) नियम का उल्लंघन
- (b) सन्दर्भ की समझ न होना
- (c) नियम कंठस्थ न होना
- (d) नियमों का अति सामान्यीकरण

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012

उत्तर : (c)

82. कक्षा 'एक' के बच्चेएवंसे प्राप्त बोलचाल की भाषा के अनुभवों को लेकर ही विद्यालय आते हैं।

- (a) घर-परिवार, पड़ोसी
- (b) घर-परिवार, परिवेश
- (c) घर-परिवार, दोस्तों
- (d) घर-परिवार, टी.वी.

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (b)

83. नासिरा पढ़ते समय अनेक बार अटकती है। उसे पढ़ने में कठिनाई होती है। उसकी समस्या मुख्यतः से सम्बन्धित है।

- (a) पठन-अरुचि
- (b) बुद्धि-लब्धि
- (c) डिस्लेक्सिया
- (d) डिस्ग्राफिया

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (c)

84. प्राथमिक स्तर पर बच्चों के लिए बाल-साहित्य के चयन का मुख्य आधार क्या होना चाहिए?

- (a) छोटी रचनाएँ
- (b) रोचक विषय-वस्तु
- (c) रंगीन चित्र
- (d) सरल जानकारी

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (b)

85. हिन्दी भाषा के प्रश्न-पत्र में आप किस सवाल को सबसे बेहतर मानते हैं?

- (a) संज्ञा की परिभाषा बताइए
- (b) लाल बहादुर शास्त्री के बचपन का क्या नाम था?
- (c) बाबा भारती क्यों उदास थे?
- (d) अगर आप बाबा भारती की जगह होते तो क्या करते?

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014

उत्तर : (d)

86. कोई भी भाषा पुस्तक तभी सफल मानी जाएगी, जब —

- (a) वह बच्चों में साहित्य की धरोहर और वर्तमान साहित्य के प्रति उत्सुकता बनाए
- (b) वह बच्चों को प्राचीन साहित्य की पूरी जानकारी दे

- (c) वह बच्चों को व्याकरण के नियमों से परिचित कराए
- (d) वह बच्चों को केवल प्रसिद्ध साहित्य से परिचित कराए

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014

उत्तर : (a)

87. पहली कक्षा की भाषा अध्यापिका अपने एक विद्यार्थी के भाषायी विकास के सम्बन्ध में चिन्तित है, क्योंकि—

- (a) विद्यार्थी पठन-पाठन में रुचि प्रदर्शित नहीं करता है
- (b) विद्यार्थी को घर पर बात करने के बहुत कम अवसर मिलते हैं।
- (c) विद्यार्थी के माता और पिता की मातृभाषा अलग-अलग है।
- (d) विद्यार्थी अपने साथियों से बहुत झगड़ता है।

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (a)

88. बच्चों के बोलना-सीखने के सन्दर्भ में कौन-सा कथन सही है?

- (a) सभी बच्चों की बोलना सीखने की गति एक समान होती है।
- (b) बड़े परिवार में बच्चों की बोलना सीखने की गति तेज होती है।
- (c) निर्धन परिवारों से आए बच्चों की बोलना सीखने की गति धीमी होती है।
- (d) कहने-सुनने के अधिक-से-अधिक अवसर मिलने पर बच्चे बोलना सरलता से सीखते हैं।

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (d)

89. विद्यालय/कक्षा में समृद्ध भाषायी परिवेश से तात्पर्य है—

- (a) मुख्य धारा की भाषा सुनने के अधिक-से-अधिक अवसर
- (b) बोलने-सुनने, पढ़ने-लिखने के अधिक-से-अधिक अवसर
- (c) एक से अधिक भाषाओं के शब्दकोष की उपलब्धता
- (d) अध्यापक को एक से अधिक भाषाओं की जानकारी

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (b)

90. आपके विद्यार्थी पाठ में आए नवीन/अपरिचित शब्दों के अर्थ जान सकें, इसके लिए आप—

- (a) पाठ के अन्त में दिए गए शब्दार्थ देखने के लिए कहेंगी
- (b) शब्दकोष देखना सिखाएँगी
- (c) शब्द का अर्थ लिखकर बताएँगी
- (d) पाठ के सन्दर्भ में अर्थ समझने की स्थिति पैदा करेंगी

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (c)

91. हिन्दी भाषा शिक्षक के रूप में आप किसे सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं?

- (a) बच्चों की लेखन-क्षमता का विकास करना
- (b) बच्चों को विभिन्न सन्दर्भों में भाषा प्रयोग सिखाना
- (c) बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास करना
- (d) बच्चों के व्याकरण के नियम सिखाना

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015

उत्तर : (b)

92. सातवीं कक्षा में पढ़ने वाली रूबी कक्षा में सबसे पहले अपना कार्य समाप्त कर लेती है। हिन्दी भाषा शिक्षक के रूप में आप क्या करेंगे?

- (a) रूबी को दूसरे बच्चों के कार्य की जाँच का एकमात्र अधिकारी बताएँगे
- (b) रूबी की दूसरों से तुलना करेंगे
- (c) रूबी को उसकी पसन्द का कार्य करने के लिए कहेंगे

- (d) रूबी से शान्त बैठने के लिए कहेंगे
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015
उत्तर : (c)
93. भाषा सीखने में सामाजिक अन्तःक्रिया का महत्वपूर्ण स्थान है। इस कथन का सम्बन्ध.....से है—
(a) स्किनर (b) चॉम्स्की
(c) वाइगोत्सकी (d) पियाजे
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015
उत्तर : (c)
94. भाषा-शिक्षण में कौन-सा बिन्दु सबसे कम महत्वपूर्ण है?
(a) भाषायी अभ्यास (b) भाषिक परिवेश
(c) पाठ्य-सामग्री (d) परीक्षाएँ
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012
उत्तर : (d)
95. प्रश्न पूछना, प्रतिक्रिया व्यक्त करना, परिचर्चा में भाग लेना, वर्णन करना -
(a) केवल साहित्यिक गतिविधियाँ हैं
(b) भाषा-आकलन के तरीके मात्र हैं
(c) भाषा-सीखने-सिखाने तथा आकलन के तरीके हैं
(d) केवल शिक्षण पद्धति हैं
CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012
उत्तर : (c)
96. बच्चे के सीखने की प्रक्रिया में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका होगी—
(a) बच्चे द्वारा भाषायी प्रयोग के नियम पकड़ना
(b) बच्चे का उच्चारण
(c) व्याकरण का ज्ञान
(d) पाठ्य पुस्तकों की सामग्री
Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011
उत्तर : (a)
97. भाषा शिक्षक को एक बहु सांस्कृतिक कक्षा के किस बात पर बल देना चाहिए?
(a) बच्चों का भाषा प्रयोग के अधिक-से-अधिक अवसर देना
(b) पाठ्य-पुस्तक के प्रत्येक पाठ को भली-भाँति समझाना
(c) बच्चों को व्याकरण सिखाना
(d) स्वयं द्वारा भाषा का शुद्ध प्रयोग करना
Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014
उत्तर : (a)
98. व्याकरण शिक्षण की आगमन विधि में—
(a) नियम के उदाहरण की ओर जाते हैं
(b) उदाहरण से नियम की ओर जाते हैं
(c) सूत्र कण्ठस्थ कराते हैं
(d) पाठ्यपुस्तक का प्रयोग करते हैं
Bihar TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011
उत्तर : (b)
99. जो बच्चे विशेष रूप से पढ़ने में कठिनाई महसूस करते हैं, वे—
(a) डिस्ग्राफिया से ग्रस्त होते हैं
(b) मन्दबुद्धि होते हैं
(c) डिस्लेक्सिया से ग्रस्त होते हैं
(d) सीखने में अक्षम होते हैं
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015
उत्तर : (c)

100. द्वितीय भाषा शिक्षण की तुलनात्मक विधि है—
(a) सिद्धांत प्रणाली (b) व्यतिरेकी विधि
(c) व्यास प्रणाली (d) तुलना विधि
Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) 2012
उत्तर : (b)
101. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार कौन-सा कथन सही है?
(a) भाषा केवल भाषा की कक्षा तक सीमित होनी चाहिए
(b) भाषा-शिक्षण एक प्रकार से अन्य विषयों की कक्षाओं में भी मौजूद रहता है
(c) बच्चे विद्यालय आकर ही भाषा सीखते हैं
(d) प्राथमिक स्तर पर भाषा सीखने-सिखाने में केवल पढ़ने पर बल देना चाहिए
CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013
उत्तर : (b)
102. वाइगोत्सकी के विचारों पर आधारित कक्षा में पर सबसे अधिक बल दिया जाता है।
(a) कविता दोहराने (b) कहानी सुनने
(c) कार्य-पत्रकों (worksheets) (d) परस्पर अन्तः क्रिया
CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014
उत्तर : (d)
103. हमारी कक्षाओं में बच्चे भिन्न-भिन्न भाषिक पृष्ठभूमि से आते हैं, अतः -
(a) उनकी भाषाओं को भी कक्षा में सम्मान देना अनिवार्य है।
(b) उनकी भाषाओं को सीखना सभी शिक्षार्थियों के लिए अनिवार्य है।
(c) भाषा की पाठ्य-पुस्तक में उनकी सभी भाषाओं के शब्द वाक्य होना अनिवार्य है।
(d) उनकी सभी भाषाओं की जानकारी शिक्षक के लिए अनिवार्य।
CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014
उत्तर : (a)
104. प्राथमिक स्तर पर एक भाषा-शिक्षक से सर्वाधिक अपेक्षित है—
(a) बच्चों को मानक भाषा का प्रयोग करना सिखाना।
(b) कक्षा और कक्षा के बाहर बच्चों को भाषा-प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करना।
(c) बच्चों की निरंतर परीक्षाएँ लेना।
(d) पाठ्य-पुस्तक में दी गई सभी कहानी-कविताओं को कंठस्थ करना।
CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014
उत्तर : (b)
105. भाषा की कक्षा में यह जरूरी है कि—
(a) भाषा-शिक्षक भाषा का पूर्ण ज्ञाता हो
(b) भाषा-शिक्षक बच्चों की उच्चारणगत शुद्धता पर विशेष ध्यान दे
(c) भाषा-शिक्षक बच्चों की वर्तनी को बहुत कठोरता से ले
(d) स्वयं भाषा-शिक्षक की भाषा प्रभावी हो
CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015
उत्तर : (d)
106. स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को विकसित करना—
(a) भाषा-शिक्षण को किसी प्रकार की दिशा नहीं देता
(b) भाषा-शिक्षण का एकमात्र उद्देश्य है

- (c) भाषा-शिक्षण का उद्देश्य नहीं है
(d) भाषा-शिक्षण का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012

उत्तर : (d)

107. भाषा की कक्षा में एक शिक्षक बच्चों से क्या अपेक्षा करता है?

- (a) संस्कृतनिष्ठ भाषा में ही जवाब दें
(b) बच्चे अपनी मातृभाषा का बिल्कुल भी प्रयोग न करें।
(c) बच्चे सवालों के बँधे-बँधाए जवाब न दें
(d) बच्चे सवालों के बँधे-बँधाए जवाब दें

CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012

उत्तर : (c)

108. बच्चों अपने परिवेश में स्वयं भाषा अर्जित करते हैं। इसका एक निहितार्थ यह है कि -

- (a) बच्चों को केवल लक्ष्य भाषा का ही परिवेश उपलब्ध कराया जाए
(b) बच्चों को अत्यंत सरल भाषा का परिवेश उपलब्ध कराया जाए
(c) बच्चों को बिल्कुल भी भाषा न पढ़ाई जाए
(d) बच्चों को समृद्ध भाषिक परिवेश उपलब्ध कराया जाए।

CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012

उत्तर : (d)

109. बच्चों की भाषा-संबंधी क्रमिक प्रगति का लेखा-जोखा करना से संभव है।

- (a) मौखिक परीक्षा (b) पोर्टफोलियो
(c) उत्तर-पुस्तिकाओं (d) लिखित परीक्षा

CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012

उत्तर : (b)

110. संदर्भ के अनुसार शब्दों के उपयुक्त चयन संबंधी त्रुटियों को दूर करने के लिए सर्वाधिक कारगर तरीका क्या है?

- (a) विविध भाषा-प्रयोग से परिचित कराना
(b) विविध शब्दों का वाक्य-प्रयोग करवाना
(c) व्याकरण की विविध पुस्तकें पढ़ाना
(d) विविध शब्दों की सूची याद करवाना

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016

उत्तर : (b)

111. जब शिक्षिका पूछती है कि “हम भी सफल होंगे- इस वाक्य में ‘भी’ लगने से अर्थ में क्या अन्तर आता है?”, तो इसका आशय है कि शिक्षिका बच्चों को -

- (a) अवलोकन क्षमता के अवसर देना चाहती है
(b) भाषा की बारीकियाँ समझाना चाहती है
(c) व्याकरण सिखाना चाहती है
(d) परीक्षा के लिए तैयार करना चाहती है

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2015

उत्तर : (d)

112. कक्षा में कुछ बच्चे लिखते समय वर्तनी संबंधी त्रुटियाँ करते हैं। एक भाषा-शिक्षक के रूप में आप क्या करेंगे?

- (a) शब्दों का सही रूप लिखते हुए बच्चों को दोनों तरह के शब्दों का अवलोकन करके अंतर पहचानने का अवसर देंगे।
(b) उन्हें सख्त निर्देश देंगे कि वे आगे से गलती न करें।
(c) उनकी त्रुटियों पर बिलकुल ध्यान नहीं देंगे।
(d) उनसे शब्दों को बीस बार लिखने के लिए कहेंगे।

CTET - Ist Paper (I-V) July 2013

उत्तर : (a)

परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. विद्यालयी पाठ्यक्रम में त्रिभाषा सूत्र से क्रियान्वयन इस प्रकार है—

- (a) उच्च प्राथमिक स्तर (b) निम्न माध्यमिक स्तर
(c) निम्न प्राथमिक स्तर (d) ये सभी

2. मातृभाषा शिक्षण का सिद्धांत निम्नलिखित में है—

- (a) क्रियाशीलता का सिद्धांत (b) अभिप्रेरण का सिद्धांत
(c) रुचि का सिद्धांत (d) ये सभी

3. उच्च प्राथमिक स्तर पर पढ़ाई जाने वाली भाषा होगी—

- (a) संघीय भाषा-सह संघीय भाषा
(b) विदेशी भाषा
(c) मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा
(d) उपर्युक्त (a) तथा (b)

4. निम्नलिखित में से मातृभाषा शिक्षण का सिद्धांत नहीं है—

- (a) चिंतन मनन का सिद्धांत (b) आवृत्ति का सिद्धांत
(c) पुनर्बलन का सिद्धांत (d) नियोजन का सिद्धांत

5. निम्न प्राथमिक स्तर पर पढ़ाई जाने वाली भाषा होगी—

- (a) आधुनिक भाषा (b) राष्ट्रीय भाषा
(c) मातृ भाषा (d) विदेशी भाषा

6. राष्ट्र भाषा किसकी प्रतीक है—

- (a) बंधुत्व की (b) राष्ट्रीय एकता की
(c) प्रेम की (d) वसुधैव कुटुम्बकम् की

7. अंतर्राष्ट्रीय भाषा क्या कार्य करती है?

- (a) अपने विचारों के आदान-प्रदान प्रस्तुत करना
(b) एकता स्थापित करना

(c) विभिन्न देशों को मिलाना

(d) विभिन्न राष्ट्रों का एकीकरण

8. भाषा सीखने का परम उद्देश्य क्या है?

- (a) अपने हृदय की बात कहना
(b) अपनी बातें दूसरों को समझाना
(c) अपने विचारों को आदान-प्रदान में भाग लेने
(d) अपना दुख-सुख दूसरे को सुनाना

9. जून 1996 में भारतीय आयोग ने किस भाषा के रूप में परिवर्तन की सिफारिश की थी?

- (a) प्रादेशिक भाषा के रूप में
(b) अहिंदी भाषी क्षेत्र के लिए
(c) त्रिभाषा के रूप में परिवर्तन की
(d) इनमें से कोई नहीं

10. मातृभाषा की क्या विशेषता है?

- (a) अनुवाद करके पढ़ाया जाना
(b) जैसा का वैसा बता देना
(c) बिना अनुवाद करके पढ़ाया जाना
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

11. भावाभिव्यक्तिकरण का सर्वोत्कृष्ट साधन है—

- (a) लचीली भाषा (b) मुहावरेदार भाषा
(c) विदेशी भाषा (d) मातृभाषा

12. भाषा का प्राथमिक रूप क्या है?

- (a) पढ़ना (b) बोलना
(c) लिखना (d) इनमें से कोई नहीं

13. भाषा-शिक्षा के उद्देश्य हैं—
 (a) प्रभावोत्पादक और रमणीय ढंग से बोल और लिख सकें।
 (b) बातें ठीक-ठाक समझ और पढ़ सकें
 (c) सुवाचन, सुवाणी व सुलेखन
 (d) सुद्ध सरल बातें बताना
14. निम्नलिखित में से कौन-सा द्वितीय भाषा शिक्षण का उद्देश्य नहीं है?
 (a) विभिन्न क्षेत्रों परिस्थितियों में हिन्दी भाषा को समझने की योग्यता का विकास
 (b) मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के अनुरूप लिखने की क्षमता का विकास
 (c) दैनिक जीवन में हिंदी में समझने तथा बोलने की क्षमता का विकास
 (d) हिंदी भाषा से संबंधित व्याकरणिक नियमों को कंठस्थ करना।
15. विद्यालय आने से पहले बालक—
 (a) अपनी भाषा के प्रयोग में अत्यंत कमजोर होते हैं।
 (b) अपनी भाषा के प्रयोग में पूरी तरह से दक्ष होते हैं।
 (c) अपनी भाषा के व्याकरण की सचेत समझ रखते हैं।
 (d) अपनी भाषा के व्याकरण के व्याकरण की सचेत समझ नहीं रखते हैं।
16. हिन्दी भाषा में रूढ़िगत शिक्षण विधि में—
 (a) छात्र, पाठ में संभाषिता के अभाव के कारण निष्क्रिय अधिक हो जाते हैं।
 (b) छात्रों को विचाराभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं मिल पाती।
 (c) शिक्षक की भूमिका प्रमुख और छात्रों की भूमिका गौण बन जाती है।
 (d) ये सभी
17. गद्य की रूढ़िगत पाठन विधि का दोष है—
 (a) वाक्य-प्रयोग, मुहावरे, पर्यायवाची शब्दों का अर्थ स्पष्ट नहीं कराया जाता।
 (b) छात्र गद्यांश का अर्थ नहीं समझ पाते
 (c) छात्र की वाचन संबंधी अशुद्धियों को ठीक नहीं कराया जाता
 (d) ये सभी
18. भाषा के रूढ़िगत पाठन विधि में अवकाश के दिनों में घर से निबंध रचना कर लाने से संबंधित सही तथ्य है—
 (a) निबंध की मौलिकता नहीं आ पाती
 (b) निबंध लेखन बेहतर होता है
 (c) अभिव्यक्ति का वास्तविक रूप आ जाता है
 (d) छात्रों की कल्पना शक्ति का विकास होता है
19. प्राथमिक कक्षाओं में खेल द्वारा शिक्षण विधि के अंतर्गत हिन्दी शिक्षण किस प्रकार बेहतर रहता है?
 (a) रिक्त स्थानों की पूर्ति द्वारा
 (b) वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के आधार पर
 (c) उच्चस्तरीय खेल प्रतियोगिता द्वारा
 (d) वाद-विवाद प्रतियोगिता द्वारा
20. खेल द्वारा शिक्षण विधि के अंतर्गत उच्च कक्षाओं के लिए किस विधि का उपयोग उत्तम है?
 (a) समस्या-पूर्ति का खेल
 (b) उच्चस्तरीय विभिन्न प्रतियोगिताओं के खेल
 (c) परिभाषाओं की होड़ का खेल
 (d) उपर्युक्त सभी
21. खेल द्वारा शिक्षण विधि के अंतर्गत माध्यमिक कक्षाओं हेतु उपयोगी विधि है—
 (a) परिभाषाओं की होड़ (b) समस्या पूर्ति
 (c) वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ (d) रिक्त स्थानों की पूर्ति
22. किस शिक्षण विधि में कल्पना शक्ति का विकास करने वाले मनोरंजक खेलों को स्थान दिया गया है?
 (a) बालोद्यान पद्धति (b) डॉल्टन पद्धति
 (c) प्रोजेक्ट पद्धति (d) मॉण्टेसरी पद्धति
23. निम्न में से किस विधि द्वारा भाषा शिक्षण के उद्देश्य, अर्थग्रहण, अभिव्यक्ति तथा सृजन शक्ति तीनों साथ-साथ पूरे होते हैं?
 (a) मॉण्टेसरी पद्धति (b) किंडरगार्डन पद्धति
 (c) डॉल्टन पद्धति (d) प्रोजेक्ट पद्धति
24. भाषा शिक्षण की प्रायः किन नवीन पद्धतियों द्वारा बातों पर विशेष बल दिया गया है?
 (a) क्रियाशीलता (b) बालक की स्वतंत्रता
 (c) बालक की रुचि (d) ये सभी
25. हिन्दी शिक्षण की दृष्टि से निम्न में से कौन-सी पद्धति छोटी कक्षाओं की अपेक्षा बड़ी कक्षाओं के लिए अधिक उपयोगी है?
 (a) मॉण्टेसरी पद्धति (b) किंडरगार्डन पद्धति
 (c) प्रोजेक्ट पद्धति (d) डॉल्टन पद्धति
26. निम्न में से गद्य शिक्षण की विधि है—
 (a) गीत विधि (b) अर्थ-बोध विधि
 (c) खंडान्वय विधि (d) अभिनय विधि
27. निम्न में से कौन-सी शब्दार्थ विधि का विकसित रूप है?
 (a) व्याख्या विधि (b) तुलना विधि
 (c) व्यास विधि (d) गीत विधि
28. किस विधि के द्वारा पढ़ाने पर पद्य के गुण-दोषों की आलोचना करनी पड़ती है?
 (a) समीक्षा विधि (b) व्यास विधि
 (c) तुलना विधि (d) खंडान्वय विधि
29. शिक्षण के अन्वेषण दृष्टिकोण में, सबसे महत्वपूर्ण शिक्षण परिणाम — होता है।
 (a) रटना (b) प्रबलन
 (c) हेरफेर (d) संकल्पनात्मक समझ
30. शिक्षण- प्रक्रिया में निम्नलिखित में किसका भली प्रकार ध्यान रखना चाहिए?
 (a) विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता
 (b) अनुशासन और नियमित उपस्थिति
 (c) गृहकार्य की जाँच में लगन
 (d) विषय-वस्तु का कठिनाई स्तर

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (d) | 2. (d) | 3. (d) | 4. (a) | 5. (c) | 6. (b) | 7. (d) | 8. (c) | 9. (b) | 10. (c) |
| 11. (d) | 12. (b) | 13. (c) | 14. (d) | 15. (d) | 16. (d) | 17. (d) | 18. (a) | 19. (a) | 20. (d) |
| 21. (c) | 22. (a) | 23. (b) | 24. (d) | 25. (c) | 26. (b) | 27. (a) | 28. (a) | 29. (d) | 30. (a) |

- ◆ भाषा संकेतों के आदान-प्रदान करने का साधन है।
 - ◆ भाषा मनुष्य की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति का माध्यम है। उसी से सभ्य-असभ्य की पहचान होती है। इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र आदि कोई भी विषय क्यों न हो, भाषा के बिना उसका प्रकटीकरण सम्भव नहीं है, इसलिए हमारे शिक्षा क्रम में भाषा का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। यही कारण है कि स्नातक स्तर तक भाषा की शिक्षा अनिवार्य है।
 - ◆ जहाँ एक ओर भाषा अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन है, वहीं दूसरी ओर भाषा अपने देश एवं संस्कृति से परिचय प्राप्त कराती है।
 - ◆ भाषा ही एक ऐसा साधन है, जिसके द्वारा हम अपने ज्ञान-विज्ञान को संचित रख सकते हैं।
 - ◆ जीवन की यात्रा में भाषा ही हमारा सच्चा साथी है। हम कहीं भी यात्रा कर रहे हों, कहीं भी अध्ययन कर रहे हों, कहीं भी भाषण दे रहे हो भाषा ही हमारा सहारा बनती है।
- भाषा के कार्य एवं महत्व**
- ◆ प्रायः देखा गया है कि जिन बालकों की भाषा मधुर सरल, तथा प्रभावपूर्ण (ओजस्वी) होती है वे आसानी से सबका ध्यान अपनी ओर खींच लेते हैं और सभी के दुलारे बन जाते हैं।
 - ◆ जिन बालकों का बौद्धिक स्तर अच्छा है वे भाषा को भली प्रकार समझकर अभिव्यक्ति का माध्यम बना लेते हैं।
 - ◆ भाषा व्यक्ति को अपनी आवश्यकता इच्छा तथा पीड़ा आदि को दूसरों के समक्ष प्रस्तुत करने में सहायता प्रदान करती है। ताकि दूसरा व्यक्ति उसके भावों को समझकर उसकी सहायता कर सके।
 - ◆ बालक जन्म के उपरान्त ही भाषा का अधिगम करना प्रारम्भ कर देता है और बिना किसी प्रशिक्षण के ही भाषा का संवाद करना प्रारम्भ कर देता है।
 - ◆ भाषा के माध्यम से ही हमें प्राचीन और नवीन आत्मा और विश्व को समझने में सहायता प्रदान करती है।
- भाषा का विस्तार बिन्दु**
- (i) ज्ञान अर्जन का माध्यम
 - (ii) व्यक्तित्व निर्माण का प्रमुख साधन
 - (iii) सभ्य समाज का दर्पण
 - (iv) परस्पर विचार विनिमय का माध्यम
 - (v) शैक्षणिक उपलब्धि का माध्यम
 - (vi) आपसी वातावरण का प्रभाव
 - (vii) साहित्य सृजन का माध्यम
 - (viii) ध्यानाकर्षण का माध्यम
- ◆ भाषा का महत्व दृष्टि से भी आंका जा सकता है कि वह समाज, जाति अथवा राष्ट्र उन्नत समझा जाता है जिसका साहित्य उच्च कोटि का हो।
 - ◆ कुछ लोग भाषा पर भौतिकी दृष्टि से विचार करते हैं उनके अनुसार भाषा ध्वनियों का समूह मात्र है, और यह ध्वनियाँ किसी न किसी अर्थ की प्रतीति कराती हैं।
 - ◆ भाषा को एक सांकेतिक साधन कहा गया है। क्योंकि भाषा के विकास से पूर्व मनुष्य संकेतों के माध्यम से विचार अभिव्यक्त करता था। केवल आंगिक संकेतों के माध्यम से सभी संवाद नहीं कर सकते हैं इसलिये भाषा का आविष्कार हुआ।
- भाषा विकास को प्रभावित करने वाले कारक-**
- भाषा के विकास को निम्न प्रकार से प्रभावित होना पड़ता है-
- ◆ प्रायः ऐसा देखा गया है कि भाषा पर परिवार का बहुत प्रभाव पड़ता है जैसे यदि किसी बालक के माता-पिता बहुभाषी हैं तो बालक भ्रमित हो जायेगा।
 - ◆ भाषा पर बुद्धि, शारीरिक, मानसिक और सामाजिक तथा पारिवारिक प्रभाव अधिक पड़ता है यदि बालक शारीरिक या मानसिक रूप से रोग ग्रसित है तो उसका भाषा विकास अपरिपक्व रहेगा।
 - ◆ जिन बालकों का संवेगात्मक विकास ठीक से नहीं होता है वे बालक भी भाषा को पूर्ण आकार नहीं दे पाते हैं।
 - ◆ **हारतौक** ने कहा कि जिन बालकों का बौद्धिक स्तर ऊँचा होता है उनमें भाषा का विकास तीव्र गति से होता है।
 - ◆ जिन बालकों के जन्म के बाद से भाषा का प्रशिक्षण दिया जाता है उनमें भाषा का विकास तीव्र गति से होता है।
- भाषा के उद्देश्य**
- साहित्य मनोवैज्ञानिकों और भाषा शास्त्रियों ने साहित्यिक भाषा के निम्न उद्देश्य बताये हैं-
1. ज्ञान प्राप्ति
 2. समाज का विकास करना
 3. सौन्दर्य अनुभूति करना
 4. उदात्त भावनाओं का विकास
- भाषा विकास में सुनने की भूमिका**
- ◆ बालक दूसरों के संकेतों को देखकर समझने का प्रयास करता है। जैसे माँ बालक को किसी कार्य के लिए पहली बार पुकारती है तो बालक उसे सुनता है फिर उस पर अमल करता है।
 - ◆ ध्वनि विभेदीकरण करने की क्रिया भाषा का सबसे अच्छा माध्यम है। इसके द्वारा बालक विभिन्न प्रकार की ध्वनियों के माध्यम से अन्तर करना सीख लेता है और सुनने की कला विकसित होने लगती है।
 - ◆ श्रवण से बालकों में शब्द भण्डार की वृद्धि होती है जैसे प्रारम्भ में बालक एक या दो शब्दों को ही ग्रहण करता है परन्तु जब वह खुद को वातावरण में समायोजित करता है तो वह सुन-सुनकर शब्दों का भण्डार कर लेता है।
 - ◆ सुनना एक ग्राह्यात्मक कौशल है इसी से बालकों में शुद्ध श्रवण के द्वारा शुद्ध उच्चारण करने का मार्ग प्रशस्त होता है।

- ◆ सुनने की प्रक्रिया से ही बालकों में भाषा सम्बन्धी कौशल का विकास होता है।

भाषा विकास में बोलने की प्रक्रिया

उपयुक्त कथन के अनुसार वाचन का शुद्ध एवं प्रभावोत्पादक होना आवश्यक है। वाचन-शिक्षण के समय वाचन के निम्न उद्देश्यों का ध्यान अवश्य रखना चाहिए-

1. बालकों को स्वर के आरोह-अवरोह का ऐसा अभ्यास करा दिया जाए कि वे यथा अवसर भावों के अनुकूल न कर सकें।
2. स्वयं बालक अपने मन के भाव व्यक्त करते हुए भावानुसार उचित आरोह-अवरोह साध सके।
3. वाचन इतना प्रभावोत्पादक बन जाए कि जिस उद्देश्य से वाचन किया गया हो, वह सफल हो और व्यक्ति या समाज उससे प्रभावित हो।
4. बालकों के अक्षर, शब्दोच्चारण, उचित-ध्वनि निर्गम, बल तथा सुस्वरता का उचित संस्कार करना।
5. पुस्तक पढ़कर बालक उसका भाव समझ सके तथा दूसरों को समझा सके।

वाचन का प्रयोग तथा अभ्यास प्रारम्भ से ही करा देना चाहिए, क्योंकि बाल्यावस्था में एक बार आदत पड़ जाने पर वह शीघ्र नहीं छूटती तथा बालक उसके अभ्यस्त हो जाते हैं, किन्तु ठीक-ठीक बोलने, समझने, पढ़ने और लिखने मात्र की योग्यता आ जाने से ही भाषा-शिक्षा का उद्देश्य पूरा नहीं होता। व्याकरण की कसौटियों में कसकर शुद्ध ढंग से किसी बात को कह-सुन लेने से ही हमारी तृप्ति नहीं हो पाती। हम यह भी चाहते हैं कि हमारे लिखने और बोलने में एक निरालापन भी हो, उस पर हमारे व्यक्तित्व की छाप हो।

विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. 'भाषा की कक्षा' में कहानियाँ—

- (a) मनोरंजन का साधन है
- (b) पाठ्य-पुस्तक का एक पाठ हैं
- (c) विभिन्न प्रकार की भाषायी संरचनाएँ और चिन्तन-विकास की सम्भावनाएँ लिए होती है
- (d) भाषा-कौशल के विकास का एकमात्र साधन है

CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013

उत्तर : (c)

2. उच्च प्राथमिक स्तर पर भाषा-शिक्षण का उद्देश्य है —

- (a) व्याकरण के नियमों को कण्ठस्थ कराना
- (b) भाषा की विभिन्न संरचनाओं को यान्त्रिक अभ्यास कराना
- (c) सभी साहित्यिक विधाओं में लेखन की कुशलता विकसित करना
- (d) भाषा की बारीकी और सौन्दर्यबोध को समझने की क्षमता का विकास करना

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014

उत्तर : (d)

3. भाषा का प्रमुख प्रकार्य है—

- (a) लेखन दक्षता
- (b) प्रतिवेदन लेखन
- (c) भाषण देना
- (d) संप्रेषण करना

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016

उत्तर : (d)

4. प्राथमिक स्तर पर भाषा-शिक्षण का उद्देश्य है, बच्चों को—

- (a) व्याकरणिक नियमों को कंठस्थ करवाना

- (b) अक्षरों की बनावट के प्रति सचेत करना
- (c) सहज अभिव्यक्ति का अवसर देना
- (d) मातृभाषा की लिपि की पहचान करवाना

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016

उत्तर : (b)

5. हिन्दी भाषा शिक्षण का एक मुख्य उद्देश्य है -

- (a) भाषा का ज्ञान देना
- (b) प्रश्न पूछने, अपनी बात कहने का अवसर देना
- (c) मौन पठन के उपरान्त शब्दार्थ कराना
- (d) व्याकरणिक नियम कण्ठस्थ कराना

Bihar TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (a)

6. 'भाषिक सापेक्षता' के सम्बन्ध में प्रचलित व्याख्या की दृष्टि से सही है—

- (a) भाषा का विचारों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है
- (b) भाषा विचारों को प्रभावित नहीं करती
- (c) भाषा कुछ हद तक विचारों को प्रभावित करती है
- (d) उपरोक्त में से तीनों सही हैं

Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (a)

7. निम्नलिखित में से भाषिक सहवर्ती क्रिया नहीं है—

- (a) अन्त्याक्षरी
- (b) अनुलेख
- (c) आद्याक्षरी
- (d) कविता पाठ

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (b)

8. निम्नलिखित में से कौन-सा भाषा-शिक्षण का उद्देश्य है?

- (a) निजी अनुभवों के आधार पर भाषा का सृजनशील प्रयोग करना
- (b) भाषा सीखते समय त्रुटियाँ बिल्कुल न करना
- (c) भाषा की बारीकी और सौन्दर्यबोध को सही रूप से समझने की क्षमता को प्रोत्साहित करना।
- (d) भाषा के व्याकरण सीखने पर बल देना।

CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012

उत्तर : (c)

9. "विभिन्न कार्यक्षेत्रों से जुड़ी प्रयुक्तियों से विद्यार्थियों को परिचित कराया जाना चाहिए।" इस कथन में 'प्रयुक्ति' से तात्पर्य है।

- (a) विभिन्न भाषा उदाहरण
- (b) विशिष्ट भाषा प्रयोग
- (c) भाषा के नियम
- (d) शब्दों की व्युत्पत्ति

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2015

उत्तर : (b)

10. प्राथमिक कक्षाओं में 'रोल प्ले'(भूमिका निर्वाह) का उद्देश्य होना चाहिए -

- (a) बच्चों को अभिनय सिखाना।
- (b) एक पद्धति के रूप में इसका उपयोग करना।
- (c) विभिन्न संदर्भों में भाषा प्रयोग के अवसर प्रदान करता।
- (d) बच्चों को अनुशासित रखना।

CTET - Ist Paper (I-V) July 2013

उत्तर : (c)

11. उच्चारण सुधारने का कार्य किन कक्षाओं में करना चाहिए?

- (a) प्रारम्भिक
- (b) माध्यमिक

- (c) उच्च-माध्यमिक (d) उच्च कक्षाओं में
Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016
 उत्तर : (a)

12. भाषा-कौशलों के संदर्भ में कौन-सा कथन उचित है?
 (a) विद्यालय में केवल 'पढ़ना', 'लिखना' कौशलों पर ही बल देना चाहिए
 (b) बच्चे केवल सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना कौशल क्रम से ही सीखते हैं
 (c) भाषा के चारों कौशल परस्पर अंतःसम्बन्धित हैं
 (d) भाषा-कौशलों के विकास में अभ्यास की अपेक्षा भाषिक नियमों का ज्ञान जरूरी है

CTET- Ist Paper (I-V) June 2011

उत्तर : (c)

13. 'पढ़ना' कौशल में सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण है—
 (a) शब्दों-वाक्यों को शुद्ध रूप से उच्चरित करना
 (b) केवल अक्षर पहचान

- (c) तेज गति से पढ़ना
 (d) सन्दर्भानुसार अर्थ ग्रहण करना

CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011

उत्तर : (d)

14. किसी विषय में विद्वता प्राप्त करने के लिए..... आवश्यक है।

- (a) प्रतियोगिता (b) अध्यवसाय
 (c) चिन्तन (d) मनन

Uttarakhand TET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2013

उत्तर : (b)

15. कक्षा 'एक' और 'दो' के शुरुआती समय में पढ़ने का प्रारंभसे हो और किसीके लिए हो।

- (a) अर्थ, उद्देश्य (b) अक्षर-ज्ञान, मनोरंजन
 (c) शब्द-पहचान, मूल्यांकन (d) अक्षर-ज्ञान, उद्देश्य

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (a)

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

- भारत में वर्तमान शैक्षिक प्रणाली के समक्ष बड़ी चुनौती — है।
 (a) शिक्षा में समानता (b) वैश्विक तापमान
 (c) समावेशी शिक्षा (d) शारीरिक दंड
- कोई शिक्षक अपने कक्षा के छात्रों से राज्य से समसामयिक घटनाओं से संबंधित समाचार पढ़ने के लिए कहता है। इसके बाद छात्रों से कहा जाता है कि वे घटनाओं को अलग-अलग 'शासकीय प्रणालियों' में वर्गीकृत करें। इस शैक्षिक गतिविधि का उद्देश्य — विषय सीखना है।
 (a) याद करना (रीकॉल) (b) समझ
 (c) शोध (d) दोहरान
- भारत के सन्दर्भ में हिन्दी का कौन-सा रूप प्रचलित नहीं है?
 (a) मातृभाषा (b) राष्ट्रभाषा
 (c) संस्कृत भाषा (d) विदेशी भाषा
- त्रिभाषा सूत्र का मुख्य सन्दर्भ कहाँ है?
 (a) माध्यमिक स्तर पर
 (b) पूर्व प्राथमिक स्तर पर
 (c) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर
 (d) उच्च स्तर पर
- निम्नलिखित में से कौन-सी बात हिन्दी की दरिद्रता की द्योतक है?
 (a) वैज्ञानिक लिपि
 (b) सरल वाक्य रचना
 (c) स्वाभाविकता
 (d) राजनीतिज्ञों द्वारा हिन्दी की उपेक्षा
- निम्नलिखित में से कौन सा तत्त्व हिन्दी में इस समय कम है?
 (a) व्यापकता
 (b) राष्ट्रीय एकता
 (c) अहिन्दीभाषियों द्वारा हिन्दी की स्वीकार्यता

- निम्नलिखित में से कौन-सा अभिवृत्त्यात्मक उद्देश्य है?
 (a) स्वानुभूत विचारों व भावों को अभिव्यक्त करना
 (b) साहित्य का रसास्वादन करना
 (c) धैर्यपूर्वक सुनना
 (d) भाषा और साहित्य में रुचि
- लिपि का सही ज्ञान एवं अभ्यास का उद्देश्य किस स्तर का है?
 (a) प्रारम्भिक स्तर (b) पूर्व माध्यमिक स्तर
 (c) उच्चतर माध्यमिक स्तर (d) उच्च स्तर
- निम्नलिखित में से कौन-सा अशुद्ध उच्चारण का कारण नहीं है?
 (a) सुलेख विहीनता (b) ध्वनि लोप
 (c) ध्वनि विकृति (d) शब्द लाघव की प्रवृत्ति
- चित्रों पर 'प्रश्न करके रचना का शिक्षण देना कौन-सी विधि है?
 (a) शब्द प्रदान विधि (b) खेल विधि
 (c) उद्बोधन विधि (d) चित्र रचना विधि
- गद्य खण्ड के शिक्षण में आप 'वसुन्धरा' शब्द को कैसे समझाएंगे?
 (a) मानचित्र द्वारा (b) प्रतिमूर्ति द्वारा
 (c) रेखाचित्र द्वारा (d) पर्याय कथन द्वारा
- निम्नलिखित में से कौन सा कहानी का वर्ग नहीं है?
 (a) यथार्थवादी (b) आदर्शवादी
 (c) रसवादी (d) आदर्शोन्मुख यथार्थवादी
- अन्य भाषा-शिक्षण की कौन-सी विधि अनुपयुक्त है?
 (a) व्याकरण-अनुवाद विधि (b) वर्णमाला विधि
 (c) प्रत्यक्ष विधि (d) संरचनात्मक विधि
- जटिल परिस्थिति को संसाधित करने में शिक्षक बच्चों की सहायता कर सकता है
 (a) प्रतियोगिता को बढ़ावा देकर और सबसे पहले कार्य पूरा करने वाले बच्चे को पुरस्कार देकर

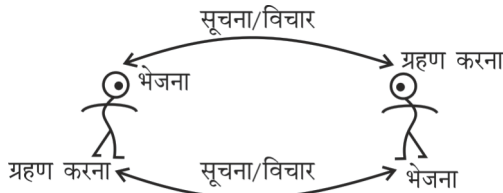
- (b) कोई भी सहायता न देकर, जिससे बच्चे अपने आप निर्वाह करना चाहिए
(c) उस पर एक भाषण देकर
(d) कार्य को छोटे हिस्सों में बाँटने के बाद निर्देश लिखकर
15. हम सभी अपनी बुद्धि, प्रेरणा, अभिरुचि आदि के सन्दर्भ में भिन्न होते हैं। यह सिद्धांत सम्बन्धित है
(a) वैयक्तिक भिन्नता से (b) बुद्धि के सिद्धांतों से
(c) वंशानुक्रम से (d) पर्यावरण से
16. किस भाषा को सभी मानव समूहों यहाँ तक कि साधारण संस्कृति प्रकरण में भी पाया जाता है?
(a) भाषा का विकास
(b) आदिम लोगों की भाषा
(c) मानव संचार में गैर मौखिक संकेत
(d) इनमें से कोई नहीं
17. मानव भाषण का विकास शारीरिक परिपक्वता और व्यक्तिगत-सामाजिक उत्तेजना पर निर्भर विभिन्न प्राकृतिक चरण/चरणों के अंतर्गत आता है। ये चरण हैं—
(a) चिह्नार या पूर्व भाषाई मंच
(b) प्रलाप चरण और भाषण का अनुकरण
(c) ध्वनि और स्थिति की समिति द्वारा सत्य भाषण की प्राप्ति
(d) उपरोक्त सभी
18. बच्चे भाषा अधिग्रहण डिवाइस के साथ पैदा होते हैं, यह किसने कहा था?
(a) स्किनर (b) पायगेट
(c) वायगटस्टिक (d) इनमें से कोई नहीं
19. बच्चे का पहला शब्द सबसे अधिक निम्न में से किससे संबंधित होता है?
(a) अमूर्त विचारों से (b) ठोस वस्तुओं से
(c) समय से (d) उपरोक्त सभी
20. बच्चों के भाषा अध्ययन में एक महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाता है—
(a) ध्वनि संयोजन के लिए अध्ययन नियम
(b) संवादमूलक पैटर्न के लिए अध्ययन नियम
(c) वयस्क भाषण की नकल
(d) वाक्य संरचना के लिए अध्ययन नियम
21. मेटा भाषाई जागरूकता—
(a) सोचने की क्षमता
(b) भाषा के बारे में सोचने और बात करने की क्षमता
(c) भाषा के बारे में बात करने की क्षमता
(d) अन्य दृश्यक चिह्नों से लिखने की योग्यता
22. कुछ नौ महीने के बाद तुतलाहट के चरित्र में बदलाव आ गया है। यह नरम, स्पष्ट और अधिक भाषा जैसी है। उसके नकल का प्रारूप विकसित किया है जो प्रायः वाक् उन्मूलक होता है। उसे कहा जाता है—
(a) शब्दानुकरण (b) सशर्त प्रतिक्रिया
(c) भाषण का अनुकरण चरण (d) पैरेंट चरण
23. भाषा के विकास के एक वर्ण संकर मॉडल को कहा जाता है—
(a) ईसीएम (b) ईसीटी
(c) एमपीपी (d) एआरटी
24. निर्देशात्मक वार्तालाप का अर्थ है—
(a) पाठ्यक्रम में भाषा का विकास
(b) बातचीत के माध्यम से अध्यापन
(c) जटिल विचारों का अध्यापन
(d) छात्रों के जीवन से स्कूल को जोड़ना
25. निजी अनुभवों को हमारी स्मृति को कहा जाता है—
(a) प्रक्रियात्मक स्मृति (b) अर्थ स्मृति
(c) दीर्घकालिक स्मृति (d) प्रासंगिक स्मृति
26. कृतिका घर पर अधिक वार्तालाप नहीं करती, जबकि विद्यालय में बहुत वार्तालाप करती है। यह दर्शाता है—
(a) विद्यालय बच्चों को अत्यधिक वार्तालाप के अवसर प्रदान करता है
(b) शिक्षक चाहते हैं कि बच्चे विद्यालय में खूब वार्तालाप करें
(c) उसे अपना घर पसंद नहीं है
(d) विद्यालय में उसके विचारों की कद्र की जाती है
27. वह स्थिति जिनमें एक बच्चा पदार्थ तथा घटना के बारे में तार्किक सोचना शुरू करता है वह जाना जाता है—
(a) संवेदना प्रेरक स्थिति
(b) साहजिक क्रियात्मक स्थिति
(c) पूर्ण साहजिक स्थिति
(d) दृढ़ क्रियात्मक स्थिति
28. संक्षिप्त विवरण को पढ़ना और विस्तृत ज्ञानमय (detailed comprehension) उत्तर देना, कहलाता है—
(a) तेज पढ़ना (b) स्किमिंग
(c) गहन पढ़ना (d) स्केनिंग
29. अवबोधात्मक उद्देश्य के विशिष्टीकरण का उदाहरण हैं—
(a) वर्गीकरण कर सकेंगे (b) पहचान कर सकेंगे
(c) अन्तर कर सकेंगे (d) उपरोक्त सभी
30. एक अध्यापिका कक्षा में 'रामायण' पढ़ाना चाहती है। उसके द्वारा अपनाई जाने वाली विधि होनी चाहिए—
(a) ब्यूरिस्टिक या अन्वेषण विधि
(b) क्षेत्र-भ्रमण विधि
(c) कहानी विधि
(d) व्याख्यान विधि

उत्तरमाला

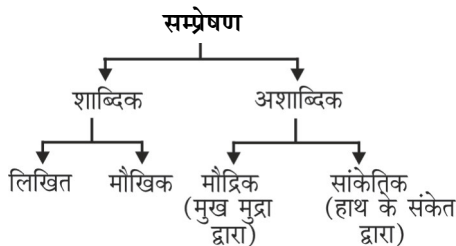
1. (a)	2. (b)	3. (d)	4. (a)	5. (d)	6. (c)	7. (d)	8. (a)	9. (a)	10. (d)
11. (d)	12. (c)	13. (b)	14. (d)	15. (a)	16. (b)	17. (d)	18. (d)	19. (b)	20. (c)
21. (b)	22. (a)	23. (a)	24. (b)	25. (d)	26. (d)	27. (d)	28. (b)	29. (a)	30. (c)

विचारों का संप्रेषण (मौखिक और लिखित)

‘संप्रेषण’ शब्द ‘सम् + प्रेषण’ के योग से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है- सम्यक् (ठीक) प्रकार से भेजना। यहाँ भेजने से आशय विचारों या भावों के भेजने एवं ग्रहण करने से है यह एक द्विपक्षीय प्रक्रिया है। जिसे निम्नांकित ग्राफ द्वारा समझा जा सकता है-



हम जानते हैं कि विचारों, भावों एवं सूचनाओं के आदान-प्रदान के माध्यम को भाषा कहते हैं। यहाँ ध्यान देने वाली बात ये है कि आदान-प्रदान के माध्यम को भाषा कहते हैं परन्तु प्रक्रिया को संप्रेषण कहते हैं। कहा जा सकता है कि भाषा विचारों, भावों एवं सूचनाओं के संप्रेषण का माध्यम है। संप्रेषण शाब्दिक एवं अशाब्दिक दोनों प्रकार के होते हैं इन्हें इस प्रकार से भी समझा जा सकता है।



संप्रेषणीयता किसी भी भाषा का प्रमुख गुण होता है। जैसा कि उपरिलिखित ग्राफ द्वारा स्पष्ट है कि संप्रेषण के शाब्दिक एवं अशाब्दिक दो भेद हैं। शिक्षण के क्षेत्र में शाब्दिक संप्रेषण के विशेष महत्व हैं शाब्दिक संप्रेषण के लिए मुख्यतः दो प्रकार के कौशल आवश्यक हैं-

- (i) ग्राह्यात्मक कौशल
 - (ii) अभिव्यक्तात्मक कौशल
 - (i) **ग्राह्यात्मक कौशल-** ऐसे कौशल जिनकी सहायता से ज्ञान अथवा जानकारी को ग्रहण किया जाता है, ग्रह्यात्मक कौशल कहलाते हैं। शाब्दिक संप्रेषण में श्रवण एवं पठन (पढ़ना) ग्राह्यात्मक कौशल हैं। इसमें सुनकर या पढ़कर विचार/सूचना को ग्रहण करते हैं।
 - (ii) **अभिव्यक्तात्मक कौशल-** ऐसे कौशल जिनके द्वारा हम ज्ञान, जानकारी, सूचना अथवा अनुभव को व्यक्त करते हैं, वह अभिव्यक्तात्मक कौशल है। शाब्दिक संप्रेषण में बोलना एवं लिखना अभिव्यक्तात्मक कौशल हैं।
- इन कौशलों के विकास का समुचित क्रम इस प्रकार है-
- (i) सुनना (ii) बोलना (iii) पढ़ना (iv) लिखना।
- संप्रेषण के इन कौशलों के विस्तृत विवरण निम्न प्रकार है।

ग्रह्यात्मक कौशल

श्रवण पठन

श्रवण-

श्रवण शब्द संस्कृत के ‘श्रु’ धातु से निष्पन्न है जिसका अर्थ होता है सुनना। कान के द्वारा सुन करके सूचनाएँ मस्तिष्क द्वारा ग्रहण की जाती हैं इस कौशल का प्रमुख तत्त्व ध्वनि है। यह भाषा सीखने का प्रथम चरण है इस कौशल का सबसे बड़ा दोष यह है कि श्रवण विकलांगता की दशा में श्रवण कार्य सम्भव नहीं है।

सीखने में श्रवण कौशल की उपयोगिता-

- ◆ सुनना एक बुनयादी कौशल है।
- ◆ अच्छा श्रोता ही अच्छा वक्ता बन सकता है।
- ◆ शिक्षा शिक्षण में श्रवण एक अनिवार्य एवं महत्वपूर्ण कौशल है।
- ◆ कविता आदि का रसास्वादन श्रवण द्वारा ही समुचित ढंग से किया जा सकता है।
- ◆ श्रवण द्वारा ज्ञान भण्डार में विकास किया जा सकता है।

श्रवण के सामान्य नियम-

श्रवण प्रक्रिय में निम्नलिखित बातों पर ध्यान रखना महत्वपूर्ण होता है।

- (i) सुनने के दौरान प्रतिपुष्टि (Feed back) तभी देना चाहिए जब वक्ता अपनी बात पूर्ण कर लें।
- (ii) अर्थ ग्रहण करते हुए श्रुत सामग्री का विवेक पूर्ण और सही गलत में वर्गीकरण करना चाहिए।
- (iii) श्रुत सामग्री का अर्थ अवसर और सन्दर्भ के अनुसार ही ग्रहण करना चाहिए।
- (iv) अच्छा वक्ता बनने के लिए अच्छा श्रोता बनना आवश्यक है।
- (v) वक्ता के कथन में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों, सूक्तियों आदि का समुचित एवं प्रसंगानुकूल भाव ग्रहण करना चाहिए।
- (vi) श्रवण प्रक्रिया ध्वनि से प्रारम्भ होती है एवं ध्यान से होती हुई अर्थ ग्रहण कर समाप्त होती है।

श्रवण कौशल को विकसित करने की विधियाँ-

बालक में श्रवण की जन्मजात क्षमता होती है कुछ विशिष्ट प्रशिक्षण द्वारा उसके श्रवण क्षमता को विकसित किया जा सकता है-

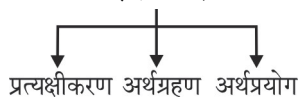
1. **सस्वर वाचन-** गद्य या पद्य विधाओं का शिक्षक आदर्श वाचन करता है अतः सभी छात्र ध्यान पूर्वक सुनने के पश्चात् अनुकरण वाचन करते हैं। अनुकरण वाचन के समय छात्र ध्वनियों के बलाघात उतार-चढ़ाव विराम आदि का ध्यान रखता है।
2. **प्रश्नोत्तर विधि-** इस विधि द्वारा शिक्षक छात्रों में एकाग्रता के भाव को विकसित करता है। इस कार्य के लिए वह प्रश्नों को साधन के रूप में प्रयोग करता है।

3. **कहानी कहना या सुनना-** कहानियाँ बच्चों को रुचिकर लगती हैं जिसका उपयोग करके उनके श्रवण कौशल का विकास किया जा सकता है। शिक्षकों को इनका अधिका-अधिक प्रयोग करना चाहिए।
4. **श्रुतलेख-** श्रुतलेख का आशय है- सुनकर लिखना/ यह लेखन कौशल का विकास करने में सहायक है इसकी प्रमुख कसौटी है जो ध्यान से सुनेगा वही शुद्ध रूप में लिखेगा।
5. **भाषण-** यह मुख्यतः मौखिक अभिव्यक्ति को विकसित करने का साधन है परन्तु इसके माध्यम से श्रवण कौशल का विकास संभव है। ध्यानपूर्वक सुनकरके हम अपने श्रवण कौशल एवं ज्ञान में वृद्धि कर सकते हैं।
6. **वाद-विवाद-** भाषण की ही भाँति वाद-विवाद भी श्रवण कौशल विकास शिक्षण की उपयोगी विधि हैं वाद-विवाद का आधार तर्क होते हैं। बिना ध्यान से सुने हुये नये तर्कों का निर्माण सम्भव नहीं है। पहले की कही हुई बातों से स्पष्ट है कि ध्यान श्रवण कौशल के विकास में सहायक होते हैं।
7. **आदेश-निर्देश-** शिक्षक छात्रों को समय-समय पर आदेश निर्देश देते रहते हैं। आदेश महत्वपूर्ण होते हैं। जिनके समुचित पालन के लिए उनको ध्यान से सुनना आवश्यक होता है। जिससे श्रवण कौशल का विकास होता है।
8. **पाठ्य सहगामी क्रियाएँ-** भाषण, वाद-विवाद, नाट्य, मंचन, काव्यपाठ, गीत, अन्त्याक्षरी, समाचार, वाचन, आशुभाषण इत्यादि ऐसी पाठ्यसहगामी क्रियाएँ हैं। जिनसे विभिन्न कौशलों के साथ-साथ श्रवण कौशल का विकास होता है

पठन कौशल (पढ़ना)-

पठन मूल्यतः ध्वनि चिह्नों को पुनः ध्वनि के रूप में प्रकट करना है। इसके लिए सम्बन्धित लिपि चिह्नों का समुचित व सटीक ज्ञान होना आवश्यक है लिखित सूचनाओं को पढ़कर उन्हें ग्रहण करना पठन का प्रमुख ध्येय है। वाचन की शिक्षा देने वाले व्यक्ति को स्वयं वाचन प्रक्रिया की समुचित जानकारी होना आवश्यक है। इसमें न केवल वर्णों की पहचान अपितु विराम चिह्न विभिन्न शब्द शक्तियों एवं व्याकरणिक कौटियों का ज्ञान होना परमावश्यक है। पठन के मुख्यतः तीन सोपान हैं।

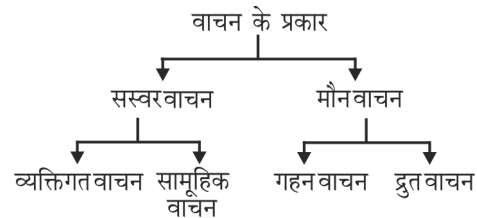
पठन कौशल के सोपान



पठन कौशल के उद्देश्य-

- ◆ लिपि संकेतों एवं उनके संयोग से बनने वाले शब्दों वाक्यों को पहचानना।
- ◆ उचित गति, बलाघात, अनुतान, उतार-चढ़ाव के साथ शुद्ध उच्चारण करना।
- ◆ पाठ्य-वस्तु को ध्यान व धैर्य से पढ़ना।
- ◆ भावानुकूल सस्वर वाचन करना।
- ◆ समुचित गति व बोध के साथ मौन वाचन करना।
- ◆ प्रदत्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों का प्रसंगानुकूल बोध करना।
- ◆ पठित शब्दों के वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ एवं व्यंग्यार्थ को समझना।
- ◆ पठित अंश का केन्द्रीय भाव ग्रहण करना।
- ◆ भाषा शैली को समझना।
- ◆ विधागत विशेषताओं को समझना।

पठन या वाचन के प्रकार



सस्वर वाचन- ध्वनि करते हुए पढ़ने की प्रक्रिया को सस्वर वाचन कहते हैं। वाचन का प्रमुख उद्देश्य-अर्थ ग्रहण करना होता है। सस्वर वाचन के दो प्रकार हैं जैसा कि ऊपर अंकित ग्राफ में भी दर्शाया गया है।

1. **व्यक्तिगत वाचन-** एक व्यक्ति द्वारा ध्वनि करते हुए वाचन करना व्यक्तिगत वाचन कहा जाता है। आदर्शवाचन (शिक्षक द्वारा ध्वनि करते हुए पढ़ना) व्यक्तिगत वाचन का उदाहरण है-
2. **सामूहिक वाचन-** दो या अधिक छात्रों द्वारा ध्वनि सहित वाचन करना सामूहिक वाचन कहलाता है इसे 'समवेत वाचन' के नाम से भी जाना जाता है। आदर्शवाचन का अनुकरण करते हुए छात्रों द्वारा सस्वर वाचन करना सामूहिक वाचन का एक उदाहरण है।

सस्वर वाचन के लिए ध्यातव्य बातें-

- ◆ उच्चारणगत शुद्धता होनी चाहिए।
- ◆ बलाघात एवं विराम चिह्नों का ध्यान रखना चाहिए।
- ◆ धाराप्रवाहता एवं गति (तीव्र या मंद) का ध्यान रखना चाहिए।
- ◆ विभिन्न भावों के अनुसार मुद्राओं में परिवर्तन होना चाहिए।
- ◆ पुस्तक को सदैव बाँये हाथ से पकड़कर तथा दाहिने हाथ को संकेतों के लिए स्वतंत्र रखकर वाचन करना चाहिए।
- ◆ वाचन के करते समय शरीरांगों का स्वाभाविक संचालन करना चाहिए। अनावश्यक एवं भावाविरोधी संचालन असंगति प्रतीत होते हैं।
- ◆ पठन में धैर्य व आत्मविश्वास झलकना चाहिए न कि कृत्रिमता।

मौन वाचन- बिना ध्वनि किए हुए बोधगम्यता पूर्वक वाचन करना मौन वाचन कहलाता है, दूसरे शब्दों में बिना आवाज किए मन ही मन शांति पूर्वक पढ़कर अर्थ ग्रहण करने को मौन वाचन कहा जाता है। दृष्टि विकलांगता की दशा में वाचन कार्य बाधित होता है। इसके लिए 'ब्रेल लिपि' का विकास किया गया है। मौन वाचन से चित्त की एकाग्रता बढ़ती है विचारों को गम्भीरता पूर्वक समझने की शक्ति विकसित होती है। इस पद्धति से ग्रहण की गयी सूचना मस्तिष्क में अधिक समय तक बनी रहती है। मौन वाचन के मुख्य तत्त्व दो प्रकार हैं-

- (i) गहन अध्ययन
- (ii) द्रुत वाचन

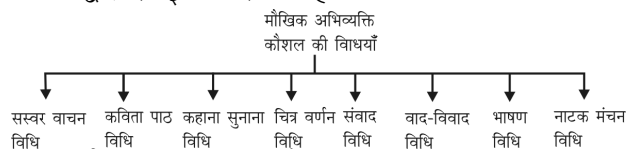
मौन वाचन के लिए ध्यातव्य बातें-

- ◆ मौन वाचन के समय ध्वनि से बचना चाहिए।
- ◆ पढ़ते समय एकाग्रता बनी रहनी चाहिए।
- ◆ मौन वाचन के समय कक्षा में पूर्ण शांति होनी चाहिए।
- ◆ मौन वाचन से पूर्व शिक्षक कठिन संकल्पनाओं की व्याख्या स्वयं करें।

- ◆ सस्वर वाचन के उपरान्त ही मौन वाचन का अभ्यास कराया जाए।
 - ◆ आरम्भिक भाषायी कौशलों के उपरान्त ही मौन वाचन होना चाहिए।
 - ◆ मौन वाचन/नियमित रूप से अभ्यास के रूप में होना चाहिए।
 - ◆ मौन वाचन करते समय जिन बातों पर विशेष ध्यान देना है उन्हें पहले ही इंगित कर देना चाहिए।
 - ◆ मौन वाचन के उपरान्त छात्रों से प्रश्न अवश्य पूछे जाए।
 - ◆ समय-समय पर वाचन गति की जाँच की जाए।
 - ◆ छात्रों का ध्यान एवं शिक्षक की सजगता मिलकर मौन वाचन को सफल बना सकते हैं।
- वाचन शिक्षण की विधियाँ**
- (i) **वर्ण विधि-** इसको अक्षर बोध विधि भी कहते हैं इस विधि में एक-एक वर्ण को श्यामपट्ट पर लिखकर उनकी पहचान करना एवं उच्चारण करना सिखाया जाता है।
 - (ii) **शब्द विधि-** इस विधि में शब्दों से परिचय कराया जाता है इसमें चित्र की सहायता ली जाती है। यह विधि अनुकरण विधि के अन्तर्गत आती है। पूर्ण से अंश की ओर, ज्ञात से अज्ञात की ओर, सरल से कठिन की ओर आदि शिक्षण सूत्रों का प्रयोग इस विधि में होता है।
 - (iii) **वाक्य विधि-** यह विधि शब्द विधि का ही विस्तृत रूप है इसमें वाचन का प्रारम्भ वाक्य से होता है। इसे कहानी विधि भी कहा जाता है। क्योंकि इस विधि में कहानी के ही छोटे-छोटे वाक्यों का अभ्यास कराया जाता है। यह एक मनोवैज्ञानिक विधि है। इससे शब्द भण्डार में वृद्धि होती है।
 - (iv) **ध्वनि साम्य विधि-** इस विधि में समान ध्वनि वाले शब्दों का अभ्यास कराया जाता है। जिससे वागेन्द्रियाँ दृढ़ होती हैं। एवं वाचन में निपुणता आती है। इससे प्रायः बच्चे निरर्थक तुक बन्दी करना सीख जाते हैं। अतः यह अपेक्षाकृत कम उपयोगी विधि है।
 - (v) **कविता विधि-** बच्चों को संगीत में स्वाभाविक रुचि होती है इस विधि में उनसे कविता पाठ कराया जाता है इसी के सहारे धीरे-धीरे वर्ण शब्द आदि का ज्ञान कराया जाता है।
 - (vi) **साहचर्य/संगति विधि-** इस विधि का प्रयोग मॉरिया मान्टेसरी ने किया था। इस विधि में एक स्थान पर वस्तु तथा दूसरे स्थान पर उनके नाम लिखे हुए कार्ड रखे रहते हैं। छात्रों को कार्ड से नाम पढ़ संगति वस्तु हो बताना होता है। इस विधि द्वारा केवल संज्ञा का ज्ञान ही संभव है।
 - (vii) **संयुक्त विधि-** उपर्युक्त विधियों में कोई भी विधि पूर्णतः दोष मुक्त नहीं है अतः सभी की उपयोगी बातों को ग्रहण कर लेना चाहिए। इस तरह विस्तृत विधि को संयुक्त विधि कहा जाता है।
- अभिव्यक्तात्मक कौशल-**
- अपने भावों या विचारों को प्रकट करने के भाषायी कौशल को अभिव्यक्तात्मक कौशल कहते हैं चूँकि भाषा के मुख्यतः दो स्वरूप हैं- मौखिक एवं लिखित। इसी आधार पर भाषा के दो अभिव्यक्तात्मक कौशल भी होते हैं।
- मौखिक अभिव्यक्ति कौशल-** वागेन्द्रियों की सहायता से ध्वनियों का उच्चारण करते हुये भावों या विचारों को व्यक्त करना मौखिक अभिव्यक्ति कौशल कहलाता है। यह भाषा का प्रधान एवं सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाला कौशल है। दैनिक जीवन में सबसे अधिक मौखिक अभिव्यक्ति का ही प्रयोग किया जाता है। इस कौशल की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं।
- (i) इस कौशल का प्रयोग शिक्षित एवं अशिक्षित दोनों तरह के लोग दैनिक गतिविधियों में करते हैं।
 - (ii) यह व्यावसायिक उन्नति का प्रधान साधन है। क्योंकि प्रायः व्यावसायिक निर्देशों का एवं शिक्षक प्रशिक्षण का प्रमुख माध्यम मौखिक ही होता है।
 - (iii) अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया में मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का महत्वपूर्ण स्थान है बिना मौखिक गतिविधियों के अध्ययन अध्यापन संभव ही नहीं है।
 - (iv) वाणी ही मनुष्य के व्यक्तित्व की प्रमुख पहचान होती है। अतः व्यक्तित्व के विकास में मौखिक अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण स्थान है।
- मौखिक अभिव्यक्ति के सामान्य निमय-**
- (i) उच्चारण की शुद्धता पर ध्यान देना चाहिए।
 - (ii) भाव के अनुरूप ध्वनि का उतार-चढ़ाव, मुख मुद्रा, प्रवाह आदि का ध्यान रखना चाहिए।
 - (iii) श्रोता की मनःस्थिति एवं भाषिक परिवेश को ध्यान में रखते हुए समुचित शैली का प्रयोग करना चाहिए।
 - (iv) परिस्थितियों के संगत शब्दों के चुनाव व भाव होने चाहिए। शोक के माहौल में हास्यास्पद टिप्पणी अक्षम्य होती है।
 - (v) सन्दर्भ के अनुकूल ही तथ्य एवं भाव प्रस्तुत करने चाहिए
- मौखिक अभिव्यक्ति कौशल को विकसित करने की विधियाँ-**
- मौखिक अभिव्यक्ति भाषा का प्रधान तत्त्व है वैसे मातृभाषा के सम्बन्ध में यह जन्मजात गुण है जो अनुकरण द्वारा विकसित किया जाता है परन्तु इसे परिपक्व बनाने के लिए शिक्षण-परीक्षण की आवश्यकता होती है इससे संबन्धित प्रमुख विधियाँ निम्नलिखित प्रकार से हैं।
- ◆ प्राथमिक स्तर पर प्रायः सस्वर वाचन कराया जाना चाहिए। सस्वर वाचन से बच्चों की वागेन्द्रियों में दृढ़ता आती है। जिससे वे शुद्ध उच्चारण करना सीखते हैं।
 - ◆ कविता को कंठस्थ करके उनका पाठ करना मौखिक अभिव्यक्ति कौशल को विकसित करता है। लयात्मकता होने के कारण बच्चे प्रायः इसमें रुचि भी लेते हैं।
 - ◆ कहानी सुनाना मौखिक अभिव्यक्ति के विकास में सहायक विधि है। बच्चे अन्य किसी भी साहित्यिक विद्या की अपेक्षा कहानियों में अधिक रुचि लेते हैं। कहानियाँ अवधारणाओं के निर्माण में भी सहायक होती हैं।
 - ◆ चित्र को देखकर उनका वर्णन करना अभिव्यक्तात्मक कौशल, कौशल को विकसित करने का एक साधन है इस विधि द्वारा बच्चों में कल्पना शक्ति का विकास होता है।
 - ◆ परस्पर संवाद विधि द्वारा शुद्ध उच्चारण उचित गति व हाव-भाव के साथ मौखिक अभिव्यक्ति की शिक्षा दी जाती है। इस विधि में बच्चे के स्तर का विशेष ध्यान रखना होता है।
 - ◆ संवाद की ही भाँति वाद-विवाद भी मौखिक अभिव्यक्ति के विकास में सहायक है। इस विधि से बच्चे में तर्कशीलता वाक् चातुर्य इत्यादि गुणों का विकास होता है।
 - ◆ भाषण मौखिक अभिव्यक्ति के विकास का एक सशक्त माध्यम है। इस विधि में बच्चों के स्तर का ध्यान रखा जाता है तथा शिक्षक को चाहिए कि छात्रों को भाषण के लिए अधिकाधिक प्रोत्साहित करे।

- ◆ संवाद शैली, शैली की प्रधानता होने के कारण नाटक मौखिक अभिव्यक्ति के विकास में सहायक होते हैं। अभिनेयता नाटक का प्रमुख गुण है जो इसे अधिक रुचिकर बनाता है। इसके माध्यम से उचित हाव-भाव, उतार-चढ़ाव, प्रवाह परिस्थिति के अनुकूल शब्दों के चयन इत्यादि भाषिक कौशल सिखाये जा सकते हैं।

मौखिक अभिव्यक्ति कौशल को निम्नलिखित ग्राफ़ द्वारा समझा जा सकता है-



लेखन अभिव्यक्ति कौशल-

भाषा को स्थायित्व प्रदान करने के लिए ध्वनि चिह्नों के सहारे उसे लिपिबद्ध करना ही भाषा का लिखित स्वरूप है। लेखन भाषा को मूर्त रूप प्रदान करता है। भाषायी कौशलों के विकास का लेखन चरमावस्था माना जाता है इस कौशल की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

- ◆ यह विचारों को मूर्त स्थायित्व एवं सुरक्षित स्वरूप प्रदान करते हैं।
- ◆ प्रायः मूलभूत एवं अनिवार्य सूचनाओं को लिखकर रखने से वे सुरक्षित रहती हैं तथा परिश्रम की बचत होती है।
- ◆ लेखन कौशल के लिए साक्षर होना अनिवार्य है।
- ◆ लेखन के बिना शिक्षा व्यवस्था की कल्पना भी नहीं की जा सकती।
- ◆ मौखिक भाषा की अपेक्षा लिखित भाषा अधिक प्रामाणिक एवं विश्वसनीय मानी जाती है। इससे भाषा का रूप सर्वमान्य एवं स्थिर होता रहता है।
- ◆ भाषा में स्थायित्व और एकरूपता लाने के लिए लेखन की आवश्यकता होती है।
- ◆ साहित्य के सृजन व उसके भण्डारण में वृद्धि के लिए लेखन कौशल आवश्यक होता है।
- ◆ अन्तर्राष्ट्रीय संबन्धों के विकास विज्ञान तकनीकों के विकास एवं उनकी सुरक्षा के लिए लिखित भाषा महत्वपूर्ण एवं उपयोगी होती है।

लेखनारंभ की योग्यता-

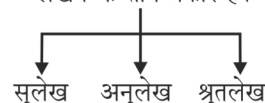
1. मारिया मान्टेसरी का मानना है कि बच्चों को पढ़ना सीखने से पूर्व लिखना सिखाया जाना चाहिए। लेखन वाचन की अपेक्षा सरल तथा आनन्ददायक कार्य है।
2. फ्रॉबेल महोदय के अनुसार लिखना सिखाने से पूर्व पढ़ना सिखाया जाना चाहिए क्योंकि वाचन मौखिक क्रिया है और लेखन मानसिक व शारीरिक दोनों है।
3. पढ़ने की क्रिया लिखने से सरल मानी जाती है।
4. हिन्दी का 'पढ़ा-लिखा' शब्द भी पढ़ने को प्रथम व लिखने को द्वितीय स्थान देता है।
5. अधिकांश शिक्षा शास्त्री पढ़ने व लिखने दोनों क्रियाओं के साथ-साथ चलने पर जोर देते हैं।
6. लेखन के लिए उचित क्रम अक्षर लेखन, शब्द लेखन और वाक्य लेखन है।

लेखन आरम्भ करने से पूर्व कुछ योग्यताओं का विकास कर लेना चाहिए। इसके लिए कुछ सामान्य अभ्यास इस प्रकार है-

- (i) ऊँगलियों एवं मांसपेशियों का अभ्यास।
- (ii) लेखन सामग्री ठीक से पकड़ने का अभ्यास।
- (iii) लेखन सामग्री के उचित रख-रखाव एवं परस्पर आदान-प्रदान का अभ्यास।
- (iv) उचित मुद्रा में बैठने का अभ्यास।
- (v) वर्णों की अकृति के विभेदीकरण का अभ्यास।
- (vi) सौन्दर्य निरीक्षण, सौन्दर्य बोध तथा सौन्दर्य प्रशंसा।
- (vii) लेखन के प्रति रुचि उत्पन्न करना।

लेखन के प्रकार-

लेखन के तीन प्रकार हैं।



सुलेख- सुलेख शब्द लेख शब्द में सु उपसर्ग लगाने से बना है जिसका आशय है- सुन्दर लिखावट। निम्नलिखित बिन्दुओं का पालन करके बच्चों की लिखावट को सुन्दर बनाया जा सकता है।

- (i) वर्णों एवं मात्राओं का समुचित अनुपात।
- (ii) वर्णों को सीधा (90°) लिखना चाहिए।
- (iii) देवनागरी लिपि में शिरोरेखा अवश्य लगाना चाहिए। शिरोरेखा के अनुचित सीमा में होने पर अर्थ का अनर्थ हो जाता है। **जैसे-**
कल स्कूल बन्द रखा जाएगा। समुचित प्रयोग
कल स्कूल बन्दर खा जाएगा। अनुचित प्रयोग
मात्राओं के प्रयोग में सावधानी वर्तनी चाहिए।
- (iv) वर्णों, शब्दों एवं वाक्यों के मध्य समुचित दूरी होनी चाहिए।
- (v) एक से अधिक बिन्दुओं को व्यक्त करने के लिए उन्हें अनुच्छेदों में विभक्त करना चाहिए।
- (vi) उचित हाशिए (लिखित सामग्री के बाँयी ओर छोड़ा गया स्थान) का प्रयोग करना चाहिए।
- (vii) समुचित गति से ही सुन्दर लिखावट बनती है।
- (viii) उक्त बिन्दुओं के अतिरिक्त बैठने का आसन, लेखनी पकड़ने का ढंग, लेखन सामग्री, लेखन चक्र की अवधि तथा लेखन क्रम भी सुलेख उत्तरदायी तत्त्व है।
- (ix) **अनुलेख-** अनुलेख का आशय है- अनुकरण करके लिखना। इसके लिए शिक्षक को समुचित आदर्श लेखन करना चाहिए तत्पश्चात् इसी का अनुकरण करते हुए छात्रों से अभ्यास करवाना चाहिए। आज कल अनुलेख के लिए बृहद मात्रा में सामग्री उपलब्ध होती है। जिनके माध्यम से अभ्यास कराना उचित होता है। इन सामग्रियों में बिन्दुओं को मिलाकर लिखना, मोटे लिखे वर्णों की अनुकृति बनाना शब्दों को नकल करना इत्यादि का अभ्यास किया जा सकता है। धीरे-धीरे बच्चा लेखन कार्य सीख लेता है। कुछ बच्चों में लेखन से सम्बन्धित विकार पाये जाते हैं। जैसे वर्णों को सीधा न बना पाना, वर्ण क्रम को आगे पीछे कर देना इत्यादि। इस विकास को **डिसग्राफिया** नाम से जानते हैं। ऐसे बच्चों को हतोत्साहित नहीं करना चाहिए। ऐसे विकार से निवृत्त अधिकतम अभ्यास द्वारा सम्भव है।

श्रुतलेख- सुने गये ध्वनियों को लेखनीबद्ध करना श्रुतलेख कहलाता है। इसके लिए सुनने के कौशल का समुचित विकास होना चाहिए तथा इसकी आवश्यक शर्त यह है कि जिन ध्वनियों को सुनकर लिखना है उनका शुद्ध उच्चारण

किया गया हो। श्रुतलेख का उद्देश्य छात्रों की श्रवणेन्द्रिय को पूर्ण शिक्षित करना है। ताकि वह भाषा के शुद्ध रूप को सावधानी से सुन सके। बच्चों की लिखावट में सुदौलता, स्पष्टता, गति लाना भी उद्देश्य है। इससे बालक की स्मरण शक्ति विकसित होती है तथा उसे सुनकर भाव ग्रहण करने का अभ्यास हो जाता है। इसका प्रमुख उद्देश्य वर्तनी शुद्धता प्राप्त करना है। श्रुतलेख के बाद शिक्षक को चाहिए की वह बच्चों की कॉपियाँ सावधानी पूर्वक जाँच करें तथा आवश्यक संशोधन करें।

लेखन शिक्षण की विधियाँ

वाचन के साथ ही लेखन कौशल का भी शिक्षण प्रारम्भ कर दिया जाता है। बच्चों की अँगुलियाँ लेखनी पकड़ने में समर्थ हो जाए तभी लेखन कार्य सिखाना चाहिए लेखन शिक्षण के निम्नलिखित विधियाँ निर्धारित हैं।

1. सार्थक रेखाएँ खींचने की विधि:

तीन-चार वर्ष की आयु से ही बच्चे सीधी-तिरछी या टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएँ खींचने लगते हैं। अतः इस अवस्था में बच्चों को सार्थक रेखाएँ खींचने का अभ्यास कराया जाना चाहिए। यह विधि लेखनारंभ योग्यता और अक्षर विन्यास की शिक्षा के बीच की कड़ी हैं कुछ सार्थक रेखाएँ इस प्रकार हो सकती हैं:

- (i) ----- शिरोरेखा
- (ii) () ि = अनुस्वार, आगत ध्वनि (आँ) अनुनासिक
- (iii) / ि / = खड़ी पाई, 'आ' की मात्रा, पूर्ण-विराम
- (iv) // र र=र
- (v) // त्र = क्र, प्र, श्र, त्र आदि

2. खंडशः लेखन विधि

सार्थक रेखाओं को खींचने के अभ्यास के बाद वर्णों का खंडशः लेखन कराया जाना चाहिए। इस विधि में पूरे वर्ण को एक बार लिखना न सिखाकर उसे खंडों में लिखना सिखाया जाता है। इस विधि से बच्चों के लिए लिखना, सीखना सुगम हो जाता है। **जैसे-**

- (i) व क = क
- (ii) व ब = व
- (iii) प फ = फ
- (iv) प ष = ष

3. रूप अनुसरण या रेखा अनुसरण विधि

यह एक अत्यंत पुरानी व परंपरागत विधि है। यह लेखन-अभ्यास के लिए अत्यंत उपयोगी विधि है। इस विधि में अध्यापक तख्ती पर पेंसिल से वर्ण लिखता है। बच्चे उस लिखे हुए वर्ण पर कलम चलाते हैं और स्याही फेरते हैं। इस विधि में पेंसिल से पूरे वर्ण न बनाकर बिंदुओं से भी वर्ण बनाए जा सकते हैं। छात्र उन बिंदुओं को जोड़कर वर्ण की आकृति बनाना सीख जाते हैं। धीरे-धीरे छात्र उस अवस्था तक पहुँच जाते हैं जिसमें शिक्षक ऊपर की पंक्ति में शब्द लिखता है और बच्चे नीचे की पंक्ति में स्वयं उसकी नकल उतारते हैं। अब जो बाजार में इस प्रकार की कॉपियाँ भी उपलब्ध हैं जिन पर इस प्रकार के लेखन का अभ्यास कराया जा सकता है। इस विधि में अध्यापक को छात्रों का हाथ पकड़कर वर्ण की आकृति बनाने में उनकी सहायता करनी चाहिए। इस विधि में शिक्षक का मार्गदर्शन अनिवार्य है। शिक्षक को यह देखना चाहिए कि बालक पेन या पेंसिल का सही दिशा में घुमा रहा है।

4. मांटेसरी विधि

इस विधि में सबसे पहले बच्चे को लकड़ी गते आदि से बने वर्ण दिए जाते हैं और छात्रों को उन पर उंगली फेरने के लिए कहा जाता है। उंगली फेरने के अभ्यास के बाद छात्रों को उन वर्णों के बीच पेंसिल चलाने को कहा जाता है। जब बच्चों की उंगलियाँ सध जाती हैं तब उन्हें स्वतंत्र रूप से लिखने के लिए कहा जाता है। इस अभ्यास के बाद छात्र स्वतंत्र रूप से गते व लकड़ी के वर्णों के बिना लिखना प्रारंभ कर देते हैं।

5. पेस्टालॉजी की रचनात्मक विधि

इस विधि में लकड़ी व प्लास्टिक आदि से बने वर्णों के टुकड़ों को संकलित किया जाता है। ये टुकड़े रेखा, वृत्त, अर्धवृत्त, आदि होते हैं। छात्र किसी वर्ण को देखकर टुकड़ों को ढूँढ़कर और उन्हें जोड़कर वैसा ही वर्ण बनाने का प्रयास करते हैं। इसमें विभिन्न टुकड़ों को मिलाकर धीरे-धीरे सभी वर्णों को सिखाया जाता है। इसमें सरल वर्णों को पहले तथा कठिन वर्णों को बाद में सिखाते हैं। इस विधि में समान आकृति वाले वर्णों के समूह बनाकर उनको साथ-साथ सिखाया जाता है; जैसे-

- (i) प, ष, क
- (ii) न, म, भ
- (iii) व, ब, क
- (iv) त, ल
- (v) घ, ध

6. चित्र विधि-

वर्णमाला के वर्णों को सिखाने के लिए चित्रों की सहायता ली जा सकती है। ऐसे चित्रों के कई प्राइमर भी बाजार में उपलब्ध हैं। बच्चा यदि चित्र बनाने में सक्षम हो जाता है तो यह खेल-खेल में वर्णों की आकृति बनाना भी सीख जाता है। इस विधि में बच्चों को चित्र दिखाकर पहले उन वस्तुओं के चित्र बनवाते हैं तथा उन चित्रों के नाम से संबंधित प्रथम वर्ण को चित्र की भाँति समझकर उसका भी चित्र बनाया जाता है। इस प्रकार के अभ्यास से बच्चे धीरे-धीरे वर्णों में रंग भरते-भरते उनको लिखना सीख जाते हैं।

7. परंपरागत विधि

इस विधि में पहले स्वर, व्यंजन फिर शब्द, उसके मात्राएँ तथा वाक्य लिखने सिखाये जाते हैं। इस विधि का यह लाभ है कि इसमें वचन व लेखन का एक ही क्रम हो सकता है। इसमें बच्चे वर्णमाला क्रम को भली-भाँति याद कर लेते हैं। इस विधि का समर्थन करने वालों का मानना है कि लेखनारंभ योग्यता के अंतर्गत जब बालकों को विभिन्न रेखाओं पर पेंसिल चलाने का अभ्यास हो जाता है तो उन्हें क्रम से लिखना सीखने में कोई कठिनाई नहीं होती।

8. समान आकृति समूह विधि

इस विधि में वर्णों को कुछ समूहों में विभाजित कर लिया जाता है तथा एक समूह के वर्णों को एक साथ लिखना सिखाया जाता है। इस विधि में थोड़े से प्रयास से ही छात्रों को यह अनुभव होने लगता है कि उन्होंने बहुत कुछ सीख लिया है। **जैसे-**

- 1. अ, आ, ओ, औ
- 2. व, ब, क
- 3. ड, ङ
- 4. न, म, भ

9. तुलना विधि

भारत में जिन प्रदेशों में बच्चों की मातृभाषा हिंदी न होकर बंगला, पंजाबी आदि अन्य भाषाएँ होती हैं उन भाषाओं की अपनी-अपनी लिपियाँ होती हैं। उन प्रदेशों में तीसरी, या चौथी कक्षा में हिंदी सिखाई जाती है। ऐसे बच्चे मातृभाषा की लिपि सीख चुके होते हैं। जब उन्हें देवनागरी लिपि लिखाई जाती है तब उनकी पृष्ठ भूमि भिन्न होती है। इस प्रकार के छात्रों के लिए तुलना विधि उपयुक्त विधि है। तात्पर्य यह है कि देवनागरी लिपि के वर्ण अन्य लिपियों के वर्णों से मिलते-जुलते हैं। देवनागरी लिपि सीखने के लिए अपनी लिपि से समानता रखने वाले वर्णों को जानना, उनकी तुलना करके साम्य या भेद पहचानना और अनुकरण करना सीखकर बच्चे हिंदी लिखना सीख सकते हैं।

विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. प्लेटो का यह कथन कि 'बच्चा बड़ों के बीच एक विदेशी की तरह होता है' किस भाषिक सच्चाई की ओर संकेत करता है?

- बच्चे अपनी भाषा में बोलते हैं, जिसे बड़े सही-सही नहीं समझ पाते
- बच्चा बड़ों से उम्र में छोटा होने के कारण अजनबी बना रहता है
- बच्चों की भाषा अपरिपक्व होती है
- बच्चों की भाषा के प्रति बड़ों का दृष्टिकोण संकीर्णता से परिपूर्ण होता है

CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013

उत्तर : (a)

2. "भाषा शून्य में विकसित नहीं होती।" इसका शैक्षिक निहितार्थ है कि भाषा सीखने के लिए..... अनिवार्य है—

- पारिवारिक संवाद
- सामाजिक अंतःक्रिया
- विद्यालयी पढ़ाई-लिखाई
- भाषा प्रयोगशाला

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016

उत्तर : (b)

3. भाषा-शिक्षण में बालक में मौखिक कौशल के विकास के लिए---- सबसे कम महत्वपूर्ण है।

- किसी विषय पर चर्चा करना
- बच्चों की बात को धैर्य से सुनना
- प्रश्नों के उत्तर पूछना
- अपनी बात कहने का पूरा मौका देना

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015

उत्तर : (c)

4. किसका संबंध बोलने के कौशल के विकास से नहीं है?

- शुद्ध उच्चारण
- सस्वर वाचन
- कविता पाठ
- प्रतिलिपि

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (d)

5. बच्चों के 'लेखन' कौशल का मूल्यांकन करने के लिए कौन-सी विधि बेहतर हो सकती है?

- अपने अनुभवों को लिखना
- श्रुतलेख

- पाठाधारित प्रश्नों के उत्तर लिखना
- सुन्दर लेख का अभ्यास

CTET- Ist Paper (I-V) June 2011

उत्तर : (a)

6. भाषा के अभिव्यक्तात्मक कौशल हैं -

- सुनना, बोलना
- बोलना, लिखना
- पढ़ना, लिखना
- सुनना, पढ़ना

CTET- Ist Paper (I-V) June 2011

उत्तर : (b)

7. लिखित भाषा का प्रयोग—

- केवल प्रतिवेदन-लेखन के लिए किया जाता है
- कार्यालयी कार्यों के लिए ही किया जाता है
- अपनी अभिव्यक्ति के लिए किया जाता है
- केवल साहित्य सृजन के लिए किया जाता है

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (c)

8. लिखना एवं पढ़ना सीखने के सन्दर्भ में कौन-सा कथन सबसे उपयुक्त है?

- पढ़ना सीखने की तुलना में लिखना सीखना जटिल है
- लिखना सीखने की तुलना में पढ़ना सीखना जटिल है
- दोनों कौशल एक-एक करके सीखे जाते हैं
- लिखना और पढ़ना सीखना समान रूप से अन्तः सम्बन्धित है

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (d)

9. कोई एक भाषा.....लिपि/लिपियाँ में लिखी जा सकती है, हाँ, उसमें थोड़ा फेरबदल हो सकता है।

- तीन
- सभी
- सीमित
- एक

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (b)

10. उच्च प्राथमिक स्तर पर लेखन क्षमता का आकलन करते समय आप किस बिन्दु को सर्वाधिक महत्त्व देंगे?

- मिश्रित वाक्य-संरचना
- विचारों की मौलिकता
- वर्तनीगत शुद्धता
- तत्सम शब्दावली

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016

उत्तर : (b)

11. भाषा सिखाने का सही क्रम है—

- बोलना, श्रवण, करना, पढ़ना, लिखना
- श्रवण करना, बोलना, पढ़ना, लिखना
- बोलना, पढ़ना, श्रवण करना, लिखना
- श्रवण करना, पढ़ना, बोलना, लिखना

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Dec. 2016

उत्तर : (b)

12. लेखन से सम्बन्धित नहीं है—

- बैठने का उचित ढंग
- शुद्ध उच्चारण
- लेखनी पकड़ने का ढंग
- आँखों से कागज की दूरी

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Dec. 2016

उत्तर : (b)

13. मंदिरा पहली कक्षा में पढ़ती है और वह 'मुझे आम बहुत अच्छा लगता है।', 'मैं थक गई।' आदि वाक्यों का प्रयोग करती है। मंदिरा—

- (a) मंदिरा केवल सर्वनाम का ही प्रयोग जानती है
- (b) केवल लिंग की दृष्टि से ही सर्वनाम का समुचित प्रयोग करना जानती है
- (c) केवल 'मैं' वाले वाक्य ही बोल सकती है
- (d) लिंग, वचन, क्रिया आदि की दृष्टि से सर्वनाम का प्रयोग करना जानती है।

CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012

उत्तर : (d)

14. उच्च प्राथमिक स्तर पर समझकर पढ़ने के सन्दर्भ में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है—

- (a) तीव्र गति से पढ़ जाना
- (b) बोल-बोलकर शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ना
- (c) लिखित सामग्री में शब्दों की पहचान करना
- (d) किसी लिखित सामग्री का निहितार्थ समझना

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015

उत्तर : (d)

15. प्राथमिक कक्षाओं में बच्चे बहुत कुछ लेकर विद्यालय आते हैं, जैसे-अपनी.....अपने अनुभव, दुनिया को देखने का अपना दृष्टिकोण आदि।

- (a) समस्याएँ
- (b) भाषा
- (c) पाठ्य-पुस्तकें
- (d) कमियाँ

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015

उत्तर : (b)

16. सभी भाषाई कुशलताएँ—

- (a) एक-दूसरे से संबद्ध हैं
- (b) एक-दूसरे से बढ़कर हैं
- (c) एक-दूसरे से अलग हैं
- (d) एक-दूसरे को प्रभावित नहीं करती

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016

उत्तर : (a)

17. बच्चों को कहानी सुनाने की उपयोगिता सिद्ध होती है—

- (a) कहानी कहने के तरीके द्वारा
- (b) कहानी में गुंथे हुए नैतिक मूल्यों के आधार पर
- (c) कहानी से मिलने वाली ज्ञान-विज्ञान की जानकारी द्वारा
- (d) कहानी से मिलने वाली सीख द्वारा

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016

उत्तर : (d)

18. पढ़ने में बाधा नहीं है—

- (a) सारे नियम पहले ही बता डालना
- (b) उच्चारण पर ही जोर देते रहना
- (c) सटीकता पर ही जोर देना
- (d) लिखी हुई चीज का अर्थ निकालना

Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (d)

19. पढ़ने को दैनिक जीवन की जरूरतों से जोड़ना-यह किस भाषाई कौशल का उद्देश्य है?

- (a) श्रवण कौशल का
- (b) लेखन कौशल का
- (c) बोलने के कौशल का
- (d) पठन कौशल का

Chhattisgarh TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

उत्तर : (d)

20. दृष्टिबाधित बच्चों को भाषा सिखाते समय—

- (a) उन्हें कक्षा में अलग बैठाना चाहिए ताकि उन पर विशेष ध्यान दिया जा सके
- (b) उन्हें विभिन्न भाषिक गतिविधियों में शामिल नहीं करना चाहिए
- (c) कम पाठों वाली पाठ्य-पुस्तक का निर्माण किया जाना चाहिए
- (d) अधिक-से-अधिक मौखिक भाषा का प्रयोग करना चाहिए

CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012

उत्तर : (d)

21. बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति का विकास करने के लिए सबसे कम प्रभावी तरीका कौन-सा है?

- (a) व्याकरण-आधारित संरचना-अभ्यास
- (b) अपने अनुभवों का वर्णन
- (c) बातचीत करना
- (d) संवाद-अदायगी

CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012

उत्तर : (a)

22. प्रमुख भाषायी कौशल के अन्तर्गत इनमें से कौन एक नहीं आता है?

- (a) सुनना
- (b) बोलना
- (c) हँसना
- (d) लिखना

UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (c)

23. बच्चे अपनी बोलचाल की भाषा का अनुभव -

- (a) समाज, परिवार से प्राप्त करते हैं
- (b) विद्यालय से प्राप्त करते हैं
- (c) थोड़ा-बहुत रखते हैं
- (d) उपरोक्त में से कौन नहीं

Bihar TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (a)

24. 'बोलना' कौशल में महत्वपूर्ण है—

- (a) संदर्भ एवं स्थिति के अनुसार अपनी बात कह सकना।
- (b) स्पष्ट एवं शुद्ध उच्चारण
- (c) आलंकारिक भाषा का प्रयोग
- (d) मधुर वाणी

CTET - Ist Paper (I-V) June 2011

उत्तर : (a)

25. किस साहित्यिक विधा को पढ़ाते समय आप सस्वर पठन पर अनिवार्यतः बल देंगे?

- (a) आत्मकथा
- (b) एकांकी
- (c) जीवनी
- (d) यात्रा-वृत्तान्त

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (b)

26. सस्वर पठन का मुख्य उद्देश्य है -

- (a) मौन पठन करना
- (b) बच्चों की पढ़ने-सम्बन्धी झिझक को समाप्त करना
- (c) बोल-बोलकर पढ़ना
- (d) द्रुत गति से पठन करना

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012

उत्तर : (b)

27. वाचन के समय पुस्तक की आँखों से दूरी होनी चाहिए।
 (a) 9 इंच (b) 10 इंच
 (c) 11 इंच (d) 12 इंच

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (d)

28. मौन पठन के विषय में धारणा है-

- (a) इसमें पठन की गति धीमी हो जाती है
 (b) एकाग्रचित होकर पढ़ने का अभ्यास होता है
 (c) पढ़ने की धीमी ध्वनि होंठों से निकलती है
 (d) इसे आदर्श वाचन के तुरन्त बाद किया जाता है

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (b)

29. मौन पठन का मुख्य उद्देश्य है-

- (a) सतही ढंग से पाठ खत्म करना
 (b) गहन अर्थ ग्रहण करना
 (c) बिना बोले पढ़ने की कुशलता का विकास करना
 (d) शान्ति के साथ पढ़ना

Bihar TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

उत्तर : (b)

30. निम्न में से कौन पठन का प्रकार नहीं है?

- (a) सस्वर पठन (b) मौन पठन
 (c) अर्थ पठन (d) द्रुत पठन

Bihar TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

उत्तर : (c)

31. पढ़ना क्या है?

- (a) पढ़कर अर्थ समझना
 (b) लिखित सामग्री का उच्चारण
 (c) स्कूल में पुस्तकों की पढ़ाई
 (d) शब्दों को सही-सही पहचानना

Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (a)

32. मौन वाचन का प्रकार नहीं है -

- (a) समवेत वाचन (b) द्रुत वाचन
 (c) वैयक्तिक वाचन (d) अनुकरण

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (a, b, d) Note : प्रश्न त्रुटिपूर्ण है।

33. किसी कार्यालय द्वारा एक साथ अनेक प्रेषितियों को भेजा जाने वाला शासकीय पत्र, ज्ञापन या आदेश कहलाता है -

- (a) परिपत्र (b) विज्ञापन
 (c) अधिसूचना (d) आवेदन

Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011

उत्तर : (a)

34. सस्वर वाचन का मुख्य उद्देश्य है -

- (a) पढ़ने में आनन्द की अनुभूति करना
 (b) बच्चों की पढ़ने सम्बन्धी झिझक को समाप्त करना
 (c) बोल-बोलकर पढ़ना
 (d) द्रुत गति से वाचन करना

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) April 2016

उत्तर : (b)

35. लोकगीतों को भाषा की कक्षाओं में स्थान दिया जाना चाहिए, क्योंकि -

- (a) लोकगीतों को बढ़ावा देना भाषा-शिक्षण का मुख्य उद्देश्य है
 (b) लोकगीत गाए जा सकते हैं
 (c) केवल लोकगीतों के माध्यम से पारम्परिक मूल्यों की शिक्षा दी जा सकती है
 (d) इससे बच्चे संस्कृतिगत विशेषताओं से परिचित होते हैं

CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011

उत्तर : (d)

36. माधुरी पढ़ते समय कभी-कभी वाक्यों, शब्दों की पुनरावृत्ति करती है। इसका यह भाषायी व्यवहार दर्शाता है कि-

- (a) वह समझ के साथ पढ़ने की कोशिश कर रही है
 (b) वह अटक-अटककर ही पढ़ सकती है
 (c) उसे पढ़ना बिल्कुल नहीं आता
 (d) वह पढ़ने में ज्यादा समय लेती है

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012

उत्तर : (a)

37. बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति के विकास का अर्थ यह नहीं है-

- (a) वाद-विवाद में बोझिल होकर बोलना
 (b) कहानी सुनकर शब्दशः दोहराना
 (c) अपनी कल्पनाओं की मौखिक अभिव्यक्ति
 (d) बातचीत में सक्रिय भागीदारिता का निर्वाह करना

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015

उत्तर : (b)

38. "भाषा की कक्षा में बच्चे स्वाभाविक अभिव्यक्ति के लिए किसी भी प्रकार का रेखांकन कर सकते हैं।" यह कथन -

- (a) गलत है
 (b) सही हो सकता है
 (c) सही है, क्योंकि रेखांकन भी अन्ततः भाषा की तरह अभिव्यक्ति का साधन है
 (d) सही है, क्योंकि भाषा की पुस्तक में भी चित्र होते हैं

Bihar TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (a)

39. विचारों की अच्छी अभिव्यक्ति किस प्रकार के प्रश्नों में हो सकती है?

- (a) वस्तुनिष्ठ (b) अतिलघुत्तरात्मक
 (c) निबन्धात्मक (d) लघुत्तरात्मक

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (c)

40. प्रताप को 'परताप' उच्चारण करना, कौन-से प्रकार के अशुद्ध उच्चारण का भेद है?

- (a) स्वरागम (b) स्वरालाप
 (c) आकार-इकार भ्रम (d) आगम

Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (b)

41. प्रायः बच्चे/बच्चियाँ विद्यालय में स्वयं को अभिव्यक्त करने में संकोच करते हैं, क्योंकि -
- (a) वे भाषा नहीं जानते
 - (b) उन्हें अभिव्यक्ति का ज्ञान नहीं है
 - (c) वे जिस भाषा में सहज अभिव्यक्ति कर सकते हैं वह प्रायः विद्यालयों में स्वीकृत नहीं होती
 - (d) शिक्षक/शिक्षिका व बाकी साथी उनका मजाक उड़ाते हैं

Bihar TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (c)

41. निम्नलिखित में मौखिक अभिव्यक्ति का रूप है

- (a) शुद्ध वर्तनी
- (b) सुलेख
- (c) श्रुतलेख
- (d) आशु भाषण

UP TET - Ist Paper (I-V) Oct. 2017

उत्तर : (d)

42. लेखन-क्षमता का विकास करने के सन्दर्भ में आपके लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण है—

- (a) सुन्दर लेखन का अभ्यास
- (b) मानक वर्तनी का प्रयोग
- (c) सुनी-पढ़ी और समझी हुई बातों की स्वाभाविक लिखित अभिव्यक्ति
- (d) दिए हुए बिन्दुओं और निर्देशों के आधार पर निबन्ध लिखना

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014

उत्तर : (c)

परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

- किसी भी भाषा में, 75% भाषा की अभिव्यक्ति — के माध्यम से की जाती है।
 - (a) शब्दावली
 - (b) सही व्याकरण
 - (c) उच्चारण
 - (d) इशारों और चेहरे के हाव-भाव
- किसी गणितीय समस्या को प्रस्तुत करते समय, शिक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि समस्या की भाषा छात्रों के — के स्तर के अनुसार है।
 - (a) योग्यता
 - (b) समझ
 - (c) पहुंच
 - (d) रणनीति
- एक सहभागी शैक्षिक वातावरण में — के पर्याप्त अवसर होने पर प्रभावी भाषा अधिग्रहण संभव हो जाता है।
 - (a) मौखिक संचार
 - (b) लिखित संचार
 - (c) विश्लेषणात्मक संचार
 - (d) पारस्परिक संचार
- निम्नलिखित में से कौन-सी बोलने की योग्यता है?
 - (a) शुद्ध वर्तनी
 - (b) सुलेख
 - (c) श्रुतलेख
 - (d) आशु भाषण
- निम्नलिखित में से कौन-सा मौखिक भाव-प्रकाशन का साधन नहीं है?
 - (a) दीपावली पर लेख
 - (b) कहानी कथन
 - (c) अभिनय
 - (d) संवाद
- छात्र द्वारा अवकाश के लिए लिखे जाने वाले प्रार्थना-पत्र के अन्त में लिखना चाहिए—
 - (a) आपका स्नेही
 - (b) आपका शुभेच्छु
 - (c) आपका आज्ञाकारी शिष्य
 - (d) आपका अभिन्न छात्र
- निम्नलिखित में से कौन-सी विधि रचना शिक्षण की विधि नहीं है?
 - (a) परामर्श विधि
 - (b) भाष्य विधि
 - (c) रूपरेखा विधि
 - (d) निर्देशन विधि
- गद्य शिक्षण में सर्वाधिक महत्व किसका है?
 - (a) सस्वर पठन
 - (b) मौन पठन
 - (c) रसानुभूति
 - (d) आदर्श वाचन
- नाटक शिक्षण में निम्नलिखित में से किसका महत्व नहीं है?
 - (a) रंगमंच अभिनय
 - (b) कक्षाभिनय
 - (c) मौन पठन
 - (d) वाचिक अभिनय
- काव्य-शिक्षण में निम्न में से किसका महत्व अधिक है?
 - (a) विचार विश्लेषण
 - (b) बोध प्रश्न
 - (c) मौन वाचन
 - (d) आदर्श वाचन
- डाल्टन योजना का प्रथम प्रयोग किसने किया?
 - (a) फ्रोबेल
 - (b) डीवी
 - (c) कुमारी हेलन पार्कहर्स्ट
 - (d) किलपैट्रिक
- कक्षा तीन के विद्यार्थियों के लिये निम्न में से कौन-सा शिक्षण का सबसे अच्छा तरीका होगा?
 - (a) व्याख्यान विधि
 - (b) सृजनात्मक क्रियाकलाप
 - (c) समूह वार्तालाप
 - (d) प्रयोगशाला विधि
- शिक्षा के क्षेत्र में 'पाठ्यचर्या' शब्दावली-----की ओर संकेत करती है।
 - (a) विद्यालय का संपूर्ण कार्यक्रम जिसमें विद्यार्थी प्रतिदिन अनुभव प्राप्त करते हैं
 - (b) मूल्यांकन -प्रक्रिया
 - (c) कक्षा में प्रयुक्त की जाने वाली पाठ्य सामग्री
 - (d) शिक्षण-पद्धति एवं पढ़ाई जाने वाली विषय-वस्तु
- सम्प्रेषण का वास्तविक अर्थ है—
 - (a) सूचनाओं को भली प्रकार से प्रेषित करना
 - (b) सूचनाओं पर भाषण देना
 - (c) शिक्षक और छात्र के बीच वार्तालाप होना
 - (d) इनमें से कोई नहीं
- सम्प्रेषण के प्रकार हैं—
 - (a) चार
 - (b) दो
 - (c) तीन
 - (d) पाँच
- प्राथमिक विद्यालय के कक्षा-कक्ष के संदर्भ में सक्रियबद्धता का क्या अर्थ है ?
 - (a) याद करना, प्रत्यास्मरण और सुनना
 - (b) शिक्षक का अनुकरण और नकल करना
 - (c) जाँच-पड़ताल करना, प्रश्न पूछना और वाद-विवाद
 - (d) शिक्षक द्वारा दिये गये उत्तरों को नकल करना

17. कक्षा तीन के विद्यार्थियों के लिए निम्नलिखित में से शिक्षण का सबसे अच्छा तरीका कौन-सा होगा?
 (a) प्रयोगशाला विधि (b) समूह वार्तालाप
 (c) व्याख्यान विधि (d) सृजनात्मक क्रियाकलाप
18. सम्प्रेषण के प्रमुख घटक हैं—
 (a) प्रेषक (b) प्रापक
 (c) माध्यम (d) उपरोक्त सभी
19. शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रारम्भ करने से पहले एक कुशल अध्यापक को क्या करना चाहिए?
 (a) छात्रों को दण्डित करना चाहिए
 (b) चुटकुले सुनाने चाहिए
 (c) अधिगम परिस्थितियाँ उत्पन्न करनी चाहिए
 (d) आराम करना चाहिए
20. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क 2005 ने अपनी समझ से प्राप्त की है।
 (a) मानवतावाद (b) व्यवहारवाद
 (c) रचनावाद (d) संज्ञानात्मक सिद्धांत
21. बच्चों की रुचि बनाए रखने के लिए आप कौन-सी विधि का चयन करेंगे?
 (a) बच्चों को पढ़कर आने को कहेंगे और प्रश्न पूछेंगे
 (b) स्वयं गति विधि करेंगे तथा बच्चों को बताएँगे
 (c) आप गतिविधि में बच्चों को शामिल करेंगे
 (d) बच्चों की स्वयं गतिविधि करने के लिए देंगे
22. किस देश में शिक्षा के क्षेत्र में बौद्धिक उद्देश्य पर बल दिया गया है?
 (a) भारत (b) ग्रीक
 (c) स्पार्टा (d) अथीनियान
23. हरग्रीव्स ने विफल सुधारों पर साहित्य का संक्षिप्त विवरण दिया है। उन्होंने कहा है कि शैक्षिक परिवर्तन लड़खड़ा या विफल हो जाते हैं क्योंकि —
 (a) परिवर्तन पूरी तरह से एक अवधारणा है या उसे स्पष्ट से प्रदर्शित नहीं किया गया है। यह जाहिर है किसे लाभ होगा और कैसे। छात्रों के लिए किस परिवर्तन को प्राप्त किया जाएगा, उसे बताया नहीं गया है
 (b) बदलाव बहुत की व्यापक और महत्वाकांक्षी होते हैं ताकि शिक्षकों को कई मोर्चों पर काम करना पड़े, या यह बहुत ही सीमित और विशिष्ट होते हैं ताकि कुछ वास्तविक परिवर्तन किया जा सके
 (c) निपटने के लिए परिवर्तन लोगों के लिए बहुत तीव्र होता है, या बहुत धीमा होता है जिससे लोग अधीर या बोर हो जाते हैं, और कुछ करने लगते हैं
 (d) उपरोक्त सभी
24. कोहलबर्ग के अनुसार, शिक्षक बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास कर सकता है —
 (a) व्यवहार के स्पष्ट नियम बनाकर
 (b) नैतिक मुद्दों पर आधारित चर्चाओं में उन्हें शामिल करके
 (c) कैसे व्यवहार किया जाना चाहिए इस पर कठोर निर्देश देकर
 (d) धार्मिक शिक्षा को महत्व देकर
25. निम्नलिखित में से क्या “समझने हेतु शिक्षण” को नहीं दर्शाता है?
 (a) छात्र का किसी घटना अथवा संकल्पना को अपने स्वयं के शब्दों में वर्णन करने के लिए छात्र को कहना
 (b) किसी नियम के कार्य का चित्रण करने के लिए उदाहरण देने हेतु छात्र को पढ़ाना
 (c) समानता और असमानता देखकर छात्रों की समरूपता तैयार करने हेतु सहायता करना
 (d) अलग तथ्यों तथा प्रक्रियाओं का स्मरण करने में छात्रों को सक्षम बनाना
26. एक शिक्षिका सदैव अपने शिक्षार्थियों को एक विषय के क्षेत्र में अर्जित ज्ञान को अन्य विषयों के क्षेत्र में अर्जित ज्ञान को जोड़ने में मदद करती है। इससे प्रोत्साहित करने में मदद मिलती है—
 (a) ज्ञान का सहसंबंध और अंतरण
 (b) वैयक्तिक अंतर
 (c) शिक्षार्थी की स्वायत्तता
 (d) पुनर्बलन
27. विपिन एक दिवा-स्वप्न दृष्टा, पुस्तकें पढ़ने में रुचि रखने वाला, अपने विचारों को दूसरों के समक्ष अभिव्यक्त करने में असमर्थ, अमिलनसार और आदर्शवादी बालक है। तब उसके व्यक्तित्व का प्रकार है—
 (a) बहिर्मुखी (b) अन्तर्मुखी
 (c) उभयमुखी (d) उद्यमशील
28. कोई जानकारी पाने के लिए त्वरित पढ़ने को कहा जाता है—
 (a) स्किमिंग (b) तेज पढ़ना
 (c) स्केनिंग (d) मूक पढ़ना
29. भारतीय समाज में बहुभाषी चरित्र को देखा जाना चाहिए —
 (a) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अवरोध के रूप में
 (b) विद्यालयीन जीवन के संवर्धन के संसाधन के रूप में
 (c) छात्रों को सीखने के लिए अभिप्रेरित करने में शिक्षक की क्षमता को चुनौती के रूप में
 (d) शिक्षार्थी के लिए विद्यालयीन जीवन को जटिल बनाने वाले कारक के रूप में
30. निम्न में से कौन-सा अभ्यास कौशल नहीं है—
 (a) टिप्पणी लिखना
 (b) विश्वज्ञान कोष (encyclopaedia) में से जानकारी लेना
 (c) प्राथमिक विवरण लिखना
 (d) शब्द कोष (dictionary) का उपयोग करना

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (d) | 2. (b) | 3. (d) | 4. (d) | 5. (a) | 6. (c) | 7. (b) | 8. (b) | 9. (c) | 10. (d) |
| 11. (c) | 12. (b) | 13. (a) | 14. (a) | 15. (b) | 16. (c) | 17. (d) | 18. (d) | 19. (c) | 20. (c) |
| 21. (d) | 22. (b) | 23. (d) | 24. (b) | 25. (d) | 26. (a) | 27. (b) | 28. (a) | 29. (b) | 30. (c) |

भाषा अधिगम में व्याकरण की भूमिका

व्याकरण- किसी भी भाषा के अंग प्रत्यंग का विश्लेषण तथा विवेचन व्याकरण कहलाता है। व्याकरण वह विद्या है जिसके द्वारा किसी भाषा को शुद्ध बोला, पढ़ा और शुद्ध लिखा जाता है। किसी भी भाषा के लिखने, पढ़ने और बोलने के निश्चित नियम होते हैं भाषा की शुद्धता व सुन्दरता को बनाए रखने के लिए इन नियमों का पालन करना आवश्यक होता है।

व्याकरण की परिभाषा

पाणिनि के अनुसार- “व्याकरण के द्वारा ही भाषा को व्यवस्थित करते हैं।”

सानशिन के अनुसार- “व्याकरण के द्वारा ही मनुष्य को इस बात का ज्ञान होता है कि वाक्यों के शब्द समूहों में क्या-क्या अन्तर है”।

व्याकरण शिक्षण

व्याकरण ऐसा शास्त्र है जो हमें यह बताता है कि वाक्य में कौन सा शब्द कहाँ रहना चाहिए। व्याकरण भाषा के सर्वमान्य रूप का संरक्षण करता है। व्याकरण भाषा को व्यवस्थित रूप प्रदान करती है। व्याकरण शिक्षण भाषा- शिक्षण का महत्वपूर्ण अंग है। भाषा के आधार स्तंभों में से एक भाषा व्याकरण भी है व्याकरण का जानकारी विद्यार्थी ही लिखित एवं मौखिक रूप से अभिव्यक्त करने में सक्षम होता है।

व्याकरण का महत्व

हमें ज्ञात होना चाहिए की भाषा परिवर्तनशील है, विकासशील है। व्याकरण उसके इस विकास पर नियंत्रण का कार्य करता है। व्याकरण भाषा को अव्यवस्थित एवं उच्छृंखल होने से बचाता है। अतः भाषा के स्वरूप को शुद्ध रखने, उसकी विकृतियों से बचाने के लिए व्याकरण की शिक्षा आवश्यक है। अतः भाषा- शिक्षण में व्याकरण शिक्षण के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है।

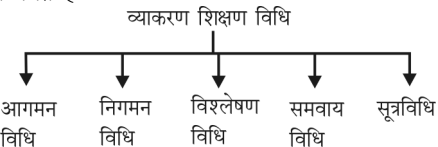
व्याकरण शिक्षण के उद्देश्य

भाषा अनुकरण से सीखी जाती है पर भाषा को प्रभावशाली बनाने के लिए हमें उसके सर्वमान्य रूप को सीखना है।

- (i) छात्रों को ध्वनियों, ध्वनियों के सूक्ष्म अन्तर शब्द योजना, शब्द शक्तियों एवं शुद्ध वर्तनी का ज्ञान कराना।
- (ii) छात्रों को वाक्य-रचना के नियम, विराम चिह्नों का शुद्ध प्रयोग आदि का ज्ञान कराना।
- (iii) छात्रों को शब्द, सूक्ति, लोकोक्ति, मुहावरे आदि का प्रसंगानुकूल अर्थ निकालना और स्वराघात के अनुसार अर्थ बोध कराने के योग्य बनाना।
- (iv) छात्रों में भाषा के गुण-दोष परखने की रुचि उत्पन्न करना।
- (v) चारों कौशल **पढ़ना, लिखना, बोलना और सुनना** का विकास बालकों को कराना।
- (vi) बालकों को शुद्ध बोलने, लिखने एवं पढ़ने की प्रेरणा देना।
- (vii) शब्द विन्यास तथा शुद्ध वर्तनी का बोध कराना।
- (viii) भाषा सम्बन्धी नियमों से पहचान कराकर उनका वाक्यों में प्रयोग करना सिखाना।
- (ix) शब्दों मुहावरों का प्रसंगानुकूल प्रयोग करना सिखाना।
- (x) भाषा रचना का बोध कराना।

व्याकरण की शिक्षण विधियाँ

विद्यार्थी के स्तर के अनुसार ही व्याकरण शिक्षण की विधियों का चयन करना चाहिए। व्याकरण शिक्षण की विधियाँ निम्नवत हैं-



आगमन विधि-

इस विधि के अन्तर्गत सर्वप्रथम पर्याप्त उदाहरण छात्रों के समक्ष रखे जाते हैं। फिर उनसे प्रचलित नियम निकलवाये जाते हैं और उनका अभ्यास कराया जाता है। इसमें छात्रों की उत्सुकता अन्त तक बनी रहती है जिससे वे सब बातें ध्यान से सुनते, समझते और ग्रहण करते हैं। व्याकरण शिक्षण के लिए यह विधि सर्वोत्तम मानी जाती है।

यह विधि सरल से कठिन की ओर, ज्ञात से अज्ञात की ओर, स्थूल से सूक्ष्म की ओर, विशिष्ट से सामान्य की ओर इत्यादि शिक्षण सूत्रों का अनुसरण करती है। इस विधि में विद्यार्थी को विभिन्न स्तर पर निरीक्षण, चिंतन एवं सामान्यीकरण के लिए पर्याप्त अवसर मिलता है। जिसके फलस्वरूप विद्यार्थी के मानसिक विकास में सहायता मिलती है। इस व्याकरण विधि का उपयोग सभी स्तरों पर व्याकरण शिक्षण के लिए किया जा सकता है।

निगमन विधि-

व्याकरण शिक्षण की निगमन विधि में शिक्षक विद्यार्थियों को पहले व्याकरण के नियमों से परिचित कराता है, तत्पश्चात् उदाहरणों के माध्यम से व्याकरण के इन नियमों को स्पष्ट करता है। यह विधि **अज्ञात से ज्ञात की ओर** सिद्धान्त का पालन करती है। इस विधि में विद्यार्थी को नियमों का ज्ञान भली-भाँति प्राप्त हो जाता है परन्तु वह उनके व्यावहारिक प्रयोग में सक्षम नहीं हो पाता। अतः यह विधि व्याकरण शिक्षण में अधिक उपयोगी नहीं है।

विश्लेषण विधि- विश्लेषण विधि में उदाहरणों की व्याख्या एवं उनके प्रयोग के आधार पर व्याकरणिक नियमों की व्याख्या की जाती है। इस विधि में आगमन व निगमन दोनों ही विधियों के समन्वित रूप का प्रयोग करना चाहिए।

इस विधि में पहले उदाहरणों को विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। इसके बाद इन उदाहरणों का विश्लेषण कर नियमीकरण किया जाता है। नियमीकरण के पश्चात् नियम की जाँच पड़ताल के लिए पुनः उदाहरणों को प्रस्तुत किया जाता है। इन उदाहरणों पर नियमों का प्रयोग कराया जाता है। इस विधि में विद्यार्थी सक्रिय भागीदार होता है।

समवाय विधि- समवाय विधि को **सहयोग विधि** भी कहा जाता है। इस विधि में भाषा के मौखिक एवं लिखित रूप के शिक्षण के साथ-साथ व्याकरण शिक्षण कराया जाता है। इस विधि में व्याकरण शिक्षण के दौरान पाठ्यपुस्तक के ही उदाहरणों का प्रयोग किया जाता है। इस विधि में व्याकरण शिक्षण के लिए अलग कालांश में न होकर गद्य या पद्य शिक्षण के साथ-ही व्याकरण शिक्षण संपन्न किया जाता है।

सूत्रविधि- यह विधि संस्कृत से आई है। इसका प्रचलन भारतवर्ष में बहुत पहले से है। इस विधि के अनुसार व्याकरण के भिन्न नियमों को सूत्र के रूप में परिणित कर लिया जाता है। विद्यार्थियों को यह सूत्र कण्ठस्थ करा दिये जाते हैं और बाद में अनेक उदाहरणों द्वारा इन सूत्रों को स्पष्ट कर दिया जाता है। संस्कृत वैयाकरण पाणिनि कृत 'अष्टाध्यायी' सूत्र विधि का प्रमुख उदाहरण है।

सम्प्रेषण कौशल के विकास में व्याकरण का महत्त्व

1. यह बालकों में ऐसी क्षमता का विकास करने में सहायक है, जिससे कि वे अपने भावों को शुद्धतापूर्वक व्यक्त कर सकें।
2. व्याकरण बालकों के अशुद्ध उच्चारण को शुद्ध करने में सहायक है।
3. यह बालकों को साधारण वार्तालाप में शुद्ध भाषा के प्रयोग को सिखाने में सहायक है।
4. व्याकरण शुद्ध एवं सही वाचन का अभ्यास करने में सहायक है।
5. यह बालकों में सृजनात्मक कौशल का विकास करने में सहायक है।

लेखन कौशल के विकास में व्याकरण का महत्त्व

1. यह बच्चों में विभिन्न सन्दर्भ शब्दों की समझ पैदा करने में सहायक है।
2. यह लेखन में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, प्रत्यय, उपसर्ग, तत्सम शब्द, तद्भव शब्द आदि के प्रयोग से छात्रों के लेखन कौशल के विकास में सहायक है।
3. यह बच्चों को लेखन क्रिया में गद्य-पद्य में अन्तर समझाकर उनके लेखन कौशल का विकास करने में सहायक है।
4. यह बच्चों की पढ़ी या सुनी हुई बातों का शुद्ध-वर्तनी तथा विराम चिह्नों का सही प्रयोग करना सिखाने में सहायक।
5. बच्चों को लेखन शैली में मुहावरों का प्रयोग करने का शिक्षण देकर उनके लेखन कौशल के विकास में सहायक है।

विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौन-सा द्वितीय भाषा-शिक्षण का उद्देश्य नहीं है?
(a) विभिन्न क्षेत्रों, स्थितियों में हिन्दी की विभिन्न प्रयुक्तियों को समझने की योग्यता का विकास
(b) हिन्दी के व्याकरणिक नियमों को कंठस्थ करना
(c) दैनिक जीवन में हिन्दी में समझने तथा बोलने की क्षमता का विकास
(d) बोलने की क्षमता के अनुरूप लिखने की क्षमता का विकास

CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012

उत्तर : (b)

2. उच्च प्राथमिक स्तर पर हिन्दी भाषा-शिक्षण का सर्वाधिक सम्बन्ध है -
(a) पढ़ी सामग्री के बारे में आलोचनात्मक चिन्तन से
(b) हिन्दी की व्याकरणिक व्यवस्था को जानने से
(c) सृजनात्मक लेखन की अनिवार्यता से
(d) हिन्दी की ध्वनियों को सिखाने से

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (b)

3. व्याकरण की समझ को सन्दर्भपरक प्रश्नों के माध्यम से आँकना—

- (a) पूर्णतः उचित है
- (b) आंशिक रूप से उचित है
- (c) पूर्णतः असम्भव है
- (d) बिल्कुल अनुचित है

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015

उत्तर : (a)

'संदर्भ में व्याकरण' का शैक्षिक निहितार्थ है—

- (a) व्याकरण का संदर्भ पाठ्य-पुस्तक में ही होता है
- (b) व्याकरण पाठ के संदर्भ में सिखाया जाता है
- (c) पाठ के संदर्भ में व्याकरण जानना जरूरी नहीं है
- (d) व्याकरण और संदर्भ दोनों अलग हैं।

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016

उत्तर : (b)

5. 'पढ़कर समझना' कुशलता का विकास करने में सबसे कम महत्वपूर्ण है—

- (a) कहानी का अंत बदलवा देना
- (b) कहानी पर आधारित व्याकरण समझाना
- (c) कहानी को अपनी भाषा में कहलवाना
- (d) कहानी पर आधारित प्रश्न बनवाना

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016

उत्तर : (b)

6. एक समावेशी कक्षा में कौन-सा कथन भाषा-शिक्षण के सिद्धांतों के प्रतिकूल है?

- (a) बच्चे परिवेश से प्राप्त भाषा को ग्रहण करते हुए भाषा-प्रयोग में नियम बना सकते हैं।
- (b) भाषा परिवेश में रहकर अर्जित की जाती है।
- (c) प्रिंट-समृद्ध माहौल भाषा सीखने में सहायक होता है।
- (d) व्याकरण के नियम सिखाने से बच्चों का भाषा-विकास शीघ्रता से होगा।

CTET - Ist Paper (I-V) June 2011

उत्तर : (d)

7. 'मैंने चाट खाई और फिर मैंने हँसी।' शर्मिला का यह भाषा-प्रयोग मुख्यतः किस ओर संकेत करता है?

- (a) व्याकरणिक नियमों की जानकारी न होना
- (b) नियमों का अति समान्यीकरण
- (c) भाषा-प्रयोग में असावधानी
- (d) भाषा की समझ न होना

CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011

उत्तर : (a)

8. व्याकरण-शिक्षण के सन्दर्भ में कौन-सा कथन सही है?

- (a) व्याकरण-शिक्षण के लिए समय-सारणी में अलग से काव्यांशों की व्यवस्था होनी चाहिए
- (b) भाषा-प्रयोग की अपेक्षा भाषा-नियमों को ही महत्व देना चाहिए
- (c) बच्चे परिवेश में उपलब्ध भाषिक प्रयोगों के आधार पर स्वयं भाषा के नियम बनाने की क्षमता रखते हैं
- (d) व्याकरण-शिक्षण अत्यन्त आवश्यक है

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012

उत्तर : (d)

9. निम्नलिखित में से कौन-सा उच्च प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण का उद्देश्य नहीं है?

- (a) सही रूप में समझना
- (b) व्याकरण के नियमों को रटना
- (c) निजी अनुभवों के आधार पर भाषा का सृजनशील प्रयोग
- (d) दूसरों के अनुभवों से जुड़ पाना और सन्दर्भों में चीजों को समझना

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012

उत्तर : (b)

10. उच्च प्राथमिक स्तर पर व्याकरण-शिक्षण का उद्देश्य..... में सहायक होगा।

- (a) भाषा की नियमबद्ध प्रकृति को अत्यधिक महत्व देने

- (b) भाषा की प्रकृति, प्रकार्य और व्याकरणिक नियमों को कण्ठस्थ करने
(c) व्याकरण की परिभाषाओं को कण्ठस्थ करने
(d) भाषा की नियमबद्ध प्रकृति को समझने और उसका विश्लेषण करने
- CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014**
उत्तर : (d)
11. उच्च प्राथमिक स्तर पर व्याकरण-शिक्षण की सर्वाधिक उचित विधि है –
(a) भाषा-संसर्ग विधि (b) सूत्र विधि
(c) निगमन विधि (d) आगमन विधि
- CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014**
उत्तर : (d)
12. सुरभि अक्सर 'ड़' वाले शब्दों को गलत तरीके से उच्चारित करती है। आप क्या करेंगे?
(a) उसे 'ड़' वाले शब्दों की सूची पढ़ने एवं लिखकर अभ्यास करने के लिए देंगे।
(b) उसे 'ड़' वाले शब्दों को अपने पीछे-पीछे दोहराने के लिए कहेंगे।
(c) उसे सहजता के साथ अपनी बात कहने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।
(d) उसे 'ड़' वाले शब्दों की सूचना पढ़ने एवं बोलकर अभ्यास करने के लिए कहेंगे।
- CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015**
उत्तर : (d)
13. प्राथमिक स्तर पर पढ़ने की क्षमता का आकलन करने की दृष्टि से सबसे अधिक महत्वपूर्ण है—
(a) विराम-चिह्नों का ज्ञान (b) पढ़ने में प्रवाह
(c) अर्थ का निर्माण (d) वर्णों की पहचान
- CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015**
उत्तर : (d)
14. व्याकरण-शिक्षण की आगमन विधि की विशेषता है—
(a) पहले नियम बताना
(b) पहले नियम का विश्लेषण करना
(c) पहले मनोरंजक गतिविधियाँ कराना
(d) पहले उदाहरण प्रस्तुत करना
- CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015**
उत्तर : (d)
15. भाषा के व्याकरण की समझ को –
(a) केवल वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के माध्यम से आँका जाना चाहिए
(b) केवल लघुत्तर प्रश्नों के माध्यम से आँका जाना चाहिए
(c) निबंधात्मक प्रश्नों के माध्यम से आँका जाना चाहिए
(d) संदर्भपरक प्रश्नों के माध्यम से आँका जाना चाहिए
- CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012**
उत्तर : (d)
16. व्याकरण के ज्ञान का मुख्य उद्देश्य है—
(a) भाषा-प्रयोग में व्याकरण का ध्यान रखना
(b) भाषा-प्रयोग में अतिशुद्धतावादी होना
(c) व्याकरणिक बिन्दुओं की परिभाषा याद करना
(d) व्याकरणिक तत्वों की सूची बनाना
- CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016**
उत्तर : (a)
17. अनुस्वार एवं अनुनासिक का प्रयोग करने संबंधी त्रुटियों को दूर किया जा सकता है—
(a) छपी सामग्री से समृद्ध वातावरण देकर
(b) अनुस्वार वाले शब्दों की सूची बनवाकर
(c) स्वयं सही उच्चारण का आदर्श प्रस्तुत कर
(d) अनुनासिक के नियम बताकर
- CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016**
उत्तर : (c)
18. कक्षा आठ में पढ़ने वाली नन्दिनी लिखते समय वर्तनी की अशुद्धियाँ करती है। भाषा-शिक्षक के रूप में आप अपनी क्या जिम्मेदारी मानते हैं?
(a) नन्दिनी को ऐसे अवसर प्रदान करना कि वह स्वयं उनमें सुधार करे
(b) नन्दिनी की अशुद्धियों को काटकर सही करना और उन्हें बीस-बीस बार लिखवाना
(c) नन्दिनी को समझाना कि वर्तनी की अशुद्धियाँ करने पर उसके अंक कट जाएँगे
(d) नन्दिनी को समझाना कि वर्तनी की शुद्धता ही लेखन का सशक्त पहलू है
- CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2015**
उत्तर : (a)
19. व्याकरण शिक्षण के लिये उपयुक्त नहीं है—
(a) आगमन प्रणाली (b) निगमन प्रणाली
(c) अव्याकृति प्रणाली (d) कक्षाभिनय प्रणाली
- UP TET - Ist Paper (I-V) Dec. 2016**
उत्तर : (d)
20. पहले बच्चों के लिए लिपिबद्ध और उनसे जुड़ी ध्वनियाँ—
(a) निरर्थक होती है (b) सार्थक होती है
(c) मूर्त होती है (d) अमूर्त होती है
- Bihar TET - Ist Paper (I-V) 2011**
उत्तर : (a)
21. बच्चों की भाषा के सन्दर्भ में कौन-सा कथन सही है?
(a) बच्चों की भाषा में बहुत अधिक व्याकरणिक त्रुटियाँ होती हैं
(b) बच्चों की भाषा में नियमबद्ध व्यवस्था की झलक मिलती है
(c) बच्चों की भाषा तार शैली में ही रहती है
(d) बच्चों की भाषा को सुधारने के लिए दण्ड एवं पुरस्कार आवश्यक है
- Bihar TET - Ist Paper (I-V) 2011**
उत्तर : (a)
22. उच्च प्राथमिक स्तर पर व्याकरण शिक्षण की उपयुक्त प्रणाली है—
(a) पाठ्यपुस्तक प्रणाली (b) समवाय प्रणाली
(c) भाषा-संसर्ग प्रणाली (d) आगमन-निगमन प्रणाली
- Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2012**
उत्तर : (d)
23. निम्नांकित में कौन-सा वाक्य सही है?
(a) तमाम देश भर में बात फैल गई
(b) देश भर में बात फैल गई
(c) पूरे देश भर में बात फैल गई
(d) सम्पूर्ण देश भर में बात फैल गई
- Bihar TET - Ist Paper (I-V) 2011**
उत्तर : (b)

24. निम्नलिखित में से कौन-सा प्रश्न “सन्दर्भ में व्याकरण शिक्षण” को पुष्ट करता है?

- (a) ‘घर-घर’ पुनरुक्त शब्द-युग्म है, इसी तरह के दो और शब्द-युग्म बताइए।
 (b) ‘घर-घर’ पुनरुक्त शब्द-युग्म है, दिए गए शब्द-समूहों में से ऐसे शब्द-युग्म छाँटिए।
 (c) ‘घर-घर’ शब्द-युग्म का प्रयोग करते हुए दो वाक्य बनाइए।

(d) ‘घर-घर’ आपकी ही चर्चा है। वाक्य में ‘घर’ शब्द की पुनरावृत्ति से अर्थ पर क्या प्रभाव पड़ता है।

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2015

उत्तर : (d)

25. ‘निर्बल’ का विलोम शब्द है—

- (a) सुदृढ़ (b) सबल
 (c) बाहुबली (d) समुन्नत

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Dec. 2016

उत्तर : (b)

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. एक समावेशी कक्षा में कौन-सा कथन भाषा शिक्षण सिद्धांतों के प्रतिकूल है?

- (a) बालक अपने परिवेश से प्राप्त भाषा को ग्रहण करते हुए भाषा प्रयोग के नियम बना सकते हैं।
 (b) प्रिंट समृद्ध वातावरण भाषा सीखने में सहायक होता है।
 (c) व्याकरण के नियम सिखाने में बालकों का भाषा विकास शीघ्रता से होगा।
 (d) भाषा अपने परिवेश में रहकर अर्जित की जाती है।

2. बाल साहित्य का प्रयोग—

- (a) बच्चों के मुख्य पाठ्य-सामग्री से विचलित करता है।
 (b) सौंदर्य बोध की क्षमता का विकास करता है।
 (c) भाषा सीखने का एक सस्ता साधन है।
 (d) व्याकरण शिक्षण में उचित नहीं है।

3. भाषा की पाठ्य-पुस्तक में विज्ञान, भूगोल, खेल-कूद आदि अन्य विषयों की सामग्री—

- (a) नहीं होनी चाहिए, क्योंकि बालक ये विषय नहीं समझ पाएंगे।
 (b) होनी चाहिए, क्योंकि इनसे बालकों का सामान्य ज्ञान बढ़ेगा।
 (c) नहीं होना चाहिए, क्योंकि इससे पाठ्यपुस्तक में पृष्ठों की संख्या बढ़ती है।
 (d) होनी चाहिए, ताकि बालक विभिन्न विषयों की शब्दावली से परिचित हो सकें।

4. भाषा की पाठ्यपुस्तक की भाषा-शैली—

- (a) कठिन शब्दों से युक्त होनी चाहिए।
 (b) बालकों की समुदाय की भाषा से मिलती-जुलती होनी चाहिए।
 (c) तत्सम प्रधान होनी चाहिए।
 (d) तद्भव प्रधान होनी चाहिए।

5. अविकारी शब्द की अवधारणा प्रस्तुत करते समय शिक्षक निम्नलिखित में से किस शब्द समूह को उदाहरण के रूप में रख सकता है?

- (a) क्योंकि, काला, समूह (b) और, कौन, हम
 (c) इसलिए, अतः, लेकिन (d) अथवा, कोई, नहीं

6. भाषा की पाठ्य-पुस्तक के लिए पाठों को चुनाव करते समय सबसे महत्त्वपूर्ण है—

- (a) प्रसिद्ध लेखकों की रचनाएं।
 (b) आलंकारिक भाषा से युक्त पाठ।
 (c) पाठों की संख्या।
 (d) संवेदना परक पाठ।

7. जब विषयवस्तु को वाक्य बंधारण के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है, वह कहलाता है—

- (a) स्वनिक (Phonetic) वर्गीकरण

(b) व्याकरणिक वर्गीकरण

(c) भाषा शब्द (Lexical) वर्गीकरण

(d) अर्थ विषयक (Semantic) वर्गीकरण

8. उदाहरण, निरीक्षण विश्लेषण, वर्गीकरण, नियमीकरण निम्नलिखित में से किस विधि के सोपान हैं?

- (a) निगमन विधि (b) आगमन विधि
 (c) अन्तर्दर्शन विधि (d) बहिर्दर्शन विधि

9. व्याकरण वस्तुतः वह शास्त्र है जिससे की वाक्य में स्थिति का निर्धारण किया जाता है।

- (a) ध्वनि (b) शब्द
 (c) पद (d) अर्थ

10. “व्याकरण शब्दानुशासन है।” व्याकरण की यह परिभाषा किसने दी?

- (a) पाणिनि (b) पतंजलि
 (c) हेमचन्द्र (d) डॉ. स्वीट

11. व्याकरण के संबंध में सत्य कथन की जाँच करिये।

- (i) व्याकरण साधन है, साध्य नहीं।
 (ii) निगमन विधि व्याकरण शिक्षण की सर्वोत्तम विधि है।
 (iii) उदाहरण से नियम की ओर व्याकरण शिक्षण की आगमन विधि है।

- (a) केवल (i) सही (b) केवल (i) एवं (ii) सही
 (c) केवल (i) एवं (iii) सही (d) तीनों सही

12. रीता कक्षा पाँच के छात्रों में संज्ञा से सम्बन्धित अवधारणा विकसित करने के लिए विभिन्न वस्तुओं के नाम पत्रों पर लिखकर देती है और विशेष धर्म के आधार पर उनका वर्गीकरण करवाती है। रीता संज्ञा के किस भेद की अवधारणा स्पष्ट करना चाहती है?

- (a) व्यक्तिवाचक (b) जातिवाचक
 (c) भाववाचक (d) द्रव्यवाचक

13. व्याकरण शिक्षण के उद्देश्यों में शामिल नहीं है—

- (a) शब्दकोश में वृद्धि
 (b) रस, छन्द, अलंकारों का ज्ञान कराना
 (c) कल्पनाशीलता एवं अभिनय कला में निपुणता
 (d) शब्दों का सन्दर्भ में अर्थ ग्रहण करने की कला

14. संस्कृत वैयाकरण पाणिनिकृत ‘अष्टाध्यायी’ व्याकरण शिक्षण के किस विधि पर आधारित है?

- (a) सूत्र विधि (b) आगमन विधि
 (c) निगमन विधि (d) पाठ्यपुस्तक विधि

15. व्याकरण शिक्षण की आगमन-निगमन विधियाँ व्याकरण शिक्षण के किस प्रणाली पर आधारित हैं?

- (a) सिद्धान्त प्रणाली (b) भाषा संसर्ग प्रणाली
 (c) व्याख्या प्रणाली (d) सहयोग प्रणाली

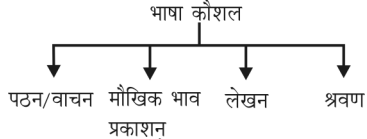
16. “दूध में कोई पड़ा है” नमिता द्वारा प्रस्तुत यह त्रुटिपूर्ण वाक्य उसकी किस व्याकरणिक अवधारणा से संबंधित समझ के अभाव की तरफ संकेत करता है?
 (a) वाक्य संरचना की समझ
 (b) शब्द संरचना की समझ
 (c) क्षेत्रीयता का प्रभाव
 (d) अनिश्चयवाचक सर्वनाम की अवधारणा
17. “आज देश में विभीषणों की कमी नहीं है” रेखांकित का पद परिचय देते हुए मोहित ‘विभीषणों’ को व्यक्तिवाचक संज्ञा बताता है। मोहित निम्नलिखित में से क्या नहीं जानता-
 (a) यह कि इतिहास प्रसिद्ध व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ कभी-कभी जातिवाचक संज्ञा के रूप में भी प्रयुक्त होती हैं।
 (b) यह कि जातिवाचक संज्ञा एवं व्यक्तिवाचक संज्ञा में मूलभूत अन्तर है।
 (c) यह कि व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ कभी भी बहुवचन में प्रयुक्त नहीं होती।
 (d) यह कि व्याकरण एक कठिन विषय है जिसे सब नहीं समझ सकते।
18. निम्नलिखित में से कौन सा पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण का दुष्प्रभाव है-
 (a) ‘डू’ का ‘र’ बोलना
 (b) भाषा में व्याकरण के समझ का अभाव
 (c) वाचन कौशल में पिछड़ापन
 (d) ध्यान में कमी
19. व्याकरण शिक्षण विधियों से सम्बन्धित कुछ कथन दिये गये हैं। गलत कथन का चयन कीजिए।
 (a) आगमन विधि के जनक अरस्तू हैं।
 (b) आगमन व निगमन विधियाँ विपरीत होते हुए भी परस्पर पूरक हैं।
 (c) आगमन विधि अमनोवैज्ञानिक विधि है।
 (d) गद्य-पद्य के माध्यम से व्याकरण का शिक्षण करना ही सहयोग विधि है।
20. सर्वनाम पढ़ाने हेतु कौन-सा पूर्वज्ञान अपेक्षित नहीं है?
 (a) वर्ण का (b) संज्ञा का
 (c) क्रिया का (d) शब्द का
21. संदर्भ में व्याकरण से आशय है-
 (a) वाक्य पद का परिचय देना
 (b) वाक्य संरचना बताना
 (c) पढ़े गए पाठ के सापेक्ष व्याकरणिक कोटियाँ बताना
 (d) इनमें से कोई नहीं
22. संदर्भ में व्याकरण किस शिक्षण विधि द्वारा संपादित होता है?
 (a) समवाय विधि (b) आगमन विधि
 (c) पुस्तक प्रणाली (d) भाषा संसर्ग विधि
23. ज्ञात से अज्ञात, सरल से कठिन, मूर्त से अमूर्त शिक्षण सूत्रों का पालन निम्नलिखित में से किस विधि में होता है?
 (a) निगमन विधि (b) सूत्र विधि
 (c) आगमन विधि (d) खेल विधि
24. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प समवाय विधि का द्योतक है?
 (a) गद्य एवं पद्य रचनाओं के आधार पर व्याकरण पढ़ाना
 (b) दो भिन्न-भिन्न भाषाओं के व्याकरण की तुलना करना
 (c) सूत्र बनाकर उनकी व्याख्या करना
 (d) उदाहरण बताकर नियम निकलवाना
25. नीता ‘अन्वय’ का सन्धि विच्छेद ‘अन्व+अय’ करती है, तो नीता निम्नलिखित में से किस सन्धि के नियम से परिचित नहीं है?
 (a) गुण सन्धि (b) वृद्धि सन्धि
 (c) यण् सन्धि (d) दीर्घ सन्धि
26. द्रव्यवाचक संज्ञा की अवधारणा का विकास करने हेतु शिक्षिका को उदाहरण स्वरूप छात्रों से किन वस्तुओं का संग्रह करवाना चाहिए?
 (a) आम, मिट्टी, बकरी (b) बकरी, चीनी, कुर्सी
 (c) मिट्टी, दूध, दही (d) कलम, पुस्तक, लोहा
27. व्याकरण शिक्षण हेतु सर्वाधिक उपयोगी विधि है?
 (a) समवेत शायन विधि (b) आगमन विधि
 (c) कक्षा अभिनय विधि (d) मस्तिष्क उद्वेलन विधि
28. भावना उन शब्दों के उच्चारण में कठिनाई का अनुभव करती है, जिनमें ‘त’ का द्वित्व हुआ हो, शिक्षिका को चाहिए कि भावना के इस दोष का निवारण इस विधि से करें-
 (a) भावना को ऐसे शब्द बीस बार लिखने तथा पढ़ने को कहे
 (b) ऐसे शब्दों का उच्चारण स्वयं करें तथा भावना को उसका अनुकरण करने को कहें।
 (c) शिक्षिका को चाहिए कि भावना के माता-पिता को ध्यान देने के लिए कहे
 (d) भावना को एकाग्र होकर समझते हुए उच्चारण करने के लिए प्रेरित करें।
29. सुमित एक वाक्य का निर्माण करते हुए लिखता है कि ‘गांधी जी देश को आजाद कराया था’ सुमित निम्नलिखित में से कौन-सी अवधारणा नहीं समझता है?
 (a) क्रिया सदैव कर्ता के लिंग एवं वचन के अनुरूप होनी चाहिए।
 (b) सम्मानजनक कर्ता के साथ सदैव क्रिया बहुवचन में होती है
 (c) वाक्य में पहले कर्ता तब कर्म और अंत में क्रिया आती है
 (d) परसर्ग युक्त करता होने पर क्रिया कर्म के अनुरूप होती है
30. शुद्ध वर्तनी पाठ पढ़ाते समय शिक्षक का अपेक्षित व्यवहार है-
 (a) अशुद्ध वर्तनी युक्त शब्द अवश्य बताए
 (b) केवल शुद्ध वर्तनी युक्त शब्द ही बताए
 (c) पहले अशुद्ध वर्तनी युक्त शब्द बताए तत्पश्चात् उसका शुद्ध रूप बताए
 (d) पहले शुद्ध वर्तनी युक्त शब्द बताए तत्पश्चात् उसका शुद्ध रूप बताए

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (c) | 2. (c) | 3. (d) | 4. (b) | 5. (c) | 6. (d) | 7. (b) | 8. (b) | 9. (b) | 10. (a) |
| 11. (c) | 12. (b) | 13. (c) | 14. (a) | 15. (c) | 16. (d) | 17. (a) | 18. (a) | 19. (c) | 20. (c) |
| 21. (c) | 22. (a) | 23. (c) | 24. (a) | 25. (c) | 26. (c) | 27. (b) | 28. (d) | 29. (b) | 30. (b) |

भाषा कौशल के प्रकार

भाषा के दो मूलभूत स्वरूप हैं- (i) मौखिक एवं (ii) लिखित इसी आधार पर प्रत्येक के दो-दो कौशल हैं इस तरह भाषा के कुल चार कौशल हैं, विवरण इस प्रकार है-

**पठन/वाचन कौशल**

भाषा शब्द से ही ज्ञात होता है कि भाषा का मूल रूप उच्चारित होता है। इसका दृष्टिपरक प्रतीक लिपिबद्ध होता है। मुद्रित रूप लिपिबद्ध रूप का प्रतिनिधि हैं। जब कोई बालक पठन या वाचन करता है तो उस समय वह एक पुस्तक या पत्रिका या साइन बोर्ड या कापी को देख रहा होता है। जो प्रायः गहरे रंग की स्याही से बने होते हैं। वाचन के समय बस यही निशान ही तो होते हैं। किन्तु इन्हें पढ़ते ही वाचक का चेहरा लाल हो सकता है, खिल सकता है या पीला पड़ सकता है। यह प्रतिक्रिया उन चिह्नों को दिये गये अर्थ पर निर्भर है। ये अर्थ बालक के मस्तिष्क में रहते हैं, न कि चिह्नों में। अतः यह कहा जा सकता है कि 'वाचन वह क्रिया है जिसमें प्रतीक, ध्वनि और अर्थ साथ-साथ चलते हैं।'

वाचन के उद्देश्य

वाचन का शुद्ध एवं प्रभावोत्पादक होना आवश्यक है। अतः वाचन शिक्षण के समय वाचन के निम्न उद्देश्यों का ध्यान रखना चाहिए

1. बालकों के अक्षर शब्दोच्चारण, उचित ध्वनि निर्गम बल तथा सुस्वरता का उचित संस्कार करना।
2. पुस्तक पढ़कर बालक उसका भाव समझ सके तथा दूसरों को समझा सके।
3. बालकों को स्वर के आरोह-अवरोह का ऐसा अभ्यास करा दिया जाए कि वह भावों के अनुकूल वाचन कर सके।
4. स्वयं बालक अपने मन के भाव व्यक्त करते हुए भावानुसार स्वर का उचित आरोह-अवरोह साध सके।
5. वाचन इतना प्रभावोत्पादक बन जाए कि जिस उद्देश्य से वाचन किया गया हो सफल हो और व्यक्ति या समाज उसके प्रभावित हो।

वाचन का महत्त्व

वाचन की जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यकता होती है। वस्तुतः वाचन भी एक कला है। साधारण पढ़ने और वाचन में थोड़ा-सा अन्तर है। वाचन में साधारण रूप से पढ़ने की अपेक्षा शुद्धता, स्पष्टता तथा प्रभावोत्पादकता अधिक होती है। कभी-कभी हम दूसरों के वाचन को सुनकर हँस पड़ते हैं और आवेश में आकर तालियाँ भी पीटने लगते हैं। इन हास्यास्पद लोगों में समाज के बड़े-से-बड़े और छोट-से-छोटे सभी लोग

सम्मिलित हैं, परन्तु इसमें उनका कोई दोष नहीं; दोष है उनकी शिक्षा का और उनके शिक्षकों का, जिन्होंने उन्हें इस प्रकार की शिक्षा दी है। इसी से तो शुद्ध वाचन का महत्त्व स्पष्ट है। इसी के द्वारा हम साहित्य के विशाल साम्राज्य में प्रवेश करते हैं, जिसमें हमें एक अलौकिक आनन्द की प्राप्ति होती है।

वाचन की शुद्धता एवं उसकी सहायता से हमें वार्तालाप या सम्भाषण का ढंग आता है जिसके परिणामस्वरूप हम समाज, देश और जाति के अच्छे योग्य नागरिक हो सकते हैं। समाज में महत्वपूर्ण स्थान हो सकता है। वाचन के द्वारा अन्य अशिक्षित भाइयों को लाभ पहुँचा सकते हैं।

वाचन के आधार

वाचन के दो प्रमुख आधार होते हैं-

1. **वाचन मुद्रा-** अर्थात् बैठने-खड़े होने का ढंग, वाचन सामग्री हाथ में ग्रहण करने की रीति तथा भावानुसार हाथ, नेत्र आदि अंगों का संचालन।
2. **वाचन शैली-** भावानुसार स्वर के उचित आरोह-अवरोह के साथ पढ़ना।

वाचन मुद्रा ठीक रखने के लिए प्रत्येक वाचक को अपने बाएँ हाथ में वाचन सामग्री पकड़ना चाहिए और दूसरा हाथ भावाभिव्यक्ति के लिए खुला छूटा रहे। यदि पुस्तक बड़ी हो, तो दोनों हाथों से भी पकड़ी जा सकती है। पढ़ते समय दृष्टि सदा पुस्तक पर ही न रहे, वरन् पढ़ते समय दृष्टि को विद्यार्थियों की ओर भी उठाकर देख लेना चाहिए।

गद्य-पाठ के वाचन और कविता-पाठ के वाचन में बड़ा अन्तर है। यद्यपि भाव के अनुसार स्वर का आरोह-अवरोह काव्य पाठ के लिए अपेक्षित है, किन्तु कविता में छन्द का भी ध्यान रखना पड़ता है अतः कविता वाचन की दो शैलियाँ हैं-

- (i). छन्दानुगत शैली।
- (ii). भावात्मक वाचन शैली।

सुन्दर वाचन की शैलियाँ

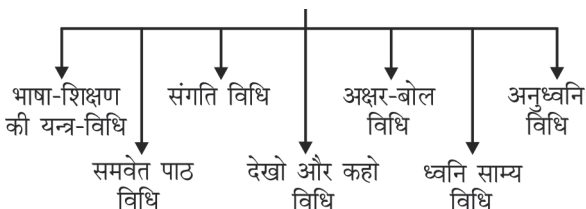
सुन्दर वाचन में निम्न गुणों का होना आवश्यक है-

1. मधुरता, प्रभावोत्पादकता तथा चमत्कारपूर्ण ढंग से आरोह-अवरोह के साथ वाचन होना चाहिए।
2. प्रत्येक अक्षर को शुद्ध तथा स्पष्ट उच्चरित करना।
3. प्रत्येक शब्द को अन्य शब्दों से अलग करके उचित बल तथा विराम के साथ पढ़ना।
4. वाचन में सुन्दरता के साथ प्रवाह बनाये रखना।
5. आवश्यकतानुसार उचित भाव-भंगिमाओं का होना तथा समान गति से पढ़ना।

वाचन/पठन कौशल की विधियाँ

शिक्षा-जगत् में वाचन की शिक्षा के लिए अनेक विधियाँ प्रचलित हैं, जिनमें से निम्नलिखित मुख्य हैं-

वाचन/पठन कौशल की विधि



- भाषा-शिक्षण की यन्त्र-विधि-** यह एक नवीन विधि है। इसमें ग्रामोफोन के एक तवे में एक पाठ भरा रहता है, जिसे सुनकर बालक उसी का अनुकरण करके पढ़ने का अभ्यास करते हैं। इससे उच्चारण में एकरूपता और पढ़ने के क्रम में समता आ जाती है, लेकिन अभी तक नागरी शिक्षा के लिंग्वाफोन के तवे नहीं बन पाये हैं और बनने पर सभी स्थानों पर प्राप्त हो सकेंगे, इसमें भी सन्देह है। साथ ही, यह अधिगम व्ययसाध्य और दुर्लभ है, अतः त्याज्य है।
- समवेत पाठ विधि-** इस विधि से छोटे पद्य तथा गीत सिखाने में सुविधा होती है। अध्यापक पाठ के एक अंश को स्वयं भावपूर्ण रीति से पढ़ता है और कथा के सब विद्यार्थी एक साथ उसकी आवृत्ति करते हैं। ऐसा करने में स्वर सधता है और वाचन संस्कार दृढ़ हो जाता है। अतः यह विधि कुछ सीमा तक लाभकारी है।
- संगति विधि-** इस विधि का प्रयोग **मॉण्टेसरी** ने किया था। इसमें बहुत-सी वस्तुओं, चित्रों, खिलौनों आदि के आगे उनके नाम कार्डों पर लिखकर रखे जाते हैं। वे कार्ड फेंक दिये जाते हैं और बालकों से कहा जाता है कि जिस वस्तु का जो नाम है, वह नाम वाला कार्ड उसकी वस्तु के आगे रख दिया जाये। खिलवाड़ मात्र होने के कारण इस विधि को शिक्षा में सम्मिलित नहीं किया जाता। इससे अनुशासन हीनता की संभावना अधिक रहती है जो अधिगम के लिए उचित नहीं है।
- देखो और कहो विधि-** इस विधि में एक पूरा शब्द श्यामपट पर लिख दिया जाता है और अक्षरों की पहचान के स्थान पर शब्द के स्वरूप की पहचान कराई जाती है। इस प्रणाली का सबसे बड़ा दोष यह है कि अव्यवहृत शब्दों के रूप और प्रयोग में धोखा हो जाता है। एक तो शब्दों की संख्या अपरिमित होती है- कहाँ तक उसका परिचय कराया जाये। दूसरी बात यह कि थोड़ी-सी सावधानी से 'मर्म' का 'धर्म' अथवा 'धर्म' का 'मर्म' पढ़ा जा सकता है। अतः यह विधि त्याज्य है।
- अक्षर-बोध विधि-** इसमें वर्णमाला के अक्षरों का क्रम उच्चारण के स्थानानुसार सज्जित रहता है। जब वर्ण पहचान लिया जाता है तो बालक को शब्द दे दिया जाता है; जैसे- क, म, ल अक्षरों से मिलकर 'कमल' शब्द। इस विधि में इस प्रकार ऐसा अभ्यास कराया जाये कि छात्र की दृष्टि-परिधि सध जाये। अक्षर का स्वरूप उसे स्थिर न करना पड़े वरन् देखते ही शब्द का स्वरूप उसकी दृष्टि पकड़ ले।
- ध्वनि-साम्य-विधि-** इसमें एक समान उच्चारित होने वाले शब्द एक साथ सिखाये जाते हैं; जैसे- श्रम, क्रम, भ्रम आदि। इनमें जान-बूझकर बालकों को ऐसे शब्द सीखने पड़ते हैं, जिसको वह अपने व्यवहार में नहीं पाते, जैसे- चर्म, कर्म, गर्म, वर्म तथा मर्म आदि। इनमें कुछ ऐसे शब्द हैं, जिनका बालक तद्भव रूप में प्रयोग करते हैं, अतः यह विधि भी असंगत तथा त्याज्य है।

- अनुध्वनि विधि-** यह भी 'देखो और कहो' विधि का रूपान्तर मात्र ही है। अन्तर केवल इतना है कि इसमें एक समान उच्चारित होने वाले शब्द एक साथ ही सिखाए जाते हैं। इसमें शिक्षक एक शब्द कहता है और छात्र उस शब्द की ध्वनि का अनुकरण करता है। इसका प्रयोग अधिकतम उन भाषाओं में होता है, जिनमें एक अक्षर की अनेक ध्वनियाँ हों अथवा लिखा कुछ जाये, पढ़ा कुछ जाये; जैसे- अंग्रेजी भाषा में Put, Cut, But में U अक्षर एक ध्वनि न देकर उ, क् + अ, ब + अ की ध्वनि से उच्चारित होता है, परन्तु नागरी लिपि में ऐसी विसंगति नहीं है।

वाचन/पठन सम्बन्धी दोष (त्रुटियाँ)

- पाठ्य सामग्री का कठिन होना।
- अध्यापक का व्यवहार।
- अटक-अटक कर पढ़ना।
- अशुद्ध उच्चारण।
- भावानुकूल आरोह-अवरोह का अभाव।
- वाचन के समय अनुचित मुद्रा, पुस्तक को आँखों से सन्निकट या दूर रखना।
- वाचन सम्बन्धी मार्ग-दर्शन का अभाव।
- वाचन में गति का न होना।
- अक्षर या संयुक्ताक्षर सम्बन्धी त्रुटियाँ।
- दृष्टि दोष से अक्षरों का ठीक दिखाई न देना।

वाचन/पठन दोषों को दूर करने की विधियाँ

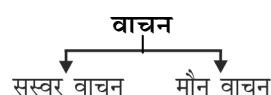
वाचन की शुद्धता, स्पष्टता सिखाने की सफलता वैसे तो योग्यता पर निर्भर करती है लेकिन मुख्यतः शुद्ध उच्चारण की निम्नलिखित विधियाँ हैं-

- आवृत्ति-पुनरावृत्ति-** अशुद्ध बोलने वालों शुद्ध उच्चारण से अवगत करके बार-बार अभ्यास कराना।
- स्थान परिवर्तन-** अशुद्ध बोलने वालों के बीच से हटाकर विद्यार्थी तथा बालक को शुद्ध बोलने वालों के मध्य रखना।
- अस्पष्टता निवारण-** शीघ्र तथा अस्पष्ट बोलने से रोककर धीरे-धीरे अक्षर-अक्षर स्पष्ट बोलने का अभ्यास।
- चिकित्सा कराना-** शारीरिक रूप से असमर्थ बच्चों की चिकित्सा कराना तथा संरक्षकों को सूचित करना।

उच्चारण-कार्य का सुधार प्रारम्भिक अवस्था से ही आरम्भ कर देना चाहिए अन्यथा अशुद्ध अभ्यास पड़ जाने पर सुधार अत्यन्त कठिन हो जाता है। मनुष्य के सम्पूर्ण ज्ञान का आधार अनुकरण है।

वाचन के प्रकार

वाचन को हम दो श्रेणियों में विभक्त कर सकते हैं-



सस्वर वाचन

वाचन अथवा पाठन शब्द में ही सस्वर वाचन का भाव निहित है। हम अपने दैनिक व्यवहार में सस्वर वाचन का प्रयोग प्रायः करते हैं। सभा-सोसायटियों में भाषण देने के लिए हम कभी-कभी अपना वक्तव्य लिखित रूप में तैयार करते हैं और फिर उसे सभा में पढ़ते हैं।

उत्तम सस्वर वाचन से वाचक में आत्मविश्वास जागृत होता है, उसमें भाषा-प्रयोग की क्षमता में वृद्धि होती है, औपचारिक अवसरों पर उसकी झिझक दूर हो जाती है और उसमें नेतृत्व के गुणों का विकास होता है। अच्छी तरह पढ़ी हुई कविता को याद करने में सरलता होती है।

सस्वर वाचन में ध्यान रखने योग्य बातें

- (i) सस्वर वाचन करते समय शुद्धता एवं स्पष्टता का ध्यान रखना चाहिए।
- (ii) सस्वर वाचन में आत्मविश्वास का होना आवश्यक है।
- (iii) सस्वर वाचन भावानुकूल होना चाहिए।
- (iv) सस्वर वाचन आदि करते समय विराम चिह्नों का ध्यान रखना चाहिए।
- (v) स्वर में यथा सम्भव स्थानीय बोलियों का पुट नहीं होना चाहिए।

सस्वर वाचन के गुण

उत्तम सस्वर वाचन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सतत् प्रयास की आवश्यकता है। यदि ये उद्देश्य प्राप्त हो जाते हैं तो वाचन अच्छा कहा जाएगा, अन्यथा वह अच्छा नहीं कहा जा सकता। अतः यह कहा जा सकता है कि उत्तम सस्वर वाचन के लिए निम्नलिखित गुण आवश्यक हैं-

- (क) **ध्वनियों का ज्ञान-** बालक को विभिन्न ध्वनियों का ज्ञान होना चाहिए और समान ध्वनियों में भेद करने की सामर्थ्य होनी चाहिए।
- (ख) **उच्चारण की शुद्धता-** प्रसन्न, विशेष, भारतीय, सौष्टा, क्रम, कृमि जैसे शब्दों का उच्चारण शुद्धता से किया जाए तो वाचन अच्छा कहा जायेगा।
- (ग) **उपयुक्त बलाघात-** आवश्यकता, जनता, करना, धरना आदि शब्दों के उच्चारण में रेखांकित ध्वनियों का आधा कर देना या लुप्त कर देना ठीक नहीं। कमल, जैसे शब्दों में रेखांकित अक्षरों पर बलाघात है और आगे का अक्षर अर्द्ध अक्षर के रूप में उच्चारित होता है। अच्छा वाचक उपयुक्त बलाघात का ध्यान रखता है।
- (घ) **विराम चिह्न-** स्वल्प विराम, अर्द्ध विराम एवं पूर्ण विराम का ध्यान रखकर पढ़ना चाहिए। 'मारो मत, जाने दो' वाक्य में यदि मारों के बाद विराम करके पढ़ें तो एक अर्थ होगा और मत के बाद विराम करके पढ़ें तो दूसरा अर्थ होगा कि मारो जाने न पाये कि जाने दिया मारा न जाये।
- (ङ) **स्पष्टता-** वाचन स्पष्ट होना चाहिए। इसके लिए स्वर पर नियन्त्रण आवश्यक है। इतनी जोर से पढ़ना चाहिए कि सभी श्रोता सुन लें। शब्दों के समूहों को एक साँस में पढ़ते समय उनमें अर्थ की संगति का ध्यान रखा जाए। प्रत्येक वर्ण का उच्चारण पृथक् रूप में ही किया जाए।
- (च) **प्रवाह-** वाचन में प्रवाह का ध्यान रखा जाए। गति पर नियन्त्रण आवश्यक है। न तो बहुत द्रुत गति से पढ़ना चाहिए और न रुक-रुक कर धीरे-धीरे पढ़ना चाहिए।
- (छ) **अर्थ की प्रतीति-** सुन्दर वाचन वह है जो पढ़ते समय शब्दों का अर्थ ग्रहण करता चलता है। यदि गति, लय, उच्चारण, विराम आदि का ध्यान रखकर वाचन किया जा रहा है तो अर्थ की प्रतीति स्वाभाविक रूप में होती जायेगी।

(ज) **स्वर में रसात्मकता-** अच्छा वाचक मुँह से प्रत्येक ध्वनि को निकालते समय कर्कश ढंग से नहीं पढ़ता, न ही उसमें रूखापन रहता है, वरन् मधुरता के साथ सरल ढंग से शब्दों का उच्चारण किया जाता है। दुःखपूर्ण विषय-सामग्री को पढ़ते समय वीर-रस और ओज वाचन, वीभत्स ढंग से नहीं होना चाहिए।

(झ) **वाचन की मुद्रा-** वाचन करते समय अच्छा वाचक अनावश्यक ढंग से सिर नहीं हिलाता, हाथ नहीं पटकता, मेज नहीं पीटता, ऊँगलियों को नहीं नचाता, पैर से तबला नहीं बजाता, पुस्तक को विकृत ढंग से नहीं पकड़ता और न झुककर पढ़ता है, न अकड़कर।

(ञ) **रुचि-** पढ़ते समय अच्छा वाचक पढ़ने में रुचि लेता है। उसे वाचन में आनन्द आता है। उसकी रुचि को देखकर श्रोता भी आनन्द लेते हैं। वाचन में उसे न तो ऊब आती है, न ही इसे वह व्यर्थ का कार्य समझकर टालता है।

आदर्श वाचन (Ideal Reading)

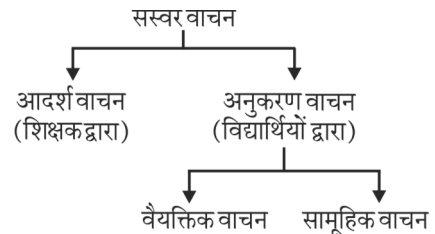
जिस समय अध्यापक कक्षा में विद्यार्थियों के समक्ष वाचन करता है, उसको आदर्श वाचन कहते हैं। अध्यापक गति, यति, आरोह-अवरोह, स्वराघात बलाघात को ध्यान में रखकर कक्षा में वाचन प्रस्तुत करता है।

अनुकरण वाचन (Imitation Reading)

आदर्श वाचन के पश्चात् छात्रों द्वारा कक्षा में अनुकरण वाचन किया जाता है। अनुकरणवाचन के निम्न उद्देश्य हैं-

- (i) वाचन में गति एवं प्रवाह का ध्यान रखना।
- (ii) वाचन करते समय अर्थ ग्रहण की योग्यता का विकास करना।
- (iii) शिक्षक द्वारा किए गए आदर्शवाचन का अनुकरण करना।
- (iv) उच्चारण को शुद्ध बनाना।

सस्वर वाचन



वाचन में बालक अनेक अशुद्धियाँ करते हैं। वर्णों, शब्दों तथा वाक्यों का शुद्ध उच्चारण स्वयं करके उनका अनुकरण वाचन कक्षा के विद्यार्थियों से करा लेना चाहिए। आदर्श पाठ में ध्वनि का आरोह-अवरोह, शुद्ध उच्चारण, भावाभिव्यक्ति एवं उपयुक्त शारीरिक संकेतों को ध्यान में रखकर अध्यापक को वाचन करना चाहिए क्योंकि वाचन पर ही पाठ की सफलता निर्भर रहती है। वाचन ऐसा भावपूर्ण हो कि पाठ्य-विषय, शब्द-अर्थ और भाव सब स्पष्ट हो जाए।

वाचनकर्ता के अनुसार पुनः सस्वर वाचन का विभाजन सस्वर वाचन के भेद

सस्वर वाचन के गुण के आधार पर इसके निम्नलिखित दो भेद किये जा सकते हैं-

1. आदर्श वाचन,
2. अनुकरण वाचन।

बालकों के समक्ष पाठ्य-सामग्री के जब अध्यापक स्वयं वाचन करके प्रस्तुत करता है तो इसे आदर्श वाचन कहते हैं। आदर्श वाचन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-	(iii) प्रसंगानुसार अपरिचित शब्दों, उक्तियों एवं मुहावरों के अर्थ का अनुमान कर लेना।
(i) छात्रों के समक्ष वाचन का एक मानदण्ड उपस्थित करना।	(iv) उपसर्ग, प्रत्यय, सन्धि-विच्छेद द्वारा शब्द का अर्थ जान लेना।
(ii) छात्रों को यह समझाना कि उन्हें कहाँ तक पढ़ना है।	(v) पठित सामग्री का केन्द्रीय भाव या विचार ग्रहण कर लेना।
(iii) अपरिचित पाठ्य-सामग्री का छात्रों को प्रथम परिचय देना।	(vi) अनावश्यक स्थलों को छोड़ते हुए, मुख्य सूचनाओं एवं भावों को ग्रहण करते हुए पढ़ते जाना।
(iv) छात्रों के मन में व्याप्त झिझक को दूर करना।	(vii) पठित सामग्री में तथ्यों, भावों एवं विचारों का चयन कर सकना, सारांश बता सकना।
(v) छात्रों को उचित गति, लय, विराम, उच्चारण, स्पष्टता आदि का ध्यान रखते हुए वाचन करने की प्रेरणा देना।	(viii) कोष में शब्द के दिये हुए अनेक अर्थों में से प्रसंगानुसार सही अर्थ जानने की योग्यता आ जाना।
मौनवाचन	(ix) शब्दों का लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ जान लेना।
लिखित सामग्री को मन-ही-मन चुपचाप बिना आवाज निकाले पढ़ना मौनवाचन कहलाता है। मौनवाचन में ओठ नहीं हिलता। जड़ महोदय का कथन है कि बालक जब पैरों से चलना सीख जाता है तो घुटनों के बल खिसकना छोड़ देता है। इसी प्रकार भाषा के क्षेत्र में बालक जब मौन वाचन की कुशलता प्राप्त कर लेता है तो सस्वर वाचन का अधिक प्रयोग छोड़ देता है। मौनवाचन में निपुणता का आना व्यक्ति के विचारों की प्रौढ़ता का द्योतक है और भाषायी दक्षता पर अधिकार का सूचक है।	(x) अनुक्रमणिका, परिशिष्ट, पुस्तक-सूची आदि के प्रयोग की योग्यता प्राप्त कर लेना।
◆ मौनवाचन में थकान कम होती है, क्योंकि इसमें वाग्यन्त्रों पर जोर नहीं पड़ता। सस्वर वाचन में बोलने के कारण थकान शीघ्र आती है। इस प्रकार मौन वाचन में श्रम की बचत होती है।	(xi) तथ्यों, भावों एवं विचारों की क्रमबद्धता पहचान सकना, उनमें कार्य-कारण सम्बन्ध बता सकना
◆ मौनवाचन में समय की भी बचत होती है। श्रीमती ग्रे और रीस के एक परीक्षण द्वारा यह पता चला कि कक्षा छः के बालक एक मिनट से सस्वर वाचन में 170 शब्द बोलते हैं, और मौन वाचन में इतने ही समय में 210 शब्द बोलते हैं।	(xii) पठित सामग्री पर पूछे गये प्रश्न का उत्तर दे सकना।
◆ मौनवाचन में मितव्ययिता होने के कारण दैनिक जीवन में व्यक्ति इसी का अधिकाधिक प्रयोग करते हैं, जबकि सस्वर वाचन अधिकतर विद्यालय जीवन तक ही सीमित होता है।	(xiii) पठित सामग्री से निष्कर्ष निकाल सकना।
◆ मौनवाचन द्वारा एक छात्र दूसरे छात्र के वाचन में बाधा उपस्थित नहीं करता। सामूहिक वाचन के लिए मौनवाचन सर्वोत्तम है।	मौन वाचन के भेद
◆ मौनवाचन के समय छात्र चिन्तन भी करता चलता है। उसका ध्यान केन्द्रित होता है। यह क्रिया सदा सोद्देश्य होती है। सस्वर वाचन में छात्र का ध्यान उच्चारण पर अधिक रहता है, अतः कभी-कभी यह बिना अर्थ समझे ही पढ़ता जाता है।	वाचन की प्रकृति के अनुसार मौन के दो भेद किये जाते हैं-
◆ मौनवाचन द्वारा स्वाध्याय की आदत पड़ती है। स्वाध्याय में रुचि उत्पन्न होती है और छात्र वाचन द्वारा आनन्द प्राप्त करने का प्रयास करता है। आनन्द करने के लिए पढ़ना प्रायः मौन रूप में होता है।	1. गम्भीर मौन वाचन
मौन वाचन के उद्देश्य	2. द्रुत मौन वाचन।
मौन वाचन का उद्देश्य यह है कि छात्र वाचन की गति का विकास कर सके एवं पठित सामग्री का अर्थ ग्रहण कर सके। अर्थ ग्रहण की प्रक्रिया एक जटिल प्रक्रिया है माध्यमिक स्तर पर छात्रों से यह अपेक्षा है कि वे मौन वाचन के द्वारा अर्थ ग्रहण की निम्नलिखित योग्यताओं का विकास कर सकें-	1. गम्भीर मौन वाचन
(i) उपयुक्त शीर्षक दे सकना।	गम्भीर वाचन उस समय किया जा सकता है, जब हम किसी सामग्री की तह तक पहुँचना चाहते हैं। गम्भीर वाचन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-
(ii) भाषा एवं भाव सम्बंधी कठिनाइयाँ सामने रख सकना।	◆ भाषा पर अधिकार करना।
	◆ विषय-वस्तु पर अधिकार करना।
	◆ नवीन सूचना एकत्र करना।
	◆ केन्द्रीय भाव की खोज करना।
	2. द्रुत मौन वाचन।
	द्रुत वाचन का सम्बन्ध विस्तृत अध्ययन से है। विस्तृत अध्ययन तब किया जाता है, जब हम अधिक सामग्री कम समय में पढ़ना चाहते हैं। द्रुत मौन वाचन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-
	◆ सीखी हुई भाषा का अभ्यास प्राप्त करना।
	◆ साहित्य से परिचय प्राप्त करना।
	◆ सूचना एकत्र करना।
	◆ आनन्द प्राप्त करना।
	गम्भीर वाचन में पाठ्यक्रम के प्रत्येक शब्द को पढ़ना व समझना आवश्यक होता है, द्रुत वाचन में यह आवश्यक नहीं। गम्भीर वाचन में विचारों के चिन्तन-मनन की आवश्यकता पड़ती है, जबकि द्रुत वाचन में सार-ग्रहण पर बल दिया जाता है।
	मौखिक अभिव्यक्ति कौशल
	मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, एकान्तवासी साधक नहीं। अतः उसे प्रतिक्षण प्रत्येक पग पर समाज में अपनी स्थिति बनाये रखने के लिए सभी प्रकार के मनुष्यों से व्यवहार करना

पड़ता है। अपने जीविकोपार्जन तथा उसके साधनों की उपलब्धि के लिए, विभिन्न क्रिया-प्रतिक्रिया के लिए वाणी की सहायता लेनी पड़ती है। इसके साथ ही, प्राणि जगत् की यह प्रवृत्ति है कि वह अपने भावों, अन्तर्द्वन्द्वों तथा उद्वेगों को दूसरों पर प्रकट करना चाहता है तथा दूसरों की प्रकृति, आदतों एवं विचारों को जानने को इच्छुक रहा है। भावों के इस आदान-प्रदान का एक ही साधन है- भाषा या वाणी। मौखिक भाव-प्रकाशन में निम्न दो उपादानों का होना अनिवार्य है-	3. वह शुद्ध उच्चारण व उचित स्वराघात व बलाघात व स्वर के उतार-चढ़ाव के साथ भाव-प्रकाशन कर सकेगा। 4. वह बोलने में विराम का ध्यान रख सकेगा। 5. उसके बोलने में प्रवाह होगा। 6. वह व्याकरण-सम्मत भाषा का प्रयोग कर सकेगा। 7. वह प्रसंगानुकूल उचित शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों तथा सूक्तियों का प्रयोग कर सकेगा। 8. वह सरल मुहावरेदार भाषा का प्रयोग कर सकेगा। 9. वह वाक्यों में शब्दों, वाक्यांशों तथा उपवाक्यों का क्रम अर्थानुकूल रख सकेगा। 10. वह अभीष्ट सामग्री प्रस्तुत करेगा। 11. वह क्रमबद्धता बनाये रखेगा। 12. वह सुसंबद्धता बनाये रखेगा। 13. वह विषय की योग्यता को अक्षुण्ण बनाये रखेगा। 14. वह उचित हाव-भाव के साथ बोल सकेगा। 15. वह आवश्यक पुनरावृत्ति की करेगा। 16. वह भाषा की दृष्टि से अभिव्यक्ति में संक्षिप्तता ला सकेगा। 17. वह शिष्टाचार का पालन कर सकेगा। 18. वह प्रसंग तथा विषय के अनुकूल शैली का प्रयोग कर सकेगा।
1. अपने विचारों को दूसरों पर प्रकट करना अथवा भाव-प्रकाशन करना। 2. दूसरे के विचारों को सुनकर उसके मनोभावों को समझना या भाव ग्रहण करना। इन दो उपादानों में ही मानव-जीवन के सम्पूर्ण क्रियाकलापों तथा भाषा के अंगों-उपांगों का विवेचन हो जाता है, जैसे- संवाद, अभिनय, भाषण, वाद-विवाद, अन्त्याक्षरी आदि।	10. वह अभीष्ट सामग्री प्रस्तुत करेगा। 11. वह क्रमबद्धता बनाये रखेगा। 12. वह सुसंबद्धता बनाये रखेगा। 13. वह विषय की योग्यता को अक्षुण्ण बनाये रखेगा। 14. वह उचित हाव-भाव के साथ बोल सकेगा। 15. वह आवश्यक पुनरावृत्ति की करेगा। 16. वह भाषा की दृष्टि से अभिव्यक्ति में संक्षिप्तता ला सकेगा। 17. वह शिष्टाचार का पालन कर सकेगा। 18. वह प्रसंग तथा विषय के अनुकूल शैली का प्रयोग कर सकेगा।
मौखिक अभिव्यक्ति का महत्व (i) मौखिक भाषा के द्वारा विचारों के आदान-प्रदान से नई-नई जानकारीयाँ मिलती हैं। (ii) सामाजिक सम्बन्धों के सुदृढ़ बनाने में एवं सामाजिक जीवन में सामंजस्य स्थापित करने में मौखिक भाषा की प्रमुख भूमिका होती है। (iii) मौखिक अभिव्यक्ति में अनुकरण और अभ्यास के अवसर बराबर मिलते रहते हैं। (iv) मौखिक भाषा ही अभिव्यक्ति का सहज व सरलतम माध्यम है। (v) रोजमर्रा के कार्य-कलापों में मौखिक भाषा प्रयुक्त होती है। (vi) भाषा की शिक्षा मौखिक भाषा से प्रारम्भ होती है। (vii) अशिक्षित व्यक्ति बोलचाल के द्वारा ही ज्ञान-अर्जित करता है। (viii) मौखिक भाषा के प्रयोग में कुशल व्यक्ति, अपनी वाणी से जादू जगा सकता है, लोकप्रिय नेताओं के भाषण इसी बात का प्रमाण है।	मौखिक अभिव्यक्ति कौशल की शिक्षण विधियाँ इसके अतिरिक्त मौखिक आत्माभिव्यक्ति में कुशलता-प्राप्ति के लिए शिष्ट जन-संसर्ग, संवाद पाठ तथा अभिनय आदि भी सहायक होते हैं- 1. वाद-विवाद- वाद विवाद बालक के मानस द्वार खोलने की कुंजी है। इससे अध्ययन, मनन तथा चिन्तन का अभ्यास होता है तर्क की भावना को प्रोत्साहन मिलता है। अपने विचारों को सुसंगठित एवं सुव्यवस्थित रूप में रखने का बालक प्रयत्न करने लगता है। 2. कहानी-कथन- कहानी सुनना तथा सुनाना बालकों की अपनी प्रिय वस्तु है। इससे उनमें जिज्ञासा, अवधान और रुचि का विकास होता है। अतः इसके द्वारा भाषण में स्वाभाविकता और प्रवाह उत्पन्न किया जा सकता है। इससे मनोरंजकता के साथ उनकी कल्पना-शक्ति को भी सजग किया जा सकता है। 3. चित्र-माला- चित्रों को दिखाकर उसके विषय में बालक के भावों को सचेत कर भावाभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करना चाहिए। 4. सत्संग- सत्संग का हमारे भाव-प्रकाशन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। साधारणतः बालक जैसे वातावरण में रहेगा, उसका उसी प्रकार का वार्तालाप या भाव-प्रकाशन होगा। सुन्दर, योग्य तथा शिष्ट बालक स्वस्थ तथा शिष्ट वातावरण में ही पाये जाते हैं। 5. संवाद पाठ- संवाद पाठों से सम्भाषण की शिक्षा का अभ्यास भली प्रकार बनाया जा सकता है। विभिन्न अवसरों पर मानक भाषा का अभ्यास कराने के लिए अध्यापक को संवाद-पाठ कराते रहना चाहिए। इससे बालक देश-काल तथा पात्र के अनुसार वार्तालाप करने की महता समझते हैं और उनके अभ्यस्त हो जाते हैं।
मौखिक भाव-प्रकाशन शिक्षण के उद्देश्य मौखिक भाव प्रकाशन शिक्षण के उद्देश्यों को संक्षेप में निम्नलिखित रूप में कहा जा सकता है- (क) बालकों का उच्चारण शुद्ध एवं परिमार्जित हो। (ख) वे अपने मनोभावों को सरलता तथा स्पष्टता से दूसरों पर प्रकट कर सकें। (ग) बालकों का संकोच, उनकी झिझक तथा आत्महीनता की भावना दूर हो जाये। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए छात्रों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन होने चाहिए। उपर्युक्त उद्देश्यों को स्पष्ट करने के लिए उन विशिष्ट लक्षणों का यहाँ वर्णन किया जा रहा है, जिनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि छात्र मौखिक भाव-प्रकाशन करने में समर्थ हो गये हैं। ये विशिष्ट योग्यताएँ निम्नलिखित हैं- 1. छात्र सुश्रव्य वाणी में आत्म-प्रकाशन कर सकेगा। 2. वह प्रसंगानुसार उचित गति के साथ भाव-प्रकाशन कर सकेगा।	3. वह शुद्ध उच्चारण व उचित स्वराघात व बलाघात व स्वर के उतार-चढ़ाव के साथ भाव-प्रकाशन कर सकेगा। 4. वह बोलने में विराम का ध्यान रख सकेगा। 5. उसके बोलने में प्रवाह होगा। 6. वह व्याकरण-सम्मत भाषा का प्रयोग कर सकेगा। 7. वह प्रसंगानुकूल उचित शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों तथा सूक्तियों का प्रयोग कर सकेगा। 8. वह सरल मुहावरेदार भाषा का प्रयोग कर सकेगा। 9. वह वाक्यों में शब्दों, वाक्यांशों तथा उपवाक्यों का क्रम अर्थानुकूल रख सकेगा। 10. वह अभीष्ट सामग्री प्रस्तुत करेगा। 11. वह क्रमबद्धता बनाये रखेगा। 12. वह सुसंबद्धता बनाये रखेगा। 13. वह विषय की योग्यता को अक्षुण्ण बनाये रखेगा। 14. वह उचित हाव-भाव के साथ बोल सकेगा। 15. वह आवश्यक पुनरावृत्ति की करेगा। 16. वह भाषा की दृष्टि से अभिव्यक्ति में संक्षिप्तता ला सकेगा। 17. वह शिष्टाचार का पालन कर सकेगा। 18. वह प्रसंग तथा विषय के अनुकूल शैली का प्रयोग कर सकेगा।

6. **नाटक-प्रयोग-** नाटक द्वारा भावाभिव्यक्ति का अच्छा अभ्यास हो जाता है। रंगशाला में ही बालक को आंगिक, वाचिक तथा भावों के अभिनय की दीक्षा सफलतापूर्वक मिल सकती है। बोलचाल सिखाने का ध्येय इसी से पूरा हो सकता है।

मौखिक भाव प्रकाशन से सम्बन्धित शिक्षक की सावधानियाँ

- (i) उच्चारण के अभ्यास के लिए अथवा त्रुटियों को ठीक कराने के लिए स्वर-यन्त्रों को साधा जाये।
- (ii) यदि कोई बालक प्राकृतिक कारणों से शुद्ध उच्चारण नहीं कर पाता तो उसका कारण डॉक्टरों द्वारा खोजकर उसके संरक्षकों को सूचित कर चिकित्सा कराई जाये।
- (iii) कभी-कभी मनोवैज्ञानिक कारण भी शुद्ध बोलने में बाधक होते हैं। भय से भी बच्चा बोलने में हिचकना और हकलाना शुरू कर देता है और धीरे-धीरे अशुद्ध बोलने की आदत-सी पड़ जाती है अतः बालक की भय की भावना को निकालकर अभ्यास द्वारा यह कठिनाई दूर की जा सकती है।
- (iv) कभी-कभी दूसरे के बच्चों को चिढ़ाने तथा हँसी उड़ाने से भी बालक अशुद्ध अथवा हकलाकर बोलते हैं, जिससे उन्हें कुछ समय पश्चात स्वयं अशुद्ध और हकलाकर बोलने की आदत पड़ जाती है। ये अशुद्धियाँ माता-पिता, संरक्षक तथा शिक्षक के सहयोग और प्रयत्नों से दूर की जा सकती हैं।
- (v) शिक्षक बोलने का आदर्श दृष्टान्त उपस्थित करे जिसमें तेजी, क्रोध तथा शीघ्रता न हो।
- (vi) किसी प्रकार का संकोच बच्चों में न आने पाये।
- (vii) बालक किसी भी प्रकार अपने को कक्षा के अन्य छात्रों से हीन न समझे। उसके लिए उसे प्रोत्साहित करते रहना चाहिए।
- (viii) बोलने में कठिनाई अनुभव करने वाले छात्रों को अधिक-से-अधिक बोलने और पढ़ने का अवसर मिलना चाहिए जिससे उनमें धीरे-धीरे साहस और स्वात्मबल का विकास होने लगे।
- (ix) प्रश्नों के उत्तर पूर्ण हों जिससे बालकों को अधिक-से अधिक बोलने का अवसर मिले।
- (x) बोलते समय सस्वरता तथा भावानुसार वाणी के उतार-चढ़ाव पर भी ध्यान देना चाहिए। देश, काल और पात्र के अनुसार ही भाव प्रकाशन हो।
- (xi) भाषा में सरलता, मधुरता और लालित्य हो।
- (xii) भाषा प्रान्तीयता और व्याकरण के दोषों से रहित हो।

लेखन कौशल

भाषा के दो रूप होते हैं- मौखिक और लिखित। मौखिक रूप के अन्तर्गत भाषा का ध्वन्यात्मक रूप एवं भावों की मौखिक अभिव्यक्ति है। जब हम इन ध्वनियों को प्रतीकों के रूप में व्यक्त करते हैं और इन्हें लिपिबद्ध करके भाषा को स्थायित्व प्रदान करते हैं तो भाषा का यह लिखित रूप कहलाता है। भाषा के इस लिखित रूप की शिक्षा, प्रतीकों को पहचान कर उन्हें बनाने की क्रिया अथवा ध्वनि को लिपिबद्ध करना लिखना है। 'लेखन' शब्द के अन्तर्गत सुदौल एवं अच्छे वर्णों में लिखना सम्मिलित है।

लेखन शिक्षण के उद्देश्य

1. छात्र सुपाठ्य लेख लिख सकेगा।
2. वह प्रसंगानुसार आवश्यक गति से लिख सकेगा।

3. वह शब्दों की शुद्ध वर्तनी लिख सकेगा।
4. अनुलेख, अतिलेख तथा श्रुतिलेख लिख सकेगा।
5. वह विराम-चिह्नों का यथोचित प्रयोग कर सकेगा।
6. वह लेखन-कार्य में ठीक प्रकार से अनुच्छेद बना सकेगा।
7. वह व्याकरण-समस्त शुद्ध भाषा का प्रयोग कर सकेगा।
8. वह प्रसंगानुसार उचित शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों तथा सूक्तियों का प्रयोग कर सकेगा।
9. वह सरल, लाक्षणिक (मुहावरेदार) भाषा का प्रयोग कर सकेगा।
10. वह वाक्यों में शब्दों, वाक्यांशों तथा उपवाक्यों का क्रम अर्थानुकूल रख सकेगा।
11. वह विभिन्न रचना वाले वाक्यों का शुद्ध गठन कर सकेगा।
12. वह अभीष्ट सामग्री प्रस्तुत करेगा।
13. वह क्रमबद्धता बनाये रखेगा।

लेखन कौशल विशेषता

- ◆ लेखन, सुन्दर, स्पष्ट एवं सुदौल हो।
- ◆ उसमें प्रवाहशीलता एवं क्रमबद्धता हो।
- ◆ विषय (शिक्षण) सामग्री उपयुक्त अनुच्छेदों में विभाजित हो।
- ◆ भाषा एवं शैली में प्रभावोत्पादकता हो।
- ◆ भाषा व्याकरण सम्मत हो।
- ◆ अभिव्यक्ति संक्षिप्त, स्पष्ट तथा प्रभावोत्पादक हो।

लेखन-शिक्षण विधि- अब प्रश्न उठता है कि लिखना कैसे सिखाएँ। लिखना सिखाने की निम्नलिखित चार विधियाँ हैं-

1. **रूपरेखानुकरण विधि-** इस विधि में शिक्षक कापी, श्यामपट या स्लेट पर चॉक या पेंसिल से बिन्दु रखते हुये शब्द या वाक्य लिख देता है और छात्रों से उन निशानों पर पेंसिल या चॉक फेरने को कहता है, जिससे शब्द या वाक्य उभर जायें। इससे अभ्यास करते-करते वह वर्णों को लिखना सीख जाता है।
2. **स्वतन्त्र अनुकरण विधि-** इससे अध्यापक श्यामपट, कापी या स्लेट पर अक्षरों को लिख देता है और छात्रों को कहता है कि उन अक्षरों को देखकर उनके नीचे स्वयं उसी प्रकार अक्षर बनायें। यह विधि मनोवैज्ञानिक नहीं है किन्तु अभी भी प्रारम्भ में बच्चे इसी विधि से प्रायः लिखना सीखते हैं।
3. **मॉण्टेसरी विधि-** मॉण्टेसरी ने लिखना सिखाने में आँख, कान और हाथ- तीन के प्रयोग पर बल दिया है। उसके अनुसार बालक को पहले लकड़ी अथवा गत्ते पर बने अक्षरों पर ऊँगली फेरने को कहना चाहिए, फिर उसने पेंसिल को उन्हीं अक्षरों पर घुमवाना चाहिए। पेंसिल प्रायः रंगीन होती है। बालक अक्षरों को छूता भी है। इसी प्रकार बालक अक्षरों के स्वरूप से परिचित होकर उन्हें लिखना सीख जाता है।
4. **जेक्टॉट विधि-** इसमें शिक्षक बालकों द्वारा पढ़े हुए वाक्य को स्वयं लिखकर छात्रों को लिखने के लिए दे देता है। छात्र एक-एक शब्द लिखकर अध्यापक द्वारा लिखित शब्द से मिलाते हुए स्वयं संशोधन करते चलते हैं और जब पूरा वाक्य लिख लेते हैं तो पुनः मूल वाक्य से मिला लेते हैं। तत्पश्चात् अध्यापक मूल वाक्य को बिना देखे हुए उन्हें लिखने को कहता है और छात्र याद करके स्वयं लिखते हैं।

लेखन अभ्यास

सुलेख- जब तक भाषा मौखिक थी तब तक वह केवल उपस्थित व्यक्ति से भाव व्यक्त करने का साधन थी। मौखिक सन्देश भी भेजे जाते थे, पर वे सन्देशवाहक की योग्यता पर निर्भर थे। यदि वह कुशल न हुआ तो अर्थ का अनर्थ कर सकता था। मौखिक भाषा में व्यक्त भाव स्थायी भी नहीं हो सकते थे। जब तक मौखिक भाव धर्मसूत्र या मंत्रादि के रूप में नहीं होते थे तब तक लोग उन्हें स्मरण रखना या स्थायी रूप से सुरक्षित रखना आवश्यक नहीं समझते थे। अतः मौखिक भाषा का क्षेत्र बहुत सीमित था।

अनुलेख- सुन्दर लिखावट के अभ्यास के लिए प्रतिलेख और अनुलेख का भी आश्रय लिया जाता है। अनुलेख का अर्थ है- किसी लिखावट के पीछे या बाद में लिखना। अनुलेख के लिए कुछ कापियाँ होती हैं। इन कापियों में प्रत्येक पृष्ठ के ऊपर प्रथम पंक्ति में मोटे और सुन्दर ढंग के अक्षर, शब्द या वाक्य लिखे जाते हैं और उनके नीचे की पंक्तियाँ रिक्त रहती हैं। छात्र इन कापियों में अनुलेख का अभ्यास करता है। ऊपर की पंक्ति देखता है और छुपे हुए अक्षरों को देखकर स्वयं अक्षर बनाता है।

श्रुतलेख- श्रुतलेख सुना हुआ लेख है। अनुलेख में सामने नमूने के रूप में मुद्रित अक्षर होते हैं श्रुतलेख में इस नमूने का अभाव रहता है। इसमें अध्यापक बोलता जाता है और छात्र सुनकर बोली हुई सामग्री लिखता जाता है। श्रुतलेख में सुन्दर लिखावट का सर्वाधिक महत्त्व नहीं है। इसमें महत्त्व भाषा की शुद्धता का हो जाता है।

लिखना सिखाने में ध्यान देने योग्य बातें

लिखना सिखाने में अध्यापक को कुछ बातों का ध्यान रखना आवश्यक हो जाता है। इनमें से प्रमुख बातों का उल्लेख नीचे किया जा रहा है-

बैठने का ढंग- छात्रों के बैठने का ढंग उपयुक्त हो। रीढ़ की हड्डी लिखते समय सीधी रहे। सुनकर लिखने की आदत न पड़ने पाये।

आँखों से कागज की दूरी- छात्र कागज को आँखों के बिल्कुल न तो पास रखे और न ही आँखों से बहुत दूर। लगभग एक फुट (12 इंच 30 सेमी) दूर रखकर लिखना अच्छा होगा।

उपयुक्त वातावरण- समय, स्थान आदि की उपयुक्त पर अध्यापक को ध्यान रखना चाहिए।

कलम पकड़ने की विधि- पहली और दूसरी उँगली के बीच में कलम रखकर उसे अँगूठे से पकड़ना चाहिए। कलम को निब के लगभग एक इंच ऊपर पकड़ना चाहिए।

पढ़ना- लिखने के साथ-साथ पढ़ना भी चलना चाहिए, नहीं तो लिखना निरर्थक हो जायेगा।

अक्षर सुडौल हों- इस बात का ध्यान रहे कि छात्र अक्षरों को सुन्दर बनाने का प्रयत्न करें। अक्षर पूरे लिखे जाने चाहिए, अन्यथा वे सुडौल नहीं लगेंगे।

बाएँ से दाएँ- सभी अक्षरों, शब्दों एवं वाक्यों के लिखने का क्रम हिन्दी में बाएँ से दाएँ रहे।

शिरोरेखा- अक्षर का आवश्यक अंग शिरोरेखा है अतः उसका प्रयोग करना चाहिए।

लिपि-प्रतीक- अनुस्वार, हलन्त, मात्राओं के प्रयोग में सावधानी बरतनी चाहिए। छोटे-छोटे लिपि-प्रतीकों की भूल से लेख विकृत हो जाता है।

सीधी लिखाई- अक्षरों की खड़ी रेखाएँ तिरछी न होकर सीधी होनी चाहिए।

नमूने उपयुक्त हों- अध्यापक द्वारा बनाये गये अक्षर या शब्द आदर्श हों, जिससे कि उनके आधार पर छात्र लिख सकें।

अभ्यास- लिखना एक कला है अतः लिखने का खूब अभ्यास होना चाहिए।

श्रवण कौशल का अर्थ

वर्ण से श्रवण का गहरा सम्बन्ध है। यदि किसी के कानों में दोष है तो वह न तो किसी की ध्वनि सुन सकता है और न ही उसका प्रत्युत्तर दे सकता है। शब्द का अर्थ सामाजिक प्रसंग में सुनने से ग्रहण किया जाता है। छात्र कविता, कहानी, भाषण वाद-विवाद, वार्तालाप आदि का ज्ञान सुनकर ही प्राप्त करता है और उसका अर्थ भी समझता है।

यद्यपि बालक की श्रवण-इन्द्रियों में दोष है, तो वह न भाषा सीख सकता है और न अपने मनोभावों को अभिव्यक्त कर सकता है। अतः उसका भाषा ज्ञान शून्य के बराबर ही रहेगा। बालक सुनकर ही अनुकरण द्वारा भाषा ज्ञान अर्जित करता है।

श्रवण कौशल शिक्षण का महत्त्व

(i) इससे ध्वनियों के सूक्ष्म अन्तर को पहचानने की क्षमता विकसित होती है।

(ii) यदि विभिन्न साहित्यिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्राप्ति में भी सहायक है।

(iii) बच्चा जन्मोपरान्त ही सुनने लग जाता है। ये ध्वनियाँ उसके मन-मस्तिष्क पर अंकित हो जाती हैं। ये अंकित ध्वनियाँ ही बच्चे के भाषा ज्ञान का आधार बनती हैं। अच्छी प्रकार से सुनने के कारण ही बालक ध्वनियों के सूक्ष्म अन्तर को समझ पाता है।

(iv) इससे लेखन कौशल के विकास में भी सहायता मिलती है।

(v) श्रवण कौशल ही अन्य भाषायी कौशलों को विकसित करने का प्रमुख आधार बनता है।

(vi) इसे अध्ययन की आधारशिला भी कहा जाता है।

(vii) यह व्यक्तित्व के विकास में भी सहायक है।

(viii) इससे वाचन कौशल का विकास होता है।

श्रवण कौशल के उद्देश्य

1. वक्ता में मनोभावों की निपुणता पैदा करना।
2. छात्रों की मौलिकता में वृद्धि करना।
3. सुनकर अर्थ ग्रहण करने की योग्यता का विकास करना।
4. भावों, विचारों व तथ्यों का मूल्यांकन कर सकना।
5. विद्यार्थियों में ध्वनियों, शब्दों का शुद्ध उच्चारण तथा स्वर, गति, लय और प्रवाह साथ पढ़ने की योग्यता विकसित करना।
6. श्रुत सामग्री के विषय में महत्वपूर्ण एवं मर्मस्पर्शी विचारों भावों एवं तथ्यों का चर करने की क्षमता प्रदान करना।
7. छात्रों में भाषा व साहित्य के प्रति रुचि प्रदान करना।

8. भावानुभूति कर सकना, भावाभिव्यक्ति के ढंग से समझ सकना।
9. ग्रहणशीलता की मनःस्थिति बनाए रखना। शब्दों, मुहावरों व लोकोक्तियों को प्रसंगानुकूल भाव व अर्थ समझ सकना।
10. छात्रों को साहित्यिक गतिविधियों में भाग लेने व सुनने के लिए प्रेरित करना।
11. किसी भी श्रुत सामग्री को मनोयोगपूर्वक सुनने की प्रेरणा प्रदान करना।
12. स्वराघात, बलाघात व स्वर के उतार-चढ़ाव के अनुसार ग्रहण करना।
13. धैर्यपूर्वक सुनना, सुनने के शिष्टाचार का पालन करना
14. श्रुत सामग्री के विषय को भली-भाँति समझने की योग्यता उत्पन्न करना।
15. श्रुत सामग्री का सारांश ग्रहण करने की योग्यता विकसित करना।
16. छात्रों का मानसिक एवं बौद्धिक विकास करना।

श्रवण कौशल की विधियाँ लेखन विधि

श्रुतलेखन न केवल लेखन कौशल को निखारता है बल्कि श्रवण कौशल को भी प्रभावपूर्ण बनाने में सहायता करता है। श्रुतलेख सुनकर लिखना होता है, जो छात्र ध्यान से सुनेगा वह पूरी सामग्री को लिख लेगा, जो छात्र ध्यान से नहीं सुनेगा उसके लेख के बीच-बीच में शब्द या वाक्यांश छूट जायेंगे।

भाषण विधि

भाषण विधि का भी श्रवण कौशल में काफी योगदान है। भाषण के द्वारा ही छात्रों को पहले यह बता दिया जाता है कि भाषण को ध्यान से सुनें। भाषण समाप्ति के उपरान्त उनसे प्रश्न पूछे जायेंगे। प्रश्नों उत्तरों से यह पता लग जाता है कि छात्रों ने भाषा ध्यान से सुना है अथवा नहीं।

संस्वर वाचन विधि

छात्र अध्यापक द्वारा किए गए आदर्श वाचन और कक्षा में अन्य छात्रों द्वारा किए जाने वाले अनुकरण वाचन को ध्यानपूर्वक सुनकर उच्चारण, यति, गति, आरोह-अवरोह आदि का ज्ञान प्राप्त करता है।

प्रश्नोत्तर विधि- कक्षा-शिक्षण के उपरान्त अध्यापक पठित सामग्री को आधार बना कर छात्रों से प्रश्न पूछता है, छात्रों के उत्तर से इस तथ्य का मूल्यांकन हो जाता है कि छात्रों ने विषय-वस्तु को सुनकर तथ्यों को ग्रहण किया है या नहीं। पठित सामग्री के आधार पर प्रश्न पूछने से छात्र सावधान भी हो जायेंगे और कक्षा में पढ़ाई बातों को ध्यानपूर्वक सुनेंगे।

कहानी विधि

अध्यापक बच्चों को कहानी सुनाए और बाद में उस कहानी को बच्चों से सुने। इससे पता लग जाएगा कि छात्रों ने कहानी सुनी या नहीं। कहानी के द्वारा बच्चों का ध्यान सुनने की तरफ आकर्षित किया जा सकता है।

श्रवण कौशल के शिक्षण हेतु दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री का प्रयोग-

1. **चार्ट-** शिक्षण की सफलता में चार्ट का महत्वपूर्ण स्थान है। भाषा के वर्ण, मात्रा, वाक्य, विभिन्न शब्दों, मानव अंगों, ध्वनि अवयवों के चित्रों को चार्ट के माध्यम से समझाया जा सकता है। इसी तरह के कई चार्ट हम नर्सरी कक्षाओं में लगे देखते हैं।
2. **फ्लेनेल बोर्ड-** यह बच्चों की कल्पनाशक्ति व सृजन क्षमता को विकसित करने का अच्छा माध्यम है। उन्हें कुछ विषय दिए जा सकते हैं जिनके बारे में कोई जानकारी या चित्र एकत्र करने को कहा जाए जैसे- चाचा नेहरू के बारे में 10 वाक्य एक सुन्दर चित्र के साथ लिखकर फ्लेनेल बोर्ड पर चस्पा करें, साँची पर चित्र सहित लेख, बाल-केन्द्रित कविता आदि। अच्छे प्रदर्शन के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करना न भूलें।
3. **संग्रहालय-** जहाँ महत्वपूर्ण व दुर्लभ वस्तुओं का संग्रह होता है विद्यार्थियों को समय-समय पर ऐसे संग्रहालयों में ले जाना चाहिए, वहाँ महान सन्तों, कवियों, साहित्यकारों, प्राचीन ग्रन्थों, समाचार-पत्र-पत्रिकाओं, डाक टिकटों, अस्त्र-शस्त्रों के संग्रह के बारे में जानकारी उपलब्ध कराई जा सकती है।
4. **प्रक्षेपण-** प्रक्षेपण के माध्यम से स्लाइड के द्वारा चित्र प्रभावशाली ढंग से छात्रों को दिखाए जा सकते हैं। फिल्म स्ट्रिम प्रोजेक्टर पर चित्रों को बड़ा करके परदे पर दिखाने से छात्र आकृष्ट होते हैं।
5. **समाचार सम्बन्धी फिल्म-** देश की सामाजिक, आर्थिक राजनैतिक सामाजिक घटनाओं से छात्रों को अवगत कराया जा सकता है। यू.जी.सी. कार्यक्रम आदि की जानकारी व समस्याओं की ओर सहजता से ध्यान कराया जा सकता है।
6. **टेलीविजन-** 20वीं शताब्दी में वैज्ञानिक और सबसे लोकप्रिय साधन टेलीविजन का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें शिक्षक चाहे तो स्वयं पाठ योजना तैयार कर टेप कर सकता है। योग्य शिक्षकों को पढ़ाने आदि को अपने अध्यापन के लिए प्रयोग कर सकता है। इसके लिए बाल सभा, क्वीज जैसे कई कार्यक्रमों का प्रसारण टेलीविजन में किया जाता है।
7. **भाषा खेल-** भाषा शिक्षक के लिए बेहद आवश्यक है कि वह कक्षा के वात को रोचक व उत्साहवर्धक बनाए रखे इस हेतु समय-समय पर खेल गतिविधि कराई जानी चाहिए। जैसे छात्रों को दो भागों में विभाजित कर उनसे कविताओं को लेकर अन्ताक्षरी, वाद-विवाद, भाषण, कविता पाठ, नाटक आदि बुलवाई जाती है।
8. **नमूने-** (मॉडल) ये वास्तविक वस्तु का ही छोटा रूप होता है ऐसी सामग्री आकार में बड़ी है अथवा जिसको कक्षा में लाना या दिखाना सम्भव नहीं ऐसी वस्तुओं के नमूने को शिक्षण सामग्री के रूप में प्रयुक्त किया जाता है, जैसे- हाथी, जहाज, कहानी में शेर आदि।

विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. लिखना -

- (a) एक बेहद जटिल प्रक्रिया है
- (b) एक अनिवार्य कुशलता है, जिसे जल्दी प्राप्त किया जाना है
- (c) एक तरह की बातचीत है
- (d) एक अत्यन्त यांत्रिक प्रक्रिया है

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (c)

2. भाषा-कौशलों के संबंध में कौन-सा कथन सही है?
 (a) भाषा के कौशल अन्तःसम्बन्धित होते हैं
 (b) भाषा के सभी कौशलों को नए सिरे से सिखाने की आवश्यकता होती है
 (c) भाषा-कौशल एक-दूसरे से स्वतंत्र होते हैं
 (d) भाषा के चारों कौशल एक क्रम से सीखे जाते हैं
CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014
उत्तर : (a)
3. भाषा के आधारभूत कौशल -
 (a) क्रमबद्ध रूप से चलते हैं
 (b) हमेशा अर्जित किए जाते हैं
 (c) सर्वथा पृथक् हैं
 (d) अन्तः सम्बन्धित होते हैं
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012
उत्तर : (b)
4. हिन्दी भाषा के अतिरिक्त कौन-सी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है?
 (a) पंजाबी (b) मराठी
 (c) उर्दू (d) इनमें से कोई नहीं
Bihar TET - Ist Paper (I-V) 2011
उत्तर : (b)
5. एक भाषा-शिक्षक के रूप में सबसे बड़ी चुनौती है—
 (a) बच्चों को भाषा सीखने के महत्व से परिचित कराना।
 (b) बच्चों की भाषा को संचार साधनों के प्रभाव से मुक्त रखना।
 (c) भाषा-संसाधनों का अभाव है।
 (d) बहुभाषिक कक्षा के शिक्षण के लिए उचित रणनीतियाँ तय करना।
CTET- Ist Paper (I-V) June 2011
उत्तर : (d)
6. प्राथमिक स्तर पर कौन-सा भाषा-शिक्षण का उद्देश्य नहीं है?
 (a) स्पष्टतया एवं आत्मविश्वास के साथ अपनी बात कहना
 (b) वर्णमाला को क्रम से कंठस्थ करना
 (c) ध्वनी-संकेत चिह्न का सम्बन्ध बनाना
 (d) विभिन्न संदर्भों में भाषा का प्रभावी प्रयोग करना
CTET- Ist Paper (I-V) June 2011
उत्तर : (b)
7. भाषा-शिक्षण के सन्दर्भ में कौन-सा कथन सही नहीं है?
 (a) भाषा-अर्जन और भाषा-अधिगम में अन्तर होता है
 (b) भाषा-शिक्षण में केवल भाषायी शुद्धता पर ही अधिक बल रहता है
 (c) भाषा सीखने में अन्य विषयों को अध्ययन-अध्यापन सहायक होता है
 (d) समृद्ध भाषा-परिवेश भाषा अर्जित करने में सहायक होता है
CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011
उत्तर : (b)
8. भाषा-कौशलों के सन्दर्भ में कौन-सा कथन सही है?
 (a) सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना एक क्रम से सीखे जाते हैं
 (b) सुनना और पढ़ना निष्क्रिय कौशल हैं

- (c) पढ़ना और लिखना कौशल में कोई सम्बन्ध नहीं है
 (d) सभी कौशल एक-दूसरे के साथ अन्तःसम्बन्धित होते हैं
CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013

उत्तर : (d)

9. भाषा-शिक्षण में अनिवार्य है—

- (a) मानक भाषा पर बल
 (b) समग्रतावादी दृष्टिकोण
 (c) विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के साथ भिन्न व्यवहार
 (d) वर्तनी सम्बन्धी गृहकार्य
CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013

उत्तर : (b)

10. भाषा—

- (a) विद्यालय में ही सीखी जाती है
 (b) एक नियमबद्ध व्यवस्था है
 (c) सदैव व्याकरण के नियमों का ही अनुगमन करती है
 (d) नियमों की जानकारी से ही निखरती है
CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012

उत्तर : (b)

11. भाषा के सम्बन्ध में कौन-सा कथन सही नहीं है?

- (a) भारत की भाषिक विविधता एक जटिल चुनौती है
 (b) बहुभाषिकता बच्चे की अस्मिता का निर्माण करती है
 (c) भाषाएँ आपस में सम्पर्क संवाद करती हैं
 (d) भाषागत विविधता एक समस्या है
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014

उत्तर : (d)

12. भाषा-शिक्षण में पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त कौन-सा सबसे कम प्रभावशाली है?

- (a) प्रश्नों के उत्तर लिखना (b) संवाद अदायगी
 (c) परिचर्चा करना (d) घटना-वर्णन करना
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014

उत्तर : (a)

13. भाषा -

- (a) जानने का अर्थ उसका व्याकरण जानना है
 (b) सीखने-सिखाने में पाठ्य-पुस्तकों का विशेष महत्व होता है
 (c) जीवन की विभिन्न स्थितियों को साधती है
 (d) व्याकरण पर ही आधारित होती है
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012

उत्तर : (c)

14. भाषायी कौशलों के संदर्भ में कौन-सा कथन सत्य है?

- (a) भाषायी कौशल एक साथ सीखे जाते हैं, क्रम से नहीं।
 (b) भाषायी कौशल एक-दूसरे से स्वतंत्र होते हैं।
 (c) भाषायी कौशल एक क्रम से सीखे जाते हैं।
 (d) भाषायी कौशल एक-दूसरे को अप्रभावित नहीं करते।
CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015

उत्तर : (a)

15. हिन्दी भाषा में कितनी बोलियाँ हैं?

- (a) 15 (b) 25
 (c) 18 (d) 22
UP TET - Ist Paper (I-V) Oct. 2017

उत्तर : (c)

16. निम्नलिखित में से किस देश में हिन्दी भाषा का प्रयोग लिखने एवं बोलने में किया जाता है?
(a) ऑस्ट्रेलिया (b) दक्षिण अमेरिका
(c) पाकिस्तान (d) मॉरीशस
UP TET - Ist Paper (I-V) Oct. 2017
उत्तर : (d)
17. “लिखित भाषा में अक्षर ध्वनियों के दृश्य प्रतीक होते हैं। सामान्यतः आकृतियों व ध्वनियों का सम्बन्ध सुस्थिर तथा सार्वभौम होता है।”
(a) पूर्णतया असत्य है
(b) आंशिक रूप से सत्य है
(c) आंशिक रूप से असत्य है
(d) पूर्णतया सत्य है
Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011
उत्तर : (d)
18. भाषा का प्रयोग -
(a) केवल मुद्रित सामग्री में होता है
(b) जीवन के विभिन्न संदर्भों में होता है
(c) केवल परीक्षा में होता है
(d) केवल पाठ्य-पुस्तक में होता है
CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012
उत्तर : (b)
19. भाषा के बारे में कौन-सा कथन उचित है?
(a) भाषा अनिवार्यतः लिखित होती है।
(b) भाषा नियमबद्ध व्यवस्था है।
(c) भाषा व्याकरण का अनुसरण करती है।
(d) भाषा और बोली में कभी भी कोई भी संबंध नहीं होता।
CTET - Ist Paper (I-V) July 2013
उत्तर : (b)
20. भाषा हमारे परिवेश में बिखरी मिलती है। यह कथन किस पर लागू नहीं होता?
(a) भाषा-प्रयोगशाला (b) अखबार
(c) विज्ञापन (d) साइनबोर्ड
CTET - Ist Paper (I-V) July 2013
उत्तर : (a)
21. बच्चे के स्कूल की भाषा और घर एवं पड़ोस की भाषा में.....होना/होनी चाहिए।
(a) जुड़ाव (b) समरूपता
(c) समरसता (d) अलगाव
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016
उत्तर : (b)
22. शिक्षक की स्वयं की भाषा-प्रयोग की कुशलता है-
(a) बच्चों के भाषा-प्रयोग के लिए आदर्श रूप प्रस्तुत करती है
(b) बच्चों के भाषा-प्रयोग पर कोई प्रभाव नहीं डालती है
(c) बच्चों को आलंकारिक भाषा-प्रयोग के लिए प्रेरित करती है
(d) बच्चों की भाषा का अनुकरण करने के लिए बाध्य करती है
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012
उत्तर : (a)
23. भाषा की पाठ्य-पुस्तक में.....से सम्बन्धित पाठ होने चाहिए-
(a) संस्कृति (b) साहित्य
(c) विज्ञान (d) ये सभी
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012
उत्तर : (b)
24. भाषा स्वयं में -
(a) एक नियमबद्ध व्यवस्था है
(b) एक जटिल चुनौती है
(c) एक विषय मात्र है
(d) संप्रेषण का एकमात्र साधन है।
CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012
उत्तर : (a)
25. प्राथमिक स्तर पर भाषा-शिक्षण का उद्देश्य यह है कि-
(a) बच्चे भाषा-परीक्षा में सदैव अंक लाएँ।
(b) बच्चे विभिन्न स्थितियों में भाषा का प्रभावी प्रयोग कर सकें।
(c) बच्चे भाषा के व्याकरण को जान सकें।
(d) बच्चे मानक भाषा का प्रयोग करना जल्दी सीख जाएँ।
CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014
उत्तर : (b)
26. भाषा सीखने का उद्देश्य है-
(a) प्रत्येक स्थिति में भाषा का प्रयोग कर पाना
(b) आदेश-निर्देश दे पाना और सुन पाना
(c) दूसरों की बातों को समझ पाना
(d) अपने मन की बात कह पाना
CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016
उत्तर : (a)
27. भाषाई कौशलों के संबंध में कौन-सा कथन सही है?
(a) सभी भाषाई कौशल अंतःसंबंधित हैं।
(b) सभी भाषाई कौशल स्वयं ही विकसित होते हैं।
(c) सभी भाषाई कौशल पाठ्य-पुस्तक से ही विकसित होते हैं।
(d) कोई भी भाषाई कौशल अंतः संबंधित नहीं है।
CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016
उत्तर : (a)
28. भाषायी विविधता -
(a) भारतीय कथाओं का सत्य है
(b) भाषा की कक्षा में एक संसाधन है
(c) बहुभाषिक बच्चों के संज्ञानात्मक विकास की ओर संकेत करती है
(d) उपरोक्त सभी
Bihar TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011
उत्तर : (c)
29. निम्नांकित में से कौन-सा सिद्धान्त भाषा के उद्भव और विकास से सम्बन्धित है?
(a) बिग बैंग सिद्धान्त (b) डिंग-डांग सिद्धान्त
(c) बिली-बैली सिद्धान्त (d) डिली-डैली सिद्धान्त
Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011
उत्तर : (b)

30. बच्चे प्रारंभ से ही-
 (a) द्विभाषिक होते हैं (b) बहुभाषिक होते हैं
 (c) भाषा में कमजोर होते हैं (d) एकभाषिक होते हैं
CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014
 उत्तर : (b)
31. भाषा का अस्तित्व एवं विकास ---- के बाहर नहीं हो सकता।
 (a) परिवार (b) साहित्य
 (c) समाज (d) विद्यालय
CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016
 उत्तर : (c)
32. प्राथमिक स्तर पर बच्चों की भाषायी क्षमताओं का विकास करने का अर्थ है-
 (a) भाषिक संरचनाओं पर अधिकार
 (b) भाषा-प्रयोग की कुशलता पर अधिकार
 (c) भाषा-अनुकरण की कुशलता पर अधिकार
 (d) भाषिक नियमों पर अधिकार
CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015
 उत्तर : (c)
33. संस्कृति की दूसरी मंजिल है -
 (a) चिरन्तन मूल्यों का संरक्षक
 (b) संगीत कला आदि का संरक्षक
 (c) परम्परा और रूढ़ि का आश्रय स्थल
 (d) उपरोक्त सभी
Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014
 उत्तर : (d)
34. भाषा-शिक्षण में पाठ्य-पुस्तक -
 (a) एकमात्र संसाधन है (b) साध्य है
 (c) साधन है (d) अनावश्यक है
CTET- Ist Paper (I-V) June 2011
 उत्तर : (c)
35. हिन्दी भाषा के प्रश्न-पत्र में आप किस प्रश्न को सर्वाधिक उचित मानते हैं?
 (a) विशेषणों के कितने और कौन-से भेद होते हैं?
 (b) प्रत्ययों की परिभाषा लिखिए
 (c) सर्वनाम के भेदों को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए
 (d) लेखक ने पहाड़ों पर होने वाली बारिश का वर्णन एक अलग तरीके से किया है। आप बारिश सम्बन्धी अपना अनुभव लिखिए
CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013
 उत्तर : (d)
36. उच्च कक्षाओं में-
 (a) साहित्य साध्य है और भाषा-कौशल साधन
 (b) केवल छन्द-अलंकारों को समझने का प्रयास करना ही भाषा-शिक्षण का उद्देश्य है
 (c) भाषा-कौशल साध्य है और साधन है- साहित्य
 (d) भाषा की पाठ्य-पुस्तक अत्यन्त महत्वपूर्ण है
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012
 उत्तर : (c)
37. पत्र-पत्रिकाएँ भाषा सीखने में -
 (a) बाधक है। (b) त्रुटियों को बढ़ावा देती है।
 (c) बड़ों के पढ़ने की वस्तु है। (d) साधन है
CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012
 उत्तर : (d)
38. वे कथन जो आपसी व्यवहार में सामान्य रूप से प्रयुक्त होते हैं, उन्हें कहते हैं-
 (a) अनौपचारिक कथन (b) औपचारिक कथन
 (c) प्रासंगिक कथन (d) तर्कसंगत कथन
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014
 उत्तर : (a)
39. निम्न में से कौन-सा पाठ्य-पुस्तक का गुण नहीं है?
 (a) सोद्देश्यता (b) उपयुक्तता
 (c) अशुद्धता (d) क्रमबद्धता
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) June 2013
 उत्तर : (c)
40. पाठ्य-पुस्तक में दिए गए अभ्यास कैसे हों?
 (a) जिनके उत्तर निश्चित हों
 (b) जो अनुमान और कल्पना पर आधारित हों
 (c) जो बहुविकल्पीय हों
 (d) जो व्याकरण पर ही आधारित हों
Bihar TET - Ist Paper (I-V) 2011
 उत्तर : (a)
41. भाषा के आधारभूत कौशल-
 (a) एक क्रम में सीखे जाते हैं
 (b) अन्तःसम्बन्धित हैं
 (c) विद्यालय में ही सीखे जाते हैं
 (d) अन्तःसम्बन्धित नहीं होते हैं
Bihar TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011
 उत्तर : (a)
42. कौन कथन संगत नहीं है?
 (a) पाठ्यपुस्तक कक्षा शिक्षण का प्रमुख साधन है
 (b) पाठ्यपुस्तक विद्यार्थी और शिक्षक दोनों के लिए आधारभूत है
 (c) पाठ्यपुस्तक शिक्षण का साधन है, साध्य नहीं
 (d) पाठ्यपुस्तक शिक्षण का साध्य है, साधन नहीं
Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) 2012
 उत्तर : (d)
43. लिखित अभिव्यक्ति का साधन नहीं है-
 (a) पत्र लेखन (b) निबन्ध लेखन
 (c) वाद-विवाद (d) नाट्य
Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016
 उत्तर : (c)
44. प्रिण्ट मीडिया में सम्मिलित नहीं किया जा सकता-
 (a) समाचार-पत्र (b) पत्रिकाएँ
 (c) पाठ्य-पुस्तक (d) विद्यालय पत्रिकाएँ
Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016
 उत्तर : (c)

45. SITE क्या है?

- (a) टी वी चैनल
(b) उपग्रह अनुदेशात्मक दूरदर्शन प्रयोग
(c) (a) और (b) दोनों
(d) इनमें से कोई नहीं

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (b)

46. भाषा अधिगम में प्रायः कठिनाई नहीं आती

- (a) संकोची स्वभाव (b) आत्मविश्वास की कमी
(c) मानसिक अस्वस्थता (d) मानसिक स्वस्थता

Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (d)

47. रंगमंच पर पर्दे के पीछे का स्थान कहलाता है -

- (a) नैऋत्य (b) नेपथ्य
(c) प्रेक्षागृह (d) अलिन्द

Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (b)

48. भाषा संरचना में अपेक्षित भाषा के प्रमुख अंग होते हैं-

- (a) एक (b) दो
(c) तीन (d) चार

Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (b)

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. भाषा के अंग हैं-

- (a) लेखन (b) वाचन
(c) पठन (d) ये सभी

2. एक शिक्षक कक्षा में कविता के वाचन पाठ का आयोजन कर रहे हैं वे किस प्रकार के भाषायी कौशल के विकास का उपाय कर रहे हैं?

- (a) अभिव्यक्ति एवं अर्थ ग्रहण (b) अर्थग्रहण
(c) अभिव्यक्ति (d) इनमें से कोई नहीं

3. भाषा सीखने का स्वाभाविक मनोवैज्ञानिक क्रम है-

- (a) पढ़ना-लिखना, सुनना-बोलना
(b) सुनना-बोलना, पढ़ना-लिखना
(c) सुनना-लिखना, बोलना-पढ़ना
(d) सुनना-बोलना, लिखना-पढ़ना

4. वर्णमाला पढ़ना और वर्णमाला लिखना कौन-सा कार्य पहले कराया जाता है?

- (a) वर्णमाला लिखना (b) वर्णमाला लिखना और पढ़ना
(c) वर्णमाला पढ़ना (d) ये सभी

5. गहन अध्ययन-निष्ठ शिक्षण में मौनवाचन किस शिक्षा से प्रारंभ किया जाना उचित रहेगा?

- (a) कक्षा 5 से (b) कक्षा 6 से
(c) प्रथम कक्षा से (d) कक्षा 3 से

6. श्रवण कौशल का संबंध किस भाषा से है?

- (a) मातृभाषा से (b) मौखिक भाषा से
(c) लिखित भाषा से (d) इनमें से कोई नहीं

7. निम्न में से कौन-सा युग्म भाषा के अभिव्यक्ततात्मक कौशलों को निरूपित करता है?

- (a) पढ़ना, लिखना (b) बोलना, लिखना
(c) सुनना, बोलना (d) सुनना, पढ़ना

8. निम्न में से कौन-सा कथन भाषायी कौशलों के संदर्भ में उचित है?

- (a) भाषा शिक्षण में केवल पढ़ना और लिखना कौशलों पर ही बल देना चाहिए
(b) भाषायी कौशलों के विकास में भाषिक नियमों का ज्ञान अभ्यास की अपेक्षा जरूरी है।
(c) भाषा के सभी कौशल अंतर्संबंधित हैं।

(d) बालक केवल सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना क्रम से ही सीखते हैं।

9. लेखन कौशल का मूल्यांकन करने के लिए निम्न में से कौन-सी एक सर्वोत्तम विधि हो सकती है?

- (a) सुलेख का अभ्यास
(b) श्रुतलेख का अभ्यास
(c) पाठ आधारित अभ्यास प्रश्न
(d) अपने अनुभवों को लिखना

10. वाचन कौशल में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है-

- (a) केवल अक्षरों की पहचान
(b) द्रुत गति से पढ़ना
(c) संदर्भानुसार अर्थ ग्रहण
(d) शब्दों और वाक्यों का शुद्ध उच्चारण

11. सस्वर वाचन का मुख्य उद्देश्य है-

- (a) पढ़ने संबंधी झिझक को दूर करना
(b) बोल-बोल कर पढ़ना
(c) द्रुत गति से पढ़ना
(d) मौन पठन करना

12. भाषा के आधारभूत कौशलों के संदर्भ में निम्न में से कौन-सा कथन सही है?

- (a) भाषायी कौशल क्रमबद्ध रूप से चलते हैं
(b) भाषायी कौशल सर्वदा पृथक् हैं
(c) भाषायी कौशल अंतर्संबंधित होते हैं
(d) भाषायी कौशल सदैव अर्जित किए जाते हैं

13. श्रवण कौशल को सीखने के चरणों का सही क्रम है-

- (a) ध्वनि का कानों तक पड़ना, प्रयोग, अर्थग्रहण
(b) अर्थग्रहण, प्रयोग, ध्वनि का कानों तक पड़ना
(c) प्रयोग, ध्वनि का कानों तक पड़ना, अर्थग्रहण
(d) ध्वनि का कानों तक पड़ना, अर्थग्रहण, प्रयोग

14. वाचन कौशल को सीखने के चरणों का सही क्रम है-

- (a) प्रत्यक्षीकरण, प्रयोग, अर्थग्रहण
(b) अर्थग्रहण, प्रयोग, प्रत्यक्षीकरण
(c) प्रयोग, प्रत्यक्षीकरण, अर्थग्रहण
(d) प्रत्यक्षीकरण, अर्थग्रहण, प्रयोग

15. लेखन क्षमता का विकास करने के संदर्भ में एक भाषा शिक्षक के नाते आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या है?
 (a) मानक वर्तनी का प्रयोग
 (b) सुलेख का अभ्यास
 (c) निर्देशों के आधार पर निबंध लिखना
 (d) अपने अनुभव लिखना
16. छात्रों को _____ पढ़ाने पर वे अपने आसपास के पर्यावरण को बेहतर तरीके से समझ पाते हैं।
 (a) कक्षा में (b) कक्षा के बाहर
 (c) प्रयोगशाला में (d) समुद्र किनारे
17. एक शिक्षक ने कक्षा 4 के बच्चों को एक गतिविधि किट देकर एक प्रायोगिक गतिविधि का संचालन किया। कक्षा के सभी बच्चों ने इस गतिविधि में पूरी तरह से भाग लिया। शिक्षक के लिए सुनिश्चित करने का सबसे अच्छा तरीका क्या होगा कि छात्रों ने गतिविधि से अभिप्रेरित शिक्षा प्राप्त की है?
 (a) साथियों या शिक्षकों के साथ चर्चा का आयोजन करें और बच्चों के व्यक्तिगत विचारों को प्रतिबिंबित होने दें
 (b) उनसे सवाल पूछें
 (c) बच्चों को कक्षा के सामने एक-एक अपने अनुभव साझा करने के लिए कहें
 (d) उन्हें एक वर्कशीट दें और उसे हल करने के लिए कहें
18. निम्नलिखित में कौन-सा वाचन का आधार नहीं है?
 (a) वाचन मुद्रा (b) छन्दानुगत वाचन शैली
 (c) अभिनय (d) भावात्मक वाचन शैली
19. निम्नलिखित में से कौन-सी वाचन शिक्षण की विधि नहीं है?
 (a) ध्वनि साम्य विधि (b) अनुध्वनि विधि
 (c) व्याख्या विधि (d) समवेत पाठ विधि
20. कक्षा में विद्यार्थियों की रुचि बनाए रखने के लिए एक शिक्षक को उचित है
 (a) श्यामपट्ट का प्रयोग करना (b) चर्चा करना
 (c) कहानी कहना (d) प्रश्न पूछना
21. शिवानी द्वारा पूछे गए एक प्रश्न का उत्तर शिक्षक तत्काल नहीं दे सकता है, शिक्षक की प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए?
 (a) शिक्षक द्वारा शिवानी को चुप करा देना चाहिए
 (b) शिक्षक द्वारा शिवानी का ध्यान बँटा देना चाहिए
 (c) शिक्षक को कहना चाहिए कि “मैं नहीं जानता हूँ”
 (d) शिक्षक द्वारा इस प्रश्न का सही उत्तर बाद में समझकर देना चाहिए
22. वे शिक्षार्थी जो संवृद्ध ज्ञान और शैक्षणिक दक्षता की हार्दिक इच्छा प्रदर्शित करते हैं, उनके पास होता है
 (a) निष्पादन-उपागम अभिविन्यास
 (b) निष्पादन-परिहार अभिविन्यास
 (c) कार्य-परिहार अभिविन्यास
 (d) नैपुण्यता अभिविन्यास
23. निम्न में से कौन शिक्षण कुशलता से सम्बन्धित है?
 (a) श्यामपट्ट पर लिखना (b) प्रश्नों को हल करना
 (c) प्रश्न पूछना (d) उपरोक्त सभी
24. आविष्कार वर्तनी क्या है?
 (a) पढ़ने के विकास के साथ हस्तक्षेप
 (b) पारंपरिक वर्तनी का विकास
 (c) बच्चों की वाक्पटुता को बढ़ाता है
 (d) माता-पिता द्वारा समर्थित नहीं किया जाना चाहिए
25. को अभिप्रेरित शिक्षण का चिह्न माना जाता है—
 (a) कक्षा में अधिकतम उपस्थिति
 (b) शिक्षक द्वारा प्रदत्त उपचारात्मक कार्य
 (c) छात्रों द्वारा प्रश्न पूछे जाना
 (d) कक्षा में नीरवता
26. सीमा दर पाठ को अति तीव्र गति से सीखती है किन्तु लीना को उन्हें सीखने में अधिक समय लगता है। यह विकासात्मक सिद्धान्त को दर्शाता है—
 (a) अन्तर – संबंधों को (b) निरंतरता को
 (c) सामान्य से विशेष की ओर (d) वैयक्तिक अंतरों को
27. ह्यूरिस्टिक विधि के जन्मदाता है—
 (a) आर्मस्ट्रांग (b) किलपेट्रिक
 (c) यूलर (d) फ्रॉबेल
28. निम्न में से कौन-सा कुसमायोजन का लक्षण नहीं है?
 (a) अपने सहपाठियों से लड़ाई-झगड़ा
 (b) नाखून चबाना या काटना
 (c) सांवेगिक परिपक्वता
 (d) हकलाना
29. श्रव्य-भाषीय (Audio-lingual) पद्धति (जो सेना पद्धति भी जानी जाती है) को त्वरित ग्रहण करने में फलित होती है—
 (a) पढ़ने और बोलने का कौशल
 (b) पढ़ने और सुनने का कौशल
 (c) बोलने और सुनने का कौशल
 (d) लिखने और पढ़ने का कौशल
30. भाषा में कौशल सिखाने का क्रम होता है—
 (a) सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना
 (b) लिखना, पढ़ना, बोलना, सुनना
 (c) बोलना, सुनना, पढ़ना, लिखना
 (d) लिखना, पढ़ना, सूचना, बोलना

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (d) | 2. (c) | 3. (b) | 4. (c) | 5. (a) | 6. (b) | 7. (b) | 8. (c) | 9. (d) | 10. (c) |
| 11. (a) | 12. (c) | 13. (d) | 14. (a) | 15. (d) | 16. (b) | 17. (a) | 18. (c) | 19. (c) | 20. (d) |
| 21. (d) | 22. (a) | 23. (d) | 24. (c) | 25. (c) | 26. (d) | 27. (a) | 28. (c) | 29. (c) | 30. (b) |

भाषा बोधगम्यता एवं मूल्यांकन (बोलना, सुनना, पढ़ना और लिखना)

भाषा बोधगम्यता एवं मूल्यांकन

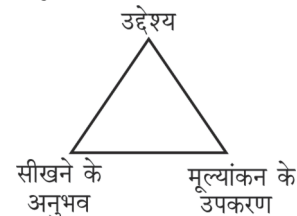
बोध के लिए ज्ञान का होना अनिवार्य है। ज्ञान के बिना बोध नहीं हो सकता है। ज्ञान-वर्ग में जिस पाठ्य-वस्तु का ज्ञान प्रदान किया जाता है अर्थात् जिन तथ्यों, शब्दों, साधनों, नियमों, परम्पराओं आदि का ज्ञान कराया जाता है, यहाँ उनके बारे में प्रत्यास्मरण तथा अभिज्ञान की क्षमताओं का विकास हो चुका होता है। वे प्राप्त ज्ञान की आधार भूत समझ (Basic understanding) के आधार पर अनुवाद, व्याख्या, विस्तार, उल्लेख आदि क्रियाएँ कर सकते हैं। बोध के अंतर्गत छात्र सम्बन्ध स्थापित नहीं कर सकते हैं बल्कि प्राप्त ज्ञान को अपने शब्दों में प्रस्तुत करना सीखते हैं।

परीक्षा का उद्देश्य पूर्णरूप से समझने के लिए एक और शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिसे मूल्यांकन कहते हैं। यह शब्द अधिक व्यापक अर्थ देता है और बालक की समस्त प्रगति की जाँच करने के प्रयोग में आता है। साथ ही साथ यह शिक्षण पर भी अपना प्रभाव डालता है और इसलिए इस पूरी प्रणाली को मूल्यांकन शिक्षण प्रणाली कहते हैं।

- ◆ इसका उद्देश्य परीक्षा में सुधार करने के साथ-साथ शिक्षण विधियों में भी सुधार करना है। इसका आधार यह है कि जितना पढ़ाया गया है उन सबकी जाँच हो और जिसकी जाँच की जाती है वह सब पढ़ाया गया हो। बालकों के सीखने के अनुभव बहुत महत्व रखते हैं।
- ◆ परीक्षा लेने से पहले हमें स्पष्ट हो जाना चाहिए कि किस-किस की परीक्षा लेनी है, कितना ज्ञान किस रूप में बालकों को दिया जा चुका है, जिसकी जाँच करनी है, बालकों में कौन से परिवर्तन हो गये हैं जो उनकी प्रगति के सूचक हैं और हमें परीक्षा के द्वारा यह देखना है कि उनमें ये परिवर्तन हो गये हैं जो उनकी प्रगति के सूचक हैं और हमें परीक्षा द्वारा यह देखना है कि उनमें ये परिवर्तन हुए भी हैं या नहीं। अगर हो गये हैं तो ठीक है, अगर नहीं हो गये हैं तो क्यों नहीं हुए हैं, इस बात की जानकारी करना आवश्यक है।
- ◆ शिक्षा का कार्य व्यापक रूप में बालकों में खुद परिवर्तन लाना है ये परिवर्तन उनके व्यवहार में तथा उनके आचरण में होंगे। यह स्तर शारीरिक, मानसिक अथवा आत्मिक हो सकता है। व्यवहार-परिवर्तन बिना किसी शिक्षा के नहीं होता। शिक्षा द्वारा बालकों को अनुभव प्राप्त होते हैं और उन अनुभवों के आधार पर वह अपने व्यवहार को बदलता, सुधारता, परिवर्तित व संशोधित करता जाता है। यही नहीं, वह अपने ज्ञान में वृद्धि करता जाता है और अपनी मानसिक शक्तियों का प्रयोग करना, अपना व्यवहार उनसे निर्दिष्ट करता है।



मूल्यांकन हमें बालकों को प्रगति की जाँच ही नहीं कराता बल्कि इसका संकेत भी देता है कि बालकों को पर्याप्त अनुभव दिये गये हैं अथवा नहीं। साथ ही साथ हमें यह भी स्पष्ट होता है कि हमारे उद्देश्य ठीक हैं अथवा नहीं। उद्देश्य, सीखने के अनुभव व मूल्यांकन तीनों का समन्वय व मिलान ही, मूल्यांकन शिक्षण प्रणाली का सार। यह प्रणाली शिक्षण का केन्द्र-बिन्दु है और मूल्यांकन शिक्षण का अभिन्न अंग है।



परीक्षणों के प्रकार

परीक्षणों से अभिप्राय बालक की अभिरुचि, ज्ञान क्षमता या अध्ययन में किया गया उसके द्वारा प्रदर्शन का किसी भी विधि के अनुसार मापन करना भाषा-शिक्षण मामले में जाँच को कक्षा-कार्य के ही विस्तार के रूप में देखा जाना चाहिए, जो सीखने वाले व सिखाने वाले दोनों के लिए उपयोगी सूचनाएँ प्रदान करने में सहायक हों और जिनका उपयोग पढ़ने के तरीके और सामग्री को विकसित करने में सक्षम हो सके।

अभिरुचि परीक्षण विद्यार्थी कक्षा में अध्ययन करता है तो शिक्षक इस बात की जानकारी उससे ग्रहण कर लेता है। कि विद्यार्थी में द्वितीय/विदेशी भाषा सीखने की क्षमता है या नहीं अथवा इस प्रकार की कोई सम्भावना है। नहीं-इनकी-जाँच इस परीक्षण के द्वारा की जाती है। जिससे विद्यार्थी चुनकर सामने लाए जा सकते हैं जो उक्त भाषा सीखने में रुचि जाग्रत करके उसे ग्रहण कर सकें।

निश्चित शुद्ध परिणाम के परीक्षण का उद्देश्य भी निश्चित होता है। अर्थात् खास विषय-वस्तु से सम्बन्धित होता है। निदानात्मक और उपलब्धिपरक जाँच इस श्रेणी में आते हैं। निदानात्मक जाँच से पता चलता है कि पाठ्यक्रम के किसी विशिष्ट पहलू के ज्ञान में विद्यार्थी की क्या स्थिति है?

उसने कितना सीखा है? यह कोर्स की किसी इकाई की समाप्ति के उपरान्त लिया जाता है। उपलब्धिपरक जाँच में विद्यार्थी की अन्य विद्यार्थियों की तुलना में जो स्थिति होती है उसकी जाँच की जाती है।

निश्चित नियम से सम्बन्धित- का उद्देश्य ग्लोबल भाषा योग्यता की जाँच है अधिकांश रोजगार और दक्षता सम्बन्धी जाँच इसी तरह की होती है। इसका उद्देश्य है विद्यार्थी ने जो

कुछ सीखा उसे वह कहाँ तक वास्तविक स्थिति में कार्यान्वित करने के काबिल है और क्या वह विशिष्ट योग्यताओं के सन्दर्भ में एक मानक स्तर तक पहुँच सका। ये परीक्षण वस्तुनिष्ठ या वर्णनात्मक हो सकते हैं।

वस्तुनिष्ठ परीक्षणा में अंकन यान्त्रिक ढंग से किया जा सकता है। उनमें बहु-वैकल्पिक, रूपान्तरण पर आधारित, अधूरे वाक्यों को पूरा करने, सही/गलत, जोड़े मिलाने आदि जैसे प्रश्न आते हैं। वर्णनात्मक परीक्षण के मामले में परीक्षक के मामले में परीक्षक के निजी फैसले का महत्त्व होता है और अंकन ज्यादा कठिन व समय लेने वाला होता है यदि दातों की जो परीक्षा दे रहे हैं तो अधिक संख्या में उपस्थित ता जाँच सही ढंग से करना कठिन कार्य होता है।

परीक्षण तैयार करना

कोई भी परीक्षण तैयार करने की प्रक्रिया, यहाँ तक कि कक्ष के भीतर की भी, मुख्यतः तीन चरणों में सम्पादित होती हैं

1. परीक्षण का प्रशासन
2. अभिकल्प
3. संचालन

- ◆ अभिकल्प तैयार करने की अवस्था में प्रश्नों का विवरण, पहचान और चुनाव शामिल होता है। संचालन (ऑपरेशन) की अवस्था में परीक्षण में प्रयुक्त किए जाने वाले विविध कार्यों के विशेष विवरण तैयार किए जाते हैं, साथ ही एक खाका भी तैयार किया जाता है जो, कि यह बताता है कि वास्तविक परीक्षणका रूप देने के लिए जाँच कैसे की जाएगी। इसमें वास्तविक परीक्षा सम्बन्धी कार्य, लिखित अनुदेश और अंकन की क्रियाविधियाँ भी शामिल होती हैं।
- ◆ कार्यान्वयन की अवस्था में परीक्षण लिया जाता है, सूचनाएँ एकत्र की जाती हैं तथा अंकों का विश्लेषण किया जाता है।
- ◆ परीक्षण का विकास शिक्षक की परीक्षण की उपयोगिता को गौर से देखने/पड़ताल करने का अवसर प्रदान करता है। विकास की यह प्रक्रिया अनुक्रियात्मक होनी चाहिए। यह बाद में जाँच-प्रश्नों के पुनर्विचार और उन्हें दोहराने में सहायक सिद्ध होती है। साथ ही अंकन की पद्धति भी निर्मित व विकसित करने में यह मददगार साबित होती है।

परीक्षण के लिए दिए जाने वाले कार्य

Providing Works for Testing

परीक्षण कार्य कई तरह के हो सकते हैं जैसे- अनुत्पादक परीक्षण कार्य। (क्लोज परीक्षण करना, श्रुतलेखन, अनुवाद, नोट लेना, संयोजन आदि); उत्पादन परीक्षण कार्य (जोड़ा मिलाना, बहु-वैकल्पिक, क्रमबद्ध करना आदि) से लेकर पोर्टफोलियो- आकन (एक खास अवधि में विद्यार्थी द्वारा किए गए सृजनात्मक कार्य) तक।

भाषा का पोर्टफोलियो प्रपत्रों का संगठित व क्रमबद्ध संग्रह हो सकता है जिसे विद्यार्थी ने खास समय के दरम्यान में किया हो, और उसे व्यवस्थित ढंग से प्रदर्शित किया जा सकता है। इसे मानक परीक्षण-पद्धतियों के विकल्प के रूप में देखा जाता है। इससे विद्यार्थी में सीखने को पति दायित्वबोध पनपता है।

भाषिक मूल्यांकन के आधुनिक तरीके यह सुझाते हैं कि विभिन्न बिन्दुओं और संकल्पनात्मक परीक्षणों का सन्तुलित समूह बनाना उपयोगी हो सकता है। संकल्पनात्मक परीक्षण जैसी बन्द प्रक्रिया (क्लोज्ड प्रोसिड्योर) जो गेस्टाल्ट (समग्रकृति) मनोविज्ञान पर आधारित हो, सभी स्तर पर विधि रूपों में सृजनात्मक ढंग से ढाला जा सकता है। इसी प्रकार से, विशेषकर बहुभाषी कक्षा में, अनुवाद को विभिन्न प्रकार से प्रयुक्त किया जा सकता है।

अच्छे मूल्यांकन की विशेषताएँ

एक अच्छे मूल्यांकन की प्रायः निम्नलिखित विशेषताएँ बताई जाती हैं-

1. **वैधता-** जिस उद्देश्य का मूल्यांकन करना हो, उस उद्देश्य का यदि मूल्यांकन हो जाता है तो उन साधनों को वैध साधन कहा जाता है जिनके आधार पर यह मूल्यांकन होता है।
2. **विश्वसनयिता-** छात्रों द्वारा प्राप्त अंकों में विचलन नहीं होता और चाहे जब पुनर्मूल्यांकन किया जाय, अंक प्रायः एक-से रहते हैं।
3. **वस्तुनिष्ठता-** परीक्षक की रुचियों, भावनाओं आदि का मूल्यांकन पर प्रभाव नहीं पड़ता। यह पक्षपात रहित होता है। उत्तरों के आधार पर ही मूल्यांकन होता है, न कि परीक्षक के दृष्टिकोण के आधार पर।
4. **व्यापकता-** परीक्षा का क्षेत्र संकुचित नहीं होता। पाठ्यक्रम के संपूर्ण अंश की परीक्षा हो जाती है।
5. **उपयोगिता-** एक अच्छा मूल्यांकन जीवन से सम्बद्ध होता है। यह व्यावहारिक होता है। और इसका शिक्षण एवं जीवन में उपयोग किया जा सकता है।
6. **विभेदीकरण-** मूल्यांकन को समझ और अक्षम छात्रों में भेद कर सकने की समर्थ्य होनी चाहिए।

मूल्यांकन करते समय आवश्यक बिन्दु

- (क) मूल्यांकन व्यापक होना चाहिए जिसमें भाषा के सभी पक्षों एवं योग्यताओं की जाँच की जाये।
- (ख) सैद्धान्तिक विषयों के साथ-साथ विविध अभ्यासात्मक कार्यों तथा व्यावहारिक क्रियाओं का भी मूल्यांकन किया जाये। जैसे- पत्र- पत्रिकाएँ और अतिरिक्त पुस्तके पढ़ना, पढ़ी हुई विषय-सामग्री पर कक्षा में चर्चा करना, कहानियाँ एवं कविताओं का संकलन करना, भाषा शिक्षण विषय श्रव्य-दृश्य उपकरणों का निमाण करना आदि।
- (ग) मूल्यांकन में मौखिक परीक्षा को भी अनिवार्य रूप से स्थान दिया जाये। मौखिक परीक्षा में सर्वाधिक बल भाषा की शुद्धता और शब्दों के सही प्रयोग पर होना चाहिए। निम्नलिखित कथन यदि सत्य हों तो 'हाँ' और असत्य हों तो 'नहीं' को रेखांकित करो। प्रथम कथन उदाहरण के रूप में रेखांकित कर दिया गया है-
- (i) इस समय उत्तर प्रदेश में राष्ट्रपति शासन है? (हाँ/नहीं)
- (ii) डॉ. शंकर दयाल शर्मा भारत के राष्ट्रपति हैं। (हाँ/नहीं)
- (iii) अकबर ने हिन्दुओं पर जजिया कर लगाया। (हाँ/नहीं)
- (iv) हर्षवर्धन प्रत्येक पाँचवे वर्ष प्रयाग में ईसाई धर्म में लोग को दान देता है। (हाँ/नहीं)
- (v) श्री पी.वी. नरसिम्हा राव भारत के प्रधानमंत्री हैं। (हाँ/नहीं)

2. **बहु-निर्वाचन (Multiple Choice Type)** - इन प्रश्नों में एक कथन के उत्तर के रूप में कई विकल्प दिये रहते हैं। परीक्षार्थी को इन्हीं विकल्पों में से अधिक उपयुक्त या सही को छाँटना पड़ता है। उदाहरणार्थ (1) उत्तर-प्रदेश की राजधानी, पटना, इलाहाबाद, लखनऊ, आगरा, मेरठ है।

3. **तुलनात्मक रूप (Matching Type)**- इसमें बालकों को दो सूचियों के विषयों की समानता या सम्बन्ध या तुलना करने के लिए कहा जाता है। इन सूचियों के विषय बिना किसी क्रम के दिये होते हैं। परीक्षार्थियों को इसी क्रम में रखना पड़ता है। इसलिए इस प्रकार के प्रश्नों के क्रमबद्धकरण रूप के प्रश्न भी कहा जाता है। उदाहरणार्थ-

- | | |
|-------------------------------------|---------|
| 1. पानीपत का प्रथम युद्ध | 1875 ई. |
| 2. प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम | 1757 ई. |
| 3. प्लासी का युद्ध | 1948 ई. |
| 4. गाँधीजी की मृत्यु | 1526 ई. |

4. **वर्गीकरण रूप (Classification Type)**- इस प्रकार के प्रश्नों को 'क्रमबद्धकरण' प्रश्नों का एक रूप माना जा सकता है। इसमें बालकों के समक्ष कुछ ऐसे शब्दों का समूह रखा जाता है, जिनमें से एक शब्द असंगत होता है।

उदाहरणार्थ- 1. अशोक, चन्द्रगुप्त, मौर्य, समुद्रगुप्त, हर्षवर्धन, जयप्रकाश नारायण।

(ब) **प्रत्यास्मरण रूप (Recall Type)**- इस प्रकार के प्रश्नों के द्वारा बालकों की स्मरण-शक्ति की जाँच की जाती है। इन प्रश्नों के निम्नलिखित उपभेद हैं-

- | | |
|---|-----|
| 1. श्री लालबहादुर शास्त्री की मृत्यु कब हुई? | () |
| 2. हल्दीघाटी का युद्ध का हुआ ? | () |
| 3. हमारे देश के गृहमन्त्री कौन हैं? | () |
| 4. 'सम्पूर्ण क्रान्ति' का नारा किसने दिया? | () |
| 5. वर्तमान में भारत के गृहमन्त्री कौन हैं? | () |
| 6. सन् 1996 के निर्वाचन में श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने उत्तर प्रदेश के किस संसदीय क्षेत्र से चुनाव लड़ा था। | () |

2. **रिक्त स्थान पूरक रूप (Completion Type)** - इस प्रकार के प्रश्न अपूर्ण कथन या वाक्यों के रूप में प्रस्तुत किये जाते हैं। छात्र अपनी प्रत्यास्मरण शक्ति की सहायता से अपूर्ण वाक्यों की पूर्ति करता है: उदाहरण-

- | |
|---|
| 1. भारत का संविधान..... में लागू हुआ। |
| 2. पानीपत का दूसरा युद्ध..... तथा के बीच हुआ। |
| 3. उत्तर प्रदेश में महाविद्यालयों के शिक्षकों के नये वेतनमानों को मुख्यमन्त्री श्री ने स्वीकार कर लिया। |
| 4. पाकिस्तान ने भारत की सीमा का तथा में उल्लंघन किया। |

परीक्षा प्रविधि के उपयुक्त भेदों के अतिरिक्त दो और भेद किये जाते हैं। परन्तु ये भेद संगठन एवं प्रशासन की दृष्टि से किये जाते हैं। इन भेदों पर नीचे प्रकाश डाला जा रहा है-

(अ) **आन्तरिक परीक्षाएँ**- जो परीक्षाएँ विद्यालयों द्वारा समय-समय पर संचालित की जाती हैं, उन्हें आन्तरिक परीक्षाओं का नाम से पुकारा जाता है। इन परीक्षाओं में शिक्षक ही प्रश्न-पत्र बनाते तथा उत्तर-पुस्तिकाओं को जाँचते हैं।

मौखिक परीक्षा

1. हम दैनिक जीवन में पढ़ने-लिखने से अधिक कार्य सुनने और बोलने को कहते हैं। भाषा के दो रूपों मौखिक एवं लिखित, में से व्यावहारिक जीवन में मौखिक रूप का प्रयोग अधिक होता है।

2. मौखिक रूप से छात्रों से प्रश्न पूछकर उनके उत्तर भी मौखिक रूप से ही देने को कहा जाता है। इसे ही मौखिक परीक्षा कहते हैं।

3. मौखिक रचना ही लिखित रचना का आधार है अतः हिन्दी के मूल्यांकन में मौखिक अभिव्यक्ति की योग्यता की जाँच करना भी उतना ही आवश्यक है जितना लिखित अभिव्यक्ति की योग्यता की जाँच करना।

4. हिन्दी भाषा के मूल्यांकन में मौखिक परीक्षा का बहुत महत्त्व है क्योंकि हिन्दी भाषा-शिक्षण में पढ़ने लिखने की योग्यता का विकास करने से पहले छात्रों को सुनकर विचार ग्रहण करने और बोलकर विचार ग्रहण करने और बोलकर विचारों को अभिव्यक्त करने की योग्य बनाना भाषा की शिक्षक प्रमुख उद्देश्य है।

अच्छी परीक्षा के गुण या मूल्यांकन का महत्त्व

उपयोगिता तथा व्यवहारशीलता - उपयोगिता या व्यवहारशीलता एक अच्छी शिक्षा की अन्तिम विशेषता है। एक अच्छी परीक्षा का अर्थ है कि अच्छी परीक्षा योगी तो होती है, साथ में सफलतापूर्वक व्यवहार में लाई जा सकती है। परीक्षा में मूल्यांकन का अन्त में यही सार निकलता है कि मूल्यांकन द्वारा यह हो जाता है कि उद्देश्य की पूर्ति कहाँ तक हो सकी है तथा यह भी ज्ञात हो जाता है कि समुचित उपचारात्मक अनुदेशन दिया गया है कि नहीं। मूल्यांकन छात्र-छात्राओं की कमजोरियों को ज्ञात किया गया है कि नहीं।

विश्वसनीयता- एक अच्छी परीक्षा विश्वसनीय होती है। इसका तात्पर्य यह है कि परीक्षा द्वारा होने वाला मापन प्रायः अविचल होता है।

विभेदीकरण- एक अच्छी परीक्षा की पाँचवी विशेषता है, उसका विभेदीकरण होना। ऐसी परीक्षा के द्वारा उच्च और निम्न योग्यता वाले छात्र-छात्राओं में विभेद हो जाता है।

व्यापकता- व्यापकता से तात्पर्य है मापित होने वाली राशि में अधिक तत्वों को सम्मिलित करना।

वैधता- वैधता का अभिप्राय है 'अभिप्राय सापेक्षता' अर्थात् जब परीक्षा द्वारा अभीष्ट लक्ष्य का मापन होता है, तभी उसे वैध कहा जा सकता है।

वस्तुनिष्ठता- एक अच्छी परीक्षा वस्तुनिष्ठ होती है। एक वस्तुनिष्ठता में व्यक्तिनिष्ठ तत्वों का लोप होता है। छात्र-छात्राओं का मूल्यांकन निष्पक्ष होता है।

पत्र निर्माण एवं ब्लू प्रिन्ट-

शिक्षा प्रणाली में लिखित परीक्षा वह महत्वपूर्ण माध्यम है जिसमें उत्तीर्ण होकर विद्यार्थी कक्षा दर कक्षा आगे बढ़ते हैं। परीक्षा प्रश्नों के माध्यम से ली जाती है। प्रश्न-पत्र पर ही विद्यार्थियों का मूल्यांकन निर्भर करता है। अतः प्रश्न-पत्र बनाने के पूर्व योजना तैयार करना अत्यन्त आवश्यक है जिसमें प्रश्नों का प्रकार उद्देश्य, अंकों अधिभार आदि, सम्मिलित हैं इसे ब्लू प्रिन्ट कहते हैं।

प्रिन्ट बनाकर प्रश्न-पत्र बनाने से सभी शैक्षिक उद्देश्य की पूर्ति करने वाले प्रश्न-पत्र का निर्माण किया जा सकता है इससे शिक्षक को यह स्पष्ट होता है, कि इस इकाई से कितने अंक के कितने प्रश्न पूछने हैं तथा प्रत्येक इकाई को उचित भार दिया जा सकता है इस प्रकार त्रुटियों की सम्भावना नहीं है एवं आदर्श प्रश्न-पत्र बनता है। ब्लू प्रिन्ट में आवश्यकतानुसार एवं पूर्व के परीक्षा परिणामों के आधार पर वांछित परिवर्तन किए जाते हैं।

अच्छा प्रश्न-पत्र बनाने के लिए संतुलित ब्लू प्रिन्ट तैयार किया जाना अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिए नियोजन निर्धारित पाठ्यक्रम से लिया जाना चाहिए।

प्रिन्ट के निर्माण में ध्यान रखने योग्य बातें

1. **प्रश्नों का कठिनाई स्तर-** सरल प्रश्न, सामान्य प्रश्न एवं कठिन प्रश्नों का प्रतिशत निश्चित करना चाहिए।
2. **विकल्प का दिया जाना-** यह पहले से निर्धारण कर लेना चाहिए कि किन प्रश्नों में आन्तरिक विकल्प दिया जाना है। विकल्प वाले प्रश्नों में कठिनाई स्तर एवं प्रश्न का प्रकार समान होना चाहिए।
3. **प्रश्नों के उद्देश्य-** परीक्षा में पूछे जाने वाले कितने प्रश्न ज्ञानात्मक कितने प्रबोधात्मक, कितने कौशलात्मक अथवा कितने अनुप्रयोगात्मक होंगे इनके लिए प्रतिशत द्वारा अंकों का निर्धारण पूर्णांक में होना चाहिए।
4. **प्रश्नों के प्रकार-** पाठ्यक्रम से प्रत्येक प्रकार के प्रश्न जैसे- वस्तुनिष्ठ, अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाने चाहिए। इसके लिए पहले प्रतिशत का निर्धारण फिर कुल अंकों के प्रश्नों का निर्धारण चाहिए।
5. **प्रश्न-पत्र का खण्डों में विभाजन-** शिक्षक स्वयं विवेक से प्रश्न-पत्र में खण्ड निर्धारित कर सकते हैं। जैसे- खण्ड अवस्तुनिष्ठ खंड ब अति लघुउत्तरीय एवं लघुउत्तरीय इत्यादि।
6. **विषय-वस्तु पर अधिभार-** प्रत्येक इकाई की विषय-वस्तु के महत्व के आधार पर अंकों का निर्धारण किया जाना चाहिए।
7. **प्रश्न-पत्र को हल करने में सम्भावित समय-** प्रश्न-पत्र में प्रश्नों की अवस्था ऐसी हो हर विद्यार्थियों को प्रश्न-पत्र पढ़ने एवं हल किए गए प्रश्नों के उत्तर पुनः जाँचने का समय मिल सके।

परिणामों का विश्लेषण

1. उत्तर पुस्तिकाओं का सही मूल्यांकन अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि इसी पर विद्यार्थियों का भविष्य निर्भर करता है। प्रश्नों के सही उत्तर के सम्बन्ध में आश्वस्त होने पर ही शिक्षक को मूल्यांकन का कार्य करना चाहिए। विद्यार्थियों द्वारा किये गए उत्तर शब्दशः से नहीं मिलने की स्थिति में विद्यार्थी द्वारा लिखे गए उत्तरों का अर्थ, भाव स्पष्ट होने पर भी अंक प्रदान किए जाने चाहिए। आदर्श उत्तर में दिए गए विभाजन के अनुसार उत्तरों पर अंक प्रदान किए जाने चाहिए।
2. कई बार ऐसे प्रकरण भी देखने में आते हैं जब विद्यार्थी एक ही प्रश्न का उत्तर दो बार देते हैं, मूल्यांकनकर्ता को सजगता पूर्वक उचित क्रमांक के प्रश्न वाले उत्तर दो अंक प्रदान करना चाहिए। उत्तर पुस्तिकाओं के विश्लेषण से कठिन विषयांश ज्ञात होते हैं तथा आगे की रणनीति बनाने में सहयोग मिलता है।

3. उत्तर पुस्तिकाएँ विद्यार्थियों का मूल्यांकन करने का एक विश्वयनीय माध्यम है। उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन का उद्देश्य यह जानना होता है विद्यार्थियों द्वारा कौन-कौन से प्रश्न अधूरे हल किए गए? कौन-कौन से प्रश्न हल नहीं किए गए? ऐसे कौन से प्रश्न हैं? जिन्हें अधिकांश विद्यार्थियों ने हल नहीं किया? विद्यार्थियों को होने वाली कठिनाइयों का ज्ञान हो जाता है तथा शिक्षक अगले सत्र के लिए शिक्षण की रणनीति तैयार कर सकता है जैसे किस विषय-वस्तु पर अधिक ध्यान देना है? कौन-सी सही विधि अपनानी है? इत्यादि।

आदर्श उत्तरों की रचना

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के लिए आदर्श उत्तर निर्माण करने में विशेष कठिनाई नहीं होती किन्तु लघुउत्तरीय व निबन्धात्मक प्रश्नों के आदर्श उत्तरों की रचना में अधिक सावधानी की आवश्यकता होती है।
2. भाषा में अभिव्यक्ति के अनेक स्तर हो सकते हैं, हर विद्यार्थी अपने विचारों की विविधता के साथ अभिव्यक्ति करता है, अतः आदर्श उत्तरों की भाषा सहज, सरल और प्रश्नों की माँग के अनुरूप होनी चाहिए।
3. प्रश्न-पत्र निर्माण के साथ-साथ आदर्श उत्तरों की रचना करना भी महत्वपूर्ण होता है।

विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति का सतत् आकलन करने के लिए सर्वाधिक उचित तरीका है—
(a) प्रश्न पूछना (b) प्रतिक्रिया व्यक्त करना
(c) परिचर्चा (d) ये सभी

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015

उत्तर : (d)

2. शैक्षिक प्रक्रियाओं के मूल्यांकन के संदर्भ में आप किस कथन से सहमति प्रकट करेंगे?
(a) कक्षा 8 तक विद्यार्थियों को फेल न किए जाने के प्रावधान के कारण ही विद्यार्थी सीख नहीं पा रहे हैं।
(b) परीक्षा और फेल हो जाने का डर वास्तव में बच्चों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनकर काम करता है।
(c) बच्चों को पास-फेल करना वास्तव में व्यवस्थागत विफलताओं को बच्चों के सिर मढ़ना है।
(d) कक्षा 8 तक विद्यार्थियों को फेल नहीं करने के प्रावधान के कारण देश में शिक्षा का स्तर गिर रहा है।

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016

उत्तर : (c)

3. भाषा में सतत और व्यापक आकलन का उद्देश्य है -
(a) वर्तनी की अशुद्धि के बिना लिखने की क्षमता का आकलन
(b) भाषा के व्याकरण का आकलन करना
(c) भाषा के मौखिक और लिखित रूपों के प्रयोग की क्षमता का आकलन
(d) पढ़कर समझने की क्षमता का आकलन

CTET - Ist Paper (I-V) July 2013

उत्तर : (c)

4. भाषा प्रवाह तथा अभिव्यक्ति कौशल के मूल्यांकन का उपयुक्त तरीका है—
 (a) लिखित परीक्षाएँ (b) वस्तुनिष्ठ परीक्षण
 (c) मौखिक वार्तालाप (d) इनमें से कोई नहीं
Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014
 उत्तर : (c)
5. हिन्दी भाषा का मूल्यांकन करते समय आप सबसे ज्यादा किसे महत्व देगे?
 (a) सीखने की क्षमता का आकलन
 (b) काव्य-सौन्दर्य
 (c) निबंध लिखने की योग्यता
 (d) व्याकरणिक नियम
CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012
 उत्तर : (a)
6. कौन-सा प्रश्न बच्चों की भाषा-क्षमता का सही आकलन करेगा?
 (a) लड़की ने किसके दाम नहीं बताए?
 (b) लड़की टोकरी में क्या बेच रही थी?
 (c) यदि तुम आम बेचोगे तो उसके कितने दाम लोगे और क्यों?
 (d) आजकल आम का दाम कितना है?
CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014
 उत्तर : (c)
7. भाषा में सतत् और व्यापक मूल्यांकन का उद्देश्य है -
 (a) केवल बच्चों की कमियाँ जानना
 (b) केवल यह जानना कि बच्चों ने कितना सीखा
 (c) बच्चों को उत्तीर्ण-अनुत्तीर्ण श्रेणी में रखना
 (d) बच्चों द्वारा भाषा सीखने की प्रक्रिया को जानना, समझना
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012
 उत्तर : (d)
8. सतत् मूल्यांकन का एक निहितार्थ है -
 (a) बच्चों के भाषा-प्रयोग का निरन्तर अवलोकन करना
 (b) बच्चों के परीक्षा-सम्बन्धी भय को समाप्त करना
 (c) प्रतिदिन परीक्षाएँ लेना
 (d) हर महीने परीक्षाएँ लेना
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012
 उत्तर : (a)
9. आकलन -
 (a) मूलतः शिक्षक-केन्द्रित ही होता है
 (b) केवल यह बताता है कि बच्चे ने क्या नहीं सीखा
 (c) भाषा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग है
 (d) पाठ-समाप्ति पर ही किया जाता है
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012
 उत्तर : (c)
10. मौखिक भाषा के आकलन का सर्वोत्तम तरीका है-
 (a) किताब पढ़ना
 (b) अन्त्याक्षरी
 (c) प्रश्नों के तयशुदा उत्तर देना
 (d) अनुभव बाँटना व बातचीत
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012
 उत्तर : (d)
11. सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के संदर्भ में आप किस कथन से सहमत हैं?
 (a) एक कक्षा में हम जो सीखते हैं उसके सभी अंश अगली कक्षा के लिए अनिवार्य बुनियाद होते हैं।
 (b) बच्चों को किन्हीं अवधारणाओं को न सीखने के कारण फेल करके रोकना उचित ही है।
 (c) जो बच्चे पिछली कक्षा की बातें नहीं सीख पाए हैं, वे अगली कक्षा में और पिछड़ जाएंगे अतः उन्हें उसी कक्षा में रोक देना चाहिए।
 (d) जो बच्चे किसी कक्षा में सीख नहीं पाए हैं, उन्हें फेल करके रोकने से भी जरूरी नहीं कि वे सीख जाएँ।
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016
 उत्तर : (a)
12. बच्चों की भाषा क्षमता का आकलन करने की दृष्टि से निम्नलिखित में से कौन-सा प्रश्न सर्वाधिक उपयोगी एवं सार्थक है?
 (a) नीचे लिखे शब्दों को पढ़कर सुनाइए—
 जंगल ; धरती
 (b) नीचे लिखे वाक्य को पढ़कर सुनाइए -
 “मुझे कहानी सुनना अच्छा लगता है।”
 (c) नीचे दिए गए शब्दों के वचन बदलिए -
 तितली ; चूहा
 (d) फेरीवालों की आवाजें सुनिए और किसी एक का कक्षा में अभिनय करके दिखाइए
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016
 उत्तर : (d)
13. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उपयोगिता का प्रमुख कारण है—
 (a) रटाई से मुक्ति (b) पाठ्यक्रम व्याप्ति
 (c) निष्पक्ष मूल्यांकन (d) विद्यार्थियों का हित
Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016
 उत्तर : (c)
14. किसने मूल्यांकन प्रक्रिया को त्रिमुखी बताकर त्रिकोण के रूप में प्रस्तुत किया?
 (a) मौरीसन (b) हरबर्ट
 (c) ब्लूम (d) क्रेथवाल
Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016
 उत्तर : (c)
15. उच्च प्राथमिक स्तर पर हिन्दी भाषा में अभिव्यक्ति परखने के लिए आप किस प्रश्न को सर्वाधिक महत्वपूर्ण समझते हैं?
 (a) ‘लोकगीत संस्कृति के परिचायक होते हैं’ इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
 (b) ‘आँखों पर पर्दा पड़ना’ मुहावरे का वाक्य में प्रयोग कीजिए।
 (c) सेना ने पार्क को क्यों घेर लिया था?
 (d) लेखक ने ऐसा क्यों कहा कि ताजा बर्फ धोखा देने वाला होता है?
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2015
 उत्तर : (b)

16. भाषा में रचनात्मक आकलन का सर्वाधिक बेहतर उदाहरण है –
 (a) बच्चे को अपने खटूटे-मीठे अनुभव लिखने के लिए कहना
 (b) श्रुतलेख
 (c) प्रश्नों के उत्तर लिखवाना
 (d) इकाई-परीक्षा लेना
CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013
उत्तर : (a)
17. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की भाषा का आकलन करते समय—
 (a) उन्हें प्रश्न-संख्या में विशेष छूट मिलनी चाहिए
 (b) उन्हें अधिक अंक देने का प्रयास करना चाहिए
 (c) उनकी क्षमता और सीमाओं का ध्यान रखना चाहिए
 (d) उनके प्रति दया भाव रखना चाहिए
CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013
उत्तर : (c)
18. अपने विद्यार्थियों के भाषा सम्बन्धी क्रमिक विकास का आकलन करने के लिए आपकी निर्भरता मुख्य रूप से किस पर है?
 (a) पोर्टफोलियो के अवलोकन पर
 (b) मौखिक कार्य करवाने पर
 (c) गृहकार्य की उत्तर-पुस्तिकाओं के अवलोकन पर
 (d) कक्षाकार्य के अवलोकन पर
CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016
उत्तर : (a)
19. हिन्दी शिक्षण में उपलब्धि की जांच की जा सकती है—
 (a) बुद्धि परीक्षण से (b) निबंधात्मक प्रश्नों से
 (c) प्रोजेक्टिव परीक्षण से (d) उपलब्धि परीक्षण से
Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) 2012
उत्तर : (d)
20. उपलब्धि परीक्षण के सम्बन्ध में कौन कथन उपयुक्त नहीं है?
 (a) मौखिक परीक्षा में पक्षपात की आशंका रहती है
 (b) निबंधात्मक प्रश्नों के मूल्यांकन में वस्तुपरकता का अभाव रहता है
 (c) क्रियात्मक परीक्षाओं में शाब्दिक ज्ञान का महत्व नहीं होता है
 (d) वस्तुनिष्ठ परीक्षा से मौलिकता का विकास होता है
Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) 2012
उत्तर : (d)
21. भाषा में आकलन की प्रक्रिया—
 (a) सीखने-सिखाने के दौरान भी चलती है।
 (b) केवल बच्चों का निष्पादन जानने के लिए होती है।
 (c) केवल शिक्षक का निष्पादन जानने के लिए होती है।
 (d) पाठ के अंत में दिए अभ्यासों के माध्यम से होती है।
CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014
उत्तर : (a)
22. बच्चे की भाषा का आकलन करने के लिए सबसे उचित तरीका क्या है?
 (a) बच्चों के भाषा-प्रयोग का अवलोकन करना।
 (b) बच्चों से किताब पढ़वाना।
 (c) बच्चों से परियोजना-कार्य करवाना।
 (d) बच्चों की लिखित परीक्षा लेना
CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014
उत्तर : (a)
23. भाषा की कक्षा में कहानी सुनाने का मूल उद्देश्य है—
 (a) बच्चों की कल्पनाशक्ति का विकास
 (b) बच्चों में 'सुनकर दोहराने' की आदत का विकास
 (c) बच्चों को अनुशासन में रखना
 (d) बच्चों का मनोरंजन करना
CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015
उत्तर : (a)
24. भाषायी ज्ञान का मूल्यांकन होता है—
 (a) मात्र लिखित परीक्षा के माध्यम से
 (b) मात्र मौखिक परीक्षा के माध्यम से
 (c) लिखित एवं मौखिक दोनों परीक्षा के माध्यम से
 (d) उपरोक्त में से किसी माध्यम से नहीं
Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011
उत्तर : (c)
25. बच्चे की भाषायी क्षमता के आकलन का सही तरीका यह नहीं है—
 (a) बच्चे का व्यक्तिगत आकलन
 (b) बच्चे का सामूहिक आकलन
 (c) बच्चे द्वारा स्व आकलन
 (d) पेपर पेन्सिल आकलन
Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011
उत्तर : (d)
26. इनमें से प्राथमिक स्तर पर भाषा-आकलन का सर्वाधिक उचित तरीका है –
 (a) किसी पाठ की पाँच पंक्तियाँ पढ़वाना
 (b) बच्चों को चित्र-वर्णन और प्रश्न पूछने के अवसर देना
 (c) बच्चों से पत्र लिखवाना
 (d) बच्चों से प्रश्नों के उत्तर लिखवाना
CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014
उत्तर : (b)
27. उच्च प्राथमिक स्तर पर भाषा-शिक्षण का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है—
 (a) भाषा की नियमबद्ध प्रकृति को पहचानना
 (b) भाषा के आलंकारिक रूप से पहचानना
 (c) भाषा के व्याकरण को कण्ठस्थ करना
 (d) साहित्यिक विधाओं में रचना करना
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2015
उत्तर : (a)
28. गृहकार्य के बारे में कौन सा कथन उचित है?
 (a) गृहकार्य अभिभावकों को व्यस्त रखने का उत्तम साधन है
 (b) बच्चों की क्षमताओं, स्तर के अनुसार गृहकार्य दिया जाना चाहिए

- (c) गृहकार्य कक्षा में किए गए कार्य का अभ्यास-मात्र है
(d) गृहकार्य देना अति-आवश्यक है

CTET- Ist Paper (I-V) June 2011

उत्तर : (b)

29. पाठ पढ़कर बच्चों से प्रश्न बनवाने से –

- (a) इस बात का पता चलता है कि बच्चे प्रश्नवाचक शब्दों से परिचित हैं या नहीं
(b) शिक्षक को यह जानने का अवसर मिलता है कि बच्चों ने पाठ को कितनी गहराई से समझा है
(c) कक्षा-कार्य की अच्छी युक्ति पूरी होती है
(d) प्रश्न बनाने की आदत का विकास होता है

CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011

उत्तर : (b)

30. समावेशी कक्षा में बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करने में भाषा-शिक्षक के रूप में आपकी मुख्य जिम्मेदारी नहीं है–

- (a) बच्चों की भाषा सम्बन्धी क्षमताओं की पहचान करना
(b) बच्चों की विभिन्न प्रकार की दृश्य-श्रव्य सामग्री उपलब्ध कराना
(c) बच्चों का आकलन करते समय अति उदार बनना
(d) विभिन्न आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए उपलब्ध संसाधनों की खोज करना

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015

उत्तर : (c)

31. अवलोकन को आकलन का भाग तभी कहा जा सकता है जब अवलोकन–

- (a) प्रतिदिन प्रत्येक बच्चे का किया जा रहा हो
(b) लड़के-लड़कियों का अलग-अलग किया जा रहा हो
(c) अनिवार्यतः औपचारिक रूप से किया जा रहा हो
(d) नियमित रूप से किया जा रहा हो

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016

उत्तर : (a)

32. प्राथमिक स्तर पर भाषा का आकलन करने में सर्वाधिक सहायक है–

- (a) पोर्टफोलियो (b) नाटक का मंचन
(c) वीडियोग्राफी (d) लिखित परीक्षा

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016

उत्तर : (c)

33. “यदि तुम्हें डलिया भरकर आम दे दिए जाएं तो तुम क्या करोगी?” इस प्रश्न का उद्देश्य है–

- (a) बच्चों के अनुभव और चिंतन को स्थान देना
(b) बच्चों की मौखिक परीक्षा लेना
(c) बच्चों को गणित की ओर प्रवृत्त करना
(d) बच्चों को नए शब्दों से परिचित कराना

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2016

उत्तर : (a)

34. हिन्दी भाषा में सतत् और व्यापक आकलन का उद्देश्य यह जानना है कि –

- (a) बच्चे क्या नहीं जानते
(b) बच्चे किस तरह की त्रुटियाँ करते हैं

(c) बच्चे कैसे सीखते हैं

(d) बच्चों को अगली कक्षा में प्रोत्त किया जाए अथवा नहीं

Bihar TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

उत्तर : (c)

35. अधोलिखित शब्द युग्म का सही अर्थ विकल्प चुनिए अनुलम्ब-अनुलग्न–

- (a) ऊर्ध्वाकार-समय के अनुसार
(b) ऊपरी-जुड़ा हुआ
(c) अनिश्चित-किसी के साथ जुड़ा हुआ
(d) लम्बाई के अनुसार-शुभकाल

Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (c)

36. सतत् आकलन का उद्देश्य यह जानना है कि–

- (a) बच्चे कैसे सीखते हैं? (b) बच्चे क्यों नहीं सीखते?
(c) बच्चों ने कितना सीखा है?(d) बच्चों ने क्या सीखा है?

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2015

उत्तर : (a)

37. उच्च प्राथमिक स्तर पर बच्चों की हिन्दी भाषा की क्षमता के आकलन में प्रकार्यपरक पक्ष पर बल देने का आशय है–

- (a) भाषा-प्रयोग पर बल देना
(b) भाषा के कार्यों को बढ़ावा देना
(c) भाषा-प्रयोग का पक्ष बताना
(d) भाषा के कार्यों की सूची बनाना

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015

उत्तर : (a)

38. पहली कक्षा में प्रवेश लेने से पहले आमतौर पर बच्चे–

- (a) पठन-लेखन में दक्ष होते हैं
(b) स्व-अभिव्यक्ति जानते हैं
(c) भाषा के व्याकरणिक नियम जानते हैं
(d) तुतलाकर बोलते हैं

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015

उत्तर : (b)

39. बच्चों की मौखिक भाषा का सतत आकलन करने का सबसे बेहतर तरीका है –

- (a) शब्द पढ़वाना
(b) प्रश्नों के उत्तर पूछना
(c) विभिन्न संदर्भों में बातचीत
(d) सुने हुए को दोहराने के लिए कहना

CTET - Ist Paper (I-V) July 2013

उत्तर : (c)

40. लिखित कार्य की जाँच में बच्चों की सहायता लेने से –

- (a) केवल पठन-कौशल का अभ्यास होता है
(b) बच्चे ज्यादा गलतियाँ ढूँढ़ना सीख जाते हैं

- (c) बच्चों को दूसरों के हस्तलिखित सामग्री को पढ़ने का अवसर और अवलोकन-क्षमता के विकास का अवसर मिलता है
- (d) बच्चे दूसरों के विचारों से परिचित होते हैं
- CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011**
- उत्तर : (c)
41. भाषा में आकलन करने के बाद महत्वपूर्ण सोपान होना चाहिए—
- (a) आकलन से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर बच्चों के अभिभावकों से विचार-विमर्श करना
- (b) आँकड़ों को सहेज कर रखना
- (c) आँकड़ों की तत्काल नष्ट करना
- (d) आँकड़ों का पुनः-पुनः परीक्षण करना
- CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013**
- उत्तर : (a)
42. निम्नलिखित में से कौन-सा बच्चों का भाषिक क्षमता के आकलन का सबसे उचित तरीका है?
- (a) 'बादल', 'आसमान', 'चिड़िया', 'बच्चे' आदि संज्ञा शब्दों का प्रयोग करते हुए एक कहानी लिखिए
- (b) संज्ञा की परिभाषा को पूरा कीजिए
- (c) संज्ञा को परिभाषित कीजिए
- (d) संज्ञा शब्दों के दो उदाहरण दीजिए
- CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012**
- उत्तर : (a)
43. भाषा के सतत् और व्यापक मूल्यांकन का उद्देश्य है—
- (a) बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को समझकर उपयुक्त शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया अपनाना
- (b) अगली कक्षा में प्रोत्र करने हेतु साक्ष्य जुटाना
- (c) बच्चों की त्रुटियों को पहचान करना
- (d) मूल्यांकन की परम्परा का निर्वाह करना
- CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012**
- उत्तर : (a)
44. हिन्दी भाषा का आकलन करते समय 'पोर्टफोलियो' बच्चों के बारे में यह बताता है कि —
- (a) उनकी प्रगति में माता-पिता की भूमिका कैसी है?
- (b) उनकी प्रगति में शिक्षकों की भूमिका कितनी है?
- (c) वे क्या जानते हैं?
- (d) क्रमशः उनकी प्रगति किस प्रकार हो रही है?
- CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014**
- उत्तर : (d)
45. कक्षा आठ के बच्चों का सतत् आकलन करने में सबसे अधिक महत्वपूर्ण है—
- (a) लिखित परीक्षा (b) भाषा प्रयोग की क्षमता
- (c) मौखिक परीक्षा (d) व्याकरण की जानकारी
- CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016**
- उत्तर : (b)
46. बच्चों की भाषा के आकलन का सर्वाधिक प्रभावी तरीका है -
- (a) लिखित परीक्षा
- (b) प्रश्नों के उत्तर देना
- (c) प्रश्न पूछना और पढ़ी गई सामग्री पर प्रतिक्रिया व्यक्त करना।
- (d) श्रुतलेख
- CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012**
- उत्तर : (c)
47. एक प्राथमिक शिक्षक के रूप में आप सतत और व्यापक आकलन करते समय किसे सर्वोपरि मानते हैं?
- (a) कठिन शब्दों का श्रुतलेखन
- (b) लिखित प्रश्न-पत्र
- (c) पाठ से देखकर सुलेख लिखना
- (d) बच्चों द्वारा विभिन्न संदर्भों में भाषा-प्रयोग की क्षमता
- CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015**
- उत्तर : (d)
48. प्राथमिक स्तर पर बच्चों की पठन-क्षमता का आकलन करने में किस प्रकार की सामग्री सर्वाधिक महत्वपूर्ण है?
- (a) आतंकवाद पर आधारित निबन्ध
- (b) बाल साहित्य की कोई संवादात्मक कहानी
- (c) पाठ्य-पुस्तक
- (d) औपचारिक पत्र
- CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015**
- उत्तर : (b)
49. उच्च प्राथमिक स्तर पर भाषा की पाठ्य-पुस्तक में विविध प्रकार की साहित्यिक रचनाओं के समावेश का मुख्य उद्देश्य यह है—
- (a) बच्चों को सभी प्रकार की साहित्यिक विधाओं में पारंगत करना
- (b) विभिन्न प्रकार की साहित्यिक विधाओं की भाषायी संरचनाओं से परिचित होने का अवसर देना
- (c) विभिन्न साहित्यिक विधाओं के प्रसिद्ध रचनाकारों से परिचित कराना
- (d) पाठ्य-पुस्तक निर्माण की परम्परा का निर्वाह करना
- CTET - IInd Paper (VI-VIII) July 2013**
- उत्तर : (b)
50. श्यामला केवल उन्हीं प्रश्नों के उत्तर लिखती है जो उसने याद किए होते हैं। इसका कारण हो सकता है—
- (a) उसकी कक्षा में सब ऐसा ही करते हैं
- (b) उसकी विचार-प्रक्रिया अव्यवस्थित है
- (c) उसकी स्मरण-शक्ति बहुत तेज है
- (d) उसमें कल्पनाशीलता जैसे गुण का अभाव है
- CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016**
- उत्तर : (d)
51. वर्तमान परीक्षा प्रणाली में दोष है—
- (a) यह विद्यार्थी द्वारा अर्जित योग्यता का सही मूल्यांकन नहीं करती है
- (b) इसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के अध्ययन की आवश्यकता नहीं रहती है
- (c) इसमें अंकन की कोई सुनिश्चित मापदण्ड नहीं है
- (d) इनमें से सभी
- Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) 2012**
- उत्तर : (d)

52. सुलेखा ने पाठ को पढ़ते हुए 'जीवन' को 'जिन्दगी' पढ़ा। यह इस ओर संकेत करता है कि—
 (a) उसे अक्षरों की पहचान में भ्रम हो जाता है
 (b) उसे केवल पठन-अभ्यास की बहुत आवश्यकता है
 (c) सुलेखा ध्यान से नहीं पढ़ती
 (d) वह अक्षर-पहचान की बजाय अर्थ को समझते हुए पढ़ रही है।

CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011

उत्तर : (d)

53. इनमें से कौन-सा प्राथमिक स्तर पर हिन्दी भाषा शिक्षण का उद्देश्य नहीं है?
 (a) सन्दर्भ के अनुसार अनुमान लगाकर पढ़ने का प्रयास करना
 (b) चित्रकारी को स्वयं की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाना
 (c) बच्चों की घर की भाषा और स्कूल की भाषा में सम्बन्ध बनाते हुए उसे विस्तार देना
 (d) सुनी गई बातों को ज्यों का त्यों दोहराना

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (d)

54. भाषा.....और.....का एक उत्तम साधन है।

- (a) सुनने, बोलने, सोचने
 (b) पढ़ने, लिखने, सम्प्रेषण
 (c) सोचने, महसूस करने, चीजों से जुड़ने
 (d) पढ़ने, लिखने, समझने

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (c)

55. भाषा की कक्षा में भाषायी खेलों का आयोजन मुख्यतः—

- (a) भाषा सीखने की प्रक्रिया में स्वाभाविकता लाता है
 (b) आकलन का काम करता है
 (c) रोचकता और जोश लाता है
 (d) अध्यापक के काम को सरल बनाता है

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (c)

56. प्राथमिक स्तर की कक्षा में भिन्न-भिन्न प्रान्तों के अलग-अलग भाषा बोलने वाले बच्चों का नामांकन हुआ है। ऐसी स्थिति में भाषा की कक्षा बच्चों के भाषायी विकास के सन्दर्भ में—

- (a) जटिल चुनौती के रूप में सामने आती है
 (b) अवरोध ही प्रस्तुत करती है
 (c) बहुत बड़ी समस्या बन जाती है
 (d) अनमोल संसाधन के रूप में कार्य करती है

CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (a)

57. भाषा शिक्षण का बहुभाषित सन्दर्भ—

- (a) एक से अधिक भाषाएँ सीखने की ओर संकेत करता है
 (b) एक से अधिक भाषाओं में शिक्षण-सामग्री है
 (c) एक समस्या है
 (d) बच्चों द्वारा एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग करने की ओर संकेत करता है

Bihar TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (d)

58. इन्सान और जानवर की भाषा में फर्क है—

- (a) ध्वनि का फर्क है
 (b) सुरों का फर्क है
 (c) इन्सानों की भाषा को सांकेतिक ध्वनि चिह्नों (संकेतों) के माध्यम से निर्धारित किया गया है, जबकि जानवरों की भाषा को नहीं
 (d) उपरोक्त में से तीनों सही हैं

Chhattisgarh TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (c)

59. किसी भी भाषा पर अधिकार प्राप्त करने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण है—

- (a) शब्दों के अर्थ जानना
 (b) उस भाषा की वाक्य-संरचना जानना
 (c) उस भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करना
 (d) उस भाषा का व्याकरण जानना

CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015

उत्तर : (c)

60. भाषा कौशलों में सबसे पहले किस कौशल का विकास करना चाहिए?

- (a) लेखन
 (b) वाचन
 (c) श्रवण
 (d) उच्चारण

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (c)

61. वाक्य शिक्षण के लिए यह आवश्यक है कि छात्रों को वाक्य गठन की सामान्य बातों से भलीभाँति परिचित करा दिया जाए। अर्थ अथवा भाव द्योतन की दृष्टि से वाक्य के कितने प्रकार होते हैं?

- (a) एक
 (b) दो
 (c) पाँच
 (d) आठ

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (d)

62. घर की भाषा और विद्यालय में पढ़ाई जाने वाली भाषा—

- (a) सदैव टकराहट से गुजरती है।
 (b) सदैव समान होती है।
 (c) समान हो सकती है।
 (d) सदैव अलग होती है

CTET - Ist Paper (I-V) July 2013

उत्तर : (c)

63. “हर व्यक्ति को मैंने ही सच्चाई दिखाई।” वाक्य पर चर्चा करने का उद्देश्य है—

- (a) बच्चों को संज्ञा के प्रयोग का ज्ञान कराना
 (b) बच्चों को सर्वनाम के प्रयोग का ज्ञान कराना
 (c) बच्चों को क्रिया के प्रयोग का ज्ञान कराना
 (d) बच्चों को भाषा की नियमबद्ध प्रकृति की पहचान और उसका विश्लेषण करना सिखाना

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014

उत्तर : (d)

64. कहानी सुनाने से -

- (a) बच्चे प्रसन्न होते हैं।
- (b) बच्चे कक्षा में एकाग्रचित होकर शांत बैठते हैं।
- (c) बच्चे अनुशासित रहते हैं।
- (d) बच्चों की कल्पना-शक्ति व चिंतन-शक्ति का विकास होता है।

CTET- Ist Paper (I-V) June 2011

उत्तर : (d)

65. बच्चों का भाषायी विकास सर्वाधिक रूप में निर्भर करता है -

- (a) आकलन की औपचारिकता पर
- (b) संचार-माध्यमों पर

- (c) पाठ्य-पुस्तक पर
- (d) समृद्ध भाषा-परिवेश पर

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (d)

66. बच्चों में भाषा प्रयोग की दक्षता विकसित करने के लिए आवश्यक है-

- (a) उन्हें सुनने और बोलने की पूरी आजादी हो
- (b) उन्हें कविताएँ याद हों
- (c) उन्हें मुहावरे याद हों
- (d) वे किसी वक्ता के साथ रहते हों

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (a)

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौन सा लक्ष्य स्कूली शिक्षा में संख्यात्मकता से जुड़ा है?

- (a) जिम्मेदार वयस्क विकसित करना
- (b) वयस्कों को रोजगार सक्षम बनाना
- (c) बच्चे के आंतरिक संसाधनों का विकास करना
- (d) व्यस्कों को सामाजिक बनाना

2. यह सुनिश्चित करने के लिए कि उच्च प्राथमिक के छात्र कला शिक्षा में मानकों और क्षमताओं को प्राप्त करें, उनके लिए _____ कला के पर्याप्त अवसर उपलब्ध होने चाहिए।

- (a) विश्लेषण
- (b) निरीक्षण
- (c) मूल्यांकन
- (d) सृजन

3. _____ दर्शन की एक विचारधारा है जो सामूहिक प्रदर्शन की सराहना और पुरस्कृत करती है।

- (a) सार्वभौमिकतावाद
- (b) समुदायवाद
- (c) व्यक्तिवाद
- (d) विशिष्टवाद

4. कार्लटन वाशबर्न ने किस पद्धति का सूत्रपात किया?

- (a) विनेटका योजना
- (b) डेकाली पद्धति
- (c) प्रोजेक्ट पद्धति
- (d) खेल विधि

5. हिन्दी में मूल्यांकन हेतु निम्नलिखित में से किस प्रकार के प्रश्न होना उत्तम है?

- (a) केवल निबन्धात्मक
- (b) केवल लघु उत्तरीय
- (c) केवल वस्तुनिष्ठ
- (d) तीनों का समन्वित रूप

उत्तर : (d)

6. सूक्ष्म-शिक्षण चक्र का प्रथम पद होता है-

- (a) प्रतिपुष्टि
- (b) शिक्षण
- (c) योजना बनाना
- (d) प्रस्तावना

7. शिक्षा में फ़ोबेल का महत्त्वपूर्ण योगदान था.....का विकास।

- (a) व्यावसायिक स्कूल
- (b) पब्लिक स्कूल
- (c) किण्डर गार्टन
- (d) लेटिन स्कूल

8. शिक्षण सबसे अधिक प्रभावी होता है जब-

- (a) विद्यार्थी विषय में रुचि लेते हैं।
- (b) शिक्षक को विषय का गहन ज्ञान हो।

- (c) विद्यार्थियों को उनके मानसिक स्तर के अनुरूप शिक्षा दी जाए।
- (d) एक ही विषय-वस्तु को बार-बार दोहराया जाए।

9. कक्षा-कक्ष में शिक्षक प्रयास करता है

- (a) छात्रों को अनुभव प्रदान करने का
- (b) छात्रों को सहायक अधिगम वातावरण देने का
- (c) छात्रों को चिन्तन का अवसर देने का
- (d) उपरोक्त सभी

10. फ़ोबेल ने निम्नलिखित में से किस खेल पर प्रमुख बल दिया?

- (a) गेंद का खेल
- (b) ब्लॉक का खेल
- (c) आकृतियों का खेल
- (d) उपर्युक्त सभी

11. शिक्षक को ज्ञान होना चाहिए -

- (a) अध्यापन विषय का
- (b) बाल मनोविज्ञान का
- (c) शिक्षा संहिता का
- (d) अध्यापन विधियों का

12. प्रोजेक्ट शिक्षण विधि किससे सम्बन्धित है?

- (a) फ़ोबेल
- (b) जॉन डीवी
- (c) आर्मस्ट्रॉंग
- (d) मैकड्यूगल

13. वह विधियाँ जिनके प्रयोग में विद्यार्थियों की स्व पहल व प्रयास शामिल हैं, निम्न में से किसका उदाहरण हैं?

- (a) निगमनात्मक विधि
- (b) अधिगमकर्ता केंद्रित विधि
- (c) परम्परागत विधि
- (d) अन्तर्वैयक्तिक बुद्धि

14. विद्यालयी क्षेत्र में रचनात्मक निर्धारकों को जानने के लिए इनमें से कौन-सा उपागम नहीं है?

- (a) वार्तालाप कौशल
- (b) बहुविकल्पीय प्रश्न
- (c) परियोजना कार्य
- (d) मौखिक प्रश्न

15. निम्नलिखित में से किस उपकरण (ओं) का इस्तेमाल प्रायः योगात्मक मूल्यांकन में किया जाता है?

- (a) अध्यापक अवलोकन
- (b) परीक्षण
- (c) असाइनमेंट
- (d) उपरोक्त सभी

16. एक प्रभावी शिक्षार्थी के गुण क्या हैं?

- (a) स्व: निर्देशित
- (b) जिज्ञासु और मुक्त विचारधारा
- (c) स्व: जागरूकता
- (d) उपरोक्त सभी

17. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन आकलन और मूल्यांकन के बारे में सत्य है?
- (a) एक शिक्षक का दस से 30 प्रतिशत समय आकलन और मूल्यांकन में व्यतीत होता है
(b) मानकीकृत परीक्षण का प्रयोग छात्र की शैक्षिक प्रगति का निरीक्षण करने और मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है
(c) कक्षा शिक्षक मानकीकृत परीक्षण के विकास और प्रशासन के प्रति जिम्मेदार है
(d) उपरोक्त सभी
18. एक परीक्षण तभी मान्य कहलाता है जब यह –
- (a) निष्पक्ष और शिक्षक पूर्वाग्रह से मुक्त होता है
(b) जिसे मापने का दावा करता है, उसे मापता है
(c) समय के साथ, अनुरूप परिणाम देता है
(d) सांस्कृतिक पूर्वाग्रह के खिलाफ बचाव करता है
19. योगात्मक मूल्यांकन को किस रूप में परिभाषित किया गया है?
- (a) कार्यक्रम के प्रभाव का मूल्यांकन करने या निर्देश के बाद छात्र के प्रदर्शन को मोल करने की प्रक्रिया के रूप में
(b) छात्रों को यह बताना कि उन्हें कैसे प्रदर्शन करना है
(c) एक प्रभावी तरीके से पढ़ाने की प्रक्रिया के रूप में
(d) इनमें से कोई नहीं
20. शिक्षा जनरल बोर्ड के लिए जिम्मेदार है—
- (a) अपने प्रभाव के हर स्कूल में एक एससीसी की स्थापना करने
(b) सभी एससीसी के लिए अभिविन्यास, प्रशिक्षण, विकास और नेटवर्किंग के अवसर प्रदान करने
(c) स्कूली शिक्षा में माता-पिता और समुदाय की भागीदारी प्रदान करने
(d) दोनों (a) और (b)
21. निम्नलिखित में से कौन-सा वस्तुनिष्ठ प्रश्न है?
- (a) मुक्त उत्तर वाला प्रश्न (b) सत्य या असत्य
(c) निबंधात्मक प्रश्न (d) लघुत्तरात्मक प्रश्न
22. निम्न कक्षाओं में शिक्षण की खेल-विधि पद्धति आधारित है?
- (a) शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम के सिद्धान्त पर
(b) शिक्षण पद्धति के सिद्धान्तों पर
(c) विकास एवं वृद्धि के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर
(d) शिक्षण के समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों पर
23. मिनाक्षी अपने वर्ग को मैदानी पर्यटन पर ले जाती है और वापस आने के बाद वह अपने विद्यार्थियों से चर्चा करती है। इसका सूचितार्थ होता है—
- (a) शिक्षण का मूल्यांकन
(b) शिक्षण के लिए मूल्यांकन
(c) मूल्यांकन के लिए शिक्षण
(d) मूल्यांकन का शिक्षण
24. रचनात्मक मूल्यांकन के लिए निम्न में से कौन-सा सही तरीका नहीं है?
- (a) कार्य देना (b) मौखिक प्रश्न
(c) सत्र परीक्षा (d) प्रश्नोत्तरी और खेल
25. शिक्षार्थी के 'स्व-विनियमन' का तात्पर्य है—
- (a) अपना अभिगम स्वयं मानीटर करने की उसकी योग्यता
(b) छात्र व्यवहार हेतु विनियम बनाना
(c) छात्र निकाय द्वारा बनाए गए नियम व विनियम
(d) स्व - अनुशासन एवं नियंत्रण
26. गठनात्मक आकलन हेतु निम्नलिखित में से कौन-सा साधन उचित नहीं है?
- (a) दत्त कार्य (b) मौखिक प्रश्न
(c) सावधिक जाँच परीक्षा (d) प्रश्नमंच एवं खेल
27. मोहन खिलौनों के घटकों के अन्वेषण के लिए उन्हें तोड़कर अलग-अलग कर देता है। आप क्या करेंगे?
- (a) मोहन को कभी खिलौनों से नहीं खेलने देंगे।
(b) सदैव कड़ी नजर रखेंगे
(c) उसके स्वभाव को प्रोत्साहित करते हुए उसकी ऊर्जा को सही दिशा प्रदान करेंगे
(d) उसे समझाएँगे कि खिलौने नहीं तोड़ने चाहिए
28. व्यवहार का 'क्रियात्मक पहलू' आता है।
- (a) अधिगम के मनोवैज्ञानिक क्षेत्र के अंतर्गत
(b) अधिगम के संज्ञानात्मक क्षेत्र के अंतर्गत
(c) अधिगम के प्रभावशील क्षेत्र के अंतर्गत
(d) इनमें से किसी के अंतर्गत नहीं
29. प्रायः शिक्षार्थियों की त्रुटियाँ की ओर संकेत करती है—
- (a) यांत्रिक अभ्यास की आवश्यकता
(b) सीखने की अनुपस्थिति
(c) शिक्षार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर
(d) वे कैसे सीखते हैं
30. समस्या समाधान विधि के जन्मदाता है—
- (a) डी.वी. जॉन (b) कार्ल मार्क्स
(c) विलियम एडम (d) सुकरात एवं सेन्ट थॉमस

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (b) | 2. (d) | 3. (b) | 4. (a) | 5. (d) | 6. (c) | 7. (c) | 8. (c) | 9. (d) | 10. (a) |
| 11. (b) | 12. (b) | 13. (b) | 14. (b) | 15. (b) | 16. (d) | 17. (a) | 18. (b) | 19. (a) | 20. (d) |
| 21. (b) | 22. (c) | 23. (a) | 24. (c) | 25. (a) | 26. (c) | 27. (c) | 28. (b) | 29. (a) | 30. (a) |

सहायक सामग्री-

भाषा शिक्षण के समय कुछ कठिन शब्दों का स्थलों का स्पष्टीकरण करने के लिए मौखिक उदाहरणों की सहायता ली जाती है। मौखिक रूप से शब्द चित्र प्रस्तुत करने वाले साधनों को मौखिक उदाहरण कहा जाता है। जिन सामग्रियों के प्रयोग द्वारा सुनकर मन में शब्द चित्र का निर्माण करता है और दुरूह स्थल को समझता है, उन उपकरणों को श्रव्य उपकरण कहा जाता है।

कुछ साधन दृश्य भी होते हैं। इन साधनों को देखकर शब्द, अर्थ या भाव को समझा जाता है। श्रव्य उपकरणों में श्रवणोद्भूत का प्रयोग है तो दृश्य उपकरणों को साक्षात् आँखों से देखा जाता है। कुछ उपकरण ऐसे बहुत कम हैं। श्याम पट्ट, चार्ट, पोस्टर आदि दृश्य उपकरण हैं। रेडियो, ग्रामोफोन आदि श्रव्य उपकरण हैं। टेलीविजन अभिनय आदि कुछ श्रव्य-दृश्य दोनों हैं। लेकिन 'श्रव्य-दृश्य उपकरण' नाम व्यापक है और केवल श्रव्य या दृश्य को भी सामान्यतः श्रव्य-दृश्य उपकरण कह दिया जाता है।

सहायक सामग्री का महत्त्व-

- ◆ यह अध्यापक का समय और ऊर्जा दोनों को कम व्यय करती है।
- ◆ इस प्रकार का शिक्षण लम्बे समय तक बच्चों को याद रहता है।
- ◆ मौखिक शिक्षण की अपेक्षा इस प्रकार का शिक्षण रोचक एवं बोधागम्य होता है।
- ◆ बालक जीव और निर्जीव वस्तुओं में आसानी से तुलना कर पाते हैं।
- ◆ इससे बालक विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। और अनुसन्धान व परियोजना में बढ़कर भाग लेते हैं।
- ◆ बालकों को वस्तुओं को प्रत्यक्ष रूप से देखने छूने, महसूस करने का अवसर मिलता है।
- ◆ उच्चारण सम्बन्धी कठिनाईयों को दूर करता है।
- ◆ शिक्षण कार्य रुचिकर होने के कारण बालक अध्ययन करने में रुचि लेते हैं।

सहायक सामग्री के प्रयोग के उद्देश्य-

- ◆ यह विधि बालकों को क्रियाशीलता प्रदान करती है।
- ◆ यह विधि अधिगम क्षमता में सुधार करती है।
- ◆ इस विधि से बालक अध्ययन में तत्पर रहता है।
- ◆ तीव्र एवं मन्द बुद्धि बालकों को उनकी आवश्यकतानुसार शिक्षा प्रदान करता है।
- ◆ बालकों में पाठ के प्रति जाग्रति उत्पन्न करती है।

- ◆ जटिल प्रश्नों को सरलता पूर्वक बालकों को समझने में मदद करती है।
- ◆ अभिरुचियों पर आशानुकूल प्रभाव पड़ता है।
- ◆ इस विधि के द्वारा बालकों को निरीक्षण शक्ति का विकास करने में सहायता मिलती है।

सहायक सामग्री के कार्य-

- ◆ सहायक सामग्री बालकों के लिए प्रेरणा का कार्य करती है। जो बालक सीख जाते हैं वे कुछ नया करने के लिए प्रेरित रहते हैं।
- ◆ सहायक सामग्री के अध्ययन के पश्चात बालक विभिन्न प्रकार की क्रियाओं में संलग्न रहने का अवसर खोजने लगते हैं और जटिल कार्य को सरलता से करने में निपुण हो जाते हैं।
- ◆ सहायक सामग्री के अध्ययन के बाद बालकों में उत्पन्न शंकाओं पर कोई सवाल नहीं रहता है।
- ◆ देखकर और सुनकर जो अध्ययन किया जाता है उसका प्रभाव लम्बे समय तक रहता है अतः अनुभवजन्य प्रणाली कह सकते हैं।
- ◆ बार-बार एक ही चीज को सुनने से शब्दकोष में वृद्धि होने लगती है।
- ◆ इन सामग्रियों से शिक्षण कौशल में भी सहायता मिलती है कम समय में अधिक पाठ्य ज्ञान प्रदान किया जाता है।

सामग्री प्रयोग करते समय ध्यान देने योग्य बिन्दु-

- भाषा की शिक्षा में प्रश्न पूछने के निम्नलिखित कारण हो सकता हैं-
1. इस बात का परिचय प्राप्त करना कि विद्यार्थियों का पूर्व-ज्ञान क्या है? पूर्व-ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान दिया जाता है।
 2. प्रश्नों के द्वारा यह देखा जाता है कि विद्यार्थी पाठ को समझ भी रहे हैं या नहीं।
 3. प्रश्नों के द्वारा हम इस बात की जाँच करते हैं कि बालक अर्जित ज्ञान को कहाँ तक अभिव्यक्त कर सकते हैं।
 4. इनके द्वारा बालकों की कल्पनाओं तथा विचारों को उत्तेजित किया जाता है।
 5. प्रश्नों के द्वारा विद्यार्थियों की कठिनाइयों और शंकाओं का ज्ञान हो जाता है।
 6. प्रश्नों के द्वारा पठित अंश की आवृत्ति की जा सकती है, ताकि अर्जित ज्ञान को बालकों के मन में स्थिर किया जा सके।

शिक्षक एवं सहायक शिक्षण सामग्री-

भाषा की शिक्षा में 'प्रश्न' एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। प्रश्नों के द्वारा ही अध्यापक विद्यार्थियों के सम्पर्क में आता है। सैलमैन के मतानुसार जो व्यक्ति ठीक ढंग से प्रश्न करना

नहीं जानता, वह कभी भी अच्छा अध्यापक नहीं हो सकता। रेमण्ट के विचार में प्रत्येक अध्यापक की यही सबसे बड़ी आकांक्षा रहती है कि प्रश्न करने की उत्तम शैली का विकास किया जाये। एक और शिक्षाशास्त्री का कथन है कि जो अध्यापक 'क्या', 'क्यों', 'कैसे', 'कौन' तथा 'कहाँ' - इन छः सहयोगियों का उत्तम सहयोग प्राप्त करता है वही अच्छा अध्यापक है।

सहायक सामग्री के प्रयोग में सावधानी-

प्रश्नों करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखा जाये-

- प्रश्न निश्चित होने चाहिए।
- प्रश्न प्रसंग के अनुसार होने चाहिए।
- प्रश्न न बहुत सरल हों और न बहुत कठिन।
- प्रश्नों का उत्तर उनमें ही निहित नहीं होना चाहिए।
- प्रश्न बहुत लम्बे न हों।
- प्रश्नों को दुहराया न जाये।

शिक्षण सामग्री के प्रकार-

भाषा की शिक्षा प्रभावशाली बनाने के लिए, अनेक सहायक साधनों का प्रयोग किया जाता है। इन साधनों को हम तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं।

- (1) दृश्य।
- (2) श्रव्य साधन।
- (3) दृश्य और श्रव्य साधन।

मौखिक साधनों में मुख्य रूप से प्रश्नोत्तर आते हैं और दृश्य - श्रव्य साधनों में श्यामपट, फ्लैट बोर्ड, चित्र, चित्र-दर्शक, चलचित्र, नभवाणी, दूरदर्शक, सीतावाद्य तथा ध्वनि-लेख आदि को लिया जा सकता है।

भाषा शिक्षण में दृश्य-श्रव्य उपकरणों की आवश्यकता अब अध्यापक को शिक्षा-कार्य में सहायता देने के लिए विज्ञान ने अनेक सहायक साधनों को उपलब्ध कर दिया है। इन सहायक साधनों में वे सब साधन, प्रणालियाँ तथा उपकरण आ जायेंगे, जिनकी सहायता से अध्यापक बालकों की नेत्र और कर्ण-इन्द्रियों को प्रभावित करता है। ऐसा कहा जाता है कि आज जो भिन्न-भिन्न व्यक्ति एक-दूसरे को परस्पर नहीं समझते, उनके दो प्रमुख कारण हैं-

- वे दूसरे पक्ष की बात को नहीं सुनते।
 - वक्ता द्वारा कहे हुए शब्दों का भिन्न अर्थ सुनते।
- सहायक साधनों द्वारा हम प्रारम्भ से बालकों को इस बात का प्रशिक्षण देते हैं कि वक्ता द्वारा कहे शब्दों को ठीक प्रकार से सुनें और उसका ठीक-ठीक अर्थ लगायें। ऐसा होने पर वे ज्ञान को ठीक प्रकार से ग्रहण करेंगे। इस दृष्टि से देखा जाये तो सहायक साधन अध्यापक की इस बात में सहायता करते हैं कि वह अपना कार्य अधिक कुशलता से कर सके।

प्रमुख दृश्य - श्रव्य सामग्री-

- ◆ चल चित्र अथवा सिनेमा
- ◆ समाचार संवेदी फिल्म
- ◆ टेली विजन
- ◆ नाटक

प्रमुख श्रव्य सामग्री

आकाशवाणी (रेडियो)-

बी.बी.सी. (British Broadcasting Corporation) के अंग्रेजी के एक प्रवक्ता के अनुसार, भाषा की शिक्षा में नभवाणी की निम्नलिखित चार विशेषताएँ हैं-

- नभवाणी, उच्चरित भाषा का शुद्ध रूप हमारे सामने रखती है और यही भाषा-शिक्षण का प्रमुख आधार है।
- उच्चरित भाषा का शुद्ध रूप प्रस्तुत करने के लिए, नभवाणी पर अच्छे से अच्छे वक्ताओं की सेवाएँ प्राप्त की जा सकती हैं?
- नभवाणी सब स्थानों पर तथा सभी प्रकार के श्रोतों तक पहुँच सकती है। अध्यापकों तथा कक्षा-गृहों की कोई समस्या नहीं रहती।
- जितने परिमाण में नभवाणी के द्वारा प्रसारित कार्यक्रम को लोग सुन सकते हैं, उस हिसाब से यह महँगा सौदा नहीं। जन-शिक्षण का कार्य नभवाणी द्वारा ही सुगमता से हो सकता है।

ध्वनि-लेख- (टेप-रिकार्डर)-

ध्वनि-लेख की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि जैसे-जैसे भाषण अथवा वार्तालाप चल रहा होता है वैसे-वैसे उनकी ध्वनि टेप में अंकित होती जाती है। बाद में जब चाहे वह भाषण अथवा वार्ता सुनी जा सकती है। इस प्रकार भाषा-शिक्षण में सीतावाद्य के समान, ध्वनि-लेख से भी सहायता ली जा सकती है।

सीतावाद्य (ग्रामोफोन)-

शिक्षा के क्षेत्र में जिन श्रव्य- उपकरणों का प्रयोग किया जा रहा है, उनमें सबसे सस्ता उपकरण 'सीतावाद्य' है। भाषा-शिक्षण में सीतावाद्य का एक विशेष स्थान है। कविता और गद्य, नाटकीय, पाठ, बड़े आदमियों के भाषण, शुद्ध उच्चारण आदि सीतावाद्य द्वारा सीखे जा सकते हैं।

सीतावाद्य की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

- अध्यापक जब चाहे, रिकार्ड बजा सकता है।
- आवश्यकता पड़ने पर सीतावाद्य रिकार्ड एक से अधिक बार भी बजाया जा सकता है।

विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

- भाषा की पाठ्य-पुस्तक में एक पाठ एकांकी के रूप में है, आप -

- एकांकी में आए पात्रों के संवाद याद करवाएँगी
- शिक्षार्थियों से एकांकी पढ़वाने के बाद उसका मंचन करवाएँगी
- एकांकी के मुख्य संवाद लिखवाएँगी
- हाव-भाव के साथ एकांकी पढ़कर सुनाएँगी

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (d)

- भाषा की पाठ्य-पुस्तकें -

- साध्य है
- भाषा सीखने का एकमात्र संसाधन हैं
- अभ्यासपरक ही होनी चाहिए
- साधन है

CTET - Ist Paper (I-V) Nov. 2012

उत्तर : (d)

3. पाठ्य-पुस्तक का नया पाठ आरंभ करने से पहले अध्यापक के लिए आवश्यक है कि वह—
 (a) पाठ से मिलने वाली सीख के बारे में बताए
 (b) पाठ के मूल भाव पर बातचीत करें
 (c) पाठ के कठिन शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखकर उनका अर्थ बताए
 (d) पाठ के रचनाकार का परिचय लिखवाए
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016
 उत्तर : (b)
4. पाठ के अन्त में अभ्यास और गतिविधियों का उद्देश्य --
 ---नहीं है।
 (a) भाषा का विस्तार करना
 (b) सृजनात्मकता का विकास करना
 (c) बच्चों को अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करना
 (d) प्रश्नों के उत्तर सरलता से याद करवाना
CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015
 उत्तर : (d)
5. पाठ्य-पुस्तक की भाषा -
 (a) बच्चों की घर व समुदाय की भाषा से मिलती-जुलती होनी चाहिए।
 (b) तत्समय प्रधान होनी चाहिए।
 (c) तद्भव प्रधान होनी चाहिए।
 (d) अधिकाधिक कठिन शब्दों से युक्त होनी चाहिए।
CTET - Ist Paper (I-V) July 2013
 उत्तर : (a)
6. हिंदी-प्रयोग के विविध रूपों को जानने के लिए सर्वाधिक उपयोगी साधन हो सकता है -
 (a) बाल साहित्य का विविध उपयोग
 (b) शिक्षण की विधियों का संपूर्ण ज्ञान
 (c) सुन्दर ढंग से छपी पुस्तकें
 (d) उच्चस्तरीय लेखन सामग्री
CTET - Ist Paper (I-V) July 2013
 उत्तर : (a)
7. भाषा की पाठ्य-पुस्तकों में हिन्दीतर भाषाओं को भी जगह मिलनी चाहिए। इस कथन के समर्थन में कौन-सा तर्क काम करेगा?
 (a) इससे भाषाओं के बीच द्वन्द्व नहीं होगा
 (b) इससे भाषागत विविधता को सही रूप में सम्बोधित किया जा सकता है
 (c) इससे भारत की सभी भाषाओं को स्थान दिया जा सकेगा
 (d) इससे त्रिभाषा सूत्र का पालन किया जा सकता है
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014
 उत्तर : (b)
8. पठन-पाठन के अन्त में ऐसे अभ्यास एवं गतिविधियाँ हों जो -
 (a) सरल भाषा वाले हों
 (b) बच्चों को स्वयं कुछ करने और सीखने का अवसर प्रदान करें
 (c) केवल पाठ से ही सम्बन्धित हों
 (d) पाठ पर बिल्कुल आधारित न हों
CTET - Ist Paper (I-V) Feb. 2015
 उत्तर : (b)
9. कक्षा 8 के लिए पाठ्य-पुस्तक का निर्माण करते समय महत्वपूर्ण है—
 (a) प्रसिद्ध लेखकों की रचनाएँ
 (b) विधागत विविधता होना
 (c) पाठों की संख्या सीमित होना
 (d) सभी व्याकरणिक तत्त्वों का समावेश
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016
 उत्तर : (b)
10. पाठ्य-पुस्तक को आधार बनाकर पूछे जाने वाले प्रश्न—
 (a) स्मरण-शक्ति को समृद्ध करने वाले होने चाहिए
 (b) पाठ की विषयवस्तु का विस्तार करने वाले होने चाहिए
 (c) पाठ में दिए गए तथ्यों पर ही आधारित होने चाहिए
 (d) लिखावट को सुंदर बनाने में सहयोगी होने चाहिए
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2016
 उत्तर : (c)
11. उच्च प्राथमिक स्तर पर हिन्दी भाषा की पाठ्य-पुस्तक का निर्माण करते हुए आपके लिए सबसे कम महत्वपूर्ण है—
 (a) समृद्ध हिन्दी साहित्य की छटा का प्रदर्शन
 (b) भाषायी क्षमताओं को बढ़ावा देने के अभ्यास
 (c) समस्त व्याकरणिक बिन्दुओं का समावेश
 (d) भाषा की विविध छटाओं को समेटने वाले पाठ
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2015
 उत्तर : (c)
12. भाषा की पाठ्य-पुस्तक में सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है—
 (a) आकर्षक चित्र (b) पाठों का उद्देश्यपूर्ण चयन
 (c) अभ्यासों की बहुलता (d) कागज की गुणवत्ता
CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2015
 उत्तर : (b)
13. भाषा की पाठ्य-पुस्तक का निर्माण करते समय सबसे कम महत्वपूर्ण बिन्दु है—
 (a) अभ्यासों में वैविध्य (b) पाठों की संख्या
 (c) विषय-वस्तु में वैविध्य (d) भाषा की विभिन्न छटाएँ
CTET - Ist Paper (I-V) Jan. 2012
 उत्तर : (b)
14. भाषा की पाठ्य-पुस्तक में ऐसे पाठ रखे जाएँ जो—
 (a) केवल व्याकरणिक नियमों का ही अभ्यास कराते हों
 (b) अत्यन्त छोटे हों
 (c) सरल भाषा से युक्त हों
 (d) बच्चों के परिवेश से जुड़े हों
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012
 उत्तर : (d)
15. भाषा-शिक्षण का सम्प्रेषणपरक उपागम -
 (a) भाषिक संरचनाओं की जानकारी पर बल देता है
 (b) सन्दर्भ में भाषा-प्रयोग की कुशलता पर बल देता है
 (c) मातृभाषा-प्रयोग का निषेध करता है
 (d) 'बोलना' कौशल पर बल देता है
CTET - IInd Paper (VI-VIII) June 2011
 उत्तर : (b)

16. उच्च प्राथमिक स्तर पर भाषा-शिक्षण की प्रक्रिया में सबसे अधिक महत्वपूर्ण है—
 (a) पाठ्य-पुस्तक में दिए गए साहित्यिक अंशों की विस्तृत व्याख्या
 (b) पठन-कौशल पर अधिक बल देना
 (c) पाठों के शब्दों का अर्थ जानने के लिए शब्दकोश का प्रयोग करना
 (d) समाचार-पत्र, पत्रिकाओं या अन्य भाषिक सामग्री में कही गई बात के निहितार्थ, सोच, सरोकार की पहचान करना
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012
 उत्तर : (d)
17. भाषा की कक्षा में समाचार-पत्र-पत्रिकाओं का उपयोग यह सुनिश्चित करता है कि —
 (a) शिक्षण-सामग्री का उपयोग हो रहा है
 (b) बच्चों की भाषा पर समाचार-पत्र-पत्रिकाओं का प्रभाव पड़े
 (c) बच्चों को मुख्य शीर्षक याद है
 (d) बच्चे प्रमाणित लेख, समाचार आदि पर अपनी प्रतिक्रिया देने की क्षमता रखते हैं
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Nov. 2012
 उत्तर : (d)
18. भाषा शिक्षण के उपागम हैं —
 (a) पाठ संसर्ग उपागम (b) रचना शिक्षण उपागम
 (c) (a) और (b) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं
Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016
 उत्तर : (c)
19. पाठ में दिए गए चित्रों का क्या उद्देश्य होता है?
 (a) चित्रों से पाठ्य-पुस्तक आकर्षक बनती है
 (b) चित्र पाठ की शोभा बढ़ाते हैं
 (c) पाठ्य-पुस्तक में चित्र देने का प्रचलन है
 (d) चित्र अमूर्त संकल्पनाओं को समझने में सहायता करते हैं।
CTET - Ist Paper (I-V) June 2011
 उत्तर : (d)
20. पूरक पठन-सामग्री का उद्देश्य है —
 (a) भाषा की नियमबद्धता को सिखाना
 (b) शिक्षक की सहायता से बच्चों को पढ़ाना लिखाना
 (c) द्रुत गति से पठन की योग्यता का विकास करना
 (d) सहपाठियों की सहायता से पढ़ना सीखना
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014
 उत्तर : (c)
21. भाषा की कक्षा को एक समावेशी कक्षा बनाने के लिए यह आवश्यक है कि —
 (a) पाठ्यक्रम को कम कर दिया जाए
 (b) भाषाई कुशलताओं का आकलन न किया जाए
 (c) विभिन्न प्रकार की दृश्य-श्रव्य सामग्री का उपयोग किया जाए
 (d) पाठ्य-पुस्तक के पाठ कम कर दिए जाएँ
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2014
 उत्तर : (c)
22. एक समावेशी कक्षा में भाषा-शिक्षक को किस बिन्दु का सबसे अधिक ध्यान रखना चाहिए?
 (a) सभी बच्चों को समान गतिविधि में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना
 (b) सभी बच्चों से समान अपेक्षाएँ रखना।
 (c) विविध प्रकार की दृश्य-श्रव्य सामग्री का उपयोग करना।
 (d) सभी बच्चों को समान रूप से गृहकार्य देना।
CTET - Ist Paper (I-V) Sep. 2014
 उत्तर : (c)
23. उच्च प्राथमिक स्तर पर हिन्दी भाषा-शिक्षण में सर्वोपरि महत्वपूर्ण सामग्री है—
 (a) अभ्यास-पत्रक (b) पाठ्य-पुस्तक
 (c) अभ्यास पुस्तिका (d) बाल साहित्य
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015
 उत्तर : (d)
24. बच्चों के लिए अतिरिक्त पठन सामग्री क्यों विकसित की जाती है?
 (a) पढ़ने में रुचि जगाने एवं भाषा ज्ञान में वृद्धि के लिए
 (b) पढ़ने में रुचि जगाने एवं सामान्य ज्ञान में वृद्धि के लिए
 (c) भाषा ज्ञान बढ़ाने एवं साहित्यकारों में रुचि जगाने के लिए
 (d) भाषा ज्ञान बढ़ाने और सामान्य ज्ञान में रुचि जगाने के लिए
CTET - IInd Paper (VI-VIII) Sep. 2015
 उत्तर : (a)
25. किस दृश्य-उपकरण में पारदर्शी (ट्रांसपरेन्सी) का प्रयोग होता है?
 (a) ओवरहेड प्रक्षेपक (प्रोजेक्टर) में
 (b) स्लाइड प्रक्षेपक (प्रोजेक्टर) में
 (c) अपारदर्शी प्रक्षेपक (ओपेक प्रोजेक्टर) या एपिडाइस्कोप में
 (d) फिल्म स्ट्रिप में
UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016
 उत्तर : (a)
26. भाषा-कक्षा में विभिन्न दृश्य-श्रव्य साधनों के उपयोग का उद्देश्य नहीं है—
 (a) आधुनिक तकनीक को कक्षा में लाना।
 (b) सभी प्रकार के बच्चों की आवश्यकताओं का ध्यान रखना।
 (c) सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को रुचिकर बनाना।
 (d) विद्यालय-प्रमुख के निर्देशों का पालन करना।
CTET - Ist Paper (I-V) July 2013
 उत्तर : (d)
27. भाषा शिक्षण में दृश्य-श्रव्य साधनों के प्रयोग का मुख्य प्रयोजन है—
 (a) शिक्षण में विविधता लाना
 (b) विद्यार्थियों की विभिन्न इन्द्रियों को क्रियाशील बनाना
 (c) रोचकता का संचार करना
 (d) मनोरंजन करना
Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) 2012
 उत्तर : (b)

28. हिन्दी भाषा सीखने में पाठ्य पुस्तक -

- (a) साध्य है (b) साधन है
(c) एकमात्र संसाधन है (d) इनमें से कोई नहीं

**Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) April 2016
Bihar TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011**

उत्तर : (b)

29. पूनम अपने विद्यार्थियों को पढ़ाते समय दृश्य-श्रव्य सामग्री का प्रयोग करती है। इसका प्रमुख कारण है कि वह कक्षा के -

- (a) सभी बच्चों की आवश्यकताओं को सम्बोधित करती है
(b) सभी बच्चों को नियन्त्रण में रखती है
(c) सभी बच्चों की रुचि का ध्यान रखती है
(d) सभी बच्चों का मनोरंजन करती है

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (c)

30. हिन्दी भाषा की बारीकी को सही रूप में समझने की क्षमता का विकास करने के लिए आप क्या करेंगे?

- (a) हिन्दी भाषा के विभिन्न प्रयोगों से युक्त सामग्री उपलब्ध कराना
(b) संस्कृतनिष्ठ हिन्दी भाषा से युक्त सामग्री उपलब्ध कराना
(c) हिन्दी भाषा के प्राचीनतम प्रयोगों से युक्त सामग्री उपलब्ध कराना
(d) गूढ़ अर्थ वाली भाषा से युक्त सामग्री पढ़वाना

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015

उत्तर : (a)

31. उच्च प्राथमिक स्तर पर बहुभाषिक कक्षा में बच्चों की भाषा/भाषाएँ-

- (a) एक संसाधन है/हैं (b) एक कठिन समस्या है/हैं
(c) एक पहेली है/हैं (d) एक जटिल चुनौती है/हैं

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2015

उत्तर : (a)

अभ्यास हेतु प्रश्न

1. शिक्षकों को पाठ के विकास के साथ-साथ बीच में उपयुक्त प्रश्न पूछते रहना चाहिए।

- (a) सदैव नहीं (b) असहमत
(c) अनिश्चित (d) सहमत

2. शिक्षण सूत्रों, सिद्धांतों, विधियों, प्रविधियों, युक्तियों, साधनों का ज्ञान किसके अंतर्गत होना अनिवार्य है?

- (a) पाठ्यवस्तु में (b) पाठयोजना निर्माण में
(c) प्रशिक्षार्थी में (d) अधिगमकर्ता में

3. किसी कार्य को सफलतापूर्वक करते हुए लक्ष्य को प्राप्त करना ही अधिगम कहलाता है।

- (a) योजना (b) पाठयोजना
(c) शिक्षण (d) अधिगम

4. भाषा शिक्षण में उद्योतन सामग्री के प्रयोग का लक्ष्य है-

- (a) पाठ्यवस्तु में स्पष्टता लाना
(b) शिक्षक के ज्ञान में स्पष्टता लाना

(c) बालकों के भावों को उत्प्रेरित करना

(d) भाषा शिक्षण में योगदान करना

5. भाषा शिक्षण में पहले वाक्यों का ज्ञान और फिर अक्षरों का ज्ञान कराने हेतु किस शिक्षण सूत्र को अपनाना आवश्यक है?

- (a) मूर्त से अमूर्त की ओर
(b) अनुभूत से युक्तियुक्त की ओर
(c) विशिष्ट से सामान्य की ओर
(d) पूर्ण से अंश की ओर

6. भाषा शिक्षण में परंपरागत उद्योतन सामग्री के रूप में बहुत अधिक सहायक किसे समझा जाना चाहिए?

- (a) रेखाचित्र (b) चित्र
(c) पाठ्यवस्तु (d) श्यामपट्ट

7. "शिक्षक स्वयं बहुत बड़ी उद्योतन सामग्री होती है।" इस कथन की सार्थकता है क्योंकि-

- (a) शिक्षक मौखिक उदाहरण प्रस्तुत करने में सक्षम होता है।
(b) शिक्षक अध्यापन कार्य में सहायक सामग्री प्रयोग करता है।
(c) शिक्षक ओवर हेड प्रोजेक्टर से पढ़ाता है।
(d) शिक्षक प्रोजेक्टर का प्रयोग करना जानता है।

8. आयोजित शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक कार्यों में हिन्दी शिक्षक को मार्ग दर्शन देना चाहिए-

- (a) अशुद्ध उच्चारण निवारण संबंधी
(b) व्याकरणिक नियम संबंधी
(c) साहित्यिक पक्ष संबंधी
(d) ये सभी

9. वैयक्तिक भिन्नता आधारित है-

- (a) दार्शनिक सिद्धांत पर
(b) मनोवैज्ञानिक सिद्धांत पर
(c) सामाजिक सिद्धांत पर
(d) राजनीतिक सिद्धांत पर

10. सामान्य शिक्षण में अध्यापक एक कालांश में अनेक का प्रयोग करता है-

- (a) सामान्य शिक्षण का (b) विशेष शिक्षण का
(c) कौशलों का (d) इनमें से कोई नहीं

11. किन्तु इनके माध्यम से जिन चित्रों, स्ट्रिप्स व शाब्दिक उदाहरणों को देखा या पढ़ा जा सकता है वे छात्रों के लिए कहलाती है-

- (a) सहायक सामग्री (b) शिक्षण सामग्री
(c) उद्योतन सामग्री (d) इनमें से कोई नहीं

12. शिक्षण का प्रयोग मात्र ज्ञान करता है-

- (a) साहित्य का (b) भाषा का
(c) व्याकरण का (d) इनमें से कोई नहीं

13. शिक्षण के लिए कितना समय उपलब्ध होगा कितना कार्य कक्षा में किया जाना है अन्य सब आधारों पर वितरित किया जिसकी जानकारी आवश्यक है-

- (a) अवधि की (b) समय की
(c) अवधि या समय की (d) इनमें से कोई नहीं

14. वे सभी साधन जिन्हें सुनकर बालक पाठ को सरलता एवं शीघ्रता से सीख सके, कहलाते हैं-

- (a) दृश्य श्रव्य साधन (b) श्रव्य साधन
(c) दृश्य साधन (d) इनमें से कोई नहीं
15. ये ऐसे साधन हैं, जिनमें बालकों की दृश्य-श्रव्य दोनों ही इंद्रियों का प्रयोग एक साथ होता है—
(a) श्रव्य साधन (b) दृश्य साधन
(c) दृश्य-श्रव्य साधन (d) इनमें से कोई नहीं
16. 1998 में राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) की रिपोर्ट में पाया गया कि शिक्षक परिवर्तन लाने वाले महत्वपूर्ण कारक होते हैं, वे न केवल ज्ञान का प्रसार करते हैं, बल्कि —।
(a) नया ज्ञान सीखते हैं।
(b) ज्ञान हस्तान्तरित करते हैं।
(c) नया ज्ञान उत्पन्न करते हैं।
(d) नए ज्ञान की पहचान करते हैं।
17. निम्नलिखित में से कला का कौन सा रूप किसी पाठ्यपुस्तक को जीवित कर देता है?
(a) नृत्य (b) शिल्प/हस्तकला
(c) चित्र (d) थिएटर
18. संचार में, प्राप्त श्रव्य जानकारी का उपयोग — द्वारा नहीं किया जा सकता है।
(a) श्रवण बाधित छात्रों
(b) मानसिक रूप से विकलांग छात्रों
(c) दृष्टिबाधित छात्रों
(d) शारीरिक रूप से अक्षम छात्रों
19. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2016 के मसौदे के अनुसार, — की चिंता को दूर करने के लिए उच्च गुणवत्ता वाले व्यावसायिक प्रशिक्षण पर जोर देने की आवश्यकता है।
(a) छात्रों के कॉलेज छोड़ने की दर
(b) इन पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने वाले छात्रों के लिए समानता संबंधी समस्याओं
(c) इन पाठ्यक्रमों की सामाजिक स्वीकार्यता
(d) इन कॉलेजों में नामांकन
20. यह कथन किसने कहा?
“साहित्य वही दर्शाता है जो इतिहास में चित्रित है।”
(a) जिह्वा कृष्णमूर्ति (b) सर्वपल्ली राधाकृष्णन
(c) रबीन्द्रनाथ टैगोर (d) महात्मा गांधी
21. ‘किसी भी समय, किसी भी स्थान पर, किसी भी विषय पर’ — का एक उभरता विषय है।
(a) होम ट्यूशन (b) ई-लर्निंग
(c) दूरस्थ शिक्षण (d) ऑनलाइन अधिगम
22. NCERT के दिशानिर्देशों के अनुसार, स्कूलों में कला शिक्षा के लिए कितना समय आवंटित किया जाना चाहिए?
(a) कुल समय का एक छठवां भाग
(b) कुल समय का एक पांचवां भाग
(c) कुल समय का एक तिहाई भाग
(d) कुल समय का एक-चौथाई भाग
23. दूरस्थ शिक्षा का सबसे शुरूआती तरीका कौन सा था?
(a) वीडियो कांफ्रेंसिंग
(b) ऑनलाइन शिक्षा के साथ-साथ आमने सामने के सत्र
(c) टेलीकांफ्रेंसिंग
(d) पत्राचार के माध्यम से शिक्षा
24. निम्नलिखित में से कौन-सा पाठ्य-पुस्तक का गुण है?
(a) प्रयोजन (b) कुसम्पादन
(c) दुष्कर्मत्व (d) अशुद्धता
25. डॉल्टन शिक्षण विधि का विकास किसने किया?
(a) फ्रोबेल (b) डब्ल्यू.एच. किलपैट्रिक
(c) मिस हेलेन पार्कहर्स्ट (d) डॉल्टन
26. निम्न में से कौन श्रव्य-दृश्य सामग्री का उद्देश्य है?
(1) शिक्षण को प्रभावशाली बनाना
(2) सकारात्मक सृजनात्मकता उत्पन्न करना
(3) छात्रों को क्रियाशील बनाना
(4) विषय-वस्तु में अरुचि उत्पन्न करना
(a) 1, 2 एवं 3 (b) 1 एवं 4
(c) 1, 3 एवं 4 (d) 2, 3 एवं 4
27. प्रभावी शिक्षण के मानक हैं—
(i) संयुक्त उत्पादक गतिविधि।
(ii) भाषा का विकास एवं प्रसंगाधीन।
(iii) चुनौतीपूर्ण गतिविधियाँ और निर्देशात्मक वार्तालाप
(a) i, ii और iii (b) ii और iii
(c) केवल i (d) उपरोक्त सभी
28. शिक्षा के क्षेत्र में ‘पाठ्यचर्या’ शब्द का तात्पर्य है—
(a) शिक्षण पद्धति तथा शिक्षण सामग्री
(b) विद्यालय का समग्र कार्यक्रम जिसका छात्र दैनंदिन आधार पर अनुभव करता है
(c) मूल्यांकन प्रक्रिया
(d) कक्षा में प्रयुक्त पाठ्य सामग्री
29. एक पाठशाला बच्चों के लिए यथार्थ रूप से दूसरा घर बनेगी यदि —
(a) इनका पर्यावरण घर के सदृश होगा
(b) पाठशाला के पर्यावरण में भोजन भी दिया जाता है
(c) वह बच्चों के सर्वांगीण विकास में मदद करता है
(d) वह पढ़ने की इच्छा जाग्रत करता है
30. एक शिक्षिका अपने शिक्षण से श्रव्य-दृश्य सामग्री तथा शारीरिक गतिविधियों का उपयोग करती है, क्योंकि उनसे—
(a) प्रभावपूर्ण आकलन सुगम होता है
(b) शिक्षार्थियों को विराम मिलता है
(c) अधिगम बढ़ाने के लिए अधिकतम इन्द्रियों का उपयोग होता है
(d) शिक्षक को राहत मिलती है

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (d) | 2. (b) | 3. (a) | 4. (c) | 5. (d) | 6. (c) | 7. (a) | 8. (d) | 9. (b) | 10. (c) |
| 11. (c) | 12. (b) | 13. (c) | 14. (b) | 15. (c) | 16. (c) | 17. (d) | 18. (a) | 19. (c) | 20. (c) |
| 21. (c) | 22. (d) | 23. (d) | 24. (a) | 25. (c) | 26. (a) | 27. (d) | 28. (b) | 29. (c) | 30. (c) |

उपचारात्मक शिक्षण

यह शिक्षण का ही एक प्रकार है। हम प्रायः शिक्षण विधियों में एक रूपता के साथ परम्परागत शिक्षण करते हैं, जिसमें सम्भवतः हमारा यह विचार होता है कि सभी बालकों के लिए समान शिक्षण विधि आवश्यक है परन्तु ऐसा करते समय हम यह भूल जाते हैं कि प्रत्येक बालक निजी, रुचि, योग्यता, क्षमता एवं शक्तियों से समृद्ध होता है। समान शिक्षण विधि अपना करके प्रथम वैयक्तिक भिन्नता को उपेक्षित करते हैं इसका परिणाम यह होता है कि कुछ बालक सफल कुछ मध्यम स्तर के सफल एवं कुछ असफल हो जाते हैं जिसके लिए हम बालकों को ही दोषी ठहराते हैं। और उनके बुद्धिमत्ता के स्तर की ऊँगली उठाते हैं। जबकि वास्तविकता यह है कि ऐसी शिक्षण विधि ही परिपूर्ण है शिक्षण करते समय वैयक्तिक भिन्नता का ध्यान दिया जाना चाहिए।

उपचारात्मक शिक्षण त्रुटियों के कारण को पहचान करके उन्हें समूल नष्ट करता है। तत्पश्चात् वैयक्तिक भिन्नता के आधार पर शिक्षण का निर्देश देता है। उपचारात्मक शिक्षण की अवधारणा यह मानती है कि सभी विद्यार्थी समान बौद्धिक क्षमता के नहीं होते कोई किसी विषय का पारंगत तो कोई किसी विषय का। यह अवधारणा यह मानती है कि यदि कोई विद्यार्थी शैक्षिक उपलब्धियों में पिछड़ रहा है तो इसके कुछ कारण हैं वे कारण शिक्षण विधि से सम्बन्धित हो सकते हैं या शारीरिक हो सकते हैं। शिक्षक को वह कारण जानने चाहिए और उनका समुचित उपचार करना चाहिए।

उपचारात्मक शिक्षण की विशेषताएँ-

- ◆ उपचारात्मक शिक्षण कार्य एवं कारण के सम्बन्ध को मानता है।
- ◆ यह कठिनाइयों का समुचित समाधान प्रस्तुत करता है।
- ◆ यह मनोवैज्ञानिक स्तर पर विश्लेषण करता है तथा विद्यार्थियों को भयमुक्त वातावरण प्रदान करता है।
- ◆ यह वैयक्तिक भिन्नता पर जोर देते हुए छात्रों की रुचि योग्यता बुद्धिमत्ता क्षमता के अनुरूप शिक्षण का अवसर प्रदान करता है।
- ◆ यह विद्यार्थियों को विषय चयन में सहयोग करता है।
- ◆ यह कमजोर एवं अयोग्य घोषित किए गए विद्यार्थियों को मुख्य धारा से जोड़ता है।
- ◆ यह विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को बढ़ाने का कार्य करता है।
- ◆ यह विधि समावेशन के बहुत निकट है।

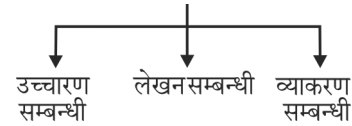
निदानात्मक शिक्षण-

निदान का शाब्दिक अर्थ पहचान करना। शिक्षण की इस विधि में ठीक उसी प्रकार त्रुटियों के कारण की पहचान की जाती है जैसे- चिकित्सा में रोगों का जिस प्रकार निदान (Diagnose) के द्वारा रोगों के कारणों की पहचान कर उनका उपचार किया जाता है ठीक उसी प्रकार निदानात्मक शिक्षण विधि में त्रुटियों के कारणों में पहचान करके तभी उपचारात्मक शिक्षण द्वारा कारणों की समाप्ति की जाती है।

हिन्दी कक्षा से सम्बन्धित प्रमुख त्रुटियाँ-

हिन्दी भाषा कक्षा में होने वाली प्रमुख त्रुटियाँ इस प्रकार हैं।

त्रुटियाँ



उच्चारण सम्बन्धी त्रुटियाँ- क्षेत्रीयता भौगोलिक परिस्थिति एवं पूर्वाग्रह के प्रभाव वश हिन्दी भाषा कक्षा में उच्चारण गति त्रुटियाँ प्रायः देखने को मिलती हैं। विशेष कर अहिन्दी भाषी इस तरह की त्रुटियाँ बहुतायत करते हैं। उच्चारण सम्बन्धी प्रमुख त्रुटियाँ इस प्रकार हैं-

- ◆ शब्द के उच्चारण में स्वर की वृद्धि कर देना **जैसे-** प्रकाश-प्राकाश, क्रम-करम, श्रीमति-श्रीमती
- ◆ शब्द के उच्चारण में व्यंजन की वृद्धि कर देना **जैसे-** मित्र-मितर, पुत्र-पुतर, पत्र-पत्तर, चित्र-चित्तर इत्यादि।
- ◆ शब्द से पूर्व स्वरों का प्रयोग कर देना **जैसे-** स्थान-अस्थान, स्कूल-इस्कूल, स्नान-अस्नान इत्यादि।
- ◆ किसी शब्द का उच्चारण करते समय स्वर या व्यंजनों का ही लोप कर देना **जैसे-** मास्टर साहब, माटस्साब इत्यादि।
- ◆ शब्दों के उच्चारण में वर्णों का भी परिवर्तन कर देना **जैसे -** अमरूद-अरमूद, मेहनत-मेनहत।
- ◆ न के स्थान पर ण तथा ण के स्थान पर न का प्रयोग करना। **जैसे-** रण- रन, चरण-चरन, कृष्ण- कृष्म, रानी- राणी इत्यादि।
- ◆ श, ष, स संबन्धी त्रुटियाँ प्रायः देखने को मिलती हैं। **जैसे-** शासन- साशन।
- ◆ क्ष और छ सम्बन्धी त्रुटियाँ प्रायः देखने को मिलती हैं। **जैसे-** पक्षी- पछी

लेखन सम्बन्धी त्रुटियाँ-

भाषायी कौशलों में लेखन एक जटिल कौशल है बिना समुचित प्रशिक्षण के लेखन कौशल विकसित नहीं किया जा सकता। त्रुटि पूर्ण प्रशिक्षण लापरवाही, उत्तरदायित्व का अभाव, वर्णों के समुचित पहचान का अभाव, ध्वनि एवं ध्वनि चिह्नों के मध्य समन्वय का अभाव, विराम चिह्नों का अधूरी जानकारी इत्यादि ऐसी परिस्थितियों पर जिनसे लेखन सम्बन्धी त्रुटियाँ होने की सम्भावना बनी रहती है। लेखन सम्बन्धी त्रुटियाँ निम्नलिखित प्रकार से हैं-

- ◆ मात्राओं के अशुद्ध रूप का प्रयोग प्रायः लेखन में देखने को मिलता है।

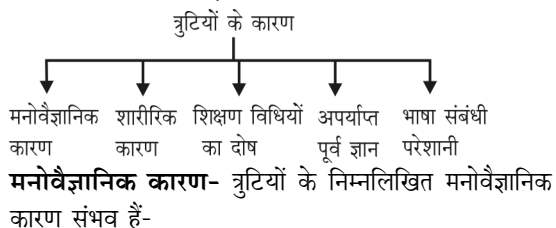
- ◆ शब्द लिखते समय कुछ मात्राओं का लोप करना भी एक प्रचलित त्रुटि है।
- ◆ अतिरिक्त मात्राओं का लगाना भी शब्द को पूर्ण रूप से अर्थहीन कर देता है।
- ◆ देवनागरी लेखन में कभी-कभी विद्यार्थी वर्णों के स्थान में परिवर्तन कर देते हैं।
- ◆ मात्राओं के स्थान में परिवर्तन एक सामान्य त्रुटि तो नहीं है परन्तु विद्यार्थी इसको अक्सर करते दिख जाते हैं।
- ◆ अनुस्वार और अनुनासिक संबंधी दोष भी सामान्य रूप से देखने को मिलते हैं।
- ◆ विसर्ग संबन्धी त्रुटियाँ भी देवनागरी लिपि को लिखते समय दी जाने वाली त्रुटियों में अधिक हैं।
- ◆ विद्यार्थियों में न और ण, क्ष और छ, व और ब, श और ष, स स्, ष और ख आदि वर्णों के प्रयोग में भ्रम की स्थिति रहती है।
- ◆ संयुक्त वर्णों की अशुद्धियों से आशय है जब कोई विद्यार्थी संयुक्त वर्णों को तोड़कर लिखने से संबंधित त्रुटि करता है।
- ◆ अल्पप्राण और महाप्राण संबंधी त्रुटियों में विद्यार्थी अक्सर घ को ग और भ को ब लिख देते हैं।

व्याकरण सम्बन्धी त्रुटियाँ-

व्याकरण भाषा का एक महत्वपूर्ण अंग है। व्याकरण भाषा के शुद्ध बर्ताव के लिए नियम उपलब्ध कराता है। व्याकरण से होने वाली थोड़ी सी त्रुटि पूरे वाक्य के अर्थ को बदल कर रख देते हैं। हिन्दी भाषा कक्षा में विद्यार्थी प्रायः निम्नलिखित त्रुटियाँ करते हैं।

- ◆ पूर्ण विराम, अल्पविराम सम्बन्धी त्रुटियाँ।
- ◆ लिंग और वचन सम्बन्धी त्रुटियाँ।
- ◆ वाक्य रचना करते समय काल सम्बन्धी त्रुटियाँ।
- ◆ संयुक्त क्रिया सम्बन्धी त्रुटियाँ।
- ◆ पद क्रम सम्बन्धी त्रुटियाँ।
- ◆ विशेषण सम्बन्धी त्रुटियाँ।

उपरोक्त त्रुटियाँ हिन्दी भाषा कक्षा में स्वाभाविकतौर पर देखने में मिलती हैं इन त्रुटियों के निराकरण के लिए सर्वप्रथम हमें इनका समुचित कारण जानना चाहिए बिना कारण जाने इन त्रुटियों के निराकरण का प्रयास नयी समस्या को जन्म दे सकता है। इन त्रुटियों के कुछ संभावित कारण निम्नलिखित प्रकार से हैं-



1. परिवारिक एवं विद्यालयी परिवेश में अन्तर।
2. अभिभावकों की अतिअपेक्षा।
3. तनाव एवं असंतुलित भावनाएँ।

4. भयपूर्ण वातावरण।

5. योग्यताओं एवं प्रतिभाओं की उपेक्षा।

शारीरिक कारण- भाषागत त्रुटियों के निम्नलिखित शारीरिक कारण हो सकते हैं-

1. कंठ, मूर्धा, तालु, दन्त्य, ओष्ठ्य, जिह्वा इत्यादि के बनावट में अन्तर।
2. श्रवणेन्द्रिय में विकार की दशा।
3. नेत्र संबन्धी विकार।

शिक्षण विधियों का दोष- इस विधि में निम्नलिखित कारण हैं-

1. शिक्षक की उच्चारण संबन्धी त्रुटियाँ विद्यार्थी भी अपना लेते हैं।
2. शिक्षक की लेखन संबन्धी त्रुटियाँ भी विद्यार्थी अपना लेते हैं।
3. दोषपूर्ण शिक्षण शैली त्रुटियों की प्रमुख जन्मदात्री है।

विद्यार्थियों का अपर्याप्त पूर्व ज्ञान- एक भाषा शिक्षण की कक्षा विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान को दृष्टिगत रखते हुए प्रारम्भ की जाती है। यदि पूर्व ज्ञान अपर्याप्त है तो ऐसा शिक्षण दोष पूर्ण माना जाएगा एवं ऐसे शिक्षण से विद्यार्थी लाभान्वित नहीं होगा। बल्कि उसके मन में उदासीनता, संकोच एवं भय की भावना बैठ जाएगी। अतः शिक्षक को चाहिए की भाषा की कक्षा प्रारम्भ करने से पूर्व प्रकरण से सम्बन्धित पूर्व ज्ञान की परीक्षा कर ले।

भाषा संबन्धी परेशानी वाले बच्चे- कुछ बच्चे भाषा विकार से ग्रस्त होते हैं ऐसे बच्चों को भाषा अधिगम में समस्या होती है। विकार मुख्यतः डिस्लेक्सिया, डिस्ग्राफिया डिस्प्रेक्सिया, डिस्फेज्या आदि के रूप में जाने जाते हैं। शिक्षकों को चाहिए की इन कारणों की पहचान कर छात्रों की इनसे उबरने के लिए सहायता करें। इन विकारों का विवरण निम्नलिखित प्रकार है-

डिस्लेक्सिया- डिस्लेक्सिया मूलतः पहचान सम्बन्धी विकार है परन्तु सामान्यतः यह पठन विकार के नाम से जाना जाता है। इससे ग्रस्त विद्यार्थी को अक्षरों की पहचान कर उनको समुचित ढंग से पढ़ने में समस्या होती है। इसको एक संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का विकार भी कहा जाता है यह बुद्धि संबन्धी विकार नहीं है। प्रायः अभ्यास द्वारा एवं आत्मविश्वास में वृद्धि करके इस विकास को समाप्त किया जा सकता है। परन्तु कुछ परिस्थिति में चिकित्सीय उपचार भी देना पड़ता है।

डिस्ग्राफिया- यह लेखन सम्बन्धी विकार है इस विकार से ग्रस्त बालक लिखने में कठिनाई महसूस करते हैं। वे प्रायः अक्षरों को उल्टा एवं अनुचित क्रम में लिखते हैं। भयमुक्त वातावरण, उत्साहवर्धन एवं अधिकतम अभ्यास द्वारा इस विकार का निराकरण किया जा सकता है कुछ दशा में चिकित्सीय उपचार की भी आवश्यकता पड़ती है।

डिस्प्रेक्सिया- यह तंत्रिकातंत्र सम्बन्धी विकार है इस विकार से ग्रस्त बालक के सोचने समझने की शक्ति प्रभावित होती है इनकी याददाश्त कमजोर होती है समान्यतः ये बातों को समझ नहीं पाते इनमें निर्णय लेने की क्षमता भी कम होती है। इस विकार को विशिष्ट चिकित्सीय उपचार की आवश्यकता पड़ती है।

डिस-अपेज्या- यह मूलतः उच्चारण सम्बन्धी विकार है इस विकार से ग्रस्त बालक में हकलाना, तुतलाना, उच्चारण गत अशुद्धता आदि दोष पाये जाते हैं। ध्वनि प्रयोगशाला में विविध अभ्यास द्वारा एवं उत्साहवर्धन द्वारा इस विकार से मुक्ति पायी जा सकती है कुछ दशा में चिकित्सीय उपचार आवश्यक है।

कारणों की पहचानने की विधियाँ

विद्यार्थियों की त्रुटियों विकारों और उनके कारणों को जानने की निम्नलिखित विधियाँ हैं-

- (i) अवलोकन विधि
- (ii) गतिविधि आयोजन विधि
- (iii) जाँच विधि
- (iv) मौखिक परीक्षा विधि
- (v) अनौपचारिक संवाद विधि

1. **अवलोकन विधि-** इस विधि में शिक्षार्थियों का गहन एवं सतत् अवलोकन किया जाता है। विभिन्न परिस्थितियों में बालक के क्रिया-कलाप पर ध्यान दिया जाता है। जैसे- यदि बालक में पढ़ते समय उच्चारण ग अशुद्धता पायी जाती है। और सामान्य बातचीत की दशा में उच्चारण अशुद्धता नहीं पायी जाती तो इसका आशय यह हुआ कक्षागत वातावरण में वह बालक स्वयं समायोजित नहीं कर पा रहा है।

2. **गतिविधि आयोजन विधि-** भाषा सम्बन्धी त्रुटियों एवं सम्भावित विकार को दूर करने में इस विधि की प्रमुख भूमिका होती है। सामान्यतः सामूहिक परिचर्चा, भाषण, प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता, अन्त्याक्षरी, काव्य पाठ, ऐसे ही आयोजन है जिनमें अपने रुचियों के अनुरूप बालक भाग लेता है और उसका आत्मविश्वास बढ़ता है। इस तरह भाषायी विकारों का निराकरण किया जाता है।

3. **जाँच विधि-** इस विधि में मूलतः बालक द्वारा लिखित सामग्री की गहन जाँच की जाती है तथा त्रुटियों का वर्गीकरण करके उनके कारणों की पहचान की जाती है इस प्रकार की जाँच द्वारा शिक्षक यह जान पाता है कि विद्यार्थी किस प्रकार की लेखन त्रुटि करता है।

4. **मौखिक परीक्षा विधि-** मौखिक परीक्षाएँ भी विद्यार्थी की भाषा सम्बन्धी त्रुटियों को जानने में शिक्षक की सहायता करती हैं इस विधि द्वारा शिक्षक विद्यार्थी की उच्चारण सम्बन्धी त्रुटियों को बारीकी से समझ सकता है। विद्यार्थी से उसकी त्रुटियों पर भी बात कर सकता है।

5. **अनौपचारिक संवाद विधि-** इस विधि में शिक्षक विद्यार्थियों से विषय वस्तु से हटकर व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्धित प्रश्न उत्तर करता है तथा बालक में निहित भाषायी त्रुटियों की पहचान करता है। यदि शिक्षक चाहे तो वह विद्यार्थी से उसकी त्रुटियों के सम्बन्ध में भी बात कर सकता है और विद्यार्थी सहजता से अपनी त्रुटियों पर शिक्षक से बात कर सकता है क्योंकि बाकी इस सम्बन्ध प्रतिभागी नहीं होगी।

विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. **उपचारात्मक शिक्षण की सफलता मुख्यतः निर्भर करती है-**

- (a) बच्चों की समाज-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर
- (b) बच्चों की भाषागत त्रुटियों की सूची बनाने पर
- (c) समस्याओं की पहचान पर
- (d) समस्याओं के कारणों की सही पहचान पर

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012

उत्तर : (c)

2. **स्वलीन विकार (ऑटिस्टिक डिस्ऑर्डर) में बच्चा-**

- (a) अपने हाथ-पैर हिलाने में कठिनाई का अनुभव करता है
- (b) सामाजिक अन्तःक्रिया और सम्प्रेषण में कठिनाई का अनुभव करता है
- (c) अक्सर खाने से मना कर देता है
- (d) अपने ही कार्यों में लीन रहता है

CTET- IInd Paper (VI-VIII) June 2011

उत्तर : (b)

3. **उपचारात्मक शिक्षण द्वारा-**

- (a) अध्यापकों की कमियों का उपचार करते हैं
- (b) छात्रों के घायल होने पर उपचार करते हैं
- (c) छात्रों की कमजोरियों का निदान कर उसे दूर करने हेतु शिक्षण करते हैं
- (d) कुछ कह नहीं सकते

Rajasthan TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (c)

4. **भाषा के सम्बन्ध में उपचारात्मक शिक्षण का उद्देश्य है-**

- (a) भाषा प्रयोग सम्बन्धी कठिनाइयों की पहचान तथा उनका निदान
- (b) बच्चों को व्यस्त रखना
- (c) बच्चों को श्रेणीवार विभक्त करना
- (d) बच्चों के त्रुटियों की केवल सूची बनाना

UP TET- Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (a)

5. **भाषा के सन्दर्भ में निदानात्मक परीक्षण का उद्देश्य है-**

- (a) बच्चों हेतु भाषा-प्रयोग के अवसर जुटाना
- (b) बच्चों को अगली कक्षा में प्रोन्नत करना
- (c) बच्चों की विभिन्न श्रेणियों में विभक्त करना
- (d) बच्चों की भाषा-प्रयोग सम्बन्धी कठिनाइयों के सम्भावित कारणों की पहचान करना

CTET - IInd Paper (VI-VIII) Jan. 2012

उत्तर : (d)

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. उपचारात्मक शिक्षण की प्रक्रिया कब तक चलती रहनी चाहिए?
 - (a) जब तक विद्यालय में समय मिल
 - (b) जब तक अध्यापक चाहे
 - (c) जब तक छात्र चाहे
 - (d) जब तक छात्रों का पिछड़ापन दूर न हो
2. उपचारात्मक शिक्षण की आवश्यकता होती है—
 - (a) कक्षा स्तर के अनुकूल प्रगति न करने वाले बालकों के लिए
 - (b) दृष्टि दोष वाले बालकों के लिए
 - (c) सृजनशील बालकों के लिए
 - (d) आदिवासी बालकों के लिए
3. उपचारात्मक शिक्षण का उद्देश्य है—
 - (a) विषय के प्रति रुचि उत्पन्न करना
 - (b) छात्रों का पिछड़ापन दूर करना
 - (c) छात्रों की प्रगति ज्ञान प्राप्त करना
 - (d) छात्रों की त्रुटियों का पता लगाना
4. नैदानिक परख पत्र बनाने की आवश्यकता है—
 - (a) छात्रों का वर्गीकरण करने के लिए
 - (b) छात्रों की प्रगति की जानकारी प्राप्त करने के लिए
 - (c) छात्रों की कमजोरी का पता लगाने के लिए
 - (d) प्रतिभाशाली बालकों की पहचान के लिए
5. भाषा के प्रश्न—पत्र में किस प्रश्न को शामिल किया जाना चाहिए?
 - (a) सर्वनाम की परिभाषा बताइए
 - (b) क्रियाविशेषण के उदाहरण दीजिए
 - (c) छुट्टियों में की गई यात्रा का वर्णन कीजिए
 - (d) संज्ञा के कितने भेद होते हैं।
6. भाषा के आकलन में निम्न में से किस पर सर्वाधिक बल दिया जाना चाहिए?
 - (a) मौखिक भाषा
 - (b) लिखित भाषा
 - (c) व्याकरण
 - (d) विभिन्न संदर्भों में भाषा की कुशलता
7. बालकों की भाषा संबंधी क्रमिक प्रगतियों का लेखा—जोखा रखना कहलाता है—
 - (a) लिखित परीक्षा
 - (b) मौखिक परीक्षा
 - (c) उत्तर-पुस्तिका
 - (d) पोर्टफोलियो
8. प्रतिक्रिया व्यक्त करना, वर्णन करना, चर्चा में भाग लेना और प्रश्न पूछना—
 - (a) भाषा सीखने-सिखाने तथा आकलन के तरीके हैं।
 - (b) केवल साहित्यिक गतिविधियाँ हैं।
 - (c) केवल भाषा आकलन के तरीके हैं।
 - (d) केवल शिक्षण पद्धति है।
9. निम्न में से कौन-सी प्राथमिक कक्षाओं में रोल-प्ले का उद्देश्य होना चाहिए?
 - (a) बालकों को अनुशासित करना
 - (b) बालकों को अभिनय सिखाना
 - (c) बालकों को भाषा प्रयोग के अवसर प्रदान करना
 - (d) शिक्षण पद्धति के रूप में इसका उपयोग करना
10. भाषा के संदर्भ में सतत् और व्यापक मूल्यांकन का क्या उद्देश्य है?
 - (a) पढ़कर समझने की क्षमता का आकलन
 - (b) व्याकरण का आकलन
 - (c) वर्तनी की शुद्धता का आकलन
 - (d) मौखिक एवं लिखित रूपों के प्रयोग की क्षमता का आकलन
11. बालकों की मौखिक भाषा के सतत् आकलन का सबसे बेहतर तरीका है—
 - (a) सुने हुए को दोहराने के लिए कहना
 - (b) शब्द पढ़वाना
 - (c) विभिन्न संदर्भों में बातचीत
 - (d) प्रश्नों के उत्तर पूछना
12. निम्न में से कौन-सा प्रश्न बालकों के भाषा क्षमता का सही आकलन करेगा?
 - (a) सुनीता ने किस वस्तु का नाम नहीं बताया।
 - (b) सुनीता की दुकान में कौन-कौन सी वस्तुएँ थी।
 - (c) यदि तुम दुकानदार होते तो उसे उस वस्तु के कितने दाम लेते और क्यों
 - (d) आजकल दाल का दाम कितना है
13. निम्न में से कौन-सा प्राथमिक स्तर पर भाषा आकलन का सर्वाधिक उचित तरीका है?
 - (a) चित्र वर्णन
 - (b) पत्र लिखवाना
 - (c) किसी पाठ की पक्तियाँ पढ़वाना
 - (d) प्रश्नों के उत्तर लिखवाना
14. सतत् और व्यापक आकलन करते समय आप किसे मानते हैं?
 - (a) सुलेख लिखना
 - (b) बालकों द्वारा विभिन्न संदर्भों में भाषा प्रयोग की क्षमता
 - (c) लिखित प्रश्न
 - (d) श्रुतलेखन
15. प्राथमिक स्तर पर पठन क्षमता का आकलन करने के लिए किस प्रकार की सामग्री सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है?
 - (a) पाठ्यपुस्तक
 - (b) औपचारिक पत्र
 - (c) भ्रष्टाचार पर आधारित निबंध
 - (d) कहानी
16. विमल माधव सोनजी राउत पत्नी श्री माधव राउत जो कि महाराष्ट्र की एक अंध आदिवासी महिला और मनरेगा पीड़ित हैं, कहती हैं कि, 'मेरे घर में मुझे पर आश्रित बहुत से लोग हैं और अधिकतर दिनों में मुझे

- काम नहीं मिलता है, कभी-कभी लगता है कि आत्महत्या कर लूँ। (द हिंदुस्तान टाइम्स, 29 दिसंबर 2013)। सामाजिक विज्ञान की कक्षा में इस समाचार को पढ़ना — के लिए सबसे उपयोगी रहेगा।
- तर्क-वितर्क को प्रोत्साहित करने
 - पढ़ने के कौशल को एकीकृत करने
 - लैंगिक दृष्टिकोण को एकीकृत करने
 - समाचार पढ़ने को प्रोत्साहित करने
17. कक्षा में होने वाली परिचर्चाओं में लैंगिक दृष्टिकोण को एकीकृत करना लड़कों को — में सक्षम बनाता है।
- अपने आत्म सम्मान को बढ़ाने
 - अपने स्वयं के पूर्वाग्रहों को दूर करने
 - लड़कियों के साथ वाद-विवाद करने
 - शिक्षक के साथ वाद-विवाद करने
18. NCERT के अनुसार, — की आयु तक बच्चे में समस्या निवारण कौशल विकसित हो जाता है।
- +4 साल
 - +3 साल
 - +1 साल
 - +2 साल
19. किसी बच्चे के घर का सामाजिक वातावरण उसके — को अत्यधिक प्रभावित करता है।
- सौंदर्य विकास
 - रचनात्मक विकास
 - व्यक्तित्व विकास
 - शारीरिक विकास
20. NCERT द्वारा आयोजित राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा समीक्षा पर विचार-विमर्श के दौरान किसी किशोर लड़की द्वारा सुझाए गए क्या विशिष्ट उपाय थे?
- अलग-अलग अवधारणाओं को स्पष्टता के साथ समझाने के लिए बच्चों को रोजमर्रा की वास्तविकताओं के उदाहरण देना।
 - लड़कों में लड़कियों के प्रति उनके व्यवहार के बारे में अधिक आत्म-जागरूकता पैदा करना।
 - लड़कियों के लिए अलग शौचालयों का निर्माण करना।
 - माध्यमिक स्तर पर लड़कियों की भागीदारी की कमी के कारणों की पहचान करना।
21. 'खेल शिक्षण विधि' के प्रतिपादक कौन हैं?
- सुकरात
 - प्रोबेल
 - किलपैट्रिक
 - अरस्तू
22. 'चक्षु-बाधित' वी – श्रेणी के छात्र को—
- निम्न स्तर के कार्यों से छूट मिलनी चाहिए
 - अभिभावकों/मित्रों द्वारा उसके दैनिक कार्यों में मदद मिलनी चाहिए
 - कक्षा में सामान्य व्यवहार किया जाना चाहिए तथा ऑडियो सीडी के माध्यम से सहायता दी जानी चाहिए
 - कक्षा में विशेष व्यवहार किया जाना चाहिए
23. छात्र के अधिगम में अंतराल का निदान निम्नलिखित के बाद करना चाहिए —
- उचित उपचारात्मक उपाय
 - सघन अनुप्रयोग एवं अभ्यास
 - सभी पाठों को व्यवस्थित रूप में दोहराना
 - निष्कर्षों से शिक्षार्थी तथा अभिभावकों को अवगत कराना
24. वाङ्मयों की बच्चों के सीखने में निम्नलिखित में से किस कारक की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल देते हैं?
- नैतिक
 - शारीरिक
 - सामाजिक
 - आनुवंशिक
25. राज्य स्तर की एक एकल-गायन प्रतियोगिता के लिए विद्यार्थियों को तैयार करते समय एक विद्यालय लड़कियों को वरीयता देता है। यह दर्शाता है—
- प्रयोजनात्मक उपागम
 - प्रगतिशील चिंतन
 - लैंगिक पूर्वाग्रह
 - वैश्विक प्रवृत्तियाँ
26. शिक्षा के संदर्भ में, समाजीकरण से तात्पर्य है—
- समाज में बड़ों का सम्मान करना
 - सामाजिक वातावरण में अनुकूलन और समायोजन
 - सामाजिक मानदंडों को सदैव अनुपालन करना
 - अपने सामाजिक मानदंड बनाना
27. प्रयोजना विधि के जन्मदाता है—
- आर्मस्ट्रांग
 - सिम्पसन
 - किलपैट्रिक
 - कौशलात्मक
28. बालक के विकास की किस अवस्था में इलेक्ट्रा एवं ओडिपस ग्रन्थियों का विकास प्रारम्भ होता है?
- शैशवावस्था
 - बाल्यावस्था
 - किशोरावस्था
 - प्रौढ़ावस्था
29. शिक्षण की नवाचार विधि जिसमें छात्र अपनी स्वयं की सीखने के गति से सीखता है, कहलाती है—
- आगमन विधि
 - निगमन विधि
 - अभिक्रमित अनुदेशन
 - ह्यूस्टिक विधि
30. 'ब्रेल पद्धति' के बारे में पढ़ाने के बाद, विद्यार्थियों को दृष्टि विकलांग छात्रों के विद्यालय में ले जाया गया। यह विद्यार्थियों की सहायता करेगा—
- दोस्तों के साथ मजा और आनंद लेने में
 - सभी प्रकार के विकलांग छात्रों के प्रति सम्मान विकसित करने में
 - कक्षा के अधिगम को वास्तविक जीवन परिस्थितियों के साथ जोड़ने में
 - दृष्टि विकलांग छात्रों के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास करने में

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (d) | 2. (a) | 3. (b) | 4. (c) | 5. (c) | 6. (d) | 7. (d) | 8. (a) | 9. (c) | 10. (d) |
| 11. (c) | 12. (c) | 13. (a) | 14. (b) | 15. (d) | 16. (c) | 17. (b) | 18. (a) | 19. (c) | 20. (b) |
| 21. (b) | 22. (c) | 23. (a) | 24. (c) | 25. (c) | 26. (b) | 27. (c) | 28. (a) | 29. (c) | 30. (c) |